साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ११ | रविवार, ६ जनवरी, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

डी. ए. वी. शिक्षण संस्थानों का आर्यकरण हो

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के उद्‌गार

नई दिल्ली २६ दिसम्बर। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आज समारोह पूर्वक रामलीला मैदान में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे अमेरिका, लन्दन, दक्षिण अफ्रीका, मारीशस, सूरीनाम, हालैण्ड नेपाल आदि अनेक देशों के प्रतिनिधियों सहित भारत के विभिन्न राज्यो के लाखो नर नारियो ने श्रद्धा पूर्वक भाग लिया।

आज शिक्षा एव सस्कृति (गुरुकुलो का एकीकरण एवं आर्य संस्थाओ का आर्यकरण) सम्मेलन का सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान पं० वन्देमातरम् रामचन्द्र की अध्यक्षता मे आयोजन किया गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगडी की स्थापना जिन आदर्शों को पूरा करने के लिए की थी, यदि आज हम उन कार्यों को पूरा करने का जो बीडा उठावे तो आने वाली पीढ़ियां हमारी कृतज्ञ होगी। स्वामी जी ने कहा यह मैं आपको अपने मन की पीडा बता रहा हू। डी०ए०वी० शिक्षण संस्थानों के सम्बन्ध मे स्वामी जी ने कहा कि इनका आर्यकरण किया जाना चाहिए। प्रत्येक शिक्षण सस्थान के ऊपर कम से कम नाम तो हिन्दी में लिखवाया ही जाना चाहिए। आज हमें यह विचार करना है कि किस प्रकार यह दोनों सस्थान मिलकर कार्य को आगे बढ़ा सकते हैं।

ससद सदस्य डा० कपिलदेव शास्त्री ने कहा कि डी०ए०वी० शिक्षण सस्थानो मे गुडमार्निग के स्थान पर नमस्ते प्रारम्भ कराया जाना चाहिए तथा नेक टाई का प्रयोग बन्द किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में डी०ए०वी० सस्थान के श्री दरबारीलाल एवं श्री रामनाथ सहगल ने बताया कि अब टाई का प्रयोग बन्द कर दिया गया है और स्कूलो मे बच्चे नमस्ते ही कहते है।

आर्य जगत् के सपादक प० क्षितीशकुमार वेदालंकार ने कहा कि गुरुकुल एवं डी०ए०वी० शिक्षण सस्थान दो भुजाओ के समान है। इस अवसर पर डा० ज्वलन्त, श्रीयुत डा० उमाकान्त उपाध्याय सच्चिदानन्द शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति श्री सुभाष विद्यालकार आदि ने भी प्रेरक विचार रखे। सम्मेलन मे गुरुकुलो का एकीकरण एव आर्य सस्थाओ का आर्यकरण करने के लिए एक समिति गठित करने का भी निर्णय लिया गया।

—विमलकान्त शर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव सम्पन्न

१-प्रो० शेरसिंह-प्रधान, २-श्री सूबेसिंह-मन्त्री, ३-श्री रामानन्द सिंगला-कोषाध्यक्ष तथा श्री हरिराम आर्य-पुस्तकाध्यक्ष सर्वसम्मति से निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा की बैठक २५ नवम्बर को दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई। इसमे प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री को छठी बार सभा का प्रधान सर्वसम्मति से चुना गया। इस प्रकार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का आगामी तीन वर्षों के लिए चुनाव निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

१—प्रो० शेरसिंह-प्रधान

२—म० भरतसिंह-उपप्रधान

३—बहन सुभाषिणी देवी—उपप्रधान

४—ला० लक्ष्मनदास—उपप्रधान तथा डा० रणधीरसिंह सागवान सिरसा उपप्रधान

५—चौ० सूबेसिंह सेवानिवृत्त उपमण्डल अधिकारी रोहतक-मन्त्री

६—डा० सोमवीर सेवानिवृत्त आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी—उपमन्त्री

७—श्री सत्यवीर शास्त्री बहीबोहर—उपमन्त्री

८—ला० रामानन्द सिंगला पानीपत—कोषाध्यक्ष

९—श्री हरिराम आर्य कारोली रेवाडी—पुस्तकाध्यक्ष

इस अवसर पर निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रस्ताव भी पास किये गये.

१—हरयाणा के आर्य प्रतिनिधियो ने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा विभाजन के समय का ३५ प्रतिशत भाग न दिये जाने पर क्षोभ व्यक्त किया क्योंकि सार्वदेशिक सभा के आदेश तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सस्कृत अधिवेशन के अवसर पर १९७५ में यह निश्चय किया गया था कि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के त्रिशाखन होने पर सांझे कोष जो कि उस समय १८ लाख के लगभग था, का ३५ प्रतिशत पंजाब, ३५ प्रतिशत हरयाणा तथा ३० प्रतिशत दिल्ली को दिया जायेगा। इसके अनुसार हरयाणा सभा का लगभग ६ लाख रुपया १९७५ मे बनता था और अब विभाजन हुए १५ वर्ष से ऊपर हो गये उसके अनुसार सावधि राशि बैंक में जमा के आधार पर यह राशि लाख के लगभग बन चुकी है। और हरयाणा सभा द्वारा इस राशि को लेने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सह० सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

दुष्ट-दलन

नमस्ते रुद्रमन्यवे उतो त इषवे नम: । यजु० १६-१

हे रुद्र आपके योधागण, ले उठे हाथ में शस्त्र सघन ।
हे रुद्र तुम्हे है नित्य नमन, कर दो दुष्टों का देव दमन ।।
ये दुष्ट नीच अति नंगे है,
सज्जन से करते दंगे हैं,
तेरे क्रोधावेशी सैनिक ही
इनको कर सकते चंगे है ।
ये मन्युरथी तव वीर बरन, ले हस्त वज्र हो दुष्ट दलन ।
हे रुद्र तुम्हें हैं नित्य नमन, कर दो दुष्टों का देव दमन ।।
ये क्रोधवन्त तव वीर सन्त
कर ग्रहण बाण हो शत्रु अन्त
हे रुद्र दुष्ट के संहारक
नित अन्न पोष पाये अनन्त ।
आतंक मचाता जो क्षण-क्षण, अति उग्रवाद हो शीघ्र शमन।
हे रुद्र तुम्हे है नित्य नमन, कर दो दुष्टों का देव दमन ।।
रुद्र तुम्हारे योधाओ से,
हो वज्र प्रहार, भुजाओ से,
कर उठे शत्रु सब चीत्कार
हो मुक्त सुजन विपदाओं से ।
हे रुद्र वीर लें मन्यु गहन, कर दुष्ट दे शान्ति शमन ।
हे रुद्र तुम्हें हैं नित्य नमन, कर दो दुष्टों का देव दमन ।।

—देवनारायण भारद्वाज

नव वर्षाभिनन्दन

(१)

नववर्ष की यह अरुण-आभा
विश्व को नवज्योति दे ।
कीर्ति-प्रीति-विभूति-गौरव
सौख्य की अभिवृद्धि दे ।
तापत्रय हर सकल जन की
शान्ति का सन्देश दे ।
श्रीवृद्धि-शुचिता-शौर्य-संयम
सद्गुणो की वृद्धि दे ।।

(२)

राष्ट्र-उन्नति, देश-वैभव,
स्नेह-हास-विलास दे ।
दीन-हीन-अनाथ-निर्धन
मानवो को त्राण दे ।
प्रान्त-धर्म-विभेद हर कर
ऐक्य भाव प्रसार हो ।
आर्य संस्कृति सभ्यता का
विश्व में विस्तार हो ।।

डा० कपिलदेव द्विवेदी
निदेशक, विश्वभारती अनुसंधान परिषद्
ज्ञानपुर (वाराणसी)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन



दिल्ली के रामलीला मैदान मे २३ से २६ दिसम्बर १९९० तक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का भव्य समारोह हुआ। यह सम्मेलन आशातीत रूप मे सफल हुआ। देश विदेश के हजारों-लाखो नर-नारियो, बालकों और वृद्धों ने इस अन्तर्राष्ट्रीय समारोह मे भाग लिया। महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सस्थापित आर्य समाज के मानव मूल्यों पर आधारित सुनिश्चित सिद्धान्त है। इस सम्मेलन में इन सिद्धान्तो की प्रासगिकता तथा व्यावहारिकता पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया। इस सम्मेलन में आर्यसमाज के सगठन को और अधिक सुदृढ करने तथा इसके भावी कार्यक्रम को सुनिश्चित रूप रेखा देने के लिए भी विचार किया गया। इस अवसर पर आर्यसमाज के द्वारा विभिन्न क्षेत्रो में किए गए कार्य की समीक्षा भी की गई। सुधी विद्वानो ने कहा कि हमे आत्म निरीक्षण एव आत्म विश्लेषण करने के पश्चात् आत्म निर्णय को अगली सीढ़ी पर चढना होगा। यह तो निर्भ्रान्त सत्य है कि वेद आदि सृष्टि में परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान है। वेदो मे किसी भी समुदाय के लाभ-हानि की बात प्राप्य नही है। यहां तो जड-चेतन सभी के कल्याण की बातो पर बल दिया गया है। डा० कर्णसिह स्वनामधन्य विद्वान हैं। उन्होने वेद सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि वेदो पर आधारित शिक्षा एव जीवन चर्या ही मनुष्य के मार्ग को प्रशस्त कर सकती है। ससार का उपकार कर सकती है। आर्यसमाज का सम्पूर्ण चिन्तन इसी भावना पर आधारित है। अत आर्यसमाज आज भी प्रासगिक है। महिला सम्मेलन मे बालिका वर्ष एव महिला की अवधारणा पर गम्भीर चिन्तन हुआ। महिलाओं के लिए आर्यसमाज द्वारा किए गए कार्य सदैव स्वर्णाक्षरों में अकित रहेंगे। आर्यसमाज आगामी पीढियो के कल्याण के लिए भी सतत प्रयत्नशील है। आर्य युवा सगोष्ठी मे युवाशक्ति को सही मार्ग पर ले जाने की सम्भावनाओ पर विचार किया गया। इस कार्यक्रम मे हमारे प्रवासी भारतीयो ने अपने-अपने स्थानो पर आर्यसमाज द्वारा किए जा रहे कार्यों का विवरण दिया।

दूसरे दिन अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का खुला अधिवेशन स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन मे भारत के प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर, पूर्व प्रधानमत्री, श्री राजीव गांधी, डॉ० बलराम जाखड, श्री के० सी० पन्त श्री एच० के० एल भगत और स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने आर्यसमाज के स्वस्थ चिन्तन एव कार्य पद्धति की प्रशसा की। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने आर्यसमाज का घोषणापत्र प्रस्तुत किया। पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प० इन्द्र राज तथा वैदिक विद्वान डा० राजगुरु शर्मा ने इसका अनुमोदन किया। सभी प्रान्तीय सभाओं तथा विदेशो के प्रतिनिधियो ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन किया। दोपहर बाद आर्यों का आदि देश तथा आर्यसमाज का भावी कार्यक्रम, सगोष्ठिया हुई। रात्रि मे 'वेद की सार्वभौमिकता' विषय पर सामयिक व्याख्यान हुए।

तीसरे दिन स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। लालकिला मैदान मे श्रद्धाञ्जलि सभा हुई। रात्रि मे आर्य कवि सम्मेलन हुआ।

चौथे दिन शिक्षा एव सस्कृति सम्मेलन तथा व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

इस सम्मेलन मे प्रतिदिन प्रात काल योग प्रशिक्षण शिविर एव बृहद् यज्ञ के आयोजन हुए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती आर महामंत्री डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री का इस महान आयोजन के लिए समस्त आर्य जगत् की ओर से हार्दिक अभिनन्दन !

—डॉ० धर्मपाल

—डा० भवानीलाल भारतीय

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

(१२ सितम्बर ९० के अक से आगे)

आर्यसमाज से सक्रिय रूप से परिचित होने और वहा कार्य करने का अवसर तब मिला जब मैं जोधपुर के पूरबियो के बास स्थित अपने ही मकान मे रहने लगा। उन दिनो मुझे हाई स्कूल की परीक्षा देनी थी, किन्तु मेरी अभिरुचि पाठ्यक्रम की तैयारी मे उतनी नही थी जितनी पाठ्येतर पुस्तको के पढने मे। उधर समाचार पत्रो मे लिखने का नया नया शौक सवार हुआ था। मैं १९४५ मे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के उदयपुर अधिवेशन में अपने कुछ मित्रो के साथ सम्मिलित हुआ था। इसमे महात्मा गाधी जी के सम्मेलन से त्यागपत्र देने के विषय पर महत्त्वपूर्ण चर्चा हुई थी और पुरुषोत्तम दास टण्डन एव कन्हैयालाल मुन्शी जैसे हिन्दी समर्थको ने खुलकर महात्मा जी की हिन्दी विरोधी और हिन्दुस्तानी समर्थक नीति का विरोध किया था। सम्मेलन मे सर्व श्री टण्डन जी, चन्द्रबली पाण्डेय, जगदम्बाप्रसाद मिश्र हितैषी तथा रामधारीसिह दिनकर के जो प्रभावशाली भाषण हुए, उनकी आलोचना करते हुए साम्यवादी दल के मासिक पत्र ने इसे 'हिन्दू सभाई अधिवेशन करार दिया था। मैंने जन साहित्य में छपे इसी लेख का एक करारा उत्तर तैयार किया। उदयपुर अधिवेशन मे ही मेरी भेट प्रसिद्ध पत्रकार श्री फतहचन्द्र शर्मा आराधक से हुई। आराधक जी उस समय पहाडी धीरज से गोपाल नामक एक साप्ताहिक पत्र निकालते थे और प० मदनमोहन मालवीय की विचारधारा के पोषक थे। आराधक जी ने मेरा उक्त लेख अपने पत्र मे छापा, किन्तु जब इसे मैंने साप्ताहिक वीर अर्जुन को भेजा और हिन्दी के इस तत्कालीन सर्व श्रेष्ठ साप्ताहिक ने भी मेरे उक्त लेख को प्रकाशित कर दिया तो मैं अपने को एक सफल लेखक मानने लगा। अब पत्रो मे लिखने का जो भूत सवार हुआ उसके कारण हाई स्कूल की परीक्षा की तैयारी भी साधारण ही हो पाई। गणित और विज्ञान में वैसे भी मेरी अभिरुचि नहीं थी अत तृतीय श्रेणी मे ही हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने मे मैंने अपनी खैर समझी।

शहर वाले घर मे रहत समय ही मैं नगर आर्यसमाज गुलाब सागर की प्रवृत्तियो से परिचित हुआ और मेरे सक्रिय सामाजिक जीवन का आरम्भ हुआ। उन दिनो गुलाब सागर आर्यसमाज मे आर्यकुमार सभा अत्यन्त क्रियाशील थी। स्थानीय स्टेट आडिट आफिस मे कार्य करने वाले श्री गणेशीलाल जी गौड जिन्हे लोग मास्टर साहब' कह कर पुकारते थे, युवको और किशोरा को आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने में रुचि लेते थे। वे ही स्थानीय कुमार सभा के मन्त्री जी भी थे।

यद्यपि वे आयु मे हम कुमारो से बहुत बडे थे, किन्तु व्यायामशालाओ और अखाडो मे जाकर युवको को सुगठित शरीर बनाने के लिये प्रेरित करने तथा आर्य कुमार सभा के माध्यम से विद्यार्थी वर्ग मे बौद्धिक और मानसिक जागृति उत्पन्न करना उनकी हाबी ही थी। उनके इर्द-गिर्द छात्रो का एक मण्डल सा एकत्र हो गया था। प्रति शनिवार सायकाल आर्यकुमार सभा का साप्ताहिक अधिवेशन होता, जिसमे मैं भी नियमित रूप से जाने लगा।

वस्तुत आर्यसमाज का कार्य उन दिनो अत्यन्त उत्साहवर्धक तथा प्राणवान् था। शिवरात्रि पर सप्ताह भर के लिए ऋषि बोध पर्व मनाया जाता और आर्य-कुमार सभा तथा आर्यसमाज के सभासद सम्मिलित रूप से प्रभात फेरी निकालते। प्रभात फेरियो में गाये जाने वाले गीत मेरे किशोर हृदय को उद्वेलित और आनन्दित करते तथा शैय्या पर लेटा हुआ भी मै इनके बोलो को सुन कर रोमाञ्चित हो उठता। आर्यसमाज के सिद्धान्तो से जगाया गया आदर्शवाद मेरे मन और मस्तिष्क पर बुरी तरह से छाया हुआ था। प्रभात फेरी के ये स्वय सेवक गाते—

भारत का कर गया बेडा पार
वो मस्ताना योगी···
सोतो को कर गया फिर बेदार वो मस्ताना योगी ॥

इसी गीत मे ऋषि के आत्मत्याग तथा कष्ट सहिष्णुता को निम्न प्रकार से वर्णित किया गया है—

ईटें और पत्थर खाये, गोली से ना घबराये।

क्रमशः

श्रद्धेय स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की जीवन झांकी

—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेद सदन, अबोहर १५२११६

'सर्वहितकारी' के सात नवम्बर के अंक मे 'मेरी सासरोली की यात्रा' छपी। १४ नवम्बर के अंक मे श्रीमान् डा० भवानीलाल जी भारतीय का श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज पर एक लेख छपा है।

मेरे लेख मे मुद्रण दोष से एक भ्रम सा पैदा होता है। यद्यपि लेख ध्यानपूर्वक पढने से वह भ्रम दूर हो जाता है। श्री डा० भवानीलाल जी भारतीय के लेख मे दो बाते ठीक नही छपी। इन भूलो का दायित्व उन पर नही किसी और पर है। पाठको मे तथ्यो के बारे कोई भ्रम न रहे इसलिए श्री महाराज पर एक लेख देना आवश्यक समझा। पूज्य स्वामी जी का जीवन अत्यन्त घटना पूर्ण है। उनकी जीवन की घटनायें एक से एक बढकर प्रेरणाप्रद हैं। मैंने उनका विस्तृत जीवन चरित्र लिख दिया है। जब छपेगा तो आस्तिक लोग इस ग्रन्थ को पढकर इस महान् तपस्वी सन्यासी पर गर्व करेंगे। श्री स्वामी जी की आज्ञा से उसका प्रकाशन अभी रोका है। तथापि श्री महाराज की संक्षिप्त जीवन झांकी देने वाली एक पुस्तिका शीघ्र आर्य जनता तक पहुचाई जावेगी। महाराज के जीवन मे ऐसी-ऐसी घटनाऐ घटी हैं, जिन पर पूर्वाग्रह रहित किसी भी देश, मत व पथ का व्यक्ति गौरव कर सकता है।

श्री स्वामी जी का पूर्वनाम रामचन्द्र था। यह नाम उन्हे माताजी ने दिया था। पूज्या माताजी का नाम फूला देवी था। पिताजी का नाम श्री हरदयाल सिंह था। दादाजी का नाम श्री रघुनाथ था। मेरे लेख मे स्वामीजी का पूर्व नाम रामचन्द्र तो छपा था परन्तु उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री रिछपाल सिंह के नाम के साथ कुछ शब्द छूट गये जिससे ऐसा आभास मिलता था कि रिछपालसिंह कभी स्वामी जी का नाम रहा। ऐसी बात नही है। इतना अवश्य है कि माताजी पुत्र को चन्दराम कहकर भी पुकारती थी। अब भी सासरौली मे कुछ वृद्ध श्री महाराज को 'चन्दराम' ही कहकर पुकारते है।

स्वामी जी का जन्म सन १९०९ ई० में नही हुआ। श्री डा० भारतीय जी की जानकारी का स्रोत ठीक नही है। ग्राम के कुछ वृद्धो के अनुसार स्वामीजी महाराज इस समय ८६ वर्ष के होगे। इस प्रकार आप का जन्म सन् १९०४ ई० मे हुआ। यह कथन भी ठीक नही है। हमारी खोज पडताल के अनुसार श्री प० रामचन्द्र जी का जन्म अप्रैल सन् १९०१ मे हुआ। इसके लिए हमारे पास क्या प्रमाण है?

कुछ वर्ष पूर्व सासरौली क्षेत्र के एक सैनिक मठ मे आये थे। उस वृद्ध ने आचार्य जगदीशजी प० रामचन्द्र जी (स्वामी सर्वानन्दजी) की कई पुरानी बाते बताई। उसने बताया कि राम का जन्म सन् १९०१ का है। दोनो एक दूसरे को बाल्यकाल से जानते हैं। हमारे पास इस बात की पुष्टि के लिए एक और प्रबल युक्ति हैं। हमे कई बार पूज्य स्वामी जी के मुख से महात्मा मुन्शीराम जी की सन्यास दीक्षा का वृत्तान्त सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से अपने एक पूज्य नेता की सन्यास-दीक्षा का आखो देखा वृत्तान्त सुनकर हमें एक विशेष आनन्द की अनुभूति होती है। श्री स्वामी जी एतद्विषयक अपने सस्मरणो का बडी सजीव भाषा मे वर्णन किया करते हैं।

हमने कुछ सप्ताह पूर्व ही यह पूछा कि क्या आप अपने परिवार वालो के साथ इस समारोह मे गये थे अथवा किसी और बड़े व्यक्ति के साथ वहां गये? आपने कहा, 'मैं किसी के साथ वहा नही गया था। मैं स्वय स्फूर्ति से गुरुकुल कागडी का उत्सव देखने गया था। वहा जाकर पता चला कि महात्मा मुन्शीराम जी सन्यास धारण करेगे। वह शोभा यात्रा में सन्यास के स्थल पर पहुचे। मैं भी शोभा यात्रा मे सम्मिलित था।'

अब सुविज्ञ पाठक स्वय निर्णय कर ले कि जो लड़का अपने घर से अकेला गुरुकुल कागडी का उत्सव देखने जाता है वह क्या आठ वर्ष का होगा? क्या आठ वर्ष के बालक को इतना ज्ञान हो सकता है कि महात्मा मुन्शीराम का व्यक्तित्व इतना महान है और वहा उपस्थित सब विद्वानो की भी पूरी पूरी जानकारी हो। सासरौली जैसे पिछड़े ग्राम का लड़का इतनी छोटी आयु मे घर मे क्या निकलेगा? महात्मा मुन्शीराम जी ने सन् १९१७ मे सन्यास ग्रहण किया था। आज से १४-१५ वर्ष पूर्व जब प्रथम बार स्वामी श्रद्धानन्दजी की चर्चा चली तो हम श्री महाराज से उनके स्वामी जी सम्बन्धी सस्मरण सुनने की इच्छा प्रकट की। तब आपने सन्यास-दीक्षा का वृत्तान्त भी सुनाया। हमने तभी यह समझ लिया कि आपका जन्म सन् १९०० या १९०१ के आस-पास हुआ। आचार्य जगदीश जी ने पूर्व सैनिक से प्राप्त जानकारी देकर हमारी धारणा की पुष्टि कर दी। इस सम्बन्ध मे और विस्तार से चर्चा की आवश्यकता नही।

मान्यवर श्री डा० भारतीय जी ने लिखा है कि स्वामी जी ने प्रथम जून सन् १९५५ के दिन सन्यास धारण किया। यह भी ठीक नही है। किसी लेख मे हमने इस भूल का पहले भी प्रतिवाद किया था। यह भ्रान्ति डा० सत्यकेतुजी के इतिहास के साथ खण्डो से फैली है। लेखक श्री महाराज की सन्यास दीक्षा में स्वय सोत्साह सम्मिलित हुआ था। प्रथम विद्वान् जिसकी सन्यास-दीक्षा का समारोह हमने देखा—वे पूज्य प० रामचन्द्रजी सिद्धान्त शिरोमणि है। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के जीवन चरित्र में इस दीक्षा समारोह का वर्णन है। तब हमने एक कविता लिखी थी। हमारी कापी मे अंकित है। तिथि आदि सब लिख रखी थी। चौधरी रामसिंह जी भी तब मठ मे आए थे। उनकी डायरियो मे भी इसका वर्णन है। उनकी जीवनी मे भी कुछ वृत्तान्त दिया है।

तपोधन श्री स्वामी सर्वानन्दजी अपने स्वभाव व सेवा के कारण बहुत प्रसिद्ध है। सन्यासी बनकर ही आपके ऐसे भाव नहीं बने। आपका स्वभाव बाल्यकाल से ही ऐसा है। आचार्य प्रियव्रत जी आपके गुरु रहे है। उपदेशक विद्यालय मे गुरुजनो की स्वेच्छा मे बहुत सेवा करते थे। आचार्य जी को कहते, "आपके कपडे मैं धो दू?" सब्जी ला देते, गेहूं पिसवालाते।

आचार्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी, स्वामी वेदानन्दजी, आचार्य प्रियव्रत जी, प० ईश्वरचन्द्र दर्शनाचार्य सरीखे गुरुओ से विद्या प्राप्त करने वाले इस सन्यासी का पाण्डित्य वही जानता है जिसने कभी आपसे शका समाधान किया है। वेद, उपनिषद्, दर्शन और ऋषि कृत ग्रन्थो की चर्चा तो छेडकर देखिए फिर पता चलेगा कि महाराज स्वभाव के सन्त ही नही है प्रत्युत पाण्डित्य में भी असाधारण है। नित्य स्वाध्याय करते है। उपदेशक के रूप मे भूखे, प्यासे रहकर, कन्धे पर बिस्तर उठा-उठाकर मीलो पैदल चलकर आपने प्रचार किया है। उपदेशक के रूप में ही रोगियो की सेवा कर पतितो का भी हृदय परिवर्तन कर के आपने कई चमत्कार कर दिखाये। प० शान्ति प्रकाश जी ने देश विभाजन से पूर्व 'रिफार्मर' उर्दू साप्ताहिक मे उपदेशक विद्यालय पर अपने एक लेख मे लिखा था कि इस विद्यालय ने महात्मा रामचन्द्र जैसी विभूतियो को जन्म दिया है। मुलतान जिला के एक ग्राम में एक मुसलमान दुष्ट आर्यसमाज का प्रचार ही न होने देता था। उसके रुग्ण होने की सूचना पाकर आप वहा गये। उसका मल मूत्र उठाया, सिर दबाया, औषधि देते रहे। उसको कोई पानी देने वाला न था। होश मे आकर उसने इस सेवक से पूछा, तुम कौन?"

आपने कहा, "मुझे आर्यों ने आपकी सेवा के लिए बुलाया है। मैं सेवक जानता हू।"

उसके पश्चाताप के आसू निकल आये। "आर्य फरिश्ता सरित होते हैं, मुझे यह पता ही न था।" उसी दुष्ट ने अब आर्यसमाज का उत्सव करवाया।

प० रामचन्द्र के रूप में ही आपमे कतई लोभ न था। इस बाल ब्रह्मचारी मे त्याग का जो भाव है उसे शब्दो मे कोई नही बता सकता। उनके त्याग व सेवा भाव को वही जानते है जिन्हे उनका सत्सग प्राप्त होता रहा है। भक्तबेली राम मठ मे एक श्रमिक थे। उन्होने अपनी दो एकड भूमि व बैंक का सब पैसा मठ को दानकर देने का निश्चय करके मठ मे शेष जीवन बिताने का विचार बनाया। स्वामी जी ने कहा आपको मठ मे ही रखेंगे परन्तु भूमि व राशि अपने पुत्रो में बाट दो। भक्तबेली राम नही माने। स्वामी जी ने उसके पुत्रों को बुलवा कर स्वय उनको पिता की सारी सम्पत्ति बाट दी। ऐसा त्यागी है कोई? मठ को मगराला ग्राम के एक सिक्ख भक्त ने चार एकड भूमिदान मे दे दी। वसीयतनामा मठ के नाम कर दिया। उसका निधन हो गया। कुछ समय के पश्चात उसकी पुत्री विधवा हो गई। श्री स्वामी जी ने वह भूमि उस विधवा पुत्री को लौटा दी। आज भी वह परिवार मठ का व स्वामी का बहुत-बहुत श्रद्धालु हैं।

भारत भर मे स्वामी जी आर्य साधुओं, विद्वानों को सहायता देते रहते हैं। सहस्रो रुपये की भेंट भी आये तो कह देते हैं, आप इसे रखिये। आवश्यकता होगी तो ले लेंगे।" मोहपाश से आप सन्यास से पूर्व ही मुक्त गये थे। मैंने आज तक उनके मुख से एक बार भी उनके ग्राम का नाम नहीं सुना। कभी अपने जन्म

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज-युग सन्दर्भ

—डा० धर्मपाल प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज कोई नया मत, सम्प्रदाय अथवा धर्म नही है। आर्यसमाज एक आन्दोलन है। आर्यसमाज के संस्थापक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्पष्ट कहा था कि—मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हू जो तीन काल मे सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना का मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी उद्देश्य नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।' ऋषिवर ने प्राचीन वैदिक धर्म, वैदिक संस्कृति सभ्यता और परम्परा की पुन. स्थापना की है। समय के सुदीर्घ अन्तराल मे सत्य सनातन वैदिक धर्म और उसके अनुयायियो मे जो अवैदिक बातें, सामाजिक कुरीतिया तथा अन्धविश्वास आ गए थे, उनको दूर करने तथा शुद्ध वैदिक धर्म को जन साधारण के सम्मुख रखने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना की थी।

आर्यसमाज मनुष्य मात्र के, अपितु प्राणीमात्र के कल्याण की कामना करता है। ससार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्यसमाज चाहता है कि व्यक्ति और समष्टि के शरीर, आत्मा और मन सब स्वस्थ हो। इसीलिए आर्यसमाज ने धार्मिक, सामाजिक राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक आदि सभी क्षेत्रो मे सुधार करने का प्रयास किया।

आर्यसमाज की आधारशिला वेद है। आर्यसमाज जन्मना जाति मे विश्वास नही करता। आर्यसमाज वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था का पक्षधर है। इसी व्यवस्था के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र मे सम्यक् सन्तुलन रह सकता है। वर्तमान वर्ग सघर्ष का भी यही एक मात्र समाधान है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जन्म के आधार पर जाति मानने का विरोध किया था। इसी विचार-धारा को आगे चलकर अन्य महापुरुषो तथा राष्ट्र नियामको ने भी अपनाया। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एव सन्यास उन चार आश्रमो की व्यवस्था भी जीवन मे सम्यक् सन्तुलन स्थापित करती है। आज मण्डल कमीशन के विरोध मे जो जातीय सघर्ष उभर कर आया है, उसका एकमात्र समाधान वर्णाश्रम व्यवस्था है जिसमें दलितो असहायो के लिए समुचित सरक्षण देने का प्रावधान है।

आर्यसमाज राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का पोषक है। विघटनकारी एव आतकवादी शक्तियो के विरुद्ध सशक्त कार्यवाही का पक्षधर है। वेद का भी यही आदेश है कि जो तेरे असहाय लोगो की हत्या करते है, उसे तू शीशे से बींध दे। शीशे से तात्पर्य गोलियो से है। पजाब एवं काश्मीर का एकमात्र समाधान पाच मील चौडी सुरक्षा पट्टी का निर्माण है, जिस पर भूतपूर्व सैनिक परिवार बसाए जाए और उन्हे आधुनिकतम सुरक्षा साधन भी उपलब्ध कराए जाए। देश के किसी भी कोने से जो अलगाववाद की आवाज आती है, उसका कारण धर्मान्तरण है। धर्मान्तरण से सामाजिक एव राजनैतिक समीकरण बिगड़ जाते हैं और इससे राष्ट्रीय अखण्डता को चोट पहुचती है। आर्यसमाज इसीलिए धर्मान्तरण को रोकने तथा शुद्धि मे विश्वास करता है। आर्यसमाज का सर्वोपरि लक्ष्य राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता तथा सभी का कल्याण है।

आर्यसमाज साम्प्रदायिकता का सबल विरोध करता है। आर्यसमाज एक आस्तिक संस्था है। आर्यसमाज ईश्वर को सम्पूर्ण जगत का मूल, सच्चिदानन्द स्वरूप निराकार सर्वज्ञ, सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान मानता है। आर्यसमाज धर्म का आदर करता है तथा सभी को धार्मिक होने की प्रेरणा देता है। रामजन्म भूमि और बाबरी मस्जिद के विषय में आर्यसमाज आपसी सद्भाव का पक्षधर है। आर्य-समाज रामजन्म भूमि को सरक्षण दिये जाने के पक्ष मे है। राम भारतीय धार्मिक आस्था एव अस्मिता के प्रतीक महापुरुष है। आर्यसमाज का धर्म मन्दिरो तक सीमित नही है। आर्यसमाज मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक स्थान और प्रत्येक दशा में धर्म का पालन करना चाहिए। सत्य का पालन उच्च आचरण का आधार है। सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्यसमाज स्त्रियो एव शूद्रो को वेदाध्ययन का अधिकार देता है तथा स्त्री जाति को समानाधिकार देने, उन्हे शिक्षा देने तथा जीवन यात्रा मे सच्चे अर्थों मे सहधर्मिणी बनाने का पक्षधर है। आर्यसमाज दलितो निर्धनो एव असहायो तथा शूद्रो-हरिजनो को भी समान सुविधाए तथा योग्यता अर्जित करने के लिए विशेष सुविधाए देना चाहता है।

राजनैतिक क्षेत्र मे आर्यसमाज 'स्वराज्य' का पक्षधर हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कहा था—कोई कितना भी करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। महर्षि दयानन्द के चिन्तन मे स्थानीय स्वशासन, प्रान्तीय स्वशासन, केन्द्रीय गणराज्य तथा केवल राज्य की अवधारणा के बीज-बिन्दु विद्यमान है। आर्यसमाज धर्म, सभ्यता, सस्कृति, भाषा की एकता मे विश्वास करता है। वह स्वभाषा, स्वराज्य, स्वभूषा, का पक्षधर है।

आर्यसमाज पाश्चात्य चकाचौध से दूर भारतीय सस्कृति की उत्कृष्टता मे विश्वास करता है। आर्यसमाज ने उन सभी कार्यों की नीव डाली जो भारत को सुदृढ एव समृद्ध राष्ट्र बना सकते हैं। आर्यसमाज के ही कार्य को आगे चलकर महात्मा गाधी ने आगे बढाया था।

आर्यसमाज के प्रमुखतम कार्यक्रम निम्न हैं—एक परमात्मा की पूजा, वेदो की पुन· प्रतिष्ठा, वेदो की अपौरुषेयता, जन्मना जाति का विरोध और वर्णाश्रम व्यवस्था, समाज सेवा, स्वशासन, दलितोद्धार, नारी शिक्षा, देशभक्ति का प्रचार-प्रसार, मनुष्य के निजी और समष्टिगत गुणो का विकास।

आर्यसमाज गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली का पक्षधर है। इसमे वर्तमान एव वैदिक मानविकी, वैज्ञानिक, अभियान्त्रिकी तथा आरोग्य शिक्षाए भी सम्मिलित है।

आर्यसमाज सस्कृत, हिन्दी तथा भारतीय भाषाओ के विकास के लिए प्रयत्नशील हो आर्यसमाज अग्रेजी की दासता को छोडकर हिन्दी को राजकाज तथा व्यवहार की भाषा के रूप मे अपनाना चाहता है, आर्यसमाज सतीप्रथा, भ्रूण हत्या, बालविवाह आदि का विरोधी तथा अन्तर्जातीय विवाह का समर्थक है। आर्यसमाज दूरदर्शन तथा फिल्मो द्वारा सस्कृति प्रसार के नाम पर अश्लीलता का घोर विरोध करता है। आर्यसमाज ब्रह्मचर्यादि आश्रमो के परिपालन को वरीयता देते हुए नैतिकता के विकास पर बल देता है। आर्यसमाज गौरक्षा का हिमायती है। आर्यसमाज खान-पान मे शुद्धता पर बल देता है। आर्यसमाज शाकाहार का समर्थन तथा मासाहार का विरोध करता है आर्यसमाज हर प्रकार के नशे-मद्यपान, धूम्रपान, चरस, गाजा, अफीम, स्मैक आदि का विरोध करता है।

आर्यसमाज एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था का पक्षधर है जिसमे कोई भी केवल अपनी उन्नति मे सन्तुष्ट नही रहता है बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझता है।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन के अवसर पर आर्यसमाज घोषणा करता है कि उपर्युक्त मन्तव्यो के प्रचार-प्रसार के लिए, वह सदैव देश-विदेश मे प्रयत्नशील रहेगा। [ए/एच-१६, शालीमार बाग, दिल्ली-५२]

'संकल्प ग्रन्थ-१९९०' का विमोचन

नई दिल्ली : भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति डा० शकर दयाल शर्मा ने २९ नवम्बर को अपने निवास पर आयोजित एक समारोह मे हिन्दी अकादमी द्वारा प्रकाशित एक भव्य "सकल्प ग्रन्थ—१९९०" का विमोचन किया।

इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुये डा० शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय जन जागरण एव चेतना जागृति मे भारतीय भाषाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होने आगे कहा कि ऐसे उपयोगी ग्रन्थ को जन-जन तक पहुचाने के लिये अकादमी को विशेष प्रयास करने चाहिये।

स्वामी दयानन्द ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को समृद्ध किया

इस अवसर पर प्रख्यात पत्रकार श्री अक्षय कुमार जैन के ने कहा कि यह कहना गलत है कि आज हिन्दी लादी जा रही है। वस्तुत राष्ट्रभाषा हिन्दी को गैर हिन्दी भाषी स्वामी दयानन्द ने समृद्ध किया था। इसी प्रकार बगाल के सर्व श्री केशव चन्द सेन, रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि अन्य अहिन्दी भाषियो ने भी हिन्दी के विभाग मे योगदान दिया है। इस सम्बन्ध मे उल्लेखनीय है कि युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सस्कृत के प्रकाड पण्डित होते हुये भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के पत्र-लेखन, गद्य लेखन आदि अनेक विद्याओ को विकसित करने मे जो अमूल्य योगदान दिया वह हिन्दी साहित्य के इतिहास मे स्वर्णाक्षरो मे अकित रहेगा।

लब्ध प्रतिष्ठित समालोचक प्रो० विजयेन्द्र स्नातक ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे इस सकल्प ग्रन्थ को अद्वितीय एव मील का पत्थर बताया।

इस कार्यक्रम को सुचारु सचालन करते हुये हिन्दी अकादमी के सचिव डा० नारायण दत्त पालीवाल ने अकादामी की महत्वपूर्ण योजनाओ की जानकारी देते हुये बताया कि ५६० पृष्ठ के इस ग्रन्थ मे हिन्दी व गैर हिन्दी भाषी विद्वान साहित्यकारो की लगभग १५० रचनायें सकलित है।

इस अवसर पर दिल्ली के उपराज्यपाल एयरचीफ मार्शल (सेवानिवृत्त) श्री अर्जुनसिंह सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री कन्हैयालाल नन्दन, साहित्यकार डा० कृष्णदत्त पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किये। सभी वक्ताओ ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे अकादमी के योगदान की भूरि-भूरि सराहना की।

कार्यक्रम का शुभारम्भ 'सगीतायन' द्वारा प्रस्तुत 'सरस्वती वन्दना' से हुआ। कार्यक्रम मे ग्रन्थ के अतिरिक्त अकादमी को सहा० सचिव श्रीमती स्नेह लता, कार्यक्रम अधिकारी श्री नरेन्द्र गुप्ता ने भी पुष्पगुच्छो द्वारा माननीय अतिथियो का स्वागत किया।

काश्मीर विस्थापित सहायता शिविरों का विवरण

दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा के अन्तर्गत स्त्री समाजो की बहिनो ने काश्मीर के विस्थापितो कैम्पो मे जाकर चावल, चीनी, चाय, नहाने एव कपडे धोने का साबुन, दाले मसाले, रसोई के बर्तन, प्लास्टिक की बाल्टिया, तौलिये, चादरें तथा पहनने के कपड़े एव चप्पले वितरित किये । आर्यसमाज मन्दिर मार्ग भी काफी सामग्री पहुंचाई गई, लगभग बीस हजार रुपये की राशि नकद भी दी गई।

दक्षिण दिल्ली आर्य मण्डल की ओर से ऊपर वर्णित सामान के अतिरिक्त स्कूल के बच्चो को गणवेश जूते एव मौजे दिये गये। प्रत्येक परिवार को दो बार पचास-पचास रुपये की नगद राशि भी वितरित की गई। आर्यसमाज जगपुरा की ओर से तीन महीने तक कृष्णा मार्किट वाले कैम्प मे प्रातःकाल का नाश्ता एव दूध दिया जाता रहा।

भारतीय लोक कल्याण न्यास के आदेशानुसार आर्यसमाज ग्रीन पार्क की श्रीमती कौशल्या देवी के सौजन्य से सौ कम्बल बेगमपुर, हौजरानी तथा अमर कालोनी मे दिये गये। श्रीमती शान्ति देवी अग्निहोत्री के सौजन्य से पचास कम्बल एव पचास रजाईया, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की अधिकारी बहिनों के प्रयास स ८० कम्बल अलीगज, पालिका केन्द्र चाणक्यपुरी और कृष्ण मार्किट मे १३ नवम्बर को वितरित किये।

३१०० रु की राशि आर्य समाज करोलबाग, २५ कम्बल, दो गर्म सूट मर्दाना पटेल नगर, १००० आर्य समाज साकेत, ५०० आर्य समाज जगपुरा से नकद राशि। १२०० रु' के कम्बल आर्य समाज, लाजपत नगर, १२०० रु, अमर कालोनी २००० मालवीय नगर, चादरानी एक हजार कैलाश कालोनी, पाचहजार श्रीमती कमला सूद, दानवीर मलहोत्रा टैट हाऊस, श्रीमती कृष्णाजी रहेजा दो सौ रु दस शाल कालका जी, ६ शाल माडल टाऊन एक हजार रजाईया ग्रेटर कैलाश पार्ट-२ ने तथा चालीस रजाईया आर्य समाज माडल टाउन ने काश्मीर विस्थापितो की सहायतार्थ श्रीमती ने केदारनाथ जी साहनी को भेट की।

महिला सभा की अधिकारी बहिने दिल्ली के ग्यारह कैम्पो में गई और अपने हाथो से सामान वितरित किया। सर्व श्रीमती शकुन्तला आर्य अध्यक्षा प्रान्तीय आर्य महिला सभा, उपाध्यक्षा सरलामेहता, प्रकाश आर्या शान्ति मलिक। मन्त्रिणी कृष्णा चड्ढा, सहायक मन्त्रिणी शकुन्तला दीक्षित, कृष्णा रसवन्त, रामचमेली, चादरानी एव कोषाध्यक्षा तारा जी वैद ने कश्मीर विस्थापित कैम्पो में जाकर कम्बल एव रजाइया वितरित की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और काश्मीर सहायता समिति के अध्यक्ष श्री विश्वभरनाथ भाटिया ने प्रान्तीय महिला सभा की बहनो के इस पुनीत कार्य मे सहयोग दिया।

—श्रीमती कृष्णा चड्ढा (मंत्रिणी)

श्री रत्न सागर

श्रीमज्जगद् गुरु १००८ श्री आचार्य गरीबदास जी महाराज की सटिप्पणी सक्षिप्त अमृतमयी वाणी का सम्पादन महामण्डलेश्वर डा० स्वामी श्यामसुन्दरदास शास्त्री, सख्या योग वेदान्ताचार्य, साहित्य आयुर्वेदाचार्य एम० ए० आचार्य श्री गरीबदासजी साधु सस्कृत महाविद्यालय मायापुर, हरिद्वार ने किया है। इसकी भूमिका के लेखक है—साहित्यवाचस्पति डा० विष्णुदत्त राकेश, एम०ए० पी-एच० डी०, डी० लिट, प्रोफेसर एव अध्यक्ष, गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार। यह वस्तुतत्व तो विश्वविदित ही है कि भारतीय धर्म, सस्कृति एव अध्यात्मवाद के एकमात्र मूलाधार वेद एव दर्शनशास्त्र है। सन्त साहित्य एव सन्त परम्पराए इस तत्त्व की पोषक रही है। इस सनातन सत्य के प्रचार प्रसार मे धर्माचार्यों, सन्त महापुरुषो तथा प्रबुद्ध द्विज समाज का विशेष योगदान रहा है। इन्होने अपने ज्ञानालोक और जीवन की श्रेष्ठता साधनाओ से मानव समाज को शान्ति सद्भाव एव सौमनस्य के मार्ग पर चलने की प्रबल प्रेरणा दी है। "सगच्छध्व, सवदध्व सवोमनासि जानताम्" का आदर्श हमे सदैव सगठित करता रहा है और इससे हमारी सामाजिक एकता को बल मिला है। इस पुस्तक मे ऐसे ही सन्त गरीबदास की वाणी को सकलित किया गया है।

[श्री रत्न सागर--स० स्वामी श्यामसुन्दरदास शास्त्री, प्रकाशक--श्रीगरीबदास सन्तसाहित्य शोध सस्थान--मायापुर, हरिद्वार, पृष्ठ ४७२, मूल्य २५-००]

मूलचन्द गुप्त, सम्पादक

पुस्तक समीक्षा

स्वामिनी मोरा यति साहित्य माला

हम आर्यसन्देश के पिछले अंको में आदरणीय स्वामी मीरां यति के द्वारा वेदप्रचारार्थ किये गये कार्यों तथा उनके द्वारा प्रकाशित साहित्य का विवरण दे चुके हैं। पिछले दिनों श्रद्धेया माता जी से आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में भेट हुई थी। उन्होने बताया कि पहले उन्हें अपना साहित्य डाक से भेजने मे कठिनाई होती थी परन्तु अब उन्होंने एक ब्रह्मचारी की व्यवस्था कर ली है। अब वे डाक से साहित्य भिजवा सकेंगी। वे अपनी पुस्तकें नि.शुल्क वितरित करती हैं। सुधी पाठकों को चाहिए कि जो पुस्तकें मगाए, डाक व्यय पहले भेज दे अथवा स्वयं जाकर उनसे पुस्तके प्राप्त कर लें। इस समय प्राप्त साहित्य निम्न प्रकार हैं :

१. पावमानी—इसमे गृहस्थियो के लिए पांच मन्त्रो की सुललित व्याख्या दी गई है।

२. दिव्य ज्योति महर्षि दयानन्द—इसमे महर्षि के गुणो का वर्णन है।

३. सुरत्ना नारी—यह पुस्तिका नारी के कर्तव्यो के विषय में है। इसमें सतीप्रथा की अप्रासगिकता पर भी प्रकाश डाला गया है।

४. उद्यान ते पुरुष.—इसमें उन महापुरुषो के उन्नयन की कहानिया हैं जो हमारे प्रेरणा स्रोत हैं।

५. आदर्श कहानिया—इसमे शिक्षाप्रद कहानिया सकलित की गयी है।

६ स्वामी श्रद्धानन्द की अमर कहानी—इस काव्यात्मक पुस्तिका में स्वामी श्रद्धानन्द का प्रेरणादायक चरित्र वर्णित है।

पुस्तक प्राप्ति स्थान : स्वामिनी मीरां यति, आर्यवानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार

श्रद्धेय स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की जीवन झांकी

(पृष्ठ ४ का शेष)

के परिवार कुल, जात बिरादरी का नाम नही सुना। अब पीछे कुल में कौन कौन है, यह कभी चर्चा नही की। वह कुल एक सम्पन्न मध्यवर्गीय परिवार है। सारा ग्राम इस बात पर इतराता है कि स्वामी सर्वानन्द नाम के एक महापुरुष ने यहा जन्म लिया है।

श्री स्वामी जी महाराज के आयुर्वेद के सूक्ष्म ज्ञान की भी आर्य जगत् में बहुत चर्चा सुनी जाती है। स्वामी जी ने आयुर्वेद व यूनानी चिकित्सा पद्धति का गुरुमुख से अध्ययन किया है। आप जब उपदेशक विद्यालय मे पढ़ते थे। तभी पूज्य स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज से वैद्यक के ग्रन्थो का भी अध्ययन किया। स्वामी जी ने समय-समय पर आपको अमृतसर मे एक उदासी विद्वान महात्मा रामस्वरूप जी के पास चरक आदि ग्रन्थो के पठन-पाठन के लिये भेजा। वह प्रातः चार से पाच बजे तक पं० रामचन्द्र जी को पढाया करते थे।

श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के एक भक्त वैद्य तिलकराम जी अमृतसर मे एक प्रसिद्ध विद्वान वद्य थे। आपने उनसे भी वैद्यक ग्रन्थों का अध्ययन किया। औषधियो के निर्माण की विधि भी वही सीखी। श्री स्वामी महाराज ने आपको बटाला जिला लुधियाना मे भी वैद्यक के अध्ययन के लिए भेजा था। वहा आपने श्री महन्त विष्णुदासजी से बहुत कुछ सीखा। प० विष्णुदास जी उदासी महात्मा थे। आपके सत्सग से ही स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज आर्य समाजी बने थे। आप बहुत विख्यात वैद्य थे। आर्यसमाज मे भी उनका बड़ा सम्मान था।

जब दयानन्द मठ की स्थापना हो गई तब बाद दोपहर पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज से यूनानी के सब फारसी उर्दू के प्रामाणिक ग्रन्थो को पढ़ा। इस प्रकार श्री प० रामचन्द्र जी ने आयुर्वेद व यूनानी का गम्भीर व सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त करने के लिए वर्षो साधना की है। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज वैद्यक के बडे विद्वान थे। दीनानगर मे और भी कई वैद्य हकीम उनसे पढ़ते रहे। अपने प्रिय शिष्य प० रामचन्द्रजी को उन्होने आयुर्वेद व यूनानी का अधिकारी विद्वान बनाने के लिए कोई कमी न छोड़ी।

यह स्मरण रहे कि एक घटना के घटित होने के कारण स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी कभी किसी रोगी को कोई परामर्श न देते थे। किसी को औषधि न देते थे और न बताते थे। ऐसा उन्होने व्रत ले रखा था परन्तु वैद्यो हकीमो को जो पढने आते थे, पढ़ा देते थे। मठ मे यदि कोई ऐसा रोगी आ गया जिसकी अवस्था बड़ी गम्भीर होती तो श्री पं० रामचन्द्र जी उनसे मार्ग दर्शन ले लेते थे। स्वामी जी स्वय रोगी को कभी नही देखा करते थे। वह घटना क्या थी? जिसके कारण महाराज ने वैद्यक छोड़ी—यह पाठको को उनकी जीवनी में पढ़नी चाहिए। तपोनिधि स्वामी सर्वानन्द अपने महान गुरु की एक अद्भुत देन है।

वसन्त मेला

गत वर्षों की तरह गु०म० कण्वाश्रम का वसन्त मेला दिनांक २१-२३-२३ जनवरी १९९१ को सोल्लास मनाया जा रहा है इस वसन्त मेले को देखने के लिये सभी सादर आमन्त्रित हैं।

—विश्वपाल जयन्त, प्रधानाचार्य

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

वेद प्रचार मंडल, उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली की ओर से रविवार १६ दिसम्बर १९९० को प्रातः ९ बजे आर्य समाज रानी बाग मे श्री विद्यारत्न जी सागर की अध्यक्षता मे बडे समारोह पूर्वक मनाया गया। श्रीमती स्वर्णाजी के मनोहर भजनों के बाद हालैण्ड वाली श्री आल्फास वालवेट ने भारत मे राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि भारत ही ऐसा देश है जिसमें राष्ट्र भाषा का इतना निरादर किया जाता है। ब्र० राजसिंह जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के अमर बलिदान की चर्चा करते हुए शुद्धि के कार्य को सशक्त बनाने की अपील की। उन्होने कहा कि देश को बचाने का एक मात्र उपाय यही है। श्री सत्यप्रकाश जी आर्य ने अपने आस पास की बस्तियो में वैदिक धर्म का प्रचार करने पर जोर दिया। श्री लाजपतराय जी आहूजा ने सभी आर्यों से अपनी सन्तानो को सत्संग में लाने का अनुरोध किया। श्री प्रभुदयाल जी भाटिया ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाने की अपील की। अध्यक्ष महोदय ने शायरी के माध्यम से स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला। अन्त मे मन्त्री जी ने वेद प्रचार के कार्य को गतिशील बनाने की अपील की।

—हरिदत्त मन्त्री

हरयाणा का चुनाव

(पृष्ठ१ का शेष)

और सार्वदेशिक सभा से बार-बार मागने पर भी हरयाणा सभा को यह भाग न मिल सका। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने निश्चय किया है कि सार्वदेशिक सभा से अनुरोध किया जावे कि वह अपने आदेश के पालन के लिये हरयाणा सभा की उक्त राशि पंजाब सभा से दिलवाये अन्यथा विवश होकर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को सार्वदेशिक सभा के कार्यालय के समक्ष धरना देना होगा।

२—यह सभा भारत सरकार के राष्ट्रपति से अनुरोध करती है कि दूरदर्शन पर अंग्रेजी भाषा को बढावा देने और चित्रहार कार्यक्रम मे अश्लीलता गुण्डागर्दी और चोरी तथा डाका तथा बलात्कार आदि के प्रसारण दिखाने पर जो करोड़ों रुपया खर्च किया जाता है उस कार्यक्रम को तुरन्त बन्द किया जावे।

३—भारत सरकार से यह भी अनुरोध किया गया कि केन्द्रीय सेवाओ के चयन मे जो परीक्षाये आयोजित की जाती है उनमें राष्ट्र भाषा हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषाओ का प्रयोग किया जाये।

—केदारनाथ आर्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली का चुनाव संपंन

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली का चुनाव सुप्रसिद्ध पत्रकार व वैदिक विद्वान प० क्षितीत कुमार वेदालंकार जी की अध्यक्षता मे आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग में सम्पन्न हुआ, जिसमें सन् १९९०-९१ के लिए निम्न अधिकारी चुने गये।

अध्यक्षता : श्री अनिल कुमार आर्य
कार्यकर्त्ता अध्यक्ष अजय सहगल
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री धर्म आर्य
उपाध्यक्ष : श्री विजय चौधरी
: श्री विश्वनाथ
महामन्त्री : श्री चन्द्र मोहन आय
मन्त्री . श्री सुशील आर्य
: श्री धर्मपाल आर्य
कोषाध्यक्ष : श्री वीरेन्द्र आहूजा

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 3,4-1-1991 [Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू० १३९

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की यह धार्मिक एवं साप्ताहिक सभा श्री पं० आशुराम जी पुरोहित आर्य समाज सैक्टर २२ चण्डीगढ़, तथा वेदों के प्रकाण्ड विद्वान एवं कर्मठ आर्य परिवारों तथा समाज को प्रेरणा देने वाले, पिछले दिनों हृदयगति रुकने से इस संसार की यात्रा अपूर्ण छोड़कर स्वर्ग सिधार गये। यह सभा उनकी दिवंगत आत्मा की शान्ति तथा परमपिता परमात्मा उनको अपने चरणों में स्थान दें, और जन्म-मरण बन्धनों से छुटकारा दें, प्रार्थना करती है, और उनके सभी परिवारीजनों एवं इष्टमित्रों तथा सम्बन्धियों को इस अकस्मात् कष्ट को सहने की शक्ति प्रदान करें।

—गुरदयाल सिंह आर्य—मन्त्री

अनुरोध

'श्री केशव आर्य' क्या सुन्दर नाम है। यह युवक अब १९ वर्ष का है। तीन वर्ष हुये इसने स्वेच्छा से श्रद्धासहित हिन्दू धर्म स्वीकार किया था। एक वर्ष इसने संस्कृत विद्यालय में हिन्दू धर्म की शिक्षा भी ग्रहण की। यह तीन वर्ष से ही अखिल भारत हिन्दू महासभा के संरक्षण में है। यह वस्त्र सिलाई का काम जानता है। अभी इसे एक सिलाई की नई मशीन लेकर दी गई है। इसका स्वावलम्बी अर्थात् अपने पैरों पर खड़ा होना आवश्यक है। इसको धन की आवश्यकता है। शुद्धि में रुचि रखने वाले दानी महानुभावों से अनुरोध है कि केशव आर्य की सहायता के लिए अखिल भारत हिन्दू महासभा के कार्यालय मन्त्री के नाम पर चैक ड्राफ्ट (ड्राफ्ट) एवम् डाक धनादेश द्वारा धन भेजें। इन्द्र सेन वर्मा, उपाध्यक्ष

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, मेस्टन रोड, कानपुर का १११ वाँ [illegible] शिवरात्रि के अवसर पर शनिवार, ९ फरवरी से मंगलवार १२ फरवरी १९९१ तक श्रद्धानन्द पार्क में मनाया जाना निश्चित हुआ है।

इस अवसर पर—श्रीयुत प्रो० रत्नसिंह जी, एम० ए०, 'श्रीयुत प्रो० उत्तम चन्द जी शरर एम० ए०, श्रीयुत प्रो० महेन्द्रपाल सिंह जी, एम० ए०, श्रीयुत बीरेन्द्र रत्नम् जी, एम० ए०, श्रीयुत कुंवर महीपाल सिंह जी, भजनोपदेशक, "संगीत रत्न' श्रीयुत नरेन्द्र मोहन जी श्रीयुत गुलाब सिंह जी "राघव" भजनोपदेशक, श्रीयुत पं० देवीप्रसाद जी आर्य, भजनोपदेशक, श्रीयुत डा० वेदपाल सिंह जी, आर्य भजनोपदेशक, श्रीयुत जलेश्वर मुनि जी भजनोपदेशक, श्रीयुत ठा० जयराम जी "त्यागी" एम० ए०, आदि पधार रहे हैं।

डा० आनन्द सुमन का प्रचार कार्य

नई दिल्ली। आर्य समाज के महोपदेशक डा० आनन्द सुमन ने मध्य प्रदेश के मन्सौर जिले के सुवासरा, बसई तथा खेजड़िया राठौर में तीन दिन तक वैदिक धर्म का प्रचार किया और नौ जन सभाएं संबोधित की जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा।

खेजड़िया राठौर में डा० आनन्द सुमन की प्रेरणा पर आर्यसमाज की स्थापना की गई जिसको प्रधान श्री बंशीलाल शर्मा व मंत्री श्री गोवर्धनलाल ओझा को मनोनीत किया गया तथा २६ सदस्य बनाए गए। एक सौ युवकों ने डा० आनन्द सुमन की प्रेरणा पर शराब, मांस और तम्बाकू-बीड़ी आदि के सेवन के त्याग का व्रत लिया।

—सम्पादक

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष,
पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ. प्र.)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अक १२ रविवार, १३ जनवरी, १९९१ विक्रमी सम्वत् २०४७ दयानन्दाब्द : १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष ३१०१५०

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर अभूतपूर्व शोभा यात्रा

आर्य सेवक देश की एकता व अखण्डता बनाए रखने का प्रण लें

—स्वामी आन्दबोध सरस्वती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के उपलक्ष्य मे तथा आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द के ६४वें बलिदान दिवस के अवसर पर राजधानी मे एक अभूतपूर्व शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। जलूस का नेतृत्व सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती ने किया। जलूस मे देश की विभिन्न प्रतिनिधि सभाओ के पदाधिकारी, मारीशस, लन्दन, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका, नेपाल आदि देशो के भी आर्य नेताओ सहित, स्कूली बच्चो एवं लाखो आर्य नर-नारियों ने, कडाके की सर्दी व शीतलहर के बावजूद भी श्रद्धा व उत्साह पूर्वक भाग लिया। जलुस श्रद्धानन्द बलिदान भवन एव रामलीला मैदान से प्रारम्भ होकर चावडी बाजार, चांदनी चौक से होता हुआ, लालकिला मैदान मे श्रद्धाजलि सभा मे परिवर्तित हो गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध ने ऐतिहासिक लालकिला मैदान से आर्य जनो को सम्बोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक आर्य सेवक को स्वामी श्रद्धानन्द का तेजस्वी रूप धारण कर दयानन्द के स्वप्न को पूरा करने मे तथा देश की एकता व अखण्डता को बनाये रखने मे अपना जीवन अर्पित करने का प्रण लेना चाहिए। स्वामी जी सभा की अध्यक्षता कर रहे थे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने देश विदेश से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा-सम्मेलन मे पधारे अतिथियो का अभिनन्दन किया।

समारोह के मुख्य अतिथि सासद श्री मदनलाल खुराना ने, स्वामी श्रद्धानन्द को एक ऐतिहासिक पुरुष बताते हुए कहा कि स्वामी जा ने समाज व राष्ट्र की सेवा के लिये अपने प्राणो का बलिदान दिया था। इस अवसर पर सासद श्री कपिलदेव शास्त्री, स्वामी विशुद्धानन्द शास्त्री, श्री उत्तमचन्द जी शरर, दक्षिण अफ्रीका के श्री एस० रामभरोसे, डा० शिव कुमार शास्त्री, श्रीमन मोहन तिवारी आदि ने भी बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्वामी श्रद्धानन्द की सेवाओं का स्मरण कर उन्हे श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप-प्रधान एवं महान स्वतन्त्रता सेनानी प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव को स्वामी आनन्दबोध ने मेजर अश्विनी कुमार वैदिक विद्वान पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। स्वामी जी ने प० जी को शाल उढाकर एव श्री खुराना ने सम्मान राशि भेंट की। इससे पूर्व श्रद्धानन्द बलिदान भवन पर तथा रामलीला मैदान मे दोनो स्थानो पर प्रात यज्ञ का आयोजन किया गया था।

(विमलकान्त शर्मा)
मन्त्री

"वेदों में सभी समस्याओ का निदान है"

—डा० कर्णसिंह

जाने-माने विद्वान और अमेरिका में भारतीय राजदूत रहे डा० कर्णसिंह ने कहा कि विश्व की सभी समस्याओ का हल वेदो में है। वह १४वे अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे। सम्मेलन आज रामलीला मैदान में शुरू हुआ।

डा० कर्णसिंह ने कहा कि चाहे युद्ध की धमकी हो, जातीय या धार्मिक तनाव हो या वातावरण में प्रदूषण की समस्या हो, वेदो की मदद से ऐसी समस्याओ का हल आसानी से निकाला जा सकता है। उन्होने कहा कि वेद किसी एक समुदाय, जाति व धर्म से सम्बन्धित नही है। इनका रिश्ता तो पूरी मानवता से है।

डा० कर्णसिंह ने कहा कि हिमालय हमारी खुशहाली का प्रतीक है। ठीक उसी तरह वेद हमारी अध्यात्मिक व धार्मिक संस्कृति का मूलाधार भी हैं। उन्होने कहा कि वेदों मे पर्वत, नदी, नाले, वायु आदि की स्वच्छता पर विशेष बल दिया गया है। उन्होने कहा कि यदि आज प्रदूषण को न रोका गया तो मानव का अस्तित्व ही खतरे मे पड़ जाएगा। इस अवसर पर प्रेम प्रभाकर द्वारा लिखित "कर्मवीर जयानन्द भारतीय" पुस्तक का विमोचन किया गया। पुस्तक का विमोचन डा० कर्णसिंह ने किया।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्र० सम्पादक— सूर्यदेव सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद को सम्भाल कर रखिए

--डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार,

आर्यसमाज गोरखपुर

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां
पावमानी द्विजानाम् । आयु प्राण प्रजां
पशु कीर्ति द्रविणं ब्रह्मवर्चसम् । मह्यं दत्वा
व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥ अ० १९। ७१। १

भक्त कहता है (प्रचोदयन्ता) मन को उत्साह से प्रेरणा करने वाली (वरदा वेदमाता) श्रेष्ठ ज्ञान देने वाली वेद माता की (मया स्तुता) मैंने स्तुति की है— मैंने अध्ययन किया है। प्रभु आदेश करते हैं कि (आयु: प्राण, प्रजा पशु, कीर्ति, द्रविणम्) आयु, प्राण, प्रजा पशु, कीर्ति, ज्ञानतेज (मह्यं दत्वा) मुझे देकर (ब्रह्मलोके व्रजत) ब्रह्मलोक अर्थात् मुक्ति लोक को प्राप्त होओ। वेदाध्ययन से तत्वज्ञान होता है उसके बाद सर्वस्वत्याग द्वारा मोक्ष प्राप्त होता है।

यस्माद् कोशादुद्भराम वेद तस्मिन्नन्तरवदध्य: एनम् ।
कृतमिष्ट ब्रह्मणो वीर्येण तेनमा देवास्तपसावतेह ॥

अ० १९। ७२। २

(यस्मात् कोशात्) जिस कोश से (वेद उद्भराम) वेद को हमने उठाया था (तस्मिन अन्त:) उसके बीच में (एन अवदध्म) इसको रखते हैं। (ब्रह्मण. वीर्येण) वेद ज्ञान के बल से (इष्ट कृतम्) हमने इष्ट कर्म किया है। (तेन तपसा) उस तप से (देव:) सब दिव्य शक्तियां (मा इह अवत) मेरी यहां रक्षा करें।

मैंने जब गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से 'वेदालंकार' की उपाधि प्राप्त करने के बाद अपने देवरिया जिले के गांव में पदार्पण किया तो मैं वहां एक विचित्र जानवर था। मुझ से पूर्व प्रकाश विद्या के अधिष्ठाता, मनस्वी श्री वीरेन्द्र जी विद्या वाचस्पति भी गुरुकुल से पढ़कर आ चुके थे। परन्तु मैं उनके ९ वर्ष बाद आया था। मुझे जो देखने आए उनमे एक वेदादि से कुछ परिचित वाराणसी से संस्कृत शिक्षा प्राप्त सज्जन भी थे। उन्होने आते ही एक प्रश्न पूछा "क्या आपने पूरे वेद पढ़े हैं?" मैंने कहा "वेदों का पूरा पढ़ना तो सम्भव नही था। वेद के अतिरिक्त ग्रन्थ भी विषय पढ़ने होते हैं। हां, वेद की कुछ बातें पढ़ी हैं। उन्होंने कहा "आप वेदालंकार हैं फिर भी वेद पूरे नही पढ़े?" मैं उन्हे इस विषय में क्या कहता मुझे उस समय कृष्ण यजुर्वेद के तैत्तिरीय ब्राह्मण की एक कथा का ध्यान आया। उसमे कहा गया है, "ऋषि भारद्वाज ने जीवन भर तपस्या की। तपस्या से प्रसन्न होकर इन्द्र प्रकट हुए और भारद्वाज से पूछा कि 'यदि तुम्हे एक जन्म और मिल जाय तो तुम उस जन्म मे क्या करोगे?" भारद्वाज पहले तो सोचने लगे और बाद मे बोले "मैं इस जन्म की ही भांति तपस्या करूंगा और उस जन्म मे भी वेदाध्ययन करूंगा।" इन्द्र ने फिर पूछा "यदि तुम्हें पुन एक जन्म और मिले, तो क्या करोगे?" मैं जितने भी जन्म मिलेंगे सब मे तप करता हुआ वेदो का अध्ययन ही करता रहूंगा।" इस उत्तर के साथ ही भारद्वाज के सामने तीन पर्वत प्रकट हुए। इन्द्र ने उन तीनो में से एक मुट्ठी भर कहा "भारद्वाज! अब तक वेदों को पढ़कर जो कुछ ज्ञान तुमने प्राप्त किया है और दूसरे जन्मो मे जो ज्ञान तुम प्राप्त करोगे सो सब इन पर्वतो की तुलना मे इस मुट्ठी के समान है। वेद तो अनन्त हैं—अनन्ता वै वेदा.।"

सचमुच वेद अनन्त है। वेदो का ज्ञान प्राप्त करना बहुत कठिन है। वेद का प्रत्येक मन्त्र इतना निगूढ, इतना दुरूह और इतना सूक्ष्म भावापन्न है कि बड़े-बड़े विद्वान्, ऋषि महर्षियो ने एक-एक मन्त्र का चिन्तन, मनन और निदिध्यासन किया है और फिर भी अगम्य अगम्य रहे। ऋग्वेद के १-७१-१ मन्त्र का भाव है कि वेदार्थ ज्ञान अगम्य है। परन्तु जो मनुष्य सरस्वती—ज्ञान की देवी के प्रेम में मग्न होता है, जिसने वेद की पवित्रतम उपासना में अपने को अर्पित कर दिया है उसे आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक कुछ न कुछ अर्थ ज्ञात होगा ही। वेद के ज्ञान का मतलब है उसकी शिक्षा को समझना, उस पर चिन्तन करना और उसे जीवन मे उतारना। मनु महाराज कहते हैं—

प्रभु! नमस्कार

नम: सायं नम: प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा ।
भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकर नम: ॥
अथर्व : ११। १, २, १६

सुख-दु:ख के इस भवसागर में, करके प्रभु तुम्ही पार।
सन्ध्या प्रभात या दिवस रात, प्रभु तुमको मेरा नमस्कार॥

भव जन्म ज्योति के तारक हो,
नभ मे सुख के विस्तारक हो,
ये जन्म मिला इस जग में जो,
सचमुच सुख के सचारक हो।

सुख कारक तेरे गुण अपार, तेरे सद्गुण को नमस्कार।
सन्ध्या प्रभात या दिवस रात, प्रभु तुमको मेरा नमस्कार॥

दु:ख नाश तुम्ही तो करते हो,
आनन्द हृदय मे भरते हो,
सुख तभी हमें मिल पाता है,
जब कष्टो को तुम हरते हो।

शिव कष्ट निवारक सर्व सुमन, उपकारी गुण को नमस्कार।
सन्ध्या प्रभात या दिवस रात, प्रभु तुमको मेरा नमस्कार॥

भव प्रकाश जब छायेगा,
सुख सर्व तभी तो आयेगा,
कल्याण कली खिल जाने पर,
हर क्षण जीवन मुस्कायेगा।

परमेश तुम्हारे गुण गण को, प्रतिक्षण है मेरा नमस्कार।
सन्ध्या प्रभात या दिवस रात, प्रभु तुमको मेरा नमस्कार॥

—देवनारायण भारद्वाज

"भूत भव्य भविष्य च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति"

भूत, भविष्य, वर्तमान सब वेद से ही सिद्ध होता है।

ऋग्वेद में १०-९०९ मन्त्र हैं—

तस्माद्यज्ञात् ऋच सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥

अर्थात् उस यज्ञ से ऋग्वेद, सामवेद उत्पन्न हुए अथर्ववेद उसी से उत्पन्न हुआ और यजुर्वेद भी उत्पन्न हुआ। मनु जी महाराज ने लिखा है—

अग्नि वायु रविभ्यस्तु त्रये ब्रह्म सनातनम्।
दुदोह यज्ञ सिद्ध्यर्थं ऋग्यजु: सामलक्षणम्॥

अर्थात् ऋग्यजु साम रूप तीनो शाश्वत वेदो को यज्ञ की सिद्धि के लिए अग्नि, वायु और सूर्य से दुहा अर्थात् प्राप्त किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती की वेदो के प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे उसे ईश्वरीय ज्ञान मानते थे और उन्होंने वेद पढ़ने का अधिकार भी सबको दिया था। उनका विचार है कि अग्नि, वायु, सूर्य और अंगिरा "प्राथमिक ऋषि" हैं। इनके द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ मे चार वेद ऋक्, यजु, साम और अथर्व प्रकट हुए। इसके बाद अनेक ऋषियों ने मन्त्रो को देखा—"ऋषयो मन्त्र द्रष्टार:' और उनके नामो पर सूक्तादि प्रसिद्ध हुए। स्वामी जी वेद मे नित्य इतिहास मानते हैं और अनित्य व्यक्तियों का वर्णन नही मानते। प्रकृति प्रत्यय पर चलने वाली यौगिक शैली द्वारा अर्थ निकालते हैं। उन्होंने वेदो में आए नदी, पर्वत और ऐतिहासिक और भौगोलिक नाम न मान कर उनका यौगिक अर्थ मानते हैं। उनके अनुसार वशिष्ठ, भारद्वाज और विश्वामित्र का अर्थ क्रमश: प्राण, मन और कान आदि किया है। इस प्रकार आर्यसमाज की दृष्टि से यौगिक अर्थ ही वेदो के माने गए हैं। यास्क भी यौगिक अर्थ में विश्वास करता है। सायण, महीधर, उवट आदि भी वेद को नित्य मानते हैं। प्रभु प्रदत्त मानते हैं।

(क्रमश:)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

लोहड़ी और मकर संक्रान्ति

सम्पादकीय

भारतीय विक्रमी अथवा शक संवत्सर और इस्वी वर्ष मे यही समानता है कि प्रति वर्ष लोहड़ी और मकर संक्रान्ति की तिथियां अपरिवर्तित रहती है। इसका स्पष्ट कारण है कि सवत्सरो की गणना मे सूर्य की गति का अपना विशिष्ट महत्व है।

ये दोनो पर्व उत्तर भारत में विशेष उल्लास मे मनाए जाते हैं। इन पर्वो का अपना विशिष्ट महत्व भी है। इन पर्वों पर विशेष प्रकार के व्यजन बनाए जाते हैं। पर्वों का उद्देश्य आत्मनिरीक्षण, आत्मालोचन तथा आत्मोत्थान होता है। क्या इस उद्देश्य को वैयक्तिक जीवन तक ही सीमित करें। नहीं, पर्व का तो आयोजन ही सामाजिकता के लिए होता है। अतः ये पर्व सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन मे भी अपना महत्व रखते है? पर्व का अर्थ ही है कि पवित्रता और पूर्ति की ओर ले जाने वाला।

आर्य पर्व पद्धति में मकर सक्रान्ति की महत्ता तथा आयोजन विधि विस्तार से समझाई गई है। यहां उसे दुहराने की आवश्यकता नही है। हा, यह कहना आवश्यक है कि आर्यसमाजी केवल अपने को यज्ञ तक सीमित न रखें, बल्कि जो पक्वान्न आदि की व्यवस्था है, उसे भी अपनाए। पक्वान्न की परम्परा को पौराणिकता बताकर समाप्त न करें। अच्छे पकवान खाने मे पौराणिकता कहा से आ गई। वयस प्राप्त व्यक्ति तो शास्त्रीय बातो को, वेद मन्त्रो को उनकी उपयोगिता को समझ सकते हैं। पर अल्पमति बालक तो इस बात के महत्ता को तभी समझेंगे और तभी याद रखेंगे जब उन्हे इसमे कुछ नवीनता लगे। मुझे स्मरण है कि दिल्ली मे बालक स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को इसलिए याद रखते हैं कि पूरे मार्ग मे उन्हें प्रसाद, फल, मिष्ठान्न आदि मिलते है और वे लालकिला मैदान मे बैठकर सामूहिक रूप से भोजन करते हैं। छोटे बच्चो के मन मे यह सस्कार पक्का हो जाता है कि वे इस शोभा यात्रा मे अवश्य सम्मिलित हो।

पौष-माघ में जब शीत अपनी चरम सीमा पर होती है, तब लोहड़ी मनाई जाती है। इसके पीछे कोई पौराणिक आख्यान भी नही है। बस इसे तो इसीलिए मनाया जाता है कि आग सेंक सकें, गुड, तिल व मूगफली, गजक आदि गर्म वस्तुओं का सेवन कर सकें। हम तो तर्क की तुला पर हर बात को तौलते है। हमारी पाठ्यपुस्तको मे लिखा है कि किसान रबी की बुवाई के बाद खाली होता है, इसलिए वह इस त्यौहार को मनाता है। चलो यही सही, पर यह निश्चय है कि इसमें भी सामाजिकता और सामूहिकता की भावना जुड़ी हैं।

सक्रान्ति मे एक का विसर्जन होता है और दूसरे का आगमन। जाने वाले के प्रभाव का ह्रास होता है और आने वाले के प्रभाव का अभ्युदय। मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य की राशि बदलती है। सूर्य उत्तरायण होने लगता है। दिन बढ़ना शुरू हो जाता है। शिशिर की हवाओ मे एक ऊष्मा आ जाती है। सूर्य तो हमारे लिए जीवनदायी देवता है जिसके प्रकाश मे हम अग्नि-जल और अन्य औषधियां पाते हैं। सूर्य न होता तो हमे निरन्तरता, परिवर्तन व उत्सर्ग और उदात्तता का बोध हो न हो। मकर सक्रान्ति का भारतीय जीवन मे विशिष्ट महत्व है। दक्षिण भारत में यह पोंगल के रूप में मनाया जाता है।

हमारा कर्त्तव्य है कि हम जिस प्रकार मकर सक्रान्ति पर शीत और शीतोष्ण के बीच व्यावहारिक सन्तुलन अपनाते हैं, उसी प्रकार अपने जीवन को भी संतुलित, नियमित और पूर्ण करें।

—डा० धर्मपाल

मेरे आर्य समाजिक जीवन की विकास यात्रा

(६ जनवरी ९१ के अक से आगे)

घातक मे कर गया अपना प्यार, वो मस्ताना योगी ॥

विष दाता को भी क्षमादान करने वाले परमदयालु ऋषि का यह गुणगान मेरे हृदय मे दयानन्द भक्ति की हिलोरे उठा देता। प्रभात फेरी के स्वय सेवक पुनः गाते—

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे।
दयानन्द का काम पूरा करेंगे।
गुंजायेंगे वेदो को हम गीत गाकर।
दिखायेंगे दुनिया पुरानी बना कर॥

दुनिया को पुरानी बनाने की बात स्वामी दयानन्द के 'वेदो' की ओर लौटो' के आवाहन को देखते हुए कितनी सटीक थी, यह कहने की आवश्यकता नही है।

गीत के आगे के बोल थे—
वही पुण्य गगा यहा फिर बहेगी,
जो ससार की तापमाला हरेगी।

निश्चय ही दुनिया यह आशा सजोये बैठी थी कि आर्यसमाज की शिक्षाओ से ससार का ताप और पीडा दूर होगी। अब यदि हमने इस आशा को पूरा नही किया तो इसमे किसी अन्य का क्या दोष है।

गीत की समाप्ति निम्न पक्तियो से होती है—
कहेगा जगत् फिर से इक स्वर से सारा,
यही वृद्ध भारत गुरु है हमारा॥

'वृद्ध भारत' शब्द की अपनी सार्थकता थी क्योंकि इससे देश का गौरवपूर्ण अतीत लक्षित होता था।

एक अन्य गीत भी अभी तक मेरे कानो मे गूंज रहा है।

प्रभो वेद विद्या का विस्तार कर दो।
दुखी देश भारत का उद्धार कर दो।
तपो बल के पौधे भी मुरझा गये है।
इन्हे ज्ञान अमृत से गुलजार कर दो।
भुजाओ में दो भीम सा बल हमारे
रगो में ऋषि खू का सचार कर दो।

प्रभात फेरियो के ये भावपूर्ण गीत तथा उनका उत्साहपूर्ण वातावरण आज तो स्वप्नतुल्य ही हो गया है। अब न वे भावनाए है और न लोगो मे वैसा उत्साह।

अब मैं विधिवत् आर्य कुमार सभा का सदस्य बन गया। एक शिवरात्रि पर रात को नगर आर्यसमाज मन्दिर मे ऋषि बोधोत्सव मनाया जा रहा था। मन्दिर ठसाठस भरा था। उपस्थिति इतनी अधिक थी कि लोग जीने तक बैठे थे। मुझे पूरा विश्वास था कि यदि मैं इस अवसर पर बोलू तो कई अन्य वक्ताओ से कही अच्छा बोल सकूंगा, किन्तु शुरू से ही सकोची स्वभाव का होने के कारण मेरा इतना साहस भी नही हो रहा था कि मै मन्त्री को वक्ताओ की सूची मे अपना नाम अकित करने की प्रार्थना करता। अन्ततः मैने कुमार सभा के मन्त्री मास्टर साहब गणेशीलाल जी के समक्ष अपनी इच्छा प्रकट की उन्होने झट मन्त्री जी को मेरा नाम दे दिया और मुझे बोलने का अवसर मिल गया। मेरा यह प्रथम भाषण ही आर्यसमाज तथा कुमार सभा के सदस्यो के लिये विस्मय कारक था, क्योकि वे कल्पना नहीं कर सकते थे कि मेरे जैसा सकोची व्यक्ति भी इतना अच्छा भाषण दे सकता है।

इसके बाद इस सप्ताह का आर्य कुमार सभा का अधिवेशन हुआ तो मास्टर साहब ने मुझे ही बोलने के लिए कहा। इसके बाद तो प्रत्येक अधिवेशन मे आर्यसमाज से सम्बन्धित नाना विषयो पर मैं निस्सकोच बोलने लगा। दूसरे ही वर्ष मुझे आर्य कुमार सभा का उपमन्त्री चुन लिया गया। यह पद प्राप्त कर

(क्रमश)

वर्ण जन्म से नहीं, गुण-कर्म से

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,

वर्ण व्यवस्था और गीता

प्रिय पाठकगण !

विचारणीय प्रश्न यह है कि यह वर्ण-व्यवस्था है अथवा जन्म—व्यवस्था ? जन्म से तो जन्म-व्यवस्था हो सकती है, वर्ण व्यवस्था नही। वर्ण शब्द का अर्थ है—वरण किया हुआ, चुना हुआ—यह जन्म से कैसे लागू होगी ? जन्म के समय नवजात शिशु में वरण करने, चुनने की योग्यता ही कहां होती है ? विद्याध्ययन काल में जिस प्रकार की योग्यता प्राप्त कर ली जाती है, उसी प्रकार का वर्ण हो जाता है। इस नियम मे गीता का मत है—

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः।" (गीता अ० ४।१३)

अर्थात् मेरे द्वारा चारों वर्णों का निर्माण गुण-कर्म के विभाग के रूप मे हुआ है। मनुष्य मे जो योग्यतायें होती हैं जिस प्रकार के गुण होते है, वह वैसे ही कर्म करता है। गीता ने गुण के अनुसार कर्म का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण देकर वर्ण-व्यवस्था को गुण अर्थात् योग्यतानुसार कर्म करने के लिए विभाजन कर प्रस्तुत कर दिया है। गीता के १८ वे अध्याय में तो इसे "गुण कर्म विभागशः" का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। पाठको की जानकारी के लिये उसे यहा दिया जा रहा है।

ब्राह्मण क्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवैर्गुणैः॥ १८।४१॥

अर्थात् हे परतप अर्जुन ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रो के स्वभाव और गुणों से उत्पन्न हुए "कर्माणि प्रविभक्तानि" कर्म विभाग किए गये हैं। कैसे किये गये हैं ? यह भी गीता के शब्दों में पाठकगण पढ़े।

शमो दमस्तपः शौच क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञान विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभावजम्॥ १८।४२॥

मनोविचारो का शमन, इन्द्रियो का दमन, वेदादि शास्त्रों के अध्ययन मे पुरुषार्थ, पवित्रता, निन्दास्तुति, सुख-दुख-हानि-लाभ-मानापमान आदि की चिन्ता से रहित, सरल स्वभाव रहना, वेदादि शास्त्रो और पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करके उससे तदनुसार लाभ लेना, परमेश्वर के अस्तित्व पर जैसा वह है, उसे वैसा ही समझ कर विश्वास करना—ब्राह्मण के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म हैं। "स्वभावजम्" के साथ "गुण-कर्ण विभागशः" ही लागू हो रहा है।

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरे भावश्च क्षात्र कर्म स्वभावजम्॥ १८-४३॥

शूरवीरता, तेज, धैर्य, चतुरता, युद्ध मे चपलता, मैदान छोड़कर न भागना, दान करना तथा ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखना, यह सब क्षत्रीय के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म हैं। यहां भी "स्वभावजम्" शब्द दर्शनीय है, जिसका अर्थ स्वभाव से उत्पन्न हुए हैं—अन्य से कदापि नहीं।

कृषि गौरक्ष्यवाणिज्य वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मक कर्म शूद्रस्यापि कर्म स्वभावजम्॥ १८-४४॥

कृषि गोरक्षा और व्यापार वैश्य के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म है तथा सेवा करना कर्म शूद्र का भी स्वभाव से ही उत्पन्न हैं 'स्वभावजम्" शब्द सभी श्लोको मे और सभी वर्णों के लिए प्रयुक्त होकर जन्मानुसार नहीं अपितु रुचि-अनुसार कर्मों का विवेचन कर रहा है। यह सक्षेप मे गीता का मत है। शूद्र के विषय मे इतना कह देना अनुचित न होगा कि जिसमें वह गुण न आ सके, जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यो के लिये बताये गये अर्थात् जो किसी कार्य विशेष की योग्यता नही प्राप्त कर पाता, वह अन्य वर्णो के यहां सेवा-कार्य व श्रम आदि करके जीविका प्राप्त कर जीवन यापन करता है। अभिप्राय यह है कि विद्या-शिक्षा आदि के कार्यो से रहित, रक्षा कार्यों में असमर्थ, उत्पादन द्वारा सम्पत्ति की वृद्धि करने मे अयोग्य व्यक्ति शूद्र कहलाता है।

शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥ १०-६५॥

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को। वैसे ही विद्या आदि की प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय व वैश्य भी ब्राह्मणत्व को और सद्गुणों तथा उच्च कर्मों के कर्तव्य-कर्मों को छोड़कर शूद्रत्व को प्राप्त होते हैं।

वर्ण-व्यवस्था और मनुस्मृति

सृष्टि के प्रारम्भ में ही महर्षि मनु द्वारा मानव-धर्म का विधान और उपदेश किया गया। यही उपदेश मानव-धर्म-शास्त्र और बाद को मनुस्मृति कहलाया। ग्रन्थाकार रूप में यह आज भी उपलब्ध है। यद्यपि इसमें समय-समय पर स्वार्थी और भ्रष्ट व्यक्तियो द्वारा अनर्गल तथा भ्रष्ट बातें भी भरी गयी हैं, जो ध्यानपूर्वक पढ़ने से समझी जा सकती है। किन्तु फिर भी मनु का दृष्टिकोण अत्यन्त स्पष्ट है।

इस ग्रन्थ में मानव-जीवन के प्रत्येक पहलू पर—चाहे वह वैयक्तिक हो अथवा पारिवारिक और या चाहे सास्कृतिक, आध्यात्मिक, शैक्षिणिक व प्रशासनिक कोई भी पहलू हो—पर्याप्त विवेचना की गई है। यह विवेचना ही उनके द्वारा निर्मित विधान है। इस विधान को उन्होने जहां सामाजिक ढांचे मे ढालने की व्यवस्था दी है, उसी स्थल को लक्ष्य करके यह पंक्तियां लिखी गई हैं।

यह सामाजिक ढाचा वर्ण-व्यवस्था के नाम से जाना जाता है। वास्तव में तो यह आर्थिक ढांचा है, क्योंकि अर्थ सम्पादन के प्रकारों के आधार पर ही इसका विवेचन किया गया है। जिसका जो जीविकोपार्जन का साधन--उसी के अनुसार उसका वर्ण। कहना यह चाहिये कि वर्ण-व्यवस्था एक प्रकार से श्रम-व्यवस्था का ही दूसरा नाम है। वर्ण-व्यवस्था क्योंकि थोपी हुई अथवा जन्म सिद्ध नहीं अपितु रूची व इच्छानुसार वर्णी अर्थात् वरण की हुई, चुनी हुई होती है अतः नाम वर्ण-व्यवस्था रखा गया है।

अर्थ सम्पादन के प्रकार मनुष्य वही अपनाता है, जिनकी रुचि और जिन्हें कर सकने की योग्यतायें उसमें होती हैं। रुचि और योग्यता के विपरीत यदि व्यक्ति को कार्य मिलता है तो वह उसमे वास्तविक रूप में सफल नहीं होता। इस प्रकार व्यक्ति को यह असफलता समाज की असफलता बन जाती है। समाज की असफलता से राष्ट्र की आर्थिक प्रगति व समृद्धि को धक्का लगता है। राष्ट्र धन के अभाव से ग्रसित हो जाता और धनाभाव से प्रत्येक क्षेत्र मे पिछड़ जाता है।

मनु ने अपनी ऋषि दृष्टि से इसे भली-भांति समझ लिया था और उपयोगितानुसार उसकी व्यवस्था बना दी थी। कालान्तर में एक ऐसा समय आया कि यह व्यवस्था गड़बड़ा गयी और वर्तमानकाल मे तो इसका नाम ही शेष रह गया है। वर्ण व्यवस्था तो कहीं भी दिखाई नही देती। हां, जन्म-व्यवस्था अवश्य दनदना रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार तो महाभारत से एक सहस्र वर्ष पूर्व ही स्थिति बिगड़ चली थी, किन्तु महाभारत युद्ध के उपरान्त से अब तक इन पाच सहस्र वर्षों मे तो सम्पूर्ण ढांचा ही भ्रष्ट हो गया है—नितान्त भ्रष्ट।

गुण—कर्मो का स्थान जन्म ने ले लिया हैं। जन्म-जात्याभि-मान पराकाष्ठा पर है। कहना यह चाहिए कि वर्ण-व्यवस्था अब जन्म-व्यवस्था बनकर रह गई है। कुछ वर्गों ने इस विकृत अवस्था का अनुचित लाभ उठानें में कोई कसर उठा नहीं रखी और कुछ वर्गों की प्रगति के द्वार सहस्राब्दियों से इस प्रकार बन्द रहे हैं, जैसे वह मानव ही नही है। परिणाम इसका यह है कि जन्म-जात्याभिमानियों द्वारा सताये हुए वर्गों को अब कुछ बोलने का अवसर मिला है, तो वह उसी प्रकार पुकार उठे हैं, जैसे फन छूटने पर सांप फुफ्कार उठता है। कुछ वर्ष पहले उत्तर प्रदेश विधानसभा में मनुस्मृति के पृष्ठ फाड़े गये। उसके कुछ दिन पश्चात् मनुस्मृति और तुलसीकृत रामचरितमानस को जलाया। किन्तु मनुस्मृति को ध्यान पूर्वक पढ़ना अलग बात है और किसी सुनी सुनाई बात पर अथवा अधूरी जानकारी से भड़क उठना अलग बात। आगे हम मनु के विचारों को प्रस्तुत करते हैं। अपनी ओर से आवश्यक टिप्पणी ही करेंगे और हम यह चाहेंगे कि जन्म-जात्याभिमानी उच्च वर्गों के लोग और पिछड़े वर्गों के शूद्र कहाये जाने वाले सभी ठण्डे

वर्ण जन्म से......

मन और मस्तिष्क से विचार कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। मनु का विधान इस प्रकार है—

लोकानां तु विवृद्ध्यर्थं मुखबाहूरुपादतः।
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरवर्तयत्॥ अध्याय १-३१

लोकों अर्थात् मनुष्यों की उन्नति के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र इस प्रकार उत्पन्न किये गये हैं, जैसे मानव के शरीर में मुख, बाहु, उरू और पाद बनाये हैं। इसका स्पष्टार्थ यह हुआ कि जैसे शरीर की गतिविधियों के भली प्रकार संचालन के लिये मुंह, हाथ, जंघा, पांव होने आवश्यक हैं। इसी प्रकार मानव समाज का कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिए भी चार प्रकार के मानव परमात्मा ने उत्पन्न किये हैं। ब्राह्मण अर्थात् विद्या-शिक्षा अनुसन्धान कार्य करने तथा न्याय व्यवस्था देने वाले, क्षत्रिय अर्थात् प्रबन्ध-व्यवस्था तथा रक्षा करने वाले, वैश्य अर्थात् उत्पादन-व्यापार आदि के द्वारा सम्पत्ति अर्जित कर समाज की अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करने वाले तथा उपयुक्त सब प्रकार की योग्यताओं से रहित शूद्र अर्थात् जो सेवा तथा शारीरिक श्रमों के द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करें और इस प्रकार अपने लिए जीविका भी प्राप्त कर लें। महर्षि मनु इसका वर्णन इस प्रकार करते हैं—

अध्ययनं अध्यापनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ अध्याय १-८८

अध्ययन करें और अध्यापन करें, यज्ञ करें और यज्ञ करायें। दान करें और दान लें—यह छः कर्म ब्राह्मण के हैं।

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥ अध्याय १-८९

प्रजा की रक्षा, दान करना, यज्ञ करना, अध्ययन और विषय वासनाओं मे न फसना—यह पांच क्षत्रियों के कर्म है।

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च॥ अध्याय १-९०

पशुओं का पोषण, दान करना, यज्ञ करना, अध्ययन, व्यापार, लेने-देने और कृषि यह सात वैश्यों के कर्म हैं।

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः कर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनसूयया॥ अध्याय १-९१

प्रभु ने शूद्र का एक ही कर्म बताया है—इन वर्णों की निन्दा रहित सेवा करना अर्थात् जिस व्यक्ति मे उपर्युक्त तीनों वर्णों मे से किसी की भी योग्यता न हो, वह इन वर्णों की सेवा द्वारा अपनी जीविका सम्पादन कर ले। परन्तु किसी के लिए निन्दित कर्म करके जीविका सम्पादन न करे। केवल किसी वर्ग विशेष मे जन्म लेने के कारण ही कोई सम्मान अथवा घृणा का पात्र नही होता, यह अगले श्लोक मे पढ़िये—

विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यं क्षत्रियाणां तु वीर्यतः।
वैश्यानां धान्यधनतः शूद्राणामेव जन्मतः॥

ब्राह्मणों का बड़प्पन ज्ञान से होता है और क्षत्रियों का पराक्रम से। वैश्यों का धन-धान्य की समृद्धि से और शूद्रों का जन्म से। इसका सीधा अर्थ यह हुआ कि आवश्यक गुणों को प्राप्त हुए बिना कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य धर्म के बड़प्पन को प्राप्त नहीं होता। केवल जन्म के कारण यदि कोई बड़प्पन मानता है तो वह तो उसे शूद्रत्व का ही प्राप्त हो सकता है द्विज वर्णों का नहीं। ठीक उसी प्रकार—

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः।
यश्च विप्रोऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति॥ अध्याय २-१५७

जैसे लकड़ी का बना हुआ हाथी—नाम का ही हाथी है। हाथी से लिया जाने वाला कोई काम उससे नहीं लिया जा सकता जैसे चमड़े का मृग अर्थात् मरे हुए मृग के चर्म को लेकर और उसमे भूसा आदि भरकर बनाया हुआ मृग—नाम मात्र को ही मृग होता है किन्तु उसमे मृग की आकृति, रंग और चर्म को छोड़ [illegible] कोई बात तो क्या? जीवन तक भी नही होता, ठीक उसी प्रकार बिना पढ़ा ब्राह्मण का पुत्र भी नाम मात्र को ही ब्राह्मण है, किन्तु वास्तव में तो उसका ब्राह्मणत्व से दूर का भी सम्बन्ध नहीं। इससे सिद्ध होता है कि ब्राह्मणत्व विद्या और ज्ञान में निहित है—जन्म से नही।

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ अध्याय २-१६८

जो व्यक्ति द्विज अर्थात् ब्राह्मण होकर भी वेद को छोड़कर अन्यत्र श्रम करता है अर्थात वेद-विद्या के पढ़ने और पढ़ाने मे श्रम न करके अपना समय अन्य कार्यों में लगाता है, वह जीवित रहते ही शीघ्र वंश सहित शूद्रत्व को प्राप्त होता है। जब अपने विद्या और ज्ञान के कार्यों को छोड़ देगा, तब स्वयं तो अविद्या में फसकर शूद्रत्व को प्राप्त हो ही जायेगा—आगे चलने वाली वंश-परम्परा के लोग भी विद्या क्षेत्र से दूर हो जाने के कारण शूद्रत्व को प्राप्त होते रहेंगे। इससे आगे तो महर्षि मनु ने वर्ण-परिवर्तन के विषय मे यहाँ तक कहा है कि—

शुचिरुत्कृष्टशुश्रूषुर्मृदुवागनहंकृतः।
ब्राह्मणाद्याश्रयो नित्यमुत्कृष्टां जातिमश्नुते॥ अध्याय ९-३३५

स्वच्छ रहने वाला, उत्तम परिश्रमी, मधुर भाषी, अहंकार रहित तथा नित्य ब्राह्मणादि के आश्रम में रहने वाला (शूद्र) उच्च जाति को प्राप्त हो जाता है।

इस श्लोक से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्राह्मणादि सवर्ण जन के सम्पर्क मे रहने से वर्णों के गुण-कर्मों को धारण कर लेने पर शूद्र भी ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्णों मे से किसी एक वर्ण का अपने प्राप्त गुण-कर्मों के अनुसार बन जाता है। आगे मनुजी कहते हैं—

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥ १०-६५॥

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को वैसे ही विद्या आदि प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय व वैश्य भी ब्राह्मणत्व को और सद्गुणों तथा उच्च वर्णों के कर्त्तव्य-कर्मों को छोड़कर शूद्रत्व को प्राप्त होते है।

मनुस्मृति के इतने उद्धरणों को देने के पश्चात् अब किसी अन्य टिप्पणी की आवश्यकता नही। यह उद्धरण इस बात की प्रबल साक्षी है कि महर्षि मनु पर किसी को भी किसी वंश विशेष मे जन्म धारण कर लेने से सम्मान का पात्र बताने का लांछन मिथ्या है वर्तमान समय की जन्म-जाति प्रथा मनु की मान्यता के विरुद्ध है। तथा वास्तव मे यह वर्ण-व्यवस्था नहीं है। वर्ण-व्यवस्था तो वरण किये जाने की ही व्यवस्था है। जन्म से गले पड़ने वाली तो जन्म-व्यवस्था ही कही जा सकती है, वर्ण-व्यवस्था नही।

(क्रमशः)

"लुधियाना में आर्य युवक सभा की गतिविधियां"

पारिवारिक सत्संग

१. ३० नवम्बर को श्री रमेश जी अग्रवाल के निवास स्थान रेलवे कालोनी मे उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। प० राजेश्वर शास्त्री, पुरोहित आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने यज्ञ सम्पन्न कराया एव प्रवचन दिया।

२. ५ दिसम्बर, ९० को जिला लुधियाना के पुलिस अधीक्षक श्री सिद्धार्थ चट्टोपाध्याय के निवास स्थान पर उनके सुपुत्र आयुष्मान् सिद्धान्त चट्टोपाध्याय के जन्म दिवस के उपलक्ष्य मे पारिवारिक सत्संग किया गया, जिसमे यज्ञ के उपरान्त श्रीमती सुधा जी शास्त्री ने बधाई गीत प्रस्तुत किया। आर्य युवक सभा पंजाब के प्रधान श्री रोशन लाल आर्य ने सभा की ओर से श्री चट्टोपाध्याय जी को महर्षि दयानन्द जी का फ्रेम किया हुआ चित्र भेंट किया। श्री रोशन लाल शर्मा ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला।

३. १० दिसम्बर, ९० सोमवार को श्री आत्मप्रकाश जी के निवास स्थान पर उनकी सुपुत्री आयुष्मती रचना के विवाह के उपलक्ष्य मे ३ बजे से ५ बजे तक पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। प० राजेश्वर शास्त्री ने यज्ञ के उपरान्त एक भजन रखा। श्री रोशनलाल आर्य प्रधान युवक सभा पंजाब ने वेद मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि हमें मानव चोला मिला है हमे परमात्मा को याद करना चाहिए। ईश्वर सर्वव्यापक है तथा हमारे कर्मों के अनुसार हमे फल देता है। इसलिए हमे अच्छे कार्यों एव परोपकार के कार्यों मे अपने जीवन को लगाना चाहिए। उन्होने कहा कि सामाजिक कुरीतियो को दूर करने के लिए महिलाओं को अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

४. १४ दिसम्बर को श्री सजय मल्होत्रा के निवास स्थान है बोवाल मे उनके विवाह के उपलक्ष्य मे सत्संग का आयोजन किया गया, जिसमें यज्ञ एव प्रवचन हुआ।

विघटनकारी व साम्प्रदायिक तत्वों को सख्ती से कुचलने की मांग

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

नई दिल्ली—दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा के तत्वावधान मे श्रीमद् दयानन्द वेद विद्यालय गौतम नगर मे आयोजित आर्य सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने विघटनकारी तत्वो की बढती गतिविधियां व साम्प्रदायिक दगो पर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए केन्द्र सरकार से इन्हें सख्ती से कुचलने की माग की। स्वामीजी ने आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए इसे पुन. गति प्रदान करने का आह्वान किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने २३ से २६ दिसम्बर तक आयोजित आर्य सम्मेलन के उद्देश्यो का उल्लेख किया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने आर्यसमाज को अधिक गतिशील बनाने के लिए दो ठोस सुझाव प्रस्तुत किए। आप ने हर आर्यसमाज मे प्रातः ६ बजे से रात्रि ६ बजे तक कार्यालय खोलने व अवकाश प्राप्त आर्य सज्जनों को आर्यसमाज के लिए अपना जीवन समर्पित करने की प्रार्थना की। समस्त गुरुकुलो के उत्थान के लिए एक राष्ट्रीय स्तर पर समिति गठन करने का प्रस्ताव रखा। अध्यक्ष पद पर बोलते हुए स्वामी दीक्षानन्द जी ने युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द के चिन्तन की वर्तमान युग में प्रासगिकता की तर्क सगत प्रस्तुत करते हुए उस पर चलने की, वेद मार्ग अपनाने की अपील।

सम्मेलन मे सर्वश्री डा० रामप्रसाद विद्यालकार, डा० धर्मपाल, यशपाल सुधांशु, पुरुषोत्तम शास्त्री, कृष्णलाल सिक्का, हरिदेव आचार्य आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

नरेन्द्र अवस्थी
प्रचार मन्त्री

आचार्य आर्य नरेश द्वारा वेद प्रचार

राष्ट्र संस्कृति व युवाशक्ति के उत्थान हेतु उद्गीथ साधाना स्थली ओमवन हिमाचल के संस्थापक आचार्य आर्य नरेश द्वारा निम्न स्थानों पर प्रचार किया गया।

पिंजौर, चण्डीगढ, दिल्ली, फरीदाबाद आर्यसमाज सै० ४, मुरादाबाद, आर्यसमाज मण्डी बांस, आर्यसमाज बरेली, शाहजहांपुर जनपद ग्राम प्रचार, आर्य समाज बागरमऊ व जनपद उन्नाव के ग्रामों में, आर्यसमाज शिगारनगर तथा आदर्शनगर लखनऊ, आर्यसमाज स्वरूपनगर, पारिवारिक सत्सग, आर्यसमाज विद्यालय, आर्यपुर-प्रयाग चौक आर्य समाज, आर्य समाज कृष्णनगर, काशी, आर्य समाज ग्राम बसोला गाजीपुर, ग्रामप्रचार जनपद गोरखपुर, गोण्डा इकौना, गिलौला आदि।

इस यात्रा मे जातिगत आरक्षण को हटा गरीबी से लगाने व भारतीय सस्कृति पर बल दिया विदेशी लुटेरो के भवनो को हटाया जाये।

श्री भैरव सिंह हमें छोड़ गए

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, वेदो के अनन्य उपासक एव इतिहास के मर्मज्ञ श्री भैरवसिंह आर्य ३० नवम्बर १६६० को भौतिक शरीर को त्याग, महा-प्रयाण कर गए।

आपका जन्म २० दिसम्बर १६०० को हुआ था। आर्यसमाज के सस्कार उनमे जन्म से ही थे। जो कि उन्हे अपने पितामह एव पिताश्री से विरासत मे मिले थे। आर्यसमाज के प्रत्येक कार्यक्रम मे सक्रिय भाग लेकर तन—मन-धनसे सफलबनाते रहे। समाज के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा एव निष्ठा थी। स्वामी दयानन्द के सदेश को जन-जन तक पहुचाने हेतु "आर्य साहित्य" सभी को आजीवन सुलभ कराते रहे।

आप अनेक वर्षों तक नगर आर्य समाज जोधपुर के अन्तरग सभासद् एव मन्त्री भी रहे। आर्यसमाज का इतिहास एव महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित साहित्य सृजन मे "नीव का पत्थर" बनकर आपने अपने ज्ञान व सकलित दस्तावेजो से विद्वानो एवं जिज्ञासुओ को उपकृत किया।

ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। एवं परिवार जनो तथा इष्ट मित्रो को धैर्य एव सहनशीलता प्रदान करे। आर्य श्रेष्ठ को हमारी श्रद्धावनत श्रद्धांञ्जलि।

ब्रजेश कुमार सिंह आर्य मन्त्री
आर्य समाज, जोधपुर, रातानाडा



श्री मणि सान्याल उपमेयर कलकत्ता कार्पोरेशन दीप प्रज्वलित कर शिविर का उद्घाटन करते हुए

षष्ठ निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आर्य समाज कलकत्ता १६ विधान सरणी कलकत्ता-६ की युवा शाखा आर्य युवा जन द्वारा आयोजित षष्ठ नि.शुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा शिविर का उद्घाटन दिनाक २१-१०-६० को प्रात. १० बजे कलकत्ता कारपोरेशन के डिप्टी मेयर श्री मणि सान्याल ने किया और प्रसिद्ध उद्योगपति श्री फूलचन्द जी आर्य ने इस समारोह की अध्यक्षता की। प्रधान अतिथि के पद को सुशोभित किया समाज सेवी श्री पुस्कर लाल की केड़िया ने। प्रसिद्ध सर्जन श्री अतुल नारायण जी, डा० पी० के० डाडावाला एव अन्य कुशल डाक्टरों की देख रेख में इस शिविर मे ६० नेत्र रोगियो के मोतिया बिन्द का आपरेशन किया गया।

आर्य युवा जन के इस कार्य की प्रशसा करते हुए और भी व्यापक कार्यक्रमो की युवको से अपेक्षा की गई। इस कार्यकम का संचालन आर्य समाज कलकत्ता के उपमन्त्री श्री अशोक कुमार सिंह ने किया एव धन्यवाद ज्ञापन शिविर सचिव श्री सतीश जायसवाल ने किया।

सतीश जायसवाल
शिविर सचिव

आर्यसमाज का नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज रोहतास नगर, शाहरा मे सुप्रसिद्ध ६० वर्षीय आर्योपदेशक प० आशानन्द भजनीक की सत्प्रेरणा से "साप्ताहिक नेत्र चिकित्सा शिविर" भारत के राष्ट्रपति के आनरेरी सर्जन डा० पी०एन० सेठ की देखरेख में लगाया गया।

शिविर मे मोतिया, पडवाल, फोला, नासूर आदि नेत्र रोगो के प्रसिद्ध डा० कुमारी सुनिता गोयल, डा० जीवन दास जेतली, श्री गोपाल कृष्ण ने लगभग २०० रोगियो की चिकित्सा व जाच की तथा ४२ लोगों के सफल आपरेशन किये गये। डा० शिव दयाल वर्मा ने जरूरतमन्दो को नि शुल्क चश्में दिये।

नेत्र रोगियो मे सभी सम्प्रदायो के लोग शामिल थे। रामायण भवन, मेहरा बिरादरी, व सस्थाओ ने रोगियों के नाश्ते, भोजन व आवास के प्रबन्ध मे सहयोग दिया।

आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल की अध्यक्षता में "नेत्र चिकित्सा समापन शिविर" के उपलक्ष्य में यज्ञ, व विशाल लगर का भी आयोजन हुआ। प० आशानन्द भजनीक ने परोपकारी कार्यों के लिए आर्यसमाज को भारी राशि भेंट की।

ऋषि उवाच

मुक्ति' अर्थात सब दुःखो से छूटकर बन्ध रहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचारना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द को भोग के पुनः संसार में आना।

"वेदों में सभी समस्याओं का निदान है"

(पृष्ठ १ का शेष)

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि ज्ञान-विज्ञान का भण्डार वेद मानव जाति की अनमोल धरोहर है।

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति डा० कपिलदेव द्विवेदी ने कहा कि वेदों की ज्योति से सारी दुनिया का कल्याण सम्भव है। उन्होंने कहा कि यही कारण है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के दस नियमों में वेदों को पढ़ना पढ़ाना परम धर्म बताया।

इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, डा० गणेशदत्त, डा० सत्यप्रिय ने भी वेदों की प्रासंगिकता पर भाषण दिया। इस अवसर पर स्वामी सत्यपति ने चार दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया।

अमर शहीद पं० राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से प्रेम माडल हाईस्कूल गली नं० १०, जनकपुरी लुधियाना में अमर शहीद प० राम प्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस मनाया गया।

श्रद्धांजलि समारोह श्री रोशनलाल आर्य, प्रधान आर्य युवक सभा पंजाब की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। समारोह को श्री सुखदर्शन मदहोश, चेयरमैन पंजाब पब्लिक कल्याण समिति लुधियाना, श्री वेदप्रकाश तिवारी, प० राजेश्वर शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने प० रामप्रसाद बिस्मिल के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धांजलि भेंट की। प्रेम माडल हाई स्कूल के बच्चों ने देशभक्ति के गीत प्रस्तुत किये।

श्री रोशन लाल आर्य ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के आह्वान पर अनेकों वीरों ने अपने प्राणों की आहुति देकर इस देश को आजाद कराया। युवा वर्ग को देश की आजादी, एकता और अखण्डता कायम रखने के लिए हर प्रकार का बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्हें राष्ट्र निर्माण में रचनात्मक भूमिका निभानी चाहिए।

R. N. No. 32387/77 [Post in N.D.P.S.O. on10,11-1-1991 'Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

१५ दिसम्बर को कराटे शिविरों का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज, स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना में १५ दिसम्बर से २२ दिसबर तक एक सप्ताह का कराटे शिविर का आयोजन के उपलक्ष्य मे १५ दिसम्बर शनिवार को साय ३०० बजे से ५-०० बजे तक उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। यज्ञ की अग्नि श्री सुरेन्द्र नाथ अरोड़ा, प्रबधक सैण्ट्रल बैंक आफ इण्डिया, माधोपुरी लुधियाना ने की। श्री आत्मप्रकाश जी एवं श्रीवीरेन्द्र ढीगरा सपरिवार यजमान बने तथा प० राजेश्वर शास्त्री, पुरोहित आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना यज्ञ के ब्रह्मा थे।

समारोह की अध्यक्षता आर्यसमाज, स्वामी श्रद्धानन्द बाजार लुधियाना के प्रधान श्री हरबस लाल सेठी ने की। स्वामी सुमना यति, श्री प्रकाश चन्द्र शास्त्री महमदगढ, श्री सुरेन्द्रनाथ अरोडा, श्री ज्ञान प्रकाश वर्मा ने युवकों को सम्बोधित करते हुए बुराईयो से बचने वैदिक धर्म का प्रचार, देश की रक्षा के लिए आवाहन किया। श्री राजेन्द्र महेकन्द्रू ने कराटे शिविर की रूपरेखा का विवरण दिया। मंच संचालन आर्य युवक सभा पजाब के प्रधान श्री रोशनलाल आर्य ने किया।

समारोह अध्यक्ष श्री सेठी ने यजमानों को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का चित्र एव सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। श्री महेन्द्र प्रताप आर्य ने सम्माननीय अतिथियो स्वामी सुमना यति जी, श्री हरबस लाल सेठी जी को भी सम्मानित किया।

रामभक्तों को श्रद्धाञ्जलि

बिस्मिल स्मारक यज्ञशाला, लालडिग्गी में आयोजित श्रद्धाञ्जलि सभा में अयोध्या में शहीद रामभक्तो को श्रद्धाञजलि अर्पित करने हेतु जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर के अध्यक्ष प० द्विजराज शर्मा पुरोहित की अध्यक्षता मे एक हजार मन्त्र के द्वारा यज्ञानुष्ठान का आयोजन किया गया।

नगर विधायक माननीय श्री शिवप्रताप शुक्ल के द्वारा यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। तत्पश्चात् सभा को सम्बोधित करते हुए प० द्विजराज शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा कि आर्यसमाज अपने जन्म काल से ही प्रत्येक हिन्दू हित कार्यों का समर्थन किया है। हर सम्भव सकट से जूझने का अदम्य साहस का कार्य किया है। उदाहरणतः हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के इतिहास को स्मरण कराया। सभा मन्त्री श्री रमेश प्रसाद गुप्ता ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए मन्दिर निर्माण कार्य में सभी सदस्यो द्वारा एक-एक ईट अपने हाथो से लगाने का आश्वासन दिया। साथ ही नगर आर्यसमाज के २९ सदस्यों द्वारा उपरोक्त आन्दोलन में गिरफ्तारी में योगदान, अपने आत्मबल की आहुति देकर अपना परिचय प्रस्तुत किया।

अन्त में माननीय विधायक शिवप्रताप द्वारा सभी गिरफ्तार रामभक्तों को रोली व अक्षत का टीका लगाकर स्वागत किया। तत्पश्चात दो मिनट का मौन रखकर सभी श्रद्धालुओ ने रामभक्त शहीदो को श्रद्धाञ्जलि दी। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रमेश प्रसाद गुप्त, मन्त्री

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष,
पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ. प्र.)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५९)

ओ३म्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

वर्ष १४, अ॰ १: | रविवार, १० जनवरी, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द · १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक —२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष · ३१०१५०

हमारी शिक्षा प्रणाली में उदात्त वैदिक आदर्शों तथा उत्कृष्ट नैतिक मूल्यों का समावेश होना चाहिए

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अन्तर्गत दिनाक २३-१२ ९० को अपराह्न २ बजे से ४ बजे तक महिला सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन प्रान्तीय आर्य महिला सभा, दिल्ली ने किया। आर्यजगत की विख्यात विदुषी श्रीमती प्रभात शोभा जी पण्डित ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की एव सरला महृत्ता ने इसका अत्यन्त कौशलपूर्ण सयोजन किया। इस सम्मेलन मे देश-विदेश से पधारी आर्य महिलाओ ने भाग लिया एव इसे विचार दान देकर सफल बनाया।

सर्वप्रथम आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द नगर की छात्राओ द्वारा वेदगायन एवं पाणिनि कन्या विद्यालय-वाराणसी की कन्याओ द्वारा स्वागत गान प्रस्तुत किया गया। इसके अनन्तर डा॰ उषा जी शास्त्री, डा॰ मनीषामल्होत्रा दिल्ली एव श्रीमती शिवराजवती आर्या (बम्बई) ने सुमधुर सगीत द्वारा वातावरण मे आनन्द सरिता प्रवाहित की।

स्वागत भाषण श्रीमती शकुन्तला जी दीक्षित ने बडी ओजस्वी वाणी मे पढकर सुनाया और प्रकाशित प्रतिया वितरित की गई। सयोजिका (सरला जी महृत्ता) ने आज के सम्मेलन का महत्त्व बताते हुए कि "आर्य सम्मेलनो के द्वारा जन जागृति, वैदिक प्रचार धारा को प्रचारित एव प्रसारित किया जाता है" अध्यक्षा जी से प्रार्थना की कि वे अध्यक्ष पद को सुशोभित करे। वैदिक साहित्य के द्वारा अध्यक्षाजी का अभिनन्दन किया गया। अन्य देश देशान्तरो मे पधारी मुख्य अतिथियो का वैदिक साहित्य द्वारा ससत्कार किया गया। मान्या अध्यक्षाजी ने आसन ग्रहण करने के अनन्तर सम्मेलन में पारित होने वाले प्रस्तावो के उद्देश्यो का विश्लेषण किया। जिनके विषय निम्नलिखित हैं।

१. हिन्दी व सस्कृत की शिक्षा अनिवार्य हो।

उक्त विषय पर श्रीमती प्रकाश जी आर्या ने प्रस्ताव रक्खा एव प्रतिपादित किया कि हमारी शिक्षा-प्रणाली मे उदात्त वैदिक आदर्शों तथा उत्कृष्ट नैतिक मूल्यों का समावेश हो इसके लिए पाठ्यक्रम मे हिन्दी व सस्कृत की शिक्षा अनिवार्य घोषित की जानी चाहिए।

इस प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए पण्डिता प्रज्ञादेवी जी (आचार्या, पाणिनि सस्कृत विद्यालय, वाराणसी) ने कहा कि काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सभी सस्कृत शब्दो का ही प्रयोग करते हैं। सस्कृत को निकालना ऐसा है जैसे शरीर से प्राण।

श्रीमती शकुन्तला जी आर्या ने न॰ २ प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

२. विषय—आतकवाद क्यो ?

आज भारतीय समाज आतकवाद की विभीषिका से ग्रस्त है, अत: उसके निराकरण हेतु आर्य महिलाओ को भी सलग्न होना चाहिए, जिस का समर्थन श्रीमती माण्डवीचन्द्रा जी एव सन्तोषकुमारी जी उ॰प्र॰ ने किया।

३. नारी जागरण

आर्यसमाज एव इसके सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने नारी जागरण की दिशा मे अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किन्तु आज स्वाधीन भारत मे नारी को सविधान मे पुरुषो के समान अधिकार प्राप्त होने पर भी दहेज, मद्यपान एव अश्लील विज्ञापनो मे नारी-देह का भोंडा प्रदर्शन आदि कुछ ऐसी समस्याये है जिनके प्रति आर्य महिलाओ की जागृति एव सक्रियता अनिवार्य है इसी दृष्टि से प्रस्तुत विषय के अन्तर्गत प्रमुख रूप से तीन समस्याओ पर विचार किया गया—

(क) दहेज उन्मूलन (ख) मद्यनिषेध (ग) अश्लील विज्ञापनो पर प्रतिबन्ध

श्रीमती प्रेमशील जी ने उक्त प्रस्ताव पढकर सुनाया तथा उक्त समस्याओ की ओर आर्य महिलाओ का ध्यान आकृष्ट किया। प्रमुख वक्ता डा॰ शशिप्रभा जी कुमार (प्रवक्ता मैत्रेयी कालेज, दिल्ली) ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया एव उद्बोधक भाषण मे कहा हमे अपने अन्दर निहित शक्ति को पहचानना व जाग्रत करना है, तभी दहेज, मद्यपान तथा नारी देह के अश्लील विज्ञापन रूपी दानवो का सहार हो सकेगा। आज की शिक्षित प्रबुद्ध नारी के दायित्व दोहरे है उसे अपनी अस्मिता की रक्षा करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास तो करना ही है—साथ ही समाज व राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यो को ध्यान मे रखते हुए सस्कारी सन्तति एव मर्यादित परम्पराओ का निर्माण भी करना है—तभी सच्चा नारी जागरण सम्भव होगा।

श्रीमती चन्द्रावती शर्मा हिमाचल प्रदेश ने मद्यपान के दोषो की चर्चा करते हुए बताया कि आर्य महिलाओ को मद्य-निषेध के लिए व्यापक सक्रिय अभियान चलाने चाहिए।

श्रीमती मनोरमा रजन जी (लखनऊ) ने अश्लील विज्ञापनो पर रोक लगाने की माग करते हुए इस दिशा में नारी जागरण को आवश्यक बताया।

उक्त तीनो प्रस्ताव सर्वसम्पति से पारित किये गये एव अध्यक्षीय भाषण मे आर्य महिलाओ को उद्बोधित करते हुए अपने अतीत के गौरव का स्मरण कराया गया और भावी पीढियो के लिए प्रशस्त दायित्व छेडने का आवाहन किया गया।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्र॰ सम्पादक—सूर्यदेव
सम्पादक—मलचन्द गप्त

वेद को सम्भाल कर रखिए

--डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, आर्यसमाज गोरखपुर

आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द वेदो के परमभक्त थे। आर्यसमाज की स्थापना और विकास वेदो के आधार पर किया था और उन्होने युग के विपरीत "वेद की ओर लौटो" का नाद किया था। वे केवल भारत वर्ष मे ही नही, सम्पूर्ण ससार मे वेदो का मेघ-मन्द्र निनाद सुनाना चाहते थे। सचमुच वेद के विषय मे उनका मत था कि "वेद आर्य सभ्यता और वैदिक सस्कृति का मूलाधारा है। वेद आर्य ज्ञान-विज्ञान का उज्जवल धाम है। वेद सम्पूर्ण आर्य वाङ्मय का प्राण है। वह भक्ति रस की मन्दाकिनी और उच्च गम्भीर विचारो का सुखद आवास है। वेद मे ओज, तेज और वर्चस्व की राशि है। वेद ब्रह्मगवि का भारत और रणाड्य का विहाण है। वद मे दिग्दिगन्त को पावन करने वाले उदात्त उपदेश है। वेद मे मानवता विद्रोहियो मे हडकम्प मचाने वाले अनुपम आदेश है। वेद अत्याचारियो और अनाचारियो को ध्वस्त विध्वस करने वाला ब्रह्मास्त्र है। वेद मानव के समस्त उच्च गुणो की क्रीडास्थली है। वेद में आधिभौतिक उन्नति की चरम सीमा है, आधिदैविक अभ्युदय की पराकाष्ठा है और आध्यात्मिक उन्नयन का चूडान्त रूप है।

वेद को आर्यसमाज ईश्वर की विमल वाणी मानता है। विश्व के उद्धार के लिए ही पारिजात से भी अधिक सुगन्धमय और स्फुटिक मणि से भी अधिक उज्जवल है। वेद के किसी मन्त्र मे कुरुक्षेत्र का भैरवत्व है, किसी में वीरो की भयकर हुकार है, किसी मे रणचण्डी का प्रचण्ड अट्टहास है, समर भूमिका विकट चमत्कार है, किसी मे लक्ष्मी का मधुर हास्य है, किसी मे वृन्दावन का प्रेम प्रवाह है, किसी मे दिव्य शक्ति का नवल उत्साह है और किसी में ब्रह्मद्रव का ललित विलास है। श्रुति भगवती जिसे छू देती है वह अमृत से भी अधिक प्रिय बन जाता है, जिसे देख लेती है वह चन्द्रिका से भी अधिक निर्मल हो जाता है और जिस पर अपने पादपद्म रख देती है वह पद्मराग मणि से भी अधिक मूल्यवान् हो रहता है।"

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियमो मे तीसरा रखा है "वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है, वेद का पढना पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

वेद मे साम्राज्य, स्वराज्य, राज्य आदि शब्द आते है परन्तु उसकी सबसे बडी देन 'राष्ट्र' शब्द है। राष्ट्र शब्द मे देश, राज्य, जाति और सस्कृति का समावेश है। नागरिक शास्त्र मे राष्ट्र की परिभाषा के अन्तर्गत धर्म, जाति, भौगोलिक सीमा, इतिहास आदि की गणना राष्ट्र शब्द मे होती है। वेद मे राष्ट्र के लिए बढना और सर्वस्व न्यौछावर करने का निर्देश दिया गया है। प्रार्थना की गई है—

ध्रुव ते राजा वरुणो ध्रुव देवो बृहस्पति।
ध्रुव त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्र धारयता ध्रुवम्॥

ऋ० १०-१७३ ५

इसका भाव है "वरुण राष्ट्र को अविचल करे बृहस्पति राष्ट्र को स्थिर करे, इन्द्र राष्ट्र को दृढ करे और अग्निदेव भी राष्ट्र को निश्चल रूप से धारण करे। वेद मे राष्ट्र के लिए जागृत रहने की उत्कण्ठा बतलाई गई है। वहा आया है—

वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता — यजुर्वेद ९-२३

राष्ट्र मे राष्ट्र के लिए हम सदा सतर्क और जागृत रहे और राष्ट्र के लिये ही आगे बढे। वेद कहता है—

अभीवर्तेन मणिना येनेन्द्रो अभिवावृधे
तेनास्मान्ब्रह्मणस्पतेऽभि राष्ट्राय वर्धय॥

ऋ० १-२९-१

हे (ब्रह्मणस्पत) ज्ञानपते (येन) जिस (अभीवर्तेन मणिना) विजयी मणि से (इन्द्र) शत्रु नाशक वीर (अभिवावृधे) बढा था। (तेन) उससे (अस्मान्) हम सबको (राष्ट्राय) राष्ट्र के लिए (अभिवर्धय) तू बढा।

इस मन्त्र मे विजयी विशेषण के साथ मणि शब्द का प्रयोग हुआ है। मणि रत्नवाचक शब्द है ब्राह्मण या ज्ञानी के पास ज्ञान, क्षत्रिय वीर के पास शौर्य, वैश्य के पास धन तथा शूद्रो के पास कारीगरी के रत्न होते हैं। इस रत्न से प्रत्येक पुरुष अपने कर्म से राष्ट्र का अगुआ होता है। ज्ञानी ज्ञान के द्वारा, क्षत्रिय, वीरता, वैश्य धन और शूद्र अपनी कारीगरी से राष्ट्र को उन्नत करे।

यजुर्वेद के २२-२२ मन्त्र मे कहा है —

आ राष्ट्रे राजन्य: शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्।

अर्थात् हमारे राष्ट्र मे क्षत्रिय वीर, धनुर्धर, लक्ष्यवेधी और महारथी हो। राष्ट्र की रक्षा का उपाय बताते हुए वेद कहता है—

ब्रह्मचर्येणतपसा राजा राष्ट्र विरक्षति। — अथर्व० ५ १-७

ब्रह्मचर्य रूपी तप के द्वारा ही राजा राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। यदि किसी राष्ट्र मे ब्रह्मचर्य का महत्व समाप्त हो जाएगा तो भोग विलास मे फसा राष्ट्र समाप्त हो जाएगा। अभी १९३९ ई० की लडाई मे भोग विलास ने फ्रांस का एक दिन में पतन करवा दिया। युद्ध के लिए शत्रु से लडने के लिए आर्य तन मन धन से राष्ट्र रक्षा करते थे और अपने प्राण भी समर्पित करने को तैयार रहते थे। वेद कहता है—

अभिवृत्य सपत्नान् अभियानो अरातय:।
अभिपृतन्यत तिष्ठाभि यो नो दुरस्यति॥ — अथर्व० १-२९-२

हे वीर! (सपत्नान्) प्रतिपक्षियो को तथा (या न.) जो हमारे (अरातय) शत्रु हैं उनको (अभिवृत्य) जीतकर (पृतन्यत:) सेना के साथ चढाई करने वालो को तथा जो हम सबसे (दुरस्यति) बुरा व्यवहार करता है, उसको (अभिनिष्ठ) दबाकर रख।

वीर पुरुषो को उचित है कि वे प्रति पक्षियो शत्रुओ, सेना से आक्रमण करने वाला तथा अनुदार पुरुषो को वीरता के साथ प्रतिबन्ध करे और उनको बुरा व्यवहार न करने दें।

अहमस्मि सहमान उत्तरोनाम भूम्याम्।
अभिषाऽस्मि विश्वाषाशामाशा विषासहि:॥

अथर्व० वेद १२-१-५४

मैं साहसी हू, वीर हू, भूमि भर मे उत्कृष्ट हू। अपने राष्ट्र के दुश्मनो का मुकाबला पडने पर छक्का छुडाने वाला हू। सब शत्रुओ का सामना करने वालो को परास्त करने की मुझमें क्षमता है। जिस दिशा मे कदम बढाऊगा। दुष्टो को पकड पकडकर मसल डालूगा।

यद्वदामि मधुमत् तद् वदामि।
यदीक्षे तद् वनन्ति मा।
त्विषीमानस्मि जूतिमान्।
अवान्यान् हन्मि दोधत:॥ — अथर्व० १२-१-५८

जिससे अपनी मातृभूमि की बात करता हू मीठी बात करता हू, जिसकी ओर दृष्टि करता हू वह मुझसे स्नेह करने लगता है। एक ओर मैं ज्योतिपूर्ण, वर्चस्व शाली, और बुद्धि युक्त होकर मातृभूमि का दोहन करने वाले शत्रुओ का विनाश कर डालता है। वेद की रक्षा जनता को करनी चाहिए, वेद की रक्षा राष्ट्र के राजा, अधिकारी, प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति को करनी चाहिए। वेद राजा, प्रधानमन्त्री या राष्ट्रपति मे प्रतिज्ञा कराता है। "यदि मैं प्रजा का द्रोह करू तो अपने जीवन, अपने पुण्यफल, अपनी सन्तान आदि सबसे वचित हो जाऊ।"

राजा या राष्ट्रपति या प्रधान मन्त्री के लिए वेद कहता है—

राजा राष्ट्राना पेशोनदीनामनुत्तमस्मै क्षत्रविश्वायु।

ऋ० ७-३४-११

अर्थात् राजा (नदीना राष्ट्राना) गमनशील राष्ट्रो को (पेश) रूप है। इसलिए (अस्मै) इसके पास विश्वायु सब प्रकार का (अनु ते क्षात्र) उत्तम क्षात्र तेज होवे। राजा ही राष्ट्रो की उन्नति करने के कारण राष्ट्रो को रूप देने वाला है। इसलिए उसके पास उत्तम तेज होना चाहिए। इन सब बातो के ज्ञान के लिए, राष्ट्रनिर्माण, राष्ट्र रक्षा और शत्रुओ के विनाश की प्रेरणा के कारण वेदो की रक्षा अत्यधिक आवश्यक हैं। (क्रमश:)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वैदिक शासन व्यवस्था



वेदो मे शासन पद्धति का एक बहुत ही विकसित रूप प्राप्त होता है। राजा को पूर्णत. निरकुश नही माना गया। सभाओ व समितियो द्वारा राजा के ऊपर नियन्त्रण होता था। ये सभाए समितिया प्रजा द्वारा नियन्त्रित थी। प्रजा इनके अधीन थी। वैदिक साहित्य मे राज्य के लिए साम्राज्य शब्द का अनेक स्थानो पर प्रयोग हुआ है।

(ऋग्वेद १-२५-१०) वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर पता लगता है कि राजा का चुनाव होता था, सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तु (अथर्व० ३ ४-१) हे राजन्! राष्ट्र की सभी दिशाओ मे रहने वाली प्रजाए राज्य करने के लिए तुम्हारा आवाहन करे, २- त्वा विशो वणता राज्याय (अथर्व० ३-४-२) -- हे राजन्! सब प्रजाए राज्य करने के लिए तुम्हारा चुनाव करे, ३ सर्वा सगत्य वरीयस्ते अक्रन् (अथर्व० ३-४-७)—सारी प्रजाए मिलकर हे राजन् तुम्हारा चुनाव करें, ४- त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा इमे (यजु० २७-३)—हे अग्नि जैसे तेजस्वी राजन्! राष्ट्र के ये सारे ब्राह्मण लोग तुम्हारा चुनाव कर रहे है। ५ ये धीवानो, रथकारा कर्मारा ये मनीषिण सूता ग्रामण्यश्च ये (अथर्व० ३-५-६-७)—हे राजन् राष्ट्र के जो धीवर लोग हैं, जो रथकार लोग है, जो लोहे का काम करने वाले कारीगर है, जो बुद्धि जीवी लोग है, जो रथ और गाडिया चलाने वाले लोग हैं और जो गावो के किसान और उनके मुखिया लोग है, वे सब तुम्हारे चुनाव के लिए अपना मत दे रहे हैं। वेद मे इस प्रकार के अनेक स्थल हैं जहा राजा के चुनाव का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। वैदिक राज्य व्यवस्था प्रजातन्त्र पद्धति को मानती है। वशानुक्रम एकतन्त्र राजा की पद्धति को स्वीकार नही किया गया। यदि राजा वंश परम्परा में भी उत्तराधिकारी बनने योग्य है तो भी महासभा का अनुमोदन आवश्यक है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश मे और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे राज्यधर्म व्यवस्था का विशद विवरण दिया है। यद्यपि यह विवरण सक्षिप्त है, परन्तु उन्होने कुछ ग्रथो—ब्राह्मण, आरण्यक, स्मृति, महाभारत, नीति का नाम गिनाया है तथा तदनुसार राज-काज चलाने की व्यवस्था दी है। इन ग्रन्थो का अध्ययन करने पर तो सम्पूर्ण राजतन्त्र का सुन्दर चित्र सामने आ जाता है।

राजा को राज्य कार्य मे सहायता देने के लिए दो सभाओ का विधान है—सभा और समिति। ये दोनो सभाए राज्य के लिए कानून और व्यवस्थाए बनाए गी। राजा को तदनुरूप ही शासन करना होगा। राजा मनमानी नही कर सकता। पथभ्रष्ट राजा को पदच्युत भी किया जा सकता है। राजा का कार्य वर्णाश्रम व्यवस्था का पालन कराना भी है।

ऐतरेय ब्राह्मण मे अनेक सविधानो का वर्णन मिलता है—साम्राज्य भोज्य, स्वराज्य, वैराज्य, राज्य, पारमेष्ट्य, महाराज्य, आधिपत्य आदि। इनका विस्तार से अध्ययन आवश्यक है। राजा के कर्त्तव्यो एव उत्तरदायित्वो का सम्यक विवेचन ऋग्वेद के वरुण और इन्द्र सूक्तो मे किया गया है। वरुण को आदर्श का राजा घरेलू नीतियो का आदर्श माना जा सकता है और इन्द्र को वैदेशिकनीतियो का। वेदो मे राज्य के विकास के लिए यज्ञादि धार्मिक कृत्यो का भी विधान है। राजसूय, वाजपेय, अश्वमेध, सर्वमेध आदि यज्ञो द्वारा राजा अपनी वीरता, त्याग व तपस्या का परिचय देता है। तभी वह राजा पद का अधिकारी बनता है। चक्रवर्ती सम्राट बनने के लिए तो उसे और अधिक तेजस्विता का परिचय देना होता है।

वेदो मे सेनापति तथा सेनाओ के निर्माण चयन तथा उत्तरदायित्वो का भी उल्लेख मिलता है। युद्ध के लिए अस्त्रशस्त्रादि, विमान और पोत का भी उल्लेख है। अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त मे राष्ट्र की परिकल्पना तथा उसकी सुरक्षा एव सवर्धन का वर्णन मिलता है। समस्त विश्व का मानव समाज एकसूत्र मे बध कर रहे। इसे उच्च आदर्श माना गया है। यही इस शासन व्यवस्था की प्रासगिकता है।

मेरे आर्य समाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(१३ जनवरी ९१ के अक से आगे)

आर्यसमाज के प्रचार मे भजनोपदेशको का निर्विवाद योगदान रहा है। हमारी कुमार सभा मे भी सर्व श्री गनपतसिह, अभयसिह तथा जगदीशचन्द्र गुप्त नामक तीन छात्र अच्छे गायक थे। इन्होने प्रसिद्ध भजनोपदेशको के अनुकरण पर ही अपनी गायन एव उपदेशक कला का विकास किया था। जगदीशचन्द्र गुप्त तो कालेज मे मेरे सहपाठी ही थे और उनको प्राय आर्यसमाज के मच से सुन्दर शैली मे बोलने देखकर मुझे ईर्ष्या मिश्रित विस्मय भी होता था। काश मैं भी इस प्रकार बोल पाता। आगे चलकर जब यही जगदीश गुप्त कुछ वैयक्तिक कारणो से आर्यसमाज से अपना सम्बन्ध तोड बैठे तो मैने अनुभव किया कि आर्यसमाज से सम्पर्क का टूट जाना कभी-कभी सामाजिक जीवन की इति श्री का कारण बन जाता है। श्री गनपतसिह को रेलवे मे खानपान व्यवस्था का ठेका मिल गया और उनका भी आर्यसमाज से सम्पर्क टूट गया। श्री अभयसिह राजस्थानी लोक गायको की मण्डली मे सम्मिलित होकर व्यावसायिक सगीतज्ञ बन गये। इस प्रकार यह किशोर भजनीक युगल भी आर्यसमाज से दूर चला गया।

आर्यकुमारसभा के अधिवेशनो को प्रौढवय के आर्य सभासदो का भी मार्गदर्शन और आशीर्वाद प्राप्त होता था। सर्व श्री टाकलाठुरामजी, राधाकृष्ण जी तथा मास्टर रामनारायण सिह प्राय शनिवासरीय आर्य कुमार सभाओ मे आने और हमारा उत्साह वर्धन करने। मेरे एक भाषण से प्रसन्न होकर मास्टर रामनारायण सिह जी ने मुझे सवा रुपया पुरस्कार रूप मे देने की घोषणा की।

इण्टरमीडियेट के मेरे पाठ्यक्रम मे प० सोहनलाल द्विवेदी का कुणाल काव्य लगा हुआ था। मैंने पुरस्कार रूप मे प्राप्त सवा रुपया का सदुपयोग इस पुस्तक को खरीदकर ही किया। आर्यकुमार सभा के तत्कालीन मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र गुप्त ने इस पुस्तक पर एक वाक्य लिख दिया था।

यह पुस्तक आज भी मेरे पुस्तकालय मे विद्यमान है।

आर्यसमाज के कार्यक्रमो मे हमारी निष्ठा अविचलित, अनन्य तथा पराकोटि की थी। शायद ही कोई शनिवार रहा होगा, जिस दिन हम कुमारसभा के अधिवेशन मे अनुपस्थित रहे हो। सध्या और हवन स लेकर शान्तिपाठ तक के सम्पूर्ण कार्यक्रम में उपस्थित रहना हमारा अनिवार्य नियम था। कालान्तर मे अपने साथियो सर्व श्री दाऊलाल टाक, चादमल, वसन्तलाल और शिवप्रसाद के साथ हम लोग आर्यसमाज गुलाब सागर के सदस्य बने और वहा के कार्य को अपने हाथो मे लिया।

आर्यकुमार सभा के सम्बन्ध मे कुछ अन्य बाते लिखना भी आवश्यक है। उन दिनो देश विदेश की आर्यकुमार सभाये भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद् के सगठन से सम्बन्ध थी चौधरी चरणसिह, प० अलगूरायशास्त्री तथा प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति जैसे मूर्धन्य नेता और विद्वान् कुमार परिषद के अध्यक्ष पद को सुशोभित करते थे। यह परिषद धार्मिक परीक्षाओ का भी सचालन करती थी जिनमे प्रति वर्ष विभिन्न स्थानो से सहस्रो छात्र-छात्राये सम्मिलित होते थे। अजमेर के डा० सूर्यदेव शर्मा परीक्षा मन्त्री थे। मैंने नगर आर्यसमाज के मन्त्री श्री राधाकृष्ण जी को प्रेरणा दी कि वे इन परीक्षाओ का केन्द्र गुलाबसागर आर्य समाज मे स्थापित करे तथा स्वय परीक्षा सचालक का कार्य सभाले। मेरा विचार तो पहले ही साल में सर्वोच्च परीक्षा सिद्धान्तशास्त्री मे ही प्रविष्ट होने का था, किन्तु पूरी तैयारी न होने के कारण मैने इन चारो धार्मिक परीक्षाओ को क्रमश ही उत्तीर्ण किया। (क्रमश)

स्वामी समर्पण शोध सस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ मे इस विषय पर एक राष्ट्रीय सगोष्ठी १३ जनवरी १९९० को हुई। इस गोष्ठी मे अनेक विश्वविद्यालयो से पधारे विद्वानो ने अपने शोध-पत्र पढे। पूज्य श्री स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने समय-समय पर ऐसी गोष्ठियो की परम्परा डालकर सुधी विद्वानो मे वैदिक विचार धाराओ का विश्लेषण करने की प्रवृत्ति को जन्म देकर एक सराहनीय कार्य किया है। निदेशक डा० निरूपण विद्यालकार प्रतिवर्ष यह आयोजन करते है। हमे अन्य सस्थानो मे भी ऐसी राष्ट्रीय गोष्ठिया आयोजित करनी चाहिए।

—डा० धर्मपाल

वर्ण जन्म से नहीं, गुण-कर्म से

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,

वर्ण-व्यवस्था और वेद

यजुर्वेद के ३१वे अध्याय मे वर्ण-व्यवस्था की रूपरेखा का वर्णन है। यजुर्वेद "कर्म–काण्ड" का वेद है। आजकल "कर्म-काण्ड" का अर्थ केवल यज्ञ-मात्र आदि ही अधिक प्रचलित है किन्तु इसका वास्तविक अर्थ है "कर्म विभाग"। यजुर्वेद का एक अर्थ कर्म भी है इस प्रकार यजुर्वेद कर्म का वेद है। यह भी कहा जा सकता है कि वेद के कर्म–व्यवस्था विभाग का नाम ही यजुर्वेद है। वर्ण-व्यवस्था क्योकि श्रम–व्यवस्था का ही दूसरा नाम है और श्रम-व्यवस्था की दृष्टि से कर्मानुसार समाज का वर्गीकरण ही कर्म-व्यवस्था है अत कर्मकाण्ड (कर्म-विभाजन) होने के कारण इसे यजुर्वेद मे आना चाहिए था। एतदर्थमेव जैसा कि हमने लिखा है, यजुर्वेद के ३१वे अध्याय मे इसकी रूपरेखा दी गई है और समझने मे भ्रान्ति न रह जाय, इस कारण से उसे उपमा देकर प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्याय का ऋषि नारायण है अर्थात् नरो का अयन सम्वहन, धारण करने वाला। अध्याय का दृष्टिकोण भी नरो को अयन, सम्वहन, धारण करने वाले परमात्मा तथा सामाजिक विषय का है। वर्णव्यवस्था को रूपरेखा जिन मन्त्रो मे दी गई है, उनका देवता है 'पुरुष"। पुरुष का अर्थ है पूर्ण तथा पुरुषार्थमय। परमात्मा पूर्ण है और समस्त पुरुषार्थो से युक्त है। समाज भी अपने वर्णीकरण मे पूर्ण और अपने लियेआवश्यक समस्त पुरुषार्थो से युक्त होता है। इस प्रकार उक्त दो मन्त्रो को समाज के सभी अगो, समस्त नरो और (नर-समूह) परिवारो को अयन, सम्वहन, धारण करने की दृष्टि और समाज के वहन करने के विषयो (देवताओ) को दृष्टिगत रखकर ही समझ जाना चाहिए। जो लोग मन्त्र के ऋषि और देवता का विचार किये विना वेद–मन्त्रो के अर्थ करते हैं, वह उनसे भले ही कुछ अच्छे विचारो को ले ले, किन्तु मन्त्र का वास्तविक उद्देश्य—जो उसके ऋषि और देवता को समझकर प्रकट हो सकता है—अन्य प्रकार सम्भव नही।

मन्त्र इस प्रकार है—

यत्पुरुषं व्यदध कतिथा व्यकल्पयन्।

मुख किमस्यासीत्कि बाहू किमुरु पादा उच्येते ।। यजु० ३१-१०

अथ—(यत्) जो (पुरुषम्) पुरुष को अर्थात् पूर्ण को और पुरुषार्थ-युक्त को (वि-अदधु) विविध प्रकार (कतिथा) कितने (ही) प्रकार (वि-अकल्पयन्) विशेष कर कहते है। (मुखम्) मुह (किम्-अस्य आसीत्) क्या इसका था (किम् बाहू) क्या भुजा (किम्-उरु) क्या नाभि से जघाओ तक का भाग और क्या (पादा उच्येते) पैर कहे जाते हैं ?

अभिप्राय यह है कि यदि मानव समाज का उसकी अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए, उसके अपने भीतर के सामर्थ्य के अनुसार, जो उसकी अपनी आवश्यकताओ के लिए उसमे पूर्ण है—वर्गीकरण किया जाय तो जिस प्रकार शरीर मे मुख, हाथ, जघाये और पैर अपने-अपने कर्त्तव्यो की पूर्ति करके इसे पुरुष अर्थात् पुरुषार्थयुक्त कहलाने का अधिकारा बनाये रखते हैं। इसी प्रकार इस समाज मे वह कौन तत्व अर्थात कौन-कौन वर्ग होंगे, जो इसे पुरुष कहलाने का अधिकारी सिद्ध कर सके। इसका उत्तर इससे आगे के मन्त्र मे इस प्रकार दिया, गया है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य कृत:।

उरु तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्या शूद्रो प्रजायत ।। यजु० ३१-११

अर्थ—(ब्राह्मण:) ब्राह्मण (अस्य) इसका (मुखम् आसीत्) मुह (बनाया) था। (बाहू) भुजाये (राजन्य) राजपुत्र, क्षत्रिय (कृत) की गई बनाई गई। (उरु) नाभि से जघा पर्यन्त भाग (तत्) वह (अस्य) इसका (यत्) जो (वैश्य) वैश्य (है)। (पद्भ्याम्) पैरो (के स्थान) के लिए (शूद्र) शूद्र (अजायस्त) जन्मा है।

अर्थात् जिस प्रकार शरीर की शक्तिया शरीर के ही विविध अगो मुख आदि के रूप मे अपने-अपने कर्त्तव्यो को पूरा करके मानव-जीवन का पूर्ण अयन, सम्वहन, धारण कर लेती है। ठीक इसी प्रकार समाज मे भी पूरी शक्तियाँ विद्यमान है, जो सम्पूर्ण समाज का वहन ठीक प्रकार कर सकती है, यदि उनका वर्गीकरण ठीक प्रकार से हो। जैसे शरीर मे मुख-ज्ञानादि कार्य करने ला है, इसी प्रकार समाज मे भी विद्या विज्ञान के कार्यो को सम्पादन करने वाले लोग अर्थात् ब्राह्मण पैदा कर दिये गये है। जिस प्रकार शरीर की रक्षा के लिए शरीर में भुजाये उत्पन्न की गई है, उसी प्रकार समाज की रक्षा-व्यवस्था के लिए समाज मे पराक्रमी लोग क्षत्रिय उत्पन्न कर दिये गये है जैसे खाये हुए भोजन को सभाल, पचा और रस बनाकर पेट सम्पूर्ण शरीर को बाट देता है और जघाये शरीर को गति मे योग देती है, इसी प्रकार अर्थ सम्पादन कर समस्त समाज मे दान व करो के द्वारा बाट देने वाला और देश-विदेश जाकर व्यापार द्वारा राष्ट्र की समृद्धि में लगा रहने वाला वर्ग अर्थात् वैश्य-वर्ग उत्पादन किया गया है। इन तीनो वर्गों के कार्यो मे सेवा व परिश्रम द्वारा योग-दान करने वाला शूद्र भी उत्पन्न हुआ हैं, जैसे पैर सम्पूण शरीर का भार वहन कर उसे सब स्थानो पर लिये फिरते है।

सत्यासत्य के निश्चय के लिये यदि निष्पक्षता से पूर्वाग्रह रहित होकर विचार किया जाय तो मुख, हस्त, उरू, पाद आदि उदाहरण ही यह सिद्ध करने को पर्याप्त हैं कि प्रधानता गुण कर्मों की है, जन्म की नही। यदि वास्तविक रूप मे यह व्यवस्था वर्तमान काल मे भी लागू हो जाय तो कोई राष्ट्रीय और सामाजिक समस्या ऐसी नही है, जो बिना किसी उलझन के स्वाभाविक रूप से हल होती न चली जाय।

वर्ण-व्यवस्था और महाभारत पुराण व धर्म-सूत्र

अभागे भारत मे जन्म-जातीयता ने अपनी जडे इतनी गहरी जमा ली हैं कि इससे उत्पन्न भेदभाव तथा छुआ-छूत के कारण एक सहस्र वर्ष पराधीनता मे विदेशियो द्वारा पादाक्रान्त रहकर भी भारतवासी नेत्र खोलने को तैयार नही। निकृष्ट से निकृष्ट कर्म करके भी कुछ लोग तो अपनी उच्चता का ढोल पीटने मे गौरव की न केवल अनुभूति ही अपितु अभि-व्यक्ति भी करते हैं। इन लोगो को इतना तक भी पता नही कि इनके अपने धर्म-शास्त्र इस विषय मे क्या कहते है ?

इस लेख मे हम कतिपय धर्म-शास्त्रो की सम्मति उद्धृत कर रहे हैं। पाठकगण देखेंगे कि शास्त्रो के नीचे दिये वचनो से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि वर्ण का सम्बन्ध जन्म मे नही अपितु गुण-कर्म से है। साथ ही यह भी कि गुण-कर्मो के परिवर्तित हो जाने से वर्ण भी परिवर्तित हो जाते हैं। इस विषय मे पहले भारत के महान इतिहास ग्रन्थ महाभारत से उद्धरण प्रस्तुत है। पाठकगण ध्यानपूर्वक पढे।

इन्द्रो ब्राह्मण पुत्र क्षत्रिया कर्मस्य कारणम्।

महाभारत शान्ति पर्व। ४३। ११ ।।

अर्थ—इन्द्र ब्राह्मण का पुत्र था, कर्म द्वारा क्षत्रिय हो गया। अब पुराणों के प्रमाण देखिये—

श्वपाको गर्भ सम्भूत: पिता व्यासस्य पार्थिव.।
तपसा ब्राह्मणो जात: सस्कारतेन कारणम्।।

भविष्य पुराण ब्रह्मपर्व ।। ४३-२७ ।।

अर्थ—चाण्डाली के गर्भ से उत्पन्न व्यास जी के पिता क्षत्रिय थे। तप के द्वारा ब्राह्मण हो गये इसका कारण सस्कार हैं। इस श्लोक से स्पष्ट है कि चाण्डाली माता और क्षत्रिय पिता के सयोग मे जन्म लेकर भी पुरुषार्थ पूर्वक विद्याध्ययन करके अपने सस्कारो को परिवर्तित कर व्यास जी ब्राह्मण बने तथा महर्षि वेद व्यास कहलाये।

गणिका गर्भ सम्भूतो वशिष्ठश्च महामुनि.।
तपसा ब्राह्मणो जात सस्कारस्तेन कारणम्।।

भविष्य पुराण ब्रह्मपर्व ४३-२८।

अर्थ—गणिका अर्थात् वैश्या के गर्भ से उत्पन्न महामुनि वशिष्ठ तपस्या अर्थात् पुरुषार्थ पूर्वक विद्याध्ययन करके ब्राह्मण बने, इसका कारण यह है कि उन्होने विद्या तथा आचरण द्वारा उत्तम सस्कार निर्माण किये और इस प्रकार से उत्तम आचार-विचार अर्थात् गुण-कर्म-स्वभाव ब्राह्मणत्व का उपलब्ध हुआ, जिसके कारण समाज मे ब्राह्मण पद प्राप्त हुआ।

वर्ण जन्म से......

इससे यह तो स्पष्ट ही है कि जिसके सस्कार, आचार-विचार गुण, कर्म, स्वभाव उत्तम हो, वही ब्राह्मण होता है फिर चाहे वह किसी शुद्र घर मे जन्मा हो अथवा अति शुद्र घर में। बिना उत्तम सस्कारों की प्राप्ति के कोई ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी नही हो सकता, चाहे वह ब्राह्मण परिवार मे ही जन्मा हो। उत्तम सस्कारो की प्राप्ति के लिये विद्या प्राप्ति अत्यन्त आवश्यक है ब्रह्म पुराण ५१-२२३ मे कहा भी है—

शूद्रो आगतसम्पन्नो द्विजो भवति सस्कृत:।

अर्थ—शूद्र भी शास्त्र सम्पन्न अर्थात् शास्त्रो का ज्ञाता और सस्कारित होकर द्विज हो जाता है।

आपस्तम्ब धर्म सूत्र का विधान भी पठनीय और मननीय है, जो नीचे उद्धृत है।

धर्मचर्यया जघन्यो वर्ण पूर्व पूर्व वर्णमापजते जातिपरिवृत्तो ॥१॥

अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णो जघन्य जघन्य वर्णमापजते जातिपरिवृत्तो ॥२॥

(आपस्तम्ब सूत्र)

अर्थ—धर्म के आचरण से निकृष्ट वर्ण के लोग भी स्व-स्व कर्मानुसार पूर्व अर्थात् अपने से उच्च वर्ण को प्राप्त होते है और इस प्रकार उनका जाति परिवर्तन हो जाता है। इस का अभिप्राय यह है कि शूद्र जिस वर्ण के गुण-कर्म स्वभाव को पुरुषार्थ पूर्वक विद्या-विज्ञान प्राप्त करके धारण कर लेगा, उसी वर्ण का अर्थात् वैश्य, क्षत्रिय अथवा ब्राह्मण हो जायगा। इसी प्रकार वैश्य भी परिश्रम करके क्षत्रिय अथवा ब्राह्मण और क्षत्रिय पुरुषार्थ द्वारा ब्राह्मण बन सकता है, जिस प्रकार विश्वामित्र और वेद व्यास क्षत्रिय से ब्राह्मण बने थे।

इसी प्रकार अधर्म का आचरण करने के कारण अर्थात् स्व वर्ग के आचरण से निम्न स्तर के आचरण करके उच्च वर्ण का व्यक्ति भी अपने से जघन्य अर्थात् निम्न वर्ण को प्राप्त होता है। इसका स्पष्टार्थ यह हुआ कि ब्राह्मण ब्राह्मणत्व के कर्म को न करके ब्राह्मण के गुण-कर्म-स्वभाव के विपरीत कर्म करने लगता है तो उन कर्मों के द्वारा जिस वर्ण के अनुसार वह कर्म होते हैं उसी वर्ण को प्राप्त होता है। अभिप्राय यह है कि ब्राह्मण से क्षत्रिय वैश्य तथा और अधिक पतित होकर शूद्र बन जाता है। इसी प्रकार क्षत्रिय भी वैश्य और शूद्रत्व को तथा वैश्य शूद्रत्व को प्राप्त हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी का यह कथन भी उक्त शास्त्रीय प्रमाणो की पुष्टि करता है—

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस कीन्ह सो तस फल चाखा॥

अर्थ—विश्व मे कर्म की प्रधानता स्वीकार की जाती है। जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। जैसे आचरण अर्थात् कर्म होगे, वैसा ही पद (स्थान) समाज मे मिलेगा। इन प्रमाणो के होते हुए भी जो लोग जन्म जातिवाद के समर्थक है, शास्त्र का निम्न वचन भी उन्हे ध्यान मे रखना चाहिये।

जन्मना जायते शूद्र: सस्कारात् द्विज उच्यते।

अर्थ—जन्म से सब शूद्र अर्थात् अशुद्ध, गन्दगी में लिपटे हुए तथा मुर्ख ही उत्पन्न होते है। शुद्ध किये जाने पर विद्या की प्राप्ति और शुभ-सस्कारो के द्वारा ही स्व-स्व गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार द्विज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र हो जाते हैं।

द्विज का अर्थ है द्विजन्मा—जिसके दो जन्म हुए हो। एक माता-पिता के सयोग से तथा दूसरा विद्या प्राप्ति द्वारा गुरुजनो से। किसी भी प्रकार की विद्या प्राप्त न कर पाने वाला अर्थात् माता-पिता से जन्म प्राप्त करने मात्र से तो मनुष्य शूद्र ही रह जाता है। सृष्टि-उत्पत्ति-काल म मानव समाज की स्थिति और उसके वर्णो मे परिवर्तन हो जाने अर्थात् वर्ण विभाजन का वर्णन करते हुए ब्रह्मर्षि भगवान् भृगु के शब्दो को जो उन्होने बृहस्पति के पुत्र भारद्वाज से कहे है—हम यहाँ उद्धृत करते हैं। श्लोक इस प्रकार है—

न विशेषोस्त वर्णाना सर्व ब्राह्ममिद जगत्।
ब्राह्मण: पूर्व सृष्टा ही कर्मणाभि वर्णता गता॥
पिशाचा. राक्षसा प्रेता विविधा म्लेच्छजात।
नष्ट ज्ञान-विज्ञाना स्वच्छन्दाचार चेष्टिता॥

(महाभारत शान्तिपर्व। १८६।१।१६

अर्थ – वर्णों की कोई विशेषता नहीं सम्पूर्ण जगत् ब्रह्ममय है। पहले सब ब्राह्मण थे, कर्मों द्वारा वर्णो को प्राप्त पिशाच, राक्षस, प्रेत आदि विविध जातिया हो गयी।

प्रिय पाठकवृन्द ! आपने ध्यानपूर्वक इस सम्पूर्ण लेख को पढा ही है। यह आपको स्पष्ट हो गया होगा कि जो लोग जन्म जातीयता के आधार पर स्वय को उच्च और अन्यो को नीच मानते उनसे घृणा और छुआछूत करते है, वह इन सभी ग्रथो को अपने धर्मग्रन्थ और शास्त्र मानते है, जिनके प्रमाण हमने इस लेख मे दिये हैं। ऐसी स्थिति में उन भाइयो को ऊच-नीच की भावना और मान्यता तथा अपने ही धर्मबन्धुओ से घृणा अनुचित है। हमारा आप सब से विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार के विचारो और व्यवहार को त्याग अपने धर्म बन्धुओ के साथ समानता और प्रेम का व्यवहार करे।

जो कोई जन्म से वर्ण-व्यवस्था माने और गुण-कर्म के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिये कि जो कोई अपने वर्ण को छोड नीच अथवा क्रिश्चियन, मुसलमान हो गया हो, उसको भी ब्राह्मण क्यो नही मानते ? तब यही कहोगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म को छोड दिया इसलिये वह ब्राह्मण नही है इससे यह सिद्ध होता है कि जो ब्राह्मणादि उत्तम कर्म करते हों, वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण, कर्म, स्वभाव वाला होये तो उसको भी उत्तम वर्ण मे और उत्तम वर्णस्थ ही के नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण मे गिनना अवश्य चाहिए।

कौमी एकता व सद्भावना कैसे हो ?

मान्यवर !

समाचार पत्रो मे श्री हरिदेव जोशी पूर्व मुख्य मन्त्री राजस्थान की सद्भावना बनाये रखने की जो अपील प्रकाशित हुई है उसमे जामामस्जिद देहली के नायब इमाम के नाम से जो पर्चे प्रकाशित हुए हैं वे झूठे बताये गये है। सद्भावना बनाये रखने की अपीलतो आवश्यक व उचित ही प्रतीत होती है, परन्तु क्या इसपर्चे को झूठा बताने के लिए वे उक्त इमाम की ओर से अधिकृत हैं ? जबकि उक्त इमाम की ओर से पर्चे को झूठा बताने का कोई वक्तव्य प्रकाशित नही हुआ है। इस पर्चे मे हिन्दुओ को कत्ल कर देने आदि की आयाते--सूरा-, सू-१९१, सूरा-८ तथा सूरा-९ भी क्या झूठी है ? क्या शाही इमाम अब्दुला बुखारी, सैयद शहाबुदीन तथा उत्तर प्रदेश के मन्त्री आजमखा के यह वक्तव्य भी झूठे है कि—"महमूद गजनवी, गौरी तथा बाबर की औलादो जागो, जो काम इन्होने पूरा नही किया वो तुम्हे करना है। पूरे भारत मे इस्लाम का झण्डा फहराना है। बाबरी मस्जिद के लिए खून बहाना है।

उक्त वक्तव्यो तथा इमाम व कुरान के पैगाम से क्या परस्पर सद्भावना कौमी एकता व देश की अखडता रह सकेगी ? इसी भावना के कारण पाकिस्तान बना, काश्मीर मे आतकवाद व हिंसा फैल रही है, पाकिस्तान जिन्दाबाद भारत मुर्दाबाद के नारे लगाये जा रहे हैं, तिरगा झडा जलाया जा रहा है, हिन्दू मन्दिर तोडे जा रहे हैं। भारत के अन्य स्थानो मे दगे हो रहे है, मस्जिद व घरो मे घातक हथियार मिल रहे हैं। "हस के लिया है पाकिस्तान, अब लडकर लेंगे हिन्दुस्तान" के नारे लगाये जा रहे है। परन्तु वोटो के लिए कांग्रेस इनके लिए तुष्टिकरण की तथा बहुसख्यक देश भक्त हिन्दुओ की भावना के दमन की नीति अपना रही है जैसा कि अयोध्या में हुआ। जिसका विरोध करने वाले हिन्दुओ तथा भारतीय जनता पार्टी को कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टी व जनता दल की ओर से साम्प्रदायिक व विघटनकारी बताया जा रहा है। जबकि उक्त दलो का देश का विभाजन करने वाली साम्प्रदायिक मुस्लिम लीग, नागालैण्ड आदि की क्रिश्चियन लीग आदि से भागीदारी है। अयोध्या में श्रीराम मन्दिर बनाने के लिये न्यायालय का निर्णय मानने की बात कही जा रही है, परन्तु शाहबानो को गुजारा भत्ता देने का, गत अक्टूबर मे आडवानी की रथ यात्रा तथा अयोध्या मे सप्तकोसी परिक्रमा न रोकने कान्यायालय का निर्णय नही माना गया।

उक्त पार्टिया तथा मुस्लिम यह सत्य क्यो नही मानते कि वे जिस भारत मे जन्मे, जिसके अन्न, जल से पले हैं, वे उसके प्रति ही वफादार व ईमानदार रहे। इस देश के श्रीराम, कृष्ण आदि महापुरुषो तथा इस देश की सभ्यता, सस्कृति का सम्मान करे। वे इनकी ही सन्तानें है, मजहब बदल गया तो क्या उनके शरीर मे इनका ही खून होने से सच्चे भाई-भाई का नाता नही है। उनकी माग पर जब देश का बटवारा हो चुका तो वे वहा रहने के अधिकारी है, अब उनका यहा केवल यही अधिकार व कर्तव्य है कि वे उपरोक्त बातो को मानकर अपने हिन्दू भाइयो के साथ प्रेमपूर्वक रहे। इस प्रकार के आचरण से ही स्थाई सच्ची कौमी एकता परस्पर सद्भावना, देश की अखडता व सुख शान्ति रह सकती है, केवल एकता के निरर्थक नारेबाजी तथा रेलियो से नही।

भगवतीप्रसाद सिद्धान्त भास्कर प्रधान,
१४३०, प० शिवदीनमार्ग, कृष्णपोल, जयपुर (राज०)

सम्पादक के नाम पत्र

आपका नवीन विशेषाक प्राप्त हुआ । आपने यह अक पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी की पावन स्मृति में श्री प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी के चित्र के साथ मनमोहक पठनीय सामग्री के साथ प्रकाशित किया है : अत. आपको बहुत-बहुत धन्यवाद ।

वेदपथिक धर्मवीर आर्य "झडाधारी"
क्रातिकारी स्वतन्त्रता सेनानी

—आपकी पत्रिका द्वारा जो विशेषांक प्रस्तुत किये जा रहे हैं यह आर्य सामाजियो मे नई चेतना और अपनी सस्कृति मे नई जीवन दायी योजना है । आप को मैं पुन: धन्यवाद देता हू और परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि आपका स्वास्थ्य व शुभ कार्य मे आपकी आस्था व्याप्त रहे ।

सुभाषचन्द्र सिह मन्त्री आर्यसमाज
नीलोखेडी हरियाणा

—आर्य सन्देश का आर्यसमाज स्थापना दिवस पर प्रकाशित "समग्र क्रान्ति अक" प्राप्त हुआ । विशेषाक वास्तव मे काफी सुन्दर एव आकर्षक था । इसमे सभी लेख काफी शिक्षाप्रद एव प्रेरणादायक थे । आर्यसमाज के सम्बन्ध मे काफी ठोस एव महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई ।

आर्यसन्देश का हैदराबाद सत्याग्रह स्मृति अक प्राप्त हुआ । यह विशेषाक भी काफी सुन्दर एव आकर्षक निकला है । हैदराबाद सत्याग्रह के सम्बन्ध मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली ।

आर्यसन्देश का ऋषि निर्वाण दिवस एव पण्डित शिवकुमार शास्त्री अक प्राप्त हुआ । यह अपने पूर्व विशेषाको की भाति काफी सुन्दर एव आकर्षक था । इसमे महर्षि दयानन्द सरस्वती एव शास्त्री जी के सम्बन्ध मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली ।

आर्यसन्देश का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान एव पण्डित इन्द्र विद्यावाचस्पति अक प्राप्त हुआ । इसमे स्वामी इन्द्र विद्यावाचस्पति के सम्बन्ध मे ढेर सारी सामग्री पढने को मिली ।

अत: पत्रिका के ये चारो विशेषाक सभी दृष्टियो से उत्तम तथा सग्रहणीय हैं । विशेषाको की सफलता के लिए बधाई ।

रामकुमार आर्य
जलगर जोशी चौहान (सोनीपत)

—श्रीमान डा० धर्मपाल जी, सादर नमस्ते । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कई वर्ष सुप्त अवस्था मे पडी रही । आपके अध्यक्ष बनने पर, आपने सभा मे चेतना भरकर उसे जागृत अवस्था मे कर दिया । आप सराहनीय कार्य कर रहे हैं । आर्य जगत आपका आभारी है । हर कार्य सन्तोषजनक व सक्रिय रूप से कर रहे है, इसकी हमे बहुत खुशी हैं ।

स्वर्गीय प० शिवकुमार शास्त्री जी के सम्बन्ध मे आपका पत्र मुझे मिला था । शास्त्री जी से मेरा सम्बन्ध ४३ वर्ष से चला आ रहा था । ३० वर्ष हुए मुझे शास्त्री जी ने एक काम करने को कहा था । मैंने उनका वह काम कर दिया था । वे बहुत खुश हुए और इसमे हमारे सम्बन्धो मे और घनिष्ठता हो गयी थी । आर्य समाज, गाधीनगर मैं एक सप्ताह की कथा के लिए प्रार्थना किया करता था तो वहा वे आते थे और मेरी प्रार्थना पर वे मेरे निवास पर ही सहर्ष रहते थे । उनके मेरे पास रहने का वैदिक गोष्ठी के रूप मे भी लाभ उठा लिया करता था । मेरे से परिवार की तथा निजी कोई भी बात छुपा कर नहीं रखते थे । बातो-बातो मे उन्होने कहा कि साकेत मे मकान तो बना लिया है परन्तु सिर पर ऋण हो गया है । ऋण चुकता नही हो रहा, तो मैंने तुच्छ आर्थिक सेवा भी कर दी थी ।

शास्त्री जी से फोन पर बात होती रहती थी । कोई लम्बी बात हो तो पत्र-व्यवहार भी होता रहता था । पिछले दिनो आर्य समाज दीवान हाल मे उनका सम्मान किया गया था तो मुझे भी दो शब्द कहने का अवसर मिला था ।

आयु मे मै उनसे पाच वर्ष बडा हू किन्तु उनके गुणो के कारण मैं उन आगे नत-मस्तक होता था । कट्टर आर्य सिद्धान्तवादी होने के कारण वे मुझसे बहुत प्रेम-स्नेह करते थे, सम्मान करते थे । जिस दिन शास्त्री जी का देहान्त हुआ उससे तीन दिन पहले उनका लिखा हुआ पत्र मुझे मिला था । आर्यसमाज के तत्वाज्ञान और गूढ वैदिक सिद्धान्त का ज्ञान अपार था । अब मुझे कोई दिखाई नहीं देता । किस आर्य विद्वान से किसी शका का समाधान कराया जाए ।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने शास्त्री जी का स्मृति अक प्रकाशित किया है । यह भी एक सराहनीय कार्य किया है । मैं क्या सेवा करूं ? यह भी लिखने का कष्ट करे । आर्यसन्देश का वार्षिक शुल्क रु० २१) मैं दे चुका हू ।

आर्यसमाज के कार्यों मे धन देने के लिए मन मे उदारता का भण्डार भरा पडा है परन्तु आर्थिक स्थिति इच्छा पूरी नही करने देती तो मन दुखी होता है । आर्यसमाज मन्दिर प्रीत विहार का निर्माण कार्य हो रहा है । यहा बहुत देना पड रहा है । आर्य समाज निर्माण विहार की यज्ञशाला बन रही है । यहा भी देना पड रहा है । आर्य महासम्मेलन के लिए भी दे रहा हू । आर्यसमाज के कार्यों मे देने मे असमर्थ रहता हू ।

(जगतराम आर्य)
बी-१०८, प्रीत विहार, दिल्ली-९२

—आर्य सन्देश का विशेषाक "महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एव प० शिवकुमार शास्त्री अमृत महोत्सव सयुक्ताक" प्राप्त हुआ । पढकर उन महापुरुषो के बारे मे विशेष जानकारी मिली । उत्तम प्रकार से इसका प्रकाशन किया है । एतदर्थ आपको बहुत-बहुत बधाई । आपका कार्य अति सराहनीय है, ईश्वर आपको और अधिक सामर्थ्यवान् बनावे ।

विनीत कुमार बल्लभ जी जगडा
मन्त्री, आर्यसमाज, गोडल (गुजरात)

—आपके आर्यसन्देश में प्रकाशिक विशेषांक मे अच्छे स्तर की सामग्री होती है । समस्त आर्यजगत मे आपने विशेषाको की धूम मचा दी है । इतने विशेषाक मेरी दृष्टि मे किसी भी पत्रिका ने अद्यावधि नहीं दिए है । आप अपने स्तर को इसी प्रकार बनाए रखे ।

राजवीर सिह आर्य
के० बी० ५७ कवि नगर

—श्री प० इन्द्र जन्म शताब्दी विशेषांक प्राप्त करके बड़ी प्रसन्नता हुई । मैंने धर्मपाल जी से कहा था कि आपके विशेषाको की साज सज्जा सब आर्य पत्रो से बढिया व आकर्षक होती है । अन्य आर्य पत्र पत्रिकाए भी आपका इस दिशा मे अनुकरण करे तो बडा लाभ होगा । इस अक मे कई लेखो मे बड़ी ठोस, रोचक व प्रेरणाप्रद सामग्री है । श्री सुमनजी, श्रीमान चिरजीत जी, श्री डा० वेदव्रत जी श्री फूलचन्द जैन, श्रद्धेय डा० रामनाथ आदि के लेख तथा श्रीमान राधेश्याम जी की कविता बहुत अच्छी लगी ।

मेरा विनम्र सुझाव है कि इस बार आप एक उच्चस्तरीय प० लेखराम बलिदान अक निकाले; आर्यसमाज रक्त साक्षी प० लेखराम को भूल रहा है, यह घोरपाप है । कोई भी पत्रिका प० लेखराम विशेषाक नही निकालती । यह मुझे चुभता है । यदि आप ऐसा अक निकाले तो मैं ३०-३५ पृष्ठ की खोजपूर्ण, रोचक व प्रेरणाप्रद सामग्री एक लेख के रूप में भेज दूंगा । पत्रिका के लिए घाटे का यह सौदा, आर्यसमाज व आर्यजाति के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा ।

राजेन्द्र जिज्ञासु'
वेदसदन अबोहर-१५२११६

मिला आर्यसदेश, हुआ मेरा मन यह आमोदित,
स्वामी श्रद्धानन्द अमर, सत्कर्मो से हैं शोभित ।
विद्यावाचस्पति पण्डित जी इन्द्रदेव महिमामय,
उनका जीवन सदा रहेगा प्रेरक और गरिमामय ।
सयुक्ताक सुपाठ्य सुसामग्री से रहा सुपोषित
साधुवाद सम्पादक के हित करती मैं सम्प्रेषित ।।

—डा० महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

जोधपुर में आश्रम

"महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन" रातनाडा, जोधपुर मे स्थित है । यह भवन स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित ऐतिहासिक स्थल है । इस भवन मे आर्य वानप्रस्थो एव सन्यासियो के आवास एव भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था है । निवास के इच्छुक वानप्रस्थी एवं सन्यासी महानुभाव कृपया मन्त्री, महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास, जोधपुर से सम्पर्क करें ।

जगदीश सिह आर्य (मन्त्री)

आर्य महिला सम्मेलन

(पृष्ठ १ का शेष)

इस सम्मेलन की विशेष उपलब्धि

प्रान्तीय आर्य महिला सभा की अधिकारी बहनो ने अपने नाम की अपेक्षा अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए आर्यत्व का परिचय दिया, क्योकि यज्ञ से लेकर जितने भी सम्मेलन के कार्यक्रम थे सभी मे भरपूर सहयोग देकर सम्मेलनों को सफल बनाने का भरसक प्रयास किया यथा शक्ति सभी ने तन-मन-धन से योगदान दिया, विशेष कर सभा मन्त्रिणी कृष्णा चड्ढा ने स्मारिका के विज्ञापनो हेतु १५००० की राशि प्रदान की तथा ऋषि लगर मे भी भरपूर सहयोग दिया। सम्मेलन सयोजिका ने तन-मन-धन से योगदान देकर सम्मेलन को सफल बनाया।

इस भाति, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन एक महत्वपूर्ण, सराहनीय प्रयास रहा जो नारी शक्ति के संकल्प, सगठन एव सम्बल का परिचायक अभूतपूर्व आयोजन कहा जा सकता है। उस परम पिता से प्रार्थना है कि हम ऋषि ऋण चुकता करने मे दृढ सकल्प ले।

सयोजिका सरला महत्ता

ॐ

आर्य वीरदल सागरपुर

आर्य वीरदल सागरपुर का गठन श्री ओमवीर शास्त्री हरिसिह जी व्यायाम शिक्षक की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी नियुक्त किये गये।

अधिष्ठाता : डा० दयानन्द
शाखा सचालक विनोद कुमार
शाखा नायक . दिनेश कुमार
मन्त्री : अनुराग
उपमन्त्री : प्रमोद कुमार
,, ,, : मनोज कुमार
कोषाध्यक्ष . मुकेश कुमार शर्मा

मथुरा जनपद का तीसरा आर्य सत्याग्रही जत्था

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मथुरा की ओर से (प्रान्तीय सभा के निर्देशानुसार) यह आर्य सत्याग्रही जत्था जिला सभा के सरक्षक एव तपोभूमि मासिक के प्रधान सम्पादक श्री आचार्य प्रेमभिक्षु जी के सान्निध्य मे दिनांक ३ जनवरी ९१ को रात्रि गगा जमुना एक्सप्रेस से गया। ५ जनवरी को प्रान्तीय सभा के प्रधान प० इन्द्रराज जी के नेतृत्व मे विश्व हिन्दू परिषद की व्यवस्थानुसार अयोध्या मे सत्याग्रह किया। श्री आचार्य प्रेम भिक्षु जी के साथ इस जत्थे मे पूर्व जत्था नायक स्वामी नित्यानन्द जी, जिला सभा के मन्त्री श्री भुल्ल सिह जीरावत, उपप्रधान महा० श्री गेदालाल जी आर्य श्री खुशीलाल जी 'विजय' पूर्व मन्त्री डा० श्री द्वारिका प्रसाद जी आर्य प्रचार मन्त्री श्री मुकुन्दसिह जी भाटिया, उपमन्त्री श्री वीरेन्द्र जी, श्री विपिन जी, कोषाध्यक्ष, श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य, वैदिक मिशनरी श्री वेद प्रिय जी वानप्रस्थ, नायक श्री देवेन्द्र जी आर्य, श्री धर्मदेव जी आर्य, श्री बुधप्रकाश जी आर्य व्यवस्थापक श्री नरोत्तम जी वानप्रस्थ एव प्रिय शिवराज आर्य सुपुत्र श्री चरन सिह जी आर्य व्यवस्थापक सत्य प्रकाशन मथुरा तथा कोसीकला, अकबरपुर, कोकेरा बभेरा, सिहोरा, भरना, खुर्द, माधुरीकुण्ड, साखबाद, धाना तेजा, दखौला, मथुरा नगर की तीनो आर्य समाजो तिलकद्वार चौक कृष्णानगर, नसीवा, बिसावर, दघेटा, खोडा, धाधऊ गढ उमराव, मानागढी,, बाजना, ऊचा गाव, रामा, सेलखेडा, बेरी, ओल, गडीरामबल तथा अन्य भी कुछ आर्यसमाजो के पदाधिकारी एव वरिष्ठ कार्यकर्त्ता गये। वैदिक मिशनरी आर्य गुरुकुल मथुरा के कुछ ब्रह्मचारियो ने भी भाग लिया। आर्य महिलाओ ने भी भाग लिया।

वार्षिक चनाव

आर्यसमाज श्रीनिवासपुरी के वार्षिक चुनाव १९९० ९१ मे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान : श्री मोहनलाल
मन्त्री : श्री दीनानाथ छाबडा
कोषाध्यक्ष : श्री दयालदास वर्मा

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on17,18-1-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३६
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" २० जनवरी, १९९१

आर्यसमाज मायापुरी में वेद प्रचार

दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से आर्यसमाज प्रैस कालोनी मायापुरी मे दिनाक २०-१२-९० से २२-१२-९० तक वैदिक धर्म का प्रचार उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ ।

२०–१२-९० को मध्याह्न १२-०० बजे प्रचार मडल के स्वागतोपरान्त मन्त्री श्रीठाकुर सुरेन्द्र सिंह ने आर्यसमाज मायापुरी की पृष्ठभूमि से अवगत कराया । वर्ष १९७९ चैत्र शुक्ल की रामनवमी के दिन आचार्य विक्रम के सानिध्य में आर्यसमाज का गठन हुआ था ।

इस अवसर पर आर्य विद्वान आचार्य नरेन्द्र जी द्वारा वेद कथा व सर्व श्रेष्ठ भजनोपदेशक चुन्नीलाल आर्य आदि के सुमधुर भजन हुए । वेद शिरोमणि श्री सत्यदेव स्नातक ने वेदों की महत्ता को बताते हुए कहा कि वेद का ज्ञान सभी मनुष्यों के लिए है । वेद पठन–पाठन में लिंग, वर्ण के लिए यजुर्वेद संहिता के निम्न मन्त्र को उल्लेख किया—

"यथेमा वाच कल्याणिम् आवदानि जनेभ्य. ।
ब्रह्म राजन्याभ्या शूद्राय चर्याय च स्वचारणाय च ॥ यजुर्वेद ॥

प० सत्यदेव जी के प्रेरणादायी प्रवचन के उपरान्त श्रद्धेय स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता, दिल्ली आर्यप्रतिनिधि सभा ने विषय को आगे बढाते हुए कहा कि वेद ज्ञान से वंचित रहने पर ही भारतीय समाज मे अनेक प्रकार की कुरीतियों ने जन्म लिया तथा समूचे मानव समाज का आचार विचार, आहार-विहार आदि अप्राकृतिक हुआ । स्वामी जी ने प्रतिनिधि सभा की ओर से निरन्तर प्रचार कार्य मे सहयोग का आश्वासन दिया ।

अन्तिम दिन २२-१२-९० को अयोध्या के अमर शहीद, प० रामप्रसाद बिस्मिल स्वामी श्रद्धानन्द एवं प० धर्मपाल जी पूर्व अधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गयी । उपप्रधान श्री डालचन्द जी ने सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया और प्रसाद वितरण के उपरान्त शान्ति पाठ के साथ वेद प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ ।

सुरेन्द्र सिंह —मन्त्री

संस्कृत में प्रथम

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार) द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस २४ दिसम्बर ९० को आयोजित अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के ब्र० योगेन्द्र कुमार नेसस्कृत भाषण प्रतियोगितामे प्रथम स्थान तथा हिन्दी मे ब्र० पुनीत कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किए । २५ दिसम्बर को इन दोनो विजेता ब्रह्मचारियो का आश्रम मे भव्य स्वागत किया गया तथा अपने साथियो के विजय पर उन्हे हार्दिक बधाई दी ।

सेवा में—

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित । रजि० नं० डी० (सी० ७५६) ।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक १४ | रविवार, १७ जनवरी, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

वैदिक साहित्य प्रकाशन वैदिक धर्म और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है—

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली के रामलीला मैदान मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन २३ दिसम्बर से २६ दिस० १९९० तक समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। इस आर्य महासम्मेलन के अवसर पर भारतवर्ष के कौन-कौन से हजारो आर्य भाई-बहन आए। वे दिल्ली की सर्दी की असुविधाओं को झेलते हुए भी, महासम्मेलन की सफलता से अभिभूत एवं प्रसन्न थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में यह आर्य महासम्मेलन सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अनेक सम्मेलन एवं सगोष्ठियो का आयोजन हुआ। वेद सम्मेलन, आर्य महिला सम्मेलन, आर्य युवक सगोष्ठी, विदेशो मे आर्य समाज, अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, आर्यों का आदिदेश, आर्य समाज का भावी कार्यक्रम, वेदों की सार्वभौमिकता, शिक्षा सम्मेलन, आर्यवीर दल सम्मेलन, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान श्रद्धाञ्जलि सभा आदि-आदि का आयोजन किया गया। इन सभी सम्मेलनों, सगोष्ठियों एवं शोभायात्रा का वर्णन पाठक पिछले अंको में पढ़ चुके हैं।

वेद प्रचार का सशक्त माध्यम बृहत् यज्ञो का आयोजन है। इस अवसर पर स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व में बृहद् यज्ञ का भी आयोजन हुआ। प. राजगुरु शर्मा इस यज्ञ के अधिष्ठाता एव युवा विद्वान प० यशपाल सुधांशु इस यज्ञ के सयोजक थे। वेद पाठ गुरुकल गौतम नगर तथा पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी के ब्रह्मचारियो तथा ब्रह्मचारिणयो ने सुचारू रूप से किया।

इस अवसर पर योग प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन स्वामी सत्यपति जी महाराज तथा आचार्य प्रेमभिक्षु जी के सौजन्य से हुआ। भजनोपदेशकों ने भी वेद प्रचार के दायित्व का निर्वाह सुचारू रूप से किया।

इन सब कार्यों के अतिरिक्त, एक और कार्य है, जिसे मैं वेद प्रचार तथा आर्य समाज के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार मे बहुत महत्त्वपूर्ण मानता हूं, वह है वैदिक साहित्य का प्रकाशन। मुझे यह कहने मे संकोच नहीं है कि आज वैदिक साहित्य के प्रकाशन में, अनेक स्वतन्त्र प्रकाशक, सार्वदेशिक सभा, प्रान्तीय सभाए आर्यसमाज ट्रस्ट, तथा लेखक स्वय भी लगे हुए हैं और वे अच्छा साहित्य दे रहे हैं। इस बात की आवश्यकता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि इन प्रकाशनो मे आवश्यकतानुसार सशोधन एव परिवर्तन का कार्य धर्मार्य सभाओ को करना चाहिए। वैदिक विद्वानो एवं स्थापित प्रकाशको के ग्रथ तो स्तरीय होते हैं, पर कुछ ऐसे नवोदित लेखक भी हैं जिनके लेखन निर्भ्रान्त नही है। हमे ऐसे नवोदित लेखको का भी उत्साह वर्धन करना चाहिए। उनके लेखन का सुयोग्य विद्वानों द्वारा सम्पादन अपेक्षित हैं। इस अवसर पर पुस्तको के लगभग ४० स्टाल लगे थे और एक स्टाल से मुझे जानकारी मिली कि इन चार दिनो में ३६ हजार रुपये की बिक्री हुई। सभव है कि इतनी बिक्री सभी स्टालो पर न हुई हो, पर यह तो निश्चित है कि वैदिक पुस्तको का प्रकाशन बढ़ा है और आर्य भाई बहन भी पुस्तके पढते है। यह वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है। हमे इस ओर ध्यान देना चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन के अवसर पर अनेक मानक ग्रंथो का लोकार्पण हुआ। ग्रन्थो का परिचय देना तो यहा सभव न होगा, पर कुछ विशेष ग्रन्थो का संक्षिप्त परिचय, पाठकों की जानकारी के लिए यहां दिया जा रहा है।

कश्मीर, झुलसता स्वर्ग

आर्यसमाज के सशक्त प्रवक्ता, आर्य जगत् के स्वनामधन्य सम्पादक प० क्षतीश वेदालकार की लेखनी से काश्मीर की समस्या बेबाक विश्लेषक इस ग्रथ में हुआ है। प० जी राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता के विभिन्न पहलुओ पर समय-समय पर लिखते रहे है। पिछले दिनो पाठको ने पंजाब पर लिखी उनकी पुस्तक मे कश्मीर की ऐतिहासिक परम्पराओं का सुन्दर विवरण पढ़ेगे। उन्होने प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ मे सस्कृत के ग्रन्थो से या अन्य ग्रथो से उस विषय से सबन्धित श्लोक अथवा वक्तव्य दिए हैं जो उस अध्याय की पूर्वपीठिका पाठक के मस्तिष्क मे प्रस्तुत कर देते हैं। यह पुस्तक इतिहास हैं, पर इसकी शैली साहित्य की है। यही कारण है कि पाठक इसे हाथ मे लेने बाद पूरी पढकर ही उठ सकता है। उसे न भूख-प्यास लगती है और न ही नींद आती है। यदि यह कहू कि हमारे नेताओ की ऐतिहासिक भूलो को पढकर उसकी नीद उड जाती है तो कोई अतिशयोक्तिन होगी। काश्मीर जो पूर्णत: हिन्दू सस्कृति का केन्द्र था, वहा पर इस्लाम का आगमन कैसे हुआ। आगे चलकर यह किस प्रकार आतकवाद में बदल गया। आज हिन्दू किस प्रकार दर दर भटक रहे है। उनकी समस्याए क्या हैं। प० जो की लेखनी से यह सब पढकर रोगटे हो खडे जाते है नेहरू, पटेल, जिन्ना, शेख अब्दुल्ला, गाधी के चौकाने वाले चित्र इस ग्रन्थ मे है। अन्त मे उन्होने काश्मीर समस्या को सुलझाने के लिए कुछ समाधान भी दिए है। ये पठनीय है तथा आचरणीय है। यह देश दया का पात्र हैं जो टुकडो-२ में बटा है और हर टुकडा अपने आपको राष्ट्र कहता है। यह दयनीय दशा, भारत की हो रही है। हमे सभलने की आवश्यकता है। प० क्षितीशकुमार जी वेदालकार इस सुन्दर पुस्तक के लिए बधाई के पात्र हैं।

(कश्मीर झुलसता स्वर्ग—प० क्षतीशकुमार वेदालकार दि वर्ड पब्लिकेशन्स, ८०७/९५ नेहरू प्लेस, नई दिल्ली-१९, पृष्ठ १४४ मूल्य-३० रुपये)

(शेष पृष्ठ ७ पर)

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वेद को सम्भाल कर रखिए

—डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, आर्यसमाज गोरखपुर

वेदों ने राष्ट्र की रक्षा के जो युद्ध एवं राष्ट्रीय भावना जागृत करने के लिये उपाय बताए हैं। उनमें मनुष्य को सदाचारी और दूसरे अर्थों में आर्य बनने का उपदेश दिया है।

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुर: कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
अपघ्नन्तो अराव्ण: ॥ ऋ० ९-६३-५

अर्थात् क्रियाशील बनो, प्रभु महिमा का प्रसार करो, विश्व को आर्य बनाओ, राक्षसों का संहार करो।

मरुतो यद्ध वो बल, जनां अचुच्यवीतन।
गीरंश्चुच्यवीतन ॥ ऋ० १-३७-१२

अर्थात् हे आर्यवीरो! जो तुम्हारे अन्दर बल है, उससे तुम राक्षस जनों को डिगा दो, पहाड़ों तक को हिला दो। आर्यवीर कौन है—

सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषा
समुद्रस्येव महिमा गम्भीर:।
वातस्येव प्रजवो नान्येन
स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे व: ॥

अर्थात् आदित्य मण्डल के समान तुम्हारी महिमा है, वायु के समान तुम्हारा वेग है, हे आर्यवीरो तुम्हारे इन भुजो का कौन पार पा सकता है? आर्यत्व के लिए क्या करें। वेद कहता है—

इदमिन्द्रशृणुहि सोमप,
यत् त्वया हृदय शोचता जोहवीमि।

हे मेरे आत्मन्! सुन, जो कि मैं देदीप्त हृदय के साथ पुकार पुकार कर कह रहा हूं। काट डालूंगा उसे, जैसे कुल्हाड़े से वृक्ष को, जो मेरे मन की हिंसा या कलुषित करने आयेगा। बताइये वह कौन अनार्य विचार है जो एक सच्चे उग्र मनस्वी आर्य की हिंसा कर सके, उसमें कलुषित और पापमय विचार कहां से आ सकते हैं? वह आर्यवीर फटकारकर कहता है—

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि
शंससि परेहि न त्वा कामये,
वृक्षां वनानि सचर, गृहेषु गोषु
मे मन: ॥ अथर्व० ६-४५-१

ओ मन के पाप! चल दूर हट मेरे पास से, क्यों निन्दित सलाहे दे रहा है? चल लम्बा बन यहां से, वृक्षों से जाकर टकरा जंगलों में भटकता फिर। मुझे फुरसत कहां हैं जो तेरा स्वागत करूं? मेरा मन तो गृह कार्यों में और गो सेवा आदि शुभ कर्मों मे लगा हुआ है। कैसी आत्मविश्वास भरी वीरता पूर्ण और सजीव उक्ति ऐसे सतर्क और साहसी व्यक्ति के मन में पाप कभी डेरा डाल सकता है?

सकल्प बल को जागृत करने के लिये एक मन्त्र आया है—

जहिस्व काम मम ये सपत्ना
अन्धा तमांस्येव पादमेनान्।
निरिन्द्रिया अरसा: सन्तु सर्वे
माते जी (विषु:) कतमच्चनाह: ॥ अथर्व० ९-२-१०

जाग! जाग ओ मेरे सकल्प बल, तू उठ जाग राक्षसो और बुरी भावनाओं तथा विचारों को मार गिरा, उन्हें घोर अन्धकार में धकेल दे। वे आततायी निरीन्द्रिय और निर्जीव हो जाय एक दिन को भी जीवित न बचने पावें।

इन मन्त्रों मे बताया गया है कि आर्य बनने के लिए निष्कलुष होना आवश्यक है। निष्कलुष होने के लिए मन को खाली नहीं रहने देना चाहिए उसे घर के कामों में, पशुओं, पेड़ों, पौधों, तरकारियों के काम में मन को लगाना चाहिए। गुरुकुल कांगड़ी और कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों को भी स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज उपदेश दिया करते थे "बेटे कभी मन को खाली न रहने दिया करो। याद रखो, खाली मन शैतान का घर हुआ करता है। यदि तुम्हारे पास कोई काम न हो तो अपनी धोती को फाड़ो और फिर सीने लगो।" मुझे याद नहीं कि स्वामी जी द्वारा या किसी अन्य व्यक्ति ने एक बार एक कहानी सुनाई थी। एक बार एक सेठ ने कठोर तपस्या द्वारा एक वर प्राप्त किया कि उसे एक काम करने के लिए नौकर मिल जाय। प्रजापति ने नौकर को बुलाया नौकर बोला महाराज "मैं काम करने को तैयार हूं पर मेरी एक शर्त है कि जब काम नहीं बचेगा तब मैं मालिक को मार डालूंगा। मालिक काम करवाना शुरू किया। उसके मुख से जो भी काम निकलता वह पूरा कर देता। अन्त मे वह दिन भी आ गया कि काम समाप्त होने लगे। मालिक घबराया और उसने प्रजापति को फिर याद किया। उसने अपनी समस्या रखी और सुनते ही प्रजापति बोले सेठ! तुम भी मूर्ख हो। यह भी कोई समस्या है। तुम उसे कहो कि एक खम्भा गाड़ो और जब गाड़ ले तब उसे कहो कि इसके ऊपर चढ़ो और उतरो। मालिक ने वैसा ही किया और उसकी समस्या हल हो गई। इसलिये मन्त्र कहता है कि मन तू अपने को पशुपालन और घर के काम मे लगा। जब तू खाली नहीं रहेगा तो पाप आयेंगे कहां से?

अपेहि मनसस्पतेऽपक्राम परश्चर।
परो निर्ऋत्या आ चक्ष्व बहुधा जीवतो मन: ॥
ऋ० १० १६४-१

हे मन को पतित करने वाले कुविचार। हटो (अपकाम) दूर भागो! परे चलो। दूर के विनाश को देखो। जीवित मनुष्य का मन बहुत सामर्थ्य से युक्त है।

मन्त्रों का भाव है कि मन मे पाप का विचार आ जाय, तो उसको उसी क्षण दूर हटाना चाहिए। अपनी प्रबल इच्छा शक्ति से उसे दूर हटाना चाहिए। और कभी पाप का प्रभाव मन पर होने नहीं देना चाहिये। मन को शुभ विचार से युक्त करके अपने घर की उन्नति में, दूसरों को दोष न देते हुये अपनी शुद्धता करने का निश्चय करना चाहिये। बुरे विचार से जो भविष्य मे होने वाली हानि होगी, उसका विचार करके, मन की शक्तियों को इकट्ठा करके कभी गिरावट के विचार पास नहीं फटकने देना चाहिए। वेद के अनुसार कहा गया है—

भद्रं वैवस्वते भद्रं युञ्जन्ति दक्षिणम्
भद्रं वैवस्वते चक्षुर्बहुत्र जीवतो मन: ॥ ऋ० १०-१६४-२

तेजस्वीमान् तू जो निश्चय से श्रेष्ठ विचार पसन्द करता है उससे कल्याण प्राप्ति करता है अपनी आंख को कल्याण कारी बनाओ। याद रखो जीवित मनुष्य का बहुत समर्थ्य होता है। कल्याण करके विचार करना, दक्षता के साथ सब कर्तव्य करना और चक्षु आदि सब इन्द्रियों को भलाई के मार्ग से चलाना चाहिए।

इस प्रकार वेद की शिक्षायें कितनी उच्चकोटि की हैं। "ज्योतिषां ज्योति" ज्योतियों की ज्योति है। प्रकाशों का एक मात्र प्रकाशक है। विषय की प्रकाशिका इन्द्रियों का स्वामी यह मन है। हमारा शरीर एक छोटा सा विश्व है, एक छोटा सा ब्रह्माण्ड है। शरीर रूपी राज्य का राजा आत्मा है हमारे आत्मा को अपने शुभ अशुभ, पुण्य-पाप, सुख-दुःख बोध कराता है। वेद इस मन को शिव संकल्प से भरने का उपदेश करता है। कैसे? अगले अंक मे देखिए। क्या ऐसे ज्ञान के प्रकाशक वेद को सभाल के रखना ठीक नहीं। आइये वेद पढ़ें।

(क्रमश:)

हकीकत राय बलिदान दिवस-बसन्त मेला

अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति आर्यसमाज, सरोजनीनगर नई दिल्ली के तत्वाधान में धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस रविवार २७ जनवरी को बड़े समारोहपूर्वक निम्नलिखित कार्यक्रम के अनुसार मनाया जायेगा।

कार्यक्रम

प्रात:	८-३० से ९-३०	यज्ञ
प्रात:	९-३० से १० बजे	मनोहर भजन (श्री गुलाबसिंह राघव
प्रात:	१० से १२ बजे	स्कूल के बच्चों द्वारा गायन एवं भाषण प्रतियोगिता हकीकतराय बलिदान सम्बन्धी
दोपहर	१२ से १-३० बजे	श्रद्धांजलि सभा। जिसमें आर्य नेता, सन्यासी विद्वान पधारेंगे।
दोपहर	१-३० से २-३० बजे	प्रीतिभोज

रोशन लाल गुप्ता मन्त्री

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आदर्श गणतन्त्र



वैदिक संहिताओ मे आध्यात्म, नैतिकता, समाजशास्त्र, मानववाद के साथ साथ राजव्यवस्था के भी सुव्यवस्थित सूत्र प्राप्त होते हैं। गणतन्त्र के अधिपति का ऋग्वेद में निम्नलिखित शब्दो मे आवाहन किया गया हैं—'तुझ गणतन्त्र के अधिपति का हम आवाहन करते हैं। तू मेधावियो मे अतिशय मेधावी है। तू ज्येष्ठ राजा हैं। तू ब्राह्मणस्पति है। तू हमारे आवाहन को सुनकर अपनी रक्षाओ के साथ राष्ट्र सदन में आकर बैठे। (ऋ० २-२३-१) वैदिक राजा या प्रधानमन्त्री स्वतन्त्र नहीं हैं। वह सभा और समिति के अधीन है। आधुनिक परिभाषा मे ये लोक सभा एव राज्यसभा हैं।

वेदो में सेना और युद्ध का सम्यक चित्र उपलब्ध है। हमारा राष्ट्र कभी शत्रु से पराजित न हो, इस विषय की प्रार्थनाए और उद्बोधन गीत वेदो मे अनेक स्थानो पर मिलते हैं—हमारे राष्ट्र का अधिनायक सदा विजयी रहे, कभी पराजित न हो। राजाओ मे अधिराज होकर शोभा पाए। वह कार्यकुशल, प्रशसनीय वन्दनीय तथा प्रजा की पहुंच मे रहने वाला हो। (अथर्व ०६-९८–१)

प्रयास ऐसा होना चाहिए कि युद्ध कभी उपस्थिति ही न हो। सभी राष्ट्रो मे पारस्परिक सद्भावना रहे। युद्धो मे पुरुष और जगत का सहार होता है। इसे रोकने की इच्छा करते हुए वेद मे कहा गया है—'मा हिंसी पुरुष जगत' (यजुर्वेद १६-२१), किन्तु यदि विवशता मे युद्ध करना पडे तो फिर युद्ध के रोमाचक चित्र भी वेद प्रस्तुत करता है। सैनिको को उद्बोधन देता हुआ वेद कहता है –आगे बढ आक्रमण कर, शत्रुओ को परास्त कर। (ऋ० १–८०-३-१२)

वेदो मे ब्रह्म और छत्र के समन्वय पर जोर दिया गया है। 'जिस राष्ट्र मे ये दोनो बल परस्पर समन्वय के साथ विद्यमान हैं, वह राष्ट्र पुण्यशाली हैं'—(यजु० २०-२५) अथर्ववेद का भूमिसूक्त राष्ट्रभक्ति राष्ट्रसमृद्धि और राष्ट्रगौरव का अमर गीत है राष्ट्रीय प्रार्थना राष्ट्र का एक अति सुन्दर चित्र प्रस्तुत करती है—हे ब्रह्मन्, हमारेराष्ट्र मे ब्रह्मवर्चस्वी ब्राह्मण उत्पन्न हो। सूर शस्त्रास्त्र चलाने मे निपुण, शत्रु वेद्धा, महारथी क्षत्रिय उत्पन्न हो। दुधारू गौए हो। शीघ्रगामी घोडे हों। गृह कार्यकुशल बुद्धिमती नारिया हो। विजयशील रथारोही, सभ्य युवा पुत्र हो। इच्छानुसार बादल बरसें औषधिया फलफूलो से लदी रहे। हम सभी का योग-क्षेम होता रहे।" (यजु० २२-२२)

हम प्रतिवर्ष २६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस समारोह पूर्वक मनाते है। इस दिन भारतवर्ष का अपना सविधान लागू हुआ था। हम वास्तव में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते है। और कामना करते है कि कोई हमारे गणतन्त्र की ओर आख उठाकर न देख सके। इस दिन हम सेना की इलैक्ट्रोनिक युद्ध क्षमता, लडाकू-वायुयानो टैंको, युद्ध पोतो तथा अपनी सैनिक टुकडियो का प्रदर्शन करते हैं। साथ ही हम भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तो की सास्कृतिक गतिविधियो का भी झाकियों के माध्यम से परिचय देते हैं। वास्तव मे यह हमारे उल्लासमय वातावरण का प्रतीक है।

इस वर्ष खाडी देशो मे युद्ध हो रहा है और भारत अपने विजयोल्लास मे डूबा हुआ भी वहा की परिस्थितियो से असपृक्त नही रह सकता। भारतवर्ष का चिन्तन वेदो पर आधारित हैं। जहा पारस्परिक सद्भाव, शान्ति और विश्वबन्धुत्व के अनेक सन्देश प्राप्त हैं। भारत वर्ष इस अवसर पर भी विश्व को सह-अस्तित्व का सन्देश देगा, ऐसी हमें आशा है।

परमपिता परमात्मा से हम कामना करते है कि सभी को सद्बुद्धि दे और हम युद्धो से दूर रहें।

—डा० धर्मपाल

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२० जनवरी ९१ के अंक से आगे)

राजस्थान आर्यकुमार परिषद के साथ हमारी जोधपुर आर्यकुमार सभा ने अपना सम्बन्ध जोड रखा था। सुजानगढ के श्री जीवानन्द आनन्द हमारे प्रान्तीय मन्त्री थे। उन्होंने अपने नगर मे ही प्रान्तीय सम्मेलन का आयोजन किया। ग्रीष्मावकाश मे हम लोग सुजानगढ़ गये। मैं, दाऊलाल टाक और चांद मल के यहां प्रथम बार पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति के दर्शन हुए, यद्यपि सार्वदेशिक मासिक के सम्पादक के रूप मे उनकी टिप्पणिया और लेख आदि तो मैं पर्याप्त समय से पढ़ ही रहा था। प० धर्मदेव जी ने यहा यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आचार्यत्व ग्रहण किया। मैंने प्रथम बार पारायण यज्ञ की शैली को देखा। मन्त्रो के आधार पर आहुतिया और बीच-बीच मे उपयोगी मन्त्रो की व्याख्या। प० धर्मदेव जी ने आर्यकुमार परिषद के अध्यक्ष के नाते हमे प्रेरणा दी कि हम अपने नाम के आगे जाति सूचक शब्द का प्रयोग न करें। मैं अब तक अपने को 'भवानीलाल माथुर' या 'भवानीलाल माथुर भारतीय' के रूप मे प्रकट करता था। किन्तु अब प्रान्तीय कुमार सम्मेलन में स्वीकृत इस प्रस्ताव के अनुसार मैंने अपने आपको सामाजिक जीवन में स्वय को 'भवानीलाल भारतीय' के नाम से ही परिचित कराया 'यद्यपि राजकीय दस्तावेजो और सेवा पजिकाओ मे १९८० तक मेरा नाम 'भवानीलाल माथुर के रूप मे ही अकित रहा।

सिद्धान्त रत्न सिद्धान्त भास्कर तथा सिद्धान्त शास्त्री उत्तीर्ण करने के पश्चात् परिषद द्वारा १९५२ मे ही सर्वप्रथम स्थापित सिद्धान्त वाचस्पति की परीक्षा भी मैंने सर्वप्रथम रहकर उत्तीर्ण की। इसके पश्चात तो केन्द्र सचालन का कार्य मैंने स्वय सम्भाल लिया और उम्मेद हाई स्कूल तथा सरप्रताप हाईस्कूल (जहाँ मैं १९४९ मे अध्यापक बन गया था) के छात्रो को परीक्षाओ मे सम्मिलित होने की प्रेरणा करता रहा। सायकाल आर्यसमाज मन्दिर मे इन परीक्षाओ के अध्ययन के लिए भी व्यवस्था हमने की थी और छात्रो को धर्म शिक्षा का अध्ययन कराते थे। जब मैं १९५४ ई० मे सरदारपुरा मे रहने लगा तो आर्यसमाज सरदार पुरा मे भी इन परीक्षाओ मे सम्मिलित होने के लिए छात्रो को प्रेरणा दी। यहा की आर्य कन्या पाठशाला की अनेक अध्यापिकाओ ने भी इन परीक्षाओ को उत्तीर्ण किया। इस कार्य मे हमे सार्वजनिक स्कूल के प्रधानाध्यापक स्व० विश्वम्भर दयाल गर्ग का सहयोग मिलता रहा। परीक्षा मन्त्री के पद पर जब तक डा० सूर्यदेव शर्मा रहे तब तक यह कार्य बहुत बडे पैमाने पर सुव्यवस्थित ढग से चलता रहा। इसके पश्चात मुरादाबाद के प्रिंसिपल जगदीशप्रसाद अग्रवाल परीक्षा मन्त्री बने। इनके कार्यकाल मे परीक्षा कार्य कुछ शिथिल तो हुआ किन्तु उसकी अवनति के दिन तब आये जब अलीगढ़ के डा० प्रेमदत्त शास्त्री परीक्षा मन्त्री बने। इसके पश्चात् तो न तो परीक्षाये ही चली और न उनकी सचालक सस्था भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद ही अपना अस्तित्व कायम रख सकी। इसके बाद आर्यवीर दल और आर्ययुवक परिषद आदि के अनेक आन्दोलन जन्मे और बढे। किन्तु जो कार्य कुमार परिषद ने किया उसकी कोई मिसाल नही बन सका।

मैंने प्रान्तीय परिषद् का अगला अधिवेशन जोधपुर मे आमन्त्रित किया। जब इस अधिवेशन की तिथिया निकट आई तो मै बडा चक्कर मे पडा। मैंने स्वय ही तो प्रान्तीय सम्मेलन जोधपुर मे आमन्त्रित किया था, किन्तु प्रतिनिधियो के निवास, भोजन तथा अन्य व्यवस्थाओ की गुरुता से मै सर्वथा अनजान था। हमारे नेता श्री गणेशीलाल जी राजस्थान आडिट आफिस मे स्थानान्तरित होकर जयपुर चले गये थे। मेरी सकोची वृति ने मुझ मे इतना साहस भी नही रखा कि मै अपनी कठिनाई आर्यसमाज के अधिकारियो के समक्ष रखकर उनसे इस सम्मेलन के लिये सहायता लेता। मैंने तो एक बार यह निश्चय भी कर लिया कि मैं प्रान्तीय मन्त्री श्री जीवानन्द आनन्द को लिख दू कि जोधपुर मे सम्मेलन आयोजित किया जाना सम्भव नही है। किन्तु हमारी सभा मे एक अन्य युवक श्री शम्भूदत्त सारस्वत का उन्ही दिनो प्रवेश हुआ था। उन्होने मुझे आश्वासन दिया कि मैं सम्मेलन को लेकर थोडा भी चिन्ता न करूं। वे स्वय ही प्रतिनिधियो के भोजन, निवास आदि की व्यवस्था करेगे। हमने इस आश्वासन को एक देवी वरदान माना।

(क्रमश)

वासन्ती बयार बह रहा

—श्री चमनलाल गुप्ता, अशोक विहार

भारतवर्ष त्यौहारों पर्वों का एक अनन्त विशाल समुद्र के समान है, जिसमें अनेक मगलमय पर्वों, त्यौहारो की नदियो का पावन सगम निरन्तर होता रहता है। इन्ही पर्वों मे हमारे विशाल देश की महानता इन्द्र धनुष की आभा और अखडता परिलक्षित होती है। कहां तक गिनायें, जितने त्यौहार, पर्व इस देश में मनाये जाते हैं, शायद ही विश्व के किसी और देश मे मनाये जाते हो। सच तो यह है कि ये पर्व ही हमारी सस्कृति के प्राण हैं जो भारतीय प्राचीन संस्कृति की समृद्धि को उज्जागरित करते हैं। शताब्दियों से व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का जीवन इन्हीं त्यौहारो से प्रेरित होता आ रहा है। हमारे सभी त्यौहार प्रसिद्ध महापुरुषो के जन्म उनके उदात्त विशद जीवन की प्रेरणादायक घटनाओ से जुडे हैं प्रकृति की सुन्दर महामाया से।

ससार मे पाच प्रकार की सभ्यताए फैल चुकी हैं—मिश्र, यूनान, बेबीलोन चीन और भारतवर्ष। परन्तु भारत को छोडकर शेष चार प्रकार की सभ्यताओ का आज जरा भी कोई चिन्ह दिखाई नही पड़ता। लेकिन लाखो वर्ष बीतने पर भी आज भारतीय सभ्यता वैसी ही तरो ताजा है। इस आश्चर्य जनक स्थिति को कवि शिरोमणि डा० इकबाल ने अपने बडे मौलिक एवं सुन्दर शब्दो मे इस तरह व्यक्त किया है।

यूनान मिस्र रोमा मिट गये जहा से कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी।
वर्षों रहा जमाना जुल्मो सिता हमारा फिर भी बाकी है अबतकनामो निशा हमारा।।

अत. इसका रहस्य पर्व त्यौहार ही हैं जो हमारी सभ्यता का परिचायक है। दर्पण है और प्राण है।

इन्ही त्यौहारो की एक लम्बी श्रृखला मे एक महा पर्व वसन्त का भी है। यह शुद्ध प्राकृतिक ऋतु पर पर्व है जो प्रतिवर्ष माघ शुदी पञ्चमी को आता है। परन्तु हिन्दुओ आर्यों के पंचाग के अनुसार वसन्त ऋतु के दो महीने चैत्र और वैशाख होते है। अत: मानो जो प्रकृति चालीस दिन पहिल से ही वसन्त ऋतु के भव्य स्वागत की तैयारी माघ शुदी पचमी से आरम्भ कर देती हैं। ऐसा प्रतीत काल से चला आ रहा यह महापर्व उल्लास और आनन्द प्रमोददायक त्यौहार माना जाता है। यह शीत ऋतु की समाप्ति पर मकर सक्रान्ति के आठ दस दिन बाद और होली से चालीस दिन पूर्व आता है। इसीलिए सम्भवत: यह कहावत प्रचलित है—

"वसन्त आया जाडा डोला आया वसन्त पाला उडन्त ज्योतिष शास्त्रो के अनुसार यह आठ सहस्र मील चौडी पृथ्वी अपनी चौबीस सहस्र मील परिधि का एक चक्कर चौबीस घण्टे मे पूरा करते हैं, तो इससे यह दिन और रात्रि का निर्माण करती है जो प्राणी मात्र के लिये सुख का साधन हो जाता है। दिन काम करने के लिये और रात्रि दिन की थकान को दूर करने के लिये। जब यही पृथ्वी सूर्य के गिर्द घूमकर एक चक्कर ३६५ दिन और कुछ घण्टो मे पूरा करती है तो इससे बारह मास और छ: ऋतुओ का निर्माण होता है। वैदिक साहित्य मे इन्हे बारह आदित्यो के नाम से भी जाना गया है। यजुर्वेद (२२-३१) मे उनके इस प्रकार है—

मधु माधव, शुक्रतशिशुद्धि, नम नमस्य, इष-ऊर्जा, सह-सहस्य, तप-तपस्या। ये दो-दो मासो के जोड़ ही छ: ऋतुओ के द्योतक हैं। सामवेद (मन्त्र ६१३) मे प्रकार गिनाया गया है—

वसन्त इन्न रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्य। वर्षाण्यनु शर दो हेमन्त:इन्न रन्त्य: कवि शिरोमणि कालीदास ने इन ऋतुओ का अपने ग्रन्थो मे बडा सुन्दर वर्णन किया है। छ ऋतुए प्रभु ने मानव के मन: प्रसाद के लिये बड़ी रमामयिता युक्त बनाई है। इनमे सर्वश्रेष्ठ वसन्त को ही माना गया है। इसका ही सब ऋतुओ में प्रधान स्थान देने के कारण इसे 'ऋतुराज' कहा गया है।

जैसे सूर्यभगवान के उदय होने पर रात्रि का अन्धकार भग जाता है और जन साधारण अपने जीवन मे नई स्फूर्ति अनुभव करके अपने-अपने काम-धन्धों मे लग जाते हैं और पशु-पक्षी भी अपने खाने-पीने की खोज मे इधर उधर निकल जाते हैं। ठीक इसी प्रकार से वसन्त के आगमन पर प्रकृति मे नई चेतना पैदा हो जाती है। प्रकृति देवी मानो एक रग बिरगी सुन्दर चुनरी धारण कर एक सुन्दर युवती की भांति उल्लास भरी, नाच करती प्रकट होती है। पतझड़ ने आकर जो पौधो और पेडो के पत्ते-पत्तियो को सुखाकर नीचे गिरा दिया था और मानो उनको निर्वस्त्र कर दिया था, वसन्त आकर उनको नये-नये कोमल, सुन्दर नन्ही-नन्ही मोहक पत्तियो से लाद दिया है। शीतल समीर मन्द-मन्द सुगन्ध बरसाता हुआ बड़ा जीवन दायक प्रतीत होता है और जब वह शरीर को छूता है तो सारे शरीर मे एक नई स्फूर्ति और नव जीवन का सचार हो जाता है इस समय प्रकृति अपने पूरे यौवन मे होतीहै। जितने रग-बिरगेफूल इस मौसम मे होते है उतने अन्य किसी ऋतु मे नही होते। इसीलिये कहा जाता है कि हसती हुई पृथ्वी को चित्रित करने हेतु वसन्त फूलों का पिटारा खोल देता है। इसी कारण इसे फूलो का त्यौहार भी कहा जाता है। इस समय सारी पृथ्वी वसन्ती बाना धारण किये हुए दिखाई देती है। खेतों में सरसो के पीले-पीले फूल शोभायमान होते है और वनोमे ढाक के फूलो की सुन्दरता मन को लुभाने वाली लाल-लाल आभा छा जाती है उद्यानो मे गेन्दे के फूल अपनी शोभा का विहलूर करते नही थकते। सूरजमुखी अपने आराध्य देव सूर्य के ध्यान मे मग्न रहती हैं। गुलाब यदि अपनी गुलाबी बहार दिखाता है तो कमल अपने पुष्प नेत्रो से प्रकृति की सुन्दरता को देखता रहता है। आम के वृक्षो पर बोर आने लगते है और उनपर मण्डराते हुए भौरो की गूजे और लताओपर बैठी कोयल की मधुर सुरीली कूक उसकी शोभा की ओर भी चार चाद लगा देता है। मधु मक्खियां फूलो से रस लेने और मधु (शहद) तैयार करने मे लगी हुई इधर उधर उडती दिखाई देती है। कोयल मानो ऋतुराज वसत के स्वागत मे सुरीले गीत गा रही होती है, इसीलिये पाश्चात्य कवियो ने कमल को वसन्त का दूत (Harbinger of spring) की सज्ञा दी है।

शीत के कारण छोटे-छोटे पक्षी जो किसी अज्ञात स्थान पर चले गये थे। वे भी वसन्त के आने पर मानो उसका स्वागत करने के लिये फिर से वृक्षो पर बैठ प्रकृति की शोभा बढ़ाने मे लगे हैं। सारांश यह कि इससमय सारा वायु मण्डल मद से परिपूर्ण हो जाता है। सभी दिशाए सुरीली, मीठी-मीठी, आवाजो वाले नाना प्रकार के पक्षियो के कलरव से गूज उठती है। इस प्रकार सारा प्राकृतिक जगत जड चेतन नये जीवन का सकेत करता है। सारा वातावरण मधुमय आकर्षक और मनोहर लगने लगता है। ऐसे उल्लासमय और मद भरे वातावरण मे मानव मन की स्थिति भी कुछ और ही हो जाती है। अत: अपने चहूं ओर मोहक प्राकृतिक दृश्यो की अद्भुत सौन्दर्य को देखकर मस्त हो झूमने लगता है। और अपने अन्दर एक नये जीवन का सचार अनुभव करने लगता है। नगरो विशेष कर ग्रामो में सभी नर-नारी औरबाल वृद्ध वसन्ती परिधान मे दीख पडते हैं। मानस प्रसाद के लिये विविध प्रकार के मनोरजनो का आयोजन भी करते हैं।

स्वास्थ्य के लिये भी यह ऋतु बहुत ही उपयोगी और लाभदायक है। इस लिये इसमे उद्यानो मे भ्रमण करना और व्यायाम आदि करना अत्यन्त लाभप्रद है। महर्षि चरक ने 'वसन्त भ्रमण पथ्यम्' कहा है। इन्ही भावो को यजुर्वेद के तेरहवें अध्याय के कुछ मन्त्रो को बडी कला पूर्ण ढ़ग से वर्णन किया है। सम्भवत: इन्ही गुण के कारण विद्वानो ने इस ऋतु को स्त्रीलिंग, नपुंसक लिंग न देकर पुल्लिग में माना है यही इस ऋतु का महत्व है) परन्तु इस ऋतु के साथ धर्मवीर नायक हकीकत की बलिदान की गाथा जुडने से इसकी महत्व और भी बढ़ जाता है। मुगल सम्राट अकबर महान के पुत्र जहांगीर के शासन काल में स्यालकोट निवासी (वर्तमान पाकिस्तान मे) लाला भागमल और माता कौरा के एक मात्र छोटी आयु मे विवाहित वीर बालक हकीकत को उसके सहपाठी मुसलमान बच्चों के साथ किसी तुच्छ सी बात पर वादविवाद होने के कारण, मुल्लाओ के फतवे फल स्वरूप शालीमार बाग लाहौर मे इसी वसन्त के दिन कत्ल कर दिया गया था। आर्य वीर बालक ने प्रलोभनो की लेशमात्र भी परवाह न की धर्म पर आरूढ़ रहा और जीवन बचाने के हेतु मुसलमान बनना स्वीकार न करके, बलिदान होना ही श्रेष्ठ समझा और कातिलो को यह शब्द कहते हुए निर्भीकता से अपना सिर तलवार के नीचे कर दिया—

(शेष पृष्ठ ५ पर)

धर्मवीर हकीकत राय

—नरेन्द्र अवस्थी

महापुरुष, देश और धर्म पर बलिदान होने वाले क्रान्ति वीर समाज सुधारक किसी जाति या धर्म के लिए प्रेरणा स्रोत होते हैं। जो धर्म या समाज व इतिहास में नव उत्साह का संचार करते हैं जो जातियां अपने युगपुरुषो—शहीदो क्रान्तिकारी वीरो को भूल जाती है वो इतिहास के पन्नो से मिट जाती है। ऐसा ही एक धर्मवीर था बालक हकीकत राय ! जिसने अपने अदम्य साहस व तर्क संगत विचारो से पूरे इस्लाम साम्राज्य को हिला दिया। उस अमर बलिदानी की अमर प्रेरणा का ही परिणाम है कि १९४७ मे देश विभाजन पर हम लाखो हिन्दुओ ने धर्मवीर हकीकत राय के पथ पर चल कर करोड़ो रुपयो की सम्पत्ति कारोबार, घरबार को ठोकर मारकर पुण्यभूमि भारत मे आये। धर्मवीर हकीकत राय यदि मुसलमान बन जाते तो उन्हे सभी प्रकार के ऐश्वर्य विलासिता के साधन उपलब्ध होते मगर उन्होने धर्म को सर्वोपरि माना। ऐसे ही देश विभाजन पर लाखो हिन्दुओ की अग्नि परीक्षा हुई। पाप स्थान अर्थात पाकिस्तान से आने वाला हर हिन्दू परिवार भी हकीकत राय के पथ का अनुसरण करने वाला लगता है।

वीर हकीकत राय का जन्म १७१९ मे स्यालकोट मे लाला भागमल के घर हुआ। पिता उसे किसी महत्वपूर्ण पद पर देखने के इच्छुक थे इसी अभिलाषा से उसे 'मदरसे' मे शिक्षा ग्रहण के लिये भेजा। वहा ज्यादातर मुसलमान सहपाठी थे। बालक हकीकत राय कुशाग्र बुद्धि का होने के कारण मौलवी साहब का विशेष कृपापात्र बन गया। परन्तु हकीकत राय की माता उसे हिन्दू धर्म के इतिहास व विशेषताओ का बोध कराती रहती थी। जिससे वीर हकीकत को धर्म और अपनी संस्कृति की हककीत का ज्ञान हुआ। मदरसे में सभी मुस्लिम छात्र उसकी प्रतिभा से ईर्ष्या करते थे। एक दिन जबकि मौलवी साहब बाहर गये हुये थे। सभी सहपाठियों ने वीरहकीकत को खेलने के लिए मजबूर किया। उसने दृढता पूर्वक कहा "मैं मदरसे मे पढने को आया हूं मेरी खेलने की बिल्कुल इच्छा नही है। इसपर गुस्से मे आकर उसके दो सहपाठियो ने हकीकतराय को चिढाने को 'मा दुर्गा भवानी' को गाली दे डाली। वीर हकीकत राय का चेहरा तमतमा गया यह उन की सहनशीलता से बाहर था। उस वीर ने कहा यदि ऐसे ही अपशब्द मैं तुम्हारी फातिमा बीबी के लिये प्रयोग करू। इस बात पर सभी मुसलमान छात्र बौखला उठे। सभी छात्रो ने मौलबी के आने पर इसकी शिकायत उससे की। मौलवी भी रसूलादजादी के बारे में अपशब्द कहने पर बौखला उठे। मौलवी ने इस पूरे इस्लाम मजहब का अपमान बताते हुए मामला काजी साहब तक पहुचाया। काजी साहब ने यह फतवा दिया या तो हकीकत राय मुसलमान हो जाए या इसे मृत्युदण्ड दिया जायेगा।" वीरहकीकत राय ने निडरता की मूर्ति बनकर कहा 'यह कहा का न्याय है जो अपराध मैंने किया है वही मेरे से पहले इन मुस्लिम लडको ने किया है। मैं हिन्दू धर्म को बिल्कुल नही छोड सकता चाहे मुझे मृत्यु के फन्दे को क्यो न चूमना पड़े। हमारे धर्म मे कहा है आत्मा अमर हैं—शरीर नश्वर है इसीलिये—

काट सकते हो तो अन्दर का हकीकत काटो।
काट सकती जिसे यह तुम्हारी तलवार नही।।

काजी और मौलवी हकीकत राय के तर्कों को सुनकर और क्रोधित हुये। हकीकत राय के पिता ने बडा समझाया कि बेटा मुसलमान हो जाओ—तुम्हारी जान तो बच जायेगी। मगर चटटान से भी ज्यादा मजबूत इरादे वाले वीर ने कहा।

सब झुके सब कुछ झुके
झुके गर काल भी।
यह हरगिज नही मुमकिन
धर्महेतु झुके मेरे सिर का बाल भी।

उसे मुसलमान बनाने के लिए अनेको प्रलोभन दिये गये मगर उनकी एक भी बस न चली। लाहौर के हाकिम शाह नाजिर ने काजी के निर्णय की पुष्टि की और उसको जल्लाद के हवाले करके कतल करने की आज्ञा दी। हकीकत राय ने कतल की सजा सुनकर मुस्कराते हुए पिता श्री को कहा 'पिता जी हमे तो भगवान कृष्ण के गीता मे बताया कि शरीर मरता है—आत्मा कभी नही मरती। आत्मा केवल दूसरा चोला धारण करता है वसन्त पंचमी के ऐतिहासिक व धार्मिक दिवस पर जब जल्लाद ने तलवार उठाई तो मासूम व खूबसूरत बालक को देखकर उसका दिल भी दहल गया—उसकी जमीर भी उसे धिक्कारने लगी। वीर हकीकत राय ने उसे भी उपदेश देते हुये कहा 'भाई मैं जब अपना कर्तव्य निभा रहा हूं तुम भी अपना कर्तव्य निभाओ वीर हकीकत राय ने मरते दम यह सिद्ध कर दिया धर्म की बलिवेदी पर हम प्राण देते हैं तो हमारे-चेहरे पर मुस्कान खेलती है।

जब तक खून की लाली
हमारे एक भी कतरे में है।
कौन कहता है कि हमारे
धर्म या वतन की आबरू खतरे मे हैं।।

१—आर्यसमाज मार्केट श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली-११००६५

(पृष्ठ ४ का शेष)

काट सकते हो तो अदन्र के हकीकत को काटो।
काट सकती असल हकीकत को यह तलवार नही।

इस वीर बालक की एक सगमरमर की सुन्दर प्रतिमा, हिन्दु महासभा भवन नई दिल्ली के प्रांगण में स्थित है, जहा प्रतिवर्ष इस धर्म की वीर बालक की की याद मे वसन्त पचमी के दिन का बडा सुन्दर प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित होता है।

देश मे निराशा का वातावरण है, तो प्रकृति मे तो वसन्त आ हीगया, पर देश मे तो निराशा के बादल छाये हुए हैं। अभाव दुख कष्ट, कमर तोड मह गाई, भ्रष्टाचार, दुराचाकर अनैतिकता का बोलवाला है। भाषावाद प्रदेशवाद जलबटवारा बाद अराष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता के राष्ट्र विरोधी तत्व उभर कर आ रहे हैं और सगठन का स्थान विघटन ने ले लिया है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अशान्ति और अराजकता का साम्राज्य है। कोई भी सुरक्षित नही है, निर्दोष व्यक्तियो का खून बहाया जा रहा है, सब की आखो में आसू हैं। ऐसी चिन्ता जनक स्थिति मे क्या कोई वसन्त ऋतु को आनन्द ले। इस अन्धकारमय स्थिति को आर्यजगत के सुप्रसिद्ध ओजस्वी कवि श्री शरर जी ने किसी प्रसग मे इस प्रकार व्यक्त किया है—

खिजा के दौर मे अपना चमन हुआ बर्बाद बहार में भी कली कोई मुस्करा न सकती गुलाब थे तो गुलामो का माप सताता रहा रिहा हुए तो रिहाई भी रास आ न सका नवीन आज भी हूण वही अन्धेरा है। कही भी नूर की नन्ही किरण नही मिलती देश की ऐसी अन्धकारमय और दैनीय दशा को ध्यान मे रख कर एक देशभक्त ने अपने मन की वेदना इस प्रकार व्यक्त की है—

"न चल ए महकते वादे बाहरी राह लग अपनी।
तुझे अठखेलियां सूझे हैं हम बेजार बैठे हैं।।"

अत इस वर्ष वसन्त पर्व का यही एक मात्र पावन सदेश है कि सभी देश भक्त, विशेषकर युवा वर्ग अपने आपसी सब भेदभावो को भुलाकर केवल देश हितो को ध्यान मे रखकर उभरते हुए अराष्ट्रीय तत्वो का सामना करके मातृभूमि की रक्षा कार्य मे जुट जाए। और देशवासियो के जीवनो मे इस विषैले भ्रष्टाचार से मुक्ति पाने की लहर पैदा करें सभी कामना करे या रख इस वर्ष वसन्त ऐसा खिले। शान्ति का वातावरण देश मे फिर से जगे" अत आने वाले दिनो को सुख और शान्तिमय, मगलमय बनाने हेतु जगत नियन्ता प्रभु से कामना करें।

हमारे गये दिन फिर से फेरदे ऐ कादरे मुलक।
सुना है तेरी दरगाह से गये दिन फिर आते हैं।।

आर्य बस यात्रा

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के तत्वावधान में दिल्ली से टंकारा तक

दिनांक ७-२-९१ वीरवार से २०-२-९१ बुद्धवार तक

प्रस्थान तिथि	समय व स्थान	पहुंच
७-२-९१	प्रातः ठीक ७ बजे आर्य समाज मन्दिर ग्रीन पार्क नई दिल्ली	सायं २ बजे जयपुर
८-२-९१	प्रातः ७ बजे जयपुर से	सायं १२ बजे पुष्कर सायं ४ बजे अजमेर
९-२-९१	दोपहर १ बजे अजमेर से	सायं ६ बजे जोधपुर
१०-२-९१	प्रातः ११ बजे जोधपुर से	सायं ६ बजे माऊंट आबू
११-२-९१	प्रातः १२ बजे माऊंट आबू से	सायं ८ बजे राजकोट
१२-२-९१	प्रातः १० बजे रोजकोट से	दोपहर १२-३० टंकारा
१३-२-९१	टंकारा सारा दिन समारोह में	
१४-२-९१	प्रातः ७ टंकारा से	सायं ५ बजे द्वारका
१५-२-९१	प्रातः ७ बजे द्वारका से	प्रातः ११ बजे सोमनाथमंदिर
१५-२-९१	दोपहर १ बजे सोमनाथ से	सायं ६ बजे पोरबन्दर
१६-२-९१	१ बजे पोरबन्दर से	सायं ८ बजे अहमदाबाद
१७-२-९१	दोपहर अहमदाबाद से	सायं ८ बजे नाथ द्वारा
१८-२-९१	प्रातः १० बजे नाथद्वारा से	दोपहर १२ बजे उदयपुर
१९-२-९१	दोपहर १२ बजे उदयपुर से	सायं ३ बजे चितौगढ गुरुकुल
२०-२-९१	प्रातः ७ बजे चितोड गढ	रात्रि १० बजे

आप ९००) प्रति सवारी के हिसाब से धन जमा कराकर शीघ्र सीटे बुक करा लें। ७-२-९१ वीरवार को प्रातः ७ बजे के पश्चात किसी यात्री की प्रतीक्षा नहीं की जायेगी।

१-श्री रामसरनदास आर्य, महामन्त्री, ओ-१७, जगपुरा विस्तार, नई दिल्ली-११००१४ फोन . ६९९४०८

२- श्री गणेशदास ग्रोवर, कोषाध्यक्ष एस-२२९, ग्रेटर कैलाश-I-आर्य समाज मन्दिर ग्रेटर कैलाश-I

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

यहां आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर एक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता स्वामी सुमना यति जी ने की।

समारोह का उद्घाटन करते हुए श्री रोशन लाल आर्य ने कहा कि देश को स्वतन्त्र कराने, धार्मिक अन्ध विश्वास मिटाने, दलितोद्धार, छुआ-छूत की समाप्ति, स्त्री शिक्षा, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की स्थापना साम्प्रदायिकता एकीकरण के लिए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने प्राणो का बलिदान दिया। स्वामी जी ने शुद्धि आन्दोलन चलाकर वैदिक धर्मियो की रक्षा की। उन्होने मांग की कि आज शिक्षा प्रणाली मैं परिवर्तन की आवश्यकता है। नैतिक शिक्षा आरम्भ से ही बच्चो को दी जानी चाहिए ताकि आने वाली पीढी को देशभक्त, राष्ट्र निर्माण मे रचनात्मक भूमिका निभाने वाला बनाया जा सके।

इस समारोह मे प० वेद प्रकाश शास्त्री, प० राजेश्वर शास्त्री, पुरोहित आर्यसमाज महर्षि दयानन्द बाजार, ज्ञानी गुरदयाल सिंह आर्य एव अन्य आर्य नेताओं ने अपनी श्रद्धांजलि भेंट की।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वाधान मे ३०-१२-९० को आर्यसमाज मस्जिद मोठ मे बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। जिस की अध्यक्षता लाला इन्द्र नारायण जी ने की। इस उत्सव मे स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती,,प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अध्यक्ष थे। इसके अतिरिक्त श्री सच्चिदानन्द शास्त्री, महामन्त्री सार्वदेशिक प्रतिनिधिसभा, श्रीरामनाथ सहगल, मन्त्री प्रादेशिक सभा, चौ॰ दलीप सिंह पूर्व सासद, आचार्या सुनीता आर्या, श्री इन्द्रसेन विश्व प्रेमी सगीताचार्य चुन्नीलाल भजनोपदेशक भी पधारे। डी॰ए॰वी॰ पब्लिक स्कूल मस्जिद मोठ के बच्चों का सास्कृतिक कार्यक्रम भी हुआ। मौरीशस देश का प्रतिनिधि मण्डल भी इस उत्सव में सम्मिलित हुआ। सब महानुभावो ने स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी तथा उनकी सहादत पर अपने ओजस्वी विचार रखे। मौरिशस की बहनो ने प्रभावशाली गीत सुनाये।

रामसरनदास आर्य

वार्षिक चनाव

आर्यसमाज श्री निवासपुरी का वार्षिक चुनाव १९९०-९१ मे निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गये। १ प्रधान श्री मोहनलाल २ उपप्रधान श्री लाजपतराय ३ मन्त्री श्री दीना नाथ छाबडा ४ उपमन्त्री, श्री हस राज ५ कोषाध्यक्ष श्री दयाल दास वर्मा।

वैदिक साहित्य प्रकाशन

(पृष्ठ १ का शेष)

युग निर्माता सत्यार्थ प्रकाश

प्रो० उमाकान्त उपाध्याय, आचार्य आर्यसमाज कलकत्ता ने यह अमूल्य ग्रन्थ आर्य भाई-बहनों को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर भेंट किया है। इस ग्रन्थ में सत्यार्थ प्रकाश का परिचय तो दिया ही है, बल्कि सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में जो कठिनाईयाँ आई है, उनका भी विवरण दिया है। सत्यार्थ प्रकाश के ऊपर समय समय पर प्रशासनिक और साम्प्रदायिक आक्रमण हुए, परन्तु यह अमरग्रंथ, इन आक्रमणों का सामना करके और भी ज्यादा निखरे रूप मे सामने आया। विरोधियों ने लेखनी उठाई, पर ऋषि भक्तो की प्रकाण्ड विद्वता के सामने सभी ने अपने हथियार डाल दिए। प्रो० उमाकांत उपाध्याय ने सभी प्रसगों को प्रारम्भिक रूप में सुरुचिपूर्ण शैली मे इस ग्रथ में प्रस्तुत किया है। आपने युगनिर्माता सत्यार्थ प्रकाश लिखकर साहित्य सेवा का एक नूतन आयाम विस्तीर्ण किया है।

समय-समय पर सत्यार्थ प्रकाश के छोटे-छोटे सरल, सुगम, रूपान्तर प्रस्तुत किए, उनका भी विवरण इस ग्रन्थ मे उपलब्ध है। सत्यार्थ प्रकाश के उपर आर्य जगत में इतना कार्य हुआ है कि सभी का विवरण देना पं० जी के लिए सम्भव नहीं था। सत्यार्थ प्रकाश के अन्य भारतीय एव विदेशी भाषाओ में अनेक अनुवाद प्रकाशित हो चुके है। उन सभी का विवरण देना प० जी लिए श्रमसाध्य कार्य न था पर उन्होने यह कार्य बहुत ही दक्षता पूर्वक किया है। प्रो० उमाकान्त जी का साधुवाद।

(युगनिर्माता सत्यार्थ प्रकाश- प्रो० उमकान्त उपाध्याय,

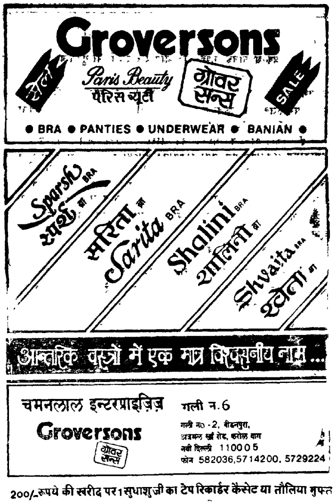
प्रकाशक—आर्यसमाज कलकत्ता, १९, विधान सरणी, कलकत्ता-७

सूचना

प्रिय पाठको

यह सूचित करते हर्ष का अनुभव करते है कि १०-२-९१ को हम ऋषि बोध विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं।

अत: अगला ३-२-९१ का अंक आपको उपलब्ध नही हो सकेगा।









आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No 32387/77 Post in N D P S O on 24 25 1-1991 'Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

"दिशाहीन समाज व राष्ट्र"

ओमप्रकाश कालडा मण्डलपति आय वीर दल जिला गुडगावा

"साम्प्रदायिकता का विष मानव समाज को डस रहा है। धर्म व जाति के नाम पर साम्प्रदायिक दगे निर्दोष व्यक्तियो की हत्याए आदि मानव सभ्य समाज पर कलक तथा पशुता के प्रतीक हैं। शान्ति प्रेम अहिंसा तथा सदभावना का वातावरण ही मानव समाज को सुखी, खुशहाल प्रगतिशील बना सकते हैं। राम और रहीम तो मानव समाज को जोडते हैं तोडते नही। विडम्बना है कि तथाकथित राजनैतिक नेता तथा राजनैतिक पार्टिया उत्तरप्रदेश के अलीगढ मेरठ कानपुर वाराणसी, खुरजा, आगरा आदि हैदराबाद व अहमदाबाद जैसे बडे नगरो मे वोटो की राजनीत की आड मे मौत का व्यापार कर रहे हैं। धार्मिक व सामाजिक कार्यकर्त्ताओ को अविलम्ब मैत्री भाईचारा, सद्भाव शान्ति तथा मानवता का वातावरण बनाये रखना चाहिये। ईश्वर व खुदा इन नेताओ और लोगो को सुमति व सदबुद्धी दे।

भाषा विवाद व पजाब

पजाब में चण्डीगढ़ तथा जालन्धर रेडियो स्टेशन से हिन्दी बुलेटिन को अकस्मात व अकारण बन्द कर देना तथा कार्यालयो मे दैनिक हिन्दी समाचार पत्रो पर रोक लगाना अनैतिक व असवैधानिक है। ४५ प्रतिशत हिन्दी भाषियो के साथ अन्याय है। केवल मात्र हिन्दी ही सारे भारत को काश्मीर से कन्या- कुमारी तक एक सूत्र मे पिरो सकती हैं। हमे हिन्दी अपनाओ व अग्रेजी हटाओ' पर पूरी शक्ति लगा देनी चाहिये। भारत सरकार को इस अन्याय सगत निर्णय के आगे नहीं झुकना चाहिये, अपितु कठोर कदम उठाने चाहिये। असम व अन्य दगा ग्रस्त नगर। म सना भेजी जा म।ना है। तो पजाब मैं क्या नही। प [illegible] पजाब सीमा सुरक्षा पटटी बनाना नितान्त अनिवार्य है।

अश्लीलता

अर्द्ध नग्न चित्र व अश्लील मुद्रा मे विज्ञापन चित्रहार चित्रमाला की विभिन्न मुद्राए व हावभाव समाज का दूषित बना रहे हैं सिनेमा पत्रिकाए अश्लील नावल, बल्यू फिल्मे युवक व युवतियो को चरित्रहीन तथा दिशाहीन बना रहे हैं। अत युवक-युवतियो को निर्माण कार्यों तथा समाज सेवा कार्यों में अपना समय व शक्ति लगानी चाहिये।

आज भारत के प्रत्येक नगर व शहर मे अश्लीलता अर्थात् जिस्म फिरोशी तथा स्मैक आदि ड्रगज आदि का बोलबाला है श्रद्धानन्द नगर व श्रद्धानगर बाजार देहली मे तथा बडे–बड होटलो मे नग्न नृत्य, अश्लील मुद्राए, पोशकालोनी मे एश्वर्यमय रगीन जीवन बिताने वाले युवक युवतिया, जिस्म फिरोक्त का चरित्र हीन, अनैतिक धन्धा करते हैं। आये दिन समाचारपत्रों में शीर्षक पढ़ने को मिलते हैं। न० २ की कमाई करने वाले व्यापारी, अधिकारी कर्मचारी इस अनैतिक व्यापार व व्यभिचार को बढ़ावा देते हैं।

नशा

स्मैक, हशीश, ब्राउन शुगर, अफीम, गाजा, चरस आदि नशे देश के बडे-बडे नगरो शहरो मे बल पकडते जा रहे हैं डाई अक्षरो का शब्द स्मैक कई वर्षों मे जान ले लेता है जीवन लीला समाप्त करने वाले भयानक नशें ड्रग्ज आदि तथा बढ़ती हुई अश्लीलता के विरुद्ध आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा प्रान्तीय सभाओ आय समाजो एवं आर्यवीर दल को जन जागरण, जन— आन्दोलन धरने आदि कार्यक्रम चालू करने चाहिये।

विडम्बना है कि भारत की राजधानी श्रद्धानन्द बाजार देहली में नरक की आड मे अनैतिक कार्य व धन्धे सदा के लिये बन्द होने चाहिये। 'मण्डलपतिआर्यवीर०

सेवा मे—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगडा विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटोदी हाऊस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ . फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक १६ | रविवार, १७ फरवरी, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

वैदिक साहित्य प्रकाशन वैदिक धर्म और आर्य समाज के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है—

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

(२७ जनवरी ९१ से आगे)

वेदोद्यान के चुने हुए फूल

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर गोविन्द राम हासानन्द, दिल्ली-६ द्वारा वेदमार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति द्वारा लिखित 'वेदोद्यान के चुने हुए फूल' प्रकाशित किया गया। आचार्य प्रियव्रत वेद वाचस्पति वेदों के प्रकाण्ड विद्वान हैं। उन्होंने कुछ दिन पहले 'वेदो के राजनैतिक सिद्धात' नामक ग्रंथ तीन खण्डो में लिखा था। यह एक अनुपम ग्रन्थ है। वेदों से चुने हुए पुष्प, प्रस्तुत ग्रन्थ मे सजाकर प्रस्तुत किए गए हैं। इस ग्रन्थ में वेद, ईश्वर, सृष्टि-प्रलय उपासना, स्वास्थ्य और जीवन शक्ति, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, राष्ट्रनिर्माण आदि से सम्बन्धित वेदमन्त्रों एवं सूक्तों का सुन्दर संकलन किया गया है। इन सूक्तो की विशद व्याख्या, आचार्य जी के मौलिक चिन्तन का परिणाम है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से पाठको को उदात्त वैदिक सस्कृति की अद्भुत झांकी मिलेगी।

गोविन्दराम हासानन्द के सचालक श्री विजयकुमार जी अद्भुत कर्त्तव्य-निष्ठा के धनी हैं। वे निरन्तर वैदिक साहित्य को आर्य जगत् तक पहुंचाने में संलग्न है लेखक और प्रकाशक, दोनों ही हमारे धन्यवाद के पात्र है।

वेदोद्यान के चुने हुए फूल—आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति,

(गोविन्दराम हासानन्द ४४०५ नई सड़क दिल्ली-६, पृष्ठ-२४८, मूल्य-५०६०)

वैदिक मधुवृष्टि

आचार्य रामनाथ वेदालकार का "वैदिक मधुवृष्टि" गवेषणापूर्ण लेखों का सकलन है। आचार्य जी गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे सम्कृत विभाग के अध्यक्ष एव आचार्य तथा उपकुलपति रह चुके हैं। वे पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

आचार्य जी ने इन अनुसधान पूर्ण लेखो मे विभिन्न विषयो को समाहित किया है। आदर्श गणतन्त्र, विश्वबन्धुत्व की भावना, शिक्षा शास्त्र के कतिपय सूत्र, वैदिक यज्ञ-चिकित्सा, वैदिक अर्थ व्यवस्था, वेदो में मानवता की प्रेरणा, वैदिक संस्कृति मे जीवन का स्वरूप, मानव शरीर की महत्ता आदि विषयों का उन्होने सुमधुर सुललित शैली मे विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

वेद विविध बहुमूल्य विचार रूप रत्नों के आकार हैं। इन्ही विचार रत्नो को पाठक इन लेखों में पायेंगे। आचार्य जी की लेखनी से आशा है कि भविष्य में भी हमें ऐसे अमूल्य लेख मिलते रहेगे। आचार्य जी के स्वास्थ्य एव नीरोग जीवन के लिये शुभ कामनाएं।

[वैदिक मधु वृष्टि—डा० रामनाथ वेदालकार
गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६ पृष्ठ २५१। मूल्य ६०-००]

इस अवसर पर अन्य अनेक ग्रन्थो का लोकार्पण किया गया, उनका विश्लेषण सभव हुआ तो भविष्य मे किया जाएगा।

गुरुकुल शिक्षाप्रणाली को देश की शिक्षा नीति का अभिन्न अंग बनाया जाए

दिनांक २३ दिसम्बर, १९९० को आयोजित आर्य महासम्मेलन के पारित प्रस्ताव

—श्री सुभाष विद्यालंकार, कुलपति-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

भारत की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ससार की सबसे प्राचीन शिक्षा पद्धति है। देश की वर्तमान परिस्थितियों में गुरुकुल शिक्षा पद्धति सर्वथा उपयोगी है। आर्यसमाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रेरणा ग्रहण कर १९वीं शती के उत्तरार्ध में स्वामी श्रद्धानन्दजी ने गुरुकुल आन्दोलन प्रारम्भ किया था और हरिद्वार में गंगा तट पर हिमालय की उपत्यका में कांगड़ी ग्राम के पास पहला गुरुकुल स्थापित किया। गुरुकुल कांगड़ी की सफलता से प्रभावित होकर पजाब, उत्तरप्रदेश, हरयाणा, राजस्थान, बिहार, गुजरात, मध्य प्रदेश, उड़ीसा आदि अनेक राज्यों में गुरुकुल स्थापित किये गये।

खेद है कि देश की स्वाधीनता के पश्चात् शासन के कर्णधारों ने गुरुकुल शिक्षा पद्धति की ओर उचित ध्यान नहीं दिया।

अनेक शिक्षा आयोगों और शिक्षा समितियो की सिफारिशो के बावजूद आज भी देश की कोई सुविचारित और स्पष्ट शिक्षा नीति नहीं हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निश्चित मत है कि गुरुकुल शिक्षा पद्धति देश के युवकों का चारित्रिक, मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, आत्मिक और भौतिक विकास करने में समर्थ है, अत. यह सम्मेलन भारत सरकार से आग्रह पूर्वक अनुरोध करता है कि :

१-सरकार गुरुकुल शिक्षा पद्धति को मान्यता और सरक्षण प्रदान कर इसे देश की शिक्षा नीति का अभिन्न अंग बनाए।

२-यह सम्मेलन देश के समस्त आर्य स्कूलो से अनुरोध करता है कि वे समान पाठ-विधि अपनाकर गुरुकुल पद्धति और गुरुकुलो के एकीकरण मे सक्रिय सहयोग प्रदान करें।

३-सम्मेलन का निश्चित विचार है कि आर्यसमाज की समस्त शिक्षा सस्थाओ मे वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा, नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा और भारतीय सस्कृति के शिक्षण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव   सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

सत्य का व्रत लें

व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम् ।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

यजु० १९-३०

व्रत (सकल्प) से दीक्षा (कर्तव्यनिष्ठा) को प्राप्त होता है। दीक्षा से दक्षिणा या दाक्षिण्य (चतुरता) को प्राप्त होता है। दक्षिणा (दाक्षिण्य) से श्रद्धा (आस्तिक्य बुद्धि) को प्राप्त करता है। श्रद्धा से सत्य (ब्रह्म) की प्राप्ति होती है।

—डा० कपिलदेव द्विवेदी

आर्य समाज और पुरोहित

क्या आप से ऐसे कार्यकर्ता पुरोहित विद्वान हमें मिल सकते हैं? हमें आवश्यकता है।

आर्य समाजो में नवजीवन के सचार हेतु इसी प्रणाली के कार्यकर्ता-पुरोहितो की आर्य समाज मे नियुक्ति, स्थानान्तरण व मासिक निर्देशन कक्षा, व शिविरों आदि की व्यवस्था करना, "प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभाओं की जिम्मेदारी व अधिकार बनाया जाए, वर्तमान में आर्य समाजो मे कहीं कहीं जो "पुरोहित" कार्य कर रहे विद्वान हैं वे अधिकाशतः आर्य समाज के व्यापक उद्देश्यो के प्रति उदासीन व तप, साधना से रिक्त होते हैं व अर्थोपार्जन हेतु पण्डा-पुरोहितवाद मे सीमित हो गए हैं, फलतः आर्य सदस्यो व परिवारो मे आर्यत्व की श्रद्धा नही पनपी है व शेष समाज की श्रद्धा तो बाद की बात है। इसीलिए कई आर्य समाजो के अधिकारी तक अनार्य मिलते हैं। अतः आर्य समाज की प्रतिष्ठा हेतु योग्य पुरोहित की सेवा व समर्पण आज की प्रथम आवश्यकता मानते हुए हमारा प्रस्ताव है कि :—

१—(अ) परोपकारिणी सभा-अजमेर के तत्वावधान में अथवा समुचित नेतृत्व मे प्रत्येक प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत-आदर्श एव मान्यता प्राप्त पुरोहितो के लिए नियुक्ति कार्यशालाए सचालित की जाएं।

(ब) प्रत्येक "आर्य पुरोहित" हेतु क्रमशः मासिक निर्देशन कक्षा व प्रत्येक तीन वर्ष मे दक्षता-प्रमाण पत्र का नवीकरण अनिवार्य बनाया जाए।

(स) अप्रमाणिक (अयोग्य) विद्वानो की "पुरोहित कार्य" पर नियुक्ति पर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

२— आर्य प्रतिनिधि सभाएं ही प्रत्येक आर्य समाज हेतु क्रमशः व प्रमाणिक पुरोहितो की नियुक्ति, स्थानान्तरण आदि का अधिकार व कर्तव्य निर्वाह करे।

पं भूदेव जी शास्त्री एम. ए ने अपने एक लेख मे बड़े महत्वपूर्ण सुझाव दिए है। यहां संक्षेप से उन्ही का उल्लेख करके लेख समाप्त करता हूं।

पुरोहित के कर्तव्य.—

१. समस्त सदस्यो के साथ नियमित सम्पर्क रखना।

२. सदस्यो की सन्तानो का रजिस्टर रखना तथा समय-समय पर उनका समुचित सस्कार कराने की माता-पिताओं को प्रेरणा करना और संस्कार सम्पन्न कराना।

३ साप्ताहिक अधिवेशनों की उपस्थिति बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील रहना तथा अधिवेशन को उपयोगी बनाना।

४. सदस्यो को पारस्परिक सुख-दुःख में सहयोगी बनाते रहना।

५ महिलाओं, युवकों तथा बालको के लिए आर्य स्त्री समाज, आर्य युवक समाज, आर्य कुमार सभा तथा आर्य बाल सभा आदि का संयोजन करना कराना।

७. आर्य समाज द्वारा सयोजित अन्य व्यायामशाला, आर्य वीर दल आदि की गतिविधियों पर भा दृष्टि रखना तथा उन्हें पुष्ट करना।

८. आर्य बालको की आर्य क्रीड़ा की व्यवस्था करना तथा क्रीड़ा के पश्चात् सम्मिलित सन्ध्या, एक भक्ति गीत का सम्मिलित गायन।

इन कार्यों में पुरोहित की सतर्कता से आर्य समाज में नवजीवन का संचार होगा।

सम्पादक के नाम पत्र

माननीय प्रो०वेद व्यास जी (प्रधान डी०ए०वी० कमेटी) ने जो आपत्ति जनक, मिथ्या एवं अनर्गल विचार अपने लेख डी०ए०वी० द्वारा प्रकाशित अपनी पत्रिका "यग मैन" में व्यक्त किये हैं, क्या उनपर कोई अंकुश नहीं लगाया जा सकता? सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा जैसी संस्थायें भी मौन हैं, क्या कारण है?

एक ओर तो रुशदी के जरा से भाष्य पर मुस्लिम धार्मिक नेता उसे फांसी से कम की सजा को मान्य ही नही समझते और दूसरी ओर हमारे धर्म के ठेकेदार जो, स्वय को अग्रगण्य एवं मार्ग प्रशस्त मानते हैं वे उनपर लट्टू और फिदा हुये दिखाई देते हैं। ऐसा क्या है उन वेद व्यास जी में? जरा स्पष्ट तो करे हमारे गण्य मान्य नेता ताकि हम भी उनपर चवर डुलाएं। मेरे ये विचार अपनी मासिक पत्रिका में प्रकाशित करें। यह निर्णय वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी क्षेत्र की बैठक दिनाक २५-११-९० आर्यसमाज मन्दिर विकासपुरी बाहरी रिंग रोड में लिया गया था।

हमारी शिरोमणि सभाओं ने कई स्थानों से आपत्तियां आने पर कुछ प्रभावी कार्य नही किया है, इसपर आर्य जनो का चिन्तित होना निश्चित ही है। ऐसे वातावरण मे वेद व्यास जी के साथ-साथ शिरोमणि सस्थाओ के प्रति चिन्तित होना भी स्वाभाविक ही हैं। मेरा यह लेख एक प्रार्थना के रूप मे स्वीकार कर ज्यों का त्यो ही प्रकाशित करने का कष्ट करें। शिरोमणि संस्थाओ से प्रार्थना है कि वे मिलकर इसका शीघ्र निराकरण करे अन्यथा मेरे अग्रिम लेखों का संग्रह आपको शीघ्र ही आर्यसमाज के पत्रो और भारत के सभी प्रमुख समाचार पत्रों मे पढने को मिलेगा। यह मेरी उद्घोषणा है।

रामचन्द्र आर्य महामन्त्री
वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी क्षेत्र, दिल्ली आर्यसमाज मन्दिर
टैगोर गार्डन विस्तार, नई दिल्ली–२७

मांझी से

कविवर "प्रणव" शास्त्री एम. ए. महोपदेशक

प्रियवर मांझी राष्ट्र पोत को गलत दिशा मे मत ले जाओ।
पक्षपात पतवार प्यार से झञ्झाओं को नहीं जुटाओ ॥१॥
शान्त महासागर में तुमने आरक्षण का फेंका पत्थर,
लहरो से लहरें टकराई उठा भयानक बड़ा बवण्डर।
सोच-समझ के बिना विनाशक कदम न कोई कभी उठाओ ॥२॥
लोग कह रहे जनता दल पर बुखार सा चढ़ा बुखारी
'लाख पचास' मलेदे डाले किन्तु न टूटी अभी खुमारी।
देश-अस्मिता की समता को मत मजहब की भेंट चढाओ ॥३॥
रोती सतलुज-व्यास, उठी हैं अमृतसर में विष ज्वालाएं
केसर-क्यारी रक्त-रञ्जित लुटी पिटी हैं सुर-बालाएं,
असुरो के आतङ्क-लङ्क को पवन पुत्र बन तुम दहकाओ ॥४॥
जान बूझ कर तूफानो को देते हो क्यों बुलावा
उबल पड़ा है चतुर्दिश में विषम विखण्डन का भय-लावा
अन्त कहां पर इसका होगा तुम ही जनता को समझाओ ॥५॥
कहीं तुम्हारी भावुकता से जनता प्यारे, ऊब न जाये
दिशा-भूल से राष्ट्र ज्योत यह अध्वर में ही डूब न जावें।
अपने चिन्तन सहयोगी को ध्रुव तारे का मित्र बनाओ ॥६॥
शून्य सदन मे ले जावेंगे ना-समझी के नित्य नमूने
तुष्टिकरण से हावी होगे सिहो पर ढाठ स्यार-चमूने।
प्रतिमा पिकी सुहागिनी को मत वैधव्य व्यथा पहुंचाओ ॥७॥
दयानन्द के दिग्दर्शन की किरण सुनहरी राहत देगी
निष्पक्षी दृढ़ता की शुचिता, राष्ट्रवाद को चाहत देगी।
प्रबल प्रशिक्षण की सस्कृति से अरिदल का दिल दहलाओ ॥८॥
जहां ब्रह्म प्रिय क्षात्र शक्ति का समीकरण का सूर्य उदय हो
उसी राष्ट्र का इतिहासों मे अनुपम अविचल सत्य विजय हो।
इस सिद्धान्त स्वर्ण को कसकर कर्म कसौटी पर दिखलाओ ॥९॥
निश्चित समझो कर्म कला से हो जावेगी अमर कहानी
कीर्ति किन्नरी नाच उठेगी राजनीति में नीति सुहानी।
परामर्श का पुष्प उपायन "प्रणव" न इसको तुम ठुकराओ ॥१०॥

शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा)
आगरा-(उ० प्र०)—२८२००६

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आर्यसमाज एक आन्दोलन



आर्यसमाज एक आन्दोलन है। कुछ आन्दोलन अभीष्ट की प्राप्ति के साथ समाप्त हो जाते हैं, पर जो आन्दोलन। सम्पूर्णता' की प्राप्ति के उद्देश्य में सलग्न हो, उसकी उपादेयता तथा प्रासंगिता सदैव बनी रहती है। आर्यसमाज के दस नियम हैं। इन नियमों पर यदि गंभीरता पूर्वक विचार किया जाए तो, मनुष्य के जीवन में जो कुछ संभाव्य है, वह सभी कुछ इनमें समाहित है। ऐसे महान उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्नशील आर्यसमाज के सामने आज भी सामयिक चुनौतियां प्रश्न चिन्ह बनी खडी हैं।

आज सम्पूर्ण विश्व खाडी युद्ध की ओर उत्सुकता की दृष्टि से देख रहा है। कुछ देश राजनैतिकता के वशीभूत इस युद्ध में भाग ले रहे हैं तथा कुछ देश आर्थिक समस्याओ के कारण। यह भी सभव हैं कि कुछ देश नैतिक मूल्यों की स्थापना के लिए इस युद्ध मे भाग ले रहे हो। सयुक्त राष्ट्र संघ की परिकल्पना, विश्व साम्राज्य अथवा चक्रवर्ती साम्राज्य का एक रूप है। सयुक्त राष्ट्र सघ का दायित्व है कि कोई किसी का कुछ न छीने, कोई किसी को न सताए, कोई किसी पर धौंस न जमाए। पर क्या संयुक्त राष्ट्र सघ के पास इतनी शक्ति है कि वह अपने इन रक्षात्मक उद्देश्यों की पूर्ति कर सके। क्या संयुक्त राष्ट्र संघ किसी शक्तिशाली शक्ति के दबाव में तो कोई निर्णय लेने मे अनुशासित नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि मानवता की रक्षार्थ नैतिक मूल्यो को वरीयता दी जाए। सयुक्त राष्ट्र सघ की इस सम्बन्ध में एक बैठक शीघ्र हो रही है।

भारत गुट निरपेक्ष संघ का सदस्य है और प्रभावी सदस्य है। फिलिस्तीन का नाम भी इस खाडी युद्ध मे जोडा जाने लगा है। अब भारत की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है भारत अपना दृष्टिकोण किसी सीमा तक स्पष्ट भी कर दिया है भारत के वर्तमान और पूर्व विदेश मन्त्रियो की पिछले दिनो बैठक भी हुई। आवश्यकता यह समझने की है कि यह विश्व राजनीति आर्य सामाजिक मान्यताओं से, विश्व जनीन मान्यताओ से मानव धर्म की मान्यताओ से कितना प्रभावित होती है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन आयोजित किया गया। वैदिक धर्म की मान्यताओ, आर्य समाज के कार्य कलापो तथा भविष्य की योजनाओं पर विस्तार से विचार किया गया। राष्ट्रीय समाचार पत्रो तथा आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि प्रेस माध्यमो ने भी इसे विशेष महत्व प्रदान किया। भारत के प्रधान मन्त्री श्री चन्द्रशेखर, श्री राजीव गाधी, श्री हरिकृष्णलाल भगत, श्री बलराम जाखड, श्री कृष्णचन्द्र पन्त, श्री माखनलाल फोतेदार, श्री संजय सिंह, श्री रामचन्द्र विकल, श्री राजमगल पाण्डेय, डा० कर्णसिंह, श्री मदनलाल खुराना आदि राष्ट्रीय नेताओ का इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे सम्मिलित होना आर्य समाज के महत्व को दर्शाता है।

आर्य समाज के अनेक कार्यक्रम भारत सरकार ने अपने हाथ में ले लिए हैं। राष्ट्रीय नीतिया आर्य समाज से प्रभावित रही है। राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता की स्थापना साम्प्रदायिक सकीर्णता का उन्मूलन वर्णाश्रम व्यवस्था का जातीय आधार न होना अपितु कर्म आधार होना तथा विश्व शान्ति आदि विषयों पर आर्य समाज की अपनी विस्तृत एवं व्यापक तथा सर्वहितकारी सोच है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम समय-समय पर सरकार को तथा राष्ट्रीय नेताओं को विभिन्न विषयों पर संगोष्ठियों के द्वारा, जिनमें राष्ट्रीय नेता भी सम्मिलित हो, अपने विचारों से हमें अवगत कराते रहें तथा इनके क्रियान्वयन मे अपनी सक्रिय भूमिका भी निभायें।

डा० धर्मपाल

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२७ जनवरी, ९१ के अंक से आगे)

व्यवस्था करने मे श्री सारस्वत को अधिक कठिनाई नही हुई। प्रतिनिधियो के निवास की व्यवस्था आर्यसमाज में तथा भोजन की निकटवर्ती गोपाल होटल मे की गई। उन दिनो जोधपुर मे परिवारो मे आर्य अतिथियों को भोजन कराने का प्रचलन नही था। अधिकांश आर्यसमाजी मारवाडी समाज के अंग थे अत. उनमे पर्याप्त पिछडापन था। सौभाग्य से प्रतिनिधि भी बहुत कम आये और हमने उम्मेद हाईस्कूल के प्रांगण मे सम्मेलन की २—३ बैठकें सम्पन्न कर ली। इस प्रकार यह अधिवेशन पूरा हुआ। आर्य कुमार सभा की ओर से अलग अलग मोहल्लो मे प्रचार कार्यक्रम आयोजित किये जाते। आर्य व्यायामशाला भी हमारे कुमार आन्दोलन का एक अभिन्न अंग थी। शनिवासरीय सामूहिक अधिवेशन धूम धाम से होते। यज्ञ भजन-गान व्याख्यान तथा वाद-विवाद प्रतियोगितायें रक्खी जाती।

अपनी आयु के १८ वर्ष पूरे कर लेने पर मैं आषाढ कृ० ३-२००३ वि० (१९४६ ई०) मे विधिवत् आर्यसमाज की सदस्यता का प्रार्थनापत्र भरकर आर्यसमाज गुलाब सागर का सभासद बना। आर्यसमाज के सदस्यो और अधिकारियो के सम्पर्क मे तो मैं बहुत पहले से ही था। मैंने आर्यसमाज गुलाब सागर के मन्त्री के रूप मे सुप्रसिद्ध इतिहासकार श्री जगदीशसिंह गहलोत को सर्वप्रथम देखा। उनके पश्चात् क्रमश: श्री सदानन्द अवस्थी तथा श्री भैरवसिंह मन्त्री बने। श्री भजनसिंह माटी तथा श्री रावत सिंह चौहान प्रधान रहे। बाद में श्री नेकी राम गुप्ता भी प्रधान निर्वाचित हुये। एक वर्ष सभासद रहने के पश्चात् अगले वर्ष के निर्वाचन में मुझे पुस्तकाध्क्ष निर्वाचित किया गया। यह मेरी अभिरुचि का पद था। आर्य समाज गुलाब सागर के पुस्तकालय मे पर्याप्त पुस्तकें थी। मुझे याद है कि अगले कई वर्षो मे मैंने इस पुस्तकालय की लगभग सारी पुस्तकें पढ डाली। आर्यसमाज से सम्बन्धित तो शायद ही कोई पुस्तक बची हो जिसे मैंने आद्योपान्त न पढ़ा हो। पुस्तक को समाप्त कर उसके अन्तिम पृष्ठ पर मैं अपने अंग्रेजी में हस्ताक्षर तथा पुस्तक को खत्म करने की तारीख डाल देता था। हालाकि समाज के पुस्तकालय की पुस्तको पर इस प्रकार दस्तखत करना मेरी हिमाकत ही थी, किन्तु हुआ कुछ ऐसा ही। अध्ययन के इस दौर मे मैंने ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य, स्वामी दर्शनानन्द द्वारा प्रणीत उपनिषद् और दर्शन भाष्य, विभिन्न शास्त्र ग्रन्थ मनुस्मृति, गीता, रामायण, महाभारत आदि के अनेक सस्करण तथा आर्य सिद्धान्त विषयक सैकड़ो छोटे बड़े ग्रन्थ पढ डाले। यह दावा करना तो गलत ही होगा कि केवल एक बार पढ़ जाने मात्र से ही इन ग्रन्थो के सारे रहस्य मुझे स्पष्ट हो गये, किन्तु इतना तो लाभ हुआ ही कि मैं शास्त्र और सिद्धान्त विषयक बहुत सी बातें जान गया। स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र तथा आर्यसमाज के इतिहास को पढ़ने मे मेरी रुचि भी उसी समय बनी जो आगे चलकर बढती गई और अब तो मैंने इसे अपने अध्ययन का विशेष विषय ही बना लिया है।

आर्य समाज (नगर) जोधपुर मे मैं विभिन्न पदो पर रहा। प्रथम पुस्तक-अध्यक्ष रहा। यह मेरी रूचि का पद था क्योंकि मैं शुरू से ही किताबो का कीडा था। नित्य नियम से सध्या को आर्य समाज में जाना और वाचनालय मे बैठना हमारा दैनिक कार्य था। एक या दो वर्ष पश्चात ही मुझे नगर आर्यसमाज का मन्त्री चुन लिया गया। मैं अकेला ही नहीं अपने अन्य युवक साथियों के साथ आर्य समाज के इस उत्तरदायित्व पद पर प्रतिष्ठित हुआ। हमारी पूरी टीम ने नगर आर्यसमाज के सभी महत्वपूर्ण पदो पर निरतर तीन वर्ष तक कार्य किया। उप-मन्त्री बने भी बसन्तलाल मेरे घनिष्ठ मित्र और अन्तरग दाऊलाल टाक को कोषाध्यक्ष चुना गया और चांदमल पुस्तकाध्यक्ष बने। हम चारो नियम पूर्वक नित्य सायकाल समाज मन्दिर में इकट्ठे होते और विभिन्न प्रकार की चर्चाए, विचार विमर्श तथा बात चीत होती। यह निरतर वर्षों तक बिना किसी नागा के चलता रहा। रात्रि को वाचनालय का समय समाप्त होने पर सड़क पर पान की दूकान पर लगे रेडियो से समाचार सुन कर ही हम लोग घर लौटते। उन दिनो न तो घरों पर अखबार आते थे और न रेडियो सैट ही थे। (क्रमश:)

गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आचार्य गोवर्धनशास्त्री पुरस्कार—१९९१

बी सी/एच-१/

मान्यवर,

ज्ञातव्य है कि सघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित २१०० रु० का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है। विगत वर्षों मे यह पुरस्कार उनके गण्य मान्य शिक्षाविदों तथा समाज सेवकों को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए दिया गया है।

चयन सम्बन्धी नियम :

१— आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार उन्ही सज्जनो एवं समाओ को दिया जा सकेगा जो वेद, उपनिषद्, दर्शनशास्त्र आदि आर्य साहित्य का प्रचार एव प्रसार जनसामान्य तक करे।

२— उक्त विषय पर शोध करने वाले व्यक्ति/सस्थान भी उक्त पुरस्कार पाने के अधिकारी हो सकते हैं।

३— उक्त विषयों पर संगीत काव्य तथा नाटक रचकर अथवा नाटक को रंगमच पर दिखलाने वाले व्यक्ति या नाटक मण्डली भी इस पुरस्कार के लिए आमन्त्रित किए जा सकते हैं।

४— उक्त विषयो पर आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रचार एव नाटक आदि के माध्यम से जनसामान्य को उदात्त वैदिक भावना से आप्लावित करने वाले व्यक्ति या सस्था को उक्त पुरस्कार पाने हेतु सम्मिलित किया जा सकेगा।

५— उक्त विषयों का ग्राम-ग्राम मे जाकर मैजिक लालटेन, पुतली प्रदर्शन अथवा भजनो द्वारा प्रचार करने वाले व्यक्ति या मण्डली/सभा भी उक्त पुरस्कार पाने हेतु प्रार्थी हो सकते हैं/सकती है।

— आधुनिक युग मे विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करने हेतु अथवा सतुलित व्यक्तित्व के विकास हेतु योग की उपयोगिता सम्बन्धी सरल साहित्य जो सामान्य जनमानस को प्रभावित कर सके, लिखने अथवा प्रकाशित करने वाले व्यक्ति सभा और प्रकाशक आदि को भी पुरस्कार पाने वालों मे सम्मिलित किया जा सकता है।

७— उक्त पुरस्कार चयन नियम को परिवर्तित एव परिवर्धित करने का अधिकार सघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर को होगा।

आपसे निवेदन है कि यदि आपकी दृष्टि में कोई महानुभाव अथवा संस्था आगामी वर्ष के लिए इस पुरस्कार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण संलग्न पत्र मे निम्न पतों पर भेजने की कृपा करें।

१— श्री जी०बी०के० हूजा, अध्यक्ष, संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, ए-१५-ए, विजयपथ, तिलक नगर, जयपुर-३०२००४

२— श्री वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार—१९९१

विवरण पत्र

१— नाम
२— पता
३— आयु
४— योग्यता
५— प्रकाशित कृतियां
६— पुस्तकों की विधा
७— पुस्तकों का प्रतिपाद्य
८— प्रकाशन वर्ष
प्रकाशक का नाम तथा पता
९— वेद प्रचार में किए गए कार्यों का विवरण
१०— आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे की गई सेवाएँ
११— यदि किसी अन्य सस्था द्वारा सम्मानित किए गए हों तो उसका विवरण
१२— प्रस्तावित कृति पूर्व पुरस्कृत हुई है या नहीं, यदि हुई है तो उसका विवरण

कृपया चुनी हुई पुस्तको की एक प्रति श्री जी०बी०के० हूजा तथा ३ प्रतियां श्री वीरेन्द्र अरोड़ा कुलसचिव, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को प्रेषित करने का कष्ट करें।

श्री इन्द्रराज जी कारसेवा सत्याग्रह से साथियों सहित वापस

अयोध्या दि १।१।९१ को प्रदेश के हजारों आर्य सत्याग्रहियो एवं गुरुकुल प्रभात आश्रम के सत्याग्रही ब्रह्मचारियो के साथ सत्याग्रह करने के पश्चात् वापिस मेरठ पहुंचने पर मेरठ मे उनका हार्दिक स्वागत किया गया। अयोध्या मे विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए उन्होने कहा था कि आर्य समाज और सनातन धर्म एक कैंची के दो फलके हैं जो परस्पर, वेद की कील से जुड़े हुए हैं। वे फलके हर समय आपस में टकराते रहते हैं परन्तु एक दूसरे की हानि कदापि नहीं करते परन्तु जब कोई तीसरा इन दोनों के बीच में आ जाता है तो उसे खट से काट देते हैं, चाहे वह बाबरी मस्जिद का ढांचा हो या शासन या प्रशासन की तानाशाही। उन्होने आगे कहा कि राम जन्म भूमि स्थल पर जो ढांचा खड़ा है वह गुलामी की निशानी है। जब तक यह दूर नहीं हो जाता तब तक आर्य समाज की ओर से सत्याग्रह मे बराबर सहयोग मिलता रहेगा। सभा प्रधान जी ने सन्त महात्माओं का धन्यवाद किया कि उन्होने सारी हिन्दू जाति को छुआछूत, जातिवाद तथा घृणा एव ऊंच नीच की बुराईयो को दूर करते हुए, इस विशाल राष्ट्रवादी समाज को मर्यादा पुरुषोत्तम् भगवान् राम के चरणों में एकत्र कर दिया है। हमारा सब का सकल्प है कि राष्ट्र पुरुष, युग पुरुष, एव महामानव मर्यादा पुरुषोत्तम की जन्म स्थली से बाबरी मस्जिद के ढाचे को हटा कर इस वन्दनीय जन्म स्थली को अवश्यमेव सुरक्षित किया जाएगा। चाहे हमें कितना ही बलिदान क्यों न करना पड़े। सभा स्थल पर विधायक श्री लक्ष्मी कान्त जी बाजपेयी एवं श्रीमती शशि मित्तल ने भी अपने ओजस्वी भाषणो मे सन्तजनों को मेरठ की ओर से आश्वासन दिया कि मेरठवासी उनके इंगित मात्र से बलिदान के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

बाद में सन्त प्रवर श्री वाम देव जी महाराज राम कार सेवा समिति ने मेरठ वासियो के स्वागत के साथ साथ आर्य समाज के इस कार सेवा सत्याग्रह में कूदने का हार्दिक स्वागत करते हुए बड़े सम्मान भरे शब्दो में कहा कि यदि स्वामी दयानन्द जी न आते तो सारा समाज मुसलमान और इसाई बन गया होता और भारत पाकिस्तान और इसाईस्तान के रूप में दिखाई देता। आज हम महर्षि दयानन्द के ऋणी हैं जिन्होंने इस हिन्दू जाति को विनाश से बचाया। मेरठ में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने प्रदेश के कोने कोने से आए हुए वीर सेवक आर्य सत्याग्रहियों का धन्यवाद किया एव सब आर्य बन्धुओं को निर्देश दिया कि वे सत्याग्रह मे बराबर अधिक से अधिक संख्या में भाग लेते रहें।

वार्षिक निर्वाचन

दिनांक ८-१-९१ को आर्य समाज बोट क्लब का वार्षिक चुनाव हुआ, जिसमें सर्व सम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

१, प्रधान—श्री राजेन्द्रपाल गुप्त
२. मन्त्री—श्री बलेश कुमार खारी
३. कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार गुप्ता

आर्य समाज ग्रीन पार्क का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज ग्रीन पार्क नई दिल्ली-१६ का वार्षिक चुनाव रविवार दिनांक ६-१-१९९१ को श्री हरिचन्द जी थापर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—लाला इन्द्र नारायण जी (हाथी दांत वाले)
मन्त्री—श्री बलबीर सिंह जी सूद
कोषाध्यक्ष—श्री कुलदीप लाल जी कोहली

दान के लिए प्रार्थना

लगभग १५ वर्षों से यह समाज निस्वार्थ भाव से कार्य कर रहा है। इस समाज ने यहां पर प्रचार कार्य सुचारू रूप से नियमित रखने के लिए ध्वनि विस्तारक यन्त्र एव छोटी-छोटी पुस्तको द्वारा कार्य करने का निश्चय किया है। ध्वनि विस्तारक यन्त्र खरीदने के लिए कम से कम २५०० रुपये की आवश्यकता है। इस कार्य में यथायोग्य सामर्थ्य अनुसार यह समाज सभी दानी सज्जनों एव समाजों से इस व्यय भार मे सहयोग हेतु प्रार्थना करता है। जो भी सहयोग करना चाहे वह दक्षिणी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से हमें आर्थिक सहयोग कर सकते है। अथवा हमारे घर के पते पर चैक आदि द्वारा आर्य समाज बोट क्लब के नाम से भेज सकते है।

प्रचार वाहन द्वारा वेद प्रचार में योगदान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचार वाहन द्वारा निम्न स्थानो पर प्रचार कार्य सम्पन्न हुए—

२ जनवरी, बुधवार, आर्य समाज बोट कलब पर दोपहर १ बजे से २ बजे तक वेद प्रचार कार्यक्रम हुआ। जिसमे सहस्रो आर्य बन्धुओं ने भाग लेकर धर्म लाभ लिया।

प० सत्यदेव स्नातक प० चुन्नीलाल आर्य आदि प्रसिद्ध भजनोपदेशको ने सभा को प्रभावशाली रूप दिया।

१६ जनवरी को आर्य समाज बोटक्लब पर दो दिवसीय वेद प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ।

१८ जनवरी, शुक्रवार को निजामुद्दीन हेसू दफ्तर के समीप पार्क मे प० तिलकराज शर्मा ने वेद प्रचार कार्य मे अपूर्व सहयोग दिया। नगरवासियो द्वारा प्रचार कार्य को सराहा गया। तथा पुनः प्रचार हेतु आमन्त्रित किया गया। हजारो नर-नारियो ने आर्य समाज के प्रचार मे रुचि प्रदर्शित किया। स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी ने सभा के अन्त मे आशीर्वचन कहे।

शोक समाचार

१. केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की अभिन्न सहयोगी व कुलाची हसराज मॉडल स्कूल अशोक विहार की कर्मठ प्राचार्या श्रीमती सन्तोष तनेजा का दिनांक १६-१-९१ को निधन हो गया।

परिषद् उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करती है, परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

२. आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता बाल ब्रह्मचारी वैद्य देवेन्द्र आर्य जिनका सारा जीवन आर्य समाज को समर्पित था। दिनांक ९-१-९१ को उनका देहावसान हो गया।

उनकी स्मृति मे शान्ति यज्ञ तथा आध्यात्मिक प्रवचन पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द त्रिवेद तीर्थ द्वारा हुआ। शान्ति यज्ञ श्री भारत मित्र शास्त्री जी की ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य समाज जी ब्लाक कर्मपुरा नई दिल्ली में शोक सभा का आयोजन किया गया। श्री प० सत्यपाल मधुर व ज्योति प्रसाद द्वारा भजन हुए। स्वामी स्वरूपानन्द जी भी शोक सभा में शामिल हुए।

ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति व शान्ति प्रदान करे तथा परिवार जन व इष्ट मित्रो को धैर्य प्रदान करे।

कार्यकारी परिषद् का गठन

आर्य समाज मन्दिर बुराड़ी दिल्ली-९ में दिनाक २०-१ ९१ को कार्यकारी परिषद् का गठन किया गया, जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित किए गए—

१. प्रधान—श्री राधेश्याम त्यागी
२. सचालक—डा० धर्मपाल जी
३. कोषाध्यक्ष—बाबू रामकिशन त्यागी
४. महामन्त्री—श्री रामकिशन पहलवान

पंचम अन्तर्राष्ट्रीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सिलिगुड़ी में

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान, हैदराबाद की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ग्रीष्मावकाश में पंचम अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आर्य समाज, सिलिगुड़ी के तत्वावधान मे सिलिगुडी में किया जा रहा है।

यह शिविर इस वर्ष १५ मई से १५ जून ९१ तक आर्य समाज भवन, सिलिगुड़ी में लगाया जा रहा है। इस शिविर में १६ वर्ष से अधिक आयु वाले स्त्री पुरुष जिनकी योग्यता कम से कम मैट्रिक के समकक्ष हो समान रूप से भाग ले सकते हैं। महिलाओ के निवास की पृथक व्यवस्था की जाती है।

विगत वर्षों में इस प्रकार का प्रशिक्षण मौरीशस (विदेश) मे हैदराबाद एवं तपोवन आश्रम देहरादून मैं सफलतापूर्वक किया जा चुका है। जिसमें सैंकड़ो पुरोहितो को सफल प्रशिक्षण दिया जा चुका है। एक मास के इस शिविर मे भाग लेने के इच्छुक जन तीन रुपये के पोस्ट के टिकट भेज कर पूर्ण विवरण एव आवेदन पत्र निम्नलिखित पते पर प्राप्त कर सकते हैं।

शिविर की समाप्ति के बाद दार्जिलिंग एव नेपाल यात्रा की भी विशेष व्यवस्था रहेगी।

विशेष रूप से सभी आर्य समाजो और आर्य सस्थाओ से निवेदन है कि वे प्रतिभाशाली एवं सेवा निवृत्त सज्जनो को समुचित प्रशिक्षण दिला कर मानव निर्माण की पवित्र योजना मे महत्वपूर्ण योगदान करें। अपने क्षेत्र के अध्यापकों एवं प्रोफेसरो को विशेष रूप से प्रेरणा प्रदान कर भिजवाने का यत्न करें प्रशिक्षण देश-विदेश मे ख्याति प्राप्त कर्मकाण्ड के महारथी आचार्य वेदभूषण जी स्वयं देंगे।

पुण्यमयी सेवा का अवसर
मुफ्त में निवास भोजन एवं सत्संग

आर्य समाज, सिलिगुडी के तत्वावधान मे अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद की ओर से सिलिगुड़ी मे १५ मई से १५ जून ९१ तक एक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर लगाया जा रहा है। इस शिविर मे लगभग अस्सी प्रशिक्षार्थी भाग लेंगे।

हमें ऐसे सेवा भावी दम्पतियो या ६ स्त्री-पुरुषो की आवश्यकता है जो बत्तीस दिनों तक शिविर मे भोजन तथा नाश्ता आदि तैयार करने की सेवा कर सकते हो।

ऐसे सेवा भावी सज्जनो को निवास व भोजनादि की निःशुल्क सुविधा मात्र प्रदान की जायेगी।

आचार्य, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-२७

धर्म निरपेक्षता की आड़ में तुष्टीकरण । श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर सभा

कानपुर—आर्य समाज गोविन्द नगर मे अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष एवं आर्य नेता श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में मनाया गया।

समारोह में वक्ताओं ने कहा कि गणेश शकर विद्यार्थी की तरह स्वामी श्रद्धानन्द भी सन् १९२६ में साम्प्रदायिकता के शिकार हुए थे। पाकिस्तान बन जाने के बाद आज भी यही साम्प्रदायिकता हमारे देश को खोखला कर रही है। स्वतन्त्रता से पहले अग्रेज सरकार मुस्लिम तुष्टीकरण करती थी। स्वतन्त्रता के बाद आने वाली सभी सरकारे उसी नीति को अपना कर देश को तबाही की तरफ ले जा रही है। धर्म निरपेक्षता की आड़ में यह तुष्टीकरण किया जा रहा है।

समारोह में सर्व श्री जाति भूषण, बाल गोविन्द अवस्थी, जगन्नाथ शास्त्री शुभकुमार बोहरा, श्रीमती दर्शना कपूर ने भाषण दिए। समाररोह की अध्यक्षता आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य ने की तथा सचालन शुभकुमार बोहरा ने किया।

आर्य समाज मयूर विहार में वेद प्रचार

वेद शिरोमणि प० पृथ्वीराज ने दो दिवसीय वेद प्रचार में, जो बुद्धिमान हैं नेता हैं, विद्वान हैं उनको धर्म घातक कार्यों से पृथक रहना चाहिए, उनको सर्वदा धर्म रक्षा और धर्म पालन का ध्यान रखना चाहिए। आर्य समाज के नवें नियम को सुस्पष्ट करते हुए बताया कि मनुष्य आज अपनी उन्नति के लिए हर प्रकार से अधर्म में प्रवृत्त है और उसी में सन्तुष्ट है। जबकि आर्य समाज हमे आदेश देता है कि सबको अपनी ही उन्नति मे सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वाहन द्वारा पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने प्रचार कार्य किया। भजनोपदेशक प० सत्यदेव स्नातक, जोती प्रसाद चन्द्रपाल आदि के मधुर भजन हुए। —मन्त्री

आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन विकास फार्म मे ७ से १६ मार्च १९९१ तक दस दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। १७ मार्च को उत्सव मनाया जायेगा। शिविर में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के साथ योगादि दर्शनो का अध्यापन भी किया जायेगा। शिविर शुल्क २०० रुपये रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होगे, उनको योग्य जान कर शुल्क मे छूट दी जा सकेगी। शिविरार्थी २५ फरवरी से पूर्व ही अपनी योग्यता, व्यवसाय आयु सहित आवेदन पत्र निम्न पते पर लिख कर स्वीकृति ले लेवें तथा मन्त्री, आर्यवन के पास शुल्क जमा करवा देवे।

पता—दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन विकास,
रोजड़, पो० सागपुर, जिला साबरकांठा गुजरात-७

धन जी वाल जी पटेल	स्वामी सत्यपति
(प्रधान, आर्य वन)	(शिविराध्यक्ष)

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा पारिवारिक सत्संग का आयोजन

आर्य युवक सभा लुधियाना द्वारा श्रीमती चरणजीत धीर, हैबोवाल कलां लुधियाना के निवास स्थान पर उनके पति स्व० श्री एल० आर० धीर की पाँचवी पुण्य तिथि के उपलक्ष मे ८-१-९१ मंगलवार को प्रातः ७ १० बजे से ९.१५ बजे तक विशाल पारिवारिक सत्सग का आयोजन किया गया।

यह सत्सग मत्र से आरम्भ हुआ, जो कि प० राजेश्वर जी शास्त्री पुरोहित आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने सम्पन्न कराया तथा उनका मधुर एव सार गर्भित प्रवचन हुआ। आर्य युवक सभा पजाब के प्रधान श्री रोशन लाल आर्य ने कहा कि मानव चोला बहुत ही कठिनता से मिला है इसलिए हमें इसे व्यर्थ नहीं गवाना चाहिये। आवागमन के चक्कर से छुटकारा पाने के लिए श्रेष्ठ कर्म प्रभु भक्ति, दीन दु:खियो की सेवा करनी चाहिए तथा वेदो मे बताये मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। स्व० श्री धीर को यही सच्ची श्रद्धाजली होगी कि हम दूसरो के लिए जीना सीखे। शान्ति पाठ के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

संयोजक— सुरेश कुमार चड्ढा

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on14-15-2-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू० १३९
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" १७ फरवरी, १९९१

"यजुर्वेद-परायण—यज्ञ सम्पन्न"

आर्य समाज फतुहा (पटना) के ७२वे वार्षिकोत्सव के शुभ अवसर पर यजुर्वेद-परायण यज्ञ का आयोजन किया गया। दिनांक ९, १०, ११ एवं १२ जनवरी को होने वाले इस उत्सव मे यज्ञ के पश्चात् विभिन्न सम्मेलन होते रहे। अवसर पर आर्य जगत के साधक मनीषी स्वामी ब्रह्मानन्द नैष्टिक देहरादून, प० सत्यदेव शास्त्री वाराणसी, प० गगाधर जी शास्त्री पटना, चौधरी वेगराज आर्य गाजियाबाद, श्री आशाराम जी आर्य (उ० प्र०) डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, श्रीमती राजबाला आर्या हरयाणा एवं श्री महावीर सिंह पटना ने जन समुदाय को सम्बोधित किया ४ दिनो तक नगर का वातावरण ही वेद मन्त्रो से गू जता रहा।

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज तिमारपुर, [अतरग सभा का निर्वाचन श्री वेदव्रत शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित अधिकारीगण चुने गये।

प्रधान—पं० श्री कलीराम शर्मा

मन्त्री—श्री तेजपाल सिंह मलिक

पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ मदपुरी त० पलवल जिला फरीदाबाद के ५४वें वार्षिकोत्सव पर पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें कम से कम दसवीं तक की योग्यता रखने वाले व्यक्ति भाग ले सकते हैं। १८ फरवरी प्रातः से २४ फरवरी तक सोलह सस्कार वैदिक रीति से कराने का प्रशिक्षण दिया जायेगा। भोजन एवं आवास की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से की जाएगी। ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाये। प्रशिक्षण के अन्त में प्रमाण पत्र भी दिया जायेगा। जिसके लिए ५० रुपये का प्रावधान है।

अतः स्थान सुरक्षित करा लें। —प्रधान

सर्व धर्म समभाव एकता कमेटी

हरिनगर घण्टा घर नई दिल्ली का दिनांक २०-१-९१ को निर्वाचित श्री ओ० पी० पुरी की अध्यक्षा मे सम्पन्न हुआ जिसके पदाधिकारी गण निम्न प्रकार हैं।

१. प्रधान—श्री ओ० पी० खन्ना
२ उपप्रधान—श्री स० इन्द्रसिंह
३. मन्त्री—श्री जगदीश नागपाल
४. कोषाध्यक्ष—श्री डी० पी० गुप्ता

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष,
पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ. प्र.)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक १७ | रविवार, २४ फरवरी, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

भारतीय संविधान के निरूपण में महर्षि दयानन्द का व्यापक प्रभाव था

आर्यसमाज ने सामाजिक क्रान्ति द्वारा देश को सामाजिक दासता से मुक्त कराया

ऋषि बोधोत्सव पर—लाल कृष्ण आडवाणी के विचार

दिल्ली १२ फरवरी १९९१,

दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में ऋषि बोधोत्सव समारोह मे मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए भारतीय जनता पार्टी के पूर्व अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा—महर्षि दयानन्द राष्ट्रीय सामाजिक जागरण के अग्रदूत थे। स्वराज्य, स्वसंस्कृति और स्वभाषा की कल्पना सर्वप्रथम दयानन्द ने ही की थी। राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा थी। सामाजिक जागरण में महर्षि दयानन्द द्वारा निर्मित 'आर्यसमाज ने जो क्रान्ति पदा की है, वह अन्य किसी दूसरी संस्था ने नहीं की। हम कानून बनाकर सामाजिक सुधार की बात करते हैं, किन्तु जो सामाजिक क्रान्ति दयानन्द व आर्य समाज ने की है, वह सरकार के कानूनों से नहीं हो सकती है। दयानन्द के व्यापक दृष्टिकोण ने देश को सामाजिक दासता से मुक्त कराया।

श्री आडवाणी ने दृढ़ता पूर्वक कहा १९४७ से १९५० के काल में हमारे संविधान निर्माताओं ने जिस संविधान की संरचना की है, उससे अच्छा संविधान और नहीं बन सकता है। क्योंकि उस समय के संविधान निर्माताओं पर स्वामी दयानन्द और अन्य समाज सुधारकों की विचारधारा का व्यापक प्रभाव था। गोरक्षा, राष्ट्रभाषा और स्त्री शिक्षा के विषय में उनकी विचारधाराओं का पूरा आदर हुआ है और यह भी सत्य है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाने के लिए अहिन्दी भाषी नेताओं ने ही जोरदार आवाज लगाई थी, जिनमें महर्षि दयानन्द मुख्य थे।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्य जनता का आह्वान किया कि महर्षि दयानन्द ने जिन सिद्धांतो की परिकल्पना में अपना जीवन लगाया था, हम उसके लिए प्रयत्नशील रहें। १८७५ मे स्वामी दयानन्द ने सामाजिक जागरण का सूत्रपात किया था, आज आवश्यकता है कि सब मिलकर हिन्दू समाज की बुराईया, रूढ़िवाद तथा दहेज प्रथा के खिलाफ क्रान्ति करें।

स्वामी जी ने वर्तमान जनगणना में समस्त आर्यजनो से अपील की कि सब लोग जाति के आगे आर्य (हिन्दू), धर्म के आगे वैदिक धर्म और भाषा के खाने मे हिन्दी (संस्कृत) लिखवावे।

समारोह की अध्यक्षता श्री बालदिवाकर हंस ने की। उन्होंने स्वाध्याय गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली और संस्कृत के पठन-पाठन के लिए युवा शक्ति का आह्वान किया।

आर्य समाज के विद्वान पं० जयदेव, डा० वशि जी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री डा० सच्चिदानन्द शास्त्री ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रसिद्ध युवाविद्वान आचार्य यशपाल सुधांशु का सम्मान और श्री रूपचन्द जी की पुस्तक का विमोचन श्री आडवाणी जी द्वारा किया गया।

समारोह का आयोजन आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली द्वारा किया गया। केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल, महामन्त्री श्री सूर्यदेव, प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती प्रकाशआर्या, श्रीमती कृष्णा चड्ढा और अन्य अनेक विद्वान इस अवसर पर उपस्थित थे। समारोह का संयोजन आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने किया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन का आयोजन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे आयोजित अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन का उद्घाटन १६ नवम्बर, १९९० को देश के प्रसिद्ध परमाणु वैज्ञानिक और भूतपूर्व केन्द्रीय रक्षा उत्पादन मंत्री डा० राजा रमन्ना ने किया। यह सम्मेलन हर दो वर्ष बाद आयोजित किया जाता है और इसमें भारत के सभी विश्वविद्यालयों, संस्कृत महाविद्यालयों तथा प्राच्य विद्याओं से सम्बद्ध अनुसंधान करने वाली और शिक्षा देने वाली संस्थाओ के प्रतिनिधि भाग लेते हैं। १६-१७-१८ नवम्बर १९९० को गुरुकुल में आयोजित इस सम्मेलन में लगभग १००० से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इनमें से अनेक प्रतिनिधि सपरिवार सम्मिलित हुए। इनके अतिरिक्त लगभग १०० स्थानीय प्रतिनिधियो ने भी इसमें भाग लिया। इस अवसर पर अनेक विद्वानो से लगभग १५०० शोध पत्र प्राप्त हुए। ये शोध पत्र हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी मे हैं। इन शोध पत्रों का सारांश गुरुकुल पत्रिका ने अपने विशेषांक के रूप मे प्रकाशित किया है। इस उपयोगी सन्दर्भग्रन्थ की सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी प्रतिनिधियो ने मुक्तकंठ से सराहना की।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

प्राचीन शिवरात्रि : आज का बोधोत्सव

श्रीमती प्रभात शोभा पण्डित

आर्य समाज प्रतिवर्ष 'महाशिवरात्रि व्रत' के पर्व को' ऋषि बोधोत्सव' के रूप मे मनाता है। मूलशंकर से शुद्ध चैतन्य व अन्ततः शुद्ध चैतन्य से ऋषि दयानन्द सरस्वती बनने वाले युगान्तरकारी महामानव के निर्माण की कहानी 'महाशिवरात्रि' के प्रसग से घटी एक साधारण सी घटना के साथ इस तरह जुड़ गई कि यह पर्व आर्यजनों के लिये एक ऐतिहासिक प्रेरणा का विषय बन गया। घटना क्या थी ! मूर्ति पूजक परिवारो मे प्रचलित पौराणिक प्रथा अनुसार 'महाशिवरात्रि व्रत' के अनुष्ठान मे उपवास रख कर बालक मूलशंकर 'जागरण' कर रहा था। घर के छोटे बडे अन्य सभी सदस्य अवश होकर नीद की गोद में समा चुके थे; लेकिन गहरी निष्ठा का धनी मूलशंकर अकेला बडे यत्न से नीद पर काबू पाकर सजग बैठा था। तभी अचानक जो कुछ घटित हुआ उससे मूल शंकर ऐसा चौंका कि उसकी नीद न केवल उस रात के लिये बल्कि सदा के लिए उड़ गई वह आदित्य ब्रह्मचारी महायोगी ऋषि दयानन्द उस रात के बाद ऐसा जागा कि सदियो से सोए अपने पूरे देश व समाज को जगा कर रख दिया। सच तो यह है कि उसने समूची मानव जाति और मानवता को जगा दिया। न स्वयं सोया न जग को सोने दिया। मूलशकर ने देखा कि शिवलिंग पर चढ़ाये गये भोग को— अर्थात् फल व मिष्ठान को एक चूहे ने खाकर जूठा कर दिया और विष्ठा से अपवित्र भी। लेकिन महाशक्ति के रूप में पूजित वह 'शिव' मौन रहे, पत्थर के जो थे। 'शिव' की मौन जड़ता भरी वह रात भारत के भाग्याकाश मे एक अत्यन्त मुखर प्रभात की जननी सिद्ध हुई। एक अभूतपूर्व संयोग है कि इस वर्ष 'मूलशंकर' और 'दयानन्द' दोनो का जन्म पर्व साथ-साथ पड़ रहा है।

इस निमित्त से 'महाशिव-रात्रि' के अनुष्ठान का वास्तविक स्वरूप बता देना बहुत उपयुक्त होगा। पौराणिक आख्यानों में गगावतरण की कथा से पहले 'महाशिव रात्रि' व्रत का कहीं उल्लेख नहीं। वैदिक ऋचाओ में 'शिव' का उल्लेख आया है और वह प्रायः 'शम्' के साथ आया है। प्रतिदिन सन्ध्या मे मन्त्र-पाठ किया जाता है।

'ओम् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शकराय च मयस्कराय च।
नम शिवाय च शिवतराय च।

इस मन्त्र के साथ शान्ति प्रकरण के छः 'शिव सकल्प' मन्त्रो को (तन्मे मनः शिवसकल्पमस्तु') मिलाकर यदि पढे तो 'महाशिव रात्रि' का स्वरूप समझना कुछ भी कठिन नही। पहले उद्धृत मन्त्र मे 'कल्याण को सम्भाव्य (Possible) बनाने वाली 'ज्ञान शक्ति' के स्वरूप मे प्रभु को याद किया गया है और किसी भी कल्याणकारी कार्य को सिद्ध करने के लिए सुविधाकारक उपकरणो की सम्भावना को प्रणाम किया गया है। महाभारत-कथा का प्रसिद्ध इन्जिनियर शिल्पी 'मय था' किसी भी कार्य सिद्धि के लिये जो शिल्प और यन्त्र-निर्माण कला है वही 'मयस्कर' है। कल्याणकारी कार्यों के सम्पूर्ण होने का जो परिणाम है वही 'शिव' है देश का सर्वतोप्रसिद्ध शिव तीर्थ 'केदारनाथ' है पहले सूर्यवशी राजा सगर और बाद मे महाराजा भगीरथ ने देश की खेती-बाड़ी की व्यस्था को पुष्ट करने के लिए हिमालय की अनेक छोटी बड़ी की धाराओं को दिशा देकर गगा का निर्माण किया। गंगा का नाम 'भागीरथी' इसी लिए पड़ा। 'केदार' सस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कृषि क्षेत्र। 'केदारनाथ' के अन्दर में जो 'शिवलिंग' है वास्तव मे उसकी रचना दीपक मे जलती हुई एक लौ के जैसी है। गीता मे योगियो के हृदय में जलने वाली भक्ति व सकल्प की 'दीपशिखा' का वर्णन करते हुए योगीराज श्रीकृष्ण लिखते हैं—

'यथा दीपो निवातस्थो नेगते सोपमा स्मृता'

'हवा के झोको से कम्पित न होने वाली लौ के समान व संकल्प ज्योति होती है। शिवलिंग वास्तव में उसी पत्थर जैसी कठोर सकल्प शक्ति का प्रतीक है। भगीरथ के हृदय मे यह वज्र-सकल्प यदि न होता तो कठोर तप करके वो गगावतरण का अपना स्वप्न कभी पूरा न कर पाते। समाज के कल्याण के लि हर छोटा सकल्प एक 'शिवरात्रि' के समान है, और प्रत्येक महा विराट संक जैसा कि भगीरथ ने लिया था' महाशिवरात्रि पर्व' है। अब जो चमत्कारिक स 'रात्रि' शब्द का प्रयोग करने के पीछे है उसे समझ लें तो और भी आनन्द होगा। कोई भी सकल्प पूर्ण होने से पहले मनुष्य को घोर कष्टों और नाना प्रकार की कठिन समस्याओ को झेलने के दौर से गुजरना पड़ता है। और साधक द्वारा इन समस्याओ को धैर्य पूर्वक झेलने की शक्ति पर ही निर्भर करता है कि कोई व्रत सफल होगा या नही। यह कष्ट का सारा काल साधक इसी आशा मे बिताता है कि एक दिन आएगा जब साधना सफल होगी और सुफलदायिनी सुबह के दर्शन होगे। साधना का यह सारा काल एक लम्बी रात है लेकिन क्योकि यह कष्ट किसी भावी लोक-कल्याण की भावना से स्वेच्छा से उठाया जाता है अतः हम इसे 'महाशिवरात्रि' नाम से याद करते हैं। वास्तव मे सूर्यवशी राजाओ ने 'गगा' को लोकोपयोगी बनाने के लिए जो तप किया उनकी ही याद मे यह पर्व मनाया जाने लगा। इस पर्व की प्राचीन लोक जीवन में वही प्रतिष्ठा हैं जो भारतीयों के जीवन में आज १५ अगस्त तथा २६ जनवरी की है।

होलिकोत्सव हम मनाते ही रहे

यह परस्पर की विषमता बढ़ रही,
होलिकोत्सव हम मनाते ही रहे।

यज्ञमय वह भावना मिलती नहीं,
ज्योति भी संकल्प की जलती नहीं।
व्यस्त हैं उपलब्धियों के ही लिये,
किन्तु आकृति जो करद, हंसती नही।

भ्रान्ति का है जाल अब उलझा रहा,
बन अलक्षित पग बढ़ाते ही रहे।

कुप्रथायें कर रही जर्जर सतत,
पशु-मनुज में अब नही अन्तर रहा।
है मनन के नाम पर क्या शेष अब,
बुझ गये विश्वास दीपक ने दहा।

हारते आये सभी संग्राम जब,
किस विजय के गीत को गाते रहे ?

पंगु और अन्धे सभी हैं दीखते,
आज बेघर से बने सब भींगते।
अब सरे बाजार प्रहरी लूटते,
मौन होकर हम सभी हैं खीझते।

स्नेहमय वे रंग सब विस्मृत हुए,
द्वेषमय पिचकारियाँ भरते रहे।

छल रही आतकवादी होलिका,
जल रहा प्रहलाद सब के सामने।
रक्त देकर के खिलाया जो चमन,
चल रहे बन अन्ध उसको बांटने।

घोर उत्पीड़न निजी घर में पला,
आग बाहर की बुझाते ही रहे।

साध पाये हित नहीं निज का कभी,
देश हित का ध्यान कैसे हो कभी।
ऊर्जा का विश्व सकट छा गया,
किन्तु ईंधन दाह करते हम सभी।

प्रेरणा शिव की अपरिचित ही रही,
पाठ शुक के बस यहां चलते रहे।

—डा० श्रीमती महाश्वेता चतुर्वेदी,
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज बरेली–२४३००५

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

सम्पादकीय

पंथिक आदेश

आज पंजाब प्रान्त में प्रशासन का कोई अस्तित्व ही नही है। वहाँ पर लाहौर से जारी पंथिक आदेशो के सहारे सरकार चल रही है। किसी भी सरकारी अधिकारी की सामर्थ्य नहीं है कि वह इन आदेशो का पालन न करे। पिछले दिनों चण्डीगढ़ और जालधर के सरकारी प्रेस माध्यमों से हिन्दी मे समाचारों तथा अन्य कार्यक्रमों का प्रसारण बन्द हो गया और सरकार को उग्रवादियो की मांग के सामने झुकना पड़ा। वहां पर एक आदेश जारी कर दिया गया कि स्कूलों और कालेजों की लड़कियों को सलवार कमीज और केशरिया दुपट्टा पहनना होगा तथा लड़कों को पगड़ी बांधनी पडेगी। यह सब हो रहा है। अच्छे काम हों तो कोई बुराई नही है। परन्तु यदि धौंस दिखा कर किए जाये तो यह विघटन की प्रवृत्ति का द्योतक है। सोमवार १८ फरवरी को दूरदर्शन पर एक कार्यक्रम दिखाया गया कि पजाब के सीमावर्ती इलाको के किसान कितने भयभीत है उनकी बहू बेटियो के साथ बदसलूकी की जाती है। अपने ही गाव में रहने की इजाजत के लिए फिरोती मांगी जाती है। सरकारी दूरदर्शन यह सब दिखा रहा है। इसका इलाज सरकार के पास क्या है? कुछ दिन पहले पजाब केसरी के सम्पादक श्री विजय कुमार जी ने ये सब बाते बताई थी। रविवार की सार्वदेशिक सभा की बैठक में श्री वीरेन्द्र जी ने इन आदेशो को पढ़ कर सुनाया। क्या इस तरह देश चल पायेगा। काश्मीर में भी इतनी ही बुरी हालत है। वहां से हिन्दू दूसरे प्रांतो मे सुरक्षित स्थानों पर जा रहे हैं। उनकी सारी सम्पत्ति और इज्जत दिन दहाड़े लुट रही है। सारा प्रशासन ठप्प है। अलगाववाद के नारे लगाये जाते है अथवा पाकिस्तान में विलय के नारे लगाए जाते हैं। दिल्ली के ऊपर इस सब का सीधा असर पड़ता है। दिल्लीवासी आर्थिक सहायता दे सकते हैं आंसू पोछ सकते है पर जो लुट गया उसे तो लौटा नही सकते। यह सब काम सरकार का है। पर सरकार मे हमारे नेताओ को सरकार बनाने और तोडने से ही फुरसत नही है। आसाम और तमिलनाडू मे भी ऐसे ही हालात बन गए हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने सरकार से मांग की है कि पाकिस्तान की सीमा के साथ-साथ एक सुरक्षा पट्टी बनाई जाए, जम्मू और कश्मीर को सेना के हवाले कर दिया जाए तथा सरकार ऐसे सख्त कदम उठाए, जिनसे अलगाववादियों की आंखें खुल जाए। सरकार कब करेगी, जब उसके ऊपर भी दबाव पड़ेगा। दबाव के लिये आवश्यक है कि हम आर्य समाज के सगठन को दृढ़तर बनाए। सभी आर्य भाई बहनो का कर्तव्य है कि वे आर्य सिद्धान्तो का पालन करे तथा संगठन को शक्तिशाली बनाये।

—डा० धर्मपाल

जनगणना के सम्बन्ध में आवश्यक निर्देश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने देश मे हो रही जनगणना के सम्बन्ध में समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओ आर्य समाजो, शिक्षण सस्थाओं तथा आर्य समाज से सम्बद्ध सभी सस्थाओ से अपील की है कि जनगणना के समय सभी आर्य जनों को विशेष रूप से सक्रिय होकर काम करना चाहिए और जाति के खाने में आर्य (हिन्दू), धर्म के खाने मे वैदिक धर्म और भाषा के खाने में हिन्दी (संस्कृत) लिखाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा देश की वर्तमान परिस्थितियों मे आर्यजनों का यह परम कर्तव्य है इसलिए उन्हें इस दिशा में विशेष रूप से प्रयत्नशील रहना चाहिये।

डा० सच्चिदानन्द शास्त्री

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(१७ फरवरी, ९१ के अंक से आगे)

मेरे मन्त्रित्व काल में क्रमश: समाज के प्रधान श्री ठाकुरदत्त बाली, श्री चमन जी आर्य तथा श्री कन्हैयालाल गुप्त रहे। बाली जी और गुप्त जी स्थानीय सुमेर तथा उम्मेद हाई स्कूल के मुख्याध्यापक थे। दोनो सौम्य प्रकृति के तथा साधु स्वभाव पुरुष थे। श्री च्यवन आर्य मारवाड के पुराने आर्य समाजियो की पीढ़ी मे अन्यतम थे। हमारी युवा मण्डली की हमारे अग्रजो से खूब पटती थी और उन्होने हमें कार्य करने के पूरे अधिकार दे रखे थे। नगर आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष दीपावली पर होता था। हमने वर्षों तक अपने घरो में दिवाली का त्योहर नहीं मनाया। कारण कि ठीक दिवाली के दिन से ही उत्सव आरम्भ होता था और हम लोग जलसे को सफल बनाने के लिये दिवाली के कई दिन पहले ही लग जाते थे। त्योहार के दिन भी सवेरे के निकले देर रात तक उत्सव की कार्यवाही समाप्त कर घर लौटते। पहले तो कई वर्षों तक हमारी समाज का वार्षिकोत्सव सोजती गेट के बाहर वैदिक कन्या पाठशाला मे होता था। वहा पन्डाल खडा करने, उपदेशको के भोजन निवास की व्यवस्था, यज्ञ की व्यवस्था और कीर्तन की व्यवस्था नित्य के कार्यक्रम का सचालन उपदेशको की दक्षिणा आदि के सभी कार्य हमारे ही जिम्मे थे। उत्सव के लिये धन सग्रह करना सब से दुरूह कार्य था। हमारे नगर मे अनेक सम्पन्न ठेकेदार और व्यवसायी लोग थे। सरकारी अधिकारी भी आर्यसमाज से सहानुभूति रखते थे। ठेकेदारो से चन्दा एकत्र करने का कार्य माली वर्ग के सदस्यो के जिम्मे रहता था। क्योकि इस नगर मे इस जाति के लोगो की आर्यसमाज मे अधिक आस्था थी। सरकारी वर्ग से अन्य प्रतिष्ठित लोगो से चदा लाने का काम श्री च्यवन जी आर्य के जिम्मे था। किन्तु नगर के मुख्य बाजार मे विभिन्न दूकानो पर जाकर एक-एक रुपया चन्दा एकत्र करने का कार्य हमें मिल कर करना होता था। हम मेडती गेट से चल कर जालोरी गेट तक के मुख्य बाजार में प्राय: सभी प्रमुख दूकानदारों से उत्सव के लिए चंदा लेते। जब तक मन्त्री के पद पर रहा तब तक तो उत्सव को सफल बनाने की प्राय समस्त जिम्मेदारी ही हम पर रहती थी किन्तु उसके पूर्व भी आर्यकुमार सभा में सक्रिय रहते समय हम स्वय सेवक के रूप मे अपना फर्ज अन्जाम देते। उत्सव की रात्रीकालीन सभा को सुरक्षा देने की दृष्टि से मैं और मेरे साथी लाठी हाथ मे लेकर इधर उधर घूमते तो उस समय मन मे एक विचित्र प्रकार का उत्साह और दायित्व बोध हो उभरता था। नगर कीर्तन का अपना महत्व और आकर्षण था व्यामशाला के युवकों का शारीरिक कौशल प्रदर्शन भजनोपदेशकों का तागो मे बैठ कर नगर के मुख्य बाजार मे यत्र-तत्र रुक कर प्रभावशाली प्रचार सभी कुछ शानदार होता था। ओम् की ध्वजा हाथ मे लेकर जुलूस के सारे रास्ते चलने मे थकान होना तो दूर हम मे एक विचित्र स्फूर्ति, गौरव तथा आत्म विश्वास का भाव रहता था।

नगर आर्यसमाज मन्दिर मे वैदिक कन्या पाठशाला थी। अत: बाद मे हमारा उत्सव निकटवर्ती उम्मेद हाई स्कूल के मुख्याध्यापक श्री नेकीराम जो गुप्त तथा उनके दिल्ली चले जाने पर इस पद को पद ग्रहण करने वाले श्री कन्हैया लाल गुप्त का हमारी समाज से प्रगाढ सम्बन्ध था। ये दोनो महानुभाव इस समाज के प्रधान भी रहे थे अत इस विद्यालय मे उत्सव आयोजित करने मे हमे कोई कठिनाई नहीं आती थी।

आर्य समाज का मन्त्री पद संभालने के पश्चात् हमे अनेक सस्कार भी कराने पड़ते थे। कारण कि हमारे समाज मे कोई वैतनिक पुरोहित नही था। एक बार श्री भैरवसिह जी के मन्त्रित्व काल मे १०० रुपये मासिक पर पडित धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति की सस्तुति पर पडित शान्तिस्वरूप वेदालकार को पुरोहित नियुक्त किया था। किन्तु वे महाशय भी लगभग १ वर्ष तक इस कार्य को कर चले गये थे। नामकरण मुण्डन आदि संस्कार कराने मे अधिक कठिनाई नहीं होती थी।

(क्रमशः)

प्राच्य विद्या सम्मेलन...

(पृष्ठ १ का शेष)

इस सम्मेलन मे कई विश्वविद्यालयो के भूतपूर्व एव् वर्तमान कुलपतियो ने भी भाग लिया इनमें सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो० वेंकटाचलम्, डा० रामदेव मिश्र, कामेश्वरसिंह दरभगा विश्वविद्यालय के डा० रामकरण शर्मा, डा० जयमन्त मिश्र, डा० विधाता मिश्र, डा० सतीश झा, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के डा० पी० एन० कोठेकर, लाल बहादुरशास्त्री संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली के डा० मण्डन मिश्र, रविन्द्रभारती विश्वविद्यालय, कलकत्ता के डा० रमा-रजन मुखर्जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

डा० राजारमन्ना ने अपने उद्घाटन भाषण में वैदिक गणित के सम्बन्ध मे प्रसिद्ध दार्शनिक शकराचार्य के विचारों की विशद् व्याख्या की, डा. रमारजन मुखर्जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे आधुनिक सन्दर्भ मे सस्कृत के महत्त्व की चर्चा की। सम्मेलन मे निश्चय किया गया कि अखिल भारतीय प्राच्य विद्या का अगला सम्मेलन भण्डारकर रिसर्च इन्सटिच्यूट पूना में सन् १९९२ में किया जाएगा। तब भण्डारकर इन्स्टिच्यूट के जयन्ती समारोह भी आयोजित किए जाए गे।

सम्मेलन के ३ दिनो मे १५ सत्र आयोजित किए गए जिनमें ४०० से भी अधिक विद्वानों ने वैदिक साहित्य, सस्कृत साहित्य, बौद्ध एव जैन धर्म से सम्बद्ध साहित्य, प्राचीन भारतीय इतिहास एव सस्कृति, भारतीय दर्शन, विज्ञान एवं ललित कलाओ, दक्षिण भारतीय भाषाओं, भाषा विज्ञान, ज्योतिष, व्याकरण, नाट्य शास्त्र, अष्टाग योग, उपनिषद्, धर्म, अध्यात्म आदि अनेक विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। समयाभाव के कारण अनेक विद्वान अपने शोध पत्र प्रस्तुत नहीं कर पाए। इन सभी प्रबन्धो को प्रकाशित किए जाने की योजना है। आशा है स्वामी श्रद्धानन्द शोध ग्रन्थावली के अधीन उक्त शोध पत्र इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित कर दिए जायेंगे।

इस सम्मेलन के अवसर पर प्रतिनिधियों के मनोरजन के लिए सस्कृत कवि सम्मेलन और कालीदास के विश्वप्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् का प्रस्तुतिकरण विद्यालय निर्धन निकेतन, भीमगोडा, हरिद्वार के छात्र छात्राओं द्वारा किया गया जिसे अतिथियो ने और गणमान्य नागरिको ने बहुत पसन्द किया।

सम्मेलन के अवसर पर विश्वविद्यालय मे पुस्तक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी मे गुरुकुल के स्नातकों के ग्रन्थो, हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथो, गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा हस्तलिखित पत्रिकाएं आदि प्रदर्शित की गयीं। भारत के हिन्दी साहित्य तथा प्राच्य विद्याओ के सात प्रकाशक भी अपने नवीनतम प्रकाशनो के साथ इस प्रदर्शनी मे उपस्थित हुए। इस अवसर पर इस विश्वविद्यालय के परिद्रष्टा विद्यामार्तण्ड आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति की पुस्तक "वेदो की वैज्ञानिकता (भारतीय मनीषा के परिप्रेक्ष्य मे) तथा डा० जयदेव वेदालकार, अध्यक्ष, दर्शन विभाग की पुस्तक "वैदिक दर्शन" का विमोचन डा० राजा रमन्ना द्वारा किया गया।

१७ नवम्बर, १९९० को भारतीय विश्वविद्यालय संघ का निरीक्षक दल भी विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियो को देखने के लिए पधारा। इस दल में सम्पूर्णानन्द सस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डा० विद्या निवास मिश्र, तथा दयालबाग एजूकेशनल इन्सटिट्यूट के निदेशक डा० एस० पी० वर्मा थे। उन्होने विज्ञान महाविद्यालय और इसके विभिन्न विभागो की प्रयोगशालाएं, वेद महाविद्यालय, मानविकी महाविद्यालय, पुस्तकालय, पुरातत्व सग्रहालय आदि का निरीक्षण कर प्रसन्नता प्रकट की और विश्वास दिलाया कि वे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को भारतीय विश्वविद्यालय सघ का स्थायी सदस्य बनाने की संस्तुति करेंगे। डा० विद्या निवास मिश्र, तथा डा० एस० पी० वर्मा ने विश्वविद्यालय के अधिकारियो को यह भी आश्वासन दिया कि वे इस विश्वविद्यालय की चहुंमुखी प्रगति के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अतिरिक्त अनुदान देने का अनुरोध करेंगे।

भारतीय दर्शन, कला, सस्कृति और आध्यात्म के प्रमुख चिन्तक डा० आनन्द कुमार स्वामी के सुपुत्र डा० रामकुमार स्वामी अपनी धर्मपत्नी के साथ २७ नवम्बर को गुरुकुल पधारे। डा० रामकुमार स्वामी अमेरिका में प्रमुख हृदय शल्य चिकित्सक हैं और उनकी धर्मपत्नी न्यायाधीश के पद पर कार्यरत है। डा० कुमार स्वामी अपने बचपन से ही गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से घनिष्ट रूप से सम्बद्धित रहे हैं। ५ वर्ष की आयु मे सन् १९३५-३६ में अपनी माताजी के साथ वे गुरुकुल आए थे। तब उनकी माताजी गुरुकुल के प्रसिद्ध विद्वान प्रो० वागीश्वर विद्यालकार से सस्कृत अध्ययन के लिए २ वर्ष गुरुकुल मे रहीं थी। डा० रामकुमार स्वामी ११ वर्ष बाद सन् १९४७ में प्रो० वागीश्वर जी से सस्कृत अध्ययन के लिए फिर गुरुकुल आए थे। १९४७ मे गुरुकुल प्रवास के दौरान उन्होंने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ हिमालय की लम्बी पैदल यात्रा भी की थी। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य अपने पूज्य पिताजी के सन्यास आश्रम में प्रवेश के बाद हिमालय मे उनके लिये उपयुक्त स्थान की तलाश थी किन्तु विधि को यह स्वीकार नहीं था। डा० स्वामी के हिमालय से लौटने पर उन्हें अपने पिताजी की असामयिक मृत्यु का समाचार मिला।

४३ वर्ष बाद अब वे पुन: गुरुकुल पधारे। उन्हें यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि उनकी हिमालय यात्रा के साथी श्री सुभाष विद्यालकार इस समय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। प्रातःकाल दैनिक यज्ञ के बाद डा० राम कुमार स्वामी की गुरुकुलवासियो से परिचय कराया गया। इस अवसर पर डा० कुमार स्वामी ने वैदिक साहित्य और शास्त्रों के महत्व की चर्चा करते हुए कहा कि आधुनिक युग मे भी भारत की वैदिक विचारधारा और शास्त्रीय ज्ञान का अत्यधिक महत्व है। उन्होने कहा कि यह बात मैं भावनाओं के वशीभूत होकर नहीं कह रहा हू बल्कि अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर कह रहा हू। आज के युग में डाक्टरो, वैज्ञानिकों तथा अन्य क्षेत्रों में कार्य करने वाले सभी व्यक्तियो को परिवार के पालन पोषण के लिए वैदिक विचारधारा ही उपादेय है।

पिछले कुछ वर्षो से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विश्वविद्यालय में शिक्षकों के स्वीकृत पदों और रिक्त पदो की नियुक्तियो पर रोक लगा दी गई थी। यह प्रतिबन्ध पिछले दिनों हटा लिया गया था। इसके परिणामस्वरूप विज्ञान, कम्प्यूटर वेद, सस्कृत, हिन्दी, मनोविज्ञान आदि विषयो के रिक्त पदो पर नियुक्तियां चयनसमितियो द्वारा की गई है और अधिकांश नव-नियुक्त प्राध्यापकों ने विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया है।

उल्लेखनीय है कि भारत सरकार द्वारा मंडल आयोग की सिफारिशो के अधीन २७ प्रतिशत स्थान सुरक्षित कर दिए जाने के परिणामस्वरूप देश के अधिकांश विश्वविद्यालय और शिक्षण सस्थाएं दो मास से भी अधिक समय तक के लिए बन्द रही। लेकिन इस विश्वविद्यालय के शिक्षको ने अपने उत्तरदायित्वो का परिचय देते हुए सूझबूझ से काम लिया और एक दिन के लिए भी अध्ययन अध्यापन में विघ्न नहीं पड़ने दिया।

मार्च १९९१ के प्रथम सप्ताह में संस्कृत एव भारतीय विद्याओं में कम्प्यूटर का उपयोग विषय पर अखिल भारतीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में इस प्रकार की गोष्ठी का आयोजन पहली बार किया गया है। इस गोष्ठी में रुड़की विश्वविद्यालय तथा भारत सरकार के कम्प्यूटर एवं इलैक्ट्रानिक विभाग से पूरी सहायता प्राप्त की जा रही है। ●

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

वेद प्रचार मण्डल उत्तरी पश्चिमी दिल्ली की ओर से रविवार १० फरवरी १९९१ को प्रात: १० बजे से आर्य समाज रोहणी सैक्टर ७ (मानव स्थली पब्लिक स्कूल के पास) बड़े समारोह के साथ मनाया गया। बृहद यज्ञ के उपरान्त विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जो सैक्टर ८ से होती हुई समारोह स्थल पर पहुंची। वहा आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल जी की अध्यक्षता मे सार्वजनिक सभा हुई, अपने अध्यक्षीय भाषण मे डा० धर्मपाल जी ने विघ्न बाधाओं की परवाह न करते हुये ऋषि के कार्य को पूरा करने की आर्यों से जोरदार अपील की। डा० महेश जी विद्यालकार ने अपने ओजस्वी भाषण में वेद प्रचार के कार्य मे पूर्ण सहायता एव सहयोग देने का आश्वासन दिया। श्री भगवान दास जी आर्य ने ऋषि के प्रति श्रद्धा प्रकट करते सच्चे शिव के सम्बन्ध में की उनकी खोज से अवगत कराया। श्री विद्यारत्न जी सागर ने अपनी कविताओं द्वारा श्रोताओं को मुग्ध कर दिया। वेद प्रचार मंडल के मन्त्री श्री हरिदत्त ने वक्ताओ एव श्रोताओ का धन्यवाद करते हुए वेद प्रचार के लिये भरपूर सहयोग देने की अपील की। समारोह के प्रारम्भ मे श्रीमती स्वर्णा जी तथा श्रीमती संतोष जी गुप्ता ने मनोहर व मधुर भजन प्रस्तुत किये। मंडल के प्रधान श्री विद्याप्रकाश जी वर्मा के आभार प्रकट करने के उपरान्त सभा विसर्जित हुई।

महर्षि दयानन्द के बोध पर्व पर विचारणीय

— प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

ऋषि दयानन्द जी महाराज ने वेद वेत्ता विद्वान को अनगिनत अज्ञ जनों पर भारी माना है। अविद्वान गिनती मे प्रबल बहुसख्या मे हो और एक परोपकारी वैदिक विद्वान अकेला भी हो तो अकेले विद्वान का मत माननीय है। बोध पर्व आत्म निरीक्षण का पर्व है। आर्य समाजी कहलाने वाले भाई बहन भी इस पर्व पर कुछ आत्म निरीक्षण करें। पदलोलुप, धनलोलुप व राजनैतिक खिलाडियो के कारण आज आर्य समाज व आर्य समाज की संस्थाओ मे कई प्रकार के झगडे व विवाद हैं। क्या आज के दिन सब आर्य समासद, नेता व अन्य कार्यकर्त्ता यह निर्णय लेंगे कि एक परोपकारी विद्वान संयामी जब सकेत करेगा तो उसके एक ही वाक्य पर सब प्रकार के मतभेद व विवाद समाप्त होंगे। क्या सत्यार्थ प्रकाश से इतनी अध्यात्मिक ज्योति आपके मनो को जगमगा देगी ? क्या आपको आर्यसमाज में कोई परोपकारी विद्वान महात्मा दिखाई भी देता है या नहीं ?

आज तो यह स्थिति हो गई है कि कई आर्यसमाजो के निर्वाचन ही नहीं करवाए जाते हैं। जिनका अधिकार है, वे कहते हैं करलो जो करना है।

ऋषि दयानन्द ने कुरान का एक हिन्दी अनुवाद तैयार करवाया। इससे पूर्व भी भारत में कई मुस्लिम विद्वानो ने कुरान के कई अनुवाद किए जो बड़े लोकप्रिय हुए परन्तु ये सब अनुवाद ऐसे थे कि अरबी के शब्दो के नीचे उनका अर्थ दिया जाता था। इससे भाव अस्पष्ट से रहते थे। ऋषि ने नये ढग से अनुवाद करवाया। इसी शैली में बाद मे उर्दू के जाने माने साहित्यकार मौलाना नजीर अहमद (डिप्टी साहेब) ने एक अनुवाद किया जो बड़ा लोकप्रिय हुआ। इसके बाद जालधर के मौलाना फतह मुहम्मद का अनुवाद छपा जो डिप्टी साहेब से श्रेष्ठ माना गया। फिर तो यह शैली चल पड़ी।

ऋषि के सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन के पश्चात् ही सर सय्यद अहमद खां, मौलाना सनाउल्ला, डा० बशारत अहमद मौलाना मुहम्मद अली आदि के कुरान के अनुवाद छपे। इन सब पर ऋषि की समीक्षाओ की स्पष्ट छाप है। आज के दिन क्या कोई आर्य युवक विद्वान् यह सकल्प करेगा कि ऋषि के आगमन के समय कुरान के प्रचलित पाच दस लोकप्रिय भाष्यो का वह सग्रह करेगा और सत्यार्थ प्रकाश की छाओ में रचे गये बीस तीस भाष्यो को भी सग्रहीत किया जायेगा। इससे वैदिक धर्म के प्रचार मे लाभ होगा। ऋषि की महत्ता का पता चलेगा और राष्ट्रीय एकता को भी इससे बल मिलेगा।

आज कई सज्जन यह कहते सुने जाते हैं कि मैं पहले इमाम रहा। मैं यह था, मैं वह था। मुझे यह आता है, वह आता है परन्तु क्या कोई ऐसा व्यक्ति भी है जिसने पुराने आर्य विद्वानों की भांति तुलनात्मक दृष्टि से ऐसा अध्ययन किया हो। श्री स्वामी वेदानन्द जी वेद आदि शास्त्रो के मर्मज्ञ थे परन्तु आश्चर्य होता है कि आपने कुरान के दो चार नहीं दर्जनों भाष्यों को पढ़ कर स्थूल अक्षरी सत्यार्थ प्रकाश मे चौदहवे समुल्लास की टिप्पणियां लिखीं। स्वामी जी के अथाह ज्ञान, परिश्रम व चिन्तन को देख कर पाठक चकित हो जाता है।

आज हम में बी० ए०, एम० ए०, शास्त्री आचार्य व पीएच० डी० तो बहुत हो गये परन्तु, स्वामी दर्शनानन्द सरीखे विद्वान कहां हैं ? वक्ता तो बहुत बढ़िया मिल जावेंगे परन्तु विद्वान पण्डित कहां खो गये ? आज के दिन तनिक विचारिये कि वेद के आविर्भाव, ईश्वरीय ज्ञान, त्रैतवाद, पुनर्जन्म, कर्मफल, आर्यों का आदि देश, भाषा की उत्पत्ति, संस्कृत भाषाओं की जननी आदि विषयों पर पाण्डित्यपूर्ण व मौलिक चिन्तन वाले कितने वक्ता व लेखक हम तैयार कर पाये हैं ?

प्रदर्शनी के लिये तो बहुत प्रोफैसर वक्ता, प्रवक्ता इकट्ठे किये जा सकते हैं परन्तु क्या इनमें दो चार भी धार्मिक प्रवृत्ति के हैं ? नित्य सन्ध्या वन्दन करते हैं – वैदिक धर्म परिवार हों तो क्या ये लोग कुछ लिखते व बोलते हैं ?

ऋषि बोध पर्व पर आज यह लिखते हुए तो हमें गर्व होता है कि कुरान के अब जिन्न व भूत नहीं रहे। जिन भूतो को सर सय्यद अहमद भी नहीं मानते थे। डा० अब्दुल रहमान बिजनौरी जैसे विद्वान् वेद को ईश्वरीय ज्ञान भी घोषित करते हैं। विकासवाद और साम्यवाद की मान्यतायें विश्व से विदा कर दी गई हैं। यह सब ऋषि दयानन्द के विचारो की विजय है।

राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के भाई स्वामी विवेकानन्द जी को बहुत मानते है। स्वामी विवेकानन्द मायावादी थे परन्तु राष्ट्रीय सघ के संस्थापक मायावाद को झुठलाते हैं। वह इसे हिन्दू समाज की अवनति का एक कारण मानते हैं।

राम जन्म भूमि आन्दोलन में सब प्रमुख हिन्दू नेताओ ने रामचन्द्र जी को भारत में जन्मी एक विभूति, एक आदर्श पुरुष ही कहा। एक ने भी यह नहीं कहा कि राम अजन्मा अमर अविनाश सृष्टि कर्त्ता परमेश्वर थे या अवतार थे। यह ऋषि के विचारो की विजय है।

आवश्यकता है कि मांसाहार आदि विषयों पर बहुत खोजपूर्ण व प्रभावशाली ढंग से बोलने वाले विद्वान आगे आयें। गऊ की महिमा व उपयोगिता पर पाण्डित्यपूर्ण बोलने वाले व्यक्ति चाहिए। ऐसे व्यक्ति आगे आए जो वर्ष मे पाच छः बार दस-दस दिन के लिए टोलिया बना कर ऐसे स्थानो मे प्रचार के लिए निकलें जहां आर्य समाजे न हो। नई-नई सस्थाओ व भवनो के बनाने मे शक्ति व समय नष्ट न करो। संस्थाओं के कारण तो आर्य समाज का अनार्यकरण हो रहा है। पंजाब व हरियाणा सभा का क्या झगडा है? सम्पत्ति का यह झगडा किन के मध्य है जो सदैव कहते हैं यह धन किसका ? मृत्यु के तट पर खडे हमारे वृद्ध लड़ते हैं। इन्हें बोध कब होगा ? अपने बच्चो को वेद भक्त बनाओ। आप उन्हें आर्य नहीं बनाना चाहते आर्यसमाज का नेता बनाना चाहते है।

यज्ञशाला निर्माणार्थ अपील

धर्मनिष्ठ महानुभाव,

ईश्वर की असीम अनुकम्पा से "गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर" तिलहर जिला शाहजहापुर की चिरकाल से अपूर्ण यज्ञशाला को पूर्ण करने का शुभ संकल्प आपके पवित्र सहयोग की प्रत्याशा में प्रबन्ध समिति ने लिया है। जिसमें कि ढाचा (आकार प्रकार) निर्मित हो चुका है मंगल कलश सीमेन्ट लेप, दरवाजा, खिडकी आदि का कार्य शेष है। जिस पर पचास हजार रुपये अनुमानित व्यय होगा।

ज्ञातव्य है कि यहा प्रथमा (छठी) से आचार्य (एम ए.) पर्यन्त प्राचीन एव सभी आधुनिक विषयो (अग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि) के उत्तम शिक्षा का सुप्रबन्ध है। यही कारण है कि सुदूरवर्ती अञ्चलो (बिहार, उडीसा, नेपाल आदि) के छात्रों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

अतः सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से विनम्र अनुरोध है कि उक्त पवित्र कार्य में अधिकाधिक आर्थिक सहायता देकर पुण्य व यश के भागी बने।

—सूर्यदेव आचार्य

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बाकनेर का ४०वां वार्षिकोत्सव २ व ३ मार्च १९९१ शनिवार तथा रविवार हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है,

शनिवार २ मार्च प्रातः ८ से १० यज्ञोपदेश १०-११ निबन्ध प्रतियोगिता।
(विषय—स्वामी दयानन्द सरस्वती)

११ से ५ खेल प्रतियोगिताए—(कबड्डी, राष्ट्रीय कुश्ती, दौड़, वालीबाल)
रात्रि ८ से १० भजनोपदेश व भाषण प्रतियोगिता
(विषय—आर्य समाज की देन)

रविवार ३ मार्च प्रातः ८ से १० यज्ञोपदेश

१० से ३ खेल प्रतियोगिता (निर्णायक)

३ से ५ आर्य युवक सम्मेलन तथा पुरस्कार वितरण समारोह एव अभिनन्दन : पद्म श्री भारत केसरी सतपाल पहलवान

प्रधान—मांगेराम आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सन् १९९१ तदनुसार सवत् २०४७-४८

आर्य पर्वों की सूची

क्र० स० नाम पर्व	अंग्रेजी तिथि	चन्द्र तिथि		संवत्	वार
१—मकर सक्रान्ति	१४-१-१९९१	माघ बदी	१४	२०४७	सोमवार
२—बसन्त पचमी	२१-१-१९९१	माघ सुदी	५	"	सोमवार
३—सीता अष्टमी	६-२-१९९१	फा० बदी	८	,	बुधवार
४—दयानन्द बोध रात्रि	१३-२-१९९१	फा० बदी	१४	"	बुधवार
५—लेखराम तृतीया	१७-२-१९९१	फा० सुदी	३	"	रविवार
६—नव संस्येष्टि	२८-२-१९९१	फा० सुदी	१५	"	गुरुवार
७—आर्य समाज स्थापना दिवस	१७-३-१९९१	चैत्र सुदी	१	२०४८	रविवार
८—राम नवमी	२४-३-१९९१	चैत्र सुदी	९	"	रविवार
९—हरि तृतीया	१४-७-१९९१	श्रावण सुदी	३	"	रविवार
१०—श्रावणी उपाकर्म	२५-८-१९९१	श्रावण सुदी	१५	"	रविवार
११—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२-९-१९९१	भाद्र बदी	८	"	सोमवार
१२—विजयादशमी	१८-१०-१९९१	अश्विनी सुदी	१०	"	शुक्रवार
१३—गुरु विरजानन्द दिवस	२१-१०-१९९१	अश्विनी सुदी	१३	"	सोमवार
१४—म० दयानन्द निर्वाण दिवस	५-११-१९९१	कार्तिक बदी	१४	"	मंगलवार
१५—स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३-१२-१९९१	पौष बदी	३	"	सोमवार

नोट :—सभी आर्य समाजें इन पर्वों को सोत्साह मनावें। देशी तिथियो में घटबढ़ के कारण पर्व दिवस मे परिवर्तन हो सकता है।

—सूर्यदेव, महामन्त्री

धर्मवीर हकीकत राय बलिदान समारोह

बसन्त मेला

अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति और आर्य समाज सरोजनी नगर नई दिल्ली के तत्वावधान में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस बाल मेला रविवार २७ जनवरी १९९१ को आर्य समाज मदिर सरोजिनी नगर मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। स्कूलो के बच्चों ने धर्मवीर हकीकत राय के जीवन पर बहुत प्रभावशाली भाषण व कविता प्रस्तुत की। सभी बच्चों को पारितोषिक दिए गये। रतनचन्द आर्य जी ब्लाक स्कूल सरोजनी नगर के बच्चो ने हकीकत राय का ड्रामा और नर्सरी के बच्चों ने बसन्त के उपलक्ष्य मे बहुत सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किया। दोपहर १२ बजे श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमे श्री ओमप्रकाश कोहली अध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश श्री प्रेमचन्द श्रीधर श्री यशपाल शास्त्री श्री रामभज जी (भूतपूर्व महानगर पार्षद) श्रीमती शकुन्तला आर्य (प्रधाना महिला सभा) श्री दीक्षित वेदालकार ने सारगर्भित विचार रखे। श्री गुलाब सिह राघवन के मनोहर भजन हुए। और स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने पधार कर आशीर्वाद दिया। अन्त में ऋषि लगर का आयोजन किया।

—रोशनलाल मन्त्री

वेद वेदांग पुरस्कार-१९९१

देश, जाति, धर्म आदि के नाम पर विभाजित संसार को भारतीय सस्कृति का स्पष्ट सन्देश है—"अयं निज. परो वेति गणना लघु चेतसाम्। उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्"। हमारी वैदिक विचार-धारा इतनी सशक्त है कि हम केवल मानव के लिए ही नहीं समस्त जीव-जन्तुओ के कल्याण के लिए भी प्रार्थना करते हैं—"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:ख भाग भवेत्" ऐसी वैदिक सस्कृति और वेद का सन्देश देने वाले स्वामी विद्यानन्द सरस्वती और महात्मा प्रेम भिक्षु जी को मैं श्रद्धाजलि अर्पित कर सका यह मेरा सौभाग्य है।" ये उद्गार हैं देश के प्रसिद्ध राजनेता तथा संस्कृतज्ञ डॉ० कर्णसिह के जो उन्होंने वेद वेदांग पुरस्कार समारोह के अवसर पर प्रकट किये। वेदो के प्रकाण्ड विद्वान, वेद मीमासा, चत्वारो वै वेदा:, भूमिका भास्कर, तत्वमसि, आर्यों का आदि देश, जैसे मौलिक ग्रन्थो के प्रणेता स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को आर्य समाज सान्ताक्रुज की ओर से इक्कीस हजार रुपये का वेद-वेदाग पुरस्कार स्थानीय आर्य विद्या मन्दिर जुहू के सभागार मे १९-१-९१ को आयोजित एक भव्य समारोह मे अर्पित किया गया।

इसी अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, धर्म प्रचारक महात्मा प्रेम भिक्षु जी को ग्यारह हजार रुपये का वेदोपदेशक पुरस्कार अर्पित किया गया। स्वामी विद्यानन्द जी ने अपने सक्षिप्त भाषण मे कहा कि वेद साक्षात् नारायण हैं। पाश्चात्य लेखकों ने उनको विकृत रूप मे ससार के सामने उपस्थित किया है। हमें वेद के वास्तविक रूप को समझना चाहिए। महात्मा प्रेम भिक्षु जी ने वेदानुकूल आचरण पर जोर देते हुए कहा कि हमे वेद के उदात्त, दिव्य सन्देश के अनुसार अपनी दिनचर्या तथा जीवनचर्या बनानी चाहिए। नगर के प्रमुख कांग्रेसी नेता तथा सुकवि श्री राममनोहर त्रिपाठी ने खेद व्यक्त करते हुए कहा कि वेद हमारी पुरानी पीढ़ी तक ही रह जाने का खतरा उपस्थित है। हमें उसके मर्म से नई पीढी को प्रभावित कराना होगा। इस पर आर्य समाज को गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। आपने कहा कि सस्कृत का अध्ययन संस्कृत के द्वारा ही होना चाहिए या फिर मातृभाषाओं के द्वारा किया जाए। अंग्रेजी के द्वारा संस्कृत की पढाई बन्द होनी चाहिए।

समारोह के अध्यक्ष महाराष्ट्र के भू. पू. मुख्यमन्त्री श्री शिवाजीराव निलगेकर ने कहा कि स्वतन्त्रता के बाद लोगों की राजनीति की ओर आकर्षण बहुत बढ़ गया है। धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक क्षेत्रो मे लोग अधिक काम करते थे। पर आज ये क्षेत्र पूर्ण रूप से उपेक्षित से हो गये हैं। इसीलिए समाज तीव्रगति से पतन की ओर जा रहा है। वेदोद्धारक दयानन्द ने हमे अधिक से अधिक मनुष्य-धर्म पालन करने की प्रेरणा दी है। आज की पीढी धर्म से बहुत दूर जा रही है। यदि इस ओर ध्यान न दिया गया तो नयी पीढी नष्ट हो जायगी।

प्रारम्भ में वेद वेदांग पुरस्कार निर्णायक समिति के अध्यक्ष श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने पुरस्कार के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए सान्ताक्रुज आर्य समाज की गतिविधियो का परिचय कराया। आर्य समाज सान्ताक्रुज के प्रधान श्री चमनलाल महाशय ने अतिथियो का स्वागत किया। श्री ओंकारनाथ जी आर्य तथा महामन्त्री श्री नरेन्द्र पटेल ने अभिनन्दन पत्रों का वाचन किया। इस अवसर पर स्थानीय आर्य समाजो तथा अन्य सस्थाओं के प्रतिनिधियो की ओर से पुरस्कृत महानुभावों का पुष्प मालाओ द्वारा सत्कार किया गया। आर्य विद्या मन्दिर के छात्रों द्वारा महाभारत पर आधारित एक प्रसग भी अभिनीत किया गया। इस अवसर पर स्वामी सच्चिदानन्द, स्वामी जगदीश्वरानन्द जैसे विद्वान सन्यासी, विविध धर्मों तथा सस्कृत सस्थानों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

सभा का संचालन कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया।

—प्रकाशचन्द्र शास्त्री

शोक प्रस्ताव

यह समाचार बड़े दु:ख के साथ आर्य जगत में सुना जायेगा कि आदरणीय आनन्द प्रिय जी (भ्राता जी) का स्वर्गवास दि० १६-१-९१ को उनके निवास स्थान बड़ौदा मे हो गया है। आपने अपने जीवन काल में आर्य जगत व शिक्षा संस्थाओं की तन-मन धन व लगन से जो सेवा की है। वह अपूरणीय क्षति है। स्वामी दयानन्द जी महाराज की जन्म भूमि मे स्मारक बनवाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ये प्राण थे।

ग्रामीण दंगाग्रस्त क्षेत्र में वेद प्रचार

१. बिहार के भागलपुर जिले में दंगाग्रस्त ग्रामीणक्षेत्र में वैदिक धर्म-प्रचार

दिनांक ३०, ३१ जनवरी एवं १ फरवरी को बिहार स्थित भागलपुर जिले के दंगाग्रस्त क्षेत्र में एक गांव मलोडिया में वैदिक धर्म का प्रचार एव आर्य समाज की स्थापना डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा एवं पं० वीरेन्द्र जी आर्य गाजीपुर, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में किया गया। सयोजन का कार्य आर्य समाज नाथ नगर के द्वारा सम्पन्न हुआ। नव स्थापित आर्य समाज मलोडिया (भागलपुर) के प्रधान श्री नारायण मण्डल तथा मन्त्री श्री कैलाश भारती चुने गये।

२. नाथ नगर में यज्ञ एवं कथा—

पुलिस प्रशिक्षण केन्द्र (सी० टी० एम०) नाथ नगर के सार्जेन्ट श्री रविन्द्र कुमार की पुत्री सुश्री स्विषि के सातवे जन्म दिवस पर डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा के आचार्यत्व में पुलिस कैम्प मे यज्ञ एव कथा का आयोजन हुआ।

वार्षिक निर्वाचन

—आर्य समाज नजफगढ का वार्षिक चुनाव स्वामी मनीषानन्द की अध्यक्षता में सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री रघुनाथ सिह आर्य
मन्त्री—अभयराम आर्य
कोषाध्यक्ष—रामकवर दहिया

—आर्य समाज नागदा का वार्षिकी चुनाव सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। जिनमें निम्न पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री सेवाराम जी आर्य
मन्त्री—श्री मोहनलाल जी आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री रमेश चन्द्र जी आर्य

—वैद्य रामसेवक पाण्डेय

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 21-22-2-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

साप्ताहिक "आर्यसन्देश" २४ फरवरी, १९९१

ऋषिबोधोत्सव तथा सीताष्टमी पर्व

करोलबाग आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव तथा सीताष्टमी का पर्व दिनांक २६ फरवरी १९९१ दिन मगलवार को आर्य स्त्री समाज, राजेन्द्र नगर मे मान्य बहन श्रीमती विद्यावती मरवाह की अध्यक्षता मे बडे समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

कार्यक्रम :

यज्ञ प्रार्थना ब्रह्मा—श्रीमती शान्ति देवी अग्निहोत्री तथा कृष्णा बडेरा
ध्वजारोहण—श्रीमती उमा बजाज
ध्वज गीत —राजेन्द्र नगर की बहनो द्वारा
वेद गान—आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर की छात्राओ द्वारा
मुख्य अतिथि—मान्य बहन ईश्वर देवी धवन
उद्घाटन भाषण —श्रीमती सरला महता, उप-प्रधाना, आर्य महिला सभा
मुख्य वक्ता—श्रीमती शशि प्रभा कुमार, श्रीमती प्रकाश शास्त्री, श्रीमती तारादेव, श्रीमती शकुन्तला आर्या, प्रधाना-प्रांतीय आर्य महिला सभा।
साहित्य वितरण श्रीमती विद्यावती मरवाह।
शुभकामनाए —श्रीमती शान्ति देवी मलिक।
आशीर्वाद—वेद प्रिया सुशीला आनन्द।

—श्रीमती कृष्णा रसवत (मन्त्रिणी)

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार
—१९९१—

वैदिक धर्म, वैदिक साहित्य एव आर्य समाज के प्रति समर्पित भाव से की गई, श्लाघनीय सेवाओ के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास, आर्य समाज फुलेरा जिला-जयपुर, राजस्थान की ओर से ५,०००/-(पांच हजार रुपये) नकद, दयानन्द स्वर्ण/रजत पदक, उत्तरीय, प्रशस्ति-पत्र तथा अभिनन्दन-पत्र, महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार, स्वरूप प्रति वर्ष ऋषि निर्वाण दिवस पर प्रदान किया जाता है। सन् १९९१ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिये कोई भी आर्य विद्वान स्वय अपना या अन्य आर्य विद्वान का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियो सहित दिनांक ३१-०७-१९९१ तक प्रस्तुत कर सकता है।

कविराज भंवरलाल शर्मा आचार्य
अध्यक्ष
निधि न्यास, आर्य समाज—फुलेरा,
जिला-जयपुर (राजस्थान)

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष,
पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ. प्र.)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक १८ | रविवार, ३ मार्च, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४७ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

पंजाब में हिन्दी का अपमान सहन नहीं होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग का प्रस्ताव

दिल्ली १७ फरवरी । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की १७-२-९१ की अन्तरग बैठक आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली मे सम्पन्न हुई, जिसमे भारत के सभी प्रान्तो के वरिष्ठ आर्य नेताओ ने भाग लिया । बैठक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । इसमे अनेक प्रस्ताव पारित किए गए ।

पंजाब में हिन्दी की अवमानना के विरोध मे प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव द्वारा प्रस्तुत निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ:—

प्रस्ताव

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा ही नही है, अपितु हिन्दी राष्ट्रीय एकता, संगठन एवं सांस्कृतिक अस्मिता की प्रतीक है । इसी कारण भारतीय गणतन्त्र के नियामको ने भारत के विभिन्न प्रान्तों के बीच राजकीय एवं प्रशासकीय सम्पर्क के लिये सम्पर्क भाषा के रूप मे इसे स्वीकार किया । यह भी उल्लेखनीय है कि किसी देश की राजभाषा ही जनता के विभिन्न वर्गों के बीच सम्प्रेषण का प्रमुख माध्यम होती है ।

अत: यह बहुत ही चिन्ता एवं अपमान की बात है कि देश के कुछ भागों मे, हिन्दी के महत्व को कम करने के प्रयास ही नही किए जा रहे हैं, बल्कि उसके अस्तित्व को प्रशासकीय एवं राजकीय क्षेत्रों से पूरी तरह से मिटाया जा रहा है । विशेष रूप से पंजाब मे उग्रवादियो के दबाव मे, पंजाब सरकार हिन्दी को पूरी तरह समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील है ।

आर्य समाज किसी भी भाषा का विरोध नही करता । आर्य समाज यथासम्भव अधिकाधिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं प्रयोग करने का पुक्षधर है । परन्तु आर्य समाज राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्व को कम करने के प्रयास का पूरी ताकत से विरोध करने के लिए प्रतिबद्ध है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सरकार से मांग करती है कि वह पंजाब सरकार को पजाब में हिन्दी भाषा के सम्मान को ठेस पहुचाने के प्रयत्न करने से रोके । हिन्दी की अवमानना सम्पूर्ण राष्ट्र का अपमान है । सरकार को चाहिए कि वह हिन्दी समर्थकों को इस विषय पर आन्दोलन करने के लिए बाध्य न करे ।

आर्य समाज राष्ट्र भाषा हिन्दी के साथ-साथ अन्य क्षेत्रीय भाषाओ को प्रोत्साहित करने के लिए किये गये प्रयासो का सदैव स्वागत करता है । —मन्त्री

पंजाब कश्मीर के मामले में सरकार कड़ा कदम उठाये

दूरदर्शन से चित्रहार द्वारा अश्लील प्रसारणों पर रोक आवश्यक

दिल्ली, १८ फरवरी । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैमासिक अन्तरंग अधिवेशन कल आर्य समाज दीवानहाल, दिल्ली में सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर देश की वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ मे गम्भीरता से विचार किया गया और सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुए—

१—सार्वदेशिक सभा पंजाब मे सरकार की गिरती हुई साख पर गहरी चिन्ता प्रकट करती है । पजाब सरकार लाहौर से जारी पंथिक आदेशों को मानने के लिए बाध्य है । आदेशों में कहा जाता है कि सरकार एवं गैर सरकारी स्तरों पर गुरुमुखी का प्रयोग किया जाय तथा हिन्दी का प्रयोग न किया जाय । स्कूलो और कालेजों की छात्राओं को सलवार, कमीज तथा विशेष रग का दुपट्टा पहनना होगा । आकाशवाणी और दूरदर्शन पर भी हिन्दी भाषा के प्रसारण नही होंगे । ऐसे आदेशों का पंजाब के राजकीय प्रशासन द्वारा पालन करना भारत राष्ट्र का सरासर अपमान है । ऐसा प्रतीत होता है कि वहा पर राजकीय प्रशासन का कोई अस्तित्व ही नही रह गया है । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, इस प्रकार के राष्ट्र विरोधी पथिक आदेशो का कडा विरोध करती है और सरकार से माग करती है कि वह पजाब के विषय में दृढता पूर्वक कार्यवाही करे ।

पंजाब के उग्रवादियों के साथ बिना शर्त बातचीत के प्रस्ताव से ऐसा प्रतीत होता है कि उग्रवादियों के सम्मुख सरकार ने समर्पण कर दिया हो । इस अस्थिरता के वातावरण को समाप्त करने के लिए सरकार को दृढ कार्यवाही करके अपने अस्तित्व का परिचय देना पड़ेगा ।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव

सम्पादक—मूलचन्द गुप्त

वैदिक वर्ण व्यवस्था

ॐ मनोज कुमार शास्त्री

यदि हम वर्ण व्यवस्था का आदि स्रोत ढूंढते हैं तो हमें ऋग्वेद के दशम् मण्डल के ९० वें पुरुष सूक्त में प्राचीनकाल मे समाज चार वर्णों में विभक्त था, ऐसा मिलता है—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत् बाहू राजन्यः कृतः।

उरुतदस्य यद्वैश्य पद्भ्यां शूद्रोऽजायत् ॥" ऋग्वेद ९०वें १० मण्डल

अतः निष्कर्ष के रूप में यह कथनीय है कि प्राचीन काल की वर्ण-व्यवस्था भी केवल मात्र गुण कर्म के आधार पर है।

प्राचीन काल मे वैदिक मनीषियों द्वारा की गई वर्ण-व्यवस्था का आधार वैज्ञानिक था। समाज की आर्थिक एव बौद्धिक उन्नति मे वह व्यवस्था सहायक थी। गुणो एव कर्मो के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्रो का विभाजन कर दिया गया था। लोग अपनी रुचि एव क्षमता के आधार पर जो कार्य करते थे, वे उसी वर्ण के माने जाते थे। किन्तु वैदिक युग के पश्चात् इस व्यवस्था मे विकार उत्पन्न होने लगे, क्योकि वर्ण एव जाति का निश्चय जन्म के आधार पर माना जाने लगा। इस प्रकार जाति वर्ण आदि व्यवस्था में दोष दृष्टिगोचर होने लगे थे।

"न विशेषोऽस्ति वर्णाना सर्व ब्रह्ममिद जगत्।

ब्रह्मणा पूर्वसृष्ट हि कर्मभिर्वर्णता गतम् ॥'

कालान्तर मे वैदिक कर्मकाण्ड व्यवस्थित होने लगे, उनका विस्तार होने लगा। जन्म एव विकास के विषय मे यदि मनन किया जाए तो उनके आधार एव सिद्धान्त सामने आते हैं। वर्ण शब्द 'वृ' धातु से व्युत्पन्न हुआ है। वृ का अर्थ है वरण करना अर्थात् चुनना। जिस व्यक्ति ने अपनी रुचि एव क्षमता के अनुसार जो कार्य चुन लिया उसके आधार पर उसका वर्ण भी निर्धारित हो गया। जिनकी वृत्तिया एव कार्य ब्राह्मणोचित थे उन्हे ब्राह्मण कहा जाने लगा। ब्रह्म अर्थात् 'सत्य की खोज' करने वाले ब्राह्मण विद्वान् होते थे अतः सर्वदा सत्य की खोज में लगे रहने से उन्हे 'ब्राह्मण' वर्ण की सज्ञा दी गयी है। जो साहसी एवं शक्ति सम्पन्न होते थे वे क्षत्रिय कहलाए। क्षत्र अर्थात् रक्षा करने का कार्य प्रमुख होने के कारण इस वर्ण क्षत्रिय कहा गया। क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्द भुवनेषु रुढः। महाकवि कालिदास रघुवंश मे दिलीप द्वारा क्षत्रिय शब्द का अर्थ इस प्रकार कराते हैं। जिन मनुष्यों की रुचि व्यापार, कृषि, धनोपार्जन आदि व्यवसायो मे होती थी उन्हे वैश्य कहा गया। वे आर्थिक उत्तरदायित्वों को पूर्ण करते हुए समाज का भार वहन करते थे। कुछ लोग ऐसे भी होते थे जिनकी रुचि एव क्षमता उपर्युक्त किसी भी कार्य के लिए उपयुक्त नहीं होती थी, वे अन्य लोगों की सेवा का कार्य करके अपना जीवन यापन करते थे।

गीता मे श्री कृष्ण ने कहा है —

"चातुर्वर्ण्यं मया सृष्ट गुणकर्मविभागशः।

तस्य कर्त्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥"

उपयुक्त श्लोक से स्पष्ट है कि प्राचीन वैदिककाल मे कर्म प्रधान चार वर्णों का उल्लेख है। कालान्तर मे वर्णो मे ऊंच-नीच का भेद भाव जब बढने लगा तब असख्य जातियो का आविर्भाव हमारे भारत मे होने लगा। अनेक ऋषि मुनियों के नाम पर विभिन्न गोत्र और जातियो का विकास होता गया। इस प्रकार वर्णों से ही अनेक जातियों की उत्पत्ति हुई।

तत्कालीन समाज मे प्रत्येक जाति के लिए कुछ न कुछ आचार-विचार, रीति-रिवाज खान-पान, रहन सहन आदि के निश्चित नियम बने हुए थे। जिनका पालन प्रत्येक जाति के लोग प्रतिष्ठा हेतु करते थे। इसका उल्लघन करने पर उन्हें समाज व जाति-च्युत कर दिया जाता था। हमारी वर्ण व्यवस्था के अनुसार एक शूद्र परिवार मे जन्म लेकर भी व्यक्ति केवल मात्र अपनी विद्वत्ता से गौरवान्वित हो सकता था। इसी तथ्य को साकार रूप दिया डा० भीमराव अम्बेडकर ने —

डा० भीमराव अम्बेडकर व सन्त रविदास जैसे अनेक विद्वान् हुए जो पिछडी जाति में होते हुए भी विश्व मे अग्रणी रहे। एक मिसाल है पिछड़े वर्ग के लिए। आर्य समाज के सस्थापक युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द ने भी अपनी रचना सत्यार्थ प्रकाश व सस्कार विधि मे कर्म प्रधान वर्ण-व्यवस्था की ही स्थापना की है। उनकी यह अभिव्यक्ति महर्षि मनु द्वारा लिखित 'जन्मना जायते शूद्रः कर्मणाद्विज उच्यते' को ही स्वीकार करते हैं।

दुनियां से अन्याय मिटाओ

पं० नन्दलाल "निर्भय" भजनोपदेशक

समय नहीं सोने का प्यारों, आर्य वीरो कदम बढ़ाओ।
वेद-सभ्यता, सदाचार का, सकल विश्व को पाठ पढ़ाओ ॥
भौतिकता की चकाचौंध ने, अन्धा बना दिया है ये जग।
स्वार्थ भरा है हर हृदय में, भूल गये हैं नर-नारी मग ॥
भगत राम से नहीं रहे अब, युवक गये बन रावण से ठग ॥
बन कर के मारीच धरा पर, घूम रहे है लीडर लगभग ॥
बजरगी हनुमत बन जाओ, असुरों की तुम लक जलाओ।
वेद-सभ्यता, सदाचार का, सकल विश्व को पाठ पढ़ाओ ॥१॥
ऋषियो के प्यारे भारत में, पनप गये खल-प्रत्याचारी।
मानव, मानवता तज बैठे, हाय गये बन मांसाहारी।
श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मे, गऊ मात जाती हैं मारी।
नित्य नाचती हैं नेताओं, के आगे कन्याए क्वारी ॥
"नारी पूजनीय होती है" मूढ़ लीडरो को समझाओ।
वेद-सभ्यता सदाचार का, सकल विश्व को पाठ पढाओ ॥२॥
ईश्वर में विश्वास नही है, जड़ पूजा का जोर यहां है।
खाओ, पीओ, मौज उड़ाओ, का भारी अब शोर यहां है ॥
सज्जन छुप कर घर बैठे हैं, गर्ज रहा हर चोर यहां है।
उल्लू, काक, मान पाते हैं, दुखी कोकिला, मोर यहां है ॥
दयानन्द के वीर सैनिकों, दुनियां से अन्याय मिटाओ।
वेद-सभ्यता सदाचार का, सकल विश्व को पाठ पढ़ाओ ॥३॥
बिना तुम्हारे दुखी जगत का, और कौन कल्याण करेगा।
अबला, दीन, अनाथ जनो का, कष्ट बताओ कौन हरेगा ॥
वेदो का सदेश सुनाता, देश, विदेश कौन विचरेगा।
वही अमर होगा जग में सो, जो जग हित के लिए मरेगा ॥
स्वामी श्रद्धानन्द, लाजपत, "निर्भय" लेख राम बन जाओ।
वेद-सभ्यता, सदाचार का, सकल विश्व को पाठ पढ़ाओ ॥४॥

ग्राम व पोस्ट—बहीन, जिला—फरीदाबाद
(हरियाणा)

मिल करके होलिका जलाओ

—ले० स्वरूपानन्द सरस्वती

बड़े प्रेम श्रद्धा से मिलकर होली का त्यौहार मनाओ।
भेदभाव का भूत भयकर भारत देश से दूर भगाओ ॥
मद्य पियक्कर बन करके इज्जत धूल मे नहीं मिलाओ।
बको न गाली पीकर प्याली चण्डू चरस अफीम न खाओ ॥
पाखण्ड अविद्या रूढीवाद सब नाशकारी कुप्रथा मिटाओ।
निज बुद्धि विवेक तपोबल से देश का ऊचा भाल कराओ ॥
यज्ञादि शुभ श्रेष्ठ कर्म कर वेदामृत पीयूष पिलाओ।
सद् विवेक से जन गण मन के सारे संशय शूल मिटाओ।
द्वेष घृणा अभिमान ईर्ष्या छल कपट का ढेर जलाओ।
भारत माता की जय बोलो मिल करके होलिका जलाओ ॥

अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

प्रतिवर्ष की भांति आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी. ए. वी. संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा हसराज दिवस समारोह इस वर्ष रविवार २१ अप्रैल १९९१ को प्रातः ९ बजे से १ बजे तक तालकटोरा गार्डन, इन्डोर स्टेडियम (नजदीक बिरला मन्दिर) नई दिल्ली में समारोहपूर्वक मनाया जायेगा।

समस्त आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों, डी. ए वी. सस्थाओं, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं समस्त आर्य जगत् से प्रार्थना है कि यह तिथि अभी से अपनी डायरी में अंकित कर लेवें और उस दिन कोई कार्यक्रम न रखकर इस समारोह में उपस्थित होने की कृपा करें।

—रामनाथ सहगल, मन्त्री

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

हमारे शाश्वत मूल्यों की भाषा संस्कृत



भारत वर्ष में पिछले कई वर्ष से एक वर्ग उभर कर आ रहा है जो राष्ट्रीय गौरव को मिटाने पर तुला हुआ है। पाठको को स्मरण होगा कि १६ मार्च ८६ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से एक ज्ञापन तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डा० बलराम जाखड़ को दिया गया था। इस ज्ञापन के माध्यम से सरकार से प्रार्थना की गई थी कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अधिकारी निरन्तर संस्कृत की अवहेलना कर रहे हैं उनको आदेश दिए जाए कि वे संस्कृत को समाप्त न करें। संस्कृत किसी वर्ग विशेष की भाषा नहीं है। संस्कृत तो सबकी भाषा है। इसका चरित्र सार्वदेशिक एव सार्वभौमिक है। भाषा शास्त्री जानते हैं कि संस्कृत भारत वर्ष की सभी भाषाओ का स्रोत है। यूरोप की भी अनेक भाषाए संस्कृत से ही उद्भूत हैं। भाषा शास्त्र मे एक विशेष अध्याय भारोपीय भाषाए नाम से होता है। इससे तात्पर्य स्पष्ट है कि संस्कृत का विश्व के सन्दर्भ मे महत्व विशेष है।

यह ज्ञापन दिया गया था और सरकारी पाठ्यक्रम समिति ने उस समय यह निर्णय ले लिया था कि संस्कृत की स्थिति यथा पूर्व बनी रहेगी। कुछ समय पश्चात् पुनः इन सरकारी अधिकारियो के मस्तिष्क में संस्कृत विरोधी कीड़े ने जन्म लिया और फिर से संस्कृत का विरोध होना प्रारम्भ हो गया। संस्कृत प्रेमियो ने उच्च न्यायालय एव सर्वोच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत की और एक बार फिर से यथा स्थिति आदेश मिल गए। वर्ष १९९१ से पुनः प्रयास किए जा रहे हैं कि संस्कृत को पाठ्यक्रमो से निकाल दिया जाए।

हमें आश्चर्य होता है कि हमारे राष्ट्रीय नेता जो संस्कृत के महत्व मे बोलते हुए नहीं थकते वे इस सरकारी तन्त्र के सामने क्यो असफल हो जाते हैं। जो भारतीय संस्कृति के गौरव को बनाए रखना चाहते हैं वे संस्कृत को महत्व देते है, जो विज्ञान और टेक्नोलॉजी को बढावा देना चाहते हैं वे भी संस्कृत को महत्व देते हैं। क्योकि यह सिद्ध हो चुका है कि कम्प्यूटर के लिए सर्वश्रेष्ठ ग्राह्य भाषा संस्कृत ही है, जो अपनी भाषाओ को समृद्ध करना चाहते हैं वे भी संस्कृत को ही महत्व देते हैं। जब सभी संस्कृत को इतना महत्व देते हैं तो संस्कृत भाषा की इतनी अवमानना क्यों ?

हमारे संविधान मे राजभाषा हिन्दी के सम्बन्ध मे लिखा है कि वह अपनी शब्द सम्पदा को संस्कृत से लेकर समृद्ध करेगी।

दिल्ली में शनिवार २३ फरवरी को राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरामन ने लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ का मानित विश्वविद्यालय के रूप मे उद्घाटन किया। उनके अंग्रेजी भाषण में संस्कृत भाषा के श्लोक, संस्कृत के महत्व को स्थापित करते हैं। उन्होने शहजादा दारा शिकोह द्वारा उपनिषदो के फारसी अनुवाद का जिक्र किया। और बनारस के संस्कृत विद्वानों के सहयोग का भी। राष्ट्रपति ने कहा कि संस्कृत हमारे शाश्वत मूल्यो की भाषा है। जिस प्रकार हिमालय अचल्य है उसी प्रकार संस्कृत भी। जिस प्रकार हिमालय अनेक नदियो का उद्गम स्थल उसी प्रकार संस्कृत भी अनेक भाषाओ की जननी है। राष्ट्रीय एकता का स्वप्न भी उन्होने संस्कृत के माध्यम से देखने का प्रयास किया। अधर्म का नाश और धर्म की स्थापना करने के लिए उन्होने संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन करने की प्रेरणा दी। राष्ट्रपति जी बधाई के पात्र हैं।

एक और विडम्बना है। शंकराचार्य तो शूद्रो और महिलाओं के लिए वेद और संस्कृत के अध्ययन की अनुमति नही देते थे, पर लालबहादुर शास्त्री विद्यापीठ में अनेक शंकराचार्यों और सनातन धर्म के अधिष्ठाताओं की उपस्थिति में वेद पाठ किया। यह दयानन्द की जीत है ? यह आर्य समाज की जीत है। आओ हम विपरीत परिस्थितियां होते हुए भी संस्कृत के अध्ययन का संकल्प लें।

—डा० धर्मपाल

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२४ फरवरी, ९१ के अंक से आगे)

किन्तु एक बार हमें विवाह संस्कार कराने के लिए कहा गया। विवाह विधियो की जटिलता तथा दुरुहता को देखते हुए मैंने उचित समझा कि संस्कार सम्पन्न कराने के पहले इसकी कार्य विधियों को पूर्णतया समझ लिया जाय। तब मैं सर प्रताप हाई स्कूल मे सहायक अध्यापक था। मैं अपने खाली पीरियडो में संस्कार विधि के विवाह प्रकरण को परायण करता रहा और सायंकाल आर्य समाज में प्रथम बार विवाह संस्कार सम्पन्न कराया। इसके पश्चात् तो विवाह मे पौरोहित्य कर्म करने के अनेक अवसर आये।

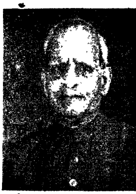
आर्य समाज के सत्सगो मे मैं सदा नियमित रूप से जाता रहा। शायद ही कोई ऐसा रविवार रहा हो जब मैं आर्य समाज के सत्संग में नही गया होऊ। यह अनन्य निष्ठा सहज, स्वाभाविक और श्रद्धोपेय थी। मुझे स्मरण है कि जब बी० ए० फाइनल की परीक्षा दे रहा था और मुझे अंग्रेजी साहित्य का परचा देना था तो उसकी तैयारी के लिए आर्य कुमार सभा के रात्रिकालीन अधिवेशन से अनुपस्थित रहने की मैंने विधिवत सूचना मास्टर साहब गणेशीलाल जी को लिखित रूप मे दे दी थी।

सत्सग मे यज्ञ, प्रार्थना, कथा (सत्यार्थ प्रकाश, उपनिषदादि) प्रवचन और शका समाधान आदि के कार्यक्रम मैं ही सम्पन्न कराता था। कर्म काण्ड को पूर्ण विधि विधान से कराना तथा तत्सम्बन्धी उपकरणो की शुद्धता तथा प्रामाणिकता का ध्यान रखना मैंने आवश्यक समझा। सौभाग्य से आर्य समाज का सेवक परशुराम भी दोनो समय यज्ञ करने का व्रत लिए हुए था।

आर्य समाज के किन-किन उपदेशको को वार्षिकोत्सवों में प्रवचनार्थ आमन्त्रित किया जाय, इसके लिए हमारी आर्य समाज के मंत्री मुझ से प्रायः परामर्श लेते थे। मैंने एक बार प० गंगाप्रसाद उपाध्याय और मौलवी महेशप्रसाद जी को उत्सव मे आमन्त्रित करवाया। दुर्भाग्यवश दोनों ही महानुभाव नही आ सके। प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति को भी मैंने उत्सव में आमंत्रण भिजवाया। वे उच्च कोटि के विद्वान और लेखक तो थे किन्तु मच के वक्ता नही थे, अतः जब वे व्याख्यान देते-देते पुस्तक निकाल कर कोई महत्वपूर्ण उद्धरण पढने लगते तो श्रोतागण ऊबने लग जाते। मैंने जिन प्रधानो के साथ मन्त्री पद पर कार्य किया, उनसे मेरे सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण ही रहे। पं० ठाकुरदत्त बाली मूलत जालधर जिले के थे, जिनकी शिक्षा डी० ए० वी० कालेज होशियारपुर मे हुई थी। वे स्वाध्यायशील तथा निष्ठावान आर्य समाजी थे। श्री च्यवन आर्य मारवाड के सभी आर्यों के भीष्म पितामह ही थे उन्होने होली के त्योहार पर गाने योग्य मारवाडी लोक धुनों मे आर्य फाग लिखा और प्रकाशित कराया। हमारी मण्डली च्यवन जी के नेतृत्व मे इस सुधारवादी आर्य फाग को बडे चाव से गाती हुई घूमती। आर्य समाज के पत्रो मे लिखने से पहले ही मैं साप्ताहिक वीर अर्जुन मे नियमित रूप से साहित्यिक लेख लिखने लगा था। यदा कदा इन लेखो का स्वल्प पारिश्रमिक भी मुझे मिलता जिससे मुझे इस बात का सतोष हुआ कि मेरा लेखन भी कम से कम इस कोटि का तो है जिसे पुरस्कृत किया जा सकता है। हमारी समाज मे प्रादेशिक सभा के उपदेशक प० राजपाल जी और प० मदन मोहन जी आये। ये दोनो युग्म रूप में ही प्रचार करते थे। मैं उन दिनो नगर आर्य समाज जोधपुर का मन्त्री था। जैसा कि मैं लिख चुका हू उन दिनो बाहर से आने वाले उपदेशको को किसी परिवार मे भोजनार्थ भेजने मे भी कठिनाई होती थी। मारवाडी घरो मे इस प्रकार के अतिथि सत्कार का प्रचलन ही नहीं था। अतः मैंने भी इन दोनो के भोजन की व्यवस्था स्थानीय गोपाल होटल मे कर दी। पजाबी घरो मे सत्कार पूर्वक भोजन कराने वाले हमारे उपर्युक्त उपदेशको को यहाँ होटल मे भोजन करना अखरा और उन्होने अपने व्याख्यानो में इसे बुरा बताया। मेरे द्वारा की गई भोजन की व्यवस्था की यह सार्वजनिक आलोचना मुझे बुरी लगी और मैंने भी उन्हे इसके लिए कुछ बुरा भला कहा। खैर यह बात तो जैसे तैसे शान्त हुई। इसी प्रसग मे मेरे आर्य सामाजिक लेखन की बात चल पडी। प० राजपाल और प० मदन मोहन प्रादेशिक सभा से सम्बद्ध थे इस सभा का साप्ताहिक मुख पत्र आर्य जगत उन दिनों जालधर से निकलता था उन्होंने मुझे कहा कि मैं अपने लेख प्रकाशनार्थ आर्य जगत में भेजा करू।

(क्रमशः)

डा० कपिलदेव द्विवेदी को पद्मश्री



वाराणसी। संस्कृत साहित्य मे विशिष्ट और उल्लेखनीय योगदान के लिए गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार के कुलपति एव विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी) के निदेशक डा० कपिलदेव द्विवेदी को भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' अलकरण से विभूषित किया गया है। ७२ वर्षीय डा० द्विवेदी ५० वर्ष से संस्कृत भाषा, साहित्य, संस्कृति की सेवा मे प्रवृत्त रहे हैं। आपके ७० से भी अधिक ग्रन्थ वेद, संस्कृत साहित्य, व्याकरण, भाषा विज्ञान पर हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषाओ मे प्रकाशित हो चुके है। समीक्षात्मक ग्रन्थो के साथ-साथ आपने तीन मौलिक काव्य ग्रन्थ राष्ट्रगीतांजलि, भक्ति कुसुमांजलि: शर्मण्यः प्राच्यविदः हैं। आपका प्रथम मौलिक ग्रन्थ अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन का १९५१ में प्रकाशन हुआ। आपके प्रमुख ग्रन्थो में अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन, एसेन्स आफ वेदाज, वेदामृतम् ग्रन्थमाला के १२ भाग—इसके अतिरिक्त संस्कृत अनुवाद पर संस्कृत शिक्षा, संस्कृत व्याकरण आदि ग्रन्थ सरल माध्यम से संस्कृत पठन पाठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आपके पुरस्कृत ग्रन्थ-संस्कृ‍त निबन्ध शतकम् राष्ट्रगीतांजलि:, भक्ति कुसुमांजलि: प्रमुख हैं।

आपका हाल ही मे एसेंन्स आफ वेदाज ग्रन्थ अंग्रेजी मे लिखा है जो विदेशो मे काफी लोकप्रिय हो रहा है। इस ग्रन्थ को लिखने का उद्देश्य विदेशो मे वेदो का सन्देश पहुचाना है। डा० कपिलदेव द्विवेदी अनेक भारतीय भाषाओ के साथ-साथ विदेशी भाषाओं जर्मन, फ्रेंच, रूसी, चीनी भाषाओ के मान्य विद्वान हैं। सूरीनाम मे आपका अभिनन्दन तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राम सेवक शंकर ने किया।

निर्भीक और स्वाभिमानी डा० द्विवेदी युवावस्था मे स्वाधीनता सग्राम में सक्रिय रहे और जेल यात्राए भी की। आपका सरल और आडम्बर हीन जीवन साधना तपस्या का मूर्तिमान है। साहित्यिक-सांस्कृतिक क्षेत्रो मे उनका प्रदेय मूल्यवान और सारणीय है।

डा० कपिलदेव द्विवेदी का जन्म गहमर (गाजीपुर) मे सुसस्कृत स्वतन्त्रता सेनानी परिवार मे सन् १९१९ मे हुआ। आपने अपनी शिक्षा हरिद्वार, पंजाब, वाराणसी और इलाहाबाद में की। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नैनीताल, ज्ञानपुर (वाराणसी), गोपेश्वर चमोली में संस्कृत प्रोफेसर एवं प्राचार्य पद पर कार्य किया। सम्प्रति गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार के कुलपति हैं। वैदिक वाङ्मय के क्षेत्र मे आप सुप्रतिष्ठित विद्वान है।

क्या गारंटी है कश्मीरी आतंकवादियों के भारत भक्त बने रहने की ?

—ब्रजभूषण दूबे

भारतीय गणतंत्र की ४२ वी वर्ष गाठ के अवसर पर दिल्ली-दूरदर्शन से प्रसारित रात्रि के समाचारो मे बताया गया कि पाकिस्तान में प्रशिक्षण पाये सैकडो कश्मीरी आतंकवादियो ने कश्मीर की जेलों में राष्ट्रीय तिरंगा फहराया और पिछले साल श्रीनगर में जलाये गए राष्ट्रीय तिरंगे की घिनौनी हरकत पर दु:ख प्रकट किया। गुमराह हुये नौजवानो को पाकिस्तान मे आतंकवाद का प्रशिक्षण पाने के बाद भी भागने की कोशिश करते समय पाकिस्तानी फौजियों द्वारा बेरहमी से पीटे जाने की खबरे अखबारों में पिछले दिनो छपी थीं। खाड़ी में छिड़ गये जंग से भारत सरकार द्वारा और भी सख्ती दिखाने की आशका से घबराकर यदि कश्मीर के अलगाववादी-आतंकवादियो ने इस तरह का रुख अपना लिया हो तो उसमे किसी को आश्चर्य नही होना चाहिए? बर्फ जमने से भी २-३ महीनों के लिए उस इलाके मे आजादी से घूमना फिरना बंद हो जाता है। इस कुदरती पाबन्दी को मद्देनजर रखते हुए भी कश्मीरी आतंकवादियो द्वारा राष्ट्रीय तिरंगे के प्रति आदर भाव दर्शाया जा सकता है।

कश्मीर के आतंकवादियो ने वहा के हिन्दुओ को कश्मीर छोड़कर भागने को विवश कर दिया था। वहां से भागकर आये लाखों हिन्दू दिल्ली के आसपास अस्थाई ढंग से शरणार्थी शिविरो में रह रहे हैं। आर्य समाज अनारकली, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में भी कश्मीर के शरणार्थी गत अक्टूबर-नवम्बर में ठहरे थे। जब तक कश्मीर से भागकर आये हिन्दू शरणार्थियों को पुन: कश्मीर में नहीं बसाया जाता और जब तक कश्मीर घाटी में शांति स्थापित नहीं हो जाती तब तक कश्मीर के आतंकवादियों को किसी भी घोषणा पर विश्वास करना सम्भव नहीं है? जिन्होंने आतंकवाद के कारण जान माल का नुकसान उठाया है और जिनके दिलों पर खौफनाक कारनामों की यादें अभी भी कायम हैं उन्हें ऐसी बातों से बहकाना संभव नहीं है? सरकार को सोच समझकर ही कोई नया कदम उठाना चाहिए।

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर

अमर शहीद पं० लेखराम स्मृति अंक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र 'आर्य सन्देश' अपनी परम्परा के अनुरूप इस अवसर पर पं० लेखराम की स्मृति मे एक विशेषांक का प्रकाशन कर रहा है। इसमें विद्वान लेखकों के खोजपूर्ण लेख होंगे।

सूचनार्थ निवेदन है कि १० मार्च का 'आर्य सन्देश' का अङ्क प्रकाशित नहीं होगा।

—प्रधान सम्पादक

श्री रामनाथ सहगल अभिनन्दन समारोह

कर्मठ आर्य नेता, निष्ठावान कार्यकर्ता श्री रामनाथ सहगल जी के ६६वें जन्म दिवस पर उनकी सामाजिक सेवाओं के लिए सोमवार ११ मार्च १९९१ को साय ५ बजे फिक्की सभागार, मण्डी हाउस, नई दिल्ली में भव्य अभिनन्दन समारोह मनाया जा रहा है।

समारोह में आप इष्टमित्रों व परिवार सहित आमन्त्रित हैं

—अनिल आर्य
संयोजक

खाड़ी युद्ध और धर्मनिरपेक्षता

— ब्रजभूषण दूबे

युद्ध इन्सानियत नही बर्बरता और हैवानियत का प्रतीक है, युद्ध सभ्यता नहीं असभ्यता और जगलीपन का द्योतक है. युद्ध सृजन नही सहार और विनाश का प्रतीक है, युद्ध सद्भाव और सह-अस्तित्व नहीं तानाशाही और निरंकुशता का द्योतक है, अत: विनाशकारी युद्ध का शांतिप्रिय भारतवासी भी विरोध करते हैं। हम न राष्ट्रपति सद्दाम के कारनामों के समर्थक हैं और न बहुराष्ट्रीय सेनाओं के हिमायती ही। हम युद्ध रत दोनों पक्षों का उसी तरह विरोध करते हैं जैसा कि पिछले दिनों इंग्लैंड, अमेरिका, जर्मनी आदि देशों में शांति प्रिय लोगों ने किया है।

१८ जनवरी १९९१ को राजधानी दिल्ली में वामपंथी दलों ने अमेरिकन राष्ट्रपति जार्ज बुश के विरोध में प्रदर्शन किया तथा जुलूस निकाला। उसी दिन सद्दाम समर्थक उन्मादी भीड़ ने चांदनी चौक इलाके में तैनात दो पुलिस वालों को छुरेबाजी का शिकार बनाया था। १९-२० जनवरी को कलकत्ता में सद्दाम समर्थक कट्टरपंथी लोगों ने सरस्वती पूजा आयोजित करने वालों के साथ झगड़ा करके साम्प्रदायिक सद्भाव को नष्ट करने की कुचेष्टा भी की थी। २६ जनवरी को गाजियाबाद में गणतन्त्र दिवस समारोह आयोजित करने वाले शांतिप्रिय लोगों के खिलाफ सद्दाम समर्थकों ने खुलकर हमला बोल दिया और उस सांप्रदायिक दंगे में लगभग एक दर्जन लोगों की जानें गईं और आगजनी से लाखों रुपयों का नुकसान हो गया। खुर्जा में भी एसे ही अराष्ट्रीय तत्वो ने निर्दोष लोगों की हत्याए करने में जरा भी संकोच नही किया।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है और इस कारण सरकार की नजर मे सभी धर्म और धर्मों के अनुयायी बराबर हैं। इराक के युद्धरत राष्ट्रपति जनाब सद्दाम हुसैन ने युद्ध शुरू होने से पहिले भारत सहित अनेक राष्ट्रों के शांति प्रस्ताव सख्ती से ठुकरा दिये थे। उन्होंने युद्ध के लिए अपनी पूरी तैयारी का इजहार भी किया था। पड़ोसी पाकिस्तान तथा बांगला देश ने तो सद्दाम के खिलाफ अपनी सेना भी सऊदी अरेबिया भेजी है। ईरान सहित अनेक मुस्लिम देश मजहब के नाम पर सद्दाम हुसैन का साथ देने को तैयार नहीं हैं। ऐसी स्थिति में धर्मनिरपेक्ष भारत सरकार किसी व्यक्ति या वर्ग के मजहबी जुनून का समर्थन कैसे कर सकती है? सद्दाम सही हैं या गलत यह फैसला आने वाले दिनों में होगा? सांप्रदायिक तत्व देश मे बदअमनी फैलाना चाहते हैं, अत. केन्द्र की सरकार के साथ ही प्रत्येक शांति प्रिय नागरिक का कर्तव्य है कि ऐसे कट्टरपंथी लोगों से सावधान रहें।

३०, गोराचन्द रोड, कलकत्ता-७०००१४

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

१९९० का आखरी महीना गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलपिता पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति को समर्पित रहा। श्रद्धानन्द सप्ताह २३ दिसम्बर से ३० दिसम्बर के बीच गुरुकुल परिवार में सभी कुलवासियों ब्रह्मचारियों, प्राध्यापकों सहित अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा अत्यन्त निष्ठा और उल्लास के साथ मनाया गया। २३ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस प्रभातफेरी के बाद लहराते "ओ३म्' ध्वजो की शोभा यात्रा के साथ प्रारम्भ हुआ। दयानन्द द्वार से यज्ञ मडप की इस शोभा यात्रा में कुलपति सहित सभी प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यालय के उल्लसित ब्रह्मचारी शामिल थे।

यज्ञ मडप के रूप में बड़े परिवार के यज्ञ-मन्दिर का उपयोग कई वर्षों के बाद किया गया। आचार्य श्री रामप्रसाद वेदालकार ने कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र अरोड़ा और मुख्य अतिथि श्री रामनाथ वेदालंकार को यजमान बना कर यज्ञ सम्पन्न कराया। इसके बाद विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियो ने कुलपिता की स्मृति में गीत प्रस्तुत किए। इस अवसर पर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० विष्णुदत्त राकेश, संस्कृत विभाग के नवागत रीडर डा० सोमदेव सताधु, डा० हरिप्रकाश एव संस्कृत के प्रोफेसर श्री वेदप्रकाश शास्त्री के अलावा कुलपति एवं मुख्य अतिथि ने स्वामी श्रद्धानन्द के प्रेरक जीवन की घटनायें सुना कर उस विराट् व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही।

उसी दोपहर अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेन्ट विश्वविद्यालय के नवागत क्रीड़ाध्यक्ष श्री आर० के० एस० डागर के सयोजन में देश भर से आई तेरह टीमो के बीच प्रारम्भ हुआ। वर्षा जैसे प्राकृतिक अवरोधो के बावजूद टूर्नामेंट आठ दिन तक सफलतापूर्वक चला। कुलपति ने जहां पहले दिन खिलाड़ी टीमों के मार्चफास्ट की सलामी ली वहीं अन्तिम दिन रुड़की विजेता टीम—बी० ई० जी० तथा जालंधर की उपविजेता टीम यग फार्म क्लब को पुरस्कृत किया। इस टूर्नामेंट में दर्शकों के रूप में हरिद्वार नगर-परिसर के सैकड़ो लोग सम्मिलित हुए।

दिसम्बर १९९० और जनवरी, १९९१ के महिने विश्वविद्यालय परिवार में कुछ नये सदस्यों के आगमन की दृष्टि से भी उल्लेखनीय रहे। विश्वविद्यालय परिवार के विज्ञान सकाय में वनस्पतिशास्त्र विभाग में डा० डी० के० माहेश्वरी प्रोफेसर पद पर, भौतिक शास्त्र में डा० यशपाल, प्राणिशास्त्र मे डा० देवराज खन्ना, रसायन विभाग में डा० श्रीकृष्ण और कम्प्यूटर विभाग मे सर्वश्री दिनेश बिश्नोई, कर्मजीत भाटिया, अचल कुमार गोयल, रमन कुमार तथा विनीत कुमार ने कार्यभार सभाला।

मानविकी संकाय में संस्कृत विभाग मे डा० सोमदेव शताशु ने रीडर पद पर, मनोविज्ञान विभाग में डा० चन्द्रपाल खोखर, वेद विभाग में डा० तेजोमित्र प्रौढ़ शिक्षा मे डा० जसबीरसिंह मलिक तथा क्रीडा विभाग में श्री आर. के. एस. डागर ने कार्य भार ग्रहण किया।

विश्वविद्यालय में १९९१-९२ के सत्र मे हिन्दी विभाग मे हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा आरम्भ करने का निश्चय है। इसके लिए हिन्दी विभाग में लब्धप्रतिष्ठित पत्रकार, नवभारत टाइम्स के संवाददाता तथा अनेक वर्षों से हिन्दी साहित्य का अध्यापन करा रहे श्री कमलकान्त बुधकर को प्रवक्ता के रूप में विश्वविद्यालय परिवार में सम्मिलित किया गया।

९ जनवरी को विश्वविद्यालय के मान्य कुलाधिपति तथा केन्द्रीय योजना आयोग के सदस्य प्रो. शेरसिंह ने पुस्तकालय के विस्तारित कक्ष के रूप मे "संदर्भ एव शोध पुस्तकालय" के लिए नये पुस्तकालय भवन की आधारशिला रखी। इस भवन के निर्माण के लिए उ० प्र० सरकार ने ७ लाख रुपया प्रदान किया है। जबकि केन्द्रीय सरकार ने सातवीं पचवर्षीय योजना में इसके लिए ५ लाख तथा आठवीं योजना में पन्द्रह लाख रुपये का प्रावधान किया है। इस तरह से २७ लाख की लागत से भविष्य में पुस्तकालय भवन का विस्तार कार्य सभव हो सकेगा। प्रसन्नता की बात है कि पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। आशा है कि मानविकी सकाय के भवन का भी निर्माण कार्य जल्दी ही शुरू हो जाएगा।

इसी बीच विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद (सीनेट) की बैठक भी ९ जनवरी को अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में विश्वविद्यालय मे ही कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक मे विभिन्न आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अनेक प्रमुख महानुभाव सम्मिलित हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार को पुण्यभूमि और विश्वविद्यालय के कार्यों के लिए पांच लाख रुपया उपलब्ध कराने की घोषणा की। विश्वविद्यालय अपने स्तर पर तथा जिला प्रशासन के परामर्श एवं सहयोग से गगा पार कागडी ग्राम की पुण्यभूमि के भवनो और गंगा नदी के कारण कट रही भूमि की सुरक्षा के लिए शीघ्र ही प्रयास प्रारम्भ करेगा।

श्री वीरेन्द्र ने विश्वविद्यालय के दैनिक यज्ञ के अवसर पर प्राध्यापकों को सम्बोधित करते हुये कहा कि वर्षों बाद वे गुरुकुल की गतिविधियो में जीवन्तता का अनुभव कर रहे हैं। उन्होने कहा कि वर्तमान कुलपति के नेतृत्व मे जो परम्परायें गुरुकुल मे पड़ रही हैं वे उसे उसके पुराने गौरव तक जरूर ले जायेंगी।

फरवरी के प्रथम सप्ताह में गुरुकुल मे वर्जीनिया विश्वविद्यालय के २० छात्र-छात्राए भ्रमण पर आए। उन्होंने पुस्तकालय का निरीक्षण किया, गुरुकुल पद्धति तथा यज्ञ परम्परा के बारे में रुचि पूर्वक जानकारी प्राप्त की। इन अमेरिकी छात्रो ने गुरुकुल फार्मेसी में आयुर्वेदिक औषध निर्माण को अत्यन्त उत्सुकता के साथ देखा। इन छात्रो ने गुरुकुल से पुरातत्व संग्रहालय और इसमें गगोत्री के योगी और पर्वतारोही स्वामी सुन्दरानन्द द्वारा स्थापित की जा रही हिमालय दर्शन वीथि देख कर भी विस्मय और प्रसन्ता प्रकट की। वर्जीनिया विश्वविद्यालय के ये छात्र योग की क्रियात्मक शिक्षा के लिए निकट भविष्य मे ही फिर गुरुकुल आवेंगे।

६ फरवरी को प्रौढ़ शिक्षा विभाग मे तीस प्रशिक्षुओं के विशेष प्रशिक्षण शिविर का कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने उद्घाटन किया।

वर्षों बाद संकाय अधिष्ठाता (डीन) की नियुक्ति की परम्परा भी इन्हीं दिनों विश्वविद्यालय मे आरम्भ की गई। मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर ओमप्रकाश मिश्रा को मानविकी सकाय के डीन के रूप मे नियुक्त करके विश्वविद्यालय को नई शैक्षिक गतिविधियो की ओर उन्मुख किया गया। इस दिशा में विभिन्न विभागों के प्राध्यापको द्वारा अपने शोध कार्य पर शोध पत्र पढने के लिए सप्तात मे शनिवार का दिन सुनिश्चित किया गया। इसी सिलसिले मे पहला व्याख्यान हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० विष्णुदत्त राकेश का "साहित्य और सस्कृति" पर ९ फरवरी को सम्पन्न हुआ। कुलपति इस अवसर पर अध्यक्ष के रूप मे उपस्थित रहे।

त्रैवार्षिक निर्वाचन

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर जिला जालधर की प्रबन्ध समिति का वर्ष १९९१-९३ के लिए निर्वाचन सम्पन्न हुआ। निम्न अधिकारी चुने गए—

प्रधान—प० हरवन्शलाल शर्मा, जालंधर

मन्त्री—श्री चतुर्भुज मित्तल, जालधर

कोषाध्यक्ष—श्री यशफूल चन्द अग्रवाल, करतारपुर

प्रबन्ध समिति में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार मे संलग्न ५१ सदस्यो को लिया गया।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज घोण्डा दिल्ली ५३ का वार्षिक चुनाव दिनाक २९-१-९१ को धर्माचार्य श्री दिनेश चन्द्र शास्त्री जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री लक्ष्मण दास गुप्त,

मन्त्री—श्री खिल्लुराम आर्य

कोषाध्यक्ष—श्री श्याम सुन्दर आर्य चुने गए।

युवा आर्य नेता डा० आनन्द सुमन के विरुद्ध एक समुदाय द्वारा अभियान

नई दिल्ली ६ फरवरी। आर्य समाज के युवा नेता एवं प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० आनन्द सुमन के विरुद्ध सहारनपुर जनपद में मुस्लिम सम्प्रदाय के हजारो व्यक्तियो ने एक जलूस निकाला और जिला मजिस्ट्रेट डा० हरिकिशन पालीवाल को एक ज्ञापन दिया, जिसमें मांग की गई है कि डा० आनन्द सुमन द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा—को तुरन्त जब्त किया जाय और डा० आनन्द सुमन के विरुद्ध शीघ्र कार्यवाही की जाय। ज्ञातव्य है कि नगर में लगी धारा १४४ को तोड कर हजारो मुसलमानों की भीड़ जिला मजिस्ट्रेट कार्यालय पहुंची। भीड डा० आनन्द सुमन के विरुद्ध कार्यवाही करने के नारे लगा रही थी।

डा० आनन्द सुमन ११ वर्ष पूर्व वैदिक धर्म में दीक्षित हुए थे तथा तभी उन्होंने "मैंने इस्लाम क्यो छोड़ा" नामक पुस्तक लिखी थी। यह पुस्तक अभी तक विश्व की १३ भाषाओ में तथा लगभग ४ करोड़ प्रतियो में प्रकाशित हो चुकी है। इस पुस्तक के माध्यम से देश विदेश के अनेक मुस्लिम या इसाई वैदिक धर्म को स्वीकार करने पर बाध्य हुए हैं।

सहारनपुर तथा उत्तर प्रदेश के अनेक हिन्दू सगठनो तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री सहित, अनेक बुद्धि जीवियो एवं पत्रकारों ने इस आंदोलन को लोकतन्त्र तथा वैचारिक स्वतन्त्रता पर आतकवाद का हमला बताते हुए प्रदेश के मुख्यमन्त्री से आग्रह किया है कि वह इस प्रकार तत्वों के किसी भी आन्दोलन को गम्भीरतापूर्वक न ले। लेखक का कर्तव्य अपनी शोध को जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना है, आवश्यक नहीं कि प्रत्येक पाठक लेखक के विचारो से सहमत हो ही।

आर्य समाज की यह सभा समस्त बुद्धि जीवियों से आग्रह करती है कि वह डा० आनन्द सुमन जैसे क्रांतिकारी एव ओजस्वी लेखक तथा वक्ता के साहित्य को अधिक से अधिक पढ़ें तथा लाभ उठावें।

प्रचार विभाग--आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

पंजाब-कश्मीर का मामला

(पृष्ठ १ का शेष)

कश्मीर की दिन प्रतिदिन बिगड़ती हुई परिस्थितियों पर नियत्रण न किया गया तो वह दिन दूर नही है जब हमारे देश का एक हिस्सा अलग हो जाएगा। कश्मीरी हिन्दुओ के भारत के अन्य भागों मे पलायन को हमारी सरकार रोक नही पाई है, कश्मीर के उग्रवादी पाकिस्तान मे विलय की मांग करते हैं। वे इसे अलग राष्ट्र घोषित करने का स्वर भी बार-बार उठाते हैं। हमारी सरकार को इस दिशा मे भी ठोस एव मजबूत कदम उठाने होगे।

आर्य समाज आग्रह पूर्वक सरकार से माग करता है कि—

(१) पजाब और कश्मीर को सेना के हवाले कर दिया जाये।

(२) साम्प्रदायिकता और विघटनकारी प्रवृत्तियो को समाप्त करने के लिए सख्त कदम उठाये जावे।

(३) केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारे अपने कार्यों से यह सिद्ध करें कि वे शासन करना चाहती हैं तथा किसी भी प्रकार की विघटनकारी शक्तियो को वे अवरोध पैदा नही करने देगी।

२—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा सरकारी सचार माध्यमो, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा सगीत तथा चित्रहार आदि के माध्यम से अश्लील प्रसारणो तथा दृश्यो का कड़ा विरोध करती है।-यह सभा सरकार से मांग करती है कि इनके स्थान पर राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रीय एकता अथवा नवयुवकों के चरित्र निर्माण सम्बन्धी विषयों को प्रोत्साहन दिया जावे।

यदि इन पर प्रतिबन्ध न लगाया गया तो आर्य समाज इनके विरुद्ध राष्ट्र व्यापी आंदोलन छेड़ने के लिए बाध्य होगा।

आर्यवीर दल द्वारा गणतन्त्र दिवस पर नगर समिति का विस्तार

आपको यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा कि आर्यवीर दल (नगर) आर्यमगढ़ द्वारा २६ जनवरी १९९१ के पावन पवित्र राष्ट्रीय पर्व पर नगर के प्रमुख मार्गों पर शोभा यात्रा तथा शाखा स्थल (डी० ए० वी० कालेज के प्रांगण) में ध्वजारोहण के पश्चात् राष्ट्रीय पर्व के सम्बन्ध में आर्यवीरो द्वारा सभा की गई। आर्यवीरों द्वारा राष्ट्रीय पर्व की महत्ता पर भाषण व भजन एवं पुरस्कार वितरित किया गया। सभा का सचालन आर्यवीर दल के कोषाध्यक्ष श्री राजीव कुमार आर्य कर रहे थे। इस अवसर पर लगभग १०० आर्यवीरो ने भाग लिया। अन्त मे ध्वजारोहण के पश्चात् मिष्ठान वितरण के साथ सभा समाप्त की गई।

दूसरे दिन २७ जनवरी १९९१ को पूरे उत्साह के साथ नगर समिति का गठन किया गया। नगर नायक श्री राजकुमार जी, श्री रविन्द्रन नाथ जी नगर सरक्षक, नगर मन्त्री श्री विजय कुमार आर्य (मातबरगंज) तथा शेष कार्यों के संपादन के लिए एक १० सदस्यो की अंतरंग समिति का निर्माण किया गया। इस अवसर पर आर्यवीर दल की उन्नति के सम्बन्ध में कई आर्यवीरों ने अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष मण्डल संचालक आर्यवीर दल श्री रविन्द्र नाथ आर्य थे तथा सभा का सचालन श्री राजीव कुमार आर्य कर रहे थे। इस अवसर पर लगभग ७५ आर्यवीरो ने भाग लिया। सभी आर्यवीरों व अधिकारियों को प्रतिज्ञा दिलाई गई।

--राजीव कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव

आर्य समाज मन्दिर भटिण्डा में दि० ८ फरवरी से १३ फरवरी १९९१ तक सोत्साहपूर्वं विद्वान पं० श्री विश्वामित्र जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद परायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया।

दिनांक १३-२-९१ को पूर्णाहुति से पूर्व माननीय श्री वेदप्रकाश जी एडवोकेट ने 'ओ३म्' ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात् यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। ऋषि लंगर में सैंकड़ों धर्म प्रेमियों ने शान्ति पूर्वक सौहार्दपूर्ण वातावरण में भोजन किया।

●११-१२ फरवरी १९९१ ई० को आर्य समाज कालावाली द्वारा शिवरात्रि का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थी के अनमोल व सारगर्भित प्रवचन हुए।

इस अवसर पर दयानन्द महिला महाविद्यालय, कालावाली मण्डी, जिला सिरसा मे भी बृहद् यज्ञ का आयोजन हुआ। जिसमे चार श्रद्धालु दम्पत्तियो ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां दीं। सभी आगन्तुकों को प्रसाद वितरण के साथ धन्यवाद ज्ञापन किया गया। —ओमप्रकाश वानप्रस्थी

शोक समाचार

बड़े दुख के साथ लिखना पडता है कि आर्य समाज के प्रसिद्ध कवि श्री कस्तूरचन्द जी 'घनसार' की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी का निधन दिनांक ३-२-९१ को हृदय गति रुक जाने के कारण हो गया। आर्य समाज पीपाड़ नगर जोधपुर राजस्थान में श्रीमती लक्ष्मी देवी जी को सब आर्यों ने दो मिनट का मौन रख कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्रद्धांजलि

गत मास दिनांक ७-२-९१ को विश्वभारती अनुसंधान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी) मे, त्यागमूर्ति श्री उदयवीर शास्त्री व मिश्रीलाल को, हुई शोक सभा में श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

पद्म श्री डा० कपिलदेव द्विवेदी ने श्री उदयवीर शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री शास्त्री जी वेद तथा दर्शन मूर्धन्य व प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने दर्शनों का वेदोदय भाष्य करके अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की थी तथा उन्होने स्वाधीनता सग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनकी शिष्य परम्परा में सरदार भगतसिंह जैसे शहीद हुए।

इस अवसर पर अन्य कई गणमान्य व्यक्तियों ने दोनों विभूतियों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त मे सभा अध्यक्ष डा० भारतेन्दु द्विवेदी ने दोनों की सामाजिक सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। आर्येन्दु द्विवेदी (प्रचारमन्त्री)

आर्य महासम्मेलन को बधाई

मैं वेद पीठ के अधिकारियों की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन करने और उसके भव्य रूप से सफल होने पर बहुत बहुत बधाई देता हूं। हमारा देश आज बड़ी विकटसंकटमय परिस्थितियों से गुजर रहा है। ऐसे अवसर पर यह आवश्यक था कि विश्व भर के आर्य समाजियों और, वेद के अनुयाइयों को अपने कर्तव्य से अवगत कराया जाए। और बहुत तेजी से बढ़ते हुए सामाजिक और नैतिक पतन की बाढ़ को रोका जाए। इस अवसर पर जारी किए गए घोषणा पत्र में आज की सभी समस्याओं की समीक्षा की गई और उनके हल के लिए सुझाव दिये गये हैं। हमें आशा है कि इस सम्मेलन में लिये गये निर्णयों पर बड़ी शीघ्रता और तत्परता एवं संयोजित रूपरेखा के अनुसार कार्य किया जाएगा।

जैसा कि आपको विदित है अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ के संस्थापक और प्रेरक श्री मोहन लाल मोहित मोरीशस वाले हमारे प्रधान प्रो० शेरसिंह जी आदि ने इस सम्मेलन की कार्यविधि में यथा सम्भव योगदान दिया। इसी प्रकार इस सम्मेलन के लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए जो भी कार्यभार अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ और इसके अधिकारियो को आप देना चाहें इसे हम सहर्ष स्वीकार करेंगे। हमारी ओर से आदरणीय स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी को इस विशाल सम्मेलन की सफलता के लिए हार्दिक बधाई।

—के० एल० भाटिया
सगठन मन्त्री

ऋषि बोधोत्सव

आर्यसमाज बोटक्लब की ओर से १९ फरवरी १९९१ को ऋषि बोधोत्सव मनाया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्व मे यज्ञ हुआ। श्री जयप्रकाश आर्य, प्रमुख यजमान थे। श्री चुन्नीलाल आर्य तथा श्री तुलसीराम आर्य के भजनोपदेश हुए। प. यश-पाल सुधांशु का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ।

—बलेशकुमार खारी, मत्री

वेद प्रचार

आर्य समाज गारुलिया, २४ परगना (पं. बंगाल) के तत्वावधान मे २४ जनवरी ९१ से १२ फरवरी ९१ तक वेद प्रचार का आयोजन किया गया। जिसमे विभिन्न विद्वान् आर्य भजनोपदेशक पहुंच कर आयोजन को सफल बनाने में सहयोग दिये।

● २७ जनवरी ९१ से ३१ जनवरी ९१ तक—आर्य समाज गारुलिया २४ परगना (पं. बंगाल) का २२ वां वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से ऋग्वेद के मन्त्रों से यज्ञ द्वारा प्रारम्भ होकर भजन एवं वेदोपदेश से सम्पन्न हुआ। जिसका प्रभाव स्थानीय जनता पर उत्तम रहा। इस उत्सव को सफल बनाने मे स्वामी सत्यव्रत वानप्रस्थ, प गोविन्द प्रसाद आर्य "विद्यावारिधि" एव प दयानन्द सत्यार्थी आर्य भजनोपदेशक ने अपने सुन्दर विचारो एव उपदेशो से जनता को कृतार्थ किए।

● १ फरवरी ९१ से ४ फरवरी ९१ तक— गारुलिया के विभिन्न क्षेत्रो मे भजन एव वेदोपदेश का कार्यक्रम उपरोक्त तीनो विद्वानो द्वारा सम्पन्न हुआ।

● ५ फरवरी ९१ से ७ फरवरी ९१ तक— आर्य समाज तेलनी पाड़ा में वेद प्रचार ऋग्वेद के मन्त्रो द्वारा यज्ञ से प्रारम्भ होकर विद्वानो के वेदोपदेश, आर्य भजनोपदेशक के भजन द्वारा कार्यक्रम बडा ही उत्तम ढग से सम्पन्न हुआ। जिसमे स्वामी सत्यव्रत वानप्रस्थ (समस्तीपुर) प गोविन्द प्रसाद आर्य "विद्यावारिधि" छोटा नागपुर आर्य प्रतिनिधि सभा रांची, प. दयानन्द सत्यार्थी (समस्तीपुर) भाग लेकर कृतार्थ किए।

● ८ फरवरी ९१ से ९ फरवरी ९१ तक— काकीनारा मे वेद प्रचार सम्पन्न हुआ।

● १० फरवरी ९१ से १२ फरवरी ९१ तक— खड़दह मे वेद प्रचार के कार्यक्रम मे स्वामी सत्यव्रत वानप्रस्थ, प गोविन्द प्रसाद आर्य "विद्यावारिधि" प. दयानन्द सत्यार्थी के भजन एव उपदेशको को आध्यात्मिक प्रवचन आर्य समाज गारुलिया २४ परगना (पं बगाल) के तत्वाधान में बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

—राजेन्द्र प्रसाद आर्य, मत्री

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 28-2-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९.

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में मथुरा को गुरुधाम विश्व तीर्थ घोषित किया गया

समीक्षा चक्रवर्ती स्वामी वेदर्षि व्यास योगी पूर्व आश्रम नाम महामहोपाध्याय आचार्य विश्वश्रवा व्यास वेदाचार्य ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में अपने भाषण में एक योजना प्रस्तुत की कि इस समय समस्त विश्व के देश देशान्तर के आर्य लोग यहा उपस्थित हैं यह चमत्कार गुरुवर विरजानन्द दण्डी का है जिसने स्वामी दयानन्द को विद्या दान दिया। स्वामी दयानन्द ने मथुरा की जिस कुटी मे बैठकर विद्या ग्रहण करके दीक्षा ली थी वह स्थान भारत वर्ष के उत्तर प्रदेश प्रान्त के मथुरा नगर मे गुरुधाम नाम से प्रसिद्ध है। प्रति वर्ष विश्व के आर्यों को अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करते हुये इसे विश्व तीर्थ घोषित करना चाहिये। हम इसकी दीक्षा शताब्दी मथुरा में मना चुके हैं। जिस दिन स्वामी दयानन्द ने गुरु विरजानन्द दण्डी से विद्या ग्रहण करके दीक्षा ली थी उस तिथि को निश्चित करके दीक्षा महोत्सव नाम का एक त्योहार आर्य पर्व पद्धति में बढाना चाहिये। इस पर्व की पद्धति को सार्वदेशिक धर्मार्य सभा बनाये। वह त्योहार समस्त विश्व मे मनाया जाए। और उस दिन गुरु दक्षिणा के रूप में समस्त विश्व का आर्य जगत् गुरुधाम को धनराशि भेजा करें। उस धन से शब्द शास्त्र को एक गद्दी गुरुधाम मथुरा में चलायी जाये। आर्य महासम्मेलन में उपस्थित विश्व के आर्यों ने आचार्य जी की इस योजना पर अति हर्ष प्रकट किया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने गुरु धाम के इतिहास पर प्रकाश डाला कि यह भूमि सरकार से किस प्रकार ली गयी और बम्बई के प्रताप भाई सूर जी वल्लभ दासजी ने छः मंजिल इमारत का निर्माण कराया। आर्य जगत के वर्तमान नेता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी ने अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में गुरुधाम मथुरा को विश्व तीर्थ घोषित कर दिया और समस्त विश्व के आर्यों ने इस घोषणा का स्वागत और अभिनन्दन किया।

—डा० रूप किशोर शास्त्री

निर्वाचन

आर्य केन्द्रीय सभा, गुडगांव के कार्य संचालन हेतु वर्ष १९९१-९२ के लिये निम्नलिखित पदाधिकारियों का चुनाव किया गया।

—श्री किशनचन्द योरानी, प्रधान
—ओम प्रकाश कालड़ा, महामन्त्री
—श्याम सुन्दर आर्य, कोषाध्यक्ष

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७९६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २० | रविवार, २४ मार्च, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

आर्यजन समाज व राष्ट्र सेवा का व्रत लें

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

नई दिल्ली १६ मार्च। दिल्ली की समस्त आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं की ओर से आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य के तत्वावधान मे आर्य समाज का ११६वां स्थापना दिवस १६ मार्च को सप्रू हाऊस, नई दिल्ली में समारोहपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने अध्यक्षीय भाषण में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुये कहा कि आर्य समाज ने सदैव सभी वर्गों की निस्वार्थ भाव से सेवा की है। स्वामी जी ने कहा कि मैंने तन, मन, धन से अन्तिम क्षण तक आर्य समाज की सेवा का व्रत लिया हुआ है। उन्होने आगे कहा कि सभी आर्यजनो को इस पवित्र दिन समाज व राष्ट्र की उन्नति का संकल्प लेना चाहिए।

समारोह का उद्‌घाटन करते हुये सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान संचालक प० बाल दिवाकर जी हंस ने कहा कि आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानन्द ने मनुष्यता से आर्यत्व की ओर बढ़ने के लिए ही की थी। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय पर भी बल दिया।

इस कार्यक्रम मे भारत साधु समाज के महामन्त्री स्वामी हरिनारायणानन्द ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि सामाजिक व धार्मिक कुरीतियो के उन्मूलन के लिए ब्रह्मलीन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस पावन दिन जिस आर्य समाज की स्थापना की थी उसकी आज पहले से अधिक आवश्यकता है क्योंकि आज देश मे सकीर्ण मनोवृत्तियां बढ़ रही हैं और जगह-जगह नये-नये भगवान पैदा हो रहे हैं।

सुप्रसिद्ध जैन मुनि आचार्य सुशील कुमार ने कहा कि सच्चा आर्य वही है जो अपने आचरण की पवित्रता से ससार मे प्रकाश फैलाता है। इन्हीं अर्थों में भगवान राम, भगवान कृष्ण, भगवान महावीर एव स्वामी दयानन्द सच्चे आर्य थे और हमे भी सच्चा आर्य बनना चाहिये।

इससे पूर्व समारोह मे प्रख्यात वैदिक विद्वान् डा० वाचस्पति उपाध्याय को श्री लालमन आर्य वैदिक विद्वान् पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने उन्हे शाल ओढ़ा कर, स्वामी हरिनारायणानन्द ने स्मृति चिह्न तथा आचार्य जैन मुनि सुशील कुमार ने सम्मान राशि भेंट कर सम्मानित किया। अपने सम्मान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुये डा० वाचस्पति ने कहा कि संस्कृत का प्रचार व प्रसार करना आर्य समाज का राष्ट्रीय कार्यक्रम होना चाहिए। आर्य समाज से सम्बद्ध सभी स्कूलो मे संस्कृत अनिवार्यत. पढ़ाई जानी चाहिए अन्यथा उन स्कूलो के नाम के आगे से दयानन्द' का शब्द हटा देना चाहिये।

डा० आनन्द सुमन ने कहा कि आर्यों को प्रतिदिन यज्ञ करना चाहिये तथा भोजन से पूर्व एक वेद मन्त्र का अर्थ सहित पाठ अवश्य करना चाहिए। कार्यक्रम का सुचारु संचालन करते हुये सभा मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने स्वामी दयानन्द व आर्य समाज द्वारा समाज व राष्ट्र की बहुमूल्य सेवाओं का स्मरण किया।

इससे पूर्व आर्य केन्द्रीय सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री सूर्य देव, आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य श्रेष्ठी श्री सत्यानन्द, आर्य प्रान्तीय सभा की श्रीमती सरला मेहता, श्रीमती कृष्णा चड्ढा आदि ने अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। संगीताचार्य श्री गुलाब सिंह राघव ने ईश्वर-भक्ति एव 'नादान लोगों ने उस योगी का भेद न पाया' भजनों द्वारा भारी सख्या में उपस्थित गणमान्य महानुभाव व आर्य जनों को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

—विमल कान्त शर्मा मन्त्री

डा० श्यामसिंह शशि सम्मानित

दिल्ली के उपराज्यपाल श्री मार्कण्डेय सिंह ने हिन्दी अकादमी द्वारा १३ मार्च को राजनिवास पर आयोजित "सम्मान अर्पण" समारोह में प्रख्यात साहित्यकार डा० श्यामसिंह शशि को उत्कृष्ट साहित्य सेवा के लिए २१ हजार रुपये का चैक, शाल, स्मृति-चिन्ह व प्रशस्ति पत्र भेंट कर अलकृत किया।

डा० शशि एक जाने माने कवि व लेखक हैं। डा० शशि का हिन्दी व अंग्रेजी पर समान अधिकार है। विद्वान लेखक डा० शशि ने १०० से अधिक पुस्तकें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी हैं। डा० शशि एक सुप्रसिद्ध नृविज्ञानी भी हैं। आजकल आप प्रकाशन विभाग, सूचना व प्रसारण मन्त्रालय में निदेशक व अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डा० शशि को वर्ष १९९० में भारत सरकार ने पद्मश्री सम्मान से अलकृत किया था। उनके इस साहित्य सम्मान से आर्य जगत अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है।

इस समारोह मे शलाका सम्मान से अलकृत श्री गिरिजा कुमार माथुर को ५१ हजार रुपये शाल, स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर प्रख्यात प्रगतिशील आलोचक शिवदान सिंह चौहान, श्रीमती मृदुला गर्ग, डा० कमल किशोर गोयनका, प्रो० सूरजभान सिंह, श्री बांके बिहारी भटनागर व श्री राजेन्द्र माथुर प्रत्येक सम्मानित व्यक्तित्व को २१ हजार रुपये का चैक, शाल, स्मृति चिन्ह व प्रशस्ति पत्र भेंट कर अभिनन्दित किया गया। प्रो० अनिल विद्यालंकार की अनुपस्थिति मे उनकी धर्म पत्नी ने पुरस्कार ग्रहण किया।

मुख्य अतिथि श्री मार्कण्डेयसिंह ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज के आभूषण साहित्यकार द्वारा रचा गया साहित्य समाज का दर्पण होता है और इन जाने माने साहित्य सेवियो ने अकादमी का सम्मान स्वीकार कर हमें गौरवान्वित किया है।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर, श्री अक्षय कुमार जैन, श्री गिरिजा कुमार माथुर ने भी प्रेरक विचार रखे। अकादमी के सचिव डा० नारायण दत्त पालीवाल ने सभी का अभिनन्दन करते हुए अकादमी की गति विधियों पर प्रकाश डाला। लब्ध प्रतिष्ठ समालोचक प्रो० विजयेन्द्र स्नातक ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य महानुभावो के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

—विमल कान्त शर्मा

प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | परामर्श—डा० धर्मपाल | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री

जल के आचमन मन्त्रों का तात्पर्य

—धर्माचार्य दिनेश चन्द्र शास्त्री

ओ भु र्भुवः स्वः।
ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा।
तस्यास्ते पृथिवि देव यजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥
यजु० अ० ३ म० ५॥

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती स्व-कर्म काण्ड के महान् ग्रन्थ संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में इन दोनों मन्त्रों से पूर्व, जल का आचमन एवं जल से अंगो का स्पर्श करना लिखा है जो कि इस प्रकार श्री महाराज संस्कार विधि में लिखते है—"अपने-अपने जल पात्र से सब जने जो कि यज्ञ करने को बैठे हों, वे इन मन्त्रों से तीन-तीन आचमन करें अर्थात् एक-एक से एक-एक बार आचमन करें। वे मन्त्र ये हैं—

ओम् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥१॥ इससे एक आचमन।

अर्थ :—हे सर्वरक्षक भगवन्! अविनाशी अमृत स्वरूप प्रभो! तू मेरे नीचे का बिछौना है अर्थात् अपने भीतर से प्राप्त होने वाले रोगों एवं दुःखो के रक्षक हो, आच्छादक हो। यह मैं यथार्थ रूप से जानता हूं।

ओम् अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥२॥ इससे दूसरा आचमन।

अर्थः—हे अमृत-अविनाशि स्वरूप परमात्मन्...! तू मेरे ऊपर का ओढना-ढक्कन है अर्थात् बाहर से होने वाले दुःखों के ढकने वाला परम रक्षक है। स्वाहा-यह मैं उचित रूप से जान रहा हूं।

ओम् सत्य यशः श्रीर्मयि श्रीःश्रयतां स्वाहा ॥ ३ ॥ इससे तीसरा आचमन।

भावार्थः—हे रक्षक परमेश्वर! सत्य ज्ञान, सत्य भाषण, सत्य व्यवहार, यश-कीर्ति-'कीर्तियंस्य स जीवति, कान्ति, धन-सम्पत्ति, आरोग्यता, ऐश्वर्य, शोभा, तेजस्विता मुझमें आश्रय पावें या मुझे प्राप्त होवें। यह मैं आपसे सत्य कहता हूं, सत्य प्रार्थना करता हूं कि इनको पाने का प्रयत्न करता रहूगा। ऐसी मेरी शुभ कामना है। इससे तीसरा आचमन करने के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्रो से जल ले करके अगो का स्पर्श करे।

ओम् वाङ् मेआस्येऽस्तु ॥ इस मन्त्र से मुख,
ओम् नसो मे प्राणोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से नासिका के दोनो छिद्र,
ओम् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों आखें,
ओम् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों कान,
ओम् बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनो बाहु,
ओम् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ॥ इस मन्त्र से दोनों जघा और
ओम् अरिष्टानि मेअङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥ पारस्कर गृ० ॥ इस मन्त्र से दाहिने हाथ से जल स्पर्श करके मार्जन करना।

आर्य जगत् के वैदिक विद्वानो पुरोहित लोगों एवं उपदेशक मान्य लोगों को लाभ हो। ऐसा मेरा विचार है कि जिससे इस क्रम मे एक विधि हो। ध्यान दीजिए-यहा मैं कुछ आर्य ग्रन्थो का जो कि अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक सन्यासी एव आर्य नेता तथा उत्तम लेखक रहे हैं वे महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज थे। उनकी 'भूमिका' आर्य पर्व पद्धति पुस्तक पर है तथा तत्काल आर्य नेता श्री राम गोपाल शाल वाले यशस्वी प्रधान सार्वदेशिक आर्य सभा नई दिल्ली का 'निवेदन' रूप लेख 'आर्य पर्व पद्धति' पर है जिसके महान् लेखक वैदिक विद्वान् श्री प० भवानी प्रसाद जी हल्दौर (जि० बिजनौर निवासी) थे। इस पुस्तक का प्रकाशन सार्वदेशिक आर्य सभा ने किया है। सामान्य पर्व पद्धति' लेख मे लिखा है "महर्षि दयानन्द प्रोक्त संस्कार विधि ग्रन्थ के निम्नलिखित विधानानुसार ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, का पाठ करके सामान्य होम करें।" इस पुस्तक के पृष्ठ उनसठ पर लिखा है "'आचमन—यज्ञ मे उपस्थित यजमान और पुरोहित अपने-अपने जल मन्त्रो से उन मन्त्रो से तीन आचमन करें' इस प्रकार आचमन मन्त्रो का एव अंग स्पर्श मन्त्रों से जल द्वारा स्पर्श करने का—'ओ भूर्भुवःस्वः। तथा ओ भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना०' 'अग्न्याधान इन दो मन्त्रो से पूर्व लिखा हुआ क्रम है। ऐसे ही 'आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से प्रकाशित 'आर्य पर्व पद्धति' में

(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द वीर महान्

—पंडित नन्दलाल निर्भय सिद्धान्त शास्त्री

भारत माता के तपः पूत, स्वामी श्रद्धानन्द वीर महान्।
भूलेगा न जगत् आपका, देश भक्त नेता बलिदान ॥
वैदिक मर्यादा के पालक, धर्म रीति के थे संचालक।
देश भक्त बलवान बनाए, थे तुमने जो लाखों बालक ॥
गुरुकुलों का जाल बिछाया, किया अचम्भित सर्व जहान।
भूलेगा ना जगत आपका, देश भक्त नेता बलिदान (१)
तुम जो कहते थे करते थे, दुखियो के संकट हरते थे।
ईश्वर विश्वासी पक्के थे, नहीं पापियों से डरते थे ॥
सुनकर नाम आपका थर्राते थे, गुन्डे और बेईमान।
भूलेगा ना जगत आपका, देश भक्त नेता बलिदान (२)
ऋषिवर दयानन्द के चेले, देश धर्म हित संकट झेले।
अत्याचारी अंग्रेजो के, शोणित से होली खेले ॥
स्वतन्त्रता का नाद बजाया, विकट वीरता की थे खान।
भूलेगा ना जगत आपका, देश भक्त नेता बलिदान (३)
तुम तो थे सचमुच सच्चे नेता, अद्भुत त्यागी, वीर विजेता।
परम तपस्वी, महा साहसी, नाम विश्व श्रद्धा से लेता ॥
मानवता के आप पुंज थे, भारत माता की थे शान।
भूलेगा ना जगत आपका, देश भक्त नेता बलिदान (४)
जाति-पाति का भेद मिटाया, छुआ-छात कलंक बताया।
मनुष्य मात्र की जाति एक है, पावन वैदिक पथ दर्शाया ॥
"कर्म प्रधान आपने माना" दिये हजारों थे व्याख्यान।
भूलेगा ना जगत आपका, देश भक्त नेता बलिदान (५)
शुद्धि की तलवार चलाई, मिटती हिन्दु कौम बचाई।
देख वीरता विकट तुम्हारी, दुष्टो की सेना थर्राई ॥
धर्म की रक्षा में हे स्वामी, हस कर हुए आप कुर्बान।
भूलेगा ना जगत आपका, देश भक्त नेता बलिदान (६)

ग्राम पोस्ट—बहीन जिला फरीदाबाद (हरियाणा)

रोमांचक दृश्य

—श्री सत्य भूषण 'शान्त'

बाईस मार्च को स्वामी श्रद्धानन्द स्वय दिल्ली आए।
देखा जनता है सुप्त सभी आतकवाद से घबराए ॥
आतकवाद हा नौकरशाही के प्रमाण का परिचायक।
आतकवाद दिल ओ दिमाग पर छाया हुआ घोर घातक।
चहुं ओर आग थी लगी हुई, पर मुख सबका था बन्द हुआ।
स्वामी जी का आगमन जान, नैराश्य कि किंचित् मद हुआ।
था तीस मार्च का दिवस, कि जब चांदनी चौक के घटाघर।
पर खड़ा हुआ एक सन्यासी निर्भीकमना प्रबुद्ध पल पल ॥
गुरखों ने किरचें तानी ज्यो सम्मुख निर्भय वह बोल उठा।
छेदो छाती सामने खड़ा यों निज वक्षःस्थल खोल उठा ॥
आया उस क्षण सर्जेण्ट वहां इंगित से किंचित् समझाया।
गुरखों को लो यह तुरन्त हटा, होगा अनर्थ यह बतलाया ॥
उस क्षण दिल्ली का सिंहासन चरणो पर यति के नत डोल गया।
अविचल सन्यासी प्राण हथेली पर रखकर यूं बोल गया ॥
साक्षी दिल्ली के लोग और साक्षी सुप्रसिद्ध इतिहास अहो।
जन जन मानस जीता जिसने श्रद्धायुत श्रद्धानन्द सुनो ॥
कह "शान्त" न वर्णन कर सकता, रोमांचक था वह दृश्य महा।
गौरागों का उर कांप गया लख सन्यासी का तेज महा ॥

१२, मुनिरका विहार नई दिल्ली-६७

अमर शहीद सरदार भगत सिंह

सम्पादकीय

आज भारत स्वतन्त्र है। भारत स्वाधीन है। यहां पर हमारा अपना स्वराज्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्भवत स्वराज्य तो चाहा है, पर उसने सुराज्य भी चाहा होगा। महात्मा गांधी ने स्वाधीनता के लिए लम्बा संघर्ष किया। उनके नेतृत्व में अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने कार्य किया। लाला लाजपत राय, प० मोतीलाल नेहरू, सरदार पटेल, सुभाष चन्द्र बोस, पं० जवाहर लाल नेहरू और अन्य अनेक नाम जैसे मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, सरहदी गांधी, सरदार बलदेव सिंह, सरोजिनी नायडू के नाम इस पंक्ति मे लिए जा सकते हैं। पर कुछ ऐसे भी नाम हैं जिन्होने ब्रिटिश हुकूमत को हिला कर रख दिया था। उनके नाम से ही बरतानिया हुकूमत कांप उठती थी और वे नाम हैं—मगल पाण्डे श्याम जी कृष्ण वर्मा, लक्ष्मी बाई, नाना साहब, विनायक दामोदर सावरकर लाला हरदयाल, मदन लाल धीगड़ा, तिलक, सरदार भगतसिह, अरविन्द घोष, खुदीराम बोस, जितेन्द्र सान्याल, सुभाष चन्द्र बोस, भाई परमानन्द, गणेश शकर विद्यार्थी रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्लाह खां, मान्मथनाथ गुप्त, हेमू कलानी और अनेक अन्य नाम जो स्मरणीय है।

इन वीर नौजवानों ने देश की आजादी के लिए अपना लहू दिया था। उन्होने कभी न सोचा था कि देश के रहनुमा अपने निजी स्वार्थों के लिए रोज सरकारे बनाएगे और रोज सरकारें तोडेंगे। वे देश और जनता की फिक्र कम करेंगे, अपनी खुद की फिक्र ज्यादा करेंगे। राजा का कर्त्तव्य है कि अपनी जनता की फिक्र करे, पर यहां तो भोली जनता को ठुकराया जाता है, चारों और स्मगलरों को सिर पर बिठाया जाता है। न जाने कितने एम० पी०, एम० एल० ए० हैं जिनके खिलाफ न्यायालय मे केश चल रहे हैं। उन्हे माफिया सरगनाओ की सहायता लेने मैं कोई एतराज नहीं है।

उन वीरो की कुरबानी एक दिन तो रग अवश्य ही लाएगी। सरदार भगत सिंह के खानदान मे देश भक्ति कोई नई बात न थी। उनके पिता सरदार किशन सिंह बड़े धीर गम्भीर और ज्ञानी व्यक्ति थे, पर एक बार उन्हे भी पुलिस से बच कर नेपाल भागना पड़ा था। उनके चाचा अजीत सिंह लम्बे समय तक नजरबन्द रहे थे। एक दूसरे चाचा सुवर्णसिंह भी क्रान्तिकारी आन्दोलनों से जुडे थे। सरदार भगत सिंह का तो जन्म ही ऐसे क्रान्तिकारी माहौल में हुआ था।

सरदार भगतसिह ने डी ए. वी. स्कूल से मैट्रीकुलेशन पास किया था। आर्य समाजी सस्कारो ने उनके देश भक्ति के सस्कारो को और पक्का कर दिया था। आगे चल कर उनका परिचय सुखदेव, भगवती चरण, यशपाल, जयचन्द्र विद्यालकार और राजगुरु से हुआ। जयचन्द्र शचीन्द्र नाथ सान्याल के सम्पर्क में आ चुके। जयचन्द्र भगत सिंह के अध्यापक थे। एक कहावत है—गुरु गुड़ ही रह गये और चेले चीनी हो गए। यह कहावत भगत सिंह के जीवन पर खरी उतरती है।

एफ ए. करने के बाद भगत सिंह के विवाह की बात चली, पर उनके मन में तो कुछ और ही था। वे एक युवती का जीवन बरबाद न करना चाहते थे। वे घर से भाग निकले और दिल्ली जाकर 'अर्जुन' पत्र मे काम करने लगे। एक बार डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने बताया था कि भगत सिंह एक बार पूरा एक महीना उनकी कोठरी मैं रहे थे। घर वालो को उनके दिल्ली प्रवास का पता चला तो वे कानपुर चले गये और वहा पर गणेश शकर विद्यार्थी के 'प्रताप' मे काम करना शुरू कर दिया। शहीद भगत सिह हिन्दी जानते थे और हिन्दी में लिखते भी थे। वहां पर उन्होने अपना नाम बलवन्त सिंह रख लिया था। इस जगह का पता भी घर वालों को लग गया। उन्हे सन्देशा मिला कि उनकी मा बीमार है। वे अपनी मां को बहुत प्यार करते थे। मा से मिलने वे पजाब पहुचे। उन दिनों सारे पजाब में 'गुरु का बाग' वाला आन्दोलन चल रहा था। इसका उद्देश्य बहुत ही पवित्र था। कुछ सिख महन्तो बडी-बडी जायदादों पर कब्जा कर

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(३ मार्च, ९१ के अंक से आगे)

यह बात १९५० की है। मैंने अपना एक लेख जो षट्दर्शन की किसी समस्या पर था, आर्य जगत में भेजा, वह तुरन्त छप गया और तब से आर्य सामाजिक पत्रों मे लेख छपाने का मेरा मार्ग ही खुल गया। वह दिन और आज का दिन अब तक मेरे हजारों लेख आर्य सामाजिक पत्रो मे छप चुके हैं। किन्तु मेरी प्रथम रचना आर्य जगत में छपी, इसका मैं ऐतिहासिक महत्त्व मानता हूं। इस पत्र के अनेक सम्पादकों के कार्य काल में मेरी सैंकड़ो रचनायें छपी। सर्वश्री राम कृष्ण शास्त्री, रामचन्द्र शर्मा, अजीत सिंह सत्यार्थी, प० त्रिलोकचन्द शास्त्री और अब पं० क्षितीश वेदालंकार इन सभी के सम्पादन काल मे मैंने आर्य जगत में अपने लेख प्रकाशनार्थ भेजे हैं।

नगर की तीनो प्रमुख आर्य समाजों ने आर्य पर्वों को सामुहिक रूप से मनाने तथा पारिवारिक सत्संगों का आयोजन करने के विचार से केन्द्रींय आर्य समिति का गठन किया। श्री भजन सिंह माटी इसके प्रधान चुने गये। मुझे उसका सयोजक चुना गया। कुछ वर्षों तक केन्द्रीय आर्य समिति ने अच्छा कार्य किया, किन्तु धीरे धीरे इसका कार्य शिथिल होता गया। केन्द्रीय समिति के उत्साही सदस्यो मे सेना की एम. ई. एस के. एस. डी. ओ. श्री ओंकारनाथ सूद का उल्लेख आवश्यक है। वे आर्य समाज रातानाडा के प्रतिनिधि के रूप मे केन्द्रीय समिति मे हमारे सहयोगी थे।

नगर आर्य समाज की ओर से श्रावणी उपाकर्म का पर्व श्रावण पूर्णिमा को विशेष समारोह से मनाया जाता था। इस दिन प्रात: समीपवर्ती मारवाड़ की पुरानी राजधानी मंडोर के उद्यान में हरी घास के लान पर पर्व यज्ञ पूरी श्रद्धा तथा विधि के साथ किया जाता। मैं ही इस यज्ञ का ब्रह्मा रहता था। यज्ञोपवीत परिवर्तन, वेद पाठ आदि सभी कृत्य अत्यन्त अलोपेन वातावरण मे सम्पन्न होते थे। इस अवसर पर जो यज्ञ होता उसमें यजुर्वेद के रुद्राध्याय तथा पुरुष सूक्त का विशेष रूप से पाठ किया जाता। मेरे मन मे श्रावणी को लेकर जो श्रद्धा और आस्था उन दिनो मे उत्पन्न हुई वह आज भी यथावत है, किन्तु अब इस अवसर पर किए जाने वाले यज्ञादि कर्मकाण्ड वैसे श्रद्धायुत वातावरण में सम्पन्न नही होते। केवल औपचारिकता ही पूरी की जाती है।

रातानाडा आर्य समाज की भी अपनी पृथक कहानी है। यह समाज मदिर गत शताब्दी के अन्तिम दशक में महाराज कर्नल प्रतापसिंह जी की प्रेरणा तथा उनके द्वारा एकत्र धन राशि के निर्मित हुआ था। किन्तु जिस ठेकेदार ने समाज मन्दिर बनाया उसको कुछ रुपया देना बाकी रह गया। कालान्तर मे परिस्थितिया बदल गई तो इस मन्दिर की आर्य समाज के तत्कालीन अधिकारियो ने एक जागीरदार गुढा के राणा को बेच दिया और ठेकेदार की बकाया रकम को भुगतान कर दिया। १९२८ ई० मे जोधपुर में नगर आर्य समाज का गठन नये सिरे से किया गया क्योंकि पुराना समाज मन्दिर बिक जाने के कारण वहा तो आर्य समाज की किसी गति विधि के लिए अवकाश ही नही रह गया था। नगर आर्य समाज के सदस्यो को उस समय के शहर कोतवाल, पाल ठिकाने के ठाकुर रणजीत सिंह जी ने गुलाब सागर तालाब के एक घाट पर बना एक बरामदा आर्य समाज के कार्य के लिए दे दिया। इस बरामदे मे इससे पहले आवारा मुसलमान फकीर बैठे रहते थे जो घाट पर पानी भरने के लिए आने वाली स्त्रियो से छेड-छाड़ करते। अब आर्य समाज नगर का निर्माण होने पर इसके कुछ प्रमुख सदस्यो ने आर्य समाज जोधपुर के भूतपूर्व मन्त्री श्री लक्ष्मण आर्य को प्रतिवादी बना कर एक दीवानी मुकद्दमा दायर किया। श्री आर्य पर यह अभियोग लगाया गया कि उन्होने आर्य-समाज के धर्म मन्दिर को, जो पूजा स्थल की श्रेणी मे आता है, एक व्यक्ति को बेच कर कानून का उल्लघन किया है। कोई भी व्यक्ति किसी पूजा स्थल को निजी हैसियत से नही बेच सकता। (क्रमशः)

जल के आचमन मन्त्रों का तात्पर्य

(पृष्ठ २ का शेष)

क्रम छपा है। इसी प्रकार वैदिक वाङ्मय के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् अनेक प्रामाणिक ग्रन्थों के लेखक, पद वाक्य प्रमाणज्ञ सर्व तन्त्र स्वतन्त्र श्री प० युधिष्ठिर मीमासक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान् जो कि 'श्रौत तथा स्मार्त ग्रन्थो एवं प्राचीन नवीन सस्कृत व्याकरण एव मीमांसा के प्रकाण्ड पण्डित हैं। स्वरचित 'वैदिक नित्य कर्म विधि' पुस्तक मे बृहद् यज्ञ विधि में लिखते हैं यज्ञ का क्रम इस प्रकार होना चाहिए—'ईश्वर स्तुति-प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, आचमन, अग स्पर्श, अग्न्याधान, इत्यादि। दैनिक अग्निहोत्र विधि में लिखते हैं—'क्योकि यज्ञीय कर्म आचमन के बिना आरम्भ नहीं होता। अतः महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसारेण अग्न्याधान से पूर्व ही आचमन आदि करे। वैदिक कर्मकाण्ड के महान् विद्वान् यति-सन्यासी-पूज्य श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज इसी प्रकार स्वरचित 'शंका-समाधान' लेख माला ग्रन्थ के प्रश्नोत्तर में लिखते हैं। इन श्रौत और स्मार्त वैदिक ग्रन्थों के एव ब्राह्मण ग्रन्थो के प्रख्यात आर्य जगत् के वैदिक विद्वान् इन यतिवर श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती की भूरि-भूरि प्रशसा श्री स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज भी करते रहते हैं। श्री महाराज 'शंका-समाधान' पुस्तक में इस प्रकार लिखते हैं—'परम वैदिक, वेद मय महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज वेद पाठ की इस परम्परा को पुनर्जीवित करने का ध्यान न रखते यह कभी सम्भव न था। वेद की रक्षा का यह उत्तम उपाय उनकी दृष्टि में अवश्य था। इसलिए उन्होने समस्त शुभ कार्यों के आरम्भ में सर्व साधारण के लिए वेद पाठ के रूप मे ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना, स्वास्ति वाचन, शान्ति करण के पाठ का विधान किया। सर्वत्र एकरूपता के लिए निश्चित मन्त्रो का पाठ महर्षि ने सस्कार विधि के आरम्भ मे देकर सर्वदा के लिए हमें वेद पाठ के सुपथ पर डाल दिया। भूल यह हो रही है कि यज्ञ कर्म करने वाले लोग ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के आरम्भ से ही यज्ञ का शुभारम्भ समझ लेते हैं। जबकि वास्तव मे ऐसा नहीं है अपितु...वेद पाठ के ये तीन अलग-अलग स्वतन्त्र कर्म हैं [जबकि स वि के सामान्य प्रकरण मे ऐसा नही है] प्रत्येक सस्कार मे जहा-जहां महर्षि ने आवश्यक समझा वहा-वहा इनका विधान कर दिया है। क्योंकि वेद पाठ के आरम्भ मे कही भी आचमन तथा अंग स्पर्श का विधान पूर्वोक्त मन्त्रों से (स.वि) में नही है। अत: हमारे महर्षि आचार्य ने इनसे पहले आचमन करने का विधान नहीं किया। देखिए श्री महाराज सस्कार विधि का शुभारम्भ करते हुए लिखते है कि 'सब सस्कारो के आदि मे निम्नलिखित मन्त्रो का पाठ और अर्थ द्वारा एक विद्वान् व बुद्धिमान ईश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना स्थिर चित्त होकर परमात्मा मे ध्यान लगा के करें और सब लोग उसमें ध्यान लगाकर सुनें और विचारें'। पवित्रता की दृष्टि से इस वेदपाठ से पूर्व सब आर्यजनो को मुख हाथ और पाव प्रक्षालन अवश्य कर लेना चाहिए। ध्यान रहे वेद पाठ के आरम्भ मे कहीं भी आचमन तथा अग स्पर्श का विधान नही है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने भी इनके आरम्भ मे आचमन करने का विधान नहीं किया। अत वेद पाठ रूप इन तीनों कर्मों के आरम्भ में आचमन तथा अग स्पर्श करना विधि का अग न होने से उचित नही। सब लोग अपने आसनों पर बैठ कर आचमन तथा अग स्पर्श करके यज्ञ का शुभारम्भ करें। यज्ञानुष्ठान का आरम्भ यहीं से होता है न कि ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के मन्त्रो के आरम्भ से। इसलिए संस्कार विधि के सामान्य प्रकरणानुसार आचमन यही पर करना उचित है इससे पहले नही करे। आचमनादि की विधि को सस्कारविधि के विपरीत महर्षि के विरुद्ध अपनी ओर से अप्रसग न करे। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति सस्कार विधि की प्रक्रिया के अनुसार ही आचमनादि के पश्चात् यज्ञानुष्ठान करे अपनी बात न चलावें और न बुद्धिमान स्वाध्याय चलने दे, व अपनी विधि को उद्देश्य न रखें। अत: प्रत्येक पुरोहित, विद्वान् उपदेशक को चाहिए श्री महाराज के सामान्य प्रकरण सस्कार विधि के मन्तव्यानुसार ही आचमनादि करें। अन्यथा न करें। सर्वत्र यज्ञ मे एक रूपता करें। यज्ञ मन्त्रो पर आगे विचार करेंगे। मेरे पास अनेकों प्रमाण हैं, विस्तार भय से नही लिखा है। बुद्धिमान जन इस यथार्थ को ग्रहण करें। किमधिकम्।

आर्य समाज दीवान हाल,
दिल्ली-११०००६

आर्य और अपेक्षाएं

संग्रहकर्ता—मनोज कुमार शास्त्री

"एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति का होना दुष्कर है। सब उन्नत्तियों का केन्द्र स्थान ऐक्य है। जहां भाषा, भाव औ भावना मे एकता आ जाए, वहां सागर में नदियों की भांति सारे सुख एक-एक करके प्रवेश करने लगते हैं।

(सत्यार्थ प्रकाश)

आज देश विषम परिस्थितियों से गुजर रहा है। अनेक सकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसका मूल कारण है वेद-विरुद्ध शासन व्यवस्था। जिससे आज देश में गृह-युद्ध जैसी विषम स्थिति पैदा हो गई है। अत: देशवासियों (आर्यों) का यह परम कर्त्तव्य है कि देश को अवनति से बचाए अपने जिम्मेदारियों से परिचित हों। तथा उन्हें ईश्वर-आज्ञा मान उनका धर्मयुक्त पालन भी करें। आज का नवयुवक वर्तमान राजनीति, राजतन्त्र तथा दूषित शिक्षा नीति से त्रस्त है। वह परित्राण चाहता है, हल चाहता है।

आर्य हमारा नाम है, वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है, सत्य हमारा कर्म॥

क्या हम स्वयं को 'आर्य' कह गर्व अनुभव करते हैं—यदि करते हैं, वास्तव में आर्य राष्ट्र बनाना चाहते हैं, तो आत्मनिरीक्षण करें कि क्या हम—

— वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं?
— क्या हमारे पास चारों वेद हैं?
— गौ पालन/सवर्धन, गौ रक्षा, व गौ दुग्ध प्रयोग करते हैं?
— नियमित वेद पाठ तथा दोनों समय संध्या करते हैं?
— वैदिक पद्धति से सभी सस्कार करते/करवाते हैं?
— वेदानुकूल आचरण करते हैं। हमारी दिनचर्या, आचार-विचार आहार-विहार आदि वेदानुकूल है?
— गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में सहायक हैं?
— शाकाहार के स्वास्थ्यप्रद, आध्यात्मिक प्रभावो का प्रचार-प्रसार करते हैं?
— पंच महायज्ञ का पालन करते हुए अपनी सन्तान को भी इसकी शिक्षा देते हैं?
— अपने लड़के-लड़की का विवाह सस्कार गुण, कर्म, स्वभाव को ही मुख्य मानकर करते हैं। अन्तर्जातीय विवाह के समर्थक हैं?
— विवाह के अवसर पर दहेज-प्रथा की उपेक्षा करते हैं?
— स्वय व अपनी सतान को सस्कृत पढ़ने-पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं?
— अपने परिवार के सभी सदस्यो (१८ वर्ष से ऊपर) की आर्य समाज की सदस्यता प्राप्त की है व नियमित आर्य समाज मंदिर जाते हैं।
— आर्य समाज के सभी सम्मेलन, उत्सव, सत्संग, मे बिना किसी द्वेष भावना के परिवार सहित व इष्ट मित्रो सहित भाग लेते हैं?
— आर्य समाज के नियमों का पालन करते हैं?
— पुरोहित, आचार्य कर्मकाण्ड कर्त्ता का यथायोग्य सम्मान करते हैं?
— उन्हें सेवकादि की हीन दृष्टि से तो नहीं देखते हैं?
— वेद प्रचार हेतु अपनी पवित्र आय का दशमांश स्वेच्छा से देते हैं, तथा अपनी सन्तान को भी प्रोत्साहित करते हैं?
— वैदिक पत्र-पत्रिकाओ मे नियमित अध्ययन की रुचि रखते हैं?
— वैदिक मान्यताओ के विरुद्ध छपे लेख आदि पर लिखित विरोध प्रतिक्रिया व्यक्त करते हे?
— अनार्ष ग्रन्थों का अध्ययन वर्जित मानते हैं?
— निर्दोष, विद्वान् साधु, दीन जनों का सहयोग तन-मन व धन से करते हैं?

यदि हम इन सभी आचरणो के प्रति उत्तरदायी हैं सजग हैं, तो आर्य हैं, अन्यथा आज ही संकल्प लें, उक्त सभी बातों पर विशेष ध्यान देंगे।

—शेखपुरा, मुंगेर (बिहार)

आर्य वीर दल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली

शहीद दिवस

दिनांक	: रविवार, २४ मार्च, १९९१ प्रात: ११-०० बजे
स्थान	: आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
आशीर्वाद	: श्री स्वामी आनन्द बोध जी सरस्वती
अध्यक्षता	. श्री महाशय धर्मपाल जी
ध्वजारोहण	: श्री बंशीलाल पाहूजा
मुख्य अतिथि	: श्री ओ३म् प्रकाश आहूजा
पारितोषिक वितरण	: श्री चमन लाल ग्रोवर
मुख्य वक्ता	: डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, प. बाल दिवाकर हस
	: श्री राम नाथ सहगल, डा० शिव कुमार शास्त्री,
	: श्रीमती सरला मेहता, श्री खुशी राम शर्मा,
	: डा० ओ३म् वीर शास्त्री, प० प्रेम चन्द श्रीधर

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

—: निवेदक :—

प्रियतम दास रसवन्त	डा० ज्ञान प्रकाश शर्मा	ईश कुमार नारंग
अधिष्ठाता	संचालक	महामंत्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

रखा था आन्दोलन का उद्देश्य था कि उनसे ये जायदादें लेकर सिख समाज को सौंप दी जाए। सरदार भगतसिंह ने भी इस आन्दोलन मे मदद की थी।

इन्ही दिनों बंगाल में गोपी मोहन शाहा एक अंग्रेज को मार कर शहीद हो गये। गांधी जी ने उनकी बड़ी निन्दा की, पर देशबन्धु चित्तरजनदास ने उनकी बड़ी प्रशंसा की थी। भगत सिह उस समय लायलपुर में थे। उन्होने क्रान्तिकारी पक्ष का समर्थन किया था। इस पर पुलिस ने भगत सिंह पर राजद्रोह का मुकदमा चलाना चाहा था। काकोरी केस में लाहौर के उपदेशक नाम से जिस व्यक्ति का उल्लेख आया था, वह भगत सिह ही थे। इस केस मे रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाकउल्लाह को फासी की सजा दी गई थी तभी से भगतसिह और ज्यादा सक्रिय हो गए।

कांग्रेस के नेतृत्व में साईमन कमीशन का बायकाट चल रहा था। २० अक्तूबर १९२८ को यह कमीशन लाहौर पहुचा। लाला लाजपत राय पर लाठिया पड़ी और वे शहीद हो गये। आन्दोलन ने जोर पकड़ा। राष्ट्रीय अपमान का बदला लेने के लिए भगत सिंह, राजगुरु आजाद और जयपाल को नियत किया गया। सैण्डर्स नामक पुलिस अधिकारी पर हमला किया गया। वह मारा गया और क्रान्तिकारी भाग निकले। भगत सिह दुर्गादेवी के सहारे बाहर निकल पाये थे। उन्होंने देश को 'वन्देमातरम्' का नारा देने के लिए कमर कस ली। कानपुर के बटुकेश्वरदत्त को लेकर ८ अप्रैल १९२९ को दिल्ली में असेम्बली हाल मे बम डाला। भगतसिह के साथ उनके कई साथियो पर मुकदमा चला। भगत सिह राजगुरु और सुखदेव को फांसी की सजा हुई और कुछ साथियों को काले पानी की सजा मिली।

२३ मार्च १९३१ को तीनों रहनुमाओ को फांसी दे दी गई। अन्त समय मे भगतसिह ने लिखा था—

कोई दम का मेहमां हूं, ऐ अहले महफिल।
चिरागे सहर हूं, बुझा चाहता हूं॥

इन वीरों के बलिदानों को भारत के इतिहास में सदैव याद किया जाएगा। आज जरूरत इस बात की है कि जिस राष्ट्र की स्थापना के लिए इन्होंने कुरबानियां दी थी, उन्हीं के अनुरूप ऐसे राष्ट्र का निर्माण किया जाए, जो जनहित में हों, जो स्वार्थों से परे हो, जो भाई चारा और सहयोग बढ़ाने वाला हो।

—डा० धर्मपाल



नई दिल्ली मे अमेरिकी दूतावास के प्रथम सचिव डा० वाल्टर अन्डरसेन गुरु हनुमान की उपस्थिति मे चौधरी मांगेराम आर्य द्वारा यज्ञोपवीत धारण करते हुए।

सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार

केन्द्रीय आर्य समिति मेरठ द्वारा आयोजित वैदिक धर्म दीक्षा समारोह में आज लगभग २६० युवक-युवतियों तथा आर्य नर-नारियो ने यज्ञोपवीत धारण किये। तथा वैदिक धर्म, आर्यसमाज, अपने राष्ट्र की समस्त मानवता की उन्नति के लिए प्रतिज्ञायें कीं। समारोह आर्य धर्मशाला लालकुर्ती मेरठ में ठीक ९ बजे प्रात: यज्ञ से आरम्भ हुआ। इस समारोह में १० वर्ष से अधिक आयु के सैकड़ो नवयुवको ने वैदिक धर्म स्वीकार किया। आर्य समाज शास्त्री नगर के पुरोहित श्री रणधीर कुमार शास्त्री ने यज्ञ कराया एवम् सभी को यज्ञोपवीत धारण कराया। डा० वेदप्रकाश (आर्य विद्वान एवम् प्राध्यापक हिन्दी विभाग मेरठ कालिज) ने यज्ञोपवीत धारण कराने वालो को ११ सकल्प कराये तथा यज्ञोपवीत की रचना और महत्व पर वैज्ञानिक प्रकाश डालते हुए इसकी आवश्यकता बताई।

डा० भवानीलाल भारतीय की प्रचार यात्रा

दि. १४ फरवरी से १८ फरवरी तक आर्यसमाज रायबरेली के सभागार मे डा० भारतीय ने ऋषि दयानन्द के जीवन पर सरस तथा सुन्दर कथा का प्रवचन किया। फिरोज गांधी कालेज, रायबरेली के सस्कृत विभाग मे उनका एक व्याख्यान भारतीय नव जागरण और सस्कृत विषय पर हुआ।

—चण्डीगढ की समस्त आर्य समाजो की ओर से ऋषि बोधोत्सव १२ फरवरी को मनाया गया। डा० भवानीलाल भारतीय ने इस अवसर पर बोध रात्रि के महत्त्व पर प्रकाश डाला। दि० १३ फरवरी को आर्यसमाज माडल-टाउन लुधियाना मे डा० भारतीय को अध्यक्षता में ऋषि बोध पर्व मनाया गया।

—आर्य समाज के सैद्धान्तिक विद्वान्, तेजस्वी वक्ता आचार्य आर्य नरेश सस्थापक उद्गीथ साधना स्थली ओमवन हिमाचल ने गत जनवरी व फरवरी मास मे राष्ट्र संस्कृति व युवा शक्ति के उत्थान हेतु भारत के अनेक प्रान्तो मे प्रभु की पावन वाणी मानव धर्म वेद के प्रचार से मानव शान्ति हेतु यज्ञ, वेद प्रचार शंका-समाधान पारिवारिक गोष्ठियो का आयोजन कर वेद प्रचार का सराहनीय कार्य किया।

अनेक लोगो को सध्या हवन, व्यायाम, शाकाहारी भोजन, आर्य समाज स्थापना, वेद स्वाध्याय, आर्य समाज मे आने तथा ईश्वर की सत्ता को मानने की प्रेरणा दी। आर्य राष्ट्र की स्थापना से ही भारत की सब समस्याओं यथा राष्ट्र द्रोहियों द्वारा होने वाले दगे, अनाडी राजनेताओ द्वारा वोट हेतु पनपाया गया जातिवाद गरीबी की आड़ मे पनपने वाले राष्ट्र हत्यारों का उन्मूलन युवा जनो मे पनपती नास्तिकता व उच्छृंखलता का समाधान सम्भव है।

—कल्याण जी भाई आर्य

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—श्रीमद् दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी त० पलवल जिला फरीदाबाद का १४वां वार्षिकोत्सव २२-२३-२४ फरवरी १९९१ को बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर आर्य जगत के सर्वमान्य वीतराग सन्यासी श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी के अतिरिक्त हरियाणा के पंचायत व विकास मन्त्री श्री चौ० सुभाष कत्याल जी विशेष रूप में पधारे।

इस अवसर पर श्री सन्तराम संस्कृत भाषण-प्रतियोगिता और श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमे अनेक गुरुकुल, महाविद्यालय और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की टीमो ने भाग लिया। चल विजयोपहार श्री लाल बहादुर विद्यापीठ दिल्ली की टीम ने प्राप्त किया।

यह गुरुकुल गत १४ वर्ष से संस्कृत शिक्षा का निःशुल्क प्रचार एवं प्रसार कर रहा है। अद्यावधि अनेक स्नातक देश के विभिन्न क्षेत्र में सेवारत है। कोई ऐसा विभाग नहीं है जहां यहां के स्नातक न हो। इस अवसर पर एक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बाहर से आए हुए प्रतिभागियो को एक सप्ताह तक प्रशिक्षण देकर संस्कार कराने में पारगत किया गया। उन्हें प्रमाण पत्र देते हुए उद्योगपति श्री रामकिशन सजय कालोनी फरीदाबाद ने अपने सन्देश में कहा कि पुरोहित संस्कार के माध्यम से आज को भावी पीढ़ी को आगे बढ़ा सकते हैं।

—आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना की ओर से पैसठवे (६५) वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में १० फरवरी से १७ फरवरी तक आठ दिवसीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। प्रचुर जन सम्पर्क कार्यक्रम के अन्तर्गत पारिवारिक सत्सगों का आयोजन किया गया।

१२ फरवरी को बोधोत्सव का कार्यक्रम श्री रणबीर भाटिया, उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज की गतिविधियो का विवरण करते हुए आर्य समाज के मन्त्री श्री बालकृष्ण सूद ने कहा कि जनता की भलाई के लिए आर्य समाज ने असहाय लोगो की सहायता के लिए निर्धन सहायता निधि, निःशुल्क औषधालय, पुस्तकालय तथा अन्य कार्यक्रम चलाये हुए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा से पधारे हुए प० चिरंजीलाल और उनके साथियो ने लगातार आठ दिन भजनो के माध्यम से जनता को मन्त्र मुग्ध कर दिया। प्रिंसीपल श्री सुरेश जी शर्मा ने अपने वक्तव्य मे कहा कि आज वेदो की राह पर चल कर सुख और शान्ति का अनुभव किया जा सकता है।

—राजेश्वर शास्त्री

—आर्य समाज बरबीघा (बिहार) का ६३वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न—

२४, २५, २६ एवं २७ फरवरी को आर्य समाज बरबिघा (मु गेर) का ६३वा वार्षिक उत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्य जगत के विद्वान् सर्व श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी नैष्टिक देहरादून प० सत्यदेव जी शास्त्री वाराणसी, आचार्य सुकिर्ति मित्र दरभगा, डा० देवेन्द्रकुमार सत्यार्थी नालन्दा, चौधरी वेगराज जी गाजियाबाद श्रीमती विजयावती जी आर्या मु गेर एव श्री मोहनलाल आर्य गाजियाबाद ने भाग लिया।

इस अवसर पर यजुर्वेद परायण यज्ञ का भी आयोजन किया गया। हजारो हजार ग्रामीणो ने भाग लेकर लाभ उठाया।

—शिवनन्दन प्रसाद आर्य मन्त्री

—बिहार राज्य के गोड्डा जिले के अन्तर्गत महुपा ग्राम मे स्थानीय आर्य समाज का आठवां वार्षिक उत्सव बड़े ही धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन श्री वीर प्रकाश आर्य अभियन्ता द्वारा निर्मित यज्ञशाला मे वेद मन्त्रों से हवन यज्ञ होता रहा इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द नैष्टिक तपोवन आश्रम देहरादून, डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, श्री सियाराम निर्भय कवितोपदेशक आरा, श्री दयानन्द सत्यार्थी समस्तीपुर एव श्रीमती विजयावती आर्या मुंगेर के पुरोगम होते रहे हजारों ग्रामीण जनता ने इसमे भाग लेकर लाभ उठाया।

नवल किशोर मन्त्री

—आर्य समाज बांकनेर का ४०वां वार्षिकोत्सव २, ३ मार्च १९९१ को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हजारों की सख्या में आर्य युवकों ने कुश्ती, बालीबाल, कबड्डी तथा दौड़ प्रतियोगिताओ में भाग लिया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती विषयक निबन्ध प्रतियोगिता में हीरालाल, प्रदीप पंवार तथा स्नेहलता आर्या क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय के विजेता रहे।

२ मार्च शनिवार को रात्रि पं० आशानन्द भजनीक का मैजिक लालटेन कार्यक्रम आर्य सिद्धान्तो का प्रतिपादन करने मे पूर्णतः सफल रहा। स्वामी अग्निदेव 'भीष्म' ग्रामवासियों की भाषा में प्रभावकारी ढंग से आर्यों के कर्तव्य समझा पाये।

३ मार्च रविवार को आर्य युवक सम्मेलन तथा पुरस्कार वितरण समारोह २ बजे से हुआ। इसकी अध्यक्षता दिल्ली के प्रख्यात् विद्वान डा० प्रशांत वेदालंकार ने की। आपने आर्य समाज बांकनेर के युवा निर्माण कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशसा की तथा अन्य आर्य समाजों को इनसे प्रेरणा लेने को कहा।

. आर्य जगत के जाने माने विद्वान् स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने आर्य युवकों को विश्व मे भारत का नाम चमकाने की प्रेरणा दी। उत्सव के समापन पर प्रधान श्री बांगेराम आर्य आगन्तुकों तथा आर्य युवको को भरपूर सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया। —मेहरलाल पवार मन्त्री

—आर्यसमाज शान्ताक्रुज (बम्बई) का ४७वां वार्षिकोत्सव सोत्साह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर २०-१-९१ से २७-१-९१ तक यजुर्वेद महायज्ञ आचार्य अखिलेश्वर जी ब्रह्मचारी के ब्रह्मत्व मे नित्य प्रातः ७ से ६:३० बजे तक हुआ। २७-१-९१ को प्रातः १० बजे पूर्णाहुति का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दिल्ली की समस्त आर्य समाजो के तथा स्थानीय जनता ने उत्साह से भाग लिया। दिनांक २१-१-९१ से २५-१-९१ तक प्रतिदिन साय ८ बजे से ६.३० बजे तक श्री सत्यपाल जी पथिक तथा श्रीमती शिवराजवती आर्या एव कुमारी आदिति के भजन तथा आचार्य अखिलेश्वर जी ब्रह्मचारी के सारगर्भित उपदेश हुए। आपने वैदिक जीवन की व्याख्या करते हुए सूर्य और चन्द्र का हमारे जीवन में क्या महत्व है इस पर प्रकाश डाला। जनता उनके उपदेशो से लाभान्वित हुई।

२३-१-९१ को महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमती लज्जारानी गोयल ने की। श्रीमती ईश्वरदेवी विद्यालंकार, डा० आनन्द सुमन तथा स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, के व्याख्यान हुए।

२६-१-९१ को प्रातः ६.३० बजे यज्ञ के उपरान्त गणतन्त्र दिवस समारोह राष्ट्रीय ध्वजारोहण के साथ प्रारम्भ हुआ। ध्वजारोहण आर्यसमाज शान्ताक्रुज के प्रधान श्री चमनलाल महाशय ने किया। आर्य विद्या मदिर के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

२७-१-९१ को प्रातः १० बजे यजुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् आर्य जगत के प्रख्यात विद्वानो ने भी अपने विचार प्रकट किए।

आर्य समाज के महामन्त्री श्री नरेन्द्र कुमार पटेल ने उपस्थित जन समुदाय का धन्यवाद किया। प्रीति भोज के साथ बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण मे उत्सव का कार्य सम्पन्न हुआ। नरेन्द्र कुमार पटेल—महामन्त्री

'आदर्श होली'

आर्य समाज, आदर्श नगर दिल्ली-३३ के तत्वावधान मे 'आदर्श होली' मनाई गई। प्रातःकाल हवन यज्ञ से यह कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। चन्दन और गुलाल के तिलक से होली मगल मिलन रस्मी किया हुई। हजारो की सख्या में बच्चे, बूढे और बाल नर-नारी इस कार्यक्रम मे सम्मलित हुए और एक दूसरे को चन्दन और गुलाल का तिलक किया और गले मिले। आर्य आदर्श विद्यालय के छात्र छात्राओ ने रगारग सास्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। डा० शिवकुमार जी शास्त्री, श्री प्रेम जी श्रीधर, प० जैमिनि जी शास्त्री ने पर्व की वास्तविकता का बोध कराया। कार्यक्रम का आयोजन धर्मचन्द बत्रा, मन्त्री, आर्य समाज, आदर्श नगर, की देख-रेख में हुआ। "आज बृज में होली रे रसिया" बच्चो द्वारा प्रस्तुत गीत को सभी ने सराहना की। विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती पुष्पलता ने अभिभावकों का धन्यवाद किया तथा बच्चों को पुरस्कार वितरित किया। गन्दे रंगों के बिना खेली गई होली की सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। —मंत्री धर्मचन्द बत्रा

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज भागलपुर (बिहार) के उपप्रधान श्री बचनेश्वर सिंह की पूज्या माताश्री का देहावसान विगत दि० १०-२-९१ को होगया। दिनाक १२-२ से १८-२-९१ तक दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए 'शान्ति यज्ञ' श्री प० ब्रह्मचारी व्यास नन्दन शास्त्री वैदिक के आचार्यत्व मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, ब्रह्मानन्द जी नैष्टिक एव श्री दयानन्द सत्यार्थी के भजन-प्रवचन भी हुए। यहां की जनता पर स्थाई प्रभाव पड़ा।

—एशिया के सबसे बड़े कोलियरी क्षेत्र महगामा (गोड्डा) में वैदिक धर्म प्रचार।

दिनाक १७-२-९१ को महगामा (गोड्डा) के दुर्गा स्थान में वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन श्रीमती विजयावती आर्य महिला समाज, मुंगेर के तत्वावधान में किया गया। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी नैष्टिक (तपोवन आश्रम) देहरादून), डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी (नालन्दा) एवं श्री दयानन्द सत्यार्थी (समस्तीपुर) के द्वारा प्रचार कार्य किया गया। स्थानीय व्यवस्था युवा कार्यकर्त्ता श्री शंकर ठाकुर ने संभाला। —पोपल चौधरी

ऋषि बोधोत्सव तथा सीताष्टमी पर्व सम्पन्न

करोलबाग आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान में आर्य स्त्री समाज राजेन्द्र नगर मे २६-२-९१ को १२ बजे से ५ बजे तक श्रीमती विद्यावती जी मदवाह की अध्यक्षता में ऋषि बोधोत्सव तथा सीताष्टमी का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। ध्वजारोहण श्रीमती उमा जी बजाज ने किया। मुख्य अतिथि श्रीमती ईश्वरी देवी जी धवन ने बताया कि बोध का अर्थ है ज्ञान। शिवरात्री हमें ज्ञान देती है कि हम भी कुप्रथाओं और कुसंस्कारों को छोड़ें तथा ऋषि के बताए हुए मार्ग पर चलें।

कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने बहुत ही सुन्दर वेद पाठ किया श्रीमती प्रकाश जी आर्या ने स्वर्गीय माता मेलादेवी तथा स्वर्गीय डा० सूरज प्रकाश का शोक प्रस्ताव रखा तथा एक मिनट का मौन भी किया गया। —कृष्णा रसवन्त

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के तूफानी दौरे

भारत का नाम आर्यावर्त करने की मांग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती पिछले एक महीने से आर्य समाज के घोषणा पत्र के प्रचार प्रसार के सन्दर्भ में देश के विभिन्न क्षेत्रो के व्यापक दौरे पर जा रहे हैं। राजस्थान के जूरेहारा क्षेत्र मे जहा चारो ओर मेवों के गाव हैं, स्वामी जी ने एक सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करते हुए युवक और युवतियों को प्रेरणा की कि सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि दयानन्द कृत साहित्य का अध्ययन करें और राष्ट्र निर्माण में महर्षि दयानन्द की विचारधारा का अवलोकन करें। स्वामी जी ने विशाल जलूस के साथ पूरे गाव का दौरा किया। तत्पश्चात् रामलीला मैदान मे जन सभा में उन्होने आर्य जनो से अपील की कि वह अपनी सन्तानो को धार्मिक बनाने की प्रेरणा करे।

इस अवसर पर स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती अधिष्ठाता, वेद प्रचार मडल दिल्ली ने अन्धविश्वास रूढिवाद एव सामाजिक कुरीतियो पर प्रकाश डालते हुए अनेक दुर्व्यसनो मादक द्रव्यो का निषेध करना बताया तथा ८०० रुपये का साहित्य निःशुल्क वितरण किया। जिसमें सत्यार्थ प्रकाश प्रमुख था। २४ फरवरी को गुरुकुल मटिण्डू के समारोह में स्वामी जी ने आर्य समाज की ओर से मांग की कि भारत का नाम 'आर्यावृत रखा जावे—और हमारी परम्परा के प्रतीक-आर्यावर्त भारत खण्डे-को मूर्त रूप दिया जावे। स्वामी जी ने वहां उपस्थित लोगो को प्रेरणा की कि गोहत्याबन्दी और शराबबन्दी के लिए जोरदार ढग से काम करे और आपस में मिल कर काम करें। —सम्पादक

वार्षिक निर्वाचन

दिनांक २७-१-९१ रविवार को आर्य समाज गीता कालोनी का वार्षिक चुनाव श्री प्रणव प्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति की अध्यक्षता मे निर्विवाद सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्व सम्मति से चुने गये—

१. प्रधान—श्री लोकनाथ मेहता
२. मन्त्री—श्री सुनील भाटिया
३. कोषाध्यक्ष—श्री केशव दास

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 21-22-3-1991 Licenced to post without prepayment Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३६

साप्ताहिक "आर्यसन्देश" २४ मार्च, १९९१

श्री रामजन्मोत्सव

नई दिल्ली क्षेत्र की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य संस्कृति के प्रतीक मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र का पवित्र जन्मोत्सव रविवार २४ मार्च ९१ को प्रातः ९.०० बजे से ११.३० बजे तक सामूहिक रूप में आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। जिसकी अध्यक्षता वीतराग सन्यासी स्वामी वेदमुनि परिव्राजक करेंगे एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मान्य प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, राष्ट्रीय नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी सांसद नई दिल्ली क्षेत्र, श्री केदारनाथ साहनी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रो० शिवा कान्त उपाध्याय, वैद्य रामकिशोर वानप्रस्थ, आचार्य यशपाल सुधान्शु, डा० धर्मपाल आर्य, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भगवान राम के जीवन पर प्रकाश डालेंगे एवं स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती व श्री गुलाब सिंह राघव के भजन होंगे।

इससे पूर्व सोमवार १८ मार्च से शनिवार २३ मार्च तक प्रतिदिन पवित्र गायत्री पारायण महायज्ञ, उपदेश एवं संगीत और रात्रि को स्वामी वेद मुनि परि-व्राजक द्वारा वाल्मीकि रामायण की कथा एवं श्री गुलाब सिंह राघव के भजन हुआ करेंगे। पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति रविवार २४ मार्च को प्रातः ९.०० बजे होगी।

आपसे अनुरोध है कि उन तिथियों में कृपया अपने यहां किसी विशेष कार्यक्रम का आयोजन न कर इस सम्मिलित आयोजन में इष्ट मित्रों सहित पधार कर उत्सव सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान कर अनुगृहीत करें एवं धर्म लाभ उठावें।

नोट—रविवार २४ मार्च को प्रातः ११-३० बजे से १-०० बजे तक दिल्ली प्रान्तीय आर्य वीर दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय बलिदानी सरदार भगतसिंह व रामप्रसाद बिस्मिल दिवस सम्मेलन होगा। प्रधान—सरदारीलाल वर्मा

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज भुसावर (भरतपुर) के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें निम्न अधिकारी चुने गये—

१. प्रधान—श्री वृजेन्द्र कुमार जी आर्य
२. मन्त्री—श्री दिनेशचन्द्र जी वैद्य आर्य
३. कोषाध्यक्ष—श्री भगवत प्रसाद जी आर्य

—आर्य समाज मन्दिर बिहारीपुर, तुकमीरपुर, दिल्ली का गठन वि० संवत् २०४७ फाल्गुन शुक्ल एकादशी रविवार तदनुसार २४ फरवरी १९९१ ई० को हुआ है, जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये—

१. प्रधान—श्री धर्मपाल
२. मन्त्री—श्री बलेश कुमार
३. कोषाध्यक्ष—श्री डा० रामवीर सिंह आर्य

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २१ | रविवार, ३१ मार्च, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष . ३१०१५०

शहीदों के पदचिन्हों पर चलने का आह्वान

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

नई दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने कहा कि अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, प० राम प्रसाद बिस्मिल आदि ने अपने प्राणों की आहुति देकर हमें आजादी दिलाई है। अत: राष्ट्र की स्वतन्त्रता व एकता को हर कीमत पर बनाये रखने का हमें व्रत लेना चाहिये। स्वामी आनन्द बोध सरस्वती आर्य वीर दल, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा २४ मार्च को आर्य समाज मन्दिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में आयोजित शहीद दिवस' समारोह में बोल रहे थे।

स्वामी आनन्द बोध ने स्व० ओम प्रकाश त्यागी द्वारा आर्य वीर दल को सुदृढ़ करने के लिए की गयी बहुमूल्य सेवाओं का स्मरण किया। स्वामी जी ने बताया कि श्री त्यागी जान पर खेल कर बंगला देश की सीमा से पाकिस्तान का जो ध्वज उतार कर लाये थे, उसे उन्होंने लौह पुरुष सरदार पटेल को भेंट किया था और आज भी वह सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक प० बाल दिवाकर हंस जी के पास सुरक्षित पड़ा है।

स्वामी आनन्द बोध ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने भी जवानी में सामाजिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में अद्वितीय कार्य किये थे। आर्य वीर भी युवा शक्ति के प्रतीक हैं। अत. आज उन्हें आत्म निरीक्षण कर समाज राष्ट्र सेवा का संकल्प लेना चाहिए। अन्त में स्वामी जी ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित शहीदी दिवस पर सभी अधिकारियों को साधुवाद दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने दिल्ली आर्यवीर दल व प्रतिनिधि सभा की श्रेष्ठ गतिविधियों का विवरण दिया। डा० धर्मपाल ने देश व धर्म पर हंसते-हंसते शहीद होने वाले वीरों का स्मरण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किये एवं उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

डा० धर्मपाल ने, स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा अस्वस्थता के बावजूद समारोह में पधार आर्य वीरों को आशीर्वाद देने व मार्गदर्शन के लिए उनका आभार व्यक्त किया एवं उनकी शतायु की कामना की, ताकि उनका कुशल नेतृत्व व मार्गदर्शन हमें निरन्तर मिलता रहे।

श्री ओमप्रकाश आहूजा ने समारोह की अध्यक्षता की, उन्होंने कहा कि २३ मार्च सन् १९३१ को लाहौर की सेन्ट्रल जेल मे भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव ने देश की आजादी के लिए कुर्बानी दी थी और यह आजादी उन्हीं वीरों की देन है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सूर्यदेव ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि देश की स्वतन्त्रता के लिए वीरों ने अद्वितीय कुर्बानियां दी हैं और हमें अपने श्रेष्ठ परम्परा के लिए देश की आजादी व अखण्डता को बनाए रखना है। श्री सूर्यदेव ने कहा कि आज के पवित्र दिन आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी की भी जयन्ती है और हमें शास्त्रार्थ समर के महायोद्धा के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए।

इससे पूर्व श्री बंसी लाल पाहूजा ने ओ३म् ध्वजारोहण किया। उन्होंने आर्यवीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य वीर हिन्दुओं के चौकीदार हैं उन्हें सजग होकर समाज व राष्ट्र के लिए कार्य करते रहना चाहिए।

वैदिक विद्वान् पं० प्रेमचन्द्र श्रीधर ने "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।" पं० बिस्मिल के इस अमर गीत का जिक्र करते हुए अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित किए। श्री ओ३म्वीर शास्त्री जी ने भी अपने विचार रखे। श्री रतन लाल सहदेव ने कहा कि आज हमें भक्ति के साथ-२ शक्ति की आवश्यकता पर भी बल देना चाहिए।

दिल्ली आर्य वीर दल के अधिष्ठाता श्री प्रियतम दास रसवन्त ने इस अवसर पर उपस्थित सभाओं व आर्य समाजों के गणमान्य पदाधिकारियों व सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया।

समारोह में दिल्ली आर्य वीर दल के आर्य वीरों ने लाठी, भाला, जूडो-कराटे आदि का भव्य प्रदर्शन किया। श्री चमन लाल ग्रोवर पुरस्कृत आर्यवीरों को सम्मानित स्मृति चिन्ह प्रदान किया।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम आर्य संस्कृति के प्रतीक हैं और हमे आज उनके गुण, कर्म स्वभाव और पवित्र आचरण से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता को सुदृढ़ करना चाहिए। यह उद्गार प्रख्यात पत्रकार एव सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री रमाकान्त गोस्वामी ने आज आर्यसमाज मन्दिर में आयोजित श्री राम जन्म महोत्सव के अवसर पर व्यक्त किए। समारोह की अध्यक्षता आचार्य सत्यानन्द जी ने की।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने भगवान राम के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान डा० धर्मपाल ने इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि भगवान राम भारतीय संस्कृति के मूलाधार है और उन्होंने उत्तर से दक्षिण व पूरब से पश्चिम तक सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोया था। उन्होने राम के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने का आग्रह किया। इस अवसर पर श्री केदार नाथ साहनी, प्रो० शिवा कान्त उपाध्याय, श्री सरदारी लाल वर्मा प्रधान, हनुमान रोड नई दिल्ली महात्मा राम किशोर वैद्य आदि ने भी राम के पावन जीवन पर प्रकाश डाला।

इससे पूर्व १८ मार्च से २३ मार्च तक आचार्य भारद्वाज पाण्डेय के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ हुआ जिसकी आज प्रात: पूर्णाहुति में हजारों श्रद्धालु आर्य नर-नारियो ने भाग लिया। एक सप्ताह तक डा० रविदत्त गौतम द्वारा वाल्मीकि रामायण की कथा एव स्वामी स्वरूपानन्द व श्री गुलाब सिंह राघव जी के मनोहर भजन होते रहे।

—विमल कान्त शर्मा

गुरुकुल कांगड़ी का ९१वां वार्षिकोत्सव

समस्त आर्यबन्धुओं को यह जान कर परम प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार का ९१वां वार्षिकोत्सव एव दीक्षान्त ७ अप्रैल १९९१ से समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ७ से १४ अप्रैल तक श्री पं० मदनमोहन विद्यासागर के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। वैदिक प्रदर्शनी गुरुकुल जन्मोत्सव, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, राष्ट्रीय पत्र और उनकी समस्याएं आदि पर विविध सम्मेलन होंगे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक एव विविध शारीरिक व्यायाम के कार्यक्रम भी प्रस्तुत होंगे। इस

(शेष पृष्ठ पांच पर)

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते। आर्य सन्देश श्रेष्ठ, अनुपम एवं अपने आप मे एक अनूठा पत्र है। मुझे आर्य सन्देश के पढने से परम असीम आनन्द का अनुभव होता है।

—बाबूरामसिंह, मारोली बाजार, बलसाड़, गुजरात

सम्पादक महोदय,

बडे दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल अंग्रेजी को बढावा दे रहे हैं और संस्कृत भाषा तथा भारतीय संस्कृति को भुला रहे रहे हैं। पश्चात्य सभ्यता के आधार पर लोभ-लालच, के वशीभूत हो गए हैं। जबकि गुरुकुल ही संस्कृत भाषा और भारतीय परम्परा के केन्द्र हैं जो गरीबी रेखा के नीचे हैं। भारत सरकार को भारतीय संस्कृति बचाने के लिए उनकी आर्थिक सहायता करनी चाहिए।

केन्द्रीय आर्य शिरोमणि संस्था द्वारा राष्ट्रपति को ज्ञापन देना चाहिए कि मातृभाषा हिन्दी प्रथम कक्षा से, संस्कृत तीसरी कक्षा से तथा पांचवीं कक्षा से सातवीं तक अंग्रेजी पढाई जाए। तथा दसवीं से आगे अंग्रेजी विषय अनिवार्य नहीं रहनी चाहिए।

—मगल राम बंसल

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते। स्वामी श्रद्धानन्द व इन्द्र विद्या वाचस्पति पर २३ दिसम्बर १९९० को प्रकाशित आर्य सन्देश का स्मृति विशेषांक आद्योपान्त पढकर हृदय प्रसन्न हो उठा।

आपने अपने आठ विशेषांकों के अनुष्ठान को वर्षान्त में सफल पूर्णाहुति कर, अपने संकल्प को भगीरथ की भांति पूर्ण किया है। एतदर्थ कोटिशः धन्यवाद स्वीकार करें। विशेष सहयोगी डा० धर्मपाल जी का कोटिशः वन्दन है। आशा है इस वर्ष भी पाठकों को वही स्नेह प्राप्त होगा।

—रामाज्ञा आर्यपुत्र बौद्धिकाध्यक्ष
आर्यवीर दल, पूर्वी उत्तर प्रदेश

प्रिय महोदय, सादर नमस्ते।

आर्य सम्मेलन, दिल्ली (२३-२६ दिस० ९०) से लौटकर आर्य सन्देश का 'स्वामी श्रद्धानन्द एवं प० इन्द्र विद्यावाचस्पति' विशेषांक मिला। आद्योपान्त पढा। २३-८-६० को जब प० इन्द्र जी की मृत्यु हुई, मेरी वय मात्र ८ वर्ष की थी। वर्ष १९७४ मे मैं आर्य समाज के सम्पर्क में आया। अत. प० इन्द्रजी से मेरा परिचय इस विशेषांक ने ही कराया। पण्डित जी के सभी पक्ष, यथा...पत्रकार, स्वतन्त्रता सेनानी, इतिहासकार, साहित्यकार, कवि, सासद, शिक्षा-शास्त्री इस विशेषांक मे वर्णित हुई हैं। पण्डित जी विभिन्न रूपो मे जो देश सेवा की उसको आर्यसमाजी होने अथवा तुष्टिकरण की नीति का विरोध करने के कारण सरकारी सम्मान व मान्यता नही मिल सकी।

आर्यसमाज के सभी बडे सम्मेलनो मे शासक दल के शीर्षस्थ नेताओं का पदार्पण होता है। हमारे अपने बन्धु इसके लिए हमारी आलोचना भी करते हैं जो कि एक सीमा तक उचित है। इसके बावजूद हम अपनी उचित बातें भी सरकार से मनवा नही सकते। आर्य इस देश के आदि-निवासी, संस्कृत मे शिक्षा का उचित स्थान विश्वविद्यालयो मे महर्षि दयानन्द जी के वेद भाष्य को मान्यता, प्रदूषण निवारण मे यज्ञों की भूमिका आदि अनेक विषय ऐसे है जहा सच्चाई को अनदेखा कर सत्य से खिलवाड़ किया जाता रहा है। ऐसे समय यह विशेषांक प्रकाशित करना, सभा एव आपकी दिवंगत आर्य श्रेष्ठियो के प्रति अथक निष्ठा, श्रद्धा का प्रमाण है। बधाई एव धन्यवाद।

—मनमोहन कुमार आर्य

आदरणीय प्रधान जी, मंत्री जी

सादर नमस्ते। प्रभु का कोटि-कोटि धन्यवाद है कि जिसकी दया और आप सबके पुरुषार्थ से आर्य महा सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया है इसके माध्यम से देश और विदेश के आर्य बहन-भाईयों को आर्य समाज की सगठन शक्ति का परिचय हो गया है! मैं तो प्रभु की व्यवस्था और कर्मों के भोग के कारण इस शोभा को न देख और न ही सुन सका हूं। मेरी तरफ से आपको और समस्त कार्यकर्ताओं को बहुत-बहुत बधाई होवे।

—डा० जगन्नाथ
एफ १/१७ कृष्ण नगर, दिल्ली-११००५१

सम्मान्य बन्धु,

सादर सस्नेह नमस्ते।

कृपया नव-वर्ष की शुभकामनाएं स्वीकार करें। आपके एव समस्त परिवार के लिए आगामी वर्ष मंगल दायक तथा सुख-समृद्धि दायक हो।

अपरं चः—आर्य महासम्मेलन की आशातीत सफलता के लिए भी मेरी तथा मेरे परिवार की ओर से हार्दिक बधाई स्वीकारें।

आपका श्रद्धानन्द-बलिदान दिवस पर दूरदर्शन पर सन्देश का प्रसारण भी प्रेरणास्पद तथा स्फूर्ति दायक था। बधाई!

प्रभु आपको अत्यधिक आयु प्रदान करें, जिससे आप इसी प्रकार जन-चेतना को जागृत, प्रेरित एव उत्साहित करते हुए महर्षि के सन्देश को जन-जन की भावनाओं में ओत प्रोत कर सके। पुनः हार्दिक बधाई!!

—सहदेव वर्मा, ८७ ग्रीन पार्क, पानीपत

आदरणीय डा० धर्मपाल जी,

सादर नमस्ते। आशा है आप सानन्द होंगे। किसी भी समाचार पत्र आर्य समाज से सम्बन्धित चिट्ठी, टिप्पणी, आरोप आदि कुछ प्रकाशित हो तो उसके उत्तर में स्पष्टीकरण 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' की ओर से उसी समाचार पत्र मे प्रकाशित होना चाहिये। जिससे भारतीय जनता को भ्रान्ति न रहे, आर्य समाज महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों उद्देश्यों, नियमों पर और आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलने के लिये कटिबद्ध है और चल रहा है। मेरे विचार में वैदिक वर्ण व्यवस्था पर एक लेख नव भारत टाइम्स और दैनिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित होना चाहिये। और साथ यह भी उल्लेख किया जाए कि यदि भारतीय जनता महर्षि दयानन्द अथवा आर्य समाज के सिद्धान्तों पर चलती तो आरक्षण की समस्या, पंजाब, काश्मीर, राममंदिर-बाबरी मस्जिद आदि की कोई भी गम्भीर समस्या पैदा न होती, आर्य समाज के बताए हुए रास्ते पर न चलने से ही यह सब कुछ हो रहा है। अच्छे-२ लेख भी आर्य सन्देश और आर्य जगत में छपते हैं परन्तु खेद है कि इन पत्रों को भारतीय जनता तो क्या पढ़ेगी—आर्य समाजी भी नहीं पढ़ते, इसलिये नव भारत और हिन्दुस्तान में ऐसे लेख प्रकाशित होने चाहिये।

गत १-२ वर्ष से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने अद्वितीय, सराहनीय और बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं जिसका उदाहरण है आर्य सत्याग्रह - हैदराबाद अर्द्ध शताब्दी विशेषांक, मनीषी प० गुरुदत्त विद्यार्थी विशेषांक, पं० सत्यकेतु स्मृति अंक (पं० क्षितीश वेदालंकार जी का उसमें आर्य समाज का इतिहास अति संक्षिप्त, सार रूप में देना उसकी विशेषता है) तथा स्मारिका का प्रकाशन आदि।

आशा है आगामी अंक भी इसी तरह ज्ञान वर्धन में, अग्रसर रहेंगे।

—जगन्नाथ, बी० १०१ प्रीत विहार, दिल्ली-९२

प्रिय आत्मीय डा० धर्मपालजी,

सादर सप्रेम नमस्ते।

प्रभु-कृपा से आप सपरिवार स्वस्थ व मंगलपूर्वक होंगे।

नव-वर्ष के आगमन से पूर्व जो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन किया, उसके आपने बड़ी कुशलता, दक्षता, आकर्षक ढंग से मंच का संचालन किया।

आपके लेख भी जो यदा-कदा पढ़ने को मिलते हैं, राष्ट्र परक समस्याओं का वैदिक विचार-धारा परक सुन्दर रूप मे समाधान प्रस्तुत करते हैं।

कुछ दिन पूर्व सन्ध्या को स्वामी श्रद्धानन्द के ऊपर जो टेलीविजन पर आप डा० वाचस्पति उपाध्याय तथा रामचन्द्र राव जी वन्दे मातरम् द्वारा विचार दिए गए, प्रश्नों के उत्तर सटीक व समुचित रूप से जनता को प्रभावित करने वाले थे।

शेष कुशल—सहस्रशः शुभ-कामनाओं सहित। इसी प्रकार तथा इससे भी द्रुत गति से उन्नति की डगर पर बढ़ते रहो—आशीर्वाद सहित।

—देवेशमित्र, २७, नर्मदा एपार्टमैण्ट, अलकनन्दा, नई दिल्ली

परमादरणीय डा० साहब,

सादर कर बद्ध प्रणाम। २१-१२-९० को श्रद्धानन्द बलिदान के उपलक्ष्य में दूरदर्शन पर प्रसारित परिचर्चा का अंश सुना। आपका प्रस्तुतीकरण सशक्त एवं प्रभावी रहा। हार्दिक प्रसन्नता हुई। नये वर्ष की शुभकामनाएं।

—डा० [illegible]

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

रामनवमी महोत्सव

सम्पादकीय

भारतीय सस्कृति के दो पुरोधा हैं—भगवान राम और भगवान श्रीकृष्ण। भगवान राम के जीवन पर प्रारम्भ से अन्त तक दृष्टिपात करके देखें तो यह पता लगेगा कि वह महानुभाव कहीं पर भी अपने स्वार्थ के लिए नही सोचता, वह सर्वत्र लोकहित की ही बात करता है। कोई भी व्यक्ति धन-दौलत, राज-पाट को नहीं छोड़ना चाहेगा, परन्तु उसने इसकी रत्ती भर भी परवाह नहीं की और सारे राज-पाट को एक राहगीर की तरह छोड़ कर माता कैकेयी की आज्ञा को शिरोधार्य करके, राजमहल से निकल पड़ा। पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण उसके साथ अवश्य गए, परन्तु यदि वे न भी जाते तो उसे कोई कष्ट न होता। वह उनकी रक्षार्थ भी सतत प्रयत्नशील रहा।

परहित की बात कही जा रही है। वह अपने भ्रमण काल मे अनेक ऋषि मुनियो, भील-कोल-किरातो, रीछों-बन्दरों, असुरो-राक्षसों, केवट-शबरी से मिला। उसका आचरण सभी के प्रति समभावी रहा। उसने सभी को अपना बना लिया और स्वयं उन्हीं का बन गया। ऐसा संगठनकर्ता सदैव वन्दनीय है।

परिस्थितियों ने ऐसा मोड़ लिया कि पत्नी का वियोग उसका अपना व्यक्तिगत कष्ट हो सकता था, परन्तु वह भी लोकमंगल का ही साधन बन गया। सीता हरण रावण ने किया था। रावण दुष्ट और अत्याचारी था। सभी भले लोग उससे त्रस्त थे। रावण का संहार करके उसने भूमी को आराम पहुंचाया। यह भी एक परहित का ही कार्य किया।

उसने विभीषण को सारा जीता हुआ राज-पाट सौंप दिया। कितना विशाल हृदय था राम का, यह विचारणीय एवं स्तुत्य है।

राम मर्यादा पुरुषोत्तम है। राम से बड़ा राम का नाम। यह लोकोक्ति न जाने समय के कितने लम्बे अन्तराल को लांघ कर बनी है। यह हमारे लिए प्रेरक है कि हम भले ही राम की पूजा अराधना न करें, पर रामत्व को अवश्य धारण करें। यही तो आदर्श चरित्र की महत्ता है। राम ने सामान्य धर्म का पालन किया था। सीता की रक्षा में उन्होंने यही किया और आगे चल कर सीता त्याग मे भी। राम धैर्य मे हिमवान है। धैर्य की उपमा धरित्री से दी जाती है, परन्तु वाल्मीकि ने धरित्री को भी हिमवान की श्रेणी तक ऊंचा उठाया है। राम का धैर्य पसीजता है, द्रवित होता है, पर हिमालय की भांति टूटता नहीं है।

रामत्व क्षमा में है। आओ हम इस गुण को धारण करें। राम एक व्रतधारी है। राम एक बोलते हैं, एक बाण उठाते हैं, एक निर्णय लेते हैं। वह एक है। एक की संख्या अपने में पूर्ण होती है।

रामत्व उसके शील मे व्यक्त होता है। राम के शील का अनुमान पिता से, माता से, भाई से सुग्रीव से, रावण से बात - चीत के बीच लगाया जा सकता है। राम और हनुमान के संवाद कितने मार्मिक हैं। राम की भाषा, राम का भाव, राम का राग, सब कुछ शीलमय है। वह कठोर से कठोर हृदय को भी द्रवित कर सकते हैं।

राम का यही लोकरंजनकारी रामत्व स्पृहणीय एवं अनुकरणीय है।

—डॉ० धर्मपाल

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२४ मार्च, ९१ के अंक से आगे)

यह मुकदमा काफी लम्बा चला। सर्वश्री ठाकुरदत्त बाली तथा प० सोहन लाल आदि नगर आर्य समाज की ओर से इस अभियोग में वादी (मुद्दई) थे। किन्तु अभियोग को पूरे जोश खरोश से चलाने की जिम्मेदारी श्री आत्माराम जी परिहार ने ली। मुझे स्मरण है कि जब जोधपुर राज्य की सत्र अदालत मे यह मुकद्दमा चल रहा था तो आर्य समाज के पक्ष की पैरवी करने के लिए दिल्ली से प्रसिद्ध बैरिस्टर श्री चरणदास पुरी हवाई मार्ग से जोधपुर आये थे। उस दिन बैरिस्टर पुरी का हवाई अड्डे पर स्वागत करने के लिये हम लोग भी वहा पहुचे थे। जब सत्र न्यायाधीश श्री सूरजकरण मनिहार की अदालत मे श्री चरणदास पुरी ने आर्य समाज का पक्ष प्रस्तुत किया तो अपनी बहस आरम्भ करते हुए उन्होंने संस्कार विधि से ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना के दो तीन मन्त्र अर्थ सहित पढ़े और अदालत से कहा कि आर्य समाज की पूजा पद्धति निराकारोपसना की है। अतः आर्य समाज मन्दिरो में चाहे देव मूर्तियां न रक्खी जाती हो, किन्तु उन्हे धार्मिक दृष्टि से वही दर्जा प्राप्त है जो किसी मन्दिर, मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारे का होता है और आर्य समाज मन्दिर को कोई भी व्यक्ति बेच नही सकता। अन्तत. इस मुकद्दमे का फैसला आर्य समाज के ही पक्ष में हुआ और कोई आधी सदी तक पूर्ण उपेक्षित रहने के पश्चात् इस विशाल मन्दिर का अधिकार हमें पुनः प्राप्त हुआ। श्री परिहार इस अभियोग में कानूनी सलाह लेने के लिए कई बार बख्शी टेकचन्द तथा दीवान बद्रीदास जैसे आर्य समाजी न्यायविदो के पास लाहौर तथा जालंधर भी गये थे। आर्य समाज मन्दिर रातानाडा का भवन हमे जब कानूनन प्राप्त हो गया तो उसका उद्घाटनोत्सव भारत के प्रथम गणतन्त्र दिवस २६ जनवरी १९५० को मनाया गया। उस समय मैं सर प्रताप हाई स्कूल में अध्यापक था। हमारे स्कूल के सारे विद्यार्थी पंक्ति बद्ध होकर रातानाडा आर्य समाज मन्दिर में पहुंचे। यहा ध्वजारोहण की रस्म अदा की गई। तिरंगे राष्ट्रीय ध्वज के साथ-साथ आर्य समाज का मान्य ओ३म् ध्वज भी फहराया गया। इस समाज को चलाने के लिये एक अन्तरिम व्यवस्था की गई। जब तक इस आर्य समाज के विधिवत निर्वाचन नहीं हो जाते, तब तक नगर आर्य समाज को ही इस समाज को संचालित करने का अधिकार दिया गया। तदनुसार हम लोगों का युवा दल प्रति शनिवार सायं आर्य समाज में जाता और सत्संग का आयोजन करता। उन दिनो आर्य समाज मन्दिर रातानाडा के पास आबादी कम थी तथा इस मोहल्ले में आर्य परिवार तो नगण्य ही थे। केवल प० सोहनलाल जी ही मन्दिर के पास रहते थे। हम लोगो को उन्ही के निर्देशन मे कार्य करना था। शनिवार को रातानाडा आर्य समाज में साप्ताहिक सत्संग करना हमारे लिए उद्यान भोज पिकनिक के तुल्य आनन्ददायी होती थी। हमारे साथी श्री बसन्तलाल जी टेलीफोन विभाग मे कर्मचारी थे, अपने घर से आलू के पराठे बना कर लाते और हम लोग सत्संग प्रारम्भ करने से पूर्व इस दावत का मजा लेते। हमारे समाज मे नव संवत्सरोत्सव, आर्य समाज स्थापना दिवस, श्रावणी जन्माष्टमी विजयदशमी, ऋषि निर्वाण, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, मकर सक्रान्ति, बसन्त पचमी, लेखराम तृतीया, ऋषि बोध रात्रि आदि सभी आर्य पर्व समारोह पूर्वक मनाये जाते। इन पर्वों पर मेरी वक्तृता ऐतिहासिक जानकारी से भरपूर होती थी। जोधपुर के सीमावर्ती गांवों में भी हम प्रचारार्थ जाते। विशेषतः पूंजला और चैनपुरा ग्रामों के आर्य समाजो मे जाने का प्रायः अवसर मिलता।

मैंने नगर आर्य समाज में मन्त्री पद पर तीन वर्ष तक निरन्तर कार्य किया। यो मेरा मन तो इस पद से एक वर्ष बाद ही भर गया था, किन्तु आर्य समाज के लोग भी कब छोड़ने वाले थे। मैंने नगर समाज में दैनिक सत्संग को भी प्रारम्भ कराया और स्वयं उसमें नियमित रूप से जाने लगा।

(क्रमशः)

वेदों को धर्मग्रन्थ न मानने वालों की शंकाओं का उन्मूलन

—श्री पं० राजवीर शास्त्री

४ मार्च १९९१ के "नवभारत टाइम्स" नामक हिन्दी के दैनिक पत्र मे भारतीय इतिहास से अनभिज्ञ पाश्चात्य विद्वानों के उच्छिष्ट भोजी तथा पक्षपात का चश्मा लगाये श्री सूर्यकान्त बाली ने भारतीय वाङ्मय एवं धर्म के मूल स्रोत वेदों के विषय मे जो विष वमन किया है, वह अत्यन्त ही घृणास्पद व निन्दनीय है। जिसे पढकर समस्त वेद भक्तो की अस्मिता को महान् आघात पहुंचा है। समस्त वेद भक्त इस कुकृत्य की एक स्वर से निन्दा करते हुए लेखक व सम्पादक दोनों को ही चेतावनी देते है कि वे वेदों के प्रति ऐसा भविष्य मे विष-वमन करने का दुस्साहस न करें अन्यथा इसके भयकर परिणाम हो सकते है।

लेखक ने कुरान, बाईबिल व गुरुग्रन्थ साहिब को तो धर्मग्रन्थ माना है किन्तु वेदो को नही। उसे यह लेख लिखते हुए भय भी लग रहा होगा कि यदि इनके विषय में कुछ लिख दिया तो जीवन से भी हाथ धोना पड़ सकता है। किन्तु इन वेद-भक्तों की अस्मिता को लात मारते हुए लेशमात्र भी सकोच नही किया। परन्तु बाली जो ! याद रखिये ये वेद भक्त (विशेष रूप से आर्यवीर) जहा अत्यन्त सहिष्णु व धैर्यवान् हैं, वहा इनका भयकर रूप भी है। उनकी अस्मिता को ठेस पहुंचाकर सुखी नही रह सकोगे। लेख के आपत्तिजनक स्थल कतिपय इस प्रकार हैं —

१—आर्य समाज ने भी वेदों को ईश्वर की रचना माना, तो उसका रचनाकाल भी करीब दो करोड़ वर्ष पहले का माना। इससे बड़ी हास्यास्पद बात और क्या होगी ?

समीक्षा : लेखक यदि किसी बात से अनभिज्ञ है तो प्रथम उसे जानने का ही प्रयास करता तो अच्छा रहता। वेदो को भारत ही नही, प्रत्युत विश्व के विद्वान् ससार के पुस्तकालय की पहली पुस्तक मानते हैं। उसकी रचना तथा आविर्भाव के विषय मे महर्षि-दयानन्द ने ज्योतिष के आधार पर एक-एक वर्ष व दिनों की गिनती कराकर वेद सवत् लिखा है, किन्तु आपको यह ऐतिहासिक सवत् उपहास्यास्पद कैसे लगा ? क्या आपके पितामह के पितामह के होने में भी आपको भ्रान्ति हुई ? यदि नहीं तो इस ऐतिहासिक वेद-सवत् के विषय मे क्यो हुई ? यदि आप कालगणना से अनभिज्ञ हैं, तो प्रथम जानने का प्रयास कीजिये। लेखक को कुमारी से ईसा की उत्पत्ति, भूमि को चपटी बताने वाली इत्यादि सृष्टिक्रम विरुद्ध बातो एवं काल्पनिक उड़ानों से पूर्ण होने पर भी ईश्वरीय ग्रन्थ मानी गई बाईबिल पर तो आश्चर्य नहीं हुआ और इसी प्रकार मुसलमानों के अनुसार खुदा का पैगाम रूप कुरान पर हंसी नहीं आई जिसमें अटपटी बातो की भरमार है, किन्तु सत्य व निर्भ्रान्त वेदों को उपहासनीय कहकर अपने कलुषित हृदय की कालिमा को प्रकट करने लगे। यदि उल्लू को दिन में भी दिखाई न देवे, तो इसमे सूर्य का क्या दोष हो सकता है। इसी प्रकार यदि आपने वेदों को पढ़ा ही नही, और उनके विषय में भ्रान्त व्यक्तियो में भटककर लेख लिखने लगे तो इसमें वेदो का तो दोष नहीं है।

२— इस देश में वेदों का सिर्फ नाम लिया गया, अपना पक्ष सही सिद्ध करने के लिये बिना पढ़े ही वेदों की दुहाई दी गई और वेदों को स्वतः प्रमाण कह दिया गया तो जाहिर है कि न केवल वेद पढ़े गये बल्कि उन्हे न पढ़ने का माहौल भी बना दिया गया।

समीक्षा :—महर्षि-दयानन्द से पूर्व वेदो की क्या स्थिति थी, यह हम चर्चा नहीं करते, किन्तु उसके पश्चात् तो आर्य समाज एक शताब्दी से भी अधिक वर्षों से वेदो के पठन-पाठन, अनुसन्धान, सबको वेद पढने का अधिकार, ईश्वरीय पुस्तक वेद ही क्यो ? वेद स्वतः प्रमाण पुस्तक है, इत्यादि विषयों पर निरन्तर प्रचार कर रहा है, पुनरपि लेखक पता नही किस पाताल के कोने में घोर अन्धकार मे बैठकर ऐसी बेतुकी बाते लिख रहा है, यह महान् आश्चर्य की बात है।

३—धर्म-ग्रन्थ सिर्फ पूजे या रटे जाते हैं, पढे या समझे नहीं जाते। पर वेदो के साथ तो दोहरी दुरभिसन्धि हो गई।

समीक्षा :—लेखक ने धर्मग्रन्थ की जो परिभाषा लिखी है, वह तो सम्भव है कि किसी भी धर्मग्रन्थ पर लागू नहीं होती। क्योंकि सभी धर्मग्रन्थों को पढा भी जाता है और उनके आधार पर ही प्रवचन भी होते रहते हैं। अतः उन्हें पूजा या रटने की पुस्तक मानना लेखक की सर्वथा मिथ्या धारणा है। धर्मो धारयते प्रजाः, धारणाद् धर्म इत्याहुः इत्यादि निर्वचनो से भी यही स्पष्ट होता है कि धर्म धारण करने वाले गुणों का नाम है, जो प्रजा को मर्यादित रखते हैं। धर्म कोई पूजा व रटने की वस्तु नहीं है। इसलिये धर्मग्रन्थों की परिभाषा जो लेखक ने ही की है वह सर्वथा निराधार है।

४—वेदों पर पहला पर्दा तब पड़ा, जब उन्हें यज्ञो का उपकरण बना दिया गया, पर असली नुकसान वेदों को तब झेलना पड़ा, जब उन्हें ईश्वरीय रचना कह दिया गया, स्वतः प्रमाण मान लिया गया और सृष्टि के समय लिखा प्रचारित किया गया।

समीक्षा :—अरबों वर्षों से वेदों को ईश्वरीय, स्वतःप्रमाण और सब सत्य विद्याओ की पुस्तक माना जाता रहा है। समस्त वैदिक वाङ्मय में इस तथ्य को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है। महाभारत के पश्चात् कुछ व्यक्तियों ने वेदों को यज्ञ का ही विषय अथवा संस्कारो का विषय बनाकर वेदों का क्षेत्र सीमित कर दिया, इसमें वेदो का क्या दोष, यह तो उन व्यक्तियों का ही दोष है, जिन्होंने वेदों को ठीक से नहीं समझा है। ठीक ही कहा है—

नैव स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति ॥

अर्थात् यदि कोई अन्धा व्यक्ति जाता हुआ किसी स्थाणु-वृक्ष या खम्भे से टकरा जाता है तो इसमे स्थाणु का दोष नहीं हैं। और वेद ससार के पुस्तकालय की पहली पुस्तक है, यह विश्व के सभी विद्वान् एकमत से मान रहे हैं तथा वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है यह भी अब निर्विरोध बात हो गई है। अब रही बात ईश्वरीय रचना की, इस विषय में प्रथम तो लेखक को कुरान व बाईबिल को धर्मग्रन्थ मानते हुए विचार करनी चाहिए थी यदि खुदा का पैगाम या ईसामसीह का सन्देश होने पर भी यदि बाईबिल व कुरान धर्मग्रन्थ रह सकते हैं, तो लेखक को वेदों पर आपत्ति क्यो हो रही है। और आज भी ज्ञान-विज्ञान का क्या कितना भी विकास हो चुका है, तो भी बिना पढाये कोई विद्वान् नहीं बन सकता, फिर सृष्टि के प्रारम्भ में परमेश्वर के ज्ञान न देने पर ज्ञान कैसे प्राप्त हो सकता था ? जो ईश्वर सृष्टि को बनाता है, रक्षादि कार्य करता है, और सब को कर्मानुरूप सुखःदुःख की व्यवस्था भी करता है, क्या वह अपने संविधान रूप ज्ञान का प्रकाश बिना किये ही पाप-पुण्य की व्यवस्था कर सकता था ? क्या कोई लौकिक राजा या न्यायाधीश बिना संविधान के ही दण्ड की व्यवस्था कर सकते हैं ? फिर परमेश्वर के विषय में आशंका क्यों ? और इससे वेदों का क्या नुकसान हो गया, वह तो लेखक भी नहीं लिख सका। इससे प्रतीत होता है कि लेखक का आशय दुरभिसन्धि पूर्ण होने से कलुषित हृदय की कालिमा को ही प्रकट कर रहा है जो वह निराधार, तथ्यविहीन मिथ्या दोषारोपण करने का साहस करने लगा है।

५— इसमे भला वेदों का क्या कसूर ? वे तो खुद को संहिता या संकलन मानते हैं और संकलन जाहिर है बिखरी हुई चीजों को समेटने का नाम है।

समीक्षा :—यहां तो लेखक ने पाश्चात्य विद्वानों के बौद्धिक प्रभाव को ही स्पष्ट रूप में प्रकट कर दिया है। जिससे स्पष्ट है लेखक का वेद-विषय में प्राथमिक स्तर का भी ज्ञान नहीं है, पुनरपि वेदों को धर्मग्रन्थ न होने का दावा प्रस्तुत कर दिया है। यदि दुर्जनतोषन्याय से यह मान लिया जाये कि वेद एक संकलन ही है तो भी धर्मग्रन्थ है या नही, इससे क्या अभिप्राय निकला, यह तो लेखक ही जा, परन्तु इससे उसके पूर्वाग्रह ग्रस्तता का पता लगता है। अन्यथा यदि सिखों के धर्मग्रन्थ को, जिसमें विभिन्न सन्तो की वाणियों का ही सग्रह हैं, धर्मग्रन्थ मान सकता है, तो वेदों पर आक्षेप क्यों ?

और वेदो को सकलन मानना भी अज्ञान ग्रस्तता ही है। लेखक ने पता नहीं किस कोष में पढ़कर "सहिता" शब्द का संकलन अर्थ किया है। यथार्थ में पाश्चात्य विद्वानों की महाभ्रान्ति का प्रभाव लेखक पर हुआ है। वेद में स्थान-स्थान पर विभिन्न ऋषियों के नामों का उल्लेख मिलता है जिनसे उन्हे भ्रम हुआ है वे ऋषि मन्त्रों के अर्थों का साक्षात्कार करने वाले थे, न कि रचना करने वाले। वेद की पुस्तकों पर "संहिता" शब्द लिखा मिलता है, जिसका अर्थ यह है—

परः सन्निकर्षः संहिता ॥ (महर्षि पाणिनि)

पद प्रकृतिः संहिता ॥ (महर्षि यास्क)

अर्थात् संहिता सन्धि को कहते हैं और वैदिक वाङ्मय में जो पद-पाठ

(शेष पृष्ठ ९ पर)



समाज सेवी श्री सहगल का अभिनन्दन

नई दिल्ली, वयोवृद्ध आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल का उनके ६६वें जन्म दिवस के अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा ११ मार्च को फिक्की सभागार में आयोजित एक समारोह में सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रख्यात न्यायविद् व ब्रिटेन में भारत के नव-नियुक्त उच्चायुक्त श्री लक्ष्मीमल सिंघवी ने की।

श्री सिंघवी ने श्री सहगल को सेवा, त्याग व निष्ठ का प्रतीक बताया। उन्होंने कहा कि आज हम श्री सहगल का अभिनन्दन कर स्वयं गौरवान्वित हो रहे हैं। और श्री सहगल आर्य जगत के आभूषण हैं, रत्न हैं।

पूर्व सांसद श्री विजय कुमार मल्होत्रा, श्री रामचन्द्र विकल, भाजपा महामन्त्री श्री केदारनाथ साहनी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव, लब्ध प्रतिष्ठि पत्रकार प० क्षितीश वेदालंकार, दिल्ली आर्य महिला सभा की श्रीमती मंत्राणी कृष्णा चड्ढा, एवं डी.ए.वी. शिक्षण संस्थानों के प्राचार्यों ने माल्यार्पण द्वारा श्री सहगल का अभिनन्दन किया एवं उनके शतायु होने की कामना की।

समारोह में सेवाव्रती श्री सहगल को परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल आर्य व प्राचार्य आर्य वीर भल्ला ने २ लाख ११ हजार की थैली भेंट की और उन्होंने ११ हजार, १११ रुपये अपनी ओर से मिला कर सारी राशि युवक निर्माण के लिए दे दी।

अपने अभिनन्दन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए श्री सहगल ने भविष्य में ८-१० घण्टे के स्थान पर १०-१२ घण्टे प्रति दिन समाज सेवा का व्रत लिया।

कार्यक्रम सत्यप्रकाश जी के आशीर्वचन, शान्ति पाठ से सम्पन्न हुआ।

आर्य सन्देश साप्ताहिक के स्वामित्व के सम्बन्ध में विवरण

फार्म-४

(प्रपत्र नियम ८)

१. प्रकाशन का स्थान	१५, हनुमान रोड नई दिल्ली-१
२. प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३. मुद्रक का नाम	सूर्यदेव
राष्ट्रीयता	भारतीय
४. प्रकाशक का नाम	सूर्यदेव
५. पता	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१
६ सम्पादक का नाम	सूर्यदेव
राष्ट्रीयता	भारतीय
७. पत्र का स्वामित्व किसके पास है	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

मैं सूर्यदेव घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

—सूर्यदेव

गुरुकुल वार्षिकोत्सव...

(पृष्ठ एक का शेष)

अवसर पर आर्य विद्वानों व सन्यासियों के विविध प्रवचन और भाषण सुनने को मिलेंगे। सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्द बोध जी, स्वामी ओमानन्द जी श्री वन्दे मातरम् जी तथा ओजस्वी वक्ता श्री क्षितीश वेदालंकार, आचार्य प्रियव्रत वाचस्पति, प्रो० शेर सिंह, श्री वीरेन्द्र, डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार, डा० श्याम सिंह शशि, श्री रमानाथ अवस्थी, विनय चन्द्र मुद्गल आदि आर्य नेता पधार रहे हैं। आशा है आर्य जन अधिक से अधिक संख्या मे पधार कर पुण्य के भागी बनेंगे। और कुलवासियों के उत्साह को बढ़ायेंगे।

इस वर्ष गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष चन्द जी विद्यालंकार ने गुरुकुल के पाठ्यक्रम के एकीकरण पर विचार करने के लिए एक संगोष्ठी का भी आयोजन किया है। स्वामी श्रद्धानन्द ने आज से ९१ वर्ष पूर्व जिस स्थान पर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय को स्थापित किया था उस स्थान का भी पुनरुद्धार कर दिया गया है। गंगा की दो धारायें पार करने के पश्चात् उस स्थान तक पहुचा जा सकता है। पर अब इस वर्ष ऐसी व्यवस्था हो गई है कि कारों और जीपों से मुख्य भवन तक पहुच सकते हैं। सभी आर्य भाई-बहनों से निवेदन है कि स्वामी श्रद्धानन्द के इस भव्य स्मारक को देखने अवश्य आए।

—डा० दीनानाथ शर्मा (मुख्याधिष्ठाता)

वेदों को धर्मग्रन्थ...

(पृष्ठ चार का शेष)

किये हैं उनकी मूल प्रकृति ये संहिता पाठ (सन्धिकृत पाठ) हैं। संहिता शब्द का बिखरे हुए का संकलन अर्थ कदापि नहीं हो सकता।

६—श्रेष्ठ कविताओं का साम्प्रदायिक धर्म से क्या वास्ता। इसलिये वैदिक सूक्तों का विषय भी धर्म नहीं है।

समीक्षा :—कोई भी भाषा हो वह मानव के भावो की अभिव्यक्ति ही होती है। और भाषा के गद्य और पद्य दो रूप होते है। जैसे व्यक्ति गद्य मे अपने भावो की अभिव्यक्ति कर सकता है उसी प्रकार (पद्य) कविता में भी कर सकता है वेद क्योंकि काव्यरूप है इसलिये उन्हें धार्मिक न मानना लेखक की महाभ्रान्ति है। हां, यह तो लेखक ने भी सत्य को स्वीकार किया परोक्षरूप मे कि वेद धार्मिक पुस्तक तो हैं, किन्तु साम्प्रदायिक धर्म रूप नहीं। क्योंकि "सम्प्रदाय" उसे कहते हैं जो गुरुडम होता है, जो किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा चलाया जाता है। क्योंकि वेदों में ऐसा नहीं है वेद तो सार्वभौम ईश्वरीय ज्ञान है, अत: वह साम्प्रदायिक पुस्तक तो नहीं है, किन्तु शाश्वत, निर्भ्रान्त सत्यधर्म की पुस्तक अवश्य है।

इत्यादि बातों के अतिरिक्त भी लेखक ने वेदो पर कीचड़ फेंकने की कुचेष्ट की है, जो कि कदापि क्षम्य नहीं है। महर्षि दयानन्द आधुनिक युग में महान् वेदों के उद्धारक हुए हैं, उन्होंने पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके अन्ध-भक्त समस्त भारतीय विद्वानों के द्वारा वेदो पर लगाये दोषो का समूल उन्मूलन करके विमल वेद विद्या का प्रकाश हमें देकर महान उपकार किया है। उनके भक्त वैदिक विद्वान् आप सदृश पाश्चात्य विद्वानो के उच्छिष्ट भोगियो की समस्त शंकाओं का उन्मूलन करने में समर्थ रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। ये कीचड़ आप ने ही नहीं कितने विद्या द्रोहियो ने वेदों पर फेंकी है। किन्तु सदा यह स्मरण रखिये-सूर्य की तरफ मुंह करके थूकने वाले की भान्ति जो सत्य-प्रकाश का भी विरोध करता है उसको बुद्धिजीवी तो क्या, मनुष्य कहने मे भी संकोच ही होता है। अत: आप प्रथम स्वयं वेदों का आग्रह रहित होकर स्वाध्याय करें और फिर सत्यासत्य का विवेक कर मनुष्यता का परिचय देंगे ऐसी हमे आशा है। आप तो सूर्यकान्त सूर्यरूप प्रभा वाले होकर भी कहां घोर अन्धकार गुफा के कोने में बैठे हुए हो।

—राजवीर शास्त्री

सम्पादक—'दयानन्द सन्देश'

सीताष्टमी पर्व सम्पन्न

दक्षिणी दिल्ली आर्य महिला मण्डल के तत्वावधान में सीताष्टमी का पावन पर्व, आर्य समाज लाजपत नगर मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। स्त्री आर्य समाजो की प्रतिनिधि बहनों ने माता सीता की विरुदावली का गायन करते हुए कविताओ एव गीतो द्वारा उन्हें श्रद्धाजलि दी। उनके आदर्श चरित्र के कारण आज भारतीय सस्कृति गौरवान्वित है। श्रीमती शकुन्तला आर्या ने आज की ज्वलन्त समस्याओ पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज देश साम्प्रदायिकता और अलगाववाद की चक्की में बुरी तरह से पिस रहा है। जिस प्रकार माता सीता ने "माता निर्माता भवति" की उक्ति को चरितार्थ करते हुए लव-कुश का निर्माण किया था, जिन्होने अश्वमेध यज्ञ के घोडे को पकड़ने के सदर्भ में अपने पौरुष का परिचय देकर लक्ष्मण को छठी का दूध याद कराया था, उसी प्रकार आज भी नारी वर्ग अपने इसी उत्तरदायित्व का वहन करते हुए संतानो को योग्य और पराक्रमी बना कर देश द्रोहियो के सपनो को धूमिल करने में योगदान दें। यही राष्ट्र की बहुत बड़ी समयानुकूल सेवा है।

—कृष्ण ठुकराल

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज सीसामऊ (कानपुर) का वार्षिक निर्वाचन सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। निम्न अधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री लक्ष्मण कुमार जी शास्त्री

मन्त्री—श्री सुधीन्द्र कुमार जी शास्त्री

कोषाध्यक्ष—श्री वेदपाल जी

आर्य समाज सोहसराय (नालन्दा) में क्रान्तिकारी-प्रवचन

दिनांक १०, ११ एव १२ मार्च ९१ को बिहार के नालन्दा जिलान्तर्गत सोहसराय नगर में स्थानीय आर्य समाज के तत्वावधान मे तीन दिनो का "क्रान्तिकारी-प्रवचन" स्वामी अग्निव्रत (डा० देवेन्द्र सत्यार्थी) का आयोजित किया गया महर्षि स्वामी दयानन्द का ऐतिहासिक मूल्यांकन एव आर्य समाज द्वारा स्वाधीनता सग्राम में योगदान की चर्चा हजारों लोगों ने सभा मे उपस्थित होकर सुनी। उपस्थित जनता पर इस प्रेरणादायी प्रवचन का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। आर्य समाज मन्दिर के प्रांगण में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

—हरिहर प्रसाद, मन्त्री

स्वामी आनन्द बोध के आह्वान पर पांच व्यक्तियों ने वानप्रस्थ ग्रहण किया

—बिहार राज्य अन्तर्गत नालन्दा जिले के मुसाढी ग्राम के स्थानीय आर्य समाज के ३४वें वार्षिकोत्सव के शुभावसर पर (जो दिनांक १, २ एव ३ मार्च १९९१ को आयोजित हुआ,) पाच आर्य पुरुषों ने वानप्रस्थ की दीक्षा ली। इनका नाम निम्न प्रकार से रखा गया —

१ डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी	अग्निव्रत वानप्रस्थ
२. राम वृक्ष 'आर्य पथिक'	सदानन्द वानप्रस्थ
३ रामवृत सिह आर्य	ज्ञानव्रत वानप्रस्थ
४. राम लखन गिरी	म० राम लखन गिरी
५. शिवबालक पण्डित	शिवव्रत वानप्रस्थ

—बिहार राज्य आर्य प्र० सभा के नवनिर्मित भवन के उद्घाटन समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्र० सभा के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्द बोध जी ने लोगो से वानप्रस्थ लेने की अपील की थी। यह उत्सव होली एव नवसवत्सरोत्सव के अवसर पर मनाया गया। इसमें स्वामी ब्रह्मानन्द नैष्ठिक तपोवन आश्रम देहरादून, पं० महावीर सिह आर्य भजनोपदेशक पटना सिटी एव श्रीमती विजयावती आर्या (मुगेर) ने भाग लिया।

जहां होली के अवसर पर शराब का दौर चलता था, वहां सत्सग की धारा बह गयी, २१ बच्चो ने यज्ञोपवीत पहना और सात्विक जीवन बिताने का सकल्प लिया।

—शिव बालक सिह आर्य मन्त्री

शोक समाचार

वयोवृद्ध वैदिक विद्वान पं० विश्वनाथ वेदोपाध्याय नहीं रहे

पण्डित विश्वनाथ वेदोपाध्याय जी नहीं रहे। दिनांक ११ मार्च १९९१ को प्रात ६.४० बजे उन्होने नश्वर शरीर का त्याग कर दिया। पिछले एक सप्ताह से वह रुग्ण थे। इस समय उनकी आयु १०३ वर्ष थी।

मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व तक पण्डित जी ने लेखन कार्य किया। वह अथर्ववेद के पहले काण्ड का भाष्य प्रारम्भ करने वाले थे, उन्हें आशा थी कि वह छः माह में इसे पूर्ण कर लेंगे। २७ जनवरी, ९१ को इन पंक्तियों के लेखक से हुई भेंट में उन्होंने इच्छा व्यक्त की थी कि अथर्ववेद भाष्य उनके जीवन काल में पूर्ण होकर प्रकाशित हो जाये। काण्ड २ व ३ की पाण्डुलिपि तैयार है एवं शेष ४ से २० काण्ड तक का अथर्ववेद भाष्य कई खण्डों में रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत हरियाणा) से प्रकाशित एव प्राप्य है।

पण्डित जी गुरुकुल कांगड़ी (विश्वविद्यालय) के सुप्रसिद्ध स्नातक थे। आप वहाँ कि "विद्यालंकार" एव "विद्यामार्तण्ड" मानोपाधि से सुभूषित थे। सन् १९१४ के दीक्षान्त - समारोह में प्रथम विभाग में सर्वप्रथम रहे। वैदिक साहित्य, सस्कृत-साहित्य, दर्शनशास्त्र और रसायन शास्त्र (कैमिस्ट्री) तथा सर्वयोग में प्रथम रहने के कारण आपको ४ सुवर्ण पदक और एक रजत पदक प्राप्त हुआ। आप सन् १९१४ में ही गुरुकुल कांगड़ी महाविद्यालय में समय-समय पर आप रसायन, दर्शन तथा वेद-विषय पढाते रहे, और सन् १९४२ मे वहा से सेवा मुक्त हुए। आपकी कृतियों का विवरण निम्न प्रकार है—

१— सामवेद का आध्यात्मिक भाष्य
२— सन्ध्या-रहस्य
३ — वैदिक पशु-यज्ञ मीमांसा
४— वैदिक-जीवन
५— वैदिक गृहस्थाश्रम
६ — बाल सत्यार्थप्रकाश
७ — बाल ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका
८— अथर्ववेद-परिचय
९ — अथर्ववेद भाष्य (काण्ड ४ से २०)

इस अवसर पर हम ऋषि भक्तों का ध्यान शिरोमणि विद्वानों के जीवन में हमसे होने वाली उपेक्षा की ओर दिलाना चाहते हैं। हमने अनुभव किया है कि यदि पण्डित जी को वह सुविधायें जो विज्ञान ने आज प्रदान कर रखी है, सुलभ कराई गई होती तो अथर्ववेद का भाष्य अवश्य ही पूरा हो गया होता और अन्य कुछ ग्रन्थ और भी पण्डित जी लिख सकते थे। १०३ वर्ष की आयु में देहरादून जैसे शीत-प्रधान स्थान पर वह पिछले लगभग छः माह से लेखन कार्य नहीं कर सके थे। आवश्यकता थी कि उन्हें वातानुकूल एव सेवकों की सेवाएं सुलभ कराई जातीं। आर्य समाज मे वेद पूजा का जो स्वरूप बन गया है वह ऋषि प्रतिपादित विचारों से सर्व विपरित है। यह भी एक कारण है, आर्य समाज की प्रगति, प्रचार व प्रसार मे बाधक होने का। आशा है आर्य जन इस विद्वान की मृत्यु से शिक्षा ग्रहण कर भविष्य मे अपनी शिथिलताओ को दूर करेंगे। अन्त में हम ईश्वर से पण्डित जी की आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करने की प्रार्थना करते हैं एवं उनके परिवार के सदस्यों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

मनमोहन कुमार आर्य
१७६-ब्लाक दो, चुक्खू वाला, देहरादून-२४८००१

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय डा० धर्मपाल जी,

सादर नमस्ते। आशा है आप सभी स्वस्थ होंगे। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता पर आपको हार्दिक बधाई। इस अवसर पर आपके आयोजन द्वारा अनेक महानुभावों के प्रवचन सुनने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। उसके लिए हार्दिक धन्यवाद। आपके द्वारा भेजे गए आर्य सन्देश के विशेषांक और स्मारिका प्राप्त हुए, पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई।

आशा है कि भविष्य में भी प्रचार हेतु, ऐसे भव्य सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

—नीलम मिश्र, प्रिंसिपल, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य

१.	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम, द्वितीय) प्रत्येक		१.५०
२.	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
३.	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३.००
४.	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४.००
५	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
६.	धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५.००
७.	फ्लैश ग्राफ ट्रुथ	(डा० सत्यप्रकाश वर्मा)	२ ००
८.	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	,, ,,	२.००
९.	एनाटोमी ग्राफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०.	आर्यों का आदि देश	,, ,,	२ ००
११.	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	,, ,,	२५.००
१२.	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	,, ,,	२ ००
१३.	सत्वारो वै वेदा	,, ,,	५ ००
[illegible].	द्वैतसिद्धि	,, ,,	५.००
१५.	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ में	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	२०.००
१६.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(पं० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५ ००
१७.	हंसता चल, हंसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६ ५०
१८	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
१९	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२०.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२१.	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२२.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकड़ा

नोट : उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान : **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P.S.O on 28-29-3-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" ३१ मार्च, १९९१

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज राजनगर पालम कालोनी नई दिल्ली को एक वानप्रस्थ अथवा परिवार वाले (जिसमें दो या तीन सदस्य हों) पुरोहित की आवश्यकता है। आवास आर्य समाज में ही होगा। दक्षिणा हवन आदि से भी सहयोग किया जायेगा तुरन्त सम्पर्क करें।

लेफ्टीनेन्ट मधुकर सिंह मल्होत्रा

आर ब्ल ३६ /आई-२२ राजनगर पार्ट १ पालम कोलोनी नई दिल्ली-४५

सार साहित्य

पूज्या मीरा यति जी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर हरिद्वार निरन्तर वाणी और लेखनी से वैदिक धर्म की सेवा कर रही हैं। वे अपना साहित्य निःशुल्क वितरित करती हैं। इस वर्ष निम्न पुस्तकें तैयार हुई हैं—

संस्कार मणि—मनुष्य का निर्माण कैसे होता है।

साधना पथ—कैसे साधना करें।

ब्रह्म यज्ञ—काव्यात्मक रूप

वैदिक गीतांजलि—गीत संग्रह

पाठकों से विनम्र निवेदन है कि डाक से मंगाने वाले १० रुपये मनीआर्डर द्वारा डाक व्यय के लिए भेज दें। जो व्यक्तिगत रूप से लेना चाहें, वे आश्रम में आकर ले जावें।

—वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार

विश्व शान्ति सामवेद यज्ञ सम्पन्न

डा० बलदेव कौशल बाल ज्योति आर्य पब्लिक स्कूल, पश्चिम विहार, नई दिल्ली में १५ मार्च १९९१ को श्रीमती प्रकाश आर्या जी के जन्मदिवस के उपलक्ष में विश्व शान्ति सामवेद यज्ञ का आयोजन डा० धर्मपाल द्वारा समारोह पूर्वक किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आशीर्वाद देते हुए विद्यालय की प्रगति की सराहना की और कहा कि विद्या दान के इस महायज्ञ में श्रीमती प्रकाश आर्या का रात-दिन का परिश्रम सदैव याद किया जायेगा। आचार्य यशपाल सुधांशु यज्ञ के ब्रह्मा थे। आचार्य जी ने श्रीमती प्रकाश आर्या की दीर्घायु के लिए शुभकामनायें व्यक्त की तथा आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर अन्य अनेक भाई बहनों ने भी अपनी शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर नन्हें मुन्ने बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए गये।

—प्रकाश आर्या अध्यक्षा

महर्षि दयानन्द शिला निर्माण

फाजीपुर (प्रोक्षा सागर) पर महर्षि दयानन्द शिला निर्माण हेतु शिलान्यास मकर सक्रांति के दिन १४ जनवरी १९९१ को पूर्व सांसद श्री सत्येन्द्र जी गुड़िया के हाथों सम्पन्न हुआ।

—इन्द्र वर्मा चौहान

सेवा में—

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २२ | रविवार, ७ अप्रैल, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

दीन हीन जनों के कल्याण में संलग्न दानवीर महाशय धर्मपाल

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

सरल सहज स्वभाव के धनी महाशय धर्मपाल का जन्म ६८ वर्ष पूर्व २७ मार्च को स्याल कोट पाकिस्तान में हुआ था। उनके पिताजी उनकी उगली पकड़ कर उन्हें आर्य समाज मदिर ले जाते थे। आर्यसमाज के सस्कार उन्हें घुट्टी मे मिले इसीलिए वे महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना गुरू व प्रेरक मानते हैं। महाशय जी अपने माता-पिता को श्रद्धा एव सम्मान से स्मरण करते हैं। अथक परिश्रम के बल पर उन्होंने एक बहुत बड़ा व्यापार दिल्ली में खड़ा किया। इस विशाल व्यापारिक सस्थान को खड़ा करने मे उन्होने न जाने कितनी कठिनाईयां भी झेली होंगी। परन्तु उनका मुस्कराता हुआ चेहरा बताता है कि वे कभी न घबराए और न ही थके।



(महाशय धर्मपाल जी)

महाशय धर्मपाल लम्बे समय से आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान हैं। गुरुकुल,कागड़ी फार्मेसी हरि-द्वार के प्रबन्ध निदेशक हैं। समर्थ शिक्षा समिति के कोषाध्यक्ष हैं। महाशय चुन्नीलाल ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं। इस प्रकार की संस्थाओं की सूची बहुत लम्बी है। निर्धन असहायों की सेवा के लिए जनकपुरी मे बनाया गया करोड़ों की लागत से अभी भी बनता आ रहा माता चन्ननदेवी आर्य नेत्र चिकित्सालय उनकी उदारता एव दानी स्वभाव का कीतिमान है। ऐसी ही संस्था आर्यसमाज सुभाष नगर में भी चलती रही। एक चलते फिरते अस्पताल की भी स्थापना स्कूली छात्रों और ग्रामीण जनता के लिए उन्होने प्रारम्भ की हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में भी महाशय जी का योगदान अप्रतिम है। पिताजी के नाम पर हरि नगर में एक सीनियर सैकेण्डरी स्कूल चल रहा हैं। धर्मपत्नी श्रीमती लीला वती के नाम से टैगौर गार्डन मे एक सीनियर सैकेण्डरी स्कूल चल रहा है। उनके स्वय के नाम पर जनकपुरी और सुभाष नगर में स्कूल चल रहे है। ऐसे स्कूलो की संख्या-४८ है।

महाशय धर्मपाल शाकाहारी, प्रतिदिन यज्ञ हवन करने वाले तथा ईश्वर भक्ति मे संलग्न अपने नाम को सार्थक करने हैं। उनकी फैक्टरी में प्रातःकाल और सायकाल यज्ञ एव कथा का आयोजन होता है। वे स्वय भी प्रभु गीत गाते हुए आनन्द मग्न हो जाते हैं। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी ने २७ मार्च १९९१ को आयोजित उनके जन्म दिवस समारोह मे व्यक्त किये। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामन्त्री श्री सूर्यदेव, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी के मन्त्री प्रो० प्रकाशवीर शास्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक आचार्य रामकिशोर वैद्य अन्तर्राष्ट्रीय कथाकार पं० यशपाल सुधांशु एव प० प्रेमचन्द श्रीधर, समर्थ शिक्षा समिति के श्री लक्ष्मीचद और दिल्ली की आर्यसमाजो एव अन्य समाजसेवी संस्थाओ के अधिकारियो ने महाशय जी के जन्मदिन पर उनका अभिनन्दन किया।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती द्वारा पंजाब और काश्मीर में चुनाव का विरोध

—सच्चिदानन्द शास्त्री

दिल्ली ३० मार्च। आगामी लोक सभा के चुनाव के साथ-साथ पजाब काश्मीर तथा असम मे प्रान्तीय विधान सभाओं के चुनाव कराये जाने सम्बन्धी समाचारों पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा—पंजाब और काश्मीर में पाकिस्तान खुले रूप में आतकवादियों और अलगाव वादियो की सहायता कर रहा है, पंजाब के राज्यपाल की हत्या की कई बार चेष्टायें हो चुकी हैं, बेगुनाह हिन्दुओ की सामूहिक हत्यायें बराबर जारी हैं। इन हालातों में भी यदि कोई राजनेता पजाब, कश्मीर आदि में चुनाव कराने की बात करता है तो पूरे देश मे गृहयुद्ध की स्थिति पैदा हो जायेगी, इसकी जिम्मेदारी उन लोगों पर पड़ेगी जो वहां चुनाव का समर्थन कर रहे हैं।

स्वामी जी ने कहा वोटों की खातिर उग्रवादियों को खुश करने का परिणाम सर्वप्रथम पंजाब, विधान सभा बनते ही खालिस्तान का प्रस्ताव होगा।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा देश के प्रमुख राजनीतिक दल-कांग्रेस भारतीय जनता पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी भी पंजाब काश्मीर आदि में चुनाव के पक्ष मे नहीं है।

उन्होने कहा आर्य समाज, जो कभी भी सत्ता अथवा राजनीति का लोलु नहीं रहा है, और जिसने राष्ट्र की सेवा निःस्वार्थ भाव से करते हुए बड़े-बडे बलिदान दिए हैं, वह पंजाब-काश्मीर मे चुनाव का कडा विरोध करता है।

स्वामी जी भारत के राष्ट्रपति जी से अपील की कि वे अपने विवेक से इन गम्भीर परिस्थितियों मे राष्ट्र को बचावे। पजाब मे चुनाव कराने के विषय मे वह पंजाब के राष्ट्रवादी सिक्खों, पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, सनातन धर्म सभा, सत निरंकारी मिशन, राधा स्वामी मिशन, जैन समाज तथा पजाब की कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओ की बैठक बुलाकर उसका कोई सर्वसम्मत समाधान निकालें अन्यथा पजाब में इस समय चुनाव कराना देश को गृह युद्ध के कगार पर खडा कर देगा।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

जगन्नाथ की वास्तविक आराधना

—श्री भैरव दत्त शुक्ल

प्राक्कथन—नील गगन का चमकीला नक्षत्र-मंडल, हरित शस्य श्यामला वसुंधरा के वक्षस्थल पर किलोल करते कृमि-कीट वर्ग से लेकर मानव तक समस्त प्राणि-समूह, प्रकृति नटी का प्रतिपल परिवर्तित कण-कण और अनन्त गतिशील प्रत्येक क्षण विशिष्ट नियमो की परिधि में सिमटा है। यही नहीं, जड़ पाषाण-खण्डों से लेकर चेतना के सारे रूप-स्वरूप तक सहज सुरक्षा की भावना का परिपालन हो रहा है। इन सब का स्वामी ही तो जगन्नाथ है, परब्रह्म परमेश्वर है। उसकी नियमिका शक्ति, संचालिका सामर्थ्य और न्याय-परिपालिका विवेक-संवलित क्षमता के प्रति प्रज्ञाशील सभ्य सुसंस्कृत मानव का कृतज्ञता-ज्ञापन करना, परमपिता ज्ञान-स्वरूप, आनन्द-सिंधु करुणाकर के प्रति श्रद्धा-विगलित स्वर में सन्त-गृहस्थ का आराधना-रत होना और शांति के संस्थापक एकमेव स्रष्टा के प्रति आर्य-सन्तानो का विनत-विनम्र बने रहना आवश्यक-अनिवार्य कर्त्तव्य है। इसे छोड़ या तोड़ देने से और चाहे कुछ न हो परन्तु संस्कार अस्त-व्यस्त हो जाते हैं, पारस्परिक सम-भाव के स्थान पर कलह-कुचालों का बुरा क्रम हावी हो जाता है और परोपकार के स्थान पर स्वार्थों की आंधियां उठने-उमड़ने लगती हैं।

इसीलिए हमें प्रातः और सायं सन्ध्या करने की आवश्यकता पड़ती है, प्राणायाम-आसन का सहारा लेकर यम-नियमों का पालन करना पड़ता है और योग-मार्ग के माध्यम से मोक्ष के परम लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की साधना पालनी पड़ती है। हमारी उपासना मन्त्रो के सहारे चलती है; मनन शील होती है। उसमें अनर्गल आलाप के लिए कोई स्थना नहीं होता, व्याकुल-विह्वल कर देने वाले करुण विलाप के निराशावाद की रच मात्र भी अपेक्षा नही होती और स्वस्थ आशावाद का अमृत प्रवाहित होता रहता है।

वेदो मे परमेश्वर की उपासना के प्रकार बतलाये गये हैं। उसी की बानगी के लिए प्रस्तुत है एक ऋचा—

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छाया अमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
—ऋग्वेद, १०।१२१।२१

इसे हम सरल शब्दों मे यों प्रकट कर सकते हैं—(यः आत्मदा) जो प्राणिहित के लिए स्वयं को प्रदान किये हुए है, (बलदा) जो शक्ति-दाता है, (विश्वे) संसार की परिधि में सम्मिलित समस्त जीव (यस्य उपासते) जिसको उपासना करते हैं, लेकिन (देवाः) विबुध-विद्वज्जन (यस्य प्रशिषं) जिसकी आज्ञा का पालन करते हैं, (यस्यच्छाया) जिसके द्वारा सपादित छेदन-भेदन अथवा दण्ड और (यस्य मृत्युः) जिससे उपलब्ध मृत्यु भी (अमृतम्) जीव की अमरता के लिए है; (कस्मै देवाय) उस सुख-स्वरूप, आनन्द-निधान, सर्व सुविधा प्रदायक प्रभु की हम (हविषा विधेम) आत्म-दान द्वारा पूजा करें, उपासना करें।

(१) आत्मदा—मन्त्र के प्रारम्भ मे ही सूचित कर दिया गया है कि वह प्रभु 'आत्मदा' है वह पर ब्रह्म जगदीश्वर पूरी तौर से निःस्वार्थ भाव से प्राणि-समूह के उपकार के हितार्थ सृष्टि की सर्जना करता है, परिपालना मे तत्पर रहता है, उसे संभाले रहता है और अन्ततः विश्राम के लिए प्रलय की सुमधुर रजनी की अवतारणा भी करता है। कर्म और योग्यता के आधार पर विश्व के समस्त प्राणियो में समुचित साधनो की वर्षा करता है, सुविधाओं के अम्बार लगाता है, विकास और उत्थान के असंख्य अवसर प्रदान करता है। यही नही, जो प्रारम्भ में अशक्त-अक्षम प्रतीत होते हैं, उन्हीं को उन्नति की ओर गतिशील होने के लिए प्रबल प्रेरणा देता है।

उस प्रभु का कोई भी कार्य अपने लिए नहीं है। उसकी तो एक-एक क्रिया, एक एक व्यापार सर्वोपकार के समष्टिपरक अनुष्ठान पर न्यौछावर है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने-प्राणि-परिपालन और एकमेव सर्वहित के लिए अपने को सर्वतोभावेन समर्पित कर रक्खा है।

इसीलिए जो भी उस परमेश्वर के सच्चे भक्त होते हैं, जिन्हें उसकी आराधना करनी होती है, वे अपने प्रभु के ही समान अपने को जन-हित पर अर्पित कर देते हैं। अपने आप बिना किसी विवशता या निमन्त्रण के तरह-तरह के कष्ट-कटकों का वरण करते हुए और आपत्ति-आंधियों के निर्मम प्रहार झेलते हुए अपने-हृदय का एक-एक स्पन्दन प्राजापत्य भाग में सहर्ष आहुत करते रहते हैं। ऐसे ही महामानव 'नर'—स्वार्थ में न रमने वाले और जन-समूह को सतत प्रगति गामी बनाने वाले (नृनि-से चलना) होते हैं। उनमें शोषण-उत्पीड़न की तो गंध तक नहीं मिल सकती।

(२) बलदा—वह ईश्वर अपने अनुचर जीवात्मा के साहाय्य के रूप में उसे पराश्रित नहीं बनने देता। वह उसे बल उपलब्ध करा देता है। उसमें आन्तरिक शक्ति-तत्त्व प्रविष्ट कराकर, वह उसे वाह्य शक्ति-सम्पन्न भी करता है। वह उसका हाथ नहीं पकड़ता, उसे गोद में भी नही लेता, वरन् उसे प्रगति-पथ पर चलने का आत्मनिर्भर अभ्यासी बना देता है, अकर्मण्यता की सकीर्णता से निकाल कर, उत्थान के सोपानों के माध्यम से अभ्युदय और निःश्रेयस् का पथिक बना डालता है और तरह-तरह के अवरोधो से भिड़ने-निपटने और उन्हें विनष्ट करने की सामर्थ्य प्रदान करता है। प्रभु की करुणा और दया यदि जीवात्मा को अपने पैरों पर खड़ा होना न सिखा पाये तो उसे निष्ठुरता ही माना जायगा। यदि वह उसे पतन, अधोगति या अभाव से सर्वथा दूर ही रक्खे तो अनुभव-विभव से सदैव रिक्त बने रहने की आशका हो सकती है।

इसीलिए परमेश्वर के साहाय्य की यही सही विधि है कि वह जीवात्मा को बल प्रदान करता है, हर समस्या से निपटने की क्षमता देता है। और प्रत्येक प्रश्न का उत्तर खोजने के मनन, चिन्तन, धारणा, मेधा प्रभृति उपकरण उपलब्ध कराता है। हो सकता है कि उन्नति-कामी जीव पदे-पदे बाधाओं के व्यूह में खो जाये-दायित्व-भारों की दुर्बलता से व्यग्र-विह्वल-बेचैन हो जाये, वीथि-पथ कटकका कीर्ण और जटिल-विषम बन कर उसे पलायनोन्मुखता की ओर मोड़ने के प्रयास करें, तरह-तरह के आघात-प्रहार आहत कर डालें परन्तु वह अपना उत्साह नही खोता, विवेक नहीं गवाता और मनन-चिन्तन की सुरापगा में तैरते हुए, व्यवहार के ठोस धरातल पर पैर टिका कर अपने परम साध्य की ओर देखना विस्तृत नही कर पाता।

इस दृष्टि से जो आस्तिक हैं, उन्हें औरों की सहायता करने में यही प्रयत्न रखना चाहिए कि जिस व्यक्ति या व्यक्ति-समूह की सहायता की जा रही है, वह औरों पर निर्भर न होने पाये और अपने पैरों पर खड़ा हो जावे। 'दान' वृत्ति कितनी सुन्दर और कल्याणकारिणी होती है। परन्तु सहायता के खोटे प्रकार के कारण उसका सही प्रयोग नहीं किया जाता। इसी कारण से भारत—जो सारे ससार के पालन-पोषण की अकूत क्षमता और प्रचुर प्राकृतिक सम्पदा से पूर्ण है, भिक्षा-वृत्ति का भयावह अड्डा बना हुआ है और अपने से छोटे देशों के आगे हाथ फैलाता दिखायी देता है। दान की कुत्सित परम्परा से ही बनवाये गये कुए कूड़ों से भरे जाते हैं, छोड़े गये साड़ भूखे-प्यासे रह कर सड़कों पर डंडे खाते फिरते हैं, धर्मशालाएं या तो अनाचार के केन्द्रो मे बदल जाती हैं या स्वार्थी लोगों की जीविका या कर-वचना की सहायिका बनती हैं और सम्मानास्पद सचेतन सुयोग्य कन्या-रत्नो का वस्तु या पशु के समान दान किया जाता है जिसका और भी गर्हित रूप कन्या-विक्रय की घृणा प्रथा बनता है।

हम यदि ईश्वर-भक्त बनने का दम भरते हैं तो हमे चाहिए कि राष्ट्र मे भिक्षा-वृत्ति की विघातिनी परम्परा का उन्मूलन करें, सुदृढ़ पैरो, सबल भुजाओं और उन्नत-उर्वर मस्तिष्कों को योग्यता के अनुसार कार्य दें, लोक-चेतना में श्रम के प्रति आदर की भावना का समावेश करें, पगु-विपन्न व्यक्तियों को भी उन्नति के माध्यम दें, विद्या को निरर्थक न बनने दे और सम्पत्ति को शोषण-उत्पीड़न का साधन न होने दें।

प्रभु की आराधना का तात्पर्य ही है प्रभु-भक्तों में भाई-चारे की अनुभूति होना, समष्टि परक विकास का अनुगामी बनना और लोक-कल्याण की कलित पीठिका पर स्वार्थ का कलुष न फैलने देना। जब तक मानव अपने को हिन्दू-मुसलमान या ईसाई मानता है, स्पृश्य-अस्पृश्य के विभेद में उलझाता है, सवर्ण-अन्त्यज की अनमना धारणा में फसाये हुए है, वर्ग-युद्ध, सम्प्रदाय-संघर्ष, जाति-विद्वेष और शोषण-उत्पीड़न का माध्यम मात्र बनाये हुए हैं; तब तक उसे प्रभु-भक्त नहीं माना जा सकता। (क्रमशः)

महाराजा अग्रसेन इन्टर कालेज
पो०—विकुनिया, कोसी (उ० प्र०)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

वैशाखी

सम्पादकीय

वैशाखी पर्व का भारतवर्ष के इतिहास मे विशेष महत्व है। यह राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का प्रतीक पर्व है। यह सामाजिक एव धार्मिक समरसता को आत्मसात किए हुए है। यह पर्व चैत्र के उत्तरार्ध मे एव वैशाख के पूर्वार्ध में उस दिन मनाया जाता है, जिस दिन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है। अंग्रेजी तिथि के अनुसार यह प्रतिवर्ष १३ अप्रैल को पड़ता है। शक संवत, ईसवी ईसवत्, अथवा अन्य कोई भी कलैण्डर जो सूर्य एवं पृथ्वी की गति से नियमित होता है, उसके अनुसार इसकी तिथि एवं दिन १३ अप्रैल को ही पड़ते हैं।

इस दिन का भारत वर्ष के स्वाधीनता सग्राम में भी विशेष महत्व रखता है। १९१९ में वैशाखी के दिन ही जलियांवाला बाग मे जनरल डायर के आदेश पर सैकड़ो, हजारों निरपराध भारतियों को मौत के घाट उतार दिया गया। वे सरकार के विरोध में एक जनसभा कर रहे थे। इसका प्रभाव भारतीय जनमानस मे एक नई ऊर्जा प्रदान करने वाला हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भारतियों का उत्साह और अधिक बढ़ गया। जलियांवाला काण्ड के पश्चात् अमृतसर मे जब कांग्रेस का महाअधिवेशन होना था, उसके स्वागताध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती बनाये गये। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने अपने भाषण के द्वारा भारतीय लोगों से ओजस्वी वाणी में कहा था कि यदि अब सोते रहे तो भारत कभी स्वाधीन नही हो पायेगा और अंग्रेजो के अत्याचार इसी प्रकार हम लोगो पर होते रहेगे। यह भी उल्लेखनीय है कि स्वामी जी ने जिनका पूर्व नाम महात्मा मुंशी राम था, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना वैशाखी के अवसर पर ही की थी।

१३ अप्रैल १७४९ को सरदार जस्सासिंह अहलूवालिया ने अहमद शाह अब्दाली का विरोध किया था और पजाब को अफगान, साम्राज्य के अधीन होने से बचा लिया था। सन् १७७५ मे सिखो ने मुगलो से सघर्ष करके इसे मुस्लिम साम्राज्य होने से बचाया था। शेरे पजाब महाराजा रणजीत सिंह का राजतिलक भी १८०१ में इसी दिन हुआ था। सन् १६९९ में गुरू गोबिन्द सिंह ने आनन्दपुर मे खालसा पथ की शुरूआत भी इसी दिन की थी। यह बताते हैं कि बोद्ध गया में भगवान बुद्ध को बोध भी इसी दिन प्राप्त हुआ था। पजाब और पश्चिम भारत में यह दिन बड़े धूमधाम से,मनाया जाता है। लोग गंगा स्नान करते हैं। यद्यपि यह त्योहार किसी विशेष देवता से नही जुड़ा हुआ फिर भी इसे उल्लास पूर्वक मनाया जाता है। इसका कारण यही है कि इस समय रबि की फसल पक कर तैयार होती है और किसान मस्ती में झूम उठते हैं। भारत का कोई कोना ऐसा नहीं है, जहा पर यह पर्व उल्लास पूर्वक न मनाया जाता हो। चाहे महाराष्ट्र हो अथवा मालाबार, तमिलनाडु हो या उत्तर प्रदेश—सर्वत्र यह दिन मस्ती का दिन होता है। यह दिन राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का दिन है। हमारा कर्त्तव्य है कि राष्ट्रीय एकता के समर्थन हेतु इस दिन को धूमधाम से मनाये।

—डा० धर्मपाल

माता मीरां यति द्वारा वेदप्रचार

माता मीरां यति वाणी और लेखनी दोनो माध्यमों से वेदप्रचार कार्य में अहर्निश सलग्न हैं। पिछले दिनों उन्होने दिल्ली की आर्यसमाजो, परिवारो और आश्रमों में वेद प्रचार किया। उनके प्रवचन रूप नगर, जवाहर नगर, जनकपुरी, न्यू राजेन्द्र नगर, पुरानी राजेन्द्र नगर, बहावलपुर, करोलबाग, ग्रेटर कैलाश और महिला आश्रम राजेन्द्र नगर में उनके ३५ प्रवचन हुए। —सम्पादक

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(३१ मार्च, ९१ के अंक से आगे)

मेरा द्वितीय आश्रम प्रवेश

मेरा विवाह २४ अप्रैल १९५१ में हुआ। मैं चाहता था कि सस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न हो। उस समय हमारे प्रान्त में प० रामसहाय जी शर्मा तथा प भद्रसेन जी ही पौरोहित्य कर्म में कुशल माने जाते थे। सयोग ऐसा हुआ कि प० रामसहाय जी तो उन दिनो इन्दौर चले गये और पं० भद्रसेन जी किसी अन्य विवाह में सम्मिलित होने का वचन दे चुके थे। अन्ततः मैंने प० धर्मदेव जी विद्या-वाचस्पति से पत्राचार किया। उनसे मैंने निवेदन तो इतना ही किया था कि वे किसी उपयुक्त व्यक्ति का सुझाव दें जो विवाह सस्कार करा सके। उनका उत्तर आया कि वे स्वय ही इसके लिए जोधपुर आयेंगे। मेरी प्रसन्नता का क्या कहना। दिल्ली से राष्ट्रीय ख्याति का एक विद्वान् मेरा विवाह सम्पन्न कराने आये, इससे अधिक खुशी और क्या हो सकती थी। प० धर्मदेव जी निश्चित दिन जोधपुर आये। उनके निवास की व्यवस्था नगर आर्य समाज में ही हमने की। जब वे संस्कार कराने मेरे श्वसुर गृह पर आये तो ससुराल पक्ष के पुरोहित प० पुखराज भी उपस्थित थे। इधर तो प० धर्मदेव जी संस्कारोपयोगी सामग्री को देख रहे थे, उधर पौराणिक पुरोहित ने नव दम्पती को गृह देवता के समक्ष बिठाया और पाणिग्रहण करा कर दोनो के हाथो के बीच मे गीली मेहदी रख कर एक रूमाल से पाणिद्वय को बांध दिया। मुझे तो इस बात का ज्ञान भी नही था कि इस प्रकार पाणिबधन की कोई व्यवस्था वैदिक विधि मे नही है क्योंकि दयानन्द प्रोक्त विवाह विधि मे तो वर वधु को स्वय अपने हाथो से यज्ञ में आहुति देनी होती है। यदि दोनो के हाथ ही वस्त्र से बांध दिए जावेंगे तो क्या वे बायें हाथ से आहुतियां देंगे। किन्तु पौराणिक सस्कारो में यज्ञाहुति पण्डित जी ही देते है। वर वधू तो मात्र दर्शक की तरह बैठे रहते हैं। खैर, हम गृह देवता के स्थान से उठ कर यज्ञ वेदी पर आये। स्मरण रहे कि मैं गृह देवता के सम्मुख बैठा अवश्य था, किन्तु मैंने वहा कोई मूर्ति पूजा जैसा कृत्य नही किया था। अब जब प० धर्मदेव जी ने वैवाहिक कृत्य कराने आरम्भ किए और आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क आदि विधियो के पश्चात् होम विधि आरम्भ हुई तो प० जी को मैंने बताया कि हमारे हाथ तो रूमाल मे बधे हैं, मैं आहुति कैसे डालूंगा। इस पर उन्होंने पूछा कि यह आवश्यक पाणि बधन किसने किया। मैंने प० पुखराज का नाम लिया तो पण्डितजी ने कहा कि यह गलत कार्य हुआ है। इस पर मैंने झटका देकर रूमाल हटा दिया और स्वपाणि को उन्मुक्त कर आहुतिया देने लगा। महिला मण्डल मे मेरे इस कृत्य को देख कर कानाफूसी होने लगी स्त्रियो को इस प्रकार 'हथलेवा' तोड़ना अनिष्टकारक और अमगल सूचक लगा। परन्तु मेरे श्वसुर (श्री मोहनलाल जी माथुर मेरी पत्नी के चाचा) को इसमे कुछ भी गलत नही लगा। सस्कार मे सारी वैदिक विधिया सम्यक् रूपेण सम्पन्न की गई। १९५२ मे मेरे बड़े पुत्र विनय का जन्म हुआ। उसके नामकरण, मुण्डन आदि सभी सस्कार वैदिक विधि से सम्पन्न कराये गये। यहां यह लिख देना आवश्यक है कि यद्यपि मेरे माता पिता तथा परिवार के अन्य लोग आर्य समाजी नही थे, किन्तु उनकी यह धारणा अवश्य थी कि आर्य समाज एक अच्छी सस्था है और उसे सब प्रकार से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। आर्य समाज से सम्बद्ध व्यक्ति अपने जीवन को उन्नत और अग्रगामी ही बनाता है।

मेरा संस्कृत अध्ययन

मैंने अपने बी० ए० और एम० ए० तक अध्ययन में हिन्दी, अंग्रेजी तथा दर्शन जैसे विषय ही ले रक्खे थे। सस्कृत के अध्ययन की मेरी कोई पृष्ठ भूमि नही थी। केवल शास्त्रीय साहित्य को हिन्दी अनुवादों और टीकाओ के माध्यम से ही मैं अब तक पढता रहा था। अब विस्तृत और गम्भीर शास्त्राध्ययन के लिए यह आवश्यक था कि मैं सस्कृत का उपयुक्त ज्ञान प्राप्त करूं। अध्ययन समाप्त हो जाने तथा जीविका मे लग जाने के कारण सस्कृत पढने का एक ही तरीका बचा था और वह था स्वयपाठी छात्र के रूप में संस्कृत का अध्ययन। मुझे पता चला कि प० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने सस्कृत स्वय शिक्षक ५ भागो मे लिखा है। पहले तो मैंने इस ग्रन्थ को ही मगोया। किन्तु इससे सुगम प्रणाली थी प० सातवलेकर रचित २४ भागो वाली सस्कृत पाठशाला की। (क्रमशः)

छः अप्रैल को जिनका बलिदान पर्व है

अमर धर्मवीर महाशय धर्मपाल

—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु

जब तक लौह लेखनी के धनी पत्रकार शिरोमणि श्री महाशय कृष्ण जीवित रहे, वह प्रति वर्ष महाशय राजपाल जी के बलिदान पर्व पर अपना सम्पादकीय लिखते रहे। आर्य समाज के रक्त रंजित इतिहास में महाशय राजपाल जी का बलिदान एक गौरवपूर्ण घटना है। आर्य समाज अपने वीरों हुतात्माओ के बलिदान पर्व नही मनायेगा तो जड़ता को प्राप्त होकर निष्प्राण होकर मिट जावेगा। प्रभु की अमर वाणी वेद का प्रचार करने के लिए तो कोई न कोई युक्त आत्मा जन्म लेता ही रहेगा। कोई संगठन भी वेद प्रचार के लिए आगे आ जावेगा परन्तु, आर्यसमाज यदि अपने भवनो, ईंटो, पत्थरो व स्कूलो की उपासना मे लगा रहा तो आर्य जाति का बड़ा अहित होगा।

महाशय राजपाल का स्थान आर्य समाज में बहुत ऊंचा हैं। उनका जीवन प्रत्येक असहाय, साधनहीन व विपत्ति ग्रस्त बालक के लिए एक उदाहरण है। महाशय जी एक अनाथ बालक थे। पिता जी न जाने विरक्त हो गये या किसी अन्य कारण से घर-बार छोड़ कर चले गये। अपने तपोबल से महाशय राजपाल जीवन मे धार्मिक, सामाजिक व सांसारिक दृष्टि से इतने ऊंचे उठे कि दूसरे के लिए एक आदर्श बन गये। वह स्वनिर्मित जीवन के [Self made man] व्यक्ति थे। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

वह एक साहसी कुरीति निवारक आर्य पुरुष थे। उनका नाम घसीटा राम था आर्य बने तो यह निरर्थक नाम तज कर सार्थक नाम रखा। पंजाब में हरियाणा, जम्मू काश्मीर व हिमाचल तथा देहली मे सहस्त्रो बच्चो का नाम उनके नाम पर राजपाल रखा गया। तभी तो प्रसिद्ध पत्रकार व कवि श्री नानक चन्द नाज' ने लिखा था—

मैंने देखा सैकड़ो ही पैदा हो गये राजपाल।
जब तेरी अर्थी उठाई गई थी ऐ राजपाल॥

यह १९६४ की घटना होगी कि सोलपूर दयानन्द कालेज [अब दयानन्द कालेज नहीं धामानी दयानन्द कालेज है। महर्षि के नाम से पूर्व एक सेठ का नाम आ गया है] में कोई पुस्तक विक्रेता इतिहास की सैकड़ों पुस्तकें ले आया। श्री आचार्य भगवान दास जी ने कहा हमारा एक प्राध्यापक इन्हें देखेगा तब क्रय करेंगे। यह कार्य मुझे सौपा गया। मैंने देखा कि भारत सम्बन्धी सभी इतिहास पुस्तको में महाशय राजपाल व रंगीला रसूल पर एक ही पैरा छपा था। सभी पुस्तकों मे अकाली नेताओ के चित्र एक योजना के अनुसार दिए गये थे। किसी भी पुस्तक में यह नही छपा था कि रंगीला रसूल पुस्तक मुसलमानों की ऋषि पर लिखी गई पुस्तको के उत्तर में लिखी गई। किसी भी पुस्तक मे यह नहीं छपा था कि हाई कोर्ट से महाशय राजपाल निर्दोष सिद्ध हुए।

किसी भी पुस्तक मे यह नहीं छपा था कि गाधी जी ने सर्व प्रथम रंगीला रसूल के विरुद्ध लिखा था। किसी भी मुसलमान ने इसके बारे में पहले नहीं लिखा था।

इससे सिद्ध हुआ कि विदेशियो ने एक षड्यन्त्र रच कर ऐसी पुस्तकें छपवाई जिससे भारत के अन्तर्राष्ट्रीय तत्वो को उकसाहट हो। आर्य समाज के विरुद्ध विष-वमन करके देश मे राष्ट्रीय शक्तियो को निर्बल करना इसका प्रयोजन था। मैंने तभी 'सार्वदेशिक' मे इस सम्बन्ध मे एक लेख दिया था। देश के शत्रुओं को तो महाशय राजपाल याद रहे, हम ही उन्हे भूल गये।

गांधीजी ने लिखा था राजपाल धर्मवीर नही प्रत्युत एक पुस्तक विक्रेता था तब वीर सावरकर ने इसका कड़ा प्रतिवाद करते हुए लिखा था कि प्रत्येक आर्य समाजी एक जन्म जात धर्मवीर होता है। महाशय राजपाल एक पुस्तक विक्रेता नही थे, वह धार्मिक पुस्तको के प्रकाशक व विक्रेता थे। ऐसा वीर सावरकर ने लिखा है।

महाशय जी से बहुत पूछा गया कि रंगीला रसूल का लेखक कौन है? आपने यह रहस्य न खोला। श्री प० मदनमोहन जी मालवीय ने शिमला मे श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से पूछा क्या महाशय जी ने लेखक का नाम नही बताया? स्वामी जी ने कहा, "न अभियोग में, न प्रथम आक्रमण के समय और न ही मरते दम तक लेखक का नाम बताया।" पुस्तक पर लेखक का नाम छपा ही नहीं था।

इस दृढ़ता पर लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने प्रसिद्ध पंजाबी कवि वारिस शाह का यह पद्य लिखा है—

वारिस शाह न भेद सन्दूक खुले।
भावें जान दा जन्दरा टुट जावे॥

भले ही जान रूपी ताला टूट जावे परन्तु, रहस्य रूपी सन्दूक कदापि नहीं खुलेगा। ऐसे थे महान आत्मा राजपाल।

उन्होने पत्रकार के रूप में आर्य समाज की सेवा की। प्रकाशक के रूप में आर्य समाज व भारत राष्ट्र की बड़ी सेवा की। जाति की ठण्डी रगों में गर्म रक्त का संचार करने वाला राष्ट्रीय साहित्य छाप-छाप कर सोए हुए देश को जगाया।

महाशय जी ने आर्य नेताओं, विद्वानों व साधु महात्माओं के व्याख्यानों व प्रवचनों के नोट लेकर संग्रह छापने की एक अद्भुत परम्परा चलाई। उनके प्रयास से पूर्व केवल एक 'उपदेश मञ्जरी' ही ऐसा संकलन था। महाशय जी की यह बहुत बड़ी देन है। इस पर हम यहां विस्तार से अभी कुछ नहीं लिखते। कभी फिर सविस्तार लिखा जावेगा।

महाशय जी के जीवन काल में उनका प्रकाशन संस्थान देश-विदेश में विख्यात हो गया। क्या यह कोई साधारण सी बात है। उनके एक सुपुत्र विरक्त होकर प्राण वानप्रस्थी के रूप मे सारा जीवन (कोई चालीस वर्ष) वैदिक धर्म की ठोस सेवा की। ऐसे महान धर्मवीर को हमारा प्रणाम।

—वेद सदन अबोहर (पंजाब)

उपयोगी घरेलू नुस्खे

—श्री नेतराम शर्मा

नेत्रों की ज्योति बढ़ाने के लिए—

—प्रातः मुंह में पानी भर कर पन्द्रह बीस बार ताजा पानी के छींटे देना।

—त्रिफला को रात्रि में पानी में भिगो प्रातः छान कर छींटे देना।

—स्नान करते समय आंखों को पानी में डुबो कर ऊपर नीचे दायें बायें क्लोक वाइज एन्टी क्लोक वाइज घुमाना (आंखें खोल कर)।

—गुलाब जल की एक छोटी शीशी में मटर के बराबर फिटकिरी डाल फ्रीज में रख लें, आंखो में डालने से आंखो की लाली तथा दर्द बन्द। जिस आंख में दर्द हो उसी ओर के कान मे रूई ठूसने से आराम।

—मोतिया बिन्द (शुरू की अवस्था में)। दस ग्राम प्याज का रस, दस ग्राम शहद, दो ग्राम भीमसैनी कपूर, इन्हें मिला कर शीशी में रखना, सलाई से रात में सोने से पहले लगाना। चश्मे उतारने के लिए (विशेषकर बच्चों के लिए) पांच बादाम गिरी, पांच ग्राम मोटी सौंफ, पांच ग्राम मिश्री डली वाली चूर्ण बना कर सोते समय मात्रा दस ग्राम दूध के साथ लें।

—गाजर को कद्दू कस से कस कर दूध मे उबाल कर देशी शक्कर डाल छत पर ढक कर रख सुबह नाश्ते में ४० दिन तक खाइये चश्मा उतर जायेगा, गाजर खाइये गाजर का रस शहद के साथ लीजिए, नेत्रों की ज्योती बढ़ेगी।

—आंखो मे लाली हो तो विषखपरा की जड़ माता के दूध में पीस कर लगाइये।

—आंखो में फूला हो तो बारहसिंहे का सींग माता के दूध में घिस कर लगाइये।

—आंखो में फूला के लिए विशखपरा की जड़ गाय के दूध मे लगाइए।

—आंखों मे पानी बहता हो तो विशखपरा की जड़ घिस कर शहद के साथ चाटिये।

—यदि रात रौंध आता हो तो विषखपरा की जड़ ओस में घिस कर लगाइये।

—आंखों मे असली शहद लगाने से भी आंखों की धुंध जाला तक दूर हो जाता है।

विश्व हिन्दू परिषद् के महासचिव श्री अशोक सिंघल के वक्तव्य से महर्षि दयानन्द के विषय में फैली भ्रान्ति का सुखद समाधान

श्रीयुत अशोक सिंघल जी,

सादर नमस्ते !

आपने २० फरवरी को मेरठ नगर में पत्रकारों से वार्तालाप में प्रकट किया था कि अगर कोई यह कहे कि कुरान, बाइबिल और दयानन्द की पुस्तक के आधार पर सरकार चलाओ तो अब यह नहीं हो सकता।

आपके इस वक्तव्य पर बहुत सारे आर्य जनों के रोषपूर्ण पत्र मुझे मिल रहे हैं। मुझे बहुत ही आश्चर्य के साथ कहना पड़ रहा है कि आपका यह वक्तव्य हिन्दू समाज में विघटन पैदा कर सकता है। क्योंकि आर्य समाज ने सदैव हिन्दू जाति की रक्षा के लिए आगे आकर कार्य ही नहीं किया अपितु बलिदान भी दिए हैं। अभी पिछले महीनो रामजन्म भूमि और मंदिर निर्माण के मामले में आपके संगठन द्वारा संचालित कार सेवा में हजारों आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया था। उनमें कई लोग शहीद हुए, जेलों में गए और यातनाएं सहीं। आपने इसका मूल्यांकन नही किया। इतिहास इसका प्रमाण है कि आज तक जो भी आन्दोलन हुए हैं उनमें पूरी हिन्दू जाति संगठित होकर आगे बढ़ी है तभी सफलता मिली है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती—जिन्होंने हमारी प्राचीन वैदिक सभ्यता और संस्कृति को पुनर्जीवित करने का कार्य किया और देशवासियो को जागरूक करके हिन्दू जाति को नाना प्रकार की कुरीतियो, अन्धविश्वासो के जाल से बाहर निकालने का भगीरथ प्रयास किया, आपने उनके ग्रन्थ जो वेद-वेदांग और प्राचीन सिद्धांतों से परिपूर्ण हैं, को बाइबिल और कुरान के समकक्ष करके - आर्य समाज के साथ द्वेष भाव को ही नहीं बढ़ाया अपितु महर्षि दयानन्द जैसे उच्चकोटि के राष्ट्रीय पुरोधा को समझने में भयावह भूल की है, और उस महान आत्मा का भारी अपमान किया है।

आर्य समाज ने हमेशा हिन्दुओं के हितों व उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कार्य किया है। इसमें कभी भी और कहीं भी मूर्ति पूजा को आड़े नहीं आने दिया। काश्मीर मे मुसलमान उग्रवादियों द्वारा तोड़े गए १०५ मन्दिरों का पुनर्निर्माण मैने स्वय वहां जाकर सरकार से उसी के खर्चे से करवाया। मध्य प्रदेश के सीतापुर और रायगढ़ के अनेक क्षेत्रो में गत वर्ष कई हजार ईसाईयों की शुद्धि हमने कराई थी, मैं समारोह में स्वय उपस्थित था। आपके सगठन के सासद श्री जूदेव जी भी वहा पधारे थे। इसी प्रकार रांची में पोपपाल के भारत आगमन के दिन १९८६-८७ में हमने २५०० ईसाइयों को शुद्ध करके यह जता दिया था कि पोपपाल भारत में १ लाख हिन्दुओ (आदिवासियों) को ईसाई बनाने का जो सकल्प लेकर यहां आये हैं, उसे भूल जायें। हमारे प्रयत्नों से पोपपाल एक भी हिन्दू को ईसाई बनाए बगैर लौटे थे।

इसी तरह तमिलनाडु के मीनाक्षीपुरम गांव को पैट्रो डालर के बल पर मुसलमान बना दिया गया था। हमने वहां विशाल आर्य महासम्मेलन करके मुसलमान बनाए गये पूरे गांव को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया था। दक्षिण भारत में आर्य समाज के इस महासम्मेलन से पूरी हिन्दू जाति मे एक नया स्वाभिमान जागृत हुआ है और वहां सामूहिक धर्मान्तरण की घटनाएं काफी कम हो चुकी हैं। लगभग २ वर्ष पहले रामकुमार भारद्वाज को सउदी अरब सरकार द्वारा गीता और सत्यार्थ प्रकाश के जुर्म मे हुई फांसी की सजा को हमने किस प्रकार रुकवाया। इस सम्बन्ध में आपको सूचनार्थ लिख रहा हूं कि समस्त पत्र आदि श्री विजय कुमार मल्होत्रा को किसी संसदीय कार्यवाही के लिए उनके द्वारा मांगे जाने पर हमने उन्हें भेज दिये थे। आप चाहे तो इसकी भी जांच करवा सकते हैं।

आर्य समाज ने अपने ११५ साल की लम्बी कालावधि में देश, धर्म और जाति की रक्षा के लिए क्या-क्या नहीं किया ? उसका उल्लेख करके पत्र को और अधिक लम्बा नहीं करना चाहता हू। आर्य समाज के प्रयत्नो से ही अनेक विद्वान, मौलवी शुद्ध होकर आज हिन्दू जाति की सेवा में लगे हुए हैं।

सिंघल जी, आपका उक्त वक्तव्य तथ्यो के विपरीत ही नहीं अपितु अशोभनीय और अविवेकपूर्ण भी हैं, इससे हिन्दू जाति मे फूट के बीज आपने बोये हैं। यदि आप इसमें सुधार नहीं करेंगे तो हिन्दू जाति को ही नहीं अपितु राष्ट्र को जो अपार क्षति होगी, उसके लिए कौन जिम्मेदार होगा ? आप स्वयं निर्णय करें।

आशा है आप मेरे पत्र को गम्भीरता से लेकर पत्रोत्तर से अनुगृहीत करेंगे।

माननीय श्री सिंघल जी
महासचिव, विश्व हिन्दू परिषद्
दीनदयाल भवन, झण्डेवालान
नई दिल्ली-५५

भवदीय
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान

श्री सिंघल जी का उत्तर

परमादरणीय श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती

सादर नमस्ते।

आपका पत्र संख्या ३३५८ दिनांक २० मार्च, १९९१ प्राप्त हुआ। इसे पढ़कर आश्चर्य ही नहीं अपितु अत्यन्त दुःख भी हुआ।

हमारे देश में समय-समय पर जो महान विभूतियां पैदा हुई हैं उनमे महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम उच्चकोटि के महापुरुषों में है। स्वामी जी ने हिन्दू जाति पर जो उपकार किए हैं वह अद्वितीय है। छुआछूत को मिटाना, स्त्री शिक्षा एव बाल विधवा का पुनः विवाह की पद्धति चलाना उनका ही साहसपूर्ण कार्य था, जब हमारा समाज अनेक प्रकार की कुरीतियों से ग्रस्त था। जबकि वेदो का प्रचार प्रायः देश मे लुप्त सा हो चला था तो उन्होंने जर्मनी से वेद की पुस्तको को मगवाकर वेदो के पढ़ने पढाने पर बल दिया। स्वामी जी के इन सभी उपकारो को यह हिन्दू समाज कैसे भूल सकता है।

मेरा जन्म एक आर्य समाजी परिवार मे हुआ है। नवी कक्षा में स्वामी जी का चरित्र पढने के बाद वही मेरे आदर्श और प्रेरणा के केन्द्र बन गये। स्वामी जी के बारे में या उनके द्वारा लिखित पुस्तको के बारे मे कुछ अपशब्द कहना तो दूर की बात है, इस प्रकार का सोचना भी मैं एक प्रकार का पाप समझता हूं। मैंने मेरठ नगर मे पत्रकारो के वार्तालाप मे स्वामी जी के बारे में या उन द्वारा लिखित पुस्तकों के बारे में कोई भी बात नही कही, यह बिल्कुल झूठा प्रचार है। आपने अपने पत्र मे जो मेरे प्रति रोष व्यक्त किया है वह सही नहीं है। मुझे आशा है कि आप अपने मन से इस प्रकार की बात बिल्कुल निकाल देंगे कि मैं कोई ऐसा कार्य करूंगा जिससे हिन्दू समाज में विघटन उत्पन्न हो। आपके लिखे अनुसार यदि जनता मे कोई गलत भ्रम फैल गया है तो उसे दूर करने के लिए मैं आज ही एक प्रेस वक्तव्य दे रहा हू।

आदर सहित।

धर्म और समाज की सेवा में सलग्न
अशोक सिंघल

सम्पादक के नाम पत्र

संग्रहणीय-विशेषांक

आर्य सन्देश का "ऋषि बोधांक" प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसके सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई स्वीकार करें।

—राम कुमार आर्य, गोहाना (रोहतक)

बन्धुवर,

सादर नमस्ते। अस्वस्थता एवं अभावग्रस्तता में 'आर्य सन्देश' का आर्यसमाज स्थापना दिवस व प० लेखराम संयुक्तांक सशक्त सम्बल सिद्ध हुआ।

—भैरवदत्त शुक्ल, तिकुनिया जिला खीरी (उ० प्र०)

शराब पर रोक

गत मास के पत्रों में श्रीमती सुमन लता जी ने मांग की थी कि महिलाओं पर अत्याचार बन्द होने चाहिए, जैसे—दहेज-प्रथा, नारी-दहन, आदि।

यह तभी सम्भव है जब मदिरा पान पर सामाजिक व कानूनी रोक लगे। शराब की सभी दुकानें, ठेके आदि बन्द हो इस ओर केवल मात्र श्री मोरार जी देसाई ने प्रयत्न किया था। अन्य किसी प्रधान मंत्री ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अतः हमारे शासक वर्ग को इस ओर ध्यान देना चाहिए। तभी स्त्रियों के अत्याचार पर रोक लगाई जा सकती है। अन्यथा नहीं।

—मंगल राम बंसल

आर्य सन्देश का हैदराबाद सत्याग्रह अर्धशताब्दी विशेषांक (अगस्त ९०) प्रकाशन पर मैंने, आपको बधाई इसलिये भी भेजी थी कि शिरोमणि सभा द्वारा, आर्य पर्व पद्धति में से इस पर्व को हटा देने के बाद आ. प्र. सभा के इस पत्र ने मार्ग दर्शन किया था। समारोह भी किया अब छः मास के बाद प्रकाशित इस इस आ. स. स्थापना दिवस के विशेषांक में हैदराबाद के सत्याग्रहियों के संस्मरण प्रकाशित कर उस परम्परा को शानदार तरीके से निभाया है। इससे समाज में तपस्या व प्रेरणा को, विशेषतः युवाओं को, बल मिलेगा। कृपया मेरी बधाई स्वीकार करें, और समय-समय पर उद्बोधन इसी प्रकार देते रहें।

—ब्रह्मदत्त स्नातक

आदरणीय सम्पादक जी,

आर्य सन्देश का बोधांक मिला, धन्यवाद। लेख अच्छे हैं।

—वीरेन्द्र सरस्वती, उपाध्यक्ष, विश्व वेद परिषद्
सी-८१७ महानगर, लखनऊ

श्रीयुत सम्पादक जी,

सादर सप्रेम नमस्ते। अत्र कुशलम् तत्रास्तु। आशा है कि आप परमात्मा की कृपा से स्वस्थ एवं सानन्द होंगे। आर्य सन्देश का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान एवं प० इन्द्र विद्यावाचस्पति संयुक्तांक प्राप्त हुआ। संयुक्तका को पढ़कर हृदय में बहुत अधिक प्रसन्नता हुई। आर्य सन्देश के विशेषांकों की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। नए वर्ष के लिए शुभकामनाएं—

—जोरावरसिंह आर्य, बलिया उत्तर प्रदेश

मान्यवर सम्पादक जी,

सादर नमस्ते। आर्य सन्देश का 'बोधांक' प्राप्त हुआ। प्रेरणादायी सामग्री से यह अंक ओतप्रोत है। वीर सावरकर का वह ऐतिहासिक कथन भी उद्धृत किया जाना चाहिए था जिसमें उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास के बने रहने का समर्थन किया था।

संलग्न पत्र 'आर्य संदेश' में प्रकाशित कर सके तो नेताओं के सामने यह स्पष्ट होगा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी का इच्छित विकास क्यों नहीं हो रहा है?"

पुनः अभिवादन सहित।

—ब्रजभूषण दुबे, ३०, गोराचंद रोड कलकत्ता ७०००१४

धर्मवीर लेखराम विशेषांक

आर्य सन्देश साप्ताहिक का पूर्व परम्परानुसार धर्मवीर लेखराम व आर्य-समाज स्थापना दिवस विशेषांक भी बेजोड़-ऐतिहासिक दस्तावेज, दुर्लभ लेखों से ओतप्रोत होने के कारण बहुत पसन्द आया। तहरीर व तकरीर (लेख व भाषण) के क्रम में पत्र की भूमिका सराहनीय लगी-मेरी हार्दिक बधाई स्वीकारें।

—प्रचार मन्त्री, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार सभा

मान्य सम्पादक जी,

सादर नमस्ते। ऋषि बोधांक मिल गया जो कि पूर्ण है। धन्यवाद। आपका अंक काफी रोचक है व बारंबार पढ़ने को मन करता है। ऋषि के जीवन सम्बन्धी लेखराम खोजपूर्ण हैं तथा सराहनीय हैं।

—तुलसीराम आर्य, तिलक नगर, नई दिल्ली

श्रद्धेय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते। अत्रकुशलं तत्रास्तु। आशा है आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आप द्वारा प्रेषित आर्य सन्देश का ऋषि बोध विशेषांक प्राप्त हुआ। ऋषि के कार्यों की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। आर्य सन्देश पत्रिका आर्य जगत की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। यह आर्य सन्देश के पाठकों के लिए उत्तम स्वाध्याय है। आर्य-सन्देश आपके श्रेष्ठ सम्पादकत्व में निरन्तर प्रगति करे। यही प्रभु से विनय है। आपसे अनुरोध है कि इस वर्ष आर्य सन्देश के विशेषांकों की परम्परा में एक विशेषांक क्रांतिकारी वीर सावरकर की पुण्यतिथि पर निकालें जिससे उस बहादुर अमर सेनानी के जीवन से नवयुवक वर्ग शिक्षा ले सके। शेष ईश्वराधीन है।

—लालमणि शर्मा

मान्यवर सम्पादक महोदय जी,

सादर नमस्ते। आप बधाई के पात्र हैं विशेषांक के लिए जो आपने पिछले डेढ़ वर्ष में दिए हैं। वास्तव में आपने एक सराहनीय कार्य किया है, जो इतनी जानकारी एक एक महापुरुष एवं आर्यसमाज के प्रति दी है और दे रहे हैं। अभी एक विशेषांक की आवश्यकता है 'स्वतन्त्रता के लिए आर्यसमाज को देन' क्योंकि आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता संग्राम में उल्लेखनीय योगदान दिया है। आज राष्ट्रीयता, कर्त्तव्यपरायणता, दायित्व, शिक्षा, स्वास्थ्य और अनुशासन जागृत करने की आवश्यकता है। धन्यवाद।

—रामप्रकाश, के डी. ७८ ए. अशोक विहार-११००५२

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते। वय जयेत्, त्वया युजा (ऋक्)। आर्यसन्देश का ऋषि बोधांक यथासमय प्राप्त हुआ। अपनी परम्परानुसार यह विशेषांक भी अत्युत्तम बना है। लेखों का चयन अत्यन्त सावधानी पूर्वक किए जाने के कारण विशेषांक प्रेरक बना है। श्री सोहनलाल शारदा का लेख हृदय को द्रवित कर गया। अन्य सबके सतत पुरुषार्थ को कोटिशः नमन्—

—रामाज्ञा आर्य पुत्र, पूर्वी उत्तर प्रदेश

आदरणीय डा० धर्मपाल जी,

परम पिता आपको परिवार सहित एवं आर्यजगत सहित सदैव स्वस्थ सुखी एवं प्रसन्नचित्त रखे। शिवरात्रि पर दूरदर्शन पर आपके दर्शन करके एवं आपके सुन्दर विचार सुनकर मनप्रसन्नता से झूम उठा। आपके समय में दिल्ली आर्यसमाज में एवं आर्यजगत में अनेक उल्लेखनीय कार्य हुए हैं। अति सफल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, और अब अति सुन्दर ऋषि बोधांक। इस अंक के लेखन केवल आर्य-समाज के विद्वानों की स्वाध्याय एवं खोजपूर्ण रुचि दर्शाते हैं, प्रत्युत राष्ट्र के इस कठिन दौर में सुन्दर मार्गदर्शन करते हैं किस प्रकार हम महर्षि के जीवन तथा उनके दर्शन 'सत्यार्थ प्रकाश' के उपदेशों द्वारा देश को सन्मार्ग प्रदान कर सकते हैं। आपको इन सभी सुन्दर कार्यों के लिए विशेष बधाई।

—रूपचन्द कपूरिया, उपनिदेशक, जनगणना, इम्फाल

नेपाल में आर्य समाज के बढ़ते कदम

प्रजातंत्रिय प्रशासन की घोषणा के बाद से नेपाल के आर्यसमाजो में भी नवचेतना जागृत हुई है। गत मास पूर्वान्चल क्षेत्रीय कार्यालय विराट नगर के तत्वावधान में अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री बलिदान अर्द्ध शताब्दी समारोह दिनांक १२ मार्च से १९ मार्च तक बड़े धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी के आचार्यत्व में पांच दिवसीय "राष्ट्रभृत महायज्ञ" विधिवत सम्पन्न हुआ।

सन्त शिरोमणि स्वामी ओमानन्द सरस्वती संस्थापक गुरुकुल झज्जर तथा ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम के वानप्रस्थ महिला मंडल की उपस्थिति काफी संख्या में थी। समारोह में प० वेदप्रकाश (दिल्ली) ओमप्रकाश वर्मा (यमुनानगर) आदि विद्वानों के प्रवचन हुए। साथ ही इस अवसर पर गुरुकुल विराट् नगर का वार्षिकोत्सव भी सोल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल में 'यज्ञशाला' का शिलान्यास पूज्य स्वामी दीक्षानन्द जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

—वी. के. शास्त्री मन्त्री

आर्य वीर दल की गतिविधि

आर्यवीर दल की शाखाओ के विस्तार व आर्य युवको मे प्रेरणा भरने के उद्देश्य से श्री आर्य मुनि जी वानप्रस्थ कार्यवाहक सचालक पूर्वी उ० प्र० व ब्रह्मचारी श्री नरेन्द्र लाल आर्य उप-प्रबन्धक पूर्वी उ० प्र० ने देवरिया मण्डलान्तर्गत भागलपुर व लार बाजार की यात्राएं गत ११ मार्च को सम्पन्न की। पारिवारिक संत्संगों व व्याख्यानों द्वारा दोनों अधिकारियों द्वारा मार्ग दर्शन किया गया। यात्रा के अन्तर्गत मडल संचालक श्री कस्तूरीलाल आर्य व आर्यवीर ब्र० रजनीश आर्य भी उपस्थित रहे।

—रामाज्ञा 'आर्यपुत्र'

ब्रिटेन में भारत के नव-नियुक्त उच्चायुक्त

डा० एल. एम. सिंघवी को डी. ए. वी. की भावभीनी विदाई

नई दिल्ली १८-३-९१ दिल्ली की समस्त डी० ए० वी० संस्थाओं की ओर से ब्रिटेन में भारत के नव-नियुक्त उच्चायुक्त डा० एल एम० सिंघवी को नई दिल्ली के तालकटोरा इनडोर स्टेडियम में भावभीनी विदाई दी गई। समारोह की अध्यक्षता डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने की। डी० ए० वी० के संगठन सचिव श्री दरबारी लाल ने अपने स्वागत भाषण मे श्री सिंघवी द्वारा डी० ए० वी० को दिए गए अमूल्य सहयोग का उल्लेख किया। तदन्तर प्रि० तिलकराज गुप्ता, दिल्ली के पूर्व उप-राज्यपाल एव सांसद श्री रमेश भण्डारी भारत में मोरीशस के उच्चायुक्त डा० निबूष न्यायमूर्ति हंसराज खन्ना, पूर्व सासद एवं पत्रकार इन्द्रजीत, प्रि० ज्ञानप्रकाश चोपडा, पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल, विधिवेत्ता तथा डी० ए० वी० के अध्यक्ष प्रो० वेद व्यास ने एक स्वर से कहा कि डा० सिंघवी का इस पद के लिए चंयन नितांत उपयुक्त है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि ब्रिटेन मे रह कर जहां एक ओर वे भारत की गरिमा प्रस्थापित करते हुए भारत और ब्रिटेन के सम्बन्धों को और मैत्री पूर्ण बनायेंगे वहां दूसरी ओर लन्दन को केन्द्र बना कर वे समस्त यूरोप और अन्यान्य पश्चिमी देशो में डी० ए० वी० आन्दोलन को गतिशील बनाएगे।

स्वामी जी के आशीर्वादोपरान्त डा० सिंघवी ने अपने प्रति व्यक्त किए गये स्नेहपूर्ण विचारो और विश्वास के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा मैं डी० ए० वी० परिवार का अग हू, पारिवारिक प्रशस्ति का उत्तर न तो दिया जा सकता है और न कोई उस ऋण से उऋण हो सकता है। महात्मा हंसराज ने जो एंग्लो-वैदिक सेतु निर्माण किया था उसी सेतु का आश्रय लेकर ब्रिटेन जा रहा हूं। मैं भारत के महापुरुषों एव मनीषियों का आभारी हूं। जिन्होने शाश्वत सत्य प्रतिपादन कर हमारा मार्गदर्शन किया है, वही मेरा सम्बल है।

अन्त में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी० ए० वी० के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल ने स्वामी जी, डा० एल० एम० सिंघवी व प्रतिष्ठित वक्ताओ और समागत आर्यजनो का धन्यवाद किया।

—अजय सहगल

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P.S.O on 4-5-4-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" ७ अप्रैल, १९९१

आचार्य वेदभूषण को भ्रातृ वियोग

महाराष्ट्र के एक जनपद धुलिया नगर के जयहिन्द कालेज में डा० सत्यव्रत एम ए० पी० एच० डी० प्राध्यापक के रूप में सेवारत थे। आयु अभी चौवन वर्ष थी। ७ मार्च की रात्रि में साढ़े दस बजे हृदय में भयंकर शूल उठा और कुल पैंतालिस मिनट में ही लीला समाप्त हो गई।

गुरुकुल झज्जर हरियाणा से आर्य विद्या में पारंगत निरुक्ताचार्य किया। आयुर्वेद के तीन वर्ष पूरे किए और अन्तत उस्मानिया विश्वविद्यालय से एम० ए० हिन्दी में न केवल सर्व प्रथम रहे अपितु विश्वविद्यालय के अपनी बहन डा० सुनीति के कीर्तिमान को तोड़ कर नया कीर्तिमान स्थापित किया।

भाषा विज्ञान में डाक्टरेट की स्नातकोत्तर छात्रों को पढ़ाने के उद्देश्य से हैदराबाद की सेवा छोड़ कर महाराष्ट्र के ओढनगर के बलभीम कालेज में सेवा की। बाद में महाविद्यालय के प्रिन्सिपल बने। पर कार्यालयीन व्यवस्था को शिक्षा दान के कार्य में बाधा मान प्रिन्सिपल का पद त्याग कर जनपद धुलिया में जयहिन्द कालेज में प्राध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। महाराष्ट्र की अनेक शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे।

कुशल वक्ता लेखक एवं कवि के रूप में समूचे क्षेत्र में कीर्ति अर्जित की। श्रवण सी मातृभक्ति एवं लक्ष्मण सी भ्रातृभक्ति का समन्वय उनके जीवन में था। प्रान्तीय भाषा मराठी सीख कर हिन्दी के साथ साथ मराठी साहित्य की भी वृद्धि की। संस्कृत हिन्दी और मराठी तीनों भाषाओं में गद्य और पद्य रचना में कुशलता अर्जित कर समूचे क्षेत्र में मौन साधक के रूप में कार्य करते रहे।

शोक श्रद्धांजलि

भागलपुर, देवरिया (उ० प्र०), १९ मार्च। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान व पत्रकार श्री सत्यकाम जी विद्यालंकार के निधन का समाचार गत दिनों रात के आकाशवाणी समाचार द्वारा सुनकर स्थानीय आर्यवीरों में शोक की लहर छा गई।

आहूत शोक-सभा की अध्यक्षता करते हुए युवा हृदय सम्राट श्री रामाज्ञा आर्यपुत्र बौद्धिकाध्यक्ष आर्यवीर दल पूर्वी उ० प्र० ने श्री विद्यालंकार जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला।

सभा में दो मिनट का मौन रख कर दिवंगत आत्मा को शान्ति हेतु सर्वज्ञ प्रभु से प्रार्थना की गई। —रामाज्ञा आर्यपुत्र'

डा० सत्यव्रत अपने पीछे विधवा पत्नी मधूलिका एम० ए० एवं तीन पुत्रियों को छोड़ गये हैं। एक विवाहिता है और दूसरी का विवाह आगामी १२ मई १९९१ के दिन पूना नगर में होना निश्चित था।

आचार्य वेद भूषण का कथन है कि वैदिक जीवन पद्धति में शोक के लिए कोई स्थान नहीं है।

ईश्वर उन्हें तथा उनके परिवार एवं इष्ट मित्रों को धैर्य एवं शान्ति प्रदान करें।

समूचे आर्य जगत को सान्त्वना एवं धैर्य कामना के लिए आपने हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त की है और धन्यवाद दिया है।

—संवाददाता प्रतिष्ठान "आर्यभारती" के सौजन्य से

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष
पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ प्र)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २४ | रविवार, २१ अप्रैल, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

शिक्षा के लिए संदीपनी ऋषि आश्रमों की परम्परा, द्रोणाचार्य की परम्परा की अपेक्षा श्रेयस्कर है

—प्रधान मंत्री श्री चन्द्रशेखर

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने शिक्षा जगत में अभूत पूर्व क्रान्ति की है। यहां के स्नातकों ने राष्ट्रोत्थान के विभिन्न आन्दोलनों में सराहनीय योगदान दिया है। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों में इस गुरुकुल का विशेष महत्त्व है। यह वह स्थान है, जहां पर बड़े-छोटे, अमीर गरीब, ब्राह्मण और हरिजन एक साथ पढ़ते हैं। उनके साथ समानता का व्यवहार होता है। हमें ऐसे ही संदीपनी ऋषि के आश्रमों की आवश्यकता है जहां पर कृष्ण और सुदामा एक साथ पढ़ते हों। हमें द्रोणाचार्य के आश्रम नहीं चाहिए जहां पर केवल राजकुमारों को ही शिक्षित किया जाता हो, जहां पर एकलव्य को अपना अंगूठा देना पड़ता हो। ये उद्गार प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर ने गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव एवं दीक्षान्त समारोह में व्यक्त किए। समारोह की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो० शेरसिंह जी ने की। मुख्य अतिथि का स्वागत श्री वीरेन्द्र अरोड़ा और श्रीमती प्रभात शोभा ने पुष्पहारों एवं पुष्पगुच्छ से किया।

प्रधानमन्त्री ने यज्ञ में भाग लिया। कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने अपने स्वागत भाषण में गुरुकुल की उपलब्धियों, प्राचीन परम्पराओं एवं तात्कालिक आवश्यकताओं तथा सरकार से अपेक्षाओं का उल्लेख किया।

इस अवसर पर विभिन्न विषयों में पी० एच० डी०, एम० ए०, विद्यालंकार वेदालंकार, बी० एस० सी० आदि की उपाधियां कुलपति जी ने प्रदान की। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की सर्वोच्च उपाधि से प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर, पं० मदनमोहन विद्यासागर और पं० हरिशरण जी को अलंकृत किया गया। सचदेव सभा कानपुर द्वारा आयोजित पुरस्कार से आचार्य रामनाथ वेदालंकार को सम्मानित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति और पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार को सम्मानित किया गया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में ७ अप्रैल से १४ अप्रैल तक पं० मदन मोहन विद्यासागर की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ हुआ। ११ अप्रैल को ध्वजारोहण और आचार्य रामनाथ वेदालंकार की अध्यक्षता में वेद सम्मेलन तथा रात्रि में श्री सूर्यदेव और डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार के विशेष व्याख्यान हुए।

१२ अप्रैल को गुरुकुल कांगड़ी की पुण्य भूमि में गुरुकुल जन्मोत्सव पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता में मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने ध्वजारोहण किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामंत्री श्री सूर्यदेव आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेर सिंह, वैदिक विद्वान पं० मदनमोहन विद्यासागर। दक्षिण अफ्रीका से शिशुपाल तथा अन्य अनेक महानुभावों ने गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की विशेषताओं तथा आर्यसमाज के दायित्व को रेखांकित किया। प्रारम्भ में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल, श्रीमती प्रभात शोभा पाहिल्ला तथा श्रीमती रंजन ने सुमधुर गीतों एवं भजनों से वातावरण को भक्तिमय बना दिया।

१२ अप्रैल को रात्रि में डा० श्यामसिंह शशि, निदेशक प्रकाशन विभाग भारत सरकार की अध्यक्षता में कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। १३ अप्रैल को रात्रि में संगीत सम्मेलन आयोजित किया गया। १६ अप्रैल को पूर्णाहुति और वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुए। अपराह्न में पत्रकारिता सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। रात्रि में श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में व्यायाम सम्मेलन हुआ।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एक राष्ट्रीय संस्था है जिसका संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा और दिल्ली सम्मिलित रूप से करती है।

डा० हरिप्रकाश और श्री सुभाष विद्यालंकार ने अथक परिश्रम करके समारोह को सफल बनाया।

महात्मा हंसराज दिवस समारोह

रविवार २१ अप्रैल प्रातः ९.०० से १.०० बजे तक
ताल कटोरा इन्डोर स्टेडियम नई दिल्ली

मुख्य अतिथि—श्री चन्द्रशेखर, प्रधानमन्त्री

अध्यक्षता —श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती

सभी आर्यजनों से निवेदन है कि वे अपने साप्ताहिक सत्संगों को यथा शीघ्र सम्पन्न करके ताल कटोरा स्टेडियम पहुंच कर उस महान शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

—निवेदक—

डा० धर्मपाल—प्रधान
सूर्य देव—महामंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा

महाशय धर्मपाल—प्रधान
डा० शिवकुमार शास्त्री—महामंत्री
आर्य केन्द्रीय सभा

आर्य समाज केशवपुरम में वेद प्रचार

आर्य समाज केशवपुरम में वेद प्रचार का भव्य आयोजन किया गया। श्री प्रेमसिंह शर्मा के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री गोपाल गोडसे, श्री अयोध्यानाथ सिब्बल, ब्र० राजसिंह आर्य, ब्र० व्रजेश आर्य, श्री अनिल आर्य, श्री कर्मसिंह चौहान, लाला सुमेरचन्द आर्य, श्री धर्मवीर कन्धारी आदि महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किए।

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

जगन्नाथ की वास्तविक आराधना

—भैरवदत्त शुक्ल—

(गतांक से आगे)

प्रभु-भक्ति की आड़ में गैलीलियो को प्रताड़ना दी गयी, सुकरात को जहर पिलाया गया। और 'जान आफ आर्क' को जीवित ही आग की लपटों में डाल दिया गया। वे ईश्वर के भक्त ही थे जिन्होने मध्यकालीन जड़ता के पशु परिसर में घोषणा की थी कि वेद-मन्त्र का पढ़ना तो दूर है, शूद्र और नारी के कानो मे प्रविष्ट हो जाना तक महापातक है जिसका प्रायश्चित कानो मे पिघला गर्म रांगा डालने के अलावा दूसरा हो ही नही सकता। ऐसी जड भक्ति के ही नाम पर रोमन कैथोलिक-प्रोटेस्टेंट, शिया-सुन्नी-द्वंद्व की ऐसी आंधियां उमड़ी, जिनमें मानव-विवेक के सभी पक्ष उड़ से गये।

इस तरह की जड़-भक्ति के वीभत्स रूप से ही ऊब कर आधुनिक विचारक कार्ल मार्क्स ने धर्म को मानव-समाज के लिए अफीम से भी अधिक विघातक माना है। विश्व के सैद्धांतिक कम्युनिज्म के ठोस अनुयायी इसी कोरी भक्ति से चिढ कर ईश्वर के अस्तित्त्व पर भी प्रश्न-चिन्ह लगा रहे हैं (भले ही सफल न हो सके हों) और सम्पूर्ण विश्व में लगभग तीस करोड़ नास्तिक पाये जाते हैं।

इसी बात को ध्यान मे रखकर हमे जड़-पूजा का खडन करना है, नास्तिकता की बखिया उधेड़नी है और भक्ति की खाल ओढ़ कर पनपने वाली अन्ध-साम्प्रदायिकता से सघर्ष करना है। यह खडन, विरोध या संघर्ष हथियारो के बल-पर नही किया जा सकता। इसके लिए ज्ञान का आश्रय लेना होगा। कर्म की अट्टालिका विनिर्मित करनी होगी और रूढि एव वाह्याडबर में खोये लोक मानस के सस्कार परिवर्तित करने पड़ेंगे। इसमें सफलता पाने के लिए सत्य, निष्ठा, लगन और कर्त्तव्य-परायणता का सबल अपेक्षित है।

(४) प्रशिष यस्य देवा :— उपासना के नाम पर संसार मे जो लोग जड़ प्रतिमाओ का शृ गार करके उन्हें साक्षात् ईश्वर के रूप मे पूजते हैं, जो भूत-प्रेतो-जिनो की साधना-सेवा में लीन रहते हैं; जो वृक्षों और पाषाणो पर पत्ती और फूल अर्पित करते हैं, जो 'हरे रामा हरे रामा' जैसे कीर्तनो का मगन तक विस्तार करते हुए रात्रि-जागरण करते हैं, वे सब के सब ऊपर से प्रतीत होता है कि परमेश्वर की आराधना कर रहे हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि उपर्युक्त बातो का आराधना से तनिक भी सम्बन्ध नही है और न इनसे भव-सिंधु तैरकर पार उतरने या मोक्ष पाने में सहायता ही मिल पाती है।

जगदीश्वर की उपासना की उत्तम विधि तो केवल यह है कि परमेश्वर द्वारा दिये गये आदेशों का सहर्ष पालन किया जाये और उसके द्वारा सुनिश्चित कार्य-व्यवहारो के करने मे काया और मेधा का उपयोग किया जाये। यही बुद्धिमानी है। जो विद्वान् हैं, समझदार हैं, वे अपने सहज नियत कर्मों में तत्पर-सलग्न रह कर ही समझ लेते हैं कि उन्होने ईश्वर की उपासना की, अविनाशी की आराधना की सही विधि जान ली। ऐसे ही लोग भव-सागर से पार हो जाते हैं और भव-सागर में डूबते हुए लोगो को भी सहारा देते हैं। कितनी बड़ी विडम्बना है कि ज्ञान के अक्षय कोष से परिपूर्ण, बल, सामर्थ्य और क्षमता से समृद्ध और बुद्धि की असीम सम्पत्ति से युक्त होकर भी हम भारतीय कोरे आदर्शवादी बने हुए है, अत्यधिक सिद्धान्तवादी बनने का दम भरते है लेकिन यथार्थ के धरातल पर विफल सिद्ध होते हैं। प्रति वर्ष श्राद्ध के पुण्य का प्रदर्शन करने वाले पुत्र अपने जीवित बाप को भूखो मरने और प्यासे तड़पने के लिए छोड देते हैं; व्यंग्योक्तियो से उनके मानस के तार-तार को धुन डालते हैं और अपमान प्रताडना की बौछार करते देखे जाते हैं। गोदान-गोव्रत की परम्परा पर अधिक से अधिक धन-राशि लुटाने वाली हिन्दू जाति गायो-बछडो को अर्द्ध बुभुक्षित, निर्बल और पगु बनाती है, कुछ नोटो की सरसराहट पाने के लिए कसाई के हाथो बेच देती है और विधि-विधानो मे निश्चित आयु-सीमा के बाद बूचड़खानो मे कट जाने के लिए अधिकृत कर देती है। हम तो उस जघन्य भावी युग की भी परिकल्पना करते झिझकना पसन्द नही करते जब इन्द्रियो से थके, मन व मस्तिष्क से चुके, पगु-अपाहिज वृद्ध पुरुषो और स्त्रियों को, माताओ और पिताओ को, भाईयो और बहनो को एक पक्ति में खड़े करके गोली से मार दिया जाया करेगा। कितना बर्बर होगा वह युग? कैसी निष्ठुरता होगी उस समय के मनुष्य में? इस कल्पना से रोम-रोम कांप उठता है।

मगर हमारे संस्कार बदल रहे हैं। वैज्ञानिकता की झिलमिलाहट में खोकर और भौतिक [illegible] परिसर के [illegible] में [illegible] और बुद्धि भ्रम में उलझी मानवता देर-सबेर दानवता में बदल सकती है। ऐसा युग न आने पाये, संस्कारों के प्रभाव में कर्मनाशा का कलुष न बहने पाये और मानव की मननशीलता पर आंच न आने पाये, इसके लिए अपेक्षित है कि हम प्रत्येक क्षण यह ध्यान में रक्खें, व्यवहार में परिणत करे और प्रत्येक व्यक्ति, समाज एव देश में प्रचारित-प्रसारित कर दें कि प्रभु के नाम-स्मरण की सर्वोत्तम विधि यह है कि जिस प्रकार ईश्वर न्यायकारी है, उसी प्रकार स्वय न्यायकारी बना जाये, जिस प्रकार ईश्वर को बुराई पसन्द नही है, उसी प्रकार बुराइयां नापसद की जायें और जिससे समाज बिखरता है, मानवता खडित होती है, आस्तिकता कलुषित हो जाती है, उस तत्व या क्रिया से पृथक् रहा जाये क्योंकि ईश्वर समता-प्रिय है, निष्पक्ष है और है आनन्द का भण्डार। केवल ईश्वर के गुण-बोधक हजारों नाम बार-बार धीरे व जोर से अपने भर से आराधना पूरी नही हो जाती।

संसार में जो साधारण लोग हैं, वे परेशान होने पर, विपत्तियों से घिर जाने पर या अभावो की कटुता में डूब जाने पर ही ईश्वर का स्मरण करते हैं लेकिन ज्ञानी, बुद्धिमान और विवेकशील व्यक्ति प्रकृति के प्रत्येक कण, समय के प्रत्येक क्षण और विश्व के प्रत्येक कर्म या अनुष्ठान मे उसका स्मरण करते हैं, उसी के समान बनने का प्रयास करते हैं, और उसकी आज्ञा का सर्वतो भावेन पालन करते हैं। इस क्रम से ही जीव-आत्मा महात्मा बनता है और साधनाशील होकर उस प्रभु की आत्मावत् या उसका अत्यन्त प्रिय बन बैठता है। विश्व वस्तुतः प्रभु-का आर्त्त भक्त है, जबकि देव अर्थात् विद्वान् ज्ञानी भक्त है। विश्व की भक्ति कोरी प्रदर्शनात्मक है जबकि देवो की भक्ति अन्तरंग या यथार्थ है।

(५) यस्यच्छाया, यस्य मृत्युः, अमृतम्—सांसारिकता की सीमा में बद्ध विवश मानव-समुदाय थोड़ी-सी हलचल से ही उद्विग्न हो उठता है, विपत्तियों की छाया पड़ते ही धैर्य के साज-सामान का आसरा छोड़ देता है और अभावों के प्रारम्भिक प्रहारो से ही कर्त्तव्य-पराङ्मुख बन जाता है। दूसरी ओर जो देव है, जिसने परोपकार का व्रत ले रक्खा है, जो लोक-कल्याण, व्यष्टि-समष्टि-समन्वय, प्राणि-परिपालन प्रभृति लक्ष्यो की परिपूर्ति पर सर्वस्वार्पण करने के लिए उतावला है, वह विवेकशील मेधा-बुद्धि से युक्त सज्जनो का समूह आपत्तियों की आंधी से तनिक भी विचलित नहीं होता, विघ्न-व्यवधान से दायित्व-परिसर और कर्त्तव्य-सीमा का लेशमात्र भी परित्याग नही करता और थोड़ी-सी हलचल तो दूर की बात है, युगान्तर या प्रलय के विषम-ज्वरों में भी मुस्कुराना छोड़ नहीं पाता।

कारण यह है कि कदम-कदम पर मिलने वाले अभाव उसे परमेश्वर की ओर से ली जा रही परीक्षा के मोड़ या रुझान प्रतीत होते हैं। चूंकि उसने परीक्षा में आये हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर खोज लेने की साधना कर ली है, समुपस्थित समस्याओ के समाधान खोजने का सतत अभ्यास किया है और सैद्धांतिक एव व्यावहारिक सम्पत्ति का संचय करने में प्रमाद नहीं प्रदर्शित किया है, इसीलिए उसे भय की तनिक भी अनुभूति नही होती।

वैभव-विनाश को वह प्रारम्भिक परीक्षा के रूप में ग्रहण करता है। नवयुवक सुन्दर-सुशिक्षित सन्तान का अकाल काल-कवलित हो जाना उसके लिए माध्यमिक परीक्षा प्रतीत होती है। शरीर पर रोगों के आक्रमण को वह प्रयोगात्मक परीक्षा समझ लेता है। परमेश्वर प्रतिपल निष्पक्षता की कसौटी पर कसकर इस बात का पता लगाता है कि जो सचमुच मानव है, वे वित्तेषणा, पुत्रेषणा और लोकेषणा के व्यूहों मे घूम-फिर कर उनसे ऊपर उठने में सफल हो पाये हैं अथवा विफल। वैसे परमेश्वर तो सर्वज्ञ ठहरा। उसे प्रत्येक स्थिति की ही भांति मानवों के स्वभाव-वैविध्य का भी राई-रत्ती पता होता है। फिर भी वह लोक-कल्याण के लिए, सामान्य जन-समूह को प्रभावित करने की दृष्टि से धैर्य, सहिष्णुता, सत्य-निष्ठा, अहिंसा, आक्रोध आदि गुणो के आधार पर परीक्षा के आयोजन करता रहता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज श्रीकृष्ण, अहिंसा परायण बुद्ध, जहर पीते सुकरात जैसे महापुरुष स्वय तो परीक्षा में सफल हुए ही और उन्होंने संस्कृति

(शेष पृष्ठ ६ पर)

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

२६ अप्रैल पंडित जी का जन्म दिवस है

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी



जीवन मे पूर्णता पाने के लिए यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति दीर्घायु हो। वैदिक प्रार्थना तो यही है कि हम दीर्घायु हो, हम दीर्घायु होने के लिए प्रयत्नशील हों, हम सौ साल तक देखते, सुनते और बोलते रहे तथा कार्यक्षम बने रहें, बल्कि हम तो वर्ष से भी अधिक समय तक जीवित रहें, ऐसी हम कामना करते रहें। तथापि जीवन में पूर्णता पाने के लिए दीर्घायु होना आवश्यक नहीं है। एक व्यक्ति लम्बी आयु तक जीवित रहता है, फिर भी वह कुछ कर नहीं पाता, दूसरी ओर कुछ व्यक्ति बहुत कम आयु तक इस ससार में रहते है और वे संसार को एक नई दिशा दे जाते हैं—जगद्गुरु शकराचार्य 'महात्मा ईसा, महावीर बुद्ध' विवेकानन्द, दयानन्द—इन सभी की आयु बहुत लम्बी तो नही थी, फिर भी इन्होंने विश्व के मानव को नई दिशा दी। उन्होने विश्व को नया प्रकाश दिया। उन्होंने लोगो को अमरता का सन्देश दिया। ये सभी नाम धर्म, दर्शन, अध्यात्म और मानवता के लिए कार्य करने वालों के हैं। अन्य क्षेत्रो मे भी कम आयु मे पूर्णता पाने वालो के नाम हैं। उनकी चर्चा यहां पर अभीष्ट नही है, यद्यपि उनकी चर्चा करने से उपर्युक्त कथ्य को पुष्ट करने में सहायता ही मिलती। एक लिली का फूल केवल एक दिन के लिए खिलता है, पर उसकी सुरभि से सम्पूर्ण प्राणी जगत् सुरभित हो उठता है, जबकि "ओक" वृक्ष की आयु तीन सौ वर्ष होती है, पर बाद में वह मात्र ईंधन है और अधिक हुआ तो ईमारती लकड़ी। इसी प्रकार श्रेष्ठता के लिए बड़ा आकार और लम्बी आयु आवश्यक नहीं है। जीवन में पूर्णता, श्रेष्ठता के लिए छोटा आकार और कम आयु से काम चलाया जा सकता है।

विश्व की सस्कृतियों, मे ऐसे अनेक महापुरुष हुए हैं, जिनका मानव मूल्यो की वृद्धि मे योगदान स्मरणीय है। ऐसे ही महामानव ऋषि दयानन्द थे। उन्होने विश्व को वैदिक पथ पर चलने की प्रेरणा दी। वैदिक शिक्षाए सर्वकालिक और सर्वव्यापक हैं। ये सभी का कल्याण चाहने वाली हैं। "स्वस्ति पन्थामनुचरेम" हम कल्याण मार्ग के पथिक हो। उस ऋषिवर के कार्य को उनके बाद आगे बढाने वाले थे—स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा हसराज, प० लेखराम, प० गुरुदत्त और स्वामी दर्शनानन्द आदि। प० गुरुदत्त का नाम इस सूची मे उल्लेख्य है। वह प्रतिभाशाली युवक मात्र २६ वर्ष जिया, पर २६ वर्ष आर्य समाज के इतिहास मे स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे।

उस ऋषि दीवाने पं० गुरुदत्त विद्यार्थी पर वैदिक धर्म तथा ऋषि का रग ऐसा चढा कि, वह चढ़ता ही गया। वह रग और गाढा होता गया। विज्ञान का विद्यार्थी, पाश्चात्य दर्शन का अध्येता जब ऋषि के सम्पर्क मे आया, तो उसके मन में पड़ी सन्देह की परतें, दूर होती चली गयी। उसका मन शिवसकल्पमय हो गया। उसे लाहौर की आर्य समाजो, ने लाला जीवनदास के साथ अपना प्रतिनिधि बना कर, अजमेर में रोग शैय्या पर पड़े ऋषि दयानन्द की सेवा करने के लिए भेजा था। उसने अपने गुरु की भक्ति भाव से सेवा सुश्रुषा की। अन्तिम दिनों मे ऋषिवर के चेहरे पर शान्त और सौम्य भावो को देखकर वह चकित रह गए। इस असह्य पीड़ा के क्षणों में भी ऋषिवर अविचलित थे। उनके मुख से अन्तिम क्षणों में जो शब्द निकले—"हे प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की।" इन्होंने तो युवा गुरुदत्त की काया ही पलट दी। उसके मन का सारा अन्धकार, प्रकाशमान हो उठा।

अजमेर से लौट कर गुरुदत्त ने वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार अपने जीवन का ध्येय बना लिया उसने दो कपड़े बनवाये—आर्य समाज के पाच-पाच नियम दोनों कपड़ो पर लिखवाये और आगे पीछे लटका लिए। जब उनकी श्रीमती जी ने पूछा कि यह क्या हुलिया बनाया है, तो वे बोले बस देवी, अब यह शरीर अपना नहीं रहा। यह तो उस ऋषि का हो गया और वह दीवाना घर से बाहर निकल पड़ा। रात दिन उसने अपने आपको ऋषि कार्य मे झोंक दिया। कुछ लोग पूछते कि क्या कर रहे हो। वे कहते कि ऋषि का जीवन चरित्र लिख रहा हूं। वे पूछते कि कहां लिख रहे हो तो उत्तर मिलता कि "अपने जीवन मे उसे क्रियात्मक रूप में लिख रहा हू।" ऐसा था वह दीवाना। वैदिक धर्म के प्रचार और ऋषि ऋण से मुक्त होने के लिए, उसने वाणी और लेखनी से अनवरत परिश्रम करना प्रारम्भ कर दिया था। उनके साथ रहने वालो का कहना है कि जब वे "वैदिक मैगजीन" लिखने बैठते थे तो वे कई-कई दिन बाद घर से निकलते थे। जब वे पढने लगते थे तो बिना विश्राम किए कई-कई दिन तक पढते रहते थे। वे कई दिन तक सोते भी नहीं थे। लाला लाजपतराय ने लिखा था—एक असाधारण व्यक्ति था वह। अन्त समय में वे भी वेदमन्त्रों का उच्चारण करते रहे और मृत्यु के क्षण तक उनके मन की शान्ति भंग नही हुई। कुछ क्षणों मे ही उनका देहान्त हो गया। इस प्रकार असह्य पीडा भोग कर १९ मार्च १८९० को प्रात: ७.०० बजे उसका प्राणान्त हुआ।" उस ऋषिभगत के चेहरे पर भी वही सौम्यता तथा शान्ति थी जिसके दर्शन उसने सात वर्ष पहले अजमेर में किए थे।

एक असाधारण व्यक्ति, एक सच्चा गम्भीर तथा परगामी सस्कृत विद्वान और पुरातन ऋषियों का उत्तराधिकारी इस ससार से उठ गया। आर्य समाज जिन पर गर्व करता था, जो समाज के रत्न थे, जिन्हे हम देश के भूषण समझते हैं, जिन पर हम सबको गर्व था तथा जो सत्य और ज्ञान को ही सर्वोपरि समझते थे, ऐसे प० गुरुदत्त विद्यार्थी आज हमारे बीच मे नही हैं। उनका भौतिक शरीर हमारे बीच मे नही है, पर उनका कर्त्तव्य हमारे बीच में हैं, उनका युवापन हमारे बीच मे है, उनका ज्ञान- विज्ञान-विश्लेषण हमारे बीच है, उनका आदर्श हमारे सन्मुख है जो आने वाली पीढियो को इसी भांति प्रेरणा देता रहेगा।

उस अमर सेनानी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को हमारी श्रद्धांजलि।

—डा० धर्मपाल

पुस्तक समीक्षा:

आर्यों का त्रैतवाद

आर्य समाज की विभिन्न सस्थाओ के माध्यम से वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु अनेक ग्रन्थो का प्रणयन एव प्रकाशन किया जाता है। भारतवर्ष की तथा विदेश की अनेक प्रान्तीय समाए, सार्वदेशिक सभा तथा अनेक प्रकाशक इस दिशा में सराहनीय योगदान कर रहे हैं। कुछ व्यक्ति अकेले भी रात-दिन वेद माता की सेवा में लगे हैं। वे अकेले भी सस्था है। ऐसे ही महानुभाव हैं—डा० रामेश्वर दयाल गुप्त, सिद्धान्त शास्त्री एम० ए० पी० एच० डी०। वास्तव मे सस्थाओ में भी चाहे वे सरकारी हो या गैर सरकारी एक या दो व्यक्ति ही कार्य करते हैं, बाकी तो केवल टी-ए-डी-ए सीधा करते हैं। उन्ही कर्त्तव्य परायण व्यक्तियो का शोषण होता रहता है। यह ठीक है कि उन्हे भी उस कार्य को करते रहने में आनन्द आता रहता है, नही तो वे काम से अलग क्यो नही हो जाते। संस्थाए उन्ही के त्याग और तपस्या के बल पर चलती है। वे अकेले दीपक हैं जो सर्वत्र प्रकाश भले ही न फैला पाए, पर अपनी शक्ति भर जलते तो हैं।

आर्यों का त्रैतवाद-अंक ११, मूल्य ५-०० में आपने वेद, ब्राह्मण, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता और सत्यार्थ प्रकाश पर आधृत शोध लेखो का सक्षेप सार दिया है। यह ग्रन्थ पठनीय है।

—डा० धर्मपाल

तपोवन आश्रम देहरादून

आर्य समाज मन्दिर चूना मण्डी पहाड़गंज से तपोवन आश्रम देहरादून के लिए बस दिनांक २४-४-९१ की रात्रि को जायेगी और २८-४-९१ की रात को वापिस आयेगी। आने जाने का मार्ग व्यय १४० रुपये प्रति सवारी होगा। सीट बुक कराने के लिए आर्य समाज चूना मण्डी में श्री खगेन्द्र द्वारा पैसे देकर बुक करा सकते हैं अथवा टेलीफोन पर बुक करा सकते हैं।

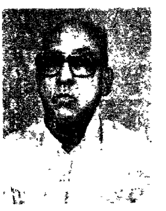
दर्शनीय स्थान: हरिद्वार, भारत मन्दिर, ऋषिकेश, सहस्त्रधारा तपोवन आश्रम आदि हैं।

—प्रधान प्रितमदास रसवन्त

फोन: ७७६६१४, ७३८५०४,।

आर्य रत्न श्री अजय कुमारजी सेण्डो दिवंगत

—राजगुरु शर्मा उपप्रधान सार्वदेशिक सभा दिल्ली



आर्य जगत को यह जान कर मार्मिक दुःख होगा कि, आर्य समाज राऊ म० प्र० के प्रधान, रिटायर्ड रेलवे स्टेशन अधीक्षक, वेस्टर्न रेलवे मजदूर संघ (रतलाम) के वाइस चेयरमेन, पाटीदार समाज (म०प्र०) के प्रमुख अनेको सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक सस्थाओ के प्रबन्ध एव कार्यकर्त्ता, "आधुनिक अर्जुन" भाई अजय कुमार जी सेण्डो दिनांक २५-३ ९१ को दिवगत हो गए।

दिनाक २६-३ ९१ को इनके ज्येष्ठ पुत्र अरुणकुमार आर्य ने हजारो इष्ट मित्रो एव परिजनों की उपस्थिति मे सम्पूर्ण वैदिक विधि से उनका अन्त्येष्टि संस्कार किया। सार्वदेशिक सभा देहली के उपप्रधान श्री प० राजगुरु शर्मा जिनके साथ सेण्डो साहब ने सतत ४० वर्षों तक वैदिक धर्म का प्रचार किया था। उनकी उपस्थिति में, आर्य समाज महू, सयोगितागंज, मल्हारगंज, सिंधी कालोनी, दयानन्दगज, नगर समाज इन्दौर, ग्रामीण समाजो में बालसमुन्द, कसरावद, पलासिया रणवासा आदि से आये आर्य नेताओं ने तथा पाटीदार समाज, पांचाल समाज, पंजाबी समाज, कृषक समाज व्यापारिक प्रतिष्ठान, शैक्षणिक सस्थान, श्रमिक कालोनी, रेलवे मजदूर संघ एव अनेको सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक संस्थाओ के प्रमुखों ने श्री अजय कुमार जी सेण्डो को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनके जीवन की अनेकों घटनाओं तथा संस्मरणों को सुना कर लगभग दो घन्टों की यह शोक सभा अश्रु-पूरितो की सभा हो गई। श्री अजयकुमार जी सेण्डो का जन्म दिनांक २-१-१९२७ को ग्राम राऊ के एक सामान्य किन्तु अत्यन्त धार्मिक पाटीदार (पटेल) परिवार में हुआ था।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा राऊ मे ही हुई उस समय राऊ मे ही एक गुरुकुल भी था। इसमें विश्व विख्यात आचार्य राममूर्ति जी सेण्डो एव श्री पं० चिरजीलाल जी सहयोगी कार्य करते थे। आचार्य राममूर्ति जी सेण्डो का सम्बन्ध तत्कालीन क्रांतिकारी पार्टी से था बाल्यकाल से ही अजयकुमार जी का सम्पर्क आचार्य जी से था। अत: आचार्य राममूर्ति जी ने इन्हें व्यायाम व तीरदाजी व शस्त्र चलाने की शिक्षा प्रदान की एव स्वातंत्र्य आन्दोलन मे इन्हें अपने साथ रखा व लम्बे समय तक भूमिगत रहते हुए क्रान्तिकारियों का साथ दिया व सन् १९४५ में वापस राऊ आ गये व पुन: पढना प्रारम्भ किया। अत्यन्त ही प्रतिभावन छात्र होने से आपने क्रमश माध्यमिक परीक्षा पास कर साहित्यरत्न की परीक्षा पास की।

सन् १९४९ में बीजलपुर (इन्दौर) मे नार्मल हाई स्कूल (विद्यापीठ) में व्यायाम शिक्षक के पद पर कार्य प्रारम्भ किया। साथ ही अध्ययन कार्य भी करते रहे। सन् १९५१ मे हनुमान व्यायाम मन्दिर अमरावती से व्यायाम विशारद किया व सन् १९५४ मे रेलवे की सेवा में चले गये। सेवा करते हुए सन् १९६४ मे इन्टर व १९६६ मे बी० ए० किया। सन् १९५३ मे बीजलपुर अध्यापन विद्यापीठ ने आपको विशेष सम्मान प्रदान कर "आधुनिक अर्जुन" की उपाधि प्रदान की।

बाल्यकाल से ही आप आचार्य राममूर्ति जी सेण्डो के सम्पर्क मे आने से महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, क्रान्तिकारी एव बलिष्ठ शरीर के स्वामी तथा वैदिक धर्म प्रचार की उत्कठा लिए रहते थे।

सन् १९६० मे प० राजगुरु जी शर्मा के साथ ग्रामीण प्रचार कार्य पश्चिमी निवाड एवं आदिवासी क्षेत्र, जोबट, झाबुआ-थांदला, मेघनगर, उज्जैन, रतलाम मन्दसौर नारायणगढ़-बूठा, नीमच, राजस्थान, गुजरात मे महाराष्ट्र के नगरों व ग्रामों मे किया। इस प्रकार अभियान में स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती, लक्ष्मीनारायण जी आर्य, मास्टर मांगीलाल जी वर्मा, रामेश्वर जी मामा, नन्दराम जी सुमार्क, स्व० बाबूलाल जी मुकाती, सुपुत्र अरुणकुमार जी आर्य, हुकमचन्द जी आर्य, ओमप्रकाश जी आर्य, नारायणचंद, रामचन्द्र जी हार्टिक वाले, जगदीश प्रसाद जी वैदिक, नाथुलाल जी वर्मा आदि की यात्रा एक काफिले के रूप में होती थी। सभी लोग मोटर सायकिलों पर ओ३म् के झण्डे लगा कर चलते थे—नारे लगाते थे व लगभग १०० मील की यात्रा तय करते थे वह दृश्य देख कर लोग अनायास ही कह उठते थे कि ये आर्य समाज के दीवाने आ गये। रात्रि को आठ बजे से पहले भजनो का कार्यक्रम व प्रवचन बाद मे ९ बजे से रात्रि के १२ व १ बजे तक अजय कुमार जी सेण्डो अपने शारीरिक प्रदर्शन-योगासन प्राणायाम, तीरंदाजी, रायफल शूटिंग आदि के करतब दिखाते व बीच-बीच में महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तो का स्थानीय बोली में प्रचार करते जाते थे।

आप अत्यन्त ही हसमुख, विनम्र, सेवा-भावी, गरीबों के सहायक व महर्षि के अनन्य भक्त थे।

आपने अथक परिश्रम करके आर्य समाज राऊ का समाज मन्दिर बनाया। आप आदर्श सद्गृहस्थ थे।

आपने वर्ष १९८६ में अपनी पूज्य माता श्री चम्पादेवी की जन्म शताब्दी समारोह का तीन दिवसीय विशाल समारोह सामवेद पारायण यज्ञ के साथ राऊ में किया। पूर्णाहुति के दिन पूज्य माता जी को हजारों नर-नारियों ने विशाल शोभा यात्रा के साथ नगर मे घुमाया। हजारों लोगो ने माता जी का शुभाशीर्वाद प्राप्त किया व माता जी ने १०० वर्षो की आयु में सभी को शुभाशीर्वाद ही प्रदान नहीं किया अपितु अपनी बेटियों, बहुओ, नातियों, पोतियों पड़पोतों, पोतियों, ब्राह्मणों धर्मोपदेशकों व गरीबों को अन्न, वस्त्र, दक्षिणा आदि प्रदान किया। ऐसा लगता था जैसे कोई विशाल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन हो रहा हो।

आपको दिनांक ३१-७-८७ को रेलवे के स्टेशन अधीक्षक पद से निवृत्ति प्राप्त हुई उसी दिन आपने रेलवे की अन्तिम दिवस ड्यूटी पूरी की, तत्काल वस्त्र बदले व वहीं रेलवे स्टेशन के बाहर विशाल पंडाल में विधिवत् सपत्नीक यज्ञ करके वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश किया था। ऐसा अनोखा आर्यत्व का धनी जिसने ३३ वर्षों तक रेलवे के उच्च पद पर कार्य करते हुए अनेकों बार रेलवे के सतर्कता, सुरक्षा व कर्त्तव्यपालन हेतु पुरस्कार व प्रशंसा-पत्र प्राप्त किए, वही व्यक्ति भाग्य की विडम्बना स्वरूप दि० १८-३-९१ को को रेलवे स्टेशन राऊ पर हवन सामग्री व आर्य साहित्य की बिल्टी छुड़ाने गए थे। रेलवे लाइन पार करते समय रेल की आती हुई गाड़ी के इन्जन से टक्कर लगने के कारण गिर पड़े किन्तु अत्यन्त ही बलिष्ठ शरीर के स्वामी होने से दोनों ओर की पसलियों के टूटने के बाद भी दि० २५-३-९१ की प्रात: तक मृत्यु से संघर्ष करते रहे। लोगों से चर्चा भी कर लेते थे। इन्दौर के सुप्रसिद्ध चोइथराम अस्पताल मे एक सप्ताह तक सैकड़ों लोग आप की कुशल क्षेम पूछने आते रहे। लोग आश्चर्य करते थे कि यह कौन भाग्यवान पुरुष है जिसे देखने लोगों का मेला लगा रहता है।

डाक्टरो को आशा हो गई थी कि अब सेण्डो साहब खतरे से बाहर है किन्तु २५-३-९१ की साय यह महर्षि का दीवना भक्त चिर निद्रा मे सो गया। आपके सुपुत्र, भाई, बहिन, पोते पोतियो का विशाल परिवार है। आपका पूरा परिवार वैदिक धर्मी है। सुसम्पन्न है। भाई अजयकुमार सेण्डो का बिछोह असह्य है। उसे आसानी से भुलाया नही जा सकेगा।

ऐसे महान आर्यरत्न को शत् शत् नमन। ओ३म् शम्।

—वेद सदन—महू (म० प्र०)

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज, मेस्टन रोड कानपुर की यह शोक सभा आर्य जगत् के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् प्रो० रत्न सिंह जी एम ए. गाजियाबाद के छोटे भाई का अचानक एक्सीडेन्ट बलबर में हो जाने से देहावसान हो गया, परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत उनके छोटे भाई की आत्मा को सद्गति दे तथा उनके परिवार को धैर्य व शक्ति देवे। जिससे असह्य वेदना को सह सकने में समर्थ हों। उनका छोटा भाई एक कृषि विभाग में सरकारी अधिकारी के रूप में कार्य कर रहे थे।

—[illegible]

धर्मनिरपेक्षता-सभी समस्याओं की जननी

—आर्य बन्धु जयप्रकाश—

समस्याओं के महाजाल मे भारत की साधारण जनता तो रोदन को विवश है ही किन्तु विस्मय है कि नेतागण भी किंकर्त्तव्यविमूढता में रोदन कर रहे हैं। मूलकाल में तो विदेशी आक्रान्ता शासक हमारी समस्याओं के लिए जिम्मेदार थे, तत्कालीन राष्ट्रीय व सामाजिक नेताओं ने महान संघर्षों से अर्जित स्वतन्त्रता का उपहार हमें प्रदान किया था। हमने भारत को जनतन्त्र व धर्म निरपेक्ष राज्य घोषित किया। फिर जनतन्त्र की जडो में कौन सा घुन लग गया है ? कि सर्वत्र राजसत्तातन्त्र हावी हो गया है। रोटी, कपड़ा, आवास, शिक्षा और चिकित्सा के लिए ४४ वर्ष बाद भी तड़प रहे भारत के जन बहुमत को हमने भाषा, जाति, उत्तर-दक्षिण, दलित, श्रमिक अल्पसंख्यक, मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, व्यापारी, कर्मचारी या छात्र शक्ति आदि के झण्डो मे बांटा हुआ है ताकि ये राजनीति नहीं, नही ! राजसत्ता के भेड़िये अपनी निर्बाध लूट जारी रख सकें। भारत का जनमत तब तक एक होकर इस लूट के खिलाफ खड़ा नहीं होगा जब तक कि इनको सही दिशा देने वाले विचारक और समाज सेवी आगे नहीं आयेंगे, किन्तु वे विचारक कहा से आयेंगे ? अधिकाश विचारकों ने अपने आपको सत्ता से जोड़ लिया है वे बधुआ चारणो के रूप में निज सत्ता-सूत्र की स्तुति करने में ही लीन है। शासक प्रसन्न है व उसका जन्मदाता उदास, कारण केवल एक ही है दूसरा नही, वास्तविक धर्म की उपेक्षा।

धर्म बनाम सम्प्रदाय:—धर्म की व्याख्या अपनी स्वार्थसिद्धि के अनुरूप बना ली गई है, जिसे मत-मतान्तर सम्प्रदाय समझना चाहिए था उसी को विभिन्न पूजा पद्धतियो व चिन्ह एव नाम पूजा के आधार पर धर्मों की सज्ञा दे दी गई है, यह भुला दिया गया कि पिता की सेवा, आज्ञापालन को पितृ-धर्म, देश के प्रति कर्त्तव्यों को देश धर्म व क्रमश: राजधर्म, समाज धर्म पतिव्रत धर्म आदि में किसी पूजा पद्धति का वर्णन नहीं है। धर्म पूजा पद्धति नहीं अपितु कर्त्तव्य का ही पर्याय है। कर्त्तव्य धर्म व्यक्ति में उत्तरदायित्व, संयम, निष्ठा, कर्मठता का आत्मिक बल उत्पन्न करता है, लेकिन नास्तिक शासकों को कर्त्तव्य का कर्कश उपदेश नही अधिकारो का मधुर स्वर चाहिए।

धर्म निरपेक्षता से नास्तिकता:—कर्त्तव्य पालन में कमजोर शासकों ने राज्य को भी धर्म निरपेक्ष माना। परिणामत: जैसा बोया गया वही फल सबके सामने है, यथा राजा तथा प्रजा। शासकों की तरह अपने पद, सामर्थ्य, सुविधा व साधनो का दुरुपयोग फिर अन्य लोग भी धर्मविहीन होकर करने लगे तो उनका क्या दोष है ? ऐसे हालात में चुनावों द्वारा फिर वही धर्मविहीन शासक बना कर न्याय, शान्ति व समृद्धि की कामना करना मृगतृष्णा नही तो क्या है ?

सही अर्थों में अब यह स्वीकार करना ही होगा कि सभ्य लोगो का शासन तो धर्म निरपेक्ष हो ही नहीं सकता है। धर्म निरपेक्ष/नास्तिक शासन तो असभ्य एवं बर्बर राक्षस जातियों का ही हुआ करता है।

किसी सच्चे धर्म में नाम, चित्र, पुस्तक व प्रतिमा आदि की मत-मतान्तर के अनुसार पूजा-पद्धति से कोई वास्ता नहीं है, धर्म के दस लक्षण जो आदि शासक मनु ने वर्णन किए हैं—वे केवल चरित्र की पूजा सिखाते हैं। (धीरज रखना, सहनशीलता, सयम रखना, चोरी न करना, आन्तरिक एव बाह्य पवित्रता, इन्द्रियो पर काबू रखना, विवेक बुद्धि, ज्ञान, सत्य, क्रोध न करना) इन लक्षणो व चरित्र के बिना अच्छे मनुष्य व समाज की कल्पना असम्भव है।

धर्मसापेक्षता द्वारा चरित्रोत्थान:—अत राष्ट्रीय सकटो से मुक्ति हेतु सभी धर्म प्रेमी विचारकों, बुद्धि जीवियों, साहित्यकारो तथा साधु-सन्तो का प्रथम कर्त्तव्य है कि धर्मनिरपेक्षता के बोगस नारे में फसी भारतीय अस्मिता को चरित्र-हनन की स्थिति से उबारने के लिए अविलम्ब एडी से चोटी तक का जोर लगाए, और भविष्य को सुन्दर बनाएँ।

आप क्या करें ? आपके द्वारा भारत में धर्मसापेक्ष राज्य की स्थापना हेतु किए जा रहे सभी प्रयत्नों (इस तरह के लेखो का सामर्थ्यानुसार प्रकाशन, फोटोस्टेट प्रति वितरण, शासकों को प्रतिवेदन, अन्य सगठनों मे स्वप्रभाव से अनुकूल प्रस्ताव पास करना/कराना आदि) से आर्य समाज बिड़ला लाईन्स, कमला नगर, दिल्ली-७ को क्रमश: पोस्टकार्ड आदि लिख कर अवगत कराते रहें ताकि इसे सशक्त जन-आन्दोलन का रूप दिया जा सके।

स्मरण रखें आर्य समाज कोई सम्प्रदाय नही अपितु शारीरिक, आत्मिक एव सामाजिक उन्नति हेतु विश्व कल्याण का पवित्र व प्रबल आन्दोलन है। हमारी मांग—

१—धर्मनिरपेक्षता को त्यागकर भारतीय संविधान मे "धर्म सापेक्षता (असाम्प्रदायिक)" को स्वीकार किया जाए।

२—प्रत्येक छात्र-छात्रा को शिक्षा व गुण-विकास के समान अवसर उपलब्ध कराये जायें।

३—गणतन्त्र व गुणतन्त्र की सामानान्तर व्यवस्था अपनायी जाए।

इसके उपरान्त ही हम "रामराज्य" की स्थापना का चिरस्वप्न पूरा कर सकेंगे।

—प्रधान आर्य समाज बिड़ला लाइन्स

जनसेवियों की पेंशन

—ब्रजभूषण दूबे

स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाधी ने किसी समझौते के अन्तर्गत निर्धारित रियासती राजाओ की 'प्रिवीपर्स' को राष्ट्र पर अनावश्यक बोझ मान कर उसे खत्म कर दिया था, किन्तु नौवी लोक सभा के जन सेवी सांसदो ने लोक सभा भग होने से पूर्व अपने लिए पेंशन राशि में ७५० प्रतिशत की वृद्धि कर ली। इस वृद्धि के आधार पर केवल एक वर्ष सासद रहे जनसेवी १२५० रुपये प्रतिमाह की पेंशन राशि प्राप्त करेंगे। अपनी सुविधा के लिए ४ वर्ष १० माह सांसद रहने के स्थान पर केवल एक साल सांसद रहने पर भी पेंशन पाने का हक प्राप्त कर लिया गया। इस नई योजना से सरकार पर प्रति वर्ष ५ करोड़ रुपयों का अतिरिक्त भार पड़ेगा।

देशवासियो को स्मरण दिलाना चाहता हूं कि काकोरी केस के अमर शहीद प० रामप्रसाद 'बिस्मिल' की श्रद्धेया बहिन स्व० शास्त्री देवी को स्व० इन्दिरा गांधी के कार्यकाल में केन्द्रीय सरकार ने यह कहकर उनकी पेंशन बढाने से इन्कार कर दिया था कि शहीद 'बिस्मिल' की पेंशन पर बहिन का नही पत्नी का अधिकार बनता है। बाद में साहसी बहिन शास्त्री देवी ने सरकार की ५० रुपये प्रतिमाह की पेंशन ठुकरा दी थी। उस समय किसी मन्त्री या नेता ने पेंशन की शर्तों के संशोधन की जरूरत न समझी थी, किन्तु अपने लिए एक वर्ष की सेवा के आधार पर ही पेंशन मजूर कर ली।" राष्ट्र पर प्रिवीपर्स से भी बडा खर्च लाद दिया गया।

आज भी अनेक परीक्षाओ में अच्छे नम्बरो से उत्तीर्ण होने वाले छात्रों के अभिभावको की वार्षिक आय २५ हजार रुपयो से अधिक होने पर उन्हे छात्रवृत्ति से वंचित कर दिया जाता है। लोकतन्त्र का तकाजा है कि इन सासदो को भी उनकी आमदनी के आधार पर पेंशन की स्वीकृति दी जाय। इस दिशा मे महामहिम राष्ट्रपति महोदय से निवेदन है "कि जब सांसदो की पेशन वाला बिल उनके समक्ष अनुमोदनार्थ प्रस्तुत किया जाये तो लोकतन्त्र की रक्षा के लिए उस पर स्वतन्त्रता पूर्वक विचार करके अपना निर्णय देंगे।"

२०, गोराचन्द रोड कलकत्ता-१४

आर्य समाज गया (बिहार)

विगत २८ मार्च ९१ से ३१ मार्च ९१ तक आर्य समाज चौक गया (बिहार) का ६८ वां वार्षिकोत्सव सोत्साह मनाया गया। तथा २९ से ३१ मार्च तक आर्य समाज चाकन्द (गया) में भी ४० वां वार्षिकोत्सव मनाया गया।

उक्त कार्यक्रम में सर्वश्री स्वामी डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी 'अग्निव्रत' नालन्दा, नवल किशोर शास्त्री, इन्द्रदेव सिंह 'इन्द्र' तथा दयानन्द सत्यार्थी ने हजारों ग्रामीणों को धर्मोपदेश द्वारा वैदिक धर्म का सन्देश दिया।

—सोममित्र शास्त्री (मंत्री)

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमान जी, सादर नमस्ते।

आपके आर्य सन्देश विशेषांको सहित प्राप्त होते रहे हैं। इससे आर्यसमाज लखनऊ वासियो को भी महापुरुषों की तपस्यामयी जीवनियों का ज्ञान प्राप्त हुआ।

—डा० कमलाप्रधान, स्वास्तिका, नया हैदराबाद, लखनऊ

बन्धुवर,

सादर नमस्ते। आर्यसन्देश का बोधांक मिला। जहां दयानन्द स्तव: राष्ट्र-भक्त दयानन्द, आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे उत्कृष्ट रत्न हृदय को उल्लासित और मस्तिष्क को मथित करते हैं, वहीं समाजोद्धारक महर्षि दयानन्द तुम तो कर गए कमाल, देव दयानन्द जैसी रचनाओं में कथ्य सही होने पर भी अभिव्यंजना की शिथिलता आर्यसन्देश की गरिमा पर ठेस लगाकर स्पष्ट करती है कि शायद अब हिन्दी मे अच्छी कविताएं नहीं लिखी जाती। फिर भी आर्यसन्देश के इन विशेषांको की परम्परा स्तुत्य है।

—डा० भैरवदत्त शुक्ल, तिकुनिया खीरी, (उ० प्र०)

प्रिय सम्पादक जी,

आपने गुरुकुल कागड़ी का जो समाचार छापा है, वह अत्यन्त उपयोगी है।

—आचार्य विश्वश्रवा:, व्यास बरेली

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते।

आप द्वारा सम्पादित आर्यसन्देश का मार्च अंक प० लेखराम एव आर्य समाज स्थापना दिवस संयुक्तांक पढ़ा, सराहनीय कार्य है।

—ज्ञानचन्द शास्त्री
राजकीय मा० विद्यालय, कुसुम्भी
जि० भिवानी, हरियाणा—१२०५२१

आदरणीय सम्पादक जी,

सादर नमस्ते।

अत्र कुशल तत्रास्तु। आर्य सन्देश मे प्रकाशित लेखो से जहां आपसे (मैं) परिचय हुआ था। वही अब आप का नाम सम्पादक के रूप मे पढ़कर हर्ष हो रहा है। उत्तम् विचार के मनुष्यो की विचार तरगें कही न कहीं किसी रूप मे अपना प्रभाव छोडती ही है, सो आपका इस पत्र के माध्यम हो रहा उपयोग अवश्यमेव दूरगामी आध्यात्मिक परिणाम देकर, मां-मानवता की रक्षा करने मे समर्थ हो सकेगी। ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।

श्री सत्यकेतु स्मृति अंक का विज्ञापन सार्वदेशिक में पढ़कर उसे मंगवाने के बाद, मैंने लगभग (अब तक) १० ग्राहक बनाए हैं और प्रयासरत हूं कि ग्राहक बढ़ें कारण यह है कि साप्ताहिक पत्र अपनी उत्तमता में कोई कमी किए बगैर अपने ध्येय-पथ पर सतत् सलग्न है। आपकी छाया पाकर यह पत्र उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर हो यही मेरे और सहयोगियो की कामना है।

—रामाज्ञा आर्य पुत्र

सम्पादक महोदय,

मुझे यह पत्रिका प्रिय है। मुझे अपने साथियो के यहां से जिन्हें सदस्य बनवाए थे प० लेखराम विशेषांक पढने को मिला था जिसमें लेख बड़े उच्च कोटी के थे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपकी देख-रेख में यह पत्रिका दिनों दिन उन्नति करती रहेगी और आप अन्य आर्य पत्र पत्रिकाओं में अपना उच्च स्थान बनाए रखेंगे।

—रघुनाथ आर्य, रिकल रोड,
पो० गारुलिया जी० २४ परगना (प० बंगाल)

जगन्नाथ की वास्तविक आराधना

(पृष्ठ २ का शेष)

का भी काया-कल्प कर दिया।

महर्षि दयानन्द ने जीवन के अन्तिम समय कष्ट सहने में जिस आनन्द-मयी वृत्ति का परिचय दिया। उसी से पं० गुरुदत्त सरीखे व्यक्ति भावाभिभूत हो हो उठे और आज भी आर्यसमाज वज्र-सा अविचल है, महात्मा गांधी ने जिस शांति के साथ सीने पर सांप्रदायिकता की गोलियां झेली, वही आज के सम्पूर्ण संसार का परम लक्ष्य बनी हुई है और जिस अहिंसा का आजीवन पालन किया, उसी का सबल लेकर एशिया और अफ्रीका के राष्ट्र सुषुप्ति के बन्धन तोड़कर अंग-ड़ाने लगी है।

जो देव है, परोपकार, समता और एकता का नैष्ठिक पुजारी है, जिसने सर्वस्व आहुत करने का व्रत ले रक्खा है, वह विवेक का अवलम्ब लेकर अनायास समझ लेता है कि चाहे छेदन-भेदन हो, दु:ख, कष्ट, रोग, अभाव हों बाधा-अवरोध हों, विपत्ति के जटिलतम व्यूह हों, आपत्ति के बीहड़-भयावह बन हों,—यहां तक कि मृत्यु ही क्यों न हो—सब के सब प्रगति के सोपान हैं, विकास के निम्न-उच्च अधिष्ठान हैं और मानव के अमृत-पान में सहायता पहुंचाने वाले हैं। इनके माध्यम से ही जीव अमर हो सकता है।

ये कष्ट और रोग कर्म-फल के परिचायक हैं। इन्हें देकर परमेश्वर यही चाहा करता है कि लोक-चेतना, व्यक्ति की चित्त-वृत्ति और ससृति की संस्कार-साधना-सुरापगा के पवित्र-प्रवाह मे नियन्त्रित होकर कुन्दन सी दमकने लगे। उसकी अभिलाषा रहती है कि व्यक्ति की प्रकृति सुसभ्य-सुसंस्कृत बन जाये।

स्थूल रूप से यह मालूम पड़ता है कि इन कष्टों या तापों से परमेश्वर मनमानी या स्वेच्छाचार का परिचय दे रहा है। जो पापी, शोषक, उत्पीड़क या बेईमान हैं, उनके पास सुखो की बारातें सजी हुई हैं और सुविधाओं की कमी नहीं है लेकिन जो सत्यवादी, अहिंसक, धीर-वीर और लोकोपकारक हैं, उन्हें पदे-पदे अपमान का हलाहल पीना पड़ता है, अभावों की क्रूर कारा में बद्ध-विवश होकर जीना पड़ता है और सामाजिक प्रताडना झेलनी होती है।

परन्तु सूक्ष्म रूप से ध्यान देने पर जान पड़ता है कि इन कष्टों में भी उपा-देयता है। इनसे मानव की क्षमता एव सामर्थ्य में अभिवृद्धि होती है। वह इनमें ही पल-पनप कर अभ्युदय और नि:श्रेयस्—दोनों की उपलब्धि में सफल होता है। जिसने पिपासाकुल बेचैनी का अहसास नहीं किया, वह शीतल जल की मधुरिमा से परिचित नहीं हो सकता, जिसे बुभुक्षा की चरम सीमा में जाने का अवसर नहीं मिला, वह नमक-रोटी के स्वाद से वचित रहता है और जिसे अपमान या प्रताड़ना के कुलिश प्रहार नहीं झेलने पड़ें, वह लोक-प्रतिष्ठा के सिंहासन पर कदम नहीं रख सकता।

(६) कस्मै देवाय हविषा विधेम— ईश्वर निष्पाप है, शुद्ध-बुद्ध, निष्कलुष, अविकारी है और इसीलिए अक्षय आनन्द का निधान भी है। वह तो अहर्निशं जीवात्मा को भी आनन्दमय बनाने के लिए प्रयत्नशील रहता है। तभी तो वह देव या महादेव कहलाता है।

हमें भी उसी की आराधना करने में सदैव तत्पर रहना चाहिए। उसकी वास्तविक आराधना यही है कि वह आत्म-दा है, हम भी लोक-हित पर अपना तन-मन-धन सब कुछ न्योछावर कर दें। वह बल-दा है, हम भी विश्व में किसी भी व्यक्ति को हीन-दीन या अशक्त-निर्बल न बना रहने दें। वह 'क:-स्वरूप' है, (आनन्द मय है) हम भी अग-जग में पूर्ण आनन्द की रस-धारा प्रवाहित करने के प्रयास करें।

जो टेढ़े-मेढ़े लड्डू का दान करके पुत्र-प्राप्ति में सफल होना चाहते हैं, डेढ़-दो रुपये के प्रसाद द्वारा लाखों की लाटरी निकल आने की प्रतीक्षा करते हैं और अपनी क्षुद्र वासना की पूर्ति के लिए औरों के अहित में लीन हैं, उन्हें कभी आनन्द नहीं मिल सकता। यही अनुभूति जब तक सम्पूर्ण विश्व के मानव-परिसर में व्याप्त नहीं हो जाती, तब तक हमारी आराधना अधूरी है, हमारा भावपक्ष अभी अपूर्ण है और हम सर्वस्वाहुत करने की समीहा का समायोजन करने में विफल रहेंगे।

महाराजा अग्रसेन इन्टर कालेज
पो०—तिकुनिया खीरी (उ० प्र०)

आर्य समाज मायापुरी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

—रविवार दिनांक १७.३.१९९१ से रविवार २४.३.९१ तक आयोजित आठ दिवसीय कार्यक्रम का शुभारम्भ ब्रह्मचारी विष्णुमित्र जी व्याकरणाचार्य जी द्वारा यज्ञ से हुआ।

सोमवार १८.३.९१ से २३.३.९१ तक महात्मा राम किशोर जी वैद्य द्वारा रामायण-कथा हुई। भजनोपदेशक पं० सत्यदेव जी स्नातक सभा प्रचारक एवं साथ में पं० ज्योति प्रसाद जी उपस्थित थे।

रविवार दि० २४.३.९१ को रामनवमी को यज्ञ मे ब्रह्मा श्री राज सिंह जी ब्रह्मचारी मुख्य अतिथि श्री हरचरण सिंह जी बख्शी एव मुख्य वक्ता आचार्या सुनीति आर्या थीं। श्री गोपाल कृष्ण जी मखीजा भी अतिथि एवं वक्ता थे।

इसी अवसर पर आर्य समाज मायापुरी की अन्तरंग सभा का निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ :—

प्रधान—श्री विजय कुमार शर्मा, मंत्री—ठाकुर सुरेन्द्र सिंह, कोषाध्यक्ष—श्री मनीष महर्षि।

प्रबन्ध समिति का गठन

आत्म शुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ की प्रबन्ध समिति का गठन निम्न प्रकार किया गया :—

अध्यक्ष—स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, मंत्री—डा० शिवकुमार शास्त्री, सदस्य—डा० धर्मपाल, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री कबूलसिंह आर्य।

पीपाड़ शहर आर्य वीर दल का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज पीपाड़ शहर के आर्य वीर दल का चुनाव श्री मदनपाल जी राठी शिक्षक सार्वदेशिक आर्यवीर दल की अध्यक्षता में दिनाक ३०-३-९१ को सर्वसम्मिति से सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

१—मन्त्री श्री जगदीश आर्य २—नगरनायक श्री घनश्याम सोनी,
३—अधिष्ठाता श्री सत्यनारायण सोनी ४—कोषाध्यक्ष श्री श्यामलाल आर्य।

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज रघुवीर नगर में वर्ष १९९१-९२ हेतु सर्वसम्मति से वार्षिक निर्वाचन में निम्न पदाधिकारी चुने गए—

१. प्रधान—श्री सुखदेव जी महाशय
२. मंत्री—श्री रामचन्द जी आर्य
३. कोषाध्यक्ष—श्री धर्मदेव जी

—आर्य समाज गोविन्दपुरी मे रविवार दिनांक ३१-३-९१ को चुनाव हुआ जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व-सम्मति से चुने गये :—

१. श्री राम दुलारे मिश्रा (प्रधान)
२. श्री सोमदेव मल्होत्रा (मंत्री)
३ श्री गगा शरण शर्मा (कोषाध्यक्ष)

—आर्य समाज रावतभाटा का वार्षिक चुनाव दिनाक २४-३-९१ को सम्पन्न हुआ। वर्ष १९९१-९२ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये :—

१—प्रधान—श्री देव प्रसाद पाण्डेय, २—मंत्री—श्री देवेन्द्र कुमार,
३—कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश आर्य ४—सदस्य श्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी

—आर्य समाज दुर्गा पुरी का परिवर्तित नाम पूर्वी बाबरपुर शाहदरा का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ।

१ प्रधान—श्री विजयपाल सिंह (एडवोकेट)
२. सचिव—श्री रामनारायण शर्मा
३. कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्रभानु "सुमन"

—आर्य समाज हैवी इलेक्ट्रीकल्स पिपलानी का वर्ष १९९१-९२ के लिये दिनांक १७ मार्च १९९१ को प्रातः ९.३० बजे साधारण सभा में निम्न अधिकारी चुने गए।

१. अध्यक्ष—श्री धर्मवीर वधवा
२. मन्त्री—श्री जगदेव बैठा
३—कोषाध्यक्ष—श्री विनोद कुमार आर्य

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 18-19-4-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३९
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" २१ अप्रैल, १९९१

शहीद दिवस सम्पन्न

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली द्वारा आर्य समाज लाजपतनगर (द्वितीय) मे गत मास शहीद दिवस सोल्लासपूर्वक मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रि० आर्यवीर भल्ला ने युवाओं व देश के नागरिकों को शहीदों के पदचिह्नों पर चलने का आह्वान किया। उन्होंने कहा—आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कांग्रेस की स्थापना से १० वर्ष पूर्व ही 'स्वदेश व स्वराज्य' का नारा राष्ट्र को दिया था। यही कारण है कि वैदिक विचारधारा के इस आन्दोलन में सर्वाधिक क्रान्तिकारी व सत्याग्रही प्रभावित रहे। "शहीद" किसी राष्ट्र या संस्था के संकीर्ण दायरे में शामिल नहीं किये जा सकते, वे समस्त विश्व के लिए प्रेरणाप्रद हैं।

इस अवसर पर पूर्व सांसद श्री रामचन्द्र विकल ने कहा वर्तमान राजनीति में अच्छे लोगों को आगे लाना चाहिए। शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव के जीवन से हम प्रेरणा लें तथा राष्ट्रहित सर्वोपरि मानकर प्रत्येक कार्य करें।

प्रान्तीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्रीमती शकुन्तला आर्या, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, पत्रकार श्री नरेन्द्र अवस्थी, परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, श्री [illegible] ... विजय चौधरी आदि ने अमर शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

—अजय कपूर
मण्डल मंत्री लाजपत नगर

शान्ति यज्ञ सम्पन्न

बिहार राज्य के पटना मण्डलान्तर्गत आर्य समाज [illegible] के पूर्व मंत्री श्री योगेन्द्र प्रसाद आर्य के पूज्य पिता का देहावसान हो गया। दिनांक २०.३-९१ को उनके निवास स्थान पर स्वामी अमितज्ञ (डा० देवेन्द्र सत्यार्थी) के द्वारा शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस शान्ति यज्ञ में सर्वश्री स्वामी दयानन्द, श्री विनोद कुमार आर्य एवं श्री भगवान सहाय (मुजफ्फरपुर) आदि ने श्री योगेन्द्र प्रसाद जी को धैर्य के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद क्षेत्र हरियाणा पो०—नई दिल्ली-४४ में पहली कक्षा से दसवीं कक्षा तक प्रवेश प्रारम्भ है। प्रवेश योग्यता कम से कम ८ वर्ष की आयु का होना चाहिए। यहां प्राचीन भारतीय धार्मिक ग्रन्थों के साथ-साथ आधुनिक विषयों का भी अध्ययन कराया जाता है। पाठ्यक्रम हरियाणा शिक्षा विभाग से सम्बद्ध है। यहां छात्रावास की समुचित व्यवस्था है। अपने बच्चों को [illegible] मिलें या पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क स्थापित करें।

—[illegible]
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ फरीदाबाद (हरियाणा)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २१ | रविवार, १४ अप्रैल, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

राष्ट्र के सामने आई चुनौतियों का समाधान आर्य समाज ही कर सकता है

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

आज राष्ट्र के सामने अनेक कठिन समस्याए हैं। सबसे बडी समस्या राष्ट्रीय अखण्डता को सम्भाल कर रखना है। आज पजाब एव कश्मीर की अलगाववादी प्रवृत्तियां जोरो पर हैं। इनके लिए सुरक्षा पट्टी और सैनिक शासन ही एक मात्र समाधान है।

ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आर्य समाज लक्ष्मी नगर के वार्षिकोत्सव पर व्यक्त किए। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामन्त्री सूर्यदेव, एव आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री शिवकुमार शास्त्री, प० प्रणव प्रकाश शास्त्री आदि ने भी अपने सामयिक विचार व्यक्त किए। आर्य समाज लक्ष्मी नगर के प्रधान श्री महेश्वरी ने सभी अभ्यागतो का स्वागत किया।

महर्षि दयानन्द काव्य का विमोचन

भारत के उपराष्ट्रपति डा० शकरदयाल शर्मा ने कविवर प० जगदेव शान्त द्वारा लिखित महाकाव्य 'महर्षि दयानन्द' का २५ मार्च १९९१ को लोकार्पण करते हुए कहा कि इस महाकाव्य के माध्यम से महर्षि दयानन्द सरस्वती का सदुपदेश जन-जन तक पहुंचेगा। इस अवसर पर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, डा० धर्मपाल प्रो० बिजयेन्द्र स्नातक और आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन ने भी अपने विचार व्यक्त किए। महाकाव्य के प्रकाशक भारतीय साहित्य प्रकाशन मेरठ के स्वत्वाधिकारी श्री परमात्मा शरण जी ने सभी अभ्यागतो का धन्यवाद किया।

आर्य समाज नजफगढ़

आर्यसमाज नजफगढ, का वार्षिकोत्सव १५-१६-१७ मार्च को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, पं० सत्यदेव स्नातक, प० चुन्नीलाल और अन्य भजनमडलियो ने वेदप्रचार किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने चौ० रघुनाथ सिह और उनके साथियों के कार्य की समीक्षा करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि इस मच पर पन्द्रह सन्यासी विद्यमान हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम उनका सम्मान करें और वे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए यथाशक्ति कार्य करे। आर्य केन्द्रीय सभा के महामत्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने आर्य समाज की महत्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर शोभा यात्रा एव नगरकीर्तन का भी आयोजन किया गया।

कन्या गुरुकुल नरेला

कन्या गुरुकुल नरेला का वार्षिकोत्सव ३०-३१ मार्च १९९१ को समारोह पूर्वक आयोजित किया गया। स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, डा० धर्मपाल, भजनोपदेशक प० सत्यदेव स्नातक, पं० चुन्नीलाल आदि ने वेदोपदेश किया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने कन्या गुरुकुल की उपलब्धियों को रेखाकित करते हुए आशा व्यक्त की, कि ये बेटिया वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में आगे आए गी। वैद्य कर्मवीर जी ने सभी अभ्यागतो का स्वागत किया।

श्रीमती सुशीला गोयल का विदाई समारोह

रतनदेवी आर्य कन्या सीनियर सैकण्डरी स्कूल, कृष्ण नगर की प्रधानाचार्या श्रीमती सुशीला गोयल के सेवा निवृत्त होने पर, एक भव्य विदाई समारोह का आयोजन किया गया। अध्यापिकाओ अभिभावको, शिक्षा विभाग के अधिकारियो तथा प्रवन्ध समिति के सदस्यो ने उनके कार्य की भूरि-भूरि प्रशसा की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आशा व्यक्त की कि श्रीमती सुशीला जी का नेतृत्व एव परामर्श विद्यालय को प्रगति देने के लिए इसी प्रकार मिलता रहेगा। श्रीमती गोयल को इस अवसर पर ससम्मान एव सस्नेह उपहार भी भेंट किए गए। श्रीमती ईश्वर देवी धवन, श्रीमती सावित्री धवन, श्री नेतराम शर्मा, श्री खन्ना, श्री वर्मा, श्री गोयल, श्रीमती ईश्वर देवी आदि ने उनके दीर्घ जीवन एव स्वास्थ्य की कामना की।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

आर्यसमाज मन्दिर गीता कालोनी दिल्ली मे आर्यसमाज स्थापना दिवस दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल की अध्यक्षता मे समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के महामत्री डा० शिवकुमार शास्त्री, स्वामी सत्यानन्द जी और प० प्रणव प्रकाश शास्त्री ने भी अपने विचार व्यक्त किए। प० आशानन्द आर्य के ओजस्वी भजनोपदेश हुए। पूर्वी दिल्ली आर्य उपप्रतिनिधि सभा की प्रधाना श्रीमती ईश्वरदेवी धवन ने अभ्यागतो का स्वागत किया तथा मत्री मास्टर मनोहर लाल ने कार्यक्रम का सयोजन किया। पूर्वी दिल्ली की सभी आर्यसमाजो के प्रतिनिधि इस समारोह मे सम्मिलित हुए।

वैदिक विद्वान का सम्मान

पिछले कई वर्षों से दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजो में वैदिक विद्वानो के सम्मान की परम्परा बन गई है। आर्यसमाज सदर बाजार मे लाला चन्दीमल जी ने ग्यारह हजार रुपये का सात्त्विक दान दिया। यह धनराशि स्थिर निधि मे रखी जाएगी। इससे वर्ष भर में प्राप्त ब्याज से प्रति वर्ष एक वैदिक विद्वान का सम्मान किया जाएगा। रविवार ११ मार्च को आर्यसमाज सदर बाजार में लाला जी का सम्मान किया गया। समारोह की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने की। लाला जी का परिचय श्री चन्द्रदेव जी ने किया। लाला किशोरी लाल जी ने अभ्यागतो का स्वागत किया। मत्री वैद्य इन्द्रदेव जी ने कार्यक्रम का सयोजन किया।

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

जगन्नाथ की वास्तविक आराधना

(गतांक से आगे)

—श्री भैरव दत्त शुक्ल

किसी व्यक्ति के पास करोड़ों-अरबों की सम्पत्ति है उसने कई मंदिर बनवाये हैं, प्रतिमाएं प्रतिष्ठित करायी हैं और कई पुजारी और मंत्र-पाठी पंडित निश्चित वेतन पर लगा रक्खे हैं लेकिन यदि उसके पड़ोसी भूख से व्याकुल हैं, नंगे बदन हैं और बेकारी या बेरोजगारी के जबरदस्त शिकंजे में जकड़े हुए हैं तो वह सच्चा ईश्वर-भक्त नहीं हो सकता और उसकी भक्ति या आराधना न होकर कोरी रुढ़ि है। प्रभु-भक्ति से संयुक्त प्रत्येक व्यक्ति का यह अनिवार्य कर्त्तव्य है कि वह निर्बलों को बलवान बनाए और पतितों के उत्थान में सहायक बने।

(३) यस्य विश्व उपासते—इसलिए चाहे कुछ हो, विश्व की परिधि में जो व्यक्ति पहुंचते हैं; उन सभी को चाहे-अन चाहे रूप में उसी परमेश्वर का पल्ला पकड़ना पड़ता है। जिस समय संसार के सारे सम्बन्ध अस्त-व्यस्त हो उठते हैं, नेकी का बदला बुराई में मिलने लगता है, अभाव का शिकंजा खूब कस जाता है और चारों ओर लेशमात्र सहायता की आशा शेष नहीं रह जाती तो उस समय प्रभु का स्मरण आ ही जाता है। कट्टर से कट्टर नास्तिकों को भी बुभुक्षितावस्था, रोग-जन्य पीड़ा और बेचैनी या मृत्यु के आक्रमण में परमेश्वर का ध्यान करते देखा गया है। ऐसे भी व्यक्तियों की कमी नहीं है जो अवरोधों और अवनति व्यूहों की विकरालता के हाहाकार में वीरों की मजारों पर सिर पटकते हैं, सन्तों की भस्म या चरण-रज शिरोधार्य करते हैं, कनफुका गुरु-सेवा का व्रत ग्रहण कर लेते हैं, अर्हतों या महन्तों के पीछे लगते फिरते हैं उनसे भी बढ़कर वे विद्वान और विवेचक भी थोड़े नहीं हैं, जो इन उपर्युक्त माध्यमों को भी ईश्वर की आराधना का ही एक रूप मान लेते हैं। उन्हीं की यह घोषणा प्रायः सुनी जाती है कि उस प्रभु की पूजा के संसार में जो भी प्रचलित मार्ग है, वे भिन्न-भिन्न होते हुए भी सब उस प्रभु की ओर ही जा रहे हैं। ऐसे लोग पुष्टि में गीता के नवें अध्याय का तेईसवां श्लोक प्रस्तुत कर देते हैं।

परन्तु हमें सतर्क रहना है और संसार के सभी मनुष्यों को भी सावधान कर देना है कि सभी मार्ग भले ही ईश्वर की आराधना के ही मार्ग माने जाते हों, फिर भी वे प्रभु की आराधना के रूप में स्वीकार नहीं किये जा सकते। अपनी कामना पूर्ति के लिए किसी देवता-विशेष पर निरीह भोले बकरे, मेढे, भैंसे, बछड़े या बालक की बलि चढ़ाना, मजारों और दरगाहों पर चादर-रेवड़ी चढ़ाते फिरना, पाषाण प्रतिमाओं का नाना विधि-विधानों से पूजन करना आदि जितने भी कर्म प्रचलित हैं, उन्हें ईश्वर की आराधना का मार्ग समझना बुद्धि का दिवालियापन है। ये और ऐसे ही अन्य कर्म—जैसे पति के शव पर पत्नी का जीवित जल जाना, स्वर्ग के पितरों के लिए ब्राह्मण जिमा कर यह मान लेना कि भोजन उन तक पहुंच जायगा आदि-आदि जड़ता, रुढ़िवादिता असभ्यता और स्वार्थ-भावना के परिचायक हैं। हमें प्रभु-भक्त के नाते इनका जमकर विरोध करना है, इनकी पुष्टि में गीता आदि के श्लोक रखने वालों की धज्जियां उड़ानी है और स्पष्ट बतला देना है कि जिस मार्ग से मानवता खंडित-विभाजित न होती हो, व्यक्ति और समाज के सौमनस्य में विघ्न न पड़ते हों, प्रत्येक तृण पशु एवं प्राणी के प्रति ममता अक्षुण्ण बनी रहती हो, वही मार्ग ईश्वर की सच्ची आराधना का मार्ग है। ये जो भिन्न-भिन्न मार्ग गीता या ऐसे ही अन्य महान् ग्रंथों में ईश्वर तक पहुंचने वाले बतलाये गये हैं, वे ज्ञान, योग, भक्ति, श्रम, व्यापार, रक्षा, प्रेम, कर्त्तव्य पालन, परोपकार आदि हैं। अर्थात्, यदि व्यक्ति अपने सारे कर्मों का फल अपने लिए न रखकर समाज-सापेक्ष या संसार-सापेक्ष बना दे तो भले ही वह अपने अनुशासित विधि-विधान की दृष्टि से ईश्वर की आराधना का क, ख, ग, तक न जानता हो, परन्तु उसका कर्म ही ईश्वर की आराधना जैसा हो जायगा। दूसरी ओर विधि-विधान से युक्त ईश्वर की आराधना का कोई भी मार्ग सर्वतो भावेन बाह्यतः शुद्ध होने पर भी यदि मानव-मानव में विभेद पनपाता है, घृणा की कालिमा बढ़ा देता है, ईर्ष्या की भट्टी धधकाता है, युद्ध के बादल मडराने में सहायक बनता है, बेकारी-बेरोजगारी बढ़ाता है, घोरतम विषमता के हलाहल में सारे समाज को डुबा देता है तो उसे कोई भी विवेकशील व्यक्ति ईश्वर की आराधना का मार्ग नहीं अंगीकार कर सकेगा।

(क्रमशः)

महाराजा अग्रसेन इन्टर कालेज
पो०-तिकुनिया खीरी (उ०प्र०)

महात्मा हंसराज का प्रादुर्भाव

—सत्यभूषण "शान्त" वेदालंकार एम. ए.

कैसे अनुपम और अलौकिक हंसराज थे महापुरुष।
त्याग दिया सर्वस्व जाति हित कभी न सोचा अपना सुख॥

दयानन्द के आदर्शों को निज जीवन में ढाला था।
वैदिक धर्माचरण किया सबका उपकार विचारा था॥

दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालयें उनकी थाती हैं।
मूर्तिमान उनका स्वरूप जो हम सबको प्रिय भाती है॥

अपनी संस्कृति गरिमा को हम भूले थे भारतवासी
छाई थी पाश्चात्य सभ्यता बने उसी के विश्वासी॥

लाखों लाल लुट रहे थे गोरांगों को प्रभुता छाई।
धर्म, कर्म सब भूल चुके थे हमको लाज नहीं आई॥

ऐसे विकट काल में प्रभु ने अपनी लीला दरशाई।
एक सुघड़ देवी पंजाब की घर से निज नीचे आई॥

पौ फटने से पहले ही वह देवी वहाँ विराजी थी।
गाय एक सुन्दर उससे इच्छा भोजन की रखती थी॥

देवी ने पुलकित नयनों से देखा और दुलारा था।
बड़े प्रेम से उसके आगे रखा रोज का चारा था॥

उधर भुवन भास्कर जगती आलोकित करने को व्याकुल।
दिव्य विभूति इधर से आने को भी थी अतीव आतुर॥

नव मासों से जिसे गर्भ में आप पालती आई है।
उसे प्रकाशित होने की भी प्रबल लालसा छाई है॥

वैसे जैसे रवि रश्मि भूमण्डल पर आकर उतरी।
वैसे उस तेजस्वी बालक की मुख में छवि छितरी॥

मचल उठा शिशु तभी पड़ोसिन जानो मानो यो बोली।
भागवान गौ मा की सेवा करते पाया रत्न भरी॥

बड़ा सुलच्छन बालक गाय दुग्ध सम इसका चरित विमल।
जैसे गाय शुष्क घास खा देती अपना क्षीर विमल॥

ऐसे ही निष्काम भाव से पर सेवा पीड़ा हरने।
हुआ अवतरित है इस भू पर इस भव सागर को तरने॥

अठारह सौ चौसठ उन्नीस अप्रैल की यह घटना है।
कौन जानता था यह शिशु विभु की अति अद्भुत रचना है॥

बजवाड़ा में आंखें खोली रूप लिये महात्मा का।
जगती को कर मंत्र मुग्ध था भक्त अटल परमात्मा का॥

भग्न भवन का उस शिशु ने था सर्वप्रथम शृंगार किया।
आगे चलकर ऋषिवर के सपनों को था साकार किया॥

युग निर्माता के आदर्शों पर डाली थी नींव अहो।
हंसराज ने सब कुछ तजकर रचा भव्य था भवन अहो॥

उस विभूति ने शत-सहस्र शिशुओं को था वरदान दिया।
विद्या सुधा पिलाकर उनको था चरित्र निर्माण किया॥

अहो! महात्मा हंसराज सा हम अब कैसे पाएंगे।
"शान्त" चरण चिह्नों पर उसके क्या हम अब चल पाएंगे?

१२, मुनिरका विहार,
नई दिल्ली–६७

भूल-सुधार

साप्ताहिक आर्य सन्देश में ७ अप्रैल ९१ के अंक में गलती से "अमर धर्मवीर महाशय धर्मपाल" छप गया है। कृपया पाठकगण 'महाशय धर्मपाल' की जगह 'महाशय राजपाल' पढ़ें। धन्यवाद। —सम्पादक

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

महात्मा हंसराज



महात्मा हंसराज भारत की पवित्र धरा पर कार्यक्षेत्र मे उस समय अवतरित हुए थे, जब यहा पर जन-जन को ईसामसीह की भेडो में सम्मिलित करने का कुत्सित प्रयास त्वरित गति से चल रहा था। लार्ड मैकाले की शिक्षा नीति ऐसे क्लर्क तैयार करने की थी जिनका शरीर भारतीय हो, परन्तु जिनकी आत्मा अग्रेजियत मे रची बसी हो। ऐसे विकराल षड्यन्त्र को चुनौती देने के लिए महात्मा हंसराज सीना तानकर खडे हो गए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की शिक्षा नीति के प्रचार-प्रसार का सकल्प लेकर चलने वाले स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज के जीवन हमारे लिए प्रेरक हैं। इस महामना ने ससार को दिखला दिया कि वैदिक शिक्षा पद्धति से ही राष्ट्र और विश्व का कल्याण सभव है और उसने डी ए वी स्कूलो, कालेजों का ऐसा वट वृक्ष रोप दिया जो आज केवल भारत भूमि पर ही नहीं, अपितु विश्व के अन्य देशो मे आर्यसमाज और वैदिक धर्म को गति देने के लिए सतत छाया वितानित कर रहा है।

महात्मा हसराज चाहते तो सरकारी नौकरी करके ऐशो-आराम की जिन्दगी बिता सकते थे, पर उन्होने तो चुना था समाज सुधार का कटकाकीर्ण मार्ग, त्याग, तपस्या और बलिदान का लम्बा जीवन। रास्ता ऊबड़-खाबड़ था, भयावना था और बलिदान मांगता था। इसी रास्ते पर महात्मा हसराज चल पड़े थे।

महात्मा हसराज केवल शिक्षा तक सीमित नही रहे। उन्होने बीकानेर, राजपूताना, सूरत, मध्यप्रदेश, बड़ौदा, अवध, गढवाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ के अकाल मे तथा कागड़ा के भूकम्प के महाविनाश मे देवता-तुल्य सेवा कार्य किया। यही कार्य उन्हें महात्मा के नाम से पुकारे जाने की सार्थकता को सिद्ध करता है। उनका कार्य युगों-युगो तक मानव के मार्ग को प्रशस्त एव आलोकित करता रहेगा। उनकी स्मृति मे श्रद्धांजलि।

—डा० धर्मपाल

महात्मा हंसराज दिवस

स्थान : तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम
तिथि : २१ अप्रैल १९९१, रविवार
समय : प्रात: ९ से १ बजे तक
अध्यक्ष : डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती

प्रिय बन्धुओ !

महात्मा हसराज श्वेत वस्त्रों में सन्यासी, त्यागमूर्ति, प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एव डी० ए० वी० आन्दोलन के सूत्रधार थे। ऐसे युगपुरुष का जन्मोत्सव हमारे जीवन के लिए प्रेरणाप्रद होगा।

हमारी आप सबसे विनम्र प्रार्थना है कि इस शुभावसर पर सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित अधिक संख्या में पधार कर अनुगृहीत करें।

—सूर्यदेव (महामन्त्री)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(७ अप्रैल, ९१ के अक से आगे)

मैं स्वाध्याय मजुल पारडी से उक्त पाठमाला के भाग क्रमश मगाता गया और इन्ही के आधार पर मैंने सस्कृत का काम चलाऊ ज्ञान उपार्जित किया। सस्कृत पढने में मेरे साथी थे श्री चाँदमल जी। व्यवसाय तो उनका पीतल के बर्तन बनाने का था और दिन भर के शारीरिक काम के पश्चात् थक जाना स्वाभाविक ही था, किन्तु सस्कृत के प्रति निष्ठा तथा देववाणी को सीखने की उनकी लगन काम आई और वे भी मेरे सहाध्यायी बन गये। हमदोनों रात्रि को आर्यसमाज गुलाब सागर मे आकर पं० सातवलेकर प्रणीत पाठमालाओ के आधार पर अपना सस्कृत अभ्यास जारी रखते। कुछ दिनों तक तो यह क्रम चलता रहा किन्तु बाद मे चांदमल जी को अपनी व्यवसाय जन्य कठिनाइयों के कारण इस कार्यक्रम से पृथक होना पड़ा। मैंने अपना अध्ययन जारी रखा।

जोधपुर मे श्री जानकी वल्लभ जी माथुर गीता प्रचार मण्डल नामक एक धार्मिक और सास्कृतिक सस्था का सचालन करते थे। यद्यपि आयु मे वे हम से बहुत बड़े थे, किन्तु समानशील और व्यसन होने से उनका मेरे प्रति सौहार्द भाव था। उन्होने सस्कृत शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए स्वाध्याय मजुल पारडी द्वारा सचालित सस्कृत परीक्षाओ का केन्द्र गीता प्रचार मण्डल के अन्तर्गत चलाया। मैंने स्वाध्याय मण्डल की सभी परीक्षाए एक के बाद एक प्रथम श्रेणी में उत्तीण की। इससे एक लाभ तो यह हुआ कि सस्कृत पाठमाला के १८ भागो को विधिपूर्वक पढ़ने और आत्मसात करने का अवसर मुझे मिल गया। इस परीक्षाक्रम की अन्तिम परीक्षा संस्कृत विशारद थी जिसे मैंने उत्तीर्ण किया। स्वाध्याय मण्डल गीता तथा उपनिषदो का अध्ययन तो मैंने किया ही था, इसलिए स्वाध्याय मण्डल का उपनिषदलंकार परीक्षा भी मैंने उत्तीर्ण की। सरदारपुरा में हमारे पड़ोसी स्व० हरिसिंह जी माथुर की पुत्री शान्ति माथुर ने भी मेरे साथ सस्कृत परीक्षाए दी थी। उनको सगीत एव गायन में नैपुण्य प्राप्त था। कालान्तर मे उनके कुछ गीत चित्रपट के माध्यम से भी आये।

मेरा शास्त्राध्ययन

जैसा कि मैं लिख चुका हू किसी भी शास्त्र या शास्त्रीय विद्या को विधिवत् गुरुमुख से पढने का सौभाग्य या अवसर मुझे प्राप्त नही हुआ। मेरा समस्त अध्ययन स्वकृत ही है। इसका तरीका भी मैंने ही अविष्कृत किया था। उदाहरणार्थ, मैंने महात्मा नारायण स्वामी लिखित आठ उपनिषदो की सुगम टीका तो उन्ही दिनो खरीद ली थी जब मैं कालेज मे प्रविष्ट हुआ था। इन्हें पढने मे और समझने में मुझे कोई कठिनाई नही हुई। अब जब आर्य समाज गुलाबसागर के पुस्तकालय का कार्य मेरे जिम्मे आया तो मैंने वहा उपलब्ध उपनिषदो की अन्य सभी टीकाए, जो भी मिली, पढ डाली। उदाहरणार्थ, स्वामी दर्शनानन्द, प० आर्यमुनि स्वामी ब्रह्ममुनि, प० राजाराम तथा अन्य आर्य विद्वानो द्वारा लिखित टीकाए। इसका प्रत्यक्ष लाभ तो यही हुआ कि उपनिषदो मे प्रतिपादित विषय को हृदयगम करने में मुझे सहायता ही मिली।

इसी प्रकार मैंने दर्शन (मीमांसा को छोड़ कर) मनुस्मृति, गीता आदि दयानन्द भाष्य ग्रन्थों का अभ्यास भी कर लिया, बिना इस बात की चिन्ता किए कि इन शास्त्रों के कौन-कौन से अश टीका और भाष्य आदि पढ़ने पर भी स्पष्ट नही हो सके हैं। इस प्रसग में इतना कह देना और आवश्यक है गीता, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों को समझना तो कठिन था ही नहीं, न्याय और वैशेषिक के कुछ अश निश्चय ही दुर्बोध थे और वे तथैव रह भी गये। वेदो के विभिन्न अंशों के स्वामी वेदानन्द जी द्वारा लिखे गये व्याख्या ग्रन्थो और उसी कोटी के अन्य ग्रन्थों के स्वाध्याय ने वेदाध्ययन के प्रवेश द्वार को खोल दिया।

(क्रमश:)

आर्य सन्देश का पं० लेखराम बलिदान अंक और विद्वानों की सेवा में मेरा नम्र निवेदन

—प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु

'आर्य सन्देश' का आकर्षक प० लेखराम बलिदान विशेषांक देख कर मुझे अपार प्रसन्नता प्राप्त हुई। वर्षों के पश्चात् किसी पत्रिका के मुख पृष्ठ पर प्राणवीर प० लेखराम का सुन्दर चित्र देख कर मैं तृप्त हो गया। इस प्रयास पर मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को बधाई भेंट करता हूं। जिन माननीय लेखको ने वीरवर प० लेखराम पर लेख लिखे, वे भी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। पहले ऐसे-ऐसे अंक निकलते थे तो आर्य कवि हमारे महापुरुषों पर नित्य नई कवितायें रचा करते थे। कई वर्ष तक मेरा यह नियम रहा कि मैं प्रत्येक ऐसे पर्व पर नये-नये गीत व कवितायें लिखा करता था। अब समाजो के कर्णधारों की प्रवृत्ति बदल गई है, सम्पादक भी वैसे सजग व उत्साही नहीं रहे। लेखक, कवि व पाठक भी हिम्मत हार बैठे हैं इसी का प्रमाण इस अंक मे मिल गया कि इस अंक में श्री धर्मपाल जी आर्य नरवाना की एकमेव कविता प० लेखराम जी पर छपी है परन्तु श्री धर्मपाल जी ने भयानक रोग से ग्रस्त होते हुए भी कविता रच कर बड़ा उत्तम कर्म किया है। आर्य सन्देश के सम्पादक व देहली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रयास प्रशंसा योग्य है।

अब विद्वानो की सेवा मे कुछ नम्र निवेदन करता हूं। आशा है लेखक व पाठक सभी मेरी विनती पर ध्यान देंगे। इन लेखो मे अनजाने से व कुछ लेखको के स्मृति दोष के कारण भ्रामक सामग्री छप गई है।

(१) प० लेखराम जी का कुल 'महता' नही था। यह भ्रान्ति श्री महात्मा मुन्शीराम जी के उस लेख से फैली जो आपने धर्मवीर प० लेखराम जी के बलिदान पर लिखा था। इसका एक उज्जवल पक्ष तो यह है कि प० लेखराम जी के घनिष्ठ साथी महात्मा मुन्शीराम जी को भी अपने परम प्यारे मित्र लेखराम की जन्म की जाति-पाति का अता पता न था। कैसा क्रान्तिकारी और सच्चा व पक्का ऋषि भक्त था प० लेखराम। मेरे कथन का आधार क्या है कि प० जी महता नही थे? पूज्य प० लेखराम जी के सगे चाचा पं० गण्डाराम जी ने पण्डित जी के जीवन चरित्र मे इसका प्रतिवाद किया है। वे सारस्वत ब्राह्मण कुल मे जन्मे थे। मैंने प० लेखराम जी के जीवन चरित्र मे इस पर प्रकाश डाला है।

(२) श्री प० लेखराम जी पुत्र को रुग्न छोड कर यात्रा पर नही गये थे। पुत्र उनकी उपस्थिति मे ही चल बसा था। हां! पुत्र के निधन से पूर्व श्रीमती जी को भी एक कार्यक्रम मे ले गये थे और इकलौते बेटे की मृत्यु के झट बाद फिर प्रचार के लिए निकल गये। भाई के निधन पर भी घर न जा सके। दीनानगर आदि स्थानो पर धर्म रक्षा, जाति रक्षा के लिए चले गये।

(३) प० लेखराम जी को श्री कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तको से ऋषि के बारे मे जानकारी मिली। यह अतथ्य है। कन्हैयालाल जी की पुस्तके मेरे पास हैं। जो नहीं हैं, वे भी बहुत सी मैंने देखी हैं। उनकी पुस्तको मे तो ऋषि की चर्चा नही। उनके पत्र "नीति प्रकाश" मे ऋषि की चर्चा खूब होती थी। इसी से पण्डित जी को ऋषि का पता चला था। इसी मे छपी ऋषि सम्बन्धी सामग्री बाद में पृथक पुस्तिका के रूप मे छपी। बहुत प्रचारित हुई। इसी ऐतिहासिक पुस्तिका को मैंने अनुदित व सम्पादित करके फिर प्रसारित किया।

(४) यह कन्हैयालाल अलखधारी लुधियाना के थे। मूलतः उत्तर प्रदेश के थे। आगरा आदि कई नगरों मे रहे। यह देहादून वाले मुहम्मद उमर नही थे जिन्हे ऋषि ने अलखधारी नाम देकर शुद्ध किया। वह अलखधारी प० लेखराम के मित्र थे। लुधियाना वाले अलखधारी के कभी ला० लाजपतराय व प० लेखराम तथा प० गुरुदत्त चेले रहे।

(५) प० लेखराम जी की सब पुस्तके कुलियाते आर्य मुसाफिर मे ही नही हैं। इसका विवेचन मैं यहां नही करता। मेरे ग्रन्थ मे इस पर विस्तार से चर्चा है। मेरे पास प० लेखराम जी के और भी कई लेख हैं जिन्हें कभी अनुदित करके छपवाऊंगा।

(६) कुलियाते आर्य मुसाफिर का जो हिन्दी अनुवाद पंजाब सभा ने छापा उसमे पूरी कुलियात नहीं है। हरियाणा साहित्य संस्थान ने कभी भी पं० लेखराम की कुलियात का हिन्दी अनुवाद नहीं छापा। पंजाब सभा से कुछ प्रतियाँ लेकर उसकी जिल्द बदल कर अपना पता देकर बेची।

(७) प० लेखराम जी ने अरबी में कुछ भी नही लिखा। हां! वे इस भाषा के भी मर्मज्ञ विद्वान थे।

(८) श्री पंडित जी उर्दू, फारसी व हिन्दी के कवि भी थे, यह किसी ने भी चर्चा नहीं की। पहले आर्य समाज के वार्षिकोत्सवो के विज्ञापन पर यह पद्य छपा करता था :—

> नगाड़ा धर्म का बजता है, आये जिसका जी चाहे।
> सदाकत वेद अकदस, आजमाए जिसका जी चाहे॥

यह पद्य पण्डित जी की कविता का अंश है।

(९) प० लेखराम जी के पेशावर आर्य समाज के पुस्तकालय की भी किसी ने चर्चा की है। पण्डित जी के निजी पुस्तकालय की चर्चा किसी ने नहीं की। इसमें अंग्रेजी की भी बहुमूल्य पुस्तकें थीं। पण्डित जी अंग्रेजी नहीं जानते थे। यह तथ्य मैं चाचा गण्डाराम जी के आधार पर दे रहा हूं। प० लेखराम जी के सभी पुराने शिष्यो ने इसकी पुष्टि की है। मैंने उनके चेले श्री महता जैमिनी भूमण्डल प्रचारक के मुख से भी ऐसा ही सुना था। यह थी उनकी लगन व धर्मानुराग।

पं० लेखराम के परिवार के बारे में

(१०) मधुर लोक मे मेरा एक लेख आ रहा है। मुस्तफाबाद हरियाणा मे पण्डितजी की एक बहिन रहती थी। प० शान्ति प्रकाश जी व प० ओमप्रकाशजी वर्मा ने उनके दर्शन किए थे। वह अब नही हैं। मैं उनके परिवार की खोज करता रहा। पण्डित जी की वह सगी बहिन तो नही हो सकती, यह विचार करने से अब पता चला। वह चचेरी बहिन होगी। उसकी दो पुत्रियो का पता चला। एक अभी जीवित है। मैं उनके घर भी हो आया हूं। पं० लेखराम जी की भांजी तब घर पर न थी। देहरादून गई थीं। अब मैं फिर उनके दर्शनार्थ जाऊंगा। उन्होंने अपनी माता जी से अपने महान मामा प० लेखराम जी के बारे मे क्या सुन रखा है, यह पाठकों को भेंट करूंगा। पण्डित जी की भांजी की पुत्र-वधु की मातृ-भाषा फारसी है। वह मेरे मुख से पण्डित लेखराम जी की वह प्रसिद्ध व ओजस्वी फारसी कविता सुन कर भड़क उठी।

वह कविता जो मैं प्रायः अपने व्याख्यानो में सुनाया करता हू।

दो तीन मास के अंदर मधुर प्रकाशन में श्री पण्डित लेखरामजी पर मेरी एक नई पुस्तक छप रही है। इसमें मैं पर्याप्त नई व प्रामाणिक सामग्री दे रहा हूं। यह तो आर्य जनता पर निर्भर करता है कि वह अपने इस महान् ज्ञानी बलिदानी वीर नेता, जाति रक्षक, अद्भुत गवेषक के बारे मे ओजपूर्ण व वीर रस से ओत-प्रोत पुस्तक मे कितनी रूचि लेती है। वेद सदन अबोहर (पंजाब)

उपयोगी घरेलू नुस्खे

—श्री नेतराम शर्मा

नेत्रों की ज्योति बढ़ाने के लिए—

—आंखों में सूजन हो तो गेरू घिस कर लेप कीजिए।

—सूत्रनेति, जल नेति करने से भी चश्मा उतर जाते हैं।

आंखो को धूल, और धूंए से बचा कर रखने से आंखे खराब नहीं होती।

—बुखार—तुलसी के हरे पत्ते १० ग्राम, काली मिर्च १ ग्राम बारीक पीस कर काली मिर्च के बराबर गोली बना सुखा लें, दो गोली सुबह, दो दोपहर और दो शाम को गर्म पानी से खिलावे हर किस्म का बुखार दूर।

स्वप्नदोष तथा रुकावट—तुलसी के बीज ४ ग्राम दिन में एक बार ताजा पानी के साथ १५ दिन खायें, वीर्य जल्दी निकल जाने को रोकने का अचूक नुस्खा।

स्वामी दयानन्द व राजस्थान विषयक तथ्यों के अन्वेषक
श्री भैरव सिंह वर्मा

—प्राध्यापक कुशलदेव

सार्वदेशिक साप्ताहिक (१७ फरवरी १९९१) में प्रकाशित डा० भवानी लाल भारतीय लिखित 'एक अनोखा व्यक्तित्व श्री भैरवसिंह आर्य', नामक लेख से श्री आर्य जी के निधन का समाचार प्राप्त हुआ, श्री भैरव सिंह आर्य जोधपुर नगर आर्य समाज के भूतपूर्व मन्त्री, महर्षि के अनन्य भक्त, शास्त्रीय और व्यावहारिक स्तर पर कट्टर आर्य सिद्धांती, सयमी और सरल जिन्दगी व्यतीत करने वाले, आर्य समाज के सिद्धांत और इतिहास से सम्बद्ध बहुमूल्य दुर्लभ ग्रन्थों व चित्रो के संग्राहक थे। विशेष रूप से उन्होने राजस्थान और जोधपुर से सबन्धित स्वामी दयानन्द विषयक पुरावृत्तो का सग्रह किया था, आर्य समाज के इतिहास का शौक तो उन्हे इतना अधिक था कि वह व्यसन की कोटि तक पहुंच गया था, इस संदर्भ में वे विद्याविलासी थे, विशेष आश्चर्य यह है कि उन्होने इन सभी बहुमुखी कार्यों को जोधपुर नरेश और राजस्थान सरकार की प्रशासकीय सेवा में रहते हुए सम्पन्न किया था। श्री आर्य जी ८७ वर्ष के थे।

किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उद्घाटित करने मे स्वय उसके द्वारा लिखे गए बिना कटे-छटे यथावत् पत्र बहुत सहायक होते हैं, इसी प्रकार का आर्य जी का एक पत्र मैं अपने सग्रह से पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहा हू —

अत्यावश्यक ओ३म् जोधपुर

दि० X-७-८४

श्रीमान् प्रो० कुशलदेव शकरदेव जी वडवलकर

सादर नमस्ते !

प० गोपाल हरि देशमुख लोकहितवादी कृत 'प० स्वामी दयानन्द सरस्वती' के भावानुवाद और पांडित्यपूर्ण टिप्पणियो सहित वेदवाणी में लेख पढ़ कर उसे तथा अलग छपी पुस्तक को खरीदना पड़ा, लोकहितवादी के लेख का उत्तर लिखने पर धन्यवाद, अभी मेरा परिचय इतना ही है कि वेदवाणी मार्च १९८२ के पृष्ठ १०७ पर, टिप्पणी संख्या ६ की, संख्या ९ पर भैरवसिंह वर्मा आर्य नाम से जो उद्धरण छपा है वह मैं ही हूं।

मैं महर्षि दयानन्द का राजस्थान विशेषतः जोधपुर पर शोध कार्य कर रहा हू, राजस्थान ऋषि सम्बन्धी ऐतिहासिक सामग्री-असली फोटुओ विवरणो, हस्तलिखित पत्रों का मैंने सग्रह किया है, जो अन्य के पास नहीं हैं।

मैं आप से पत्र व्यवहार करना चाहता था कुछ देरी हो गई आपका पूरा पता ज्ञात न होने से पहला भेजा गया पत्र लौट आया, अब पत्र मिलने पर अपना पूरा पता अवश्य लिखने की कृपा करें। ताकि पत्र व्यवहार कर सकू, उत्तर प्राप्त होने पर अन्य बाते सूचित की जावेंगी।

आशा है आप उत्तर शीघ्र दे कृतार्थ करेंगे, मैं आपके उत्तर के लिए बड़ा उत्सुक हू, विश्वास है आप मुझ ८२ वर्षीय वृद्ध को निराश न करेंगे।

उत्तर की प्रतीक्षा मे— भवदीय (ह०) भैरवसिंह

पता—भैरवसिंह वर्मा आर्य

जीवनदास का कुआ, नागोरी द्वार जोधपुर-६ (राजस्थान)

श्रद्धेय भैरवसिंह जी आर्य 'महर्षि दयानन्द और राजस्थान' पर शोध कार्य में तन्मय थे, तो मैं 'महर्षि दयानन्द और महाराष्ट्र' पर लगभग एक दशक से शोध कार्य मे लगा हुआ हूं, समान स्वभाव वाले मित्र तुल्य आर्य जी के निधन का सवाद पढ़ते ही एक आघात सा लगा और कुछ समय के लिए मैं एक सन्नाटे मे खो सा गया, व्यक्तिगत तौर पर और महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उनके दुःखद निधन पर हार्दिक श्रद्धांजलि, परमपिता परमात्मा से यह प्रार्थना है कि उनके सुपुत्र श्री नरेन्द्रसिंह भैरवसिंह आर्य को वह धैर्य और और बल प्रदान करे, जिससे कि वे अपने पिता जी के अवशिष्ट सपनो को साकार करते हुए उनकी आदर्श आर्य परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रख सकें।

अन्त में मैं आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठ अनुसन्धित्सु डा० भवानीलाल जी भारतीय के निवेदन को दोहराते हुए आत्मीय बधु श्री नरेन्द्रसिंह जी से यह अनुरोध भी करना चाहूंगा कि वे अपने यशस्वी पिता द्वारा एकत्रित 'स्वामी दयानन्द और राजस्थान' विषयक शोध सामग्री का यथोचित सदुपयोग करने के लिए आर्य समाज के शोध विद्वानों तथा सस्थाओं को समुपलब्ध करवाने की कृपा करे।

—हिन्दी विभाग, सुभाष महाविद्यालय, नेताजी नगर, नांदेड-४३१६०१

X हस्तलिखित पत्र में पंच से छिद्र किये जाने के कारण मूल दिनांक नष्ट हो गया है। मास और वर्ष यथावत हैं।

आर्य युवा विकास परिषद्

आर्य युवाओ के सर्वांगीण विकास तथा आर्य समाज की रक्षा जाति धर्म देश की सेवा के साथ युवाओ मे महर्षि दयानन्द सरस्वती मिशन की तरफ आकर्षित करने हेतु गत दिनों दिनांक २०-०७-९० को प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी शकर मुनि जी गुरुकुल देवरिया वालो की अध्यक्षता में एक 'आर्य युवा विकास परिषद्' नामक युवा सगठन की स्थापना आर्यसमाज के मूर्धन्य श्री ओमप्रकाश आर्य वेलिंग्टन डा० ओम प्रकाश पालीवाल सोनीपत एव स्वतन्त्रता सेनानी सह लाहौर आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक प० हरिश्चन्द्र जी जैसे आर्य विद्वानो के सरक्षण मे आर्य समाज राजनगर पालम कालोनी मे की गयी जिसमे निम्नांकित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

१. डा० जसवीर आर्य—अध्यक्ष, २ सर्वश्री कृष्णमाधव प्रसाद आर्य—महासचिव ३. श्री विजयेन्द्र आर्य (वकील)—कोषाध्यक्ष ४ श्री अजीत सिंह—पुस्तकालयाध्यक्ष।

अन्त मे स्वामी शकर मुनि ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे आर्य युवाओ से देश की एकता व अखण्डता का आह्वान किया और आशा प्रकट करते हुए कहा कि परिषद् युवाओ मे नैतिक एव चारित्रिक विकास करेगी।

—राजेन्द्र आर्य प्रचार सचिव

आर्य समाज प्रताप नगर, दिल्ली

आर्य समाज मन्दिर मे दिनाक १८.३.९१ से २४.३.९१ तक आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष मे "चतुर्वेद शतक महायज्ञ" श्री प्रेम चन्द जी श्रीधर के ब्रह्मत्व मे बड़ी धूमधाम से मनाया गया और महायज्ञ की पूर्णाहुति दिनाक २४.३.९१ रविवार प्रातः ९.१० बजे सम्पन्न हुई, जिसमें बड़ी सख्या मे बहने व भाई सम्मिलित हुये।

इस शुभ अवसर पर डा० धर्मपाल जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार के बड़े प्रभावशाली भाषण हुये जिसकी सबने प्रशंसा की।

इसके अतिरिक्त डा० विजय कुमारजी मलहोत्रा ससद सदस्य ने भी आर्य समाज स्थापना दिवस तथा राम नवमी के उपलक्ष में अपने विचार रखे—सबने बड़े ध्यान पूर्वक सुना।

श्री लाजपतराय जी सरक्षक तथा श्री अमीर चन्द जी सम्मरवाल प्रधान आर्य समाज प्रताप नगर ने इस महायज्ञ की सफलता के लिए सबका धन्यवाद किया।

आर्य स्त्री समाज प्रताप नगर की प्रधाना तथा मन्त्राणी आदि तथा आर्य विद्या मन्दिर की अध्यापिकाओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया और लगर का प्रबन्ध सुचारू रूप से किया। मैं अपनी तरफ से तथा आर्य समाज की ओर से इस सफलता के लिए ऊपर लिखित सब का धन्यवाद करता हूं।

रामलाल खुराना, मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र

विशेषांक संग्रहणीय रहा

आर्य सन्देश का आर्य समाज स्थापना दिवस तथा पण्डित लेखराम विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद तथा प्रेरणादायक थे। आर्य समाज तथा पण्डित लेखराम जी के विषय में ढेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। अतः पत्रिका का यह अंक सभी दृष्टियों से उत्तम तथा संग्रहणीय रहा है। इस पत्र के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य, गोहाना (रोहतक)

आदरणीय डा० धर्मपाल जी,

सादर नमस्ते। आर्य सन्देश का विशेषांक "धर्मवीर प० लेखराम स्मृति अंक' एवं "आर्य समाज स्थापना दिवस" (संयुक्तांक) प्राप्त हुआ। आभारी हूं।

३६ वर्ष की अल्पायु में लेखराम ने ३३ ग्रन्थ लिख डाले, यह उनकी ज्ञान पिपासा तथा स्वाध्याय शील होने का प्रमाण है। हमारे बन्धु बहुत कम स्वाध्याय कर पाते हैं, भला बिना पढ़े चिन्तन कैसे होगा? इस ओर हमें ध्यान देना है ताकि अज्ञानता दूर की जा सके।

—वीर मान 'वीर'

श्रद्धेय सम्पादक जी, सप्रेम नमस्ते।

वयं जयेम त्वया युजा (ऋक्)। आर्य समाज स्थापना दिवस एवं धर्मवीर पंडित लेखराम संयुक्तांक यथासमय पाकर हर्ष हुआ। श्री त्रिलोक चन्द्र विशारद ने बहुत ही उत्तम ढंग से प० लेखराम जी का सम्पूर्ण जीवन-वृत्त संक्षेप में लिखकर गागर में सागर भर दिया है। श्री विशारद ने गत वर्ष के प्रकाशित विशेषांक (गुरुदत्त अंक) में अपने प्रकाशित लेख की पम्परा को आगे बढ़ाकर अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। श्री प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु व डा० महेश विद्यालंकार की लेखनी प्रेरणादायक चली है।

श्री कपिलदेव द्विवेदी व श्री विद्यानन्द सरस्वती के हैदराबाद सत्याग्रह के संस्मरणों ने स्थान-२ पर नेत्रों को सजल कर दिया। श्री यशपाल आर्य बन्धु, श्री मनोज कुमार शास्त्री व डा० धमपाल जी सहित सभी लेखकों व रचनाकारों के प्रयास स्तुत्य हैं। श्री क्षितीश जी वेदालंकार का लेख तो प्रत्येक विशेषांकों में एक ज्ञानवृद्ध मनीषी साहित्यकार व पत्रकार का वर्तमान पीढ़ी के आर्यों के लिए आशीर्वाद का प्रतीक बनकर अपनी छटा बिखेरता रहता है। हम उनके शतायु जीवन की कामना करते हैं। लगातार विशेषांकों की श्रेष्ठ परम्परा के प्रति उत्साहित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों व मुख-पत्र के समस्त कर्मचारियों के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित हैं।

'नये वर्ष की कठिन परीक्षा, हम सब मिलकर पास करेंगे।
नये क्षितीज पर हंसते गाते, बांहों में सूरज भर लेंगे॥"

—रामाज्ञा 'आर्यपुत्र' बौद्धिकाध्यक्ष आर्यवीर दल पूर्वी (उ. प्र.)

आदरणीय प्रधान जी, सादर सप्रेम नमस्ते।

आपका कृपा पत्र तथा विशेषांक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पूर्व विशेषांकों की भांति ही यह विशेषांक भी बड़ा सुन्दर आकर्षक और महत्त्वपूर्ण बना है। आर्यसमाज और प० लेखराम जी दोनों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सामग्री हमें इसमें उपलब्ध होती है। ऐसे सुन्दर विशेषांक के लिए हमारी शतशः बधाई स्वीकार करें।

—यशपाल आर्यबन्धु आर्य निवास, चन्द्रनगर मुरादाबाद-३२

माननीय महोदय,

आर्य समाज स्थापना एवं प० लेखराम विषयक आर्य सन्देश संयुक्तांक की प्रति भी प्राप्त हो गई है। इस विशेषांक में मेरी कविता को स्थान देकर आपने जो मेरा सम्मान बढ़ाया है उसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

'आर्य सन्देश" का यह विशेषांक हर पहलू से उत्तम है और ज्ञान वर्धक एवं लाभप्रद है। इसके लिए आप एवं सम्पादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

—धर्मपाल आर्य, नरवाना (हरियाणा)

परम श्रद्धेय डा० साहब, सादर सप्रेम नमस्ते।

आशा है आप भगवत कृपा से स्वस्थ व सानन्द होंगे। साथ ही सभी गुरुजन विद्वजन एवं भगवत प्रेमी सभा के सभी भक्त महानुभावों को हमारा यथोचित अभिवादन। आप द्वारा भेजा हुआ आर्यसन्देश वार्षिक शुल्क की रसीद, कृपापत्र और पृथक डाक से आर्य समाज स्थापना दिवस एवं प० लेखराम संयुक्तांक "विशेषांक" मिल गया है। मैं आपका सहयोग, स्नेह और प्यार पाकर आभारी हूं।

—बाबूराम सिंह "कवि" मारोली

आदरणीय डा० साहब, सादर नमस्ते।

सर्वत्र कुशल वितरतु देव। कल साय ५ ४० बजे दूरदर्शन से महर्षि दयानन्द बोधोत्सव और शिवरात्रि पर आप लोगों का कार्यक्रम बड़े ध्यान से देखा व सुना। अत्यन्त हर्ष हुआ। आप सभी बधाई के पात्र हैं और विशेषकर आपने जो श्रेष्ठ भूमिका का निर्वाह किया। पुनः विशेष बधाई।

—आचार्य दयानन्द–एम० ए० शास्त्री, साहित्य व्याकरणाचार्य
प्राध्यापक, दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय
हिसार–१२५००१ (हरियाणा)

प्रचार वाहन द्वारा वेद प्रचार

गत मास दिनांक २ मार्च १९९१ को आर्य समाज बुराड़ी में वेद प्रचार हुआ। ३ मार्च को दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल की ओर से आर्य समाज मोगल में बड़े सोत्साहपूर्ण वार्षिकोत्सव मनाया गया। यह कार्यक्रम स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसमें सर्वश्री डा० धर्मपाल प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० छविकृष्ण शास्त्री, प० सत्यदेव स्नातक (भजनोपदेशक) आदि महानुभावों ने भी उपस्थित आर्य बन्धुओं को सम्बोधित कर आर्य राष्ट्र निर्माण का आह्वान किया। इस अवसर पर श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने अपने प्रवचन में कन्या-नृत्य पर विरोध प्रकट किया।

दिनांक १२, १३, १४ मार्च को बुराड़ी में त्रिदिवसीय प्रचार कार्य सम्पन्न हुआ। जिसमें भजनोपदेशक प० चुन्नीलाल, प० चन्द्रपाल आर्य व प० सत्यदेव स्नातक का सराहनीय योगदान रहा।

२१ मार्च को आर्य समाज नजफगढ़ के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपूर्व शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रचार वाहन व वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द जी सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर दिनांक १७ मार्च रविवार को सभा प्रधान डा० धर्मपाल व डा० शिव कुमार शास्त्री मन्त्री केन्द्रीय सभा, दिल्ली एवं स्वामी स्वरूपानन्द जी ने सभी आर्य बन्धुओं को नव वर्ष की शुभकामनाएं व आर्य समाज स्थापना दिवस पर बधाई दी।

दिनांक १८ मार्च से २४ मार्च तक आर्य समाज मायापुरी में विशेष रामायण की कथा का आयोजन किया गया। महात्मा रामकिशोर वैद्य व प० सत्यदेव स्नातक तथा श्री जोती प्रसाद (भजन-मण्डली) का रोचक कार्यक्रम रहा। नगरवासियों ने इस अवसर पर धर्म लाभ उठाया।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती सम्मानित

श्री स्वामी धर्मानन्द जी जिलाधीश द्वारा श्रेष्ठ समाज सेवक के रूप में सम्मानित उड़ीसा एवं मध्यप्रदेश में शुद्धि आन्दोलन सूत्रधार आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा के प्रधान एवं गुरुकुल आमसेना से आर्य जगत परिचित है। समाज के साथ में प्रशासन भी उनकी सेवा एवं कार्य से प्रभावित है इसीलिये १७ मार्च को विकलांग दिवस के उपलक्ष्य में कालाहाण्डी के जिला कलेक्टर ने भवानी पटना में एक विशेष समारोह में जिले के सर्वश्रेष्ठ समाज सेवक के रूप में प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया है। यह गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं आर्य समाज के लिये गौरव का विषय है।

आर्य समाज सरस्वती विहार

वेद प्रचार मडल उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली के तत्वावधान में आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह आर्यसमाज सरस्वती विहार मे बडे समारोहपूर्वक मनाया गया। मार्ग को ओ३म् ध्वजो और तोरण द्वारो से सजाया गया था। मध्य मे निर्मित मच से उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के यशस्वी प्रधान डा० धर्मपाल जी ने वेद प्रचार मडल की एक वर्ष की गतिविधियो की भूरि भूरि प्रशसा की और आशा प्रकट की कि मडल भविष्य में और भी अधिक सक्रिय होगा और वेद का सन्देश घर-घर तक पहुचाने मे सफल होगा। श्री सत्यकाम जी विद्यालकार ने अपने भाषण मे वेद को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बताते हुए सभी सस्थाओं मे वेद के पठन-पाठन पर बल दिया। डा० रघुवीर जी वेदालकार ने अपने सक्षिप्त पर सारगर्भित भाषण मे मडल के कार्यों की सराहना करते हुए इसे और अधिक सक्रिय बनाने का आह्वान किया। दिल्ली विश्वविद्यालय के सस्कृत विभागाध्यक्ष डा० कृष्णलाल ने दिन प्रतिदिन हिन्दी और संस्कृत भाषाओ की अवमानना पर गहरा दु.ख व्यक्त किया और उपस्थित जन-समूह से अपने भवनो के नामपट्ट और विवाहादि के निमत्रण-पत्रो को हिन्दी और सस्कृत में लिखवाने और छपवाने की अपील की। श्री राजेन्द्र जी नटवर ने अपनी दर्द-भरी कविता द्वारा हिन्दी की दुर्दशा सुनाकर श्रोताओ को झकझोर दिया।

श्री मेहता जी ने नव सवत्सर के महत्व पर प्रकाश डाला और सभी से भारतीय सम्वत्सर को अपनाने की अपील की।

इसी अवसर पर हिन्दी साहित्य अकादमी दिल्ली की उपसचिव श्रीमती स्नेहलता जी ने आर्यसमाज सरस्वती विहार मे 'हिन्दी सेवा केन्द्र' का उद्घाटन करते हुए समाज के पिछड़े वर्गो मे शिक्षा का प्रसार करने पर बल दिया और प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति से कम से कम एक व्यक्ति को साक्षर बनाने का आग्रह किया। इस कार्य मे प्रशासन के पूर्ण सहयोग का आश्वासन देते हुए कई सौ हिन्दी पुस्तकें और पाच टकण मशीने देने की घोषणा की।

अन्त मे मडल के मन्त्री श्री हरिदत्त जी ने आभार प्रकट करते हुए सहयोग के लिए सभी आर्य समाजो और महानुभावो का धन्यवाद किया।

—हरिदत्त, मन्त्री

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 11-12-4-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३६

आर्य समाज बोट क्लब ने

आर्य समाज स्थापना दिवस एवं रामजन्मोत्सव मनाया

२० मार्च बुधवार मध्याह्न स्थान उद्योग भवन मैदान के साथ उपरोक्त उत्सव प्रभु की कृपा से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

सर्वप्रथम प० प्रकाश वीर "व्याकुल" जी द्वारा यज्ञ हुआ। जिसके यजमान हमारे पूर्व सदस्य, उद्योग मंत्रालय से फरवरी में सेवा निवृत्त श्री रघुनाथ सहाय जी तथा श्रीमती कान्ता सिक्का जी बंगपुरा वाले थे। तत्पश्चात पं० सत्यदेव (स्नातक) जी ने मधुर भजनो का रसास्वादन दिया। पं० प्रकाश वीर व्याकुल जी ने कविता के माध्यम से श्रोतागणों को चेताया कि हमें अपने इस अवसर को व्यर्थ नहीं गवाना है। निस्वार्थ सोचकर अपना मतदान वैदिक संस्कृति के रक्षकों को ही करना है।

भारत वर्ष के अद्वितीय, वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, विद्वान श्री यशपाल जी सुधांशु ने स्वमुखारबिन्द से आर्य समाज स्थापना, की आवश्यकता पर सूक्ष्म रूप मे प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज कोई नया मत सम्प्रदाय नही बनाया, अपितु १००० वर्ष से सुप्त आर्य जाति को जगाने हेतु इसके माध्यम से विशुद्ध सत्य सनातन वैदिक धर्म जो सृष्टि के आदि में ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त था। उसी का उपदेश करने हेतु आर्य समाज को स्थापित किया। श्री सुधांशु जी ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी के आदर्श जीवन पर बहुत अनूठे ढग से बताया कि आज अधिकतर मनुष्य अपने महापुरुषों में दोष लगाकर स्वय को भी उन दोषो से परिपूर्ण कर लेते हैं जबकि हमारे किसी भी महापुरुष मे कोई दोष नहीं था और न ही दोषी व्यक्ति महापुरुषों की शृंखला में आता है।

—बलेश कुमार

आवश्यकता

आर्य कन्या गुरुकुल महाविद्यालय नरेला (दिल्ली-४०) हेतु शास्त्री, आचार्य परीक्षोत्तीर्ण ट्रेंड-अट्रेंड अध्यापिकाओं की शीघ्र आवश्यकता है। आर्य पाठविधि से शिक्षित प्रार्थियों को वरीयता दी जाएगी। वेतन योग्यता-अनुसार। प्रार्थना-पत्र द्वारा अथवा स्वयम् सम्पर्क करें।

निवेदक

वैद्य कर्मवीर आर्य
महामन्त्री कन्या गुरुकुल
महाविद्यालय नरेला (दिल्ली-४०)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २५ | रविवार, २८ अप्रैल, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

महान शिक्षा-शास्त्री महात्मा हंसराजजी के प्रति प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर की भावभीनी श्रद्धांजलि

महान् शिक्षा शास्त्री महात्मा हंसराज जी का जन्म दिवस तालकटोरा स्टेडियम में दि० २१ अप्रैल को सोल्लासपूर्वक मनाया गया। इसके मुख्य अतिथि प्रधानमंत्री श्री चन्द्रशेखर जी थे। समारोह का आयोजन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने किया।

इस अवसर पर प्रधानमन्त्री ने अपने ओजस्वी वाणी से स्टेडियम में बैठे सभी गणमान्य विद्वानों सहित हजारों विद्यार्थियो को सम्बोधित करते हुए कहा—स्वामी दयानन्द ने स्वतन्त्रता से पूर्व ही स्वराज्य का मंत्र फूका था। अपनी बाल्यावस्था की स्मृति को उजागर करते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा कि उन दिनों हर विद्या मंदिर, सामाजिक, राष्ट्रीय चेतना का केन्द्र हुआ करता था। आज डी० ए० वी० पर हमें गर्व है। उन्होने बताया मैं भी बचपन मे शिक्षा पाने के लिए डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल मऊ में जाया करता था। अतः मेरी प्रारम्भिक शिक्षा डी० ए० वी० संस्था में ही हुई। आगे उन्होंने बताया कि स्वामी दयानन्द और महात्मा हंसराज का आन्दोलन महज धार्मिक सुधारवादी आन्दोलन ही नहीं था अपितु राष्ट्रीय चेतना जागृत करने की पुरजोर कोशिश थी। यही वजह थी कि समाज ने लाला लाजपतराय सरीखे सेनानी देश को दिए। इससे पूर्व श्री चन्द्रशेखर ने डी० ए० वी० संस्थाओ एवं अन्य शिक्षण संस्थाओ से जुड़े विशिष्ट विद्वानो को स्मृति चिन्ह एवं शाल द्वारा सम्मानित किया।

अपने अभिभाषण के अन्त मे उन्होने यह इच्छा प्रकट की कि महात्मा हंसराज जी को हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि हम उनके द्वारा स्थापित डी० ए० वी० संस्था को सुचारू रूप से निर्धन एवं असहायों के लिए साक्षरता का विकास करने मे आगे रखे। हर वर्ग को उचित शिक्षा मिल सके। आधुनिकता से दूर अपनी प्राचीन सभ्यता से जुड़ी शिक्षा ही दी जा सके।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियों में श्री रामचन्द्र विकल सांसद, श्री के० साहनी एवं श्री इन्द्र कुमार गुजराल तथा प्रो० वेदव्यास जी, श्री क्षितीश वेदालंकार, प्रो० वाचस्पति उपाध्याय श्री रामनाथ सहगल आदि उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने की।

समारोह की समाप्ति से पूर्व डी० ए० वी० पब्लिक स्कूल फरीदाबाद के बच्चो द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जो समारोह का मुख्य आकर्षण था। बच्चो ने महात्मा हंसराज की बाल्यावस्था में आये संकटों का सजीव चित्रण किया तथा मंचन कला मे पारंगत विद्यार्थियो ने नृत्य एवं अन्य झाकियां भी प्रस्तुत की।

पंजाब, काश्मीर और असम में चुनाव के परिणाम घातक होंगे

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

१—भारत के अन्य स्थानो के साथ-साथ पंजाब, काश्मीर तथा असम में भी सरकार द्वारा चुनाव कराने के निर्णय की आर्य समाज द्वारा निन्दा।

२—निर्वाचन आयोग के अध्यक्ष श्री टी० एन० शेषन को पत्र प्रेषित।

३—सरकार द्वारा पंजाब, काश्मीर तथा असम में चुनाव स्थगित न कराने की दशा में आर्य समाज नेताओ द्वारा आन्दोलन का निश्चय।

आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ने निर्वाचन आयोग के अध्यक्ष तथा भारत के राष्ट्रपति को पत्र लिखकर भारत सरकार के पंजाब, काश्मीर तथा असम मे भी चुनाव कराने के निर्णय की कड़ी आलोचना की है। सरकार का निर्णय है कि मई १९९१ में देश के अन्य भागो मे आयोजित चुनावों के साथ-साथ इन प्रान्तों मे भी चुनाव कराये जावें।

निर्वाचन आयोग द्वारा इन प्रान्तो में प्रस्तावित चुनावो को स्थगित न किए जाने की दशा में आर्य समाज ने अपने नेताओ को सरकार के इस निर्णय का प्रतिरोध करने के लिए आन्दोलन करने की अनुमति दे दी है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने इस आन्दोलन के लिए प्रथम सत्याग्रही के रूप में स्वेच्छा से अपने नाम का प्रस्ताव किया है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने अधीनस्थ सभी आर्य समाजों को इसी आशय का एक परिपत्र जारी किया है। यह परिपत्र उन सार्वजनिक नेताओ को भेजा गया है, जिनकी राय का देशवासी सम्मान करते है।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि "पंजाब, काश्मीर तथा असम के उपद्रव-ग्रस्त क्षेत्रों मे चुनाव कराने का सरकार ने जो निर्णय लिया है, वह बिना गहराई से सोच विचार के लिया गया है। प्रकारान्तर से यह उन देश-द्रोही शक्तियो के हाथो मे खेलना होगा, जिनका एकमात्र उद्देश्य भारत माता को छोटे-छोटे भागो में खण्डित करना है।"

श्री शेषन को लिखे गये पत्र मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अनुरोध किया है कि वे १८ अप्रैल १९९१ तक सभा को अपनी प्रतिक्रिया से अवगत करावें। यदि आयोग द्वारा इन तीनो अशांत घोषित प्रान्तो मे चुनाव स्थगित नही किए गए तो स्वामी आनन्दबोध सरस्वती सहित आर्य समाज के अन्य नेतागण अपना आन्दोलन शुरू कर देंगे। उनका नारा है, "देश को टुकड़े-टुकड़े होते देखने से मर जाना अच्छा है।" आर्य समाज को आशंका है कि काश्मीर की तरह पंजाब से भी सभी शान्तिप्रिय हिन्दुओं, सिक्खो आदि का पलायन शुरू हो जायेगा। निर्दोष लोगो की हत्या राजनैतिक उद्देश्यो के लिए उनका अपहरण, आये दिन की घटनाये हो जायेंगी, जैसा कि इस समय काश्मीर मे हो रहा है। यदि सरकार के निर्णय पर अमल करते हुए पंजाब, काश्मीर तथा असम मे चुनाव करा दिये गए तो "रोम जल रहा था और नीरो बंसी बजा रहा था" वाली कहावत चरितार्थ होगी।

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

सुनो सबकी

—भूदेव साहित्याचार्य—

शास्त्रार्थ महारथी पूज्य स्व० श्री बिहारी लाल जी शास्त्री, बरेली निवासी अपने व्याख्यानों में कभी-कभी एक घटना सुनाया करते थे। वे कहते थे—'एक बार एक आर्य समाज के उत्सव मे हम गये। एक शाम वहां एक परिवार में सभी उपदेशकों का भोजन था। भोजन किया। चलने लगे। धन्यवाद किया। स्वभाववश साथ ही परिवार की महिलाओ से उत्सव मे सम्मिलित होने और भजन-प्रवचन सुनने का निवेदन भी किया। इस हमारे निवेदन के प्रत्युत्तर में परिवार की एक लड़की बोली—पंडित जी, हम तो स्वयं पढ़े लिखे है। सब जानते है। देखिए, मैं एम० ए० हू। लड़की के यह शब्द हमे लगे। मैंने तुरन्त पासा पलटा और उसके माथे की ओर देख कर बोला—बेटी, जरा अपना हाथ तो दिखाना। कुछ इधर-उधर की बात करने के बाद, मैंने कहा—तेरे ऊपर तो बहुत बड़ी मुसीबत आनी वाली है। उसके घर वाले माता-पिता आदि भी वही थे। मेरी बात सुन कर हड़बड़ाये। लड़की को तो जैसे सांप ही सूंघ गया। अब वे सब अत्यन्त व्यग्र जिज्ञासा से बोले—पंडित जी क्या? मैंने कहा—इसके हाथ की रेखाये कहती हैं कि इस लड़की के पति बहुत भारी बीमार पड़ेंगे और फिर बचे या न बचे, यह कुछ नही कहा जा सकता। मेरी इस बात को सुनकर लड़की तो अत्यन्त बेचैन हो गई। उसकी मां ने कहा—महाराज बीमारी से बचने का उपाय क्या है? मैंने—कहा उपाय के करने से नही, इस लड़की के करने से ही होगा। वह तो जैसे तैयार ही बैठी थी, अत्यन्त भय, व्यग्रता और सब बलायें अपने सिर लेने जैसे भाव से बोली—पंडित जी आप बताइये तो! मैंने कहा—सात दिन तक यज्ञ होगा। उसमें सभी उपदेशक और पंडित शामिल होंगे। सब बढ़िया भोजन आदि करेंगे। दक्षिणा मे एक-एक कम्बल और सौ-सौ रुपये प्रत्येक पंडित और उपदेशक को देने होंगे और सामान की एक लम्बी लिस्ट लिखा दी—घी, सामग्री, समिधा आदि। उस समय हम वहां से चले आये। अभी आराम कर रहे थे। वही लड़की अपनी भाभी के साथ हमसे मिलने आयी और बोली—पंडित जी जैसा आपने बोला था हमने सब इन्तजाम कर लिया है। यज्ञ कब से करेंगे? उसे समय दे दिया। निर्धारित समय से यज्ञ हुआ। बड़ी धूम-धाम से। बड़ी सारी दक्षिणा राशि भी पंडितो को दी गई। आराम से जब इससे निपट कर बैठे, तो वही लड़की बोली—पंडित जी, अब तो सब ग्रह उतर गये न। मैने कहा—बेटी, तेरे ऊपर ग्रह थे भी कहां? इस पर बड़े आश्चर्य से उसने कहा—तो फिर यह हवन किस लिए हुआ? इसके उत्तर मे मैंने कहा—मैं तो यह देखना चाहता था, तू कैसी एम० ए० पास है! वह बोली—क्या मतलब? मैंने कहा—जब बेटी मैने तुम्हारे घर निवेदन किया था, तुम सबसे कि भजन-प्रवचनो मे चला करो, तब तुमने कहा था, कि मै तो एम० ए० पास हू। तुम्हारा भाव था कि सत्संग मे भजन-प्रवचनो का कोई लाभ नही है।

यह घटना जो उल्लेख की है। मेरे जैसे और भी अनेकों बन्धुओं ने सुनी होगी। महाराज भर्तृहरि को एक समस्या हर समय घेरे रहती थी। महाराज कहते थे—ज्ञान लव विदग्धजनो को मै कैसे अपनी बात समझाऊं। अज्ञानी लोग मेरी बात समझ लेते हैं। मुझे उन्हें अपनी बात समझाने मे दिक्कत नही होती। ज्ञानी जनों का तो कहना ही क्या? वे बहुत ही आसानी से समझ जाते हैं। किन्तु इन ज्ञानलवविदग्ध जनो को तो मुझे लगता है कि स्वयं ब्रह्मा जी भी प्रसन्न न कर सकें। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा—'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।' आर्य शब्द की प्रकृति है ज्ञान गमन और प्राप्ति। हेतुवाद के आचार्यों का कहना है—पढ़ना और पढाना तथा सुनाना यह कर्म जितने सरल सीधे और प्रतिवाद रहित हैं। सुनाना उतना ही कठिन-दुरुह और संशय भरा है। परन्तु यह कर्म मनुष्य को अत्यन्त मधुर फल देने वाला है। सुनाने की योग्यता का मूल आधार सुनना है। इसी तरह सुनने की योग्यता का मूल आधार पढ़ना और पढाना भी है।

पाठक, हम निवेदन करना चाहते हैं। हमारी योग्यता का परिचय इससे नही है कि हम सुन बहुत अच्छा लेते है। बल्कि इससे है कि हम पढने और पढ़ाने तथा सुनने मे कुशल हैं। भगवान राम के अनेको गुणो का वर्णन करते हुए महर्षि नारद कहते हैं कि हे महर्षि वाल्मीकि, राम बहुश्रुत हैं। अर्थात् राम सुनने में कुशल है। सुनना भी एक कला होती है। एक विवेकशील महाभाग कहते थे, कि यदि आप किसी महानतम शास्त्रार्थ पटु और वाग्मी का मुंह बन्द करना चाहते है, तो उससे कम बोलिये, उसकी बातो को ध्यान से सुनिये और उन्ही बातो मे से अपने मतलब के प्रश्न निकालिए और उससे पूछते रहिए। वह कुछ देर मे अपने आप चुप हो जायेगा।

थोड़ा इस लोकोक्ति पर ध्यान दीजिए—एक चुप सौ को हरावे। यहां चुप का अर्थ मौद्-बसन्त होना नहीं, बल्कि सावधानी पूर्वक सुन कर बडे धैर्य से कम से कम शब्दो में सटीक और समयानुकूल उत्तर देने वाला है। सुनने का सम्पूर्ण अर्थ है सुनना विचार करना और तुरन्त सत्यासत्य निर्णय करके अनुकूल का ग्रहण करना।

६५ वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बड़े हर्ष और उल्लास के साथ आर्य समाज पीपाड़ नगर का ६५वां वार्षिकोत्सव एवं राम जन्मोत्सव २०-३-९१ से २६-३-९१ को सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें अनेक आर्य समाजो सहित मगरा पूंजला जोधपुर के आर्य वीरों तथा पीपाड़ नगर के आर्य वीरो ने अनुशासनबद्ध ढंग से भाग लिया। पीपाड नगर के इतिहास में सबसे बड़ी शोभा यात्रा थी। जिसका संचालन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के व्यायाम शिक्षक मदनपाल जी राठी आर्य ने कुशलता पूर्वक किया। अन्तिम दिन २६-३-९१ को आधुनिक भीम सत्यवीर जी आर्य द्वारा सायं ५ बजे भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया गया। जनता ने समस्त कार्यक्रमों मे विशेष रुचि ली। जिसकी विशेष मांग पर श्री सत्यवीर जी आर्य द्वारा दिसम्बर मे आर्य वीर दल का शिविर भी तय कर दिया।

—चम्पालाल आर्य मन्त्री

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

पं० रामचन्द्र देहलवी

सम्पादकीय

किसी भी जाति और राष्ट्र के उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने पूर्वजो के श्रेष्ठ कर्मों का स्मरण करें तथा अपनी संस्कृति और धर्म के प्रशस्त प्रवाह को अक्षुण्ण बनाए रखे। पिछले दिनों महात्मा हंसराज दिवस समारोह मे हमारे प्रधानमंत्री ने कहा था कि किसी भी राष्ट्र को नई दिशा देने वाले राजा नही होते, बल्कि राजा वे होते हैं, जो साधु-सन्तो—महापुरुषो की परोपकार एव मानव कल्याण की भावना को अपने अन्दर समाहित कर लेते हैं। और यह कार्य ऋषियो का है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने और उनके अनुयायियों ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। ऐसे ही हमारे विद्वान प्रचारक थे प० रामचन्द्र देहलवी।

प० रामचन्द्र देहलवी का जन्म मध्य प्रदेश के नीमच शहर मे १८८१ ईस्वी की रामनवमी के दिन हुआ था। इसीलिए उनका नाम रामचन्द्र रखा गया। जीविका निर्वाह के लिए रामचन्द्र दिल्ली आए। यहा पर पहले नौकरी की और फिर अपने श्वसुर की दुकान पर कार्य करने लगे। रामचन्द्र देहलवी की पत्नी का निधन उस समय हो गया था जब वे केवल ३६ वर्ष के थे। यद्यपि अनेक प्रस्ताव पुनर्विवाह के आए परन्तु वैदिक धर्म का प्रभाव उन्हें अकेले ही जीवन यात्रा के पथ पर साहस पूर्वक चलने को प्रेरणा देता रहा।

उन दिनो चांदनी चौक के फव्वारे पर दो दिन मुसलमान और दो दिन ईसाई अपने अपने धर्म का प्रचार करते थे। पं० रामचन्द्र देहलवी ने हिन्दू धर्म के ऊपर किये गये इन कटाक्षो को सुना उसी दिन से उन्होने सोच लिया कि उन्हें भी वैदिक धर्म का इसी तरह प्रचार करना चाहिए। उन्होने भी उसी स्थान पर प्रचार पर प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। उनके व्याख्यानो मे इतनी भीड़ होती थी कि यातायात में बाधा पडने लगी और उनसे आग्रह किया गया कि वे अपने व्याख्यानो के लिए गांधी ग्राउण्ड को अपना लें। बस यहीं पर १९१० से १९२५ तक उनके व्याख्यानों का सिलसिला बिना व्यवधानो के चलता रहा। उन्होने विधिवत कुरान का अध्ययन किया और ईसाई धर्म शास्त्र का भी। वैदिक धर्म के उत्कर्ष प्रवक्ता तार्किक उच्चकोटि के शास्त्रार्थ महारथी प० रामचन्द्र देहलवी की ख्याति दिग्दिगन्त फैल गयी। हैदराबाद में उनके व्याख्यानो ने अभूतपूर्व जाग्रति फैलाई। और निजाम सरकार ने तो उन्हें अपने राज्य से निष्कासित कर दिया था। अत्यधिक वृद्ध होने पर भी उन्होंने धर्म प्रचार के कार्य से मोह नहीं मोड़ा। २ फरवरी १९६८ को दिल्ली मे उनका निधन हुआ। प० रामचन्द्र देहलवी ने अनेक ग्रन्थों की रचना की जो वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में अपनी विशिष्ट भूमिका को रेखांकित करते हैं।

— डॉ० धर्मपाल

वेद सन्देश

घर को स्वर्ग बनावें

यत्रा सुहार्दः सुकृतो मदन्ति, विहाय रोग तन्वः स्वायाः।
अश्लोणा अङ्गैरह्रुताः स्वर्गे, तत्र पश्येम पितरौ च पुत्रान्॥
अथर्व० ६-१२०-३॥

हिन्दी अर्थ—जहां शुद्ध हृदय वाले और पवित्रात्मा लोग अपने शरीर के रोगो को छोड़कर आनन्द से रहते हैं, ऐसे स्वर्गतुल्य घर मे हम स्वय अगो से अविकृत और अकुटिल रहते हुए अपने माता-पिता और पुत्रों को देखें।

—डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(१४ अप्रैल, ९१ के अंक से आगे)

प० गगाप्रसाद उपाध्याय के साहित्य के प्रति मेरा विशेष आकर्षण था। मैंने उनकी पुस्तक 'मैं और मेरा भगवान्' तो उस समय खरीदी थी, जब मैं नवीं कक्षा का विद्यार्थी ही था और दार्शनिक अध्ययन की पहली सीढी पर अपने कदम रख ही रहा था। जब आर्य समाज के पुस्तकालय में आस्तिकवाद और जीवात्मा मिले तो उन्हे पढने का अवसर तो मिला ही। कालन्तर मे प्रकाशित उनके अन्य ग्रन्थ भी बराबर पढ़ता रहा। शाकर भाष्यालोचन और Philosophy or Dayanand का तो प्रकाशन भी बहुत बाद मे हुआ। उनके द्वारा रचित शकर रामानुज दयानन्द तथा राममोहन राय केशवचन्द्र सेन दयानन्द ने मुझे महापुरुषों के तुलनात्मक अध्यापन के लिए प्रेरित किया। आगे चल कर मैंने तुलनात्मक अध्ययन विषयक जो ३-४ ग्रन्थ लिखे, उनके पीछे उपाध्याय जी के उपर्युक्त ग्रन्थों की ही प्रेरणा कार्य कर रह थी। प० धर्मदेव जी का तुलनात्मक लेखन भी मेरे लिए प्रेरणा स्रोत बना।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान में

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान भारत के प्राचीनतम आर्य सगठनो मे से एक है। इसकी स्थापना पजाब तथा उत्तर प्रदेश की प्रतिनिधि सभाओ के पश्चात् ही हुई थी। इस सभा की स्थापना मे सर्व श्री हरविलास शारदा, रामविलास शारदा आदि का योगदान प्रमुख था। १९४७ से पूर्व इस सगठन के अन्तर्गत मध्य भारत तथा मालवा प्रदेश की आर्य समाजे भी सम्मिलित थीं। अतः ग्वालियर, इन्दौर, रतलाम, मन्दसौर, गुना, आदि की प्रसिद्ध आर्य समाजे भी राजस्थान के सगठन से ही सम्बद्ध थी। वर्षों तक इस सभा का नेतृत्व देशभक्त कुवर चादकरण शारदा के हाथो मे रहा।

इस सभा के अधिवेशन मे मैं प्रथम बार १९५० मे आर्य समाज नगर, जोधपुर के प्रतिनिधि की हैसियत से सम्मिलित हुआ। उस समय मेरी आयु मात्र २२ वर्ष की थी। यह अधिवेशन अजमेर आनासागर तट पर स्थित ऋषि उद्यान के सरस्वती भवन सभागार मे हुआ सरस्वती भवन का निर्माण एक आर्य सन्यासी स्वामी केवलानन्द जी ने कराया था। इस वर्ष मे सभा के प्रधान चादकरण जी शारदा ही थे। इस प्रकार मुझे प्रथम बार प्रान्त की अनेक समाजों के प्रतिनिधियो से मिलने तथा परिचित होने का अवसर मिला। उस समय मध्यभारत की आर्य समाजें भी राजस्थान की सभा से ही सम्बद्ध थी। और इस सभा का नाम आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा था। मन्दसौर' रतलाम। गुना, ग्वालियर, इन्दौर आदि के प्रतिनिधि इस अधिवेशन मे आये थे। बाद मे जब राजनैतिक दृष्टि से मध्यभारत पृथक् हो गया तो वहा की समाजो ने अपनी सभा का पृथक् सगठन कर लिया। यद्यपि श्री चाद करण शारदा अनेक वर्षों से प्रधान के पद पर चले आ रहे थे किन्तु प्रचार के कार्य मे गत्यवरोध आ जाने के कारण प्रान्त की समाजों मे असन्तोष के स्वर उभर रहे थे। परिणामतः जब १९५१ मे अलवर मे सभा का अधिवेशन हुआ तो सभा के प्रधान पद पर कर्मवीर प० जियालाल जी को चुना गया। प० जियालाल जी का कार्यकाल भी दो वर्ष से अधिक नही रहा। प० रमेशचन्द्र शास्त्री उनके समय में सभा के मन्त्री रहे। १९५२ मे भारत मे प्रथम सार्वजनिक चुनाव हुए। आर्य समाज यद्यपि सामाजिक राजनीति से सदा तटस्थ ही रहा है, किन्तु श्री रमेशचन्द्र शास्त्री ने यदा कदा ऐसा सकेत दिया कि आर्य समाज को आने वाले निर्वाचनो मे अपनी भूमिका अदा करनी है। प० जियालाल ने १९५१ मे जयपुर के रामलीला मैदान मे प्रान्तीय आर्य सम्मेलन धूम-धाम से आयोजित किया। प० इन्द्र विद्या-वाचस्पति ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। जब सभापति के लिए प० इन्द्र के नाम का प्रस्ताव रखा गया तो जोधपुर के प्रतिनिधियो की ओर से मैंने उनके नाम का अनुमोदन करते हुए इन्द्र जी के हिन्दी पत्रकारिता मे योगदान की भी चर्चा की। प० इन्द्र जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे मेरे इस कथन का विशेष रूप से उल्लेख किया। प्रान्तीय आर्य सम्मेलन तथा सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्भवत. १९४९ में जयपुर मे हुआ। मैं भी उसमे सम्मिलित हुआ था। इस सम्मेलन के अवसर पर स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी के प्रथम और अन्तिम बार दर्शन हुए।—क्रमशः

वेद वास्तव में धर्म ग्रन्थ हैं

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,—
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

गत ४ मार्च के नवभारत टाइम्स मे "धर्मग्रन्थ हो जाने की सजा" शीर्षक से श्री सूर्यकान्त बाली का लेख प्रकाशित हुआ है। पूरे लेख को पढकर एक परिणाम तो स्पष्ट हो जाता है कि लेखक महोदय न तो धर्म को समझते हैं और न उन्हे वेदो के विषय मे ही कुछ ज्ञान है। इधर-उधर की सुनी-सुनायी बातो तथा अन्य धर्म और वेद विषयक भ्रान्त मान्यता पूर्ण लेखों के आधार पर उन्होने यह लेख लिखा है।

आप लिखते है कि "हमारे भोंदू व्यवस्थाकारो ने न्यायालयो मे गीता को बाइबिल या कुरान जैसा दर्जा देकर हिन्दुओ मे गीताकी कसम उठाने की परम्परा चला रक्खी है। पर क्या कोई भी हिन्दु गीता को बाइबिल या कुरान की तरह धर्मग्रन्थ मानता है ? हमे तो आज तक कोई ऐसा हिन्दु नही मिला।"

हमारा इस विषय में यह कहना है कि करोड़ों हिन्दू गीता को न केवल धर्मग्रन्थ अपितु धर्मशास्त्र मानते हैं, केवल कृष्ण के भक्त ही नही, गीता जिनकी कृति या उपदेश बतायी जाती है अपितु उन भगवान राम के भक्त भी—जो कृष्ण से युगो पहले हो चुके हैं और जिनका गीता से लेश भी सम्बन्ध नही है, गीता को धर्मग्रन्थ तथा धर्मशास्त्र मानते और नित्य नियम से इसी भावना से उसका प्रातःकाल पाठ भी करते हैं। यदि बाली जी को इसकी जानकारी नही तो यह उनकी अपनी जानकारी की कमी है। कुरान को तो सामान्यतया हिन्दु जानते ही है। किन्तु जिन हिन्दुओ ने अभी तक कभी भी बाइबिल का नाम नही सुना वह भी गीता को अपना धार्मिक ग्रन्थ मानते हैं।

इस लेख में उन्होने साहित्य शब्द का भी प्रयोग किया है। वह इसके लिये लिखते हैं "जैन और बौद्ध धर्मों में अनेक पुस्तके ऐसी हैं, जिन्हें हम धार्मिक ग्रन्थ कह सकते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे अब वेदो, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, गीता (जो महाभारत का ही एक हिस्सा है) पुराणो आदि को धार्मिक ग्रन्थ कह दिया जाता है। वे धार्मिक ग्रन्थ हैं या साहित्यिक रचनायें है, जो एक शैली मे जीवन का विवेचन करती हैं, जिन्हें आजकल भी कविता, नाटक, कहानी या उपन्यास जैसी विधाओ में नही रक्खा जा सकता या वे कुछ और ही हैं तय कर पाना कठिन हो गया है। पर इतना है कि बाइबिल, कुरान या गुरुग्रन्थ साहब जैसा धर्मग्रन्थ का पद नही दिया जा सकता।"

पहले तो बालीजी को यह समझ लेना चाहिये कि जो धर्मग्रन्थ नही है, वह साहित्यिक पुस्तक भी नहीं है। साहित्य शब्द का अर्थ है, जो हित सहित हो, हितसाधक हो तथा हित साधनार्थ जिसका प्रणयन किया गया हो। ऐसी किसी रचना जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा समग्र मानवता के हित साधन का कार्य न कर सके, साहित्य नही कही जानी चाहिये. चाहे वह गद्यात्मक, पद्यात्मक अथवा किसी विद्या विशेष मे लिखी गयी हो और जो मानव मन को भ्रान्ति मे डाले, कामुकतापूर्ण तथा अनैतिकता के मार्ग की ओर उन्मुख करे उसे साहित्य कहना नितान्त नासमझी है। जहा तक रामायण और महाभारत की बात है, उन्हे बाली जी और उन सरीखे लोग ही, जिनका तथ्यात्मक अध्ययन लेश भी नही अपितु जो उपन्यासो और कहानियो तक ही सीमित है तथा उन्ही की भाषा समझते है, अपनी दृष्टि के साहित्यिक ग्रन्थ समझते हैं तथा अन्य बहुत बड़ी सख्या मे न केवल भारतीय ही अपितु विदेशी भी ऐतिहासिक ग्रन्थ मानते है किन्तु वास्तविकता यह है कि ऐतिहासिक घटनाओ तथा परिस्थितो का विवेचन करते हुए वह धर्मग्रन्थ ही है। कारण यह है कि वह लिखे ही उपदेश की परम्परा मे गये है। हेमचन्द्र जैन कृत "अभिज्ञान चिन्तामणि मे कहा गया "उपदेश पारम्पर्य वर्तते इतिह इत्येव ऐतिह्यम्" उपदेश की परम्परा मे वर्णन किया गया है, ऐसा था, ऐसा ही था एतदर्थ इतिहास है किन्तु है उपदेश की ही परम्परा मे। उपदेश का अर्थ ही सन्मार्ग दर्शन है और सन्मार्ग (सत्य मार्ग-सत्य व्यवहार) ही धर्म है।

वास्तविकता यह है कि प्राचीन आर्यो ने कभी व्यक्तियो के जीवनो तथा व्यक्तिगत बातो को, उनकी पारिवारिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थितियो को लिखने की ओर ध्यान ही नही दिया। कारण यह है कि यह बात तो सदैव सबके अथवा समय-समय पर अनेक के साथ बीतती रहती है, इनकी चर्चा करने में समय और शक्ति की विनष्टि के अतिरिक्त कोई लाभ नही है। उन्होने तो केवल उन घटनाओ को और उन व्यक्तियो के जीवनो को ही लेखनी का विषय बनाया है, जो आने वाली सन्ततियो को शिक्षा दे सके, उनका मार्ग दर्शन कर सके अर्थात् युग-प्रवर्त्तक घटनाओं को ही महत्व प्रदान किया है। मानवों के मार्ग दर्शन करना उन्हे जीवनमें अच्छाई-बुराई को समझने का ज्ञान देना ही धर्म है और ज्ञान दान के लिये किये गये उपदेश की परम्परा मे लिखे गये होने से रामायण और महाभारत भी धर्म-ग्रन्थो की श्रेणी मे आते हैं। हम इनमे से किसी ग्रन्थ की बाईबिल और कुरान से तुलना करना नही चाहते किन्तु यह कहने मे हमे लेश भी सकोच नही है कि कुरान और बाइबिल मजहबी तथा साम्प्रदायिक तो है किन्तु धार्मिक लेश भी नही है। बाली जी भी धर्म को मजहब ही समझते हैं, जैसे अन्य सामान्य जन समझते हैं, मजहब शब्द का अर्थ मार्ग है, यह पथ शब्द का स्थान तो ले सकता है, जो पथ का पर्याय है। मजहब अनेक हो सकते हैं किन्तु धर्म मानव मात्र के लिये एक ही होता है।

वेदों की जहा तक बात है, वह वास्तव मे ही धर्मग्रन्थ हैं। वेद शब्द का अर्थ-ज्ञान, विचार, लाभ आदि है। वेदो मे सलिला प्रकृति और उससे बनने वाले परम सूक्ष्म तत्व परमाणु से लेकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, विश्व ब्रह्माण्ड तक तथा पृथिवी से लेकर परमात्मा तक का ज्ञान भरा हुआ है। प्रकृति से बनने वाले तत्वो के गुणों का ज्ञान भी सत, रज, तम आदि के रूप मे वर्णित है, जिन पर विचार करके मनुष्य अपने और ससार के हित और लाभ के लिये प्रकृति के परमाणु आदि तत्वों तथा उनसे बनने वाले सृष्टि के पदार्थो का वास्तविक रूप मे उपयोग कर लाभ उठा सके। वेदो मे मानवो के पारस्परिक व्यवहार विषयक विचार भी हैं। आत्मा परमात्मा विषयक वर्णन भी है और इनके पारस्परिक सम्बन्ध का विवेचन भी है।

आप लिखते हैं कि 'आधुनिक सदियो में यह कोशिश आर्य समाज ने की। जिसने बाइबिल और कुरान के समकक्ष वेदों को धर्मग्रन्थ मानने का खासा अभियान चलाया। ·····आर्य समाज ने ईसाइयो और मुसलमानो के समकक्ष आर्यों के धर्मग्रन्थ के रूप मे वेदो को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया।" इन श्रीमान जी को यह भी पता नही है कि "धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाण परम श्रुतिः" यह आर्यद्वारा निर्मित नहीं है अपितु आदि सृष्टि की ग्यारहवीं पीढ़ी के महापुरुष महर्षि मनु का कथन है कि जो धर्म को जानने की इच्छा करे, उनके लिये वेद ही परम प्रमाण है। मनुस्मृति के दूसरे अध्याय का यह दसवा श्लोक है, इसे बालीजी उक्त पते पर पढें और इससे पहले इसी सन्दर्भ मे श्लोक पांच मे "वेदो जीवतो धर्ममूलम्" वेद अखिल अर्थात् सर्वाङ्‌ पूर्ण धर्म का मूल है तथा सातवे श्लोक मे "वेदः स्मृति सदाचार. स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विध प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्" वेद, स्मृति, सदाचार और जो दूसरों के द्वारा अपने साथ किया गया स्वय को प्रिय लगे, वैसा ही व्यवहार दूसरो के साथ करना, यह धर्म के चार साक्षात् अर्थात् स्पष्ट लक्षण है। मनु के इन विचारो को पढकर बालीजी को यह पता लग जायगा कि यह विचार आर्य समाज की स्थापना नही है। आर्यसमाज को तो स्थापित हुए अभी केवल मात्र एक सौ सोलह वर्ष ही हुए है। मनुस्मृति भी वह किसी आर्य प्रकाश की न पढे, जिससे उन्हे यह पता भी चल जायगा कि यह श्लोक मनुस्मृति मे आर्यसमाजियो का प्रक्षेप किया हुआ नही है अपितु मूल रूप से युगो पहले आदि स्मृतिकार की रचना है।

आपने वेद को सीधी-सवरी पुस्तक भी लिखा है, परन्तु उसे ईश्वरीय ग्रन्थ मानने पर आपको आपत्ति है। इसका अर्थ यह हुआ कि ईश्वरीय ग्रन्थ सीधा-सवरा नहीं हो सकता अपितु धूर्त्तता और मूर्खता, छल-प्रपच आदि से परिपूर्ण या फिर गप्पो और अनर्गल बुद्धि विरुद्ध विचारो से भरी हुयी पुस्तक ही धर्मग्रन्थ हो सकता है। बालीजी की इस तर्कपूर्ण और युक्तियुक्त खोज पर तो उन्हें डी. लिट. की उपाधि दी जानी चाहिये।

आपकी स्थापना यह भी है कि 'ईश्वरीय ग्रन्थ मानने से वेद विवेचना का नही श्रद्धा का विषय बन जायगा।" बाली जी जिस प्रकार ईश्वरीय सृष्टि और

(शेष पृष्ठ ८ पर)

वेद वास्तव में धर्म ग्रन्थ हैं

(पृष्ठ ४ का शेष)

उसका अवयव विवेचना और अनुसन्धान का विषय है तथा स्वयं परमात्मा भी विवेचना का विषय है। ठीक, इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान वेद भी साङ्गोपाङ्ग रूपेण विवेचना और अनुसन्धान का विषय है। आवश्यकता केवल जिज्ञासा और बौद्धिक स्तर की है।

श्रत्-सत्य धा धारणे अर्थात् श्रद्धा नाम ही सत्य को धारण करने का है, आखें मूंदकर स्वीकार करने का नहीं। आखें मूंदकर स्वीकार करना तो अन्ध-विश्वास है। सत्य को धारण अर्थात् स्वीकार करना और तदनुसार आचरण करना और स्वीकार का आचरण करने के लिये विवेचना तथा अनुसन्धान परमावश्यक है। सत्य तो खोज का, पहचानने का तत्व है। पहचान के लिये निमीलित नहीं अपितु उन्मीलित नेत्रों तथा खुले मस्तिष्क की आवश्यकता है।

यह आपने अपने स्व और सब निर्मित वाली पुराण में पढ लिया होगा या फिर वंश परम्परागत वाली पुराण होगा जिसमे आपको यह लिखा मिला होगा कि आर्यसमाज वेदों को दो करोड वर्ष का मानता है। यदि आर्यसमाजियो के किसी लेख को पढ लिया होता अथवा आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के ग्रंथो "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" तथा "सत्यार्थ प्रकाश" को उन्मीलित नेत्रो से पढा होता तो आप यह बिना पते की गप्प न लिख मारते अपितु आपको ज्ञान हो जाता कि आर्यसमाज वेदो की उत्पत्ति को लगभग दो अरब वर्ष पुरानी तब की मानता है, जब मानवी सृष्टि का प्रारम्भ हुआ था और इसके लिये आर्यसमाज के पास प्रामाणिक काल गणना है।

आपने यह भी लिखा है कि "अपना पक्ष सही सिद्ध करने के लिये बिना पढे ही वेदो की दुहाई दी गयी और वेदो को स्वत: प्रमाण कह दिया गया तो जाहिर है कि वेद नही पढ़े गये बल्कि उन्हे न पढने का माहौल भी बना दिया दिया।" इससे तो यह पता चला कि वेद की बात हो क्या आपको आर्यसमाज के विषय में किञ्चितमात्र भी जानकारी नही है। आर्यसमाजका तो एक नियम ही है कि "वेद का पढना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।" न केवल धर्म अपितु इस नियम मे पढना भी और पढाना भी तथा सुनना भी और सुनाना भी परम धर्म बताया गया है और आर्यसमाज ने गुरुकुल खोल कर न केवल पुरुषो को ही वेद पढाया अपितु महिलाओ को भी वेद पढ़ा-पढा कर वेद की विदुषी बना दिया, जो अब उन्ही गुरुकुलो मे बैठ कर स्वयं वेद पढाने का कार्य कर रही हैं और स्थान-स्थान पर सभा समारोहो तथा गोष्ठियो मे भाग लेकर वेद का सन्देश जन जन तक पहुचाने का कार्य कर रही है।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो को तर्कसम्मत, युक्तियुक्त और सृष्टिक्रम के अनुकूल स्वीकार किया है, ऐसा बिना पढ़े कदापि नहीं कहा जा सकता। उन्होने आर्यसमाज के उपर्युक्त नियम मे "वेद का पढना पढाना और सुनना-सुनाना" परम धर्म बताने से पहले 'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" यह घोषणा भी की है। आपके उपर्युक्त आरोप से तो यह सिद्ध होता है कि आपका उद्देश्य वेद का विरोध करना मात्र है और क्योकि आर्यसमाज वेद का प्रबल प्रचारक है अतएव आपने अपने लेख मे आर्यसमाज का भी विरोध करना प्रारम्भ कर दिया, जबकि आर्यसमाज के विषय मे अन्य कुछ जानकारी की बात तो रही दूर आपने कभी आर्यसमाज के नियम तक भी नही पढे और आप आर्यसमाज के संस्थापक और आर्य समाजियों को वेद बिना पढे तथा वेद न पढने का माहौल बनाने वाले लिख रहे हैं यद्यपि उपर्युक्त नियम का प्रारम्भिक भाग" वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है" आधुनिक युग मे वेद विषयक खोज का प्रेरणा स्रोत है। इसके अतिरिक्त भी महर्षि ने अपने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका नामक ग्रन्थ मे वेद-मन्त्रो से अनेक वैज्ञानिक विषयो का विवेचन प्रस्तुत किया है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पश्चात् भी आर्यसमाज ने अनेक विद्वान ऐसे तैयार किये, जिन्होने वेदो का आद्योपान्त अध्ययन ही नहीं किया अपितु वेदो में वर्णित अन्य विविध विषयों के अतिरिक्त भौतिक विज्ञान सम्बन्धी भी अनेक विषयो का प्रणयन किया। यह सब पढ़कर ही किया गया है, बिना पढे नही, बिना पढे तो आपने लेखनी उठाने का दुस्साहस किया है।

आर्यसमाज ने वेद के न पढने का माहौल नही बनाया अपितु पढने के माहौल के निर्माण में महद् प्रयत्न किया है और उसी का यह परिणाम है कि वेद की भ्रष्ट व्याख्यायें लिखकर भारत मे ईसाई मत का मार्ग प्रशस्त करने के ब्रिटिश सरकार द्वारा बुलाये गये जर्मन प्रोफेसर मैक्समूलर को भी "भारत हमे क्या पढा सकता है ?" तथा 'भारतीय दर्शन के छ: सिद्धान्त" नामक पुस्तकें लिखकर महर्षि का समर्थन करना पडा तथा श्रीपाद दामोदर सातवलेकर को अपना सम्पूर्ण जीवन अपने जीविकोपार्जन के कार्य फोटोग्राफी को छोडकर वेद विषयक लेखो और ग्रथो मे ही लगा देने को समुद्यत होना पडा। योगीराज अरविन्द घोष जैसे क्रान्तिकारी राजनीतिज्ञ को भी अन्त में अपने जीवन को वेद के अर्पित करना पडा तथा उन्होने लिखा कि "स्वामी दयानन्द ने वेदों मे विज्ञान की चर्चा करके कोई अत्युक्ति नही की अपितु न्यूनोक्ति से ही काम लिया है। वेद के असंख्यों विज्ञानो का तो अभी ससार को पता ही नही है।" और 'वेद का अन्तिम भाष्य क्या होगा यह तो मैं नहीं कह सकता किन्तु वेदभाष्य की सर्वोत्तम कुंजी (शैली) हमें दयानन्द से ही प्राप्त हुयी है।

आर्यसमाज ने जो वेद के विद्वान तैयार किये हैं, उनकी तो पृथक् से ही लम्बी सूची है। उन सबकी नामावली तथा उनके विषयवाद ग्रन्थो की सूची इस लेख मे देने से कोई लाभ नही। वह तो एक स्वतन्त्र ग्रन्थ का विषय है। यह स्पष्ट और अत्यन्त प्रसिद्ध बात है कि ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के प्रादुर्भाव, उनके वेद और वैदिक धर्म प्रचार अभियान से पहले तो वेद को दर्शनो और पाठ मात्र का विषय ही समझा जाता था तथा अधिकाश लोगो की यह मान्यता थी कि वेद को तो शंकासुर लेकर पाताल लोक को चला गया। आज जैसे वेद विषय पर लेखनी उठाने वाले तो आर्यसमाज और ऋषिवर दयानन्द के निरन्तर एक सौ पचास वर्षो से वेद का प्रचार करने वाले और उसे वेद विज्ञानो (सत्य विद्याओ) का पुस्तक बताने पर भी यह आरोप लगा रहे हैं कि वेद को ईश्वरीय और धर्मग्रन्थ बताकर पाठ और श्रद्धा का विषय बना दिया। शंखासुर वेद को पाताल ले गया है, यह कहने वाले मूर्ख तो अब भी यदा-कदा मिल ही जाते है।

अब तो न केवल भारतीय अपितु विदेशों भी वेद को खोज का विषय समझने लगे और वेद विषयक लिखे गये अनेक, ग्रन्थो पर उनके लेखकों को विश्वविद्यालयो से पी०एच०डी० तथा डी० लिट तक की उपाधिया प्राप्त हो चुकी हैं। इन सबका भी श्रेय आर्यसमाज द्वारा बनाये गये वेदाध्ययन के वातावरण को जाता है। यह कार्य न होता यदि ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने वेद को ईश्वरीय ज्ञान, स्वत: प्रमाण, सृष्टिक्रम के अनुकूल तथा ज्ञान-विज्ञान का कोष न बताया होता और आर्यसमाज ने इस प्रकार का प्रचार न किया होता। जिसके कारण विश्व के उच्च शिक्षा प्राप्त जन और अनुसन्धानकर्त्ता वेद की ओर प्रवृत्त हुए, उनको वेद के न पढने का माहौल बनाने वाला लिखना अपनी निम्नस्तरीय क्षुद्र बुद्धि का परिचय देना है।

आपने यह भी लिखा है कि "धर्मग्रन्थ सिर्फ पूजे या रटे जाते है, पढे या समझे नही जाते।" इसका तो स्पष्ट अर्थ यह है कि आपको अक्षर ज्ञान तो है इसलिये आप पढ और लिख तो लेते हैं किन्तु सूझ-बूझ लेश-मात्र भी नही है। जबकि वास्तविकता यह है कि पढने का अभिप्राय यह जानना होता है कि इसमे क्या लिखा है, क्या बात कही या बतायी गयी है ? और जिस लिखी बात को पढा जायगा तो उसके विषय मे विचार तथा ऊहापोह भी की जायगी। किसी विषय को पढकर उस पर विचार और ऊहापोह की प्रवृत्ति जडबुद्धि व्यक्तियो मे नही हुआ करती। निरर्थक पाठ करना तो समय और शक्ति का दुरुपयोग और विनष्टि है तथा जडमति मूर्ख को छोडकर कोई सामान्य बुद्धि वाला व्यक्ति अपने समय और शक्ति को निरर्थक विनष्ट नहीं किया करता। जिस पुस्तक को पढ़ा जाता है, पढने वाला मनोवैज्ञानिक रूपेण उसी के विचारो मे ढलने लगता है। यही कारण है कि अन्धविश्वासी मतवादी पुस्तको के पढने वाले अन्धविश्वासों मे ही फसे रहते हैं। इसी अन्ध परम्परा के कारण ही आर्य जाति और आर्यावर्त्त का पतन हुआ किन्तु जब तक वेद का पठन-पाठन विधिवत् तथा साङ्गोपाङ्ग होता रहा, आर्य जाति विश्व मे सिरमौर रही।

"भारतीय मानस तो धर्म को सम्प्रदाय नही मानता" यह तो ठीक किन्तु आप तो मानते हैं इसीलिये तो आप आर्यसमाज द्वारा वेदो को धर्मग्रन्थ कहने पर तिलमिला उठे हैं। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है धर्म सम्प्रदाय का नाम है न मतपन्थ और मजहब का। धर्म तो आचरण की वस्तु है और वेद मानव को मानवता धारण कराना चाहते हैं, दो हाथ दो पैर का पशु नही रहने देना चाहते इसीलिये निर्देश करते हैं "मनुर्भव" अर्थात् मनुष्य बनो। मनुष्य बनना या मानवता को धारण करना धर्म है या पाप.........निर्णय कर लीजिये और जो पुस्तक इस

(क्रमश:)

आर्य समाज शेखपुरा (बिहार)

बिहार राज्य के मुंगेर जिलान्तर्गत शेखपुरा के गिरहिन्डा नामक कस्बे में स्थानीय आर्य समाज का ३०वां तथा आर्य समाज शेखपुरा का ५४वां वार्षिकोत्सव ईश कृपा से सोल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर स्वामी अग्निव्रत (डा० देवेन्द्र सत्यार्थी) ने देश की सामयिक स्थिति पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि आज देश और समाज को सम्प्रदायवाद और जातिवाद तथा नास्तिकता ने आस्तिकता को चुनौती दे रखा है। श्री वीरेन्द्र आर्य ने भजनो के माध्यम से ऋषि संदेश द्वारा समस्त जनता को आह्लादित कर दिया।

उपरोक्त कार्यक्रम मे कविराज डा० श्री दुर्गा प्रसाद शास्त्री प्रधान तथा कोषाध्यक्ष श्री दु:खहरणलाल आर्य का सराहनीय योगदान रहा।

—शंकरलाल आर्य मन्त्री

आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्य समाज फतुहा (पटना) के तत्वावधान में दिनाक १७-३-९१ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को स्थापना दिवस बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी (स्वामी-अग्निव्रत) का प्रवचन का आयोजन किया गया। स्थानीय पुरुष एवं महिला समाज ने संमन्वित रूप से यह आयोजन मनाया।

मन्त्री—जयदेव कुमार

वैद्य गुरुदत्त जयन्ती पर आयोजित संगोष्ठी

नई दिल्ली ८ अप्रैल आर्य समाज पालम कालोनी मे समाज के मन्त्री श्री कैप्टन भागवत सिंह जी की अध्यक्षता मे महान साहित्य सर्जक वैद्य गुरुदत्त जी की पावन स्मृति पर समाज की सक्रियशीलता हेतु एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

सर्व प्रथम लाहौर महोपदेशक पंडित हरिश्चन्द्र जी का अभिभाषण हुआ। आर्य समाज के मूल तत्वो से अवगत कराते हुए उन्होने आर्य शब्द का व्याख्यान किया। उनके शब्दो मे आर्य का अर्थ श्रेष्ठ है और श्रेष्ठ वही मानव है जिनमे नैतिक गुण, आत्मिक शुद्धता, सदाचार अध्यात्मिक प्रेम, अभक्ष्य पदार्थ के सेवन से परे एवं पाखण्ड से दूर हो। "आर्य" शब्द केवल आर्य समाजी के लिए सुशोभित नही है बल्कि उपरोक्त गुणों से युक्त सभी मानव के लिए है।

युवा संरक्षक श्री ओमप्रकाश आर्य जी के कथनानुसार सप्ताह मे एक बार हवन कर लेने से ही समाज का कल्याण नही हो सकता इसके लिए छोटे-छोटे लघु उद्योगो को भी प्रश्रय दिया जाय। आय के आधार पर छोटी-छोटी पुस्तके खरीद कर नि:शुल्क लोगो को वितरण करे। क्योंकि पुस्तक ही क्रांति का दूत होता है। हमे वैदिक संस्कृति के ज्ञाता वैद्य गुरुदत्त जी से सीख लेनी चाहिए।

युवा नेता डा० जसबीर आर्य ने लोकप्रिय श्रेष्ठ रचनाकार की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए युवाओ मे राष्ट्रवादी विचारधारा का बल प्रदान किया।

प्रचार मन्त्री श्री कृष्ण माधव प० ने कहा आज कल समाचार पत्रो मे चर्चित "उग्रवादी" शब्द को सदा के लिए हटा देना चाहिए क्योकि बन्दुक से निकलने वाली गोली की अपेक्षा लेखनी से निकलने वाले उग्रवाद शब्द अधिक खतरनाक होते हैं।

अन्त मे अध्यक्षीय भाषण मे वैद्य गुरुदत्त जी के सराहनीय विचारो पर प्रकाश डालते हुए कैप्टन भगवत सिंह (अध्यक्ष) ने वैद्य जी के विचारो के अंश को लेकर बोले—"हमारे देश का आधार धर्मनिरपेक्ष बनाया गया है तो मेरा विश्वास है कि यह आधार सत्यमेव जयते की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। क्योंकि जहा तक मेरी समझ है, सत्य तो यह है कि अपने देश का आधार धर्म हैं। सदा से अपने देश का जन-जीवन धर्म से ओत-प्रोत रहा है। लाख चेष्टा करने पर इसे धर्मनिरपेक्ष नही बनाया जा सकता। हा राज्य को सम्प्रदाय निरपेक्ष होना चाहिए धर्म निरपेक्ष नहीं। क्योंकि राज्य का भी धर्म होता है प्रजा पालन। यदि राज्य अपने इस धर्म से ही निरपेक्ष हो जाय तो ऐसा अवाछनीय राज्य ठीक नही हो सकता।" इस तरह हम देखते है कि एक चिकित्सक होने के नाते राष्ट्रवाद एवं धार्मिक लगन उनमे कूट-कूट कर भरी हुई थी। ऐसे महान नेताओं को श्रद्धा का सुमन अर्पित है। —प्रचार मन्त्री, कृष्ण माधव आर्य

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी

दिनांक १७-३-९१ को मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल में आर्य समाज दिवस, होली मिलन धूमधाम से मनाया गया। पद्म विभूषण काशी के गौरव श्री राजराम जी शास्त्री का अभिनन्दन किया गया। छात्राओं के प्रेरणाप्रद कार्यक्रम हुए। मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए श्री शास्त्री ने कहा "कि मेरा सौभाग्य है कि मातृ मन्दिर का समय-समय पर सहयोग करने का अवसर मिलता रहा है। बालिकाओं के कार्यक्रम अति सुन्दर है। इससे सिद्ध होता है कि बालिकाओं के निर्माण पर यहां पूरा ध्यान दिया जाता है। आरक्षण पर बोलते हुए उन्होने बताया कि महर्षि दयानन्द ने दलित वर्ग की समस्या को पहले ही भांप लिया था, और उसके लिए सरल उपाय छुआछूत नाश के रूप में बताया था। यदि उस उपाय को अपनाया होता तो आरक्षण की समस्या न उत्पन्न होती। दयानन्द ने जाति का आधार जन्म से नही अपितु कर्म से बताया था। वास्तव मे यही सही भी है। पिछड़ेपन या गरीबी का आधार जन्मगत जाति नहीं, अपितु पेशे को बनाया जाय। जैसे किसान मजदूर चपरासी का पेशा गरीब है।

माननीय शास्त्री जी ने आर्य समाज का आह्वान किया कि श्री स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्तानुसार गुण-कर्म-स्वभाव से जाति (वर्ण) का निर्धारण करने मे प्रयासरत हो देश को वर्तमान आरक्षण जन्य समस्याओ से बचाए। अन्त मे उन्होंने मातृ मन्दिर की भावी योजनाओं (वेद मन्दिर निर्माण योजना तथा प्रायोगिकी यज्ञशाला) आदि तथा कन्या गुरुकुल के बहुमुखी विकास के कार्यक्रम का अनुमोदन किया। उन्होने काशी के बुद्धिजीवी तथा उदार दानी महानुभावों से मातृ मन्दिर जैसी परोपकारी तथा बाल हितकारी संस्था का पूर्ण सहयोग करने का भी आह्वान किया।

प्रारम्भ मे छात्राओं के वैदिक मगलाचरण से समारोह का शुभारम्भ किया। डा० पुष्पावती आचार्या ने मुख्य अतिथि श्री राजाराम शास्त्री तथा समारोह के सम्मानित अध्यक्ष दानवीर रामकुमार रूंगटा जी का तथा पधारे हुए सभी महानुभावो का स्वागत किया। मंच सचालन श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह ने किया। पधारे हुए अनेक संस्थाओं व विभिन्न स्थानो (नगरों) के प्रतिनिधियों ने माननीय शास्त्री जी का माल्यार्पण द्वारा अभिनन्दन किया।

—पुष्पावती अध्यक्षा

आगामी वार्षिकोत्सव

१. २६ अप्रैल से ५ मई १९९१ तक आर्यसमाज करोलबाग मे वार्षिकोत्सव मनाया जाएगा।

२. आर्य समाज शकरपुर का वार्षिकोत्सव दिनांक ९ मई से १२ मई तक मनाया जायेगा।

३. सराय काले खा का वार्षिकोत्सव दिनांक २३,२४ मई को मनाया जायेगा।

सभी आर्य बन्धुओ की उपस्थिति प्रार्थनीय हैं।

आर्य समाज लाजपत नगर

का

३६वां वार्षिकोत्सव

दिनांक २२ अप्रैल से २९ अप्रैल तक

आपको यह जान कर हर्ष होगा कि आर्य समाज लाजपत नगर के वार्षिकोत्सव पर यजुर्वेद यज्ञ, वेद कथा, सुन्दर भजन, शोभा यात्रा, आर्य युवक सम्मेलन, राष्ट्रीय एकता सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि विभिन्न कार्यक्रमो का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें योग्य विद्वान वक्ताओं के विचार आपको सुनने को मिलेंगे।

विशेष—२७ अप्रैल शनिवार को प्रात: १० बजे से शोभा यात्रा निकाली जाएगी। आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है। —पुरुषोत्तम लाल शास्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य

१.	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम, द्वितीय) प्रत्येक		१.५०
२.	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
३.	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३.००
४.	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५.००
६	धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५ ००
७.	ग्लैंश आफ ट्रूथ	(डा० सत्यप्रकाश वर्मा)	२ ००
८.	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	,, ,,	२.००
९.	एटोनामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०.	आर्यों का आदि देश	,, ,,	२ ००
११	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	,, ,,	२५ ००
१२.	दी ओरीजिन होम आफ आर्यन्स	,, ,,	२.००
१३.	चत्वारो वै वेदा	,, ,,	५ ००
१४	द्वैतसिद्धि	,, ,,	५ ००
१५.	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ में	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	२०.००
१६.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(पं० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५.००
१७.	हंसता चल, हंसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६ ५०
१८	दयानन्द एण्ड दा वैदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
१९	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२०	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२१.	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२२	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकड़ा

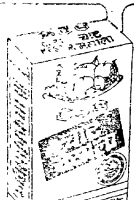
नोट · उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नही लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान : **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१









आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 25-26-4-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५९ — पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज दरियागंज का वार्षिक चुनाव दिनांक १७ मार्च ९१ को सम्पन्न हुआ उसमे निम्नलिखित अधिकारियों का चुनाव किया गया।

श्री वी० वी० सिंघल—प्रधान

श्री कृष्ण चन्द्र शर्मा—मन्त्री

श्री दयाकृष्ण सेठ—कोषाध्यक्ष

आर्य समाज टैगोर गार्डन, नई दिल्ली २७ का 'वार्षिक निर्वाचन' रविवार ३१ मार्च, १९९१ को सम्पन्न हुआ, वर्ष १९९१-९२ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारियो का सर्व-सम्मति से चयन किया गया।

प्रधान—श्री कुंवर लाजपत राय

मन्त्री—श्री अमरनाथ बवबा

कोषाध्यक्ष—श्री प्रेमनाथ गोयल

अपील

आर्य शिक्षाविद उपदेशक एवं शारीरिक उत्थान हेतु खेल प्रशिक्षक से अपील है कि विभिन्न झुग्गी-झोंपड़ियों वाले क्षेत्र में निःशुल्क प्रशिक्षण एवं शिक्षण देकर कुंठित युवाओं में उत्साह एवं प्रेरणा दे सकें। कृपया निम्न पते पर सम्पर्क स्थापित करें। विभिन्न झुग्गी-झोंपड़ियों की तालिका परिषद कार्यालय में उपलब्ध है।

—डा० धर्मवीर आर्य

अध्यक्ष युवा विकास परिषद आर्य समाज राजनगर पालम कालोनी दिल्ली-४५

हिन्दी प्रोत्साहन प्रतियोगिताओं के विजेता पुरस्कृत

दिल्ली प्रशासन के भाषा विभाग द्वारा हिन्दी प्रोत्साहन योजनान्तर्गत आयोजित टिप्पण आलेखन, सुलेख, आशुलिपि, तथा निबन्ध आदि प्रतियोगिताओं में दिल्ली प्रशासन तथा स्थानीय निकायों के ४७९ प्रतियोगियों ने भाग लिया।

भाषा सचिव श्री नरेन्द्र प्रसाद ने ३७ विजेताओं को सचिवालय के सभागार मे, नकद राशि, पदक तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।

इस अवसर पर पुरस्कृत विजेताओं को सम्बोधित करते हुए श्री नरेन्द्र प्रसाद ने यह आशा प्रकट की कि वे भविष्य में अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करेंगे।

—जगन्नाथ

राष्ट्र और धर्म रक्षा अभियान

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद गत वर्षों की भांति उत्तरांचल के पार्वत्य क्षेत्र में "राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियान यात्रा" के लिए प्रस्थान करेंगे। इस बार की यात्रा पर संस्थान के मन्त्री श्री मेघराज आर्य भी स्वामी जी के साथ रहेंगे।

[illegible] नजीबाबाद से चल कर रात्रि वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार) में रहेंगे। वहां से अगले दिन देवप्रयाग में प्रवास रहेगा। देवप्रयाग से श्रीनगर, टिहरी, उत्तरकाशी, भटवाड़ी और गंगोत्री तक यात्रा करेंगे। वापसी में पुनः टिहरी, चम्बा होते हुए नरेन्द्र नगर प्रवास रहेगा। नरेन्द्र नगर से ऋषिकेश होकर हरिद्वार आर्य समाज मन्दिर में विश्राम करेंगे

—संजय आर्य

सेवा में—

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २६ | रविवार, ५ मई, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

स्वामी दयानन्द और शिक्षा दर्शन

—श्रीकान्त शास्त्री व्याकरणाचार्य

समकालीन भारतीय शिक्षा दार्शनिको में स्वामी दयानन्द उन दार्शनिको की परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो शिक्षा के क्षेत्र मे प्राचीन भारतीय विचारों को प्रमाणिक समझ कर प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था को देश में फिर लागू करना चाहते थे।

स्वामी दयानन्द जी ने त्रैतवाद को मान्यता दी है। "ईश्वर, जीव, प्रकृति" स्वामी दयानन्द ने वेदों को प्रमाण मान कर उनके दार्शनिक सिद्धान्तो की व्याख्या की है, और वेदों के विरुद्ध सभी प्रकार के आक्षेपो का निराकरण किया है। स्वामी दयानन्द के अनुसार वैदिक दर्शन समाज का प्राचीनतम दर्शन है जो वेदों के आधार पर आर्यों ने वैदिक सस्कृति का विशाल भवन खडा किया था। परमतत्त्व के विषय में वे अद्वैतवाद अथवा द्वैतवाद से अधिक त्रैतवाद के मानने वाले हैं। त्रैतवाद के अनुसार परमतत्त्व तीन है–ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीनो ही आदि और अनन्त है, न इनका कभी निर्माण हुआ है और न कभी इनका विनाश होगा। ईश्वर सर्व-शक्तिमान और सृष्टि का रचने वाला है, वह सुख-दु.ख की रचना करता है। किन्तु संसार में जीवों को सुख-दुख उनके कर्मों के अनुसार मिलता है। ईश्वर अति सूक्ष्म, सर्व शक्तिमान, सब उत्तम गुणो से युक्त एव न्यायाधीश है।

जीव अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान है। इसलिए वह अविद्या के वशीभूत होकर बार-बार ससार चक्र में फसता है। सभी जीव समान हैं, अपने शुभाशुभ कर्मों के अनुसार वे विभिन्न योनियो मे सुख-दु:ख भोगते हैं। सत्य ज्ञान और शुभ कर्मों से जीव मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

सांख्य दर्शन के अनुसार प्रकृति त्रिगुणमयी है और सृष्टि का उपादान कारक है। प्रकृति परमात्मा के अधीन है। दृश्यमान जगत् सत और व्यवहारिक है। वह न तो मिथ्या है और न ईश्वर का लीलास्थल है। जीव कर्म करने मे स्वतन्त्र और भोग मे ईश्वर के अधीन है। स्वर्ग नर्क की पौराणिक कल्पनायें व्यर्थ हैं।

शिक्षा दर्शन मानव प्रकृति की धारणा पर आधारित है। इसके अनुसार मन प्राणियो के शरीर में हृदय में निवास करता है और उसका काम शरीर और आत्मा मे सम्बन्ध स्थापित करना है। उसमे ज्ञान धारण करने की अद्‌भुत शक्तियां हैं, वही पांचो ज्ञानेन्द्रियो, पाचों कर्मेन्द्रियो और प्राण तथा बुद्धि पर नियन्त्रण करता है। उसे योग द्वारा संयमित किया जा सकता है। मन की शुद्धि के बिना ज्ञान नही मिल सकता है। मन, बुद्धि, चित् और अहकार ये अन्त:करण के चार विभाग है मन का कार्य सकल्प विकल्प करना है। यह पाचों ज्ञानेन्द्रियो के द्वारा प्राप्त सूचना पर प्रत्युत्तर मे कर्मेन्द्रियो को कार्य करने का आदेश देता है। बाह्य शरीर के अन्तर्गत एक सूक्ष्म शरीर है, स्थूल शरीर वह है जो बाहर से दिखाई पड़ता है। सूक्ष्म शरीर मे पाच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रिया, पाच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि में १७ तत्त्व हैं। यह सूक्ष्म शरीर जन्म मरण में जीव के साथ रहता है इसी से जीव मुक्ति मे सुख को भोगता है। तीसरा शरीर कारण शरीर है, जिसमें सुषुप्ति होती है। यह सब जीवों के लिए एक ही है। स्थूल शरीर के कार्य सूक्ष्म शरीर से नियन्त्रित होते हैं। सूक्ष्म शरीर सस्कार से प्रभावित होता है। सामाजिक और नैतिक प्रतिबन्धो से मनुष्य मे अनेक सस्कार बन जाते हैं। सूक्ष्म शरीर के अन्तर्गत पांच प्राण होते हैं, पांच ज्ञानेन्द्रिय, स्थूल शरीर मे त्वचा चक्षु, श्रोत, घ्राण और रसना मे निहित सूक्ष्म भूत, शब्द, रूप, रस, स्पर्श और गन्ध है ये ही पाच तन्मात्र कहलाते है। इन्द्रियों को मन के द्वारा वश मे किया जा सकता है। सत्व, रज और तम का शरीर और मन दोनो पर प्रभाव पडता है। योग व सयम मन को नियन्त्रित करने के साधन हैं। पातजलि योग मे मन के निरोध के उपाय बतलाये गऐ हैं, पातञ्जलि योग मे अष्टाग योग को ईश्वर प्राप्ति का साधन बताते हैं। उनके अनुसार मोक्ष ही परम लक्ष्य है और यह मोक्ष आत्म-साक्षात्कार से प्राप्त होता है। भगवत् गीता के अनुसार कर्म और ज्ञान मे समन्वय है। मन धर्म के दस लक्षणो मे अहिंसा को जोडकर धर्म के ११ लक्षण हो जाते है, सदाचार सदाचरण पर अत्यधिक जोर देते हुए ब्रह्मचर्य को सबसे अधिक महत्वपूर्ण माना है ब्रह्मचर्य ही नही बल्कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह भी आदर्श मनुष्य के अनिवार्य गुण हैं।

—आर्य समाज श्री निवास पुरी नई दिल्ली-६५

स्वनामधन्य स्व० सेठ केदारनाथ गोयनका

संसार मे अनेक महापुरुष, सन्त और महात्मा अपने उज्वल कार्यों से अपना नाम छोड़ जाते है किन्तु ऐसे अज्ञात महापुरुषों की भी कमी नहीं है जिन्होंने अपना सपूर्ण जीवन जाति, धर्म और सस्कृति की रक्षा के लिए, अर्पित किया है। इसी श्रेणी के एक ज्वाजल्यमान रत्न थे स्व० केदारनाथ गोयनका।

स्व० केदारनाथ जी गोयनका सेठ कन्हैयालाल के दत्तक पुत्र थे। इनकी शिक्षा कलकत्ता में हुई थी। कलकत्ता मे ही स्व० केदारनाथ जी का प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री देवीबक्श से सम्पर्क हुआ था। २१ वर्ष की अवस्था पूरी करने पर उन्हें अदालत से सम्पत्ति का अधिकार प्राप्त हुआ। सम्पत्ति प्राप्त होने पर उन्होंने सर्वप्रथम चांदनी चौक मे कपडे की बड़ी भारी दुकान खोली। दुकान बहुत अच्छी चली स्व० गोयनका ने वहां से खूब धनोपार्जन किया था।

स्व० गोयनका १९११ मे आर्य समाज चावडी बाजार के सदस्य बने। १९१३ मे वह समाज के कोषाध्यक्ष और बाद मे उपमन्त्री बनाए गए। आर्य समाज के प्रति इनकी अटूट श्रद्धा थी। उन दिनो आर्य समाज का सूर्य सारे देश मे चमक रहा था। अग्रेज और आर्य समाज विरोधी लोग यह नहीं चाहते थे कि आर्य समाज का सगठन अधिक भावी हो। इसलिए अग्रेंजी सरकार के इशारे पर शिमला के राय साहब गगाराम आर्य समाज चावड़ी बाजार के सदस्य बनें। उन्होंने एक साल के अन्दर ही आर्य समाज के वरिष्ठ नेताओ के विरुद्ध जिनमे लाला नारायणदत्त ठेकेदार और लाला दीवानचन्द आदि मुख्य थे, पोस्टरबाजी और पर्चेबाजी शुरू कर दी। जिसका दिल्ली में बड़ा शोर मचा। राय साहब गगाराम को आर्य समाज के सगठन को तोड़ने मे सफलता मिल गई। किन्तु लाला नारायणदत्त ठेकेदार

(शेष पृष्ठ ६ पर)

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

वेद वास्तव में धर्म ग्रन्थ हैं

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,—
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

(गतांक से आगे)

प्रकार का निर्देश कर मानव को वास्तविक अर्थों में मानव अर्थात् मननशील बनाकर उत्तम आचरण के लिये प्रेरित करे, वह धर्मग्रन्थ नही तो क्या है ? यह भी ध्यान रहे कि धर्म का विलोम पाप ही होता है, और पाप नाम है बुराई का। मानवता धारण करना अच्छाई या बुराई ? आपने कभी विचार किया है क्या ? और फिर इसी प्रकार यदि वेद धर्मग्रन्थ नही तो क्या पापग्रन्थ है ?

आप लिखते है कि "वेद तो खुद को संहिता या संकलन मानते हैं।" आपको वेद मे से वह स्थल भी उद्धरित करना चाहिये था, जिसमे वेद ने स्वय को संकलन कहा है। हां इससे यह पता अवश्य चल गया कि संहिता शब्द के अर्थ से भी सर्वथा अनभिज्ञ है। संहिता मूल ग्रन्थ को कहते हैं।

आगे आप लिखते हैं "इन संहिताओ मे सूक्त है।………… सूक्त यानी सु-उक्त अर्थात् सुभाषित अर्थात् श्रेष्ठ रचना।" इससे यह पता चलता है कि आपके मतानुसार श्रेष्ठ रचना मनुष्य ही कर सकता है परमेश्वर नही। लगता है आप परमात्मा को बुद्धिहीन अथवा नितान्त जडतत्त्व समझते है, बलिहारी इस बुद्धि की। जो व्यक्ति धर्मशब्द के अर्थ न समझ सकता हो, जो पाठ करने का अर्थ पाठ किये जाने वाले ग्रन्थ को समझना नही मानता हो अपितु उसमे निरर्थक समय और शक्ति की विनष्टि को धर्म समझता हो, उससे परमपिता परमेश्वर जैसे तत्त्व को समझने की आशा की भी नही जा सकती।

आपने यह भी लिखा है कि श्रेष्ठ कविताओं का साम्प्रदायिक धर्म से क्या वास्ता ? इसलिये वैदिक सूक्तो का विषय धर्म नहीं है।" हमारा यह कहना है कि सूक्त अर्थात् सु-उक्त है ही वह जो धर्म का वर्णन और विवेचन करता हो, जो धर्म का वर्णन और विवेचन न करे, वह तो कु-उक्त हो सकता है अथवा निरर्थक बकवास। वेद साम्प्रदायिक नही अपितु मानव धर्म का प्रणेता है, जैसा कि हम ऋग्वेद के "मनुर्भव" शब्द को ऊपर उद्धृत कर वर्णन कर चुके है। यह भी ध्यान रखिये कि वेद का कवि क्रान्तदर्शी, वही क्रान्तदर्शी परमात्मा है। कोरा वाणी-विलास के लिये शब्दो की तुकबन्दिया करने वाला व्यक्ति नही। "पश्य देवस्य काव्य न ममार न जीर्यति" देख उस देव के काव्य को, जो न समाप्त होता है और न जीर्ण (जर्जर) होता है।

जिस सूक्त की चर्चा आपने की है, उसमे यह कह कर कि "पता नही सबसे शुरू मे क्या था ?" अनुसन्धानार्थ वेदपाठी को प्रोत्साहन दिया गया है तथा यह प्रश्न उठाकर ऋग्वेद को नारदीय सूक्त मे प्रलयकाल का नितान्त वैज्ञानिक वर्णन किया गया है, जिससे सृष्टि के प्रारम्भ होने से पहले देखने वाला परमात्मा के अतिरिक्त अन्य कोई था ही नही। इसी कारण मैक्समूलर ने अपने "भारतीय दर्शन के छः सिद्धान्त" नामक ग्रन्थ मे लिखा है "कि मै अब तक वेदो को ऋषियो की खोज मानता था किन्तु ऋग्वेद के नारदीय सूक्त में प्रलयकाल का आंखो देखा जैसा वैज्ञानिक वर्णन पढकर इस परिणाम पर पहुचा कि यह ज्ञान तो परमेश्वर की ओर से ऋषियो की ओर आता प्रतीत होता है।" वर्तमान काल मे महर्षि दयानन्द ही ऐसे व्यक्ति हुए हैं, जिन्होने यह घोषणा की कि वेदो का ज्ञान आदि सृष्टि मे परमात्मा ने चार ऋषियो अग्नि, वायु, आदित्य और अगिरा को प्रदान किया।

एक सूक्त मे विवाह सम्बन्धी रचनाये होने मे भी आपको आपत्ति है। क्या मानव को विवाह विषयक ज्ञान न देकर सृष्टिकर्त्ता इन्हे पशुवत् मौन सम्पर्क के लिये छोड देता ? धन्य हो आपकी सूझ-बूझ को। इसी प्रकार से जुए की हानिया भी आदि सृष्टि में ही परमात्मा ने बता दी तो इससे आपको क्या कष्ट हुआ प्रत्येक पिता अपनी सन्तान को जहा कार्यविधि बताता है, बुराई से बचने का निषेध भी कर देता है। विधि और निषेध तो एक सिक्के के दो पहलू है। परमात्मा समस्त संसार का पिता है, उसने अपनी मानव सन्तान को प्रारम्भ मे ही चेतावनी देते हुए जुआरी के परिवारस्थ जनो के दुःखी होने और उसे घर तक से निकाल दिये जाने के रूप में दे दी और परिवारस्थजनो में भी निकटतम् माता और पत्नी तक को भी ऐसे गन्दे व्यक्ति को घर से निकाल देने का अधिकार प्रदान कर दिया तो इससे वेद का ईश्वर कृत न होकर मानव कृत होना किस प्रकार सिद्ध हो गया। इसी प्रकार अन्य सूक्तो को भी समझिये। यह सब ज्ञान मानव को आदि सृष्टि मे दिया जाना परमावश्यक था क्योकि मानव बिना सिखाये-बताये कुछ भी नही सीख पाता है और न कर पाता है। हां, जाने हुए में विकास करने का सामर्थ्य तो मनुष्य मे होता है।

आपने शराब पिये हुए इन्द्र की भी चर्चा की है, वह शराब है ही नहीं। आप वेद के शब्दो के अर्थ तो जानते नही, आपने तो इधर-उधर से वेद के विरोधियो तथा वेद को न समझते हुए वेद विषय में टाग अडा कर अपने को महापण्डित सिद्ध करने की लालसा रखने वालो के लेखों को पढ लिया है। आपने न तो अष्टाध्यायी पढी, न महाभाष्य, न आपका निरुक्त से परिचय है और न निघण्टु से………इस कारण आप इन्द्र शब्द के अर्थों से सर्वथा अनभिज्ञ हैं। वेद का इन्द्र कोई शराबी व्यक्ति नही है अपितु वह यौगिक अर्थों मे प्रयुक्त है। शराब का पर्याय वहा कोई शब्द है ही नही। लेख बहुत बडा हो गया है, इस कारण मै विस्तारपूर्वक नही लिख रहा। अच्छा हो कि आपने जो कुछ इस लेख मे लिखा है, इन सभी विषयो पर विस्तार से सार्वजनिक चर्चा को तैयार हो जायें और इसके लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ३/५-आसफ अली मार्ग, नयी दिल्ली के माध्यम से अथवा सीधे मुझसे पत्र-व्यवहार कर समय और स्थान का निश्चय कर लें और फिर वही सार्वजनिक चर्चा दोनो पक्षो के हस्ताक्षरो से युक्त नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हो जाय। यह भ्रान्ति भी आपकी निकल जायगी कि वेद आपके अनुसार लौकिक कवियो को स्फूर्त और जिन्दा जीवन पर लिखी भव्य रचनायें हैं और वह वेद को ईश्वरी वाणी बताने से अन्धेरे मे डूबी पडी है। हम तो इसके लिये आपके धन्यवादी हैं कि आप उन्हें भव्य रचनायें मानते हैं, अन्यथा यह भी लिख सकते थे कि वेद जैसी मूर्खतापूर्ण रचना परमात्मा जैसे परम पवित्र तत्त्व की नहीं हो सकती अपितु यह तो चरवाहो की अनर्गल बकवास है फिर भी आपके इस लेख से इतना तो निश्चित ही स्पष्ट हैं कि आप वेद को तो भव्य रचना मानते हैं किन्तु परमात्मा को यदि मानते है और उसे जड तत्त्व नही तो कम से कम वेद जैसी भव्य रचना का कर्त्ता नही अपितु इन रचनाओ के योग्य भी नहीं मानते।

पुराणो के विषय मे आपने लिखा है कि "आर्यसमाज ने गप्प कहकर ठुकरा दिया था।" यह भी आपने गप्प मारी है। पुराणो मे गप्पें भरी हैं अतएव वह विष सम्प्राक्त अन्नावत्-त्याज्य है, ऐसी ऋषिवर दयानन्द की घोषणा है और यह दो और दो चार की भांति नितान्त सत्य है। समग्र रूप से पुराणो को आर्यसमाज गप्प नही मानता उनमें अनेक अन्य उपयोगी बातो के अतिरिक्त आर्य जाति का इतिहास भी वर्णित है।

आपको आर्यसमाज द्वारा आर्यनस्ल तथा आर्य जाति की चर्चा भी खटकी है, जबकि हमारा सम्पूर्ण इतिहास आर्यो या आर्य जाति का ही इतिहास है। हिन्दू नाम तो मुसलमानो के भारत पर लगातार आक्रमणो द्वारा प्राप्त पराधीनता के समय की दौलत कहे या लानत (जो भी समझिये) है। जैन शास्त्रो और बौद्ध साहित्य में भी आर्य संज्ञा ही उपलब्ध है। किमधिकम् लेखेन अलमीतिविस्तरेण।

●

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आर्यसमाज और युवा शक्ति

सम्पादकीय

किसी भी सस्था के संचालन के लिए विवेक, कर्म और अर्थ इन त्रयी की आवश्यकता होती है। किसी भी एक पक्ष की कमी हो जाने से कार्य सिद्धि नही हो पाती। यही बात श्री जयशंकर प्रसाद ने भी कही थी–ज्ञान दूर, कुछ क्रिया भिन्न है क्यो इच्छा पूरी हो मन की। अत: साध्य को प्राप्त करने के लिए विद्वानो, कार्य-कर्त्ताओ और धनवानो का सम्मिलित प्रयास होना चाहिए। यही बात आर्य समाज के लिए भी सही है। जहा पर तीनो समन्वय है, वहा पर अच्छा कार्य हो रहा है, जहा पर किसी एक तत्त्व का दूसरो पर अधिक प्रभाव हो गया, वही पर समस्या आ गई है। जिन आर्य समाजो के पास धन और पार्थिव सम्पत्ति ज्यादा हो गई, वे केवल उसी के सरक्षण तक सीमित हो गए, असली कार्य वे भूल गये। उनकी इच्छा यही रहती है कि कुछ भवन और बन जाये, कुछ दुकाने और बन जाये अथवा पैसा कमाने के लिए आर्य समाज मन्दिरो मे स्कूल ही खोल दिए जाये। स्कूल खोलना अच्छा है। यदि इससे सामाजिक लाभ हो, अन्यथा नही।

आर्य समाज की जीवन्तता के लिए यह आवश्यक है कि लोकोपयोगी, जनोपयोगी कार्य हाथ में लिए जाये। दिल्ली मे अनेक आर्य समाजो मे ऐसे धर्मार्थ कार्य चलाए जा रहे है। इन कार्यो के सचालन के लिए ऐसे लोग चाहिए जो सक्रिय हो आलस्य से परे हों, जिनमे युवा भावनाए हो। जो दौड़ कर कार्य कर सके। मुझे प्रसन्नता है कि यहा पर ऐसे युवा समाज कार्य कर रहे है। आर्य वीर दल इस दिशा मे सराहनीय कार्य कर रहा है। गाजियाबाद मे आर्य समाज राज-नगर मे आर्य युवा सम्मेलन मनाया गया। युवाओ के हौसले बुलन्द थे और उनके विचार भी बहुत ही ओजस्वी। उनमे कुछ कर गुजरने की तमन्ना है। यह प्रसन्नता और सन्तोष की बात है। इसी प्रकार आर्य समाज लाजपत नगर में भी युवा सम्मेलन आयोजित किया गया।

युवा शक्ति सप्राण होती है। पर इनकी दिशा का अनुकूलन भी अनिवार्य है। देश की वर्तमान परिस्थितियो मे युवा शक्ति को सही मार्ग निर्देशन मिले, तो वे बहुत ही अच्छा कार्य कर सकेंगे उनकी क्षमताओ का ससाधन विकसित किया जाना चाहिए।

इन सबसे ऊपर सस्था के उद्देश्यो का महान होना भी अनिवार्य है। आर्य समाज वेदो के अनुसरण पर बल देता है। वेद सार्वभौमिक और सार्वकालिक है। अत: इसके उद्देश्य, विचार निश्चय ही महान है। आओ हम सब इन विचारो को आगे बढाये।

—डा० धर्मपाल

डा० कपिलदेव द्विवेदी मारीशस आमन्त्रित

पद्म श्री डा० कपिलदेव द्विवेदी मारीशस आदि देशो की चार मास की यात्रा पर ३ मई ९१ को बम्बई से रवाना हो रहे हैं। उनकी विदेश यात्रा का उद्देश्य विश्व मे वेदो के सन्देश का प्रचार प्रसार करना है। वे मारीशस के साथ-साथ केन्या, तजानिया, मैडगास्कर आदि भी जाएगे।

—भारतेन्दु द्विवेदी

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२८ अप्रैल, ९१ के अक से आगे)

राजाधिराज उम्मेदसिंह शाहपुराधीश ने सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। मैंने भी किसी प्रस्ताव के समर्थन मे अपना भाषण दिया था। सम्भवत. प्रान्तीय स्तर पर बोलने का यह मेरा प्रथम अवसर था। यह सम्मेलन महाराजा हाई स्कूल किशनपोल बाजार मे हुआ था। १९५३ मे प० जियालाल जी चुनाव हार गये और डा० मथुरालाल शर्मा सभा के प्रधान निर्वाचित हुए। कोटा मे सम्पन्न यह अधिवेशन पर्याप्त रोमांचकारी था। सभा के उपदेशको ने, जिनमे प० रामसहाय जी प्रमुख थे सर्वत्र घूम-घूम कर पहले से ही डा० मथुरालाल शर्मा के पक्ष मे वातावरण बना दिया था, किन्तु प० जियालाल जी अपने नेतृत्व के प्रति इतने अधिक आश्वस्त थे कि उन्हे स्वप्न मे भी यह आभास नही हो सका कि वे चुनाव के दगल मे पराास्त हो जायेगे। उन दिनो जोधपुर से कोटा जाने के लिए सीधी बस की कोई व्यवस्था नही थी। रेल का मार्ग तो और भी जटिल था क्योकि रेल से वहा पहुचने के लिए प्रथम जयपुर जाकर सवाई माधोपुर की गाडी और सवाई माधोपुर से बड़ी लाइन की गाडी लेकर कोटा पहुचना होता था। अजमेर से देवली और वहा से बूदी होकर कोटा तक के लिए प्राइवेट बसे अवश्य चलती थी। जोधपुर के प्रतिनिधि रेल मार्ग से अजमेर गये और आर्य समाज केसरगज मे ठहरे। यहां प० जियालाल जी से हमारी भेट हुई। उन्होने हमे अपने साथ डी० ए० वी० कालेज की बस मे कोटा ले चलने का आश्वासन दिया। इसमे अच्छी बात और क्या हो सकती थी? हम लोग प्रात: प० जियालाल जी के साथ उन्ही की बस मे कोटा के लिए रवाना हुए। मार्ग मे नसीराबाद के समाज मन्दिर को देखते हुए सरवाड़ पहुचे। वहां की समाज के मन्त्री श्री जगदीश चन्द्र जी आर्य ने प्रति-निधियो के लिए भोजन की सुन्दर व्यवस्था कर रखी थी। सरवाड अपनी स्वा-दिष्ट पूरियो के लिए प्रसिद्ध है। अत: लड्डू और पूरी का स्वादिष्ट भोजन कर हम बूदी की ओर चले। बूदी में बस खराब हो गई और उसकी मरम्मत मे पर्याप्त समय लगा। इसी बीच पडित जियालाल जी ने सारे प्रतिनिधियो को अपने खर्चे पर जलपान भी कराया। वे इसी सुखद भ्रम मे थे कि उनके साथ बस मे आये सारे प्रतिनिधि चुनाव मे उनका साथ देंगे। आधी रात के करीब बस कोटा पहुची और हम ने आर्य समाज कोटा जकशन में विश्राम किया।

दूसरे दिन अधिवेशन आरम्भ हुआ। सार्वदेशिक सभा के प्रधान प० घुरेन्द्र शास्त्री स्वय प० जियालाल जी के समर्थन हेतु सभा मे उपस्थित थे। किन्तु प्रान्त के प्रतिनिधि भी परिवर्तन का निश्चय करके आये थे अत: प्रबल बहुमत मे डा० मथुरालाल शर्मा प्रधान चुने गए। मन्त्री पद विजयबिहारी माथुर को मिला तथा उपमन्त्री पद पर प भगवती प्रसाद सिद्धान्तभास्कर चुने गए। मैं भी जोधपुर मण्डल से उपमन्त्री निर्वाचित हुआ। इससे पहले भी मैं अन्तरग सदस्य तो रह ही चुका था। श्री विजयबिहारी लाल एम० एड० की पढाई के लिए उदयपुर चले गए अत. उपमन्त्री श्री भगवती प्रसाद को ही मन्त्री पद पर कार्य करना पडा। आगे वे कई वर्षों तक सभा के मन्त्री रहे। इन दिनों मेरा छोटा भाई प्रो० नवल किशोर हर्बर्ट कालेज कोटा मे रसायन के प्रवक्ता पद पर अस्थाई रूप मे कार्यरत था। मेरी माता जी भी उसके पास ही थी। अधिवेशन समाप्त होने के बाद मैं कोटा रुका और उसके बाद सीधा जयपुर आ गया। मुझे १९५४ के दीक्षान्त समारोह मे एम० ए० हिन्दी की उपाधि ग्रहण करनी थी। इस वर्ष का दीक्षान्त भाषण सर सी० वी० रमन ने दिया था।

सभा के आगे के अधिवेशनो मे भी निरन्तर भाग लेता रहा। १९५५ मे भी कोटा में ही अधिवेशन हुआ और मैं पुन: उपमन्त्री निर्वाचित हुआ। उदयपुर अधिवेशन मे प० जियालाल ने किसी कौशल से डा० मथुरालाल जी को प्रधान पद से हटाने का प्रयास किया था जो असफल रहा क्योकि उनके अध्यक्ष के प्रति किए गए दुर्व्यवहार को देख कर सभा का वातावरण बिगड़ गया और तत्कालीन प्रधान मा० मथुरालाल शर्मा ने अधिवेशन की कार्यवाही ही स्थगित कर दी।

(क्रमश:)

अपेक्षित शान्ति की उपेक्षा

—मनोज कुमार पाण्डेय 'पुष्पेश'

मनुष्य समूची सृष्टि में सबसे अधिक बुद्धिमान प्राणी है और देखा जाय तो इससे निकृष्ट प्राणी भी कोई नहीं। सर्वाधिक बुद्धिमान इस मायने में कि मनुष्य अपनी सुख-सुविधा के लिए आविष्कार कर सकता है तथा व्यवस्थित रहता है और अपनी बुद्धि के बल पर ही उस परम पिता को भी खोज निकालता है जिसे उसने आज तक देखा ही नहीं। और निकृष्ट इस मायने में कि तरह-तरह के समुदाय, जाति, पथ, धर्म, आदि बनाना और इसी को अपना सब कुछ मान कर आपस में लड़ना, ऊपर से शासन व्यवस्था द्वारा भी कुछ ऐसे कर्म करना जिससे खाई और गहरी हो और समाज और अधिक बटता चला जाए। इस मनुष्य नामक प्राणी की निकृष्टता के प्रमाण तो अगण्य हैं लेकिन उत्कृष्टता गिनती में आ जाती है।

मनुष्य अनादि काल से अलग-अलग संगठन बना कर रहता आ रहा है। प्रत्येक संगठन आपस में लड़ते भी रहे हैं, किन्तु वह असभ्य मनुष्यों का समाज माना जाता है, लेकिन आज का यह सभ्य मनुष्यों का सभ्य समाज जिस तरह के कार्य सम्पन्न कर रहा है, उसे देख कर ऐसा लगता है कि सभ्य समाज सिर्फ कहने के लिए है, इसके कर्म तो उन असभ्यों से भी निकृष्ट होते जा रहे हैं जो आदि काल में थे। कहीं यह आधुनिक सभ्यता तो नहीं?

धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर लड़ना तो आज के मनुष्य का स्वाभाविक गुण होता जा रहा है। आज का मनुष्य इसे अपनी सभ्यता समझने लगा है और इसे ही अपना गौरव। और कुछ राजनैतिक स्वार्थी तत्त्व इसका लाभ उठा कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। सच तो यह है कि ये खादी-धारी राजनैतिक लोग इसका नाजायज लाभ उठाने के लिए ऐसा खुद ही करवाने भी लगे हैं।

भारत एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है, लेकिन यहां की परिस्थितियों को देख कर ऐसा लगता है कि धर्म निरपेक्षता संविधान तक ही सीमित है, क्योंकि सरकार द्वारा कुछ ऐसी नीतियां कायम करना जिससे संविधान की धर्म निरपेक्षता पर आंच आती है, अच्छा नहीं है। या तो शासन को चलाने वाले ये मुट्ठी भर लोग-निरपेक्षता का अर्थ नहीं जानते या इसकी परिभाषा अपने मन मुताबिक बना लेना चाहते हैं।

इस लोकतन्त्रीय शासन व्यवस्था में स्वयं सरकार द्वारा ही अलोकतान्त्रिक कार्य किए जा रहे हैं। सुरक्षा के नाम पर हर व्यक्ति को कैद करना क्या लोकतन्त्र है? यहां सत्ता की लोलुपता ने ही काम बिगाड़ा है। नेताओं को सत्ता में आने के लिए वोट चाहिए, चाहे वह जैसे आए, क्योंकि सत्ता हाथ में आने पर शासकों के वारे-न्यारे हो जाते हैं, और रिश्वत कमीशन आदि भरपूर मिलता है जिससे पार्टी चलती है और पार्टी को चलाने के लिए समाज को बांटने वाले कार्यकर्त्ता खरीदे जाते है, जिससे सत्ता पर उन्हीं का दबदबा बना रहे।

आए दिन संविधान की प्रतियां जलती हैं, राष्ट्र ध्वज (तिरंगे) का अपमान होता है और धार्मिक ग्रन्थ जलाये जाते हैं। यही इस देश की धर्म निरपेक्षता और राष्ट्रवादिता है क्या? राष्ट्रवाद के नाम पर तो भारत में हर व्यक्ति को गुमराह किया जा रहा है सरकारी तन्त्रों द्वारा। ये सत्ता-मद में डूबे हुए लोग राष्ट्रवाद शब्द को भी अपने मुताबिक परिभाषित करना चाहते हैं। धर्म निरपेक्षता और राष्ट्रवाद के नाम पर समाज को तोड़ रहे हैं। अगर अपने संविधान पर गौर किया जाए तो वह दोष मुक्त नहीं। मुस्लिम पर्सनल ला और हिन्दू कोड बिल दोनों ही बातें आपस में विरोधी हैं। ये दोनों बातें ऐसी हैं जो समाज में भाई-चारा नहीं लाती। वह तो इस समाज का धन्यवाद कीजिए जो इतनी बड़ी खाई के होते हुए भी आपस में प्रेम से रह रहा है। संविधान द्वारा तो समाज को बांट ही दिया गया है तो फिर भाई-चारे के लिए नेताओं का चिल्लाना तो मात्र अपना उल्लू सीधा करना है। या अपने आपको शांति दूत बनाना चाहते हैं।

डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी साहित्य की भूमिका' में लिखा है कि जब भारत में शंकर का अद्वैतवाद आया तो बौद्ध धर्म विहारों-मठों तक सीमित होकर रह गया और समाज से वह दूर होता चला गया तथा समाज में फिर पौराणिक धर्म फिर से चलने लगा लेकिन मुसलमानी धर्म के आक्रमण से बौद्ध और हिन्दू मन्दिर समान भाव से आक्रान्त हुए, मन्दिरों, मठों और विहारों को समान भाव से नष्ट किया गया। जिस अर्थ में मुसलमान या ईसाई धर्म हैं वह अर्थ हिन्दू धर्म के लिए लागू हो ही नहीं सकता।' क्या धर्म और मजहब शब्द के मौलिक अर्थ किसी ने जानने की कोशिश की? धर्म का अर्थ है जो स्वेच्छा से धारण किया जाए और मजहब का अर्थ है जो मान्यता जबरदस्ती मनवायी जाए। क्या इस बात से इन शब्दों को पर्यायवाची या समान धर्म शब्द करार दिया जा सकता है।

हमारे नेता, जो परोक्ष रूप से समाज को तोड़ने वाले ठेकेदार हैं। आम सभाओं में शांति के लिए चिल्लाते हैं तो भारत का बहुसंख्यक समाज मान लेता है, क्योंकि बहुसंख्यक समाज के पूर्वज शांति प्रिय नीति और न्याय-प्रिय रहे हैं, परन्तु साथ में भेदा भी रहे हैं। यहां का बहुसंख्यक समाज जो हिन्दू नाम से अभिहित है शांति कायम कर लेगा तथा कर रहा है, लेकिन उन इसलाम के मानने वालों से शांति के लिए तुम किस मुंह से कहते हो जिनका कि इतिहास ही अशांति, आक्रमण और अमानवीय कृत्यों से भरा पड़ा है। जिनकी प्रकृति ही इस प्रकार की बन चुकी है। क्या वे शांति स्थापित होने देंगे?

आज के कुछ सिर-फिरे असभ्य और निकृष्ट स्वभाव के व्यक्ति जो नेता बन गए हैं वे हिन्दू को साम्प्रदायिक बताते हैं अर्थात् हिन्दू शब्द का पर्याय सम्प्रदाय हो गया है और उनके लिए मुसलमान शब्द धर्म निरपेक्षता का द्योतक बनता जा रहा है। यह बहुसंख्यक समाज पर अत्याचार और अन्याय का षड्यन्त्र है। यहां पर हिन्दू बहुसंख्यक हैं तभी धर्मनिरपेक्षता जैसे शब्दों की गूंज है अन्यथा यदि यहां मुसलमान बहुसंख्यक होता तो यह देश एक मिनट से भी पहले इस्लामिक देश बन जाता। नेताओं के लिए तो मुसलमान नामक जाति सोने की मुर्गी है जो वोटों के रूप में अण्डा देती है और जिससे शासन व्यवस्था बनती है। भला सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी को कौन नहीं पसन्द करेगा। और यहां के मुसलमान जो हिन्दू से ही परिवर्तित हुए हैं अपना पूर्वज तक बदल देना चाहते हैं केवल उन कठमुल्लाओं के इशारे पर जो आज से ५०० वर्ष पहले विदेशों से आए हैं और यहां पर मुस्लिम व्यवस्थाओं को हाथ में ले चुके हैं। वे तो ५०० वर्ष पहले विदेशी थे तो वे आज भी अपने आपको विदेशी मान सकते हैं और इस देश में अशांति पैदा कर सकते हैं क्योंकि वे यहां के समाज को विघटित कर देना चाहते हैं और अपनी गाठ को और भारी करना चाहते हैं तथा सुर्खियों में छाए रहना चाहते हैं और व्यवस्थाएं चलाते रहना चाहते है।

इण्डोनेशिया एक मुस्लिम देश है। वहां के सभी हिन्दू इस्लाम से आक्रान्त होकर भय से इस्लाम को अपना लिए, लेकिन राम-लीलाओं का आयोजन आज भी करते है क्यों? उनका कहना है 'हमने विश्वास बदला है पूर्वज नहीं।' क्या भारत का हिन्दू परिवर्तित होकर बनने वाला मुसलमान अपने विश्वास के साथ-साथ अपना पूर्वज भी बदल चुका है? अगर वह ऐसा मानता है कि वह अपना विश्वास और पूर्वज दोनों ही बदल चुका है तो वह इस देश के लिए यहां के समाज के लिए कभी भी विश्वास पात्र नहीं बन सकेगा। वह तो इस देश में रहकर भी इस देश से गद्दारी कर सकता है, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन जो मुसलमान ५०० वर्ष पहले बाहर से आए हैं वे तो यहां के मूल नहीं वे विदेशी थे और अगर आज भी वे अपने आपको विदेशी मान लें तो इसमें कोई चौंकने की बात नहीं। लेकिन अफसोस ऐसे ही व्यक्तियों के हाथों भारतीय मुसलमानों की सत्ता चल रही है और वे इस देश को इस समाज को बर्बाद नहीं करेंगे, तबाह नहीं करेंगे, क्या गारंटी है?

इस देश का शिक्षित समाज अधिकांशतः अपने गौरव को भूलता जा रहा है और पश्चिम की ओर मुंह बाए देख रहा है। यह यहां की दूषित शिक्षा पद्धति का परिणाम है। जब तक शिक्षा के माध्यम से हर व्यक्ति को अपना गौरव तथा राष्ट्र भक्ति नहीं सिखाई जाती तथा प्रत्येक व्यक्ति को बुद्ध स्तर पर शिक्षित नहीं बनाया जाता तब तक यहां पर शांति कायम करना कठिन है। एक हमारी सरकार

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सम्पादक के नाम पत्र

सम्पादक महोदय,

सादर नमस्ते।

'आर्य सन्देश' साप्ताहिक का आर्य समाज स्थापना दिवस एवम् धर्मवीर पंडित लेखराम संयुक्तांक विशेषांक ठीक समय पर प्राप्त हुआ। वास्तव में आपने विशेषांक छापने का जो बीड़ा उठाया है। उसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं। अनेक प्रकार के विशेषांक निकालकर हमारे निजी पुस्तकालयों तथा समाजाधीन पुस्तकालयों में चार चांद लगा दिये हैं। जिन्हे साथ लेकर चलने मे भी बड़ा आनन्द आता है।। मैं सभी आर्य सन्देश विशेषांको को सम्भालकर रखता हूं। और आर्य सन्देश के नये नये ग्राहक बनाकर अपना शौक भी पूरा कर रहा हूं। आशा है आप इसी प्रकार के विशेषाक विशेष आकर्षण लिये सदैव प्रकाशित करते रहेंगे।

पुनश्च धन्यवाद

—मदनपाल राठी आर्य

सचालक आर्य वीर दल ग्राम इटावा (मु० नगर)

श्रीमान् व्यवस्थापक जी

सादर नमस्ते।

आशा है आप भगवत कृपा से स्वस्थ व सानन्द होंगे। मान्यवर आर्य समाज स्थापना दिवस एवं धर्मवीर प० लेखराम सयुक्तांक विशेषांक यथा समय उपलब्ध हुआ। आर्य सन्देश के विशेषांको की अपनी एक अलग परम्परा है और उसी तारतम्य मे यह विशेषाक भी संग्रहणीय बन पड़ा है। धर्मवीर प० लेखराम जी के विचार जीवन-दर्शन सब एक ही स्थान पर उपलब्ध करा दी है। तथा तप: पूत, सन्त हृदय, अद्भुत व्यक्तित्व, कृतित्व एवं उनके जीवन दर्शन से जो, आत्मीय परिचय कराया है, इसकी जितनी प्रशसा की जाये, कम है।

—बाबूराम सिंह "कवि"

सुगर मिल मारोली जि. बलसाड़ (गुजरात)

समादरणीय सम्पादक जी,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र द्वारा आर्य सन्देश मासिक के सम्मेलनांक, ऋषि बोधांक तथा प० धर्मवीर लेखराम स्मृति एवं आर्य समाज स्थापना दिवस-सयुक्ताक वस्तुत: स्तुत्य एव संग्रहणीय है स्थापना दिवसाक मे हैदराबाद आर्य सत्याग्रह सम्बन्धी अपूर्व एव ऐतिहासिक सामग्री जोडकर अभिनन्दनीय कार्य किया है, आशा है आगे भी आर्य सन्देश रूपी शिलालेख पर इसी प्रकार की सामग्री यथा समय अकित होती रहेगी।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने आर्य सन्देश का 'स्वामी श्रद्धानन्द और इन्द्र विद्यावाचस्पति का सयुक्त अक भी निकाला है, कृपया इस विशेषांक की दो प्रतियां नमूने के रूप मे भिजवाने की कृपा करें और जब कभी भविष्य मे प० इन्द्र विद्यावाचस्पति जी पर विशेषाक निकालने की योजना बने तो इन पक्तियो के लेखक को अवश्य स्मरण करे, मेरे पास इन्द्र जी द्वारा लिखे गए और इन्द्र जी पर लिखे गये लेखों की सूची है। सभी सहयोगियो को यथायोग्य प्रणाम।

—प्रा० कुशलदेव, रामानन्द नगर पावडे वाडी के पास नादेड़ ४३१६०२

आर्य वीर दल देवरिया

भागलपुर-देवरिया ९ अप्रैल। आर्यवीर दल पूर्वी उ. प्र. के देवरिया जनपदान्तर्गत वासुदेवपुरम् ग्राम में आगामी १ जून से ६ जून तक बालको मे वेदानुकूल सस्कारो के निर्माण हेतु एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें बिहार प्रान्त के सीवान जनपद सहित उ. प्र. के बस्ती, गोरखपुर, देवरिया, बलिया मऊ, आर्यमगढ़ व जौनपुर जनपदो के लगभग पचास आर्यवीरो के भाग लेने की सम्भावना है। शिविर-शुल्क १० रुपये मात्र रखा गया है।

इच्छुक जन निम्न पते पर पत्र-व्यवहार करें—

—रामाज्ञा 'आर्यपुत्र' ग्राम० डाक-भागलपुर जनपद-देवरिया (उ. प्र.) पिन-२७४६०२

वेद संगोष्ठी प्रयाग

समय-समय पर वेद-प्रतिष्ठान के तत्वावधान में सगोष्ठियां सुविधानुसार दिल्ली, बम्बई, चण्डीगढ, अजमेर, एवं काशी आदि नगरो मे होती रही हैं। उसी शृ खला मे १९९१ में यह गोष्ठी प्रयाग (इलाहाबाद) में विज्ञान परिषद् प्रयाग विश्वविद्यालय, गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ एवं चन्द्रशेखर आजाद पार्क मे स्थित म्यूजियम, विभिन्न आर्य समाज और आर्य सस्थाओ के सौजन्य से शुक्रवार १० मई एव शनिवार ११ मई १९९१ को होगी।

गोष्ठी का विषय है : वेद प्रतिपादित युद्ध और शान्ति

दिल्ली, हरिद्वार और उत्तर प्रदेश तथा बिहार के वैदिक विद्वानो को इस गोष्ठी मे भाग लेने के लिए हमारा विशेष आमन्त्रण है। यदि वे किसी संस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनकी सस्था उनका मार्ग व्यय वहन नही कर रही है तो हम लोग साधारणत: द्वितीय श्रेणी का मार्ग व्यय इस सगोष्ठी में भाग लेने के लिए और समय से सूचना मिलने पर उनके आवास और भोजन का प्रबन्ध भी करेंगे और हम चाहेंगे कि हमारे अतिथियों को प्रयाग में किसी प्रकार की असुविधा न हो। गोष्ठी के अन्तर्गत अंग्रेजी और सस्कृत व हिन्दी इन तीन भाषाओ का प्रयोग हो सकता है। हम चाहेगे कि हमारे इन भाषणो का स्तर दयानन्द वेद पीठ की प्रतिष्ठा के अनुरूप हो ये भाषण कालान्तर में सग्रह के रूप मे वेद पीठ प्रकाशित भी करेगा और हो सकता है कि इनमे से कोई भाषण जनरल ऑव दा इन्टरनेशनल दयानन्द वेद पीठ की पत्रिका में प्रकाशित हो। अच्छा हो कि भाषण की एक प्रति गोष्ठी सयोजिका के पते पर गोष्ठी के एक सप्ताह पूर्व तक भेज दी जाय।

—स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

(पृष्ठ ४ का शेष)

है कि जहां पर अशाति हुई वही बन्दूक की नोक तान दी। लेकिन बन्दूक की नोक पर कायम की जाने वाली शाति कितने दिनो तक चलेगी इसका अन्दाजा है? इसका सही नतीजा निकलने की बजाए कही विपरीत परिणाम निकला तब क्या होगा? बन्दूक की नोक कहां तक तानी जाएगी? आखिर उसकी भी एक सीमा है। लोकतन्त्र स्थापित करने के नाम पर सरकार स्वय अलोकतांत्रिक कार्य करने शुरू कर देती है और मृतको की सख्या घटाकर बताई जाती है। तथा सरकार द्वारा इलैक्ट्रोनिक माध्यमो पर पूर्ण कब्जा भी इस बात का द्योतक है कि भारत मे लोकतन्त्र के नाम पर तानाशाही भी है।

जाति के नाम पर समाज को बांटा जाना क्या उचित है? आरक्षण के नाम पर वोट बटोरने का षड्यन्त्र क्या देश को बर्बादी की ओर नही ले जा रहा? आरक्षण के नाम पर सरकार किस-किस को नौकरी देगी। सरकार के पास ५० लाख पद से कम ही हैं और जनसख्या करोडो की है तो कितनो को आरक्षण की टॉफी मिलेगी, वह भी विशेष जातियो को और देश मे रिश्वत का मामला है कि जिन जातियो को आरक्षण मिल रहा है उस जाति के अमीर लोग ही पद हासिल कर पायेंगे। गरीब तो वही रह गया। देश की तरक्की कहा हुई। आरक्षण तो समाज को तोड़कर वोट बटोरने की साजिश है। देश की तरक्की तो तब मानी जाएगी जब हर व्यक्ति के पास रोटी, कपडा और मकान होगा। और नेता ऐसे है कि पद पाते ही तानाशाह बन जाते है, साथ मे हमारे नौकर शाह भी इसी किस्म के होते जा रहे हैं।

कुल मिलाकर पूरे देश की स्थिति अशातिपूर्ण है। इस देश मे शाति तब तक कायम नहीं होगी जब तक समाज को एक नहीं किया जाएगा। हर व्यक्ति शाति चाहता है जीवन चाहता है सुख चाहता है, परन्तु फिर अशाति, मौत और दुख आ कैसे जाते हैं? अगर इसे यू कहा जाए कि ये आते नही लाए जाते है तो ज्यादा बेहतर होगा। शांति कायम करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पहल करनी होगी और यह तभी सम्भव है जब भड़काऊ भाषण बन्द हो, जनता को अपने गौरव का पता हो, भुखमरी समाप्त हो, समान शिक्षा तथा सभी शिक्षित हो, तुष्टीकरण बन्द हो, और प्रत्येक व्यक्ति सुरक्षित महसूस करे और लोकतन्त्र के नाम पर मौलिक अधिकारो का हनन बन्द हो। सरकार का निर्माण इन्हीं कार्यो के लिए होता है। लेकिन यहा तो कुर्सियो की ही मारामारी है। देश का ख्याल ही नही तो शाति कहा से कायम होगी। नही हो सकती, लोग मरते ही रहेंगे, हत्याए होती ही रहेंगी, तनाव बढता ही रहेगा, अशाति और असुरक्षा बढ़ती ही रहेगी, लोकतन्त्र का हनन होता ही रहेगा। ●

सर्वतोन्मुखी साहित्य द्रष्टा : स्व० गुरुदत्त

भारतीय लेखक मच की ओर से ७-४-९१ को आर्य समाज करोल बाग, नई दिल्ली मे, ऋषिकल्प साहित्यकार स्व० श्री गुरुदत्त की द्वितीय पुण्य तिथि पर आयोजित विचार गोष्ठी मे उपस्थित वक्ताओं ने एक स्वर से स्वीकार किया कि साहित्य मनीषि स्व० श्री गुरुदत्त उच्च कोटि के लेखक एव चिन्तक थे। साहित्य की प्रत्येक विधा मे उन्होंने अपनी रचनाये प्रस्तुत की है। उनके द्वारा रचित साहित्य में उपन्यासों की संख्या अधिक होने पर भी वेद, उपनिषद्, पुराण, इतिहास आदि पर लिखे गये उनके ग्रन्थ उतने ही उपादेय एव रोचक है जितने कि उनके उपन्यास। सोद्देश्य लेखन मे श्री गुरुदत्त अग्रणी रहे हैं और अनन्तकाल तक उनकी रचनाये भारतीय जनमानस को आन्दोलित करती हुई उसे दिशा निर्देश करती रहेगी। वे 'कला-कला के लिए' नही अपितु 'कला जीवन के लिए' सिद्धात के पोषक थे। भारतीय जीवन-दर्शन एव मूल्यों के उनके साहित्य मे पग-पग पर दर्शन होते हैं।

वक्ताओ ने एक स्वर से यह भी स्वीकार किया कि उनकी रचनाये सामयिक एव सीमाबद्ध नही अपितु असीम एव कालातीत हैं। उनकी मान्यताओ के आधार पर रचित समाज आदर्श, चिरस्थाई एव मानवता का पोषक प्रचारक प्रसारक समाज सिद्ध होगा। आज उनके द्वारा निर्देशित मार्ग पर चलने की असीम आवश्यकता अनुभव होने लगी है। वर्तमान ही नही अपितु भावी पीढी पर भी स्व० गुरुदत्त का महान ऋण है, जिसकी पूर्ति करना हमारा और भावी पीढ़ी का पुनीत कर्तव्य है। —नरेन्द्र अवस्थी

'मराठी सत्यार्थ प्रकाश'

आर्य जगत् को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि मराठी भाषा के श्रेष्ठ विद्वान् श्री श्रीपाद जोशी जी ने महर्षि दयानन्द कृत अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का मराठी भाषानुवाद किया है, जो कि आर्य समाज पिम्परी-पुणे की ओर से प्रकाशित किया गया है। बढ़िया कागज पर ६४० पृष्ठो मे महर्षि चित्र सहित मुद्रित है।

विशिष्ट जानकारी हेतु निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार द्वारा सम्पर्क करें।

—मन्त्री, आर्य समाज, पिम्परी
महर्षि दयानन्द मार्ग, पिम्परी पुणे, महाराष्ट्र ४११०१७

(पृष्ठ १ का शेष)

अडिग रहे और राय साहब गगाराम के विरुद्ध मुकद्दमा करने का निर्णय किया। अन्त मे राय साहब गगाराम को इश्तहारी मुल्जिम करार दिया गया। इस विवाद के कारण आर्य समाज का पटौदी हाउस का दयानन्द नेशनल हाई स्कूल भी बन्द हो गया था। इस घटना से केदारनाथ गोयनका बहुत दुःखी हुए और उन्होने आर्य समाज से त्यागपत्र दे दिया।

स्व० केदारनाथ जी जहा व्यवसायी के रूप मे सफल रहे, वही धार्मिक साहित्यिक, शैक्षणिक, सामाजिक एव सास्कृतिक सस्थाओ से बराबर सम्बद्ध रहे। १९१२ में उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द जी के पुत्र श्री हरिश्चन्द्र तथा श्री इन्द्र जी के साथ मिलकर नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की थी। १९१४ मे ही देहली मे चादनी चौक मे फुव्हारा के पास मारवाडी पुस्तकालय की स्थापना उन्ही के प्रयास से हुई थी। उह पुस्तकालय आज भी उच्च श्रेणी के पुस्तकालयो मे शिक्षा प्रेमी जनता की सेवा मे सलग्न है।

राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भी आपने प्रशसनीय कार्य किये थे। गाधी जी के स्वदेशी वस्त्र आन्दोलन में भी इन्होने जोरदार कार्य किया था। १९३० के आदोलन मे जब उन्हे सत्याग्रह का आठवा डिक्टेटर बनाया गया तो अग्रेज सरकार ने उन्हें पकड़ लिया और दो साल की सजा सुनाई। बाद में वह महात्मा गाधी जी के साथ ही जेल से रिहा हुए थे। उच्च चरित्र और व्यक्तित्व के धनी स्व० गोयनका की स्मृति को हम प्रणाम करते हैं।

—स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

योग शिविर सम्पन्न

आर्य समाज डी० ए० वी० पब्लिक सी० सै० स्कूल विकास पुरी नई दिल्ली मे सभी अध्यापक-अध्यापिकाओ एवं कर्मचारियो के लिए एक आध्यात्मिक ध्यान-योग शिविर का आयोजन दिनाक १८ मार्च से ४ अप्रैल १९९१ तक किया गया। इस शिविर के योग प्रशिक्षक आचार्य प० रामदेव शास्त्री तथा प० भगवानदेव वेदालकार जी थे। शिविर के निर्देशक डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी के प्रमुख अधिकारी तथा आर्य जगत् के प्रसिद्ध नेता श्री दरबारी लाल जी थे। इस शिविर का समापन समारोह विद्यालय के स्थापना दिवस ४ अप्रैल १९९१ को धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ।

इस समारोह मे आर्य जगत् के प्रसिद्ध वैदिक दार्शनिक विद्वान प्रो० बलसिंह जी, आर्य केन्द्रीय महासभा दिल्ली के महामन्त्री डा० शिवकुमार जी शास्त्री, आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल, डी० ए० वी० मैनेजिंग कमेटी चित्र गुप्त रोड, पहाड़गज, नई दिल्ली के प्रमुख अधिकारी प्रो० वेद व्यास जी, श्री बाबू दरबारी लाल जी, श्री हीरा लाल जी चावला, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री बी०डी० बाली जी आदि महानुभावो ने अपने अपने भाषणो मे शिविर के दोनो सुयोग्य, कार्यकुशल विद्वान् धर्म-प्रशिक्षको के कार्य की भूरि-भूरि प्रशसा की।

इस अवसर पर विद्यालय के दस वर्ष पूर्ण हो जाने पर, आचार्य श्री रामदेव जी शास्त्री के सयोजन मे विद्यालय की कर्मठ, सुयोग्य प्रिंसिपल श्रीमती चित्रा नाकरा जी का, नई दिल्ली पश्चिमी क्षेत्र के आर्य समाजो, धार्मिक तथा सामाजिक सस्थाओ की ओर से पुष्प मालाओ द्वारा भव्य-स्वागत किया गया।

इस अवसर पर आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री, प्रसिद्ध आर्य नेता, आर्य जनता के कर्मठ सगठनकर्ता श्री रामनाथ जी सहगल ने विद्यालय के सभी शिक्षको तथा कर्मचारियों को एक-एक सजिल्द, अत्यन्त आकर्षक महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का "अमर-ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश" देकर एक महान् आदर्श प्रस्तुत किया। इस कार्य की सभी आगन्तुक महानुभावो ने तथा आर्य जनता ने मुक्त कठ से प्रशसा की।

—प० भगवान देव वेदालकार

प्रवेश-सूचना

महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा जि० राजकोट (सौराष्ट्र) मे नए सत्र १९९१-९२ हेतु १ जुलाई ९१ से प्रवेश प्रारम्भ है।

इस विद्यालय मे वैदिक सस्कृति के प्रचारार्थ उपदेशक एव पुरोहित तथा धर्मशिक्षक तैयार किए जाते हैं।

४ वर्ष के पाठ्यक्रम मे वेद, उपनिषद्, व्याकरण, साहित्य एव ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थो का अध्ययन कराया जाता है।

छात्रो की आवास, भोजन, वस्त्र, पुस्तकें, लेखन सामग्री, साबुन व तेल आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था बिना किसी भेद भाव के विद्यालय की ओर से सर्वथा नि:शुल्क होती है। छात्र को स्वय किसी भी प्रकार का आर्थिक बोझ नही उठाना पडता।

अत: दसवी (मैट्रिक) उत्तीर्ण सस्कृत सहित प्रवेश के इच्छुक छात्र विद्यालय की नियमावली एव प्रवेश-पत्र के लिए निम्न पते पर पत्रव्यवहार करें।

—प्राचार्य
म० द० अन्तरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा,
जि० राजकोट गुजरात (सौराष्ट्र) पिन-३६३६५०

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, वाराणसी मे नया सत्र १९९१-९२ हेतु निम्न कक्षाओं मे बालिकाओं के शारीरिक, आत्मिक एव शैक्षिक विकास के लिए प्रवेश प्रारम्भ हैं।

१. नर्सरी तथा कक्षा १ से ५ तक (अग्रेजी माध्यम)

२. शिशु से शास्त्री (बी० ए०) अग्रेजी तथा हिन्दी दोनो माध्यम।

यह विद्यालय उत्तर प्रदेश शासन से मान्यता एव सहायता प्राप्त है। छात्राओं को छात्रावास की सुविधा भी है। विस्तृत जानकारी हेतु पत्र व्यवहार द्वारा विद्यालय विवरणिका मगाए अथवा स्वयं सम्पर्क करें।

—श्रीमती पुष्पावती, मातृ मन्दिर गुरुकुल
डी० ४५/१२६, नई बस्ती रामपुरा, वाराणसी २२०००१

इतिहास के मूर्धन्य विद्वान् चौ० कबूल सिंह जी चले गये

यह सार्वजनिक दुखद सूचना देने में हमें बहुत हार्दिक दुख हो रहा है कि प्राचीन विशाल हरयाणा की सर्व खाप पंचायत के महामन्त्री चौधरी कबूलसिंह जी ९२ वर्ष की अवस्था में ४ अप्रैल १९९१ को साय सात बजे हमें छोड़ गये। आप गत ५-६ वर्ष से बुढ़ाना कस्बे मे रहते थे। १९२४ ई० से इस पचायत के प्रतिष्ठित मन्त्री थे। आपको उक्त हरियाणा का इतिहास कण्ठस्थ स्मरण था। आपने इतिहास के ५ शोधकर्त्ताओ को पी० एच० डी० की उपाधि दिलाई। सैंकड़ों पचायतो मे सत्य न्याय पूर्ण फैसले कराये थे। सैकडो आर्य समाजो, गुरुकुलो मे देश धर्म उपदेश दिया था। १९५१ ई० में आपको चित्तौडगढ तथा मथुरा के किसान सम्मेलन मे ५०० रुपये एव दुशाले से आपका अभिनन्दन किया था। १९४२ में आर्य समाज हर्षोली मे अग्रेजी राज्य के विरुद्ध भाषण से ६ मास का निर्वासन दण्ड मिला था। आप देश धर्म. महर्षि दयानन्द, वेद के सुदृढ ईश्वर उपासक आर्य योगी थे। आपने स्वामी श्रद्धानन्द, दर्शनानन्द के दर्शन किए थे। आजीवन यज्ञोपवीत रखा।

आपके ग्राम सोरम मे ६ अप्रैल को वैदिक पद्धति से आपका दाह सस्कार किया गया। इस अवसर पर कई हजार लोग उपस्थित थे। १८ अप्रैल को उनके घर के सामने हजारों की जनसख्या मे अठारह गावो के प्रधानो द्वारा यज्ञ करके आपके बड़े सुपुत्र फेरूसिह को ६१ सम्मान पगडियां बाधी गई और शोक श्रद्धाजलि सभा मे उनकी दिवगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की गई। उनके दो सुपुत्र तथा एक सुपुत्री, छः पौत्र समर्थ है।

—निहालसिह आर्य अध्यापक,
ग्राम सोरम, त० बुढाना, जिला मुजफ्फरनगर।

आर्य वीर दल ग्राम इटावा द्वारा स्थापित नया तथा सर्वप्रथम
विश्व रिकार्ड

यह अपने आप में एक अद्वितीय बात है जो आर्य वीर दल के युवको द्वारा स्थापित किया गया। वह यह कि जनपद मुजफ्फरनगर (उ० प्र०) अन्तर्गत ग्राम इटावा मे आर्य वीरों द्वारा होलिकोत्सव (पूर्णिमा फाल्गुन शुक्ल १५ सम्वत् २०४७ तदनुसार २९-२-१९९१ को प्रातः ७ बजे से साय ७ बजे तक निरन्तर १२ घटे तक भिन्न-भिन्न परिवारों में २६ यज्ञ (हवन) किए गये जिनमे आर्य वीरो के अतिरिक्त ५० परिवारो के लगभग ५०० धर्म प्रेमियो ने भाग लिया। एक अद्भुत बात यह थी कि किशोरावस्था के आर्य वीरो तथा छोटे-छोटे बच्चो ने तो उत्साह-वशात् पूरे दिन भोजन भी नही किया। १२ घण्टे मन्त्रोच्चारण करना सस्वर मे भजनादि तथा जयघोष करना असाधारण तथ्य है। यज्ञकर्त्ताओ मे प्रमुख मदनपाल राठी आर्य सचालक आर्य वीर दल, कु० अनीता आर्या कक्षा अष्टम्, ओमपालार्य एकादश श्रेणी तथा राधेश्याम आर्य रहे। संयोजन बौद्धिक नायक ब्र० देशपाल आर्य ने किया। स्थान-स्थान पर माताओ, बहनो तथा वृद्ध जनों ने आर्य वीरो के उत्साह को निहारा तथा प्रसाद वितरण किया। अनेक परिवारो ने प्रभावित होकर यज्ञ परम्परा तथा आर्य समाज से जुडने का सकल्प लिया जो पहले अनेक मत-मतान्तरो में बंटे पडे थे। उपरोक्त कार्यक्रम करके आर्य वीरो ने सिद्ध कर दिया कि मात्र क्षात्र शक्ति प्राप्त करना ही नही बलिक आध्यात्मिक क्षेत्र मे भी आर्य वीर दल पीछे नही है। वैसे आर्य वीर दल ग्राम इटावा पहले से ही क्रियाशील है। ध्यातव्य है आर्य समाज ग्राम इटावा छात्रो की समाज है। जिसमे दो तिहाई छात्र सदस्य हैं। जो सदैव अपनी पढाई के साथ साथ सामाजिक कार्यों मे भी आगे रहते है।

धन्य है ऐसे सपूत जिन्होने महर्षि दयानन्द सरस्वती और प० रामप्रसाद बिस्मिल (अमर शहीद) को आदर्श मान कर सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक अल्पवय मे ही १२ घण्टो तक अग्निहोत्रादि करके विश्व कीर्तिमान बनाया।

—मदनपाल राठी आर्य, व्यायाम शिक्षक सा० आर्य वीर दल

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 2-3-5-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३६

साप्ताहिक "आर्यसन्देश" ५ मई, १९९१

सेना क शिक्षाकोर में ग्रुप ए ओर बी में हवलदारों की नियुक्ति परीक्षा में हिन्दी का विकल्प हुआ

महोदय, साप्ताहिक "रोजगार समाचार" के २३ फरवरी, १९९१ के अंक में प्रकाशित विज्ञापन के अनुसार सेना की शिक्षा कोर में ग्रुप ए और बी में नियुक्ति हेतु एक प्रतियोगितात्मक परीक्षा अगस्त, १९९१ में ली जाएगी जिसमें विज्ञान गणित, सामान्य ज्ञान आदि पर आधारित एक प्रश्न पत्र होगा। इसके उत्तर अंग्रेजी अथवा हिन्दी अथवा क्षेत्रीय भाषा में दिये जा सकेंगे। किन्तु विज्ञापन से यह स्पष्ट नहीं है कि अंग्रेजी भाषा के प्रश्न पत्र के विकल्प में हिन्दी अथवा क्षेत्रीय भाषा का प्रश्न पत्र भी होगा अथवा नहीं। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने रक्षा मन्त्रालय को लिखा है कि यदि ऐसा विकल्प नहीं है तो उसकी व्यवस्था कराई जाये।

अनुरोध है कि अधिक से अधिक आवेदकों को हिन्दी माध्यम अपनाने के लिये प्रेरित किया जाये। (जगन्नाथ) संयोजक, राजभाषा कार्य

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, एफ ब्लाई ६८, सरोजनी नगर दिल्ली-२३

आर्य समाज घोसी का वार्षिकोत्सव

शुद्ध वैशाख कृष्ण पक्ष अष्टमी, नवमी और दशमी तदनुसार ८, ९, १० अप्रैल १९९१ को आर्य समाज घोसी जिला (उ० प्र०) का वार्षिकोत्सव धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें काशी के प्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री प० सत्यदेव जी शास्त्री का ओजस्वी भाषण तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री वीरेन्द्र जी का मधुर भजनोपदेश हुआ। अपार जन समूह पर बहुत अच्छा प्रभाव हुआ।

—डा० सुमेधामित्र वेदालंकार

सेवा में—

पुस्तकाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २७ | रविवार, १२ मई, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

पंजाब में चुनाव कराना राष्ट्रहित में नहीं है

—स्वामी आनन्द बोध सरस्वती

आज सारा भारत आतकवाद, अलगाववाद, क्षेत्रवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद की चपेट मे है। ऐसी परिस्थितिया तो उस समय भी न थी जब भारत को आजादी मिली और देश का बटवारा हुआ था। आज भाई का भाई दुश्मन बना हुआ है और जिनके हाथ मे राजनैतिक सत्ता है, उन्हें भी राष्ट्र की समस्याओ का समाधान करने की फुरसत नहीं है क्योकि वे भी किसी न किसी अपनी ही समस्या से ग्रस्त हैं। पजाब मे आतकवाद और अलगाववाद की समस्या कोई नई नही है। हमने बार बार कहा है कि यदि देश मे शान्ति चाहिए, यदि राष्ट्रीय एकता को अखण्ड रखना है तो पजाब को पाच साल के लिए सेना के हवाले कर दिया जाए। स्थानीय लोगो को शासन सौंपने से विघटन की लहर को बढ़ावा मिलेगा क्योकि वहां के लोग नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। उनमें दूरदर्शिता बिलकुल भी नही है। पाकिस्तान की सीमा के साथ साथ एक पाच मील चौड़ी सुरक्षा पट्टी का निर्माण किया जाए और उसमे भूतपूर्व सैनिको को बसाया जाए।' ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज करोल बाग के वार्षिकोत्सव पर व्यक्त किए। उन्होने कहा कि यदि पजाब मे चुनाव स्थगित न किए गए तो आर्यसमाज इसका विरोध करेगा। इस अवसर पर डा० धर्मपाल, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० प्रशान्त कुमार वेदालकार, स्वामी ओमानन्द सरस्वती, डा० भाई महावीर जी, श्री केदारनाथ साहनी, प० यशपाल सुधाशु और स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आर्यसमाज करोल बाग मे २९ अप्रैल से ५ मई १९९१ तक युवा योगी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के निर्देशन मे ध्यान योग शिविर का आयोजन किया गया। रात्रि मे पूज्य स्वामी जी महाराज के प्रवचन हुए। इस अवसर पर महिला सम्मेलन, आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन, श्री वैद्य रामगोपाल शास्त्री जन्म शताब्दी समारोह का भी आयोजन किया गया।

इस सुन्दर आयोजन के लिए श्री अजयकुमार भल्ला, श्री चेतनस्वरूप कपूर और उनके सहयोगियो के लिए शुभकामनाए।

पुण्यभूमि गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार की स्थापना तप.पूत स्वामी श्रद्धानद जी महाराज ने गगापार कागड़ी ग्राम मे १९०२ मे की थी। पर्याप्त समय से वहां के भवन आदि अपेक्षित पड़े हुए थे। इस वर्ष आर्य विद्या सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, हरियाणा और दिल्ली के अधिकारियो ने निर्णय लिया कि इस पुण्यभूमि का पुनरुद्धार किया जाना चाहिए। १२ अप्रैल १९९१ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती महाराज की अध्यक्षता मे एक समारोह भी आयोजित किया गया। इस समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान श्री प्रो० शेर सिह जी, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान डा० धर्मपाल, आर्य विद्या सभा के प्रधान श्री सूर्य देव, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल, स्नातको के प्रतिनिधि श्री मदन मोहन विद्यासागर, कुलपति, श्री सुभाष विद्यालकार, डा० हरिप्रकाश, श्रीमती प्रभात शोभा पडिता ने आर्यजनो को सम्बोधित किया। इस अवसर पर काफी धनराशि भी दान में प्राप्त हुई। सभी दानदाताओ को रसीदे भी भेजी जा चुकी हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मे निम्न महानुभावो की रसीदें रखी हुई हैं। दान दाताओं से निवेदन है कि वे अपनी रसीदे श्री सत्यपाल आहूजा, एकाउण्टैन्ट दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली से प्राप्त कर लें :—

१.	श्री कमल चौधरी दिल्ली	५१/-
२.	दिल्ली से गुप्त दान	१०१/-
३	श्री रामजीदास मलिक, दिल्ली	१०१/-
४	श्री सुमेधा विद्यालकार, दिल्ली	२५१/-
५.	श्रीमती कृष्णा—दिल्ली	१०१/-
६	श्रीमती विमला शाहदरा, दिल्ली	१०१/-
७	डा० भारद्वाज, दिल्ली	१०२/-
८	श्री ओम प्रकाश, दिल्ली	१००/-
९.	आर्यसमाज ग्रीनपार्क, नई दिल्ली	५००/-
१०	श्री सुमन खन्ना, दिल्ली	१०१/-
११.	श्रीमती सत्येन्द्र विद्यालकार, दिल्ली	५०१/-
१२	श्री सोमभल्ला, दिल्ली	५०/-
१३	श्री विजय मधुश्री, दिल्ली	१५००/-
१४	श्री अमरदास जी, दिल्ली	५००/-

इस सूची मे वे नाम नहीं हैं जिनको रसीदे वहीं पर दे दी गयी थी। सभाओ और संस्थाओ की रसीदें भेजी जा चुकी हैं।

आर्य जनता से विनम्र अनुरोध है कि वे इस महान यज्ञ मे अपनी आहुति यथाशक्ति अधिक से अधिक दे। अपनी धनराशि चैक अथवा बैंक ड्राफ्ट के द्वारा गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार के नाम श्री सुभाष विद्यालकार, कुलपति, गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पते पर भेजे। अपने पत्र मे "पुण्य भूमि सुरक्षा निधि" अवश्य लिखें।

जल-वायु प्रदूषण से भी बहुत अधिक बुरा सांस्कृतिक प्रदूषण है। इसे दूर करने के लिए हिन्दी का सर्वत्र प्रयोग बढ़ाएं।

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

ईशोपनिषद्

—अनुवादिका—श्रीमती उषापुरी 'विद्यावाचस्पति'

जड़ चेतन जग के कण-कण में, रहता वह जिसको ओ३म् कहें।
फिर माया मोह भला किसके, जो हर पल उसके साथ रहे॥
काम करें आराम करें फिर भोग करें पर राग न पाले।
सौ बरसो तक जीकर भी यो दुष्कर्मों को काट ही डाले॥
भोगी, रोगी, धन का लोभी, काम में डूबा हो अज्ञानी।
मर कर भी वो चैन न पावे, युग युग तक भटके अभिमानी॥
ज्ञान रूप रति मति का भण्डार, वह स्थिर रहके भी गतिमान।
इन्द्र मुनि सुरासुर देव मनुज, करते नित्य उसी का ध्यान॥
भीतर बाहर दूर पास बस, एक वही दिखलाई पड़ता।
रुकना, चलना, चेतन-जडता, एक वही सब गुण हैं धरता॥
है चिंतन करता जब मानुस, मिलता उसको बस एक मर्म।
यह द्वेष छोड़ सब करें प्रेम, जीवन का सबसे बडा सुधर्म॥
जान लिया उस परम सत्य को, जिसका है यह अंश जगत।
फिर भेद भाव का जाल कहां, उस अंशो का ही वश जगत॥
जब चाहे वह दर्शन दे दे, है ब्रह्म सूक्ष्म है निराकार।
घट घट वासी फिर भी अनजाना, जग नायक है सबका आधार॥
अविद्या माया मे रमते जो, अन्धकार मे डूबे रहते।
जो ज्ञानी पर है अभिमानी, वे भी तम का दुःख ही सहते॥
पाता नित ही दुर्लभ फल है सच्चा ज्ञानी अविद्या नाशी।
जिज्ञासा उसकी मिटती सब, पाकर सत् चित् आनन्द राशी॥
विद्या माया की संगत से, कर्माकर्म को वो जब जाने।
मृत्यु के बंधन को तोडे, व्यापक एक ब्रह्म पहचाने॥
पुत्र पिता माया अनुरागी, अनथलीन कामातुर पापी।
ज्ञान विराग पास न फटके, काम क्रोध तम माया व्यापी॥
ब्रह्म रूप अनन्त गुण निर्गुण, समझे जाने पहचाने ज्ञानी।
नश्वर जग से दूर रहें जब, सुन कर समझे सतो की बानी॥
है जनम लिया इस जग मे तो, होगा परिचय नश्वर से।
भूल भुलैया जड चेतन की, छूटेंगी मिल कर भरता से॥
है करते ज्ञानी नित पुकार, तू अनन्त विमल निराकार।
निरावरण मुख ज्योतिर्मय कर, दर्शन दे प्रभु ! तू अपरम्पार॥
हे जग पालक ज्ञान स्वरूप, परम ओजस्वी तू अमृतमय।
ले समेट तू रश्मि व्यूह को, हैं अंश सब जो तू अंशमय॥
प्राणो से छूटी सब जलती काया, रह जाता यज्ञ स्वरूप एक।
वह याद करे कर्मों के सबके, सब कर्मो की बस यही टेक॥
धन रूप तुही, जगरूप तुही, रक्षक देव विधाता तू है।
मार्ग दिखा तू पाप मिटा दे, शत् शत् वन्दन ! सुदाता तू है॥
कण कण वासी अनन्त ब्रह्म, उससे जन्मा जग सम्पूरण।
सबको माता, सबका पालक, कण कण बांटे फिर भी पूरण॥

—'उत्तरायण' बी-५४८, न्यू फ्रैंड्स कालोनी, नई दिल्ली—११००६५

आर्यों को एक बनाएंगे

—पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी

हम जाति-पाति मिटाएगे, सब आर्यों को एक बनाएगे।
हम सच्चा प्रेम जगाएगे, सब आर्यों को बन्धु बनाएगे॥
हम सध्या हवन सिखाएगे, मूर्ति पूजा हटवाएगे।
ब्रह्मोपासना सिखाएगे, जड पूजा मिटवाएगे॥
आपस मे द्वेष नही रक्खेगे, आपस मे भेद नही रक्खेगे।
दम्पति में प्रेम जगाएंगे. उनके सब भेद मिटाएगे॥
श्रद्धा भाव जगाएगे, वृद्धो को सम्मान दिलाएंगे।
पितरो की पूजा सिखलायेंगे पर मृतक श्राद्ध मिटवाएगे॥

१७५, जयनगर, जबलपुर सिटी

वेदों के ऋषि

—हरिदत्त वि० प्र०—

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती एवं उनके अनुयायी वेदो की उत्पत्ति का समय एक अरब छियानवे करोड आठ लाख बावन हजार वर्ष से अधिक मानते हैं। साथ ही यह भी मानते हैं कि परमात्मा ने अग्नि को ऋग्वेद, वायु को यजुर्वेद आदित्य को सामवेद और अगिरा को अथर्ववेद का ज्ञान दिया, जो सहिता (मंत्र) रूप मे था। इसके साथ ही महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा अन्यत्र लिखा है कि वेद मन्त्रो के साथ ऋषियो के जो नाम लिखे हैं, उन-उन मन्त्रों का प्रकाश उस-उस ऋषि ने किया। अत. उनके स्मरणार्थ ऋषियोके नाम लिखे आ रहे हैं।

यहां अब कई प्रश्न उपस्थित होते हैं जो समाधान चाहते हैं। पहला प्रश्न यह है कि क्या अग्नि आदि चारो ऋषियों को मन्त्रों के अर्थ का प्रकाश परमात्मा ने किया था ? यदि हां, तो उनके नाम प्रत्येक वेद के प्रत्येक मन्त्र के साथ क्यों नहीं लिखे जाते ? पश्चात् में होने वाले ऋषियो ने जिन मन्त्रो के अर्थ का प्रकाश किया, उनसे पूर्व उन मन्त्रो के अर्थ का प्रकाश किसी ने नही किया ? यदि किया तो उनके नाम क्यो नही लिखे जाते ? यदि परमात्मा ने अग्नि आदि चार ऋषियो को मन्त्रो के अर्थ का प्रकाश नहीं किया तो क्या वे चारो ऋषि निरुक्त के अनुसार स्थापुरय 'भारहार: किलाभूत्' नहीं थे ? और परमात्मा ने उनके साथ अन्याय नहीं किया, जबकि वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने मे यह हेतु दिया जाता है कि वह सब सबके लिए है—'यथेमां वाच कल्याणीम्' आदि मन्त्र निरर्थक सिद्ध हो जाते हैं और परमात्मा को न्यायकारी नही कहा जा सकता। चारो ऋषियों से वेदो का ज्ञान ब्रह्मा ने प्राप्त किया, ऐसा उल्लेख भी मिलता है। ब्रह्मा का नाम भी मन्त्रों के साथ नही होता, ऐसा क्यो ? क्या ब्रह्मा को भी केवल सहिता (मन्त्र) मात्र ही प्राप्त हुई थी और वह भी 'भारहार' ही थे ? दूसरा प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि जिन ऋषियों के नाम मन्त्रो के साथ लिखे जाते हैं उन सबका इतिहास वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर की २८ वी चतुर्युगी मे मिलता है। क्या उससे पूर्व व्यतीत मन्वन्तरो और वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर की २७ चतुर्युगियो मे कोई भी ऋषि ऐसा नहीं हुआ, जिसे वेद मन्त्रों के अर्थ का प्रकाश हुआ हो ? यदि जिन ऋषियो के नाम मन्त्रों के साथ लिखे मिलते हैं, वे ब्रह्मा के समकालीन थे अथवा उसके पश्चात काल में हुए और तब तक इन मन्त्रों के अर्थ का प्रकाश न होने के कारण केवल सहिता मात्र का ही अध्ययन-अध्यापन होता था। और तोता रटन्त ही होती थी। वर्तमान चतुर्युगीय पूर्व का इतिहास विस्मृति के गर्भ मे लग गया ? केवल सकल्प 'ओ३म् तत्सत् अद्यश्री ब्राह्मणो' ही शेष रह गया, जिसे हम सृष्टि उत्पत्ति के सम्बन्ध मे प्रमाण मानते हैं।

तीसरा प्रश्न है—यजुर्वेद शुक्ल और कृष्ण सहिता के रूप में उपलब्ध है। आर्य समाज शुक्ल यजुर्वेद को ही मानता है। कृष्ण यजुर्वेद के विषय मे क्या आर्य समाज भी पौराणिक जगत् मे प्रचलित आख्यान को मान्यता देता है।

चौथा प्रश्न—वेद के व्याख्यान अथवा भाष्य को भी वेद मन्त्रों के अर्थ का प्रकाश माना जाना चाहिए अथवा नही तथा उनके कर्त्ताओ को भी ऋषि सज्ञा देकर वेद मन्त्रो के साथ उनके नाम लिखे जाने चाहिए। कहा जाता है कि स्वामी दयानन्द वेद भाष्य लिखते समय जब किसी मन्त्र का अर्थ स्पष्ट नही होता था तो दूसरे स्थान पर जाकर समाधि लगाते थे और ईश्वर से अर्थ का प्रकाश प्राप्त कर पुन: भाष्य लिखवाते थे। इसीलिए उन्हें महर्षि के नाम से पुकारा जाता हैं। क्या वेद मन्त्रो के साथ ऋषि दयानन्द और अन्य विद्वानों के नाम भी लिखे जाने उपयुक्त हो सकते हैं ?

पांचवा प्रश्न—ऋषियो ने जिन मन्त्रो के अर्थ का प्रकाश किया, उसका क्या हुआ ? ब्राह्मण ग्रन्थ तो बहुत पश्चात् के हैं और वह भी अन्य ऋषियों के रचे हुए हैं, अत: समुचित अनुसधान की आवश्यकता है।

बी यू-१६०, विशाखा एन्कलेव, दिल्ली—११००३४

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

धर्म का वास्तविक स्वरूप

सम्पादकीय

हमारी परम्परा मे धर्म का प्रयोग बहुत व्यापक परम्परा मे हुआ है। प्राय: लोग इसे अत्यन्त सीमित और सकुचित कर देते है। धर्म नही सिखाता आपस मे बैर रखना, फिर भी सब से ज्यादा बैर इसी के कारण होते हैं। धर्म आतक नही सिखाता, अलगाव नही सिखाता, फिर भी इसी के नाम पर अलग होने की दुहाई दी जाती है। ऐसा लगता है कि यह लोगो का सकुचित धर्म और वास्तविक धर्म कोई अलग-अलग तत्व हैं। व्यापक विषद दृष्टि ही इस तेजी से बढ रहे विखडन और अविश्वास के अन्धकार को समाप्त कर सकती है।

धर्म के साथ निम्न अर्थ मुख्य मुख्य रूप से जुडे हुए हैं—

१. जो जीवन को धारण करे वह धर्म है।

जो सम्पूर्ण जीवन को सम्भाल कर रखे, वह धर्म है। जीवन जीते हुए, जीवन को पूरे मन से स्वीकार करते हुए, उसकी सार्थकता पहचानते हुए ही धर्म को पाया जाता है। सार्थकता क्या है? सार्थकता मनुष्यत्व की भावना मे है। मनुष्यत्व सबके भाव को अपना भाव मानने की अपेक्षा करता है 'उदार चरिताना तु वसुधैव कुटुम्बकम्।' 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'—साराजहा अपना है'—ये भाव मनुष्यत्व के हैं। सारे संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। यह जो सबके भाव को अपना भाव मानने की दृष्टि है, यही मनुष्यता है। इस भाव से दूर होना नृशंसता है। यही मनुष्यता की हत्या है। इस नकारात्मक भाव से मुक्त होना ही धर्म है। महाभारत मे तीन बार इस धर्म की परीक्षा हुई। युधिष्ठर को धर्म का प्रतिमा न माना गया। ये तीन प्रसग हैं—युधिष्ठिर यक्ष प्रसग, चित्रसेन-दुर्योधन प्रसग, कुत्ते के साथ स्वर्गारोहण। पहले में युधिष्ठिर ने माद्री पुत्र का जीवन मांगा, दूसरे मे उसने बैर भाव रखने वालो की सहायता की, तीसरे मे उसने अभिन्न सखा कुत्ते के बिना स्वर्ग को भी ठुकरा दिया। जो इन तीन परीक्षाओ मे खरे उतरे उसे इस जीवन सग्राम में स्थिर माना गया। आज तो जरा से स्वार्थ के लिए लोग साथी को भूल जाते हैं। अत: यह मनुष्यत्व ही धर्म है।

धर्म की अवधारणा का दूसरा पहलू है, उसका सहज होना। वह तो अन्दर रहता है। महाभारत की धर्मव्याध की कथा इसका उदाहरण है। वह व्याध होते हुए भी धार्मिक है, जबकि तपस्वी ब्राह्मण धार्मिक नही। उस व्याध के जीवन व्यापार में धर्म रचा बसा है।

धर्म का तीसरा पक्ष है—उसकी गतिशीलता। धर्म ऋत और सत्य का एकीकरण है। ऋत का अर्थ है गति, सत्य का अर्थ है सत्ता मे बने रहना। गति ऐसी न हो जो स्वरूप की पहचान नष्ट कर दे। बने रहने का यह अर्थ नही है कि ठहर जाए। इसोलिए दोनों के समन्वय की बात कही गई है।

यदि इन तीनों बातो का अध्ययन करे तो यह समझने मे कोई कठिनाई न होगी कि धर्म मानव मात्र का है।

—डा० धर्मपाल

कृपया पते में सुधार करें

आर्य समाज किरण गार्डन के पत्र व्यवहार का नवीन पता—

चौ० अमरजीत सिंह, प्रधान
आर्य समाज किरण गार्डन,
आर. जैड. ४, मटियाला रोड, नई दिल्ली—११००५९

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(५ मई, ९१ के अक से आगे)

अगले वर्ष तक यथास्थिति बनी रही। मैं यथा सुविधा सभा की अन्तरग की बैठकों मे भाग लेने के लिए भी विभिन्न स्थानो पर जाता था। १९५६-५७ मे जब पजाब मे हिन्दी रक्षा आन्दोलन चला तब भी सभा के मन्त्री श्री भगवती प्रसाद ही थे। १९५९ मे सभा का वार्षिक अधिवेशन गुरुकुल चित्तौडगढ मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गुरुकुल का रजत जयन्ती उत्सव भी हुआ था और प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु आचार्य भगवान देव तथा अन्य अनेक विद्वान् इस समारोह मे सम्मिलित हुए थे। इस अवसर पर आयोजित आर्यकुमार सम्मेलन का उद्घाटन भाषण देने का अवसर मुझे मिला तथा प० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु एव आचार्य भगवान देव जी से व्यक्तिश: सम्पर्क और परिचय हुआ। कुछ मित्रो की सम्मति मे मैं सभा के मन्त्री पद के लिए खडा हुआ। यद्यपि जोधपुर मण्डल की समाजो का मुझे पूर्ण समर्थन प्राप्त था किन्तु प्रान्तीय स्तर पर कार्य करने के लिए सरकारी सेवा मे होने के कारण मेरी मजबूरिया भी थी। उधर सभा के तत्कालीन मन्त्री श्री भगवती प्रसाद विमल पाच वर्षों से सभा की बागडोर सम्भाले हुए थे अत बहुमत से विजयी होने मे उन्हे कोई कठिनाई नही हुई।

कालान्तर मे प० भगवती प्रसाद को भी सभा के मन्त्री पद से हटना पड़ा और अजमेर के श्री शिवचरणलाल मन्त्री बने। मेरा नगर आर्य समाज अजमेर के सदस्यों से भी पूर्ण सौहार्द भाव था जिनमे सर्व श्री प० भगवानस्वरूप न्याय-भूषण श्री शिवचरणलाल श्री चित्तरजन वर्मा तथा श्री धर्मसिंह कोठारी आदि के नाम उल्लेखनीय है। प्रान्तीय सभा से मेरा सम्बन्ध जो १९४८ मे जुडा तो वह १९८२ तक चलता रहा। चण्डीगढ आने के पश्चात् मैं न तो राजस्थान की किसी समाज का सभासद ही रहा है और न प्रतिनिधि सभा की इन वर्षो की गतिविधियो मे मैने भाग ही लिया।

आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर में—

१९५४ से मैं अपने जोधपुर शहर वाले मकान को छोड़ कर मोहल्ला सरदारपुरा मे आकर रहने लगा। मेरे माता-पिता तथा छोटे भाई व उनका परिवार भी हमारे ही साथ रहते थे। यहा आने पर मुझे आर्यसमाज सरदारपुरा की सदस्यता ग्रहण करनी पडी। यहा के अधिकाश सभासद भी मेरे परिचित ही थे क्योकि नगर की सभी आर्य समाजो द्वारा मिल कर मनाये जाने वाले पर्वो उत्सवो और समारोह मे प्राय: उनसे भेंट होती रहती थी। उस समय श्री घीसूलाल जी इस आर्य समाज के मन्त्री थे। वार्षिक निर्वाचन मे मुझे मन्त्री पद पर चुन लिया गया। श्री किशनदास भाटिया प्रधान निर्वाचित हुए। श्री भाटिया एक सम्पन्न व्यापारी तो थे ही, आर्य समाज के प्रति उनकी प्रगाढ आस्था भी थी। आर्यसमाज सरदारपुरा के अन्तर्गत एक कन्या पाठशाला माध्यमिक स्तर तक की चलती थी। पाठशाला के प्रबन्ध को लेकर स्थानीय सभासदो मे मतभेद थे और अधिकाश सभासद प्रधान श्री भाटिया का विरोध करते थे तथापि उनकी बुजुर्गियत तथा आर्य समाज के प्रति प्रेम के कारण लोग उन्हे सम्मान भी देते थे। मैंने आर्य समाज सरदारपुरा मे भी दैनिक सत्सग का क्रम जारी किया। यहा भी वार्षिक उत्सव के समय चन्दा एकत्र करने के लिए हमे मोहल्ले मे घर-घर जाकर धन इकट्ठा करना पडता था। श्री कुवरपाल आर्य, जो अब रेलवे से निवृत्त होकर सन्यासी हो गये है, उस समय रेलवे कार्यालयो से चन्दा एकत्र करते थे। बिजली के महकमे मे कार्य करने वाले श्री रामनारायण आर्य भी सार्वजनिक अभिरुचि के व्यक्ति थे। वे आर्य समाज के मच से किए जाने वाले खण्डन मण्डन को पसन्द नही करते थे और अवसर आने पर अन्य मत वालो के मचो पर जाकर अवसरोचित बाते कहने मे भी उन्हे सकोच नही होता था। १९५४ से १९५६ तक मैं मन्त्री पद पर रहा। १९५६ मे जब मैं वरिष्ठ अध्यापक बन कर नागौर जिले के ग्राम छोटी खाटू चला गया तो मेरे स्थान पर उपमन्त्री श्री विश्वम्भरदयाल जी गर्ग ने मन्त्री पद पर कार्य किया।

(क्रमश:)

भारत केसरी पद्मश्री सतपाल सिंह का अभिनन्दन

श्री सतपाल सिंह का जन्म १० दिसम्बर १९५६ को दिल्ली के बवाना ग्राम मे एक किसान परिवार मे हुआ। इन्हे माता श्रीमती परमेश्वरी देवी तथा पिता श्री हुक्म सिंह पहलवान से धर्मपरायणता एवं कुश्ती का शौक विरासत मे मिला। इनके बड़े भाई श्री प्रताप सिंह व धारासिंह ने इन्हे कुश्ती जगत की गरिमा तक पहुचाने में भरपूर सहयोग दिया। ग्राम मे ५ वीं कक्षा पास कर, बिरला स्कूल कमला नगर मे १२वी तक अध्ययन किया। अपने छात्र जीवन में आप सदा विनयी तथा परिश्रमी रहे।

राष्ट्रीय स्तर पर कुश्ती जगत मे उपलब्धियां—सर्वप्रथम दिल्ली मे ५५ किलो के वजन मे प्रथम तथा राष्ट्रीय स्कूल प्रतियोगिता में ४६ किलो वजन में १९६९ मे स्वर्ण पदक प्राप्त किया। १९७० में ककरौली जिला मुजफ्फरनगर में "हाथ मिलाओ दगल" मे एक ही लगोट से २१ कुश्तिया जीत कर तहलका मचा दिया। १९७१ मे जामा मस्जिद एहतियादी दगल में लगातार ९ कुश्ती जीतने पर सर्वप्रथम "नौ शेरवां" खिताब जीतने का श्रेय श्री सतपाल को मिला। १९७३ मे दिल्ली दगल मे हरियाणा के मुरारीलाल को हराकर 'भारत कुमार' बने। १९७४ मे लुधियाना दगल मे 'रुस्तमे हिन्द' तथा १९७५ मे दिल्ली मे महाराष्ट्र के दादू चोगले को हराकर 'भारत केसरी' बनने का गौरव प्राप्त किया। १९७५ मे ही भारत के सबसे बड़े दगल, जिसमे मा० चन्दगीराम आदि सभी बड़े पहलवानो ने भाग लिया, साहू, महाराज की याद मे हुए दगल कोल्हापुर मे दादू चोगले को हराकर 'रुस्तमे हिन्द' का पद प्राप्त किया। १९७५ में ही रोहतक मे जगदीश मित्तर हरियाणा को ३ मिनट ५ सैकण्ड मे चित्त मारकर 'रुस्तमे हिन्द' पद प्राप्त किया। दादू चोगले के साथ पाच बार आर-पार कुश्ती मे विजय प्राप्त की। १९७५ में कर्नाटक केसरी एव एशिया रजत पदक विजेता चम्बा मुतनाले को चुनौती कुश्ती मे ४ मिनट मे हाथी चिंघाड़ दांव से आसमान दिखा दिया। १९७६ मे दिवान सिंह हरियाणा को ४६ सेकण्ड मे ही चित्त कर दिया। १९७६ के दिल्ली दगल मे दादू चोगले को हराकर 'महान भारत केसरी' बने। १९७६ में ही जयपुर दगल मे विजय कुमार पजाब को हराकर 'महाभारत केसरी' का पद प्राप्त किया। १९७६ मे फिर दिल्ली मे लीग की कुश्ती मे जगदीश मित्तर, विजय कुमार, आनन्दराय को हराकर १ लाख रुपये एव राष्ट्रपति स्वर्णपदक प्राप्त किया। १९७७ मे बम्बई में टोपन्ना गोजगे तथा १९७८ में तेजसिंह को हराकर दो वर्ष लगातार 'भारत भीम' का पद जीता। १९७८ मे कोल्हापुर में महाराष्ट्र के हीरालाल बकर को हराकर 'हिन्द केसरी' बने।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत मे उपलब्धिया—विदेशो मे भी आपने भारत का नाम ऊंचा किया। १९७२ मे ६२ किलो वजन मे म्यूनिक ओलम्पिक मे छठा स्थान, १९७३ मे तेहरान में विश्व चैम्पियनशिप मे ५ वा स्थान, १९७४ मे तेहरान मे ही 'एशियाड गेम्स' मे ८२ किलो मे रजत पदक, न्यूजीलैंड मे राष्ट्रमण्डल खेलों मे रजत पदक, १९७५ मे कुलनबटूर (मगोलिया)मे 'विश्व आमन्त्रित कुश्ती चैम्पियनशिप १०० किलो में रजत पदक, १९७८ मे बैंकाक मे एशियाड गेम्स मे १०० किलो मे रजत पदक, १९७८ मे ही एडमिंटन (कैनेडा) मे १०० किलो में रजत पदक, १९७८ मे ही कोलम्बो (श्रीलका) मे द्वितीय विश्व आमन्त्रित कुश्ती चैम्पियनशिप मे १०० से ऊपर के वजन में स्वर्ण पदक प्राप्त कर भारत का नाम चमकाया। १९७९ मे जालन्धर में प्रथम एशिया कुश्ती चैम्पियनशिप मे १०० किलो से ऊपर वजन मे रजत पदक, १९७९ मे मगोलिया मे रजत पदक, १९८० मे मास्को ओलम्पिक में १०० किलो से ऊपर वजन में प्रथम कुश्ती जीतने पर आंख मे गम्भीर चोट लगने के कारण अगली कुश्तियां न लड सके। १९८२ में आस्ट्रेलिया मे राष्ट्रमण्डल खेलो मे १०० किलो से ऊपर वजन मे रजत पदक जीते। १९८२ मे नई दिल्ली मे 'एशियाड मे १०० से ऊपर वजन मे स्वर्ण पदक जीतकर भारतीय पहलवानो के मनोबल को चार चांद लगाए।

सतपाल जी की मान्यता है कि विदेशो में पर्याप्त शाकाहारी भोजन के अभाव में १० किलो तक वजन कम हो जाता था। इसी कारण अधिकतर रजत पदक जीते। वहां रह रहे भारतीयों के घर में पर्याप्त शाकाहारी भोजन मिलने पर उन्हीं पहलवानों को 'फ्रैंडली मैच' में हराया।

१९७४ में कुश्ती जगत में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए भारत सरकार ने आपको 'अर्जुन पुरस्कार' प्रदान किया, दिल्ली खेल परिषद ने १९७४ से १९८२ तक आपको "दिल्ली का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी" पद से सम्मानित किया। १९८१ में आपको भारत के राष्ट्रपति ने पद्म श्री की उपाधि से अलकृत किया।

आप १९७१ से १९८३ तक ६२, ७४, ८२, १०० और १०० से ऊपर वजन की राष्ट्रीय कुश्तियों में लगातार स्वर्णपदक जीतते रहे। आपने अपनी कुश्ती जीवन में लगभग ढाई हजार कुश्तियां लड़ीं। बचपन में इन्हे पिताश्री हुक्म सिंह ने एक स्वस्थ गाय का घी दूध उपलब्ध कराया। आपको जो भी भोजन मिला उसकी कभी शिकायत नही की। आप मानवता के पुजारी, जाति पांति के विरोधी, गुण ग्राहक ब्रह्मचर्य के प्रति निष्ठावान, गुरु भक्ति तथा लक्ष्य प्राप्ति में सदा लगनशील रहे हैं। गुरु हनुमान के प्रति आप विशेष रूप से कृतज्ञ हैं। साथियों के कहने पर 'किगकाग' नाम की फिल्म देखने के अपराध में गुरु हनुमान ने मेन बाजार में सैकड़ो जूतो की मार दी। जो बाद में इनके जीवन में फूलों का हार सिद्ध हुई। इनका कहना है कि मेरे पिताजी ने सदा अभिमान से दूर और बडो का आदर करने की सीख दी। 'भारत केसरी' बनने पर वे मुझे किसी साहूकार के पास न ले जाकर गाव के दो बुजुर्गों से आशीर्वाद प्राप्त कराने ले गए। पिता श्री ने भ्रातृ प्रेम पर विशेष बल दिया। भारत के इस गौरवशाली वीर पुत्र का आर्य समाज बांकनेर ने १९७५ में "भारत केसरी" बनने पर तथा १९८२ में "एशिया मल्ल सम्राट" बनने पर मीलों लम्बे जुलूस में स्वागत करने का गौरव प्राप्त किया।

आजकल आप दिल्ली के सहायक शिक्षा निदेशक (खेल) पद पर कार्यरत हैं तथा कुश्ती कला के प्रोत्साहन मे जुटे हैं। आपने राष्ट्रीय कुश्ती सस्थान प्रह्लादपुर (दिल्ली) की ६ करोड़ की परियोजना प्रशासन से स्वीकार करा ली है जिसमें लगभग २५० पहलवान आधुनिकतम कुश्ती तकनीक का लाभ उठा सकेंगे। इन पहलवानों को संस्थान से बाहर निकलते ही तुरन्त नौकरी मिल जाएगी। बवाना ग्राम में १७ एकड़ भूमि में 'खेल परिसर' स्थापना करने का भी आप निर्णय ले चुके हैं। आपकी देखरेख में दिल्ली में ८७ कुश्ती केन्द्र चल रहे हैं। कुश्ती के अतिरिक्त अन्य खेलो के सस्थान की भी स्थापना आपके योजनाधीन है।

युवकों को आपका सन्देश है कि ब्रह्मचर्य पालन, सादा जीवन, अच्छी पुस्तकों का पठन तथा बड़ों से गुणग्रहण पर विशेष बल दें। लगनशील युवक की सफलता सदा पैर चूमेगी। बाल्यकाल से ही इन्हें श्री मांगेराम जी आर्य सदृश लोगो की प्रभावकारी शिक्षा रही है कि कुसग से सदा दूर रहकर ही जीवन में सफलता मिलती है। भारत के इस वीर पुत्र एव आदर्श युवक की दीर्घायु एव स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं।

—आर्य समाज बांकनेर, दिल्ली

उपयोगी घरेलू नुस्खे

—श्री नेतराम शर्मा

शुक्राणु यदि कम हो तो बथुआ के बीजों का चूर्ण १० ग्राम छुहारे वाले दूध के साथ सुबह शाम ४० दिन सयम से लेते रहना।

नपुंसकता दूर करने के लिए जंगली पालक के बीज चूर्ण ५ ग्राम छुआरे वाले दूध के साथ सुबह शाम ४० दिन।

बन्द गला खोलने के लिए एक ग्राम फिटकरी पीस कर फाकना ऊपर से १०० ग्राम दूध।

दाद—तुलसी के पत्तों को नीबू के रस में रगड़ कर लगाना।

कान दर्द—तुलसी के पत्तों का रस कान में डालने से कान दर्द ठीक।

माता का दूध कान में डालने से भी कान दर्द दूर।

हाजमा—मीठे आम का रस ५ ग्राम सौंठ २ ग्राम पीस कर मिला कर सुबह एक सप्ताह पीने से खाना हजम।

चुनाव में वोट किसको दें ?

—श्री चमन लाल—

भारत वर्ष जैसे प्रजातन्त्र प्रणाली से प्रशासित देशो के निवासियो के व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय जीवन में मत (वोट) का बड़ा महत्त्व होता है। लोकसभा व विधानसभाओं आदि के लिए विधायको के निर्वाचन हेतु मतदान का काम जनता का एक भारी दायित्व है। अपना मत (वोट) न देने अथवा देने, किसी अयोग्य आचारहीन व योग्य आचारवान व्यक्ति या पार्टी के पक्ष में मत देने से किसी भी राष्ट्र का कलेवर ही बदला जा सकता है। किसी अयोग्य प्रत्याशी (उम्मीदवार) या पार्टी को वोट देने से उनके बहुमत में आने के परिणामस्वरूप बड़े-बड़े शक्तिशाली राष्ट्र भी नष्ट हो जाया करते हैं और ऐसी राजनीतिक दलों का नाम तक समाप्त हो जाता है। देश में अराजकता फैलने के कारण जनता का जीवन अस्तव्यस्त हो जाता है और कोई भी कही सुरक्षित नहीं होता। दूसरी ओर योग्य आचारवान, लोकहित की भावना से भरे व्यक्तियो, पार्टी के पक्ष में वोट देकर और उनको सफल बनाकर सब प्रकार से गिरे अवोन्नत देश को भी सबल, समृद्ध, सम्पन्न एवं खुशहाल बनाया जा सकता है और इसके परिणामस्वरूप जनता जनार्दन के जीवन का नक्शा ही बदल जाता है। राज्य व्यवस्था बड़े सुन्दर ढग से चल सकती है। लोग सुख की नींद सोने लगते है और प्रजाजन महाराजा अश्व पति तथा मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी जैसे रामराज्य में रहने के स्वप्न देखने लगते हैं।

वास्तव में योग्य, सदाचारी, निःस्वार्थी लोगो को वोट देने से ही ऋषि कोटि के नेतागण तथा योग्य देश भक्त शासको का उपलब्ध होना सम्भव होता है जो अपनी योग्यता, शुद्ध आचरण, देश भक्ति तथा लोक सेवा की भावना से युक्त राष्ट्र मे बल (राष्ट्र की भौतिक शक्ति, देश निवासियों का शारीरिक बल, पुलिस व सैन्य शक्ति, शासन चक्र का तेज और सामर्थ्य) और ओज (राष्ट्र के लोगो का मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक बल, उनकी बुद्धिमता, नैतिकता, ज्ञान-विज्ञान) को पैदा कर दिया करते हैं। ऐसे ही बलशाली और ओजस्वी राष्ट्र की नीतियों और राज्य व्यवस्था को देखकर देश-विदेशो के ज्ञानी शासकगण तक उनको नतमस्तक होते हैं और बड़ी सराहना करने लगते हैं। यही तो वेद में कहा गया है—

> भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदंस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
> ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जात तदस्मै देवा उपसनमन्तु॥
>
> अथर्व १९/४१/१

भारत को छोड़कर विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र प्रणाली अपनाने वाले देश सयुक्त राष्ट्र अमेरिका के स्वर्गीय राष्ट्रपति इब्राहिमलिंकन ने वोट (मत) का महत्त्व जताते हुए एक प्रसग मे एक बार कहा था :—"एक मत पत्र एक गोली से कहीं अधिक बलशाली होता है, क्योंकि पिछले (गोली) से तो कुछ ही की हत्या होती है, परन्तु पहले (मत) से तो समूचे राष्ट्र का सर्वनाश हो सकता है"—

अतः सिद्ध हुआ कि एक-एक वोट (मत) भी सावधानी और विचारपूर्वक योग्य प्रत्याशी को न देने के कारण बडे बडे भयकर परिणाम हो जाया करते हैं। इसलिए वोट का सही और योग्य उम्मीदवार को देना ही देश की सच्ची सेवा है।

हमारे देश में भी प्रजातन्त्र प्रणाली की व्यवस्था है। सौभाग्यवश यही शासन पद्धति प्राचीन वैदिक काल से इस विशाल भारत देश में चली आ रही है। प्राप्त जानकारी के आधार पर यह कहना सही ही है कि यह लोकतन्त्र व्यवस्था मध्यकाल के लगभग एक सहस्त्र वर्षो (नन्द, मौर्य गुप्त, मुस्लिम और अंग्रेजो के शासनकाल) को छोड़कर प्राचीन वैदिक काल से लेकर चौथी, पांचवीं शताब्दी तक इस देश में प्रचलित रही है और वास्तव मे यही शासन पद्धति भारत में प्राचीनतम है। सम्भवतः इस तथ्य को दृष्टि में रखकर हमारे संविधान निर्माताओ ने इस प्रणाली को इस देश के लिए उपयोगी मानकर चुना हो। परन्तु यह कटु सत्य है कि वर्तमान में चल रही यह प्रजातन्त्र प्रणाली जनमत का मजाक बनकर रह गई है। भ्रष्टाचार, जात-पात, भाई-चारा, दल-बदल, आयाराम-गयाराम, सत्ता के लालच और पैसे के दुरुपयोग ने इस पवित्र शासन पद्धति को सारहीन, निरर्थक, भोंडी, भयंकर और लंगड़ी करके रख दिया है। मतदाताओं और प्रत्याशियों की योग्यता का कोई विशेष स्तर भी तो निश्चित नहीं है। पैसे के प्रचलन ने इसको बहुत दूषित कर दिया है। किन्हीं लोगों के लिए तो यह एक अच्छा लाभदायक व्यवसाय सा हो गया है। यद्यपि लगभग चार वर्ष पूर्व सरकार ने दल-बदल सम्बन्धी विधेयक पारित करके इस कुरीति पर कुछ अकुश तो अवश्य लगाया है परन्तु हाल में ही समाचार पत्रों के पढ़ने से ज्ञात होता है कि कुछ राजनीतिक दलो के नेता इस विधेयक के विरोध मे खुले आम बोल रहे है। उनका यह भी कहना है कि इसी विधेयक के कारण जनतादल की सरकार का पतन हुआ, लोकसभा भग हुई। अतः इसको संविधान से निकालने की सोच रहे हैं।

अकसर पिछले निर्वाचनो में यह देखने में आया है कि कुछ सत्ता के भूखे लोगो ने राजनीति को एक व्यवसायिक धन्धा बना लिया है, क्योकि वे समझते हैं राजनीतिक सत्ता एक गुरु कुंजी (Master Key) है जिसके द्वारा सब प्रकार की आमदनी के ताले खुल जाते हैं। इस स्वार्थपूर्ति के लिए जाति बिरादरी, मजहब-मिल्लत, लोभ-लालच झूठे काल्पनिक आकर्षक वायदे और कहीं-कहीं तो तरह-तरह की धमकियों से अधिकतर बेचारे अशिक्षित, अभावग्रस्त ग्रामीण तथा झुग्गी-झोपड़ी वालों से वोट लेना एक साधारण सी बात बन गई थी। पिछड़े वर्गों के मतदाताओ को मूक पशुओं की तरह वोट देने पर बाध्य किया जाता रहा। इस प्रकार तथा-कथित जनता द्वारा चुने गए विधायक रुपये-पैसे और कुर्सी-पदों के लालच मे अपने स्वार्थ सिद्धी के वास्ते राष्ट्र हितो को एक ओर रख देते हैं और कुछ भी अनुचित करने से लेशमात्र भी नहीं डरते। और जनता के पास कोई ऐसा कारगर साधन भी तो नही है कि जिसके आधार पर ऐसे आचारहीन विधायकों को अपना पद छोडने पर बाधित किया जा सके। ऐसी दूषित परिस्थितियों में कोई भी विचार-शील, बुद्धिजीवी, आत्मसम्मान रखने वाला व्यक्ति अपने आप को सुरक्षित अनुभव नही करता। बेचारा सर्वदा असन्तुष्ट, पख कटे पक्षी की तरह तडप-तडप कर अन्दर ही अन्दर घुल रहा है। निस्सदेह राजनीति को जन-उपयोगी, स्वस्थ बनाने के लिए इसमें सुधार लाने की नितान्त आवश्यकता भी है।

सर्वप्रथम मतदाता और प्रत्याशी के लिए कुछ योग्यता का स्तर निश्चित होना चाहिए जिससे सही, आचारवान, योग्य व्यक्ति ही चुने जा सकें, रुपया-पैसा, देन-लेन वालों को दोषी घोषित करने वाले विधान को पूरी तरह से लागू किया जावे। समाज ऐसे लोगो को किसी प्रकार का सम्मान न दें। इनका सामाजिक बहिष्कार भी किया जावे, प्रचलित सरकारी नियमो के अनुसार जब कोई व्यक्ति सरकारी नौकरी में नियुक्त किया जाता है तो उसकी स्वास्थ परीक्षा और आचार सम्बन्धी पुलिस जांच रिपोर्ट आवश्यक होती है, इसके नियमानुसार सन्तोषजनक न होने पर कोई भी नियुक्ति सम्भव नहीं होती। परन्तु खेद का विषय है कि हमारे चुने जाने वाले विधायकों और उनमें से बनने वाले मिनिस्टरो के लिए इस प्रकार की जाच का कोई विधान नही है और इसीलिए इसके अभाव मे अस्वस्थ और सदिग्ध आचारवाले (Charge Sheeted) व्यक्ति भी चुने जाते हैं जो बाद मे बडे हानि-कारक सिद्ध होते हैं। अत इस प्रकार की जाच सम्बन्धी विधान और कुछ अन्य आचार संहिता को लागू करके ही राजनीति को स्वस्थ बनाया जा सकता है। वरना आज की राजनीति एक तमाशा हो गई है जो जनता का सरासर अपमान है। सक्षेप मे दूसरे शब्दों में यूं कह सकते हैं कि आज की भारतीय राजनीति और भ्रष्टाचार एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं।

लो! भ्रष्टाचार ने एक और अगडाई ली और मात्र १८ मास की अल्प अवधि मे जनतादल की दो सरकारें अपने को सत्ता मे रखने के लोभ लालच मे नानाविध, उचित, अनुचित गठबन्धन करके राष्ट्र विरोधी सारहीन नीतियो के अपनाने के फलस्वरूप टूटी और अपनी ५ वर्ष की पूरी अवधि समाप्त होने से पूर्व ही लोकसभा भग हुई। और देश का शासन चलाने के निमित्त और कोई संविधा-निक विकल्प न होने के कारण बडे सोच-विचार के पश्चात् लोकसभा के चुनाव की घोषणा कर दी गई। इस मध्यावधि चुनाव से अरबो रुपये के खर्चीले चुनाव का भार जनता पर उस विकट समय मे पड़ा जबकि देश की आर्थिक स्थिति बड़ी गम्भीर और पतली है—गगनचुम्बी, कमरतोड़ महगाई ने साधारण व मध्यम श्रेणी के लोगो के जीवनो को अस्तव्यस्त कर दिया, तो बेचारे अभावग्रस्त लोगो की बात ही क्या? परन्तु इन तथाकथित देश के कर्णधारी नेताओं के तो वही ठाठ-बाट

(शेष पृष्ठ ६ पर)

वेद प्रचार

२८,२९ मार्च १९९१ को शाहबाद दौलतपुर के स्थानीय आर्य समाज का वार्षिकोत्सव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान मे सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी ने अपने विभाग के भजन मण्डली (श्री सत्यदेव स्नातक, प० श्री चुन्नीलाल आर्य) ने भजनो के माध्यम से वेद प्रचार किया।

३०, ३१ मार्च को कन्या गुरुकुल नरेला तथा ८ अप्रैल से १४ अप्रैल तक आर्य समाज रघुबीर नगर, ११ से १४ अप्रैल अवन्तिका, २०, २१ अप्रैल बिहारीपुर तुकमीरपुर मे स्थानीय आर्य समाज का शिलान्यास सम्पन्न हुआ। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार मण्डल अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सहित भजनोपदेशक श्री सत्यदेव स्नातक श्री ज्योति प्रसाद जी प० चुन्नीलाल जी आर्य आदि उपस्थित थे।

१५ से २१ अप्रैल आर्य समाज बाजार सीताराम का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, महन्त अवैद्य नाथ जी, सुश्री उमा भारती तथा अनेक भारत विख्यात लब्ध प्रतिष्ठित विद्वानो ने कार्यक्रम मे पधार अपने सारगर्भित उद्बोधन द्वारा राष्ट्र को नई चेतना का सन्देश प्रदान किया।

(पृष्ठ ५ का शेष)

और वैभव का जीवन चल रहा है, किसी प्रकार की कोई कमी दिखाई नही देती "कोई मरे, कोई जिए, सुथरा घोल पताशे पीए' यह कहावत पूरे तौर पर लागू होती है।

लोक सभा चुनाव इसी मई माह मे होने जा रहा है। सभी राजनीतिक दल अपने अपने तौर पर सत्ता को हस्तगत करने की होड मे लगे हैं। कोई स्थायित्व का राग अलापने और देश की अखडता और एक जुटता का ढोल पीटकर नानाविध तालमेल करके अपना वोट बैंक तैय्यार करने मे तल्लीन हैं; तो कोई पद-दलितो, पिछड़े वर्ग के लोगों को सामाजिक न्याय (Social Justice) दिलाने हेतु मण्डल आयोग की सिफारिशो के आधार पर आरक्षण का डमरू बजाकर वोट बटोरने मे लगे हैं; तो अन्य कोई ग्रामीण-किसानो के हितो की ढपली बजाकर वोट जुटाने मे व्यस्त हैं तो कोई और अन्य राजनीति मे नैतिकता लाने और शुद्ध राष्ट्रीयता के मधुर गीत गाने वाले रामनाम की बासुरी बजाकर मतदाताओ को मोह रहे हैं।

याद रहे कि ये सब राजनीतिक मदारी हैं, इन सबके वाद्य यन्त्रो की ध्वनि मे कोई सार नही हैं। इन सभी के घोषणापत्र भले ही आकर्षक हो परन्तु ये सब देश मे विघटन की आग और साम्प्रदाय का विष फैला रहे हैं। देश की अखण्डता की दुहाई देने वाले ही देश को अपनी गलत नीतियों के कारण खडित करने में लगे हुए हैं। और इस देश मे रहने वाले भिन्न-भिन्न वर्ग के लोगों मे वैमनस्य की भावना और मतभेद व घृणा की खाई पैदा करदी है जो पहले देखने में कभी नहीं आई थी। शहरी और देहाती आदमी का चोली-दामन का सा सम्बन्ध रहा है। एक दूसरे के पूरक हैं। आजतक ये दोनों प्रकार के लोग अपने सद्भाव व प्रेम से रहते रहे परन्तु तथाकथित कुर्सी के भूखे नेताओ ने इन दोनो में भी ऐसी खाई पैदा करदी है कि जिस कारण एक दूसरे से कटने लगे हैं।

यह सब देश की अखडता व स्वतन्त्रता के घातक और विनाशकारी चिन्ह हैं। देश की ऐसी भयकर स्थिति मे सब देश भक्तो, विचारशील लोगों विशेषकर युवा वर्ग का एक भारी उत्तरदायित्व है कि इन सब के आकर्षक परन्तु विनाशकारी हथकडो से सावधान होकर अपने मत का प्रयोग करें और देश को अराष्ट्रीय तत्त्वो के हाथो में जाने से बचाने का पूर्ण प्रयत्न करे।

अत: इस मास (मई मास) में लोकसभा तथा कुछ विधान सभाओ के चुनावों मे उम्मीदवारो को मत देते समय बडे सतर्क और सावधान होने की नितान्त आवश्यकता है। उन्हे गम्भीरतापूर्वक प्राचीन मूल्यो को ध्यान में रखते हुए किसी प्रकार के प्रलोभन में आए बिना स्वतन्त्रतापूर्वक अपने बहुमूल्य मत का सही प्रयोग करना चाहिए, यही देश की सेवा व सच्ची भक्ति है। देश के गौरव को बढ़ाने वाली नीतियो और जनता के हितो के कार्यक्रमो को दृष्टि में रखकर काम करने वाले आचारवान योग्य व्यक्ति को वोट देना ही सच्ची मानवता भी है।

—एच-६४, अशोक विहार दिल्ली ५२

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय श्री सम्पादक जी महोदय,

सप्रेम नमस्ते। अत्र कुशलं तत्रास्तु। आशा है आप स्वस्थ एवं सानन्द होगें। आप द्वारा प्रेषित आर्य सन्देश का ऋषि बोध विशेषांक मिला। ऋषि की कार्यो की जितनी भी प्रशसा की जाये कम है। आर्य संदेश पत्रिका आर्य जगत की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। यह पत्रिका पाठको के लिए उत्तम स्वाध्याय है।

आर्य समाज, स्थापना दिवस एव धर्मवीर प० लेखराम सयुक्तांक प्राप्त हुआ है। यह अक भी बेजोड़ ऐतिहासिक दस्तावेज, दुर्लभ लेखो से ओत-प्रोत होने के कारण बहुत पसन्द आया।

विश्व के कल्याण का आपका कार्य सराहनीय है। बहुत-बहुत धन्यवाद। आर्य सदेश आपके श्रेष्ठ सपादकत्व मे निरतर प्रगति करे। यही प्रभु से प्रार्थना है।

—विनीत कुमार मन्त्री
आर्य समाज, गोडल—३६०३११

ढोंग, पाखंड समाप्त हो

महोदय,

आज के युग में गुरुडम का पाखण्ड जोर शोर से फैल रहा है। रजनीश, सत्य साई, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी सस्था, युग निर्माण योजना आदि सभी अपनी अलग-अलग खिचडी पका रहे हैं। राष्ट्रवाद का इन संस्थाओ में सर्वथा अभाव है थोड़ी सी रूढ़िया पाल कर अपना कुनबा बढ़ाते जा रहे हैं।

अब समय है कि इस प्रकार का ढोंग पाखड समाप्त होकर वैदिक विचारधारा का प्रचार हो।

—वेदप्रकाश अग्रवाल
जी/५ लोक निर्माण आवास मंडला (म० प्र०)

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

निर्वाण शताब्दी-समारोह

(चण्डीगढ़ में २९, ३० जून १९९१)

मान्यवर! आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य ऋषि मिशन के लिए समर्पित युवा मनीषी प गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह दिनाक २९, ३० जून को चण्डीगढ की समस्त आर्य समाजो एव आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से डी० ए० वी० कालेज, सैक्टर १०, के परिसर में विशाल स्तर पर केन्द्रीय आर्य सभा चण्डीगढ के तत्त्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, आर्य जगत् के मूर्धन्य सन्यासी, विद्वान वक्ता तथा गायक पधारेंगे। इस अवसर पर विद्वानो के भाषण, विचार गोष्ठियां, कवि सम्मेलन भाषण प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेंगी। अतः आपसे निवेदन है कि आप अपने आर्य समाज तथा शिक्षण सस्था से सम्बद्ध सभी महानुभावों को इस अपूर्व समारोह में सम्मिलित होने की प्रेरणा करें तथा दिवंगत प० गुरुदत्त विद्यार्थी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए चण्डीगढ़ जैसे प्राकृतिक सुषमा सम्पन्न आधुनिक नगर में पधारें।

इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली स्मारिका के लिए अपना विद्वतापूर्ण लेख तथा अपने व्यावसायिक सस्थान का विज्ञापन हमें अवश्य भेजें।

नोट—आपको ज्ञात होगा कि ६, ७ अक्तूबर १९९० को यह शताब्दी कार्यक्रम होना था, किन्तु आरक्षण विरोधी आन्दोलन के अशान्त वातावरण एव कर्फ्यु के कारण स्थगित कर दिया गया था। अब २९, ३० जून १९९१ को अवश्य पधारें।

—डा० भवानीलाल भारतीय
(स्मारिका सम्पादक)

कुक्षी में आर्य समाज की स्थापना

भारतीय संस्कृति के पुनर्स्थापन, चरित्र निर्माण, शारीरिक सौष्ठव, आत्मोन्नति, सामाजिक उत्थान एवं वैदिक ज्ञान के प्रति जन-जागरण, विशेष कर युवा वर्ग में इनके प्रति चेतना जागृत करने के उद्देश्य से विगत दिवस धार जिले के कुक्षी तहसील मुख्यालय पर आर्य समाज की स्थापना की गई।

श्री धन्नालाल चौधरी के निवास पर सम्पन्न हुई संभ्रात नागरिकों की बैठक मे आर्य समाज की स्थापना का निर्णय किया गया। इस बैठक मे मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल प्रधान स्वामी सत्यानन्द जी, आर्य समाज धार के प्रधान पं० बालकृष्ण चतुर्वेदी एवं मन्त्री श्री भगवन्त राव जी तिवारी विशेष रूप से उपस्थित थे।

बैठक में लिए गये निर्णय के अनुसार नव गठित आर्य समाज के वर्ष १९९१ के लिए सर्व श्री शरद गुप्ता एडवोकेट प्रधान, धन्नालाल चौधरी उपप्रधान, नारायण प्रसाद मधुप मन्त्री, हरनरेश बामनिया उपमन्त्री, चिमनलाल वर्मा कोषाध्यक्ष, एवं श्री अम्बाराम जी पाठक, व श्री राजेन्द्र द्विवेदी अन्तरंग सभा के सदस्य सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए।

वार्षिक निर्वाचन

जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा गोरखपुर की साधारण सभा की बैठक वार्षिक निर्वाचन हेतु चौरी चौरा स्थित प्रधान कार्यालय गिरधारी लाल प्रदत्त भवन पर आयोजित हुई जिसमें निम्नांकित पदाधिकारी निर्विरोध निर्वाचित हुए—

१. पं० श्री द्विजराज शर्मा पुरोहित—अध्यक्ष
२. रमेश प्रसाद शुक्ल—मन्त्री
३. श्री मारकन्डे आर्य—कोषाध्यक्ष

आर्य समाज नीलोखेड़ी का वार्षिक चुनाव २१-४-९१ को सम्पन्न हुआ। इसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए।

१ श्री एम० डी० तुली—प्रधान
२. श्री सुभाष चन्द्र सिंह—मन्त्री
३. प्रताप चन्द्र—कोषाध्यक्ष

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 9-10-5-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३९

आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश का ग्रीष्मकालीन चरित्र-निर्माण प्रशिक्षण शिविर

दिनांक : ३१ मई शुक्रवार से ९ जून १९९१ रविवार तक

स्थान . महाशय चुन्नीलाल बाल मन्दिर हायर सैकन्ड्री स्कूल, एल० ब्लाक हरिनगर, दिल्ली-६४

शिविर संरक्षक : भारत के प्रसिद्ध व्यायामाचार्य डा० देवव्रत आचार्य

शिविराध्यक्ष . श्री बाल दिवाकर हंस—प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्य वीर दल ।

बन्धुवर, हमे गर्व है कि भारत माता की कोख सदा वीरो को जन्म देती रही है। ऐसे वीरो को उत्पन्न करने के साथ-साथ उनके निर्माण मे उत्तम सस्कारो की आवश्यकता होती है। इसके लिए आज की विषम परिस्थितियो में 'आर्य वीर दल' द्वारा देश मे श्रीराम जैसे आदर्श, श्रीकृष्ण जैसे नीतिज्ञ, महाराणा प्रताप व शिवाजी जैसे देश भक्त भगतसिंह व रामप्रसाद बिस्मल जैसे शहीद बाल हकीकतराय जैसे बलिदानी, स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे ईश्वरभक्त और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे संस्कृति रक्षको को उत्पन्न करने के लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखने वाले आर्यजनो की ओर से इस शिविर का आयोजन किया गया है। आपसे सानुरोध निवेदन है कि आप इस पुनीत यज्ञ मे भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

शिविर के मुख्य आकर्षण योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, जूडो-कराटे, कुंगफू, तलवार, छुरी, स्तूप आदि का प्रयोग युवकों को शारीरिक दृष्टि से पुष्ट करने के होगे।

उद्घाटन समारोह

शनिवार १ जून १९९१ . प्रातः ८ बजे से ९ बजे तक यज्ञ।

अध्यक्षता : स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती।

ध्वजारोहण : श्री बाल दिवाकर हंस—प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल।

उद्घाटन भाषण : श्री श्रीधर जी।

मुख्य अतिथि : आर्य वीर महाशय राजीव जी—डायरेक्टर, एम० डी० एच० प्राइवेट लिमिटेड।

वक्ता : श्री सूर्यदेव मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली व श्री खुशीराम।

समापन समारोह

रविवार ९ जून १९९१ . मध्याह्न ११ बजे से आरम्भ होगा।

अध्यक्षता स्वामी आनन्द बोध सरस्वती (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)।

मुख्य अतिथि : राष्ट्र-भक्त श्री सुरेन्द्र आर्य (डायरेक्टर, जय भारत मारुती लिमिटेड)।

उद्बोधन . डा० वाचस्पति उपाध्याय।

वक्ता . डा० धर्मपाल जी (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली)

श्री आर्यवीर भल्ला (प्रधानाचार्य, डी. ए. वी. स्कूल सेक्टर १४, फरीदाबाद)

महाशय धर्मपाल जी (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली)

आचार्य हरिदेव जी (दयानन्द वेद विद्यालय, गुरुकुल, गौतम नगर)

शिविर मे सम्मलित होने वाले युवक इस पते पर सम्पर्क करे—

रणजीतसिंह राणा कार्यालय सचिव,
आर्य समाज दीवान हाल। फोन : २३७४४०

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २८ | रविवार, १९ मई, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान में आर्यसमाज को आगे आना चाहिए

—सूर्यदेव

आर्य समाज मन्दिर शकरपुर दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज ने विशिष्ट योगदान दिया था। यह बात आर्य समाज नहीं कहता यह बात सीतारमि पट्टाभि रमैया ने कांग्रेस के इतिहास मे लिखी है। यही बात बाबू जगजीवन राम ने कांग्रेस की स्थापना शताब्दी पर कही थी। आज भी राष्ट्र की समस्याओं के समाधान के लिए आर्यसमाज को आगे आना चाहिए। यदि आप ध्यान से देखें तो आपको पता लगेगा कि राष्ट्रीय आन्दोलनों के पीछे सदा ही आर्य-समाज का हाथ रहा है। हैदराबाद में हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार पर जब रोक लगी थी तो कौन सामने आया था—आर्यसमाज। सिखों के गुरु का बाग आन्दोलन को नेतृत्व देने के लिए कौन आगे आया था—आर्यसमाज। मीनाक्षी पुरम् मे धर्मान्तरण की समस्या उत्पन्न हुई तो—आर्यसमाज सामने आया। पोप पाल द्वितीय के आगमन पर काला हाण्डी क्षेत्र में ईसाई धर्म परिवर्तन की समस्या आई तो आर्य समाज सामने आया। उस समय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले (स्वामी आनन्द बोध सरस्वती) और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, हरियाणा प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह तुरन्त उच्चाधिकारियों से मिले और ईसाई धर्मान्तरण को रोका। इस अवसर पर आर्यसमाज ने २५००० (ढाई हजार) ईसाईयों को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। पंजाब के विस्थापित भाई आए, आर्यसमाज ने सहायता की। कश्मीर के विस्थापित भाई आए आर्यसमाज ने सहायता की। सऊदी अरेबिया मे रामकुमार भारद्वाज को फांसी की सजा सुनाई गई थी। उसका अपराध यह था कि उसके थैले में सत्यार्थ प्रकाश और गीता मिले थे। रामकुमार भारद्वाज ने किसी प्रकार से आर्यसमाज को सूचना भेजी और आप देखिए रामकुमार भारद्वाज तीन दिन के अन्दर दिल्ली में था।

इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल मुख्य अतिथि थे। उन्होने कहा कि सबसे बड़ी बात है—मानवता। मानवता ही सब समस्याओं का निदान है। मनुष्य स्वार्थी न बने वह सबकी सोचे। बस यही मानव धर्म है। और यही वैदिक धर्म है। आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने कहा कि राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान आर्यसमाज के मार्ग पर चल कर ही प्राप्त किया जा सकता है। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती ने ध्वजारोहण किया। श्री विशम्भर नाथ भाटिया, श्री रतनसिंह शाण्डिल्य, श्री चमन लाल ग्रोवर, श्री प्रसन्न कुमार जी आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। पं० इन्द्रदेव जी ने यजुर्वेद शतक यज्ञ कराया। तथा पं० सत्यदेव स्नातक ने रामायण कथा के माध्यम से वेद-प्रचार मे योगदान किया।

होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी का उद्घाटन

आर्यसमाज नारायणा विहार मे होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी का उद्घाटन आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल ने किया। उन्होने डिस्पेंसरी के सचालन हेतु १०००/-रु० प्रति मास आर्थिक सहायता भी देने की घोषणा की। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव और केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री डा० शिव कुमार शास्त्री ने भी आर्य जनता को सम्बोधित किया। आर्य समाज नारायण विहार के सभी अधिकारियो एवं कार्यकर्त्ताओ में विशेष उत्साह था। आर्य समाज के अधिकारियों ने जनसेवा के कई अन्य कार्यक्रम हाथ में लिए हुए हैं।

आर्यसमाज किरण गार्डन

आर्यसमाज किरण गार्डन के प्रधान चौ० अमरजीत सिंह के निवास स्थान पर प० अशोक कुमार विद्यालंकार के पौरोहित्य मे यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य भाईयो के लिए प्रीति-भोज की भी व्यवस्था की गई। जिसमे दूर-दूर से भाईयों-बहनो ने पधार कर भाग लिया।

चौ० अमरजीत सिह भटियाला गाव के ग्राम सभा के भी प्रधान हैं। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर भी आर्यसमाज को विशेष सहयोग दिया था। तथा भविष्य में भी ऐसे ही सहयोग देने का आश्वासन दिया है। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने परिवार की सुख समृद्धि की कामना की और अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

कृपया ध्यान दें!

हमारी आर्य सन्देश के सभी पाठको/ग्राहकों से प्रार्थना है कि वह अपनी सदस्यता शुल्क शीघ्र से शीघ्र सभा कार्यालय मे भेजने का कष्ट करें। पाठको को पत्र द्वारा सूचित किया जा चुका है। कई पाठको को गत तीन-तीन वर्षों का शुल्क प्राप्त नही हुआ है। अत: हमें शीघ्र शुल्क भेज कर हमारा उत्साह बढ़ाए। नैतिकता के नाते पाठकों को स्वयं ही बिना लिखे प्रति वर्ष शुल्क समय पर भेज देना चाहिए। आपकी सुविधा के लिए शुल्क की प्रत्येक रसीद पर ही आपकी शुल्क की समाप्ति तिथि (कब से कब तक) लिख दी जाती है।

नए ग्राहक भी निम्न पते पर शुल्क भेज कर नियमित ग्राहक बन सकते हैं। आशा है हमें पूर्ण सहयोग देंगे। धन्यवाद।

पता:—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

जल-वायु प्रदूषण से भी बहुत अधिक बुरा सांस्कृतिक प्रदूषण है। इसे दूर करने के लिए हिन्दी का सर्वत्र प्रयोग बढ़ाएं।

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

विजय हमारा जीवन हो

—राजेश प्रताप सिंह—

कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनजयो हिरण्यजित् ॥ (अथर्व० ७।५०।८)

अर्थात् मेरे दायें हाथ मे कर्म और बायें हाथ मे विजय है। मैं अपने साहस और बल से, परिश्रम और शक्ति से गौओ, इन्द्रियो या भूमि पर विजय प्राप्त कर लूगा। मैं घोडो को जीत लूगा। मैं ससार की सम्पत्तियों पर अपना अधिकार जमा लूगा और मैं विश्व की खानो में विद्यमान सोने और अन्य बहुमूल्य वस्तुओं पर अधिकार कर लूगा।

एक बार एक शेर का बच्चा जंगल में अकेला खेल रहा था। उसकी मां सो रही थी। बच्चा इधर-उधर भटक गया। वह रोने लगा। सामने से आती हुई भेड ने उसे देखा। उसके बच्चे मर चुके थे। उसके हृदय में ममता उमड़ी। भेड़ ने उसको पाला पोसा। वह भेड से भी बड़ा हो गया। एक दिन अचानक उस जगल मे एक बडा शेर आया, सामने की पहाडी पर खड़े होकर गरजा। उसकी आवाज ने उसके स्वभाव के उस वीरत्व को झझोड कर जगा दिया और उसने अनुभव किया कि उसमे एक ऐसी महान् शक्ति छिपी है जिसका आज तक उसे पता न था। वह एक ही छलाग में शेर के पास जा पहुंचा। शेर की दहाड ने उसके सोये वीरत्व को जगा दिया। वह भेड का जीवन छोड़कर सिंह बन गया। अब उसे चाहिए था—सिंह का जीवन, स्वच्छन्द विचरण और वन का विशाल राज्य।

ठीक इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य मे उसका पुरुषत्व छिपा रहता है। ससार मे विजय प्राप्त करने के लिए अपने भीतर के महान व्यक्तित्व को जाग्रित कीजिए, जीवन की योजना बनाइये और विजय की ओर बढिए। अवश्य विजय होगी।

उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द का जीवन विपत्तियो एव अर्थाभाव की एक जीवित जागृत कहानी है। साहित्य के इस महान् पुजारी को धन की कठिनाइयो मे पडकर अपना नया कोट तक बेचना पड़ा। चार-चार मील पाण्डेपुर तक पैदल आना-जाना पडा। परन्तु उस कर्मवीर ने हिम्मत न हारी, सघर्ष करता हुआ अपनी साधना मे लगा रहा। आज उसकी रचनाए विश्व साहित्य के शिखर पर है। उनका मन्त्र था, कार्य करो, आगे बढो और विजय प्राप्त करो।

जीवन में पराजय उनकी मिलती है, जो निराश हो जाते है, और अपनी शक्ति की उपेक्षा करते हैं। इसीलिए कुछ विद्वानो ने हतोत्साह होने वाले को मानवजाति का सबसे बड़ा शत्रु कहा है। जब आप जीवन मे विजय प्राप्त करने के लिए बढ़ रहे हों तो दृढ सकल्प कीजिए कि उसे अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर पूरा करेगे।

'शिकागो ग्रैंड ट्रक रेलवे' के प्लेटफार्म पर एक लडका सवेरे से शाम तक अपनी जीविका के लिए अखबार बेचा करता था। वह परिश्रमी, उत्साही और लगनशील था। उसने वर्णमाला सीखी। अखबार बेचने के बाद पढने लगा। पुस्तको मे उसकी अभिरुचि बढी और एक रसायनशाला मे जाकर उसने एक अविष्कार कर डाला। एक निर्जीव पदार्थ में आवाज भरकर उसे फिर से निकाल लेना ही उसका अविष्कार है। विज्ञान के ससार मे विजयी होने वालो मे उसका आविष्कार है। विज्ञान के ससार मे विजयी होने वालो मे उसका नाम अमर है—थामस अल्वा एडिसन।

सयुक्तराष्ट्र अमेरिका का राष्ट्रपति अब्राहिम लिकन निर्धन लकड़हारे का बेटा था। निर्धनता के बीच भी इस लकडहारे के बेटे ने अपनी आन्तरिक शक्ति का विकास किया। दिन में मजदूरी और रात मे अध्ययन। उसने स्वय शिक्षा प्राप्त की, दासों को शिक्षित किया और अन्त मे दास प्रथा को समूल नष्ट कर दिया। इतना ही नही अपने जीवन मे बोझा ढोने वाला, मेज कुर्सियां साफ करने वाला, दासो के साथ भूखा रहने वाला, पेडो की छाया मे अध्ययन करने वाला यही व्यक्ति सयुक्त राष्ट्र अमेरिका का राष्ट्रपति अब्राहिम लिकन हुआ।

वेद मे एक मन्त्र आया है :—

'अहमिन्द्रो न पराजिग्ये।'

अर्थात् मैं इन्द्र हू और मै कभी पराजित नही हो सकता। आप अवश्य जीतेंगे, अवश्य विजयी बनेंगे। सफलता और असफलता मनुष्य के हाथ की वस्तु है। इससे न भाग्य का सम्बन्ध है, न ईश्वर का सम्बन्ध है। असफलता तो कर्महीनो के हाथ लगती है, कर्मवीरों के चरणों को सफलता चूमती है। योगी कवि ने कहा है :—

सम्मुख था तूफानी सागर, कूद पड़ा मैं दृढ़ निश्चय कर,
मैं असफल हो लौटूं इससे अच्छा लहरो बीच समाऊ।

अथर्व वेद के ८।८।२४ के मन्त्र मे कहा गया है :—

इतो जयेतो वि जय सं जय जय स्वाहा।
इमे जयन्तु परामी जयन्ता स्वाहैभ्यो दुराहामीभ्यः ॥

अर्थात् हे वीर इधर जय प्राप्त कर। उधर जय प्राप्त कर, कमाल की विजय हासिल कर। जीत, जीत हर क्षेत्र में जीत, शाबाश! विजयी बन, संसार मे तेरी कीर्ति का गान हो और तेरा यश फैले! हमारे योद्धा विजयी हो! शत्रु पराजित हों! इन योद्धाओ को कीर्ति प्राप्त हो! शत्रुओ का अपयश हो!

विजय हमारा चरम लक्ष्य हो!
विजय हमारा जीवन हो!
जिस पथ पर हम बढ़ते जावे,
अर्पित अपना तन मन हो।

ग्रा० – हाटा, पो०—नदौली (देवरिया)

अनवरत चलता रहे

—भगवान देव "चैतन्य"

ओ३म् त्वामिद्धि त्वायवो अनुनोनुवतश्चरान।
सखाय इन्द्र कारव ॥ (ऋ० ८-९२-३३)

सखाओ के परम सखा मेरे प्रभु देव!
कण-कण सचालक अग-अग सवाहक देव!!
हम मे अपने से गुणों का सचार कर दो,
साधना व कर्मठता के अगार भर दो।

दिन रात आपका ही स्तुति गान करें,
जीवन मे सदा ही पवित्र भक्ति पान करें,
सखा कहलाने का गौरव प्राप्त करे
आप जैसा ही यश सौरभ, प्राप्त करें,

वाणी से ही नही कर्म से स्तोता बनें,
आत्मोपदेश सुनने वाले श्रोता बनें।
हमारी भक्ति कर्मशील सक्रिय रहे,
ताकि आपको सदा सर्वदा प्रिय रहे।

आपके भक्त सखाओ में प्रेम बना रहे,
परस्पर कल्याणभाव से मन सना रहे।
गुणभाव गाते संसार मे विचरते रहे,
पवित्र से पवित्रतम बन सब निखरते रहे।

सदा मिलकर तेरी ही परिचर्या करें,
नाम स्मरण से सुवासित दिनचर्या करे।
क्रियामय भजन अनवरत चलता रहे—
भक्ति का यह प्रवाह निरन्तर बहता रहे।

१६०/एसबी सुन्दरनगर १७५४०२ (हि० प्र०)

सम्पादकीय

सारस्वत साधना के प्रतीक

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार के सर्वोच्च पद, परिद्रष्टा पद पर सुशोभित हैं। आपका जन्म सम्वत् १९५८ में हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी महाराज की गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से प्रभावित होकर आपके माता पिता ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय मे अध्ययन के लिए भेज दिया। उस समय गुरुकुल कांगड़ी गगा पार कांगड़ी ग्राम के निकट गगा की दो विशाल धाराओं के बीच स्थिर था। उस प्राकृतिक वातावरण मे आपने ब्रह्मचर्य आश्रम की प्राचीन भारतीय पद्धति के अनुसार तपस्या और सयम का जीवन व्यतीत करते हुए चौदह वर्षीय दीर्घ साधना के पश्चात् विद्यालकार उपाधि प्राप्त की। इस अध्ययन काल में संस्कृत व्याकरण साहित्य, दर्शन शास्त्र और वैदिक साहित्य का अध्ययन करने के साथ-साथ अंग्रेजी साहित्य और पाश्चात्य दर्शन का भी अध्ययन किया। आप मेधावी छात्र थे। आपने विश्वविद्यालय की सभी परिक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। विद्यालकार परीक्षा मे आपने चार स्वर्ण पदक प्राप्त किए। सस्कृत वाङ्मय के वैदिक साहित्य का विशेष एव अनुसंधान परक अध्ययन करने के लिए आपको 'वेद वाचस्पति' उपाधि से मंडित किया गया। सन् १९७६ मे आपको गुरुकुल कांगड़ी की सर्वोच्च उपाधि वेद मार्तण्ड से सम्मानित किया गया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सुशिक्षित एव दीक्षित होकर आप १९२८ दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय लाहौर में मे चले गए। आपने वहा पर उपाध्याय के रूप में बाद मे प्रधानाचार्य के रूप मे १९४३ तक कार्य किया। १९४३ में आपको गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्रधानाचार्य बनाया गया। आपकी शिक्षा परम्परा दिक्-दिगन्त तक विस्तीर्ण है। आपके शिष्यो ने राष्ट्रीय जीवन-धारा के अनेक क्षेत्रों में प्रशंसनीय एवं सराहनीय कार्य किया। गुरुकुल कागड़ी को भारत सरकार से विश्वविद्यालय की मान्यता प्राप्त हो जाने पर आपने नए परिवेश में कुलपति (Vice Chanclor) के रूप में भी चार वर्ष तक कार्य किया। सन् ७१ में आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की २८ वर्ष की दीर्घकालीन सेवा से अवकाश ग्रहण किया।

आपने भारतीय सस्कृति की विचारधारा और संस्कृत वाङ्मय के वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार में विशेष सहयोग दिया। आपने समय समय पर अनेक ग्रन्थों का प्रणयन भी किया—वरुण की नौका (२ भाग), वेदोद्यान के चुने हुए फूल, वेद का राष्ट्रीय गीत, मेरा धर्म, समाज का कायाकल्प आदि।

आचार्य जी ने एक महान ग्रन्थ की रचना की जिसका नाम है "वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त"। अनेक वर्षों के अध्ययन, मनन, चिन्तन के पश्चात् उन्होंने इस ग्रन्थ का प्रणयन किया। आचार्य जी ने वेद में सूत्र रूप मे वर्णित राजनीति ज्ञान को इस ग्रन्थ मे पल्लवित किया है। इस ग्रन्थ के प्रथम भाग मे राज्य संस्था का प्रादुर्भाव और विकास, राजा का चुनाव, राजा का राज्य-काल, राजा राज्य-च्युति, चुनाव पद्धति बैलट पेपर, छोटे मांडलिक राज्यों से लेकर चक्रवर्ती राज्य विश्व राज्य का निर्माण, राज्यों के ससद मन्त्रीमण्डल, प्रजातन्त्र का स्वरूप, न्याय-व्यवस्था, उदार राजनीति, स्त्रियों के राजनैतिक अधिकार, राष्ट्र रक्षा आदि विषयों पर वेदों के आधार पर सम्यक् अनुसन्धानात्मक विवेचन किया है। ग्रन्थ के दूसरे भाग मे राष्ट्र को समृद्धशाली बनाने के उपायों पर विचार किया है। तीसरे भाग में राष्ट्र की प्रतिरक्षा के सम्बन्ध मे विचार किया है।

यह ग्रन्थ लिख कर आचार्य जी ने वेदों के आधार पर मौलिक, सर्वाङ्गपूर्ण स्वतन्त्र राजनीति शास्त्र की रचना की है।

आचार्य जी का एक और महान् ग्रन्थ "वेदों की वैज्ञानिकता" प्रकाशित हो चुका है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की प्रह्लाद पत्रिका का आचार्य प्रियव्रत अभिनन्दन अंक प्रकाशित करने के लिए डा० विष्णुदत्त राकेश और उनके सहयोगियों का हार्दिक अभिनन्दन।

—डा० धर्मपाल

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(१२ मई, ९१ के अंक से आगे)

१९५७ की जुलाई में मैं पुनः जोधपुर आ गया। अब मैं राजस्थान लोक सेवा आयोग से चयनित होकर न्यू गवर्नमेंट हायर सेकेण्डरी स्कूल में हिन्दी का वरिष्ठ अध्यापक बना। इस पद पर मैं लगभग ४ वर्ष रहा और १९६१ में मैंने स्थानीय श्री महाराज कुमार कालेज में हिन्दी के प्रवक्ता पद पर कार्य आरम्भ किया।

जब मैं छोटी खाटू से लौट कर आया तो आर्य समाज के वार्षिक निर्वाचन के समय डा० खेत लखानी तथा अन्यो ने मुझ से कहा कि यदि मेरी नियुक्ति जोधपुर मे ही होती है तो मुझे पुनः समाज का मन्त्री पद सम्भालना ही होगा। मैं पुनः मन्त्री बनने के लिए अधिक उत्सुक नही था। उधर श्रीमती प्रेमवती (जो माता जी के नाम से जानी जाती थी) की इच्छा अपने बडे पुत्र श्री सुबोध को मन्त्री बनाने की थी। उन्होने इसके लिए वातावरण भी बनाया था। अन्ततः श्री सुबोध मन्त्री बने और वे मेरे सहयोग के आकांक्षी भी रहे। किन्तु उनमें चांचल्य वृत्ति अधिक थी और वे आर्यसमाज के सिद्धान्तो तथा मर्यादाओ से भी अधिक परिचित नही थे।

प्रधान पद पर डा० गोविन्दराम जी थे। सर्व श्री मानमल जी, घीसूलाल जी, छोटमल जी, विश्वम्भरदयाल जी, माईलाल जी आदि का सहयोग मुझे प्राप्त था। जबकि कतिपय अन्य श्री सुबोध को समर्थन दे रहे थे। समाज के आगामी चुनाव मे हमने भी जोर आजमाइश की। हमारे उम्मीदवार श्री मानमल जी थे। यदि मुझे यह चुनाव लड़ना पडता तो मैं निश्चय ही विजयी होता किन्तु कतिपय कारणों से हमने भी मानमल जी को ही मन्त्री पद के लिए खडा कर दिया। यद्यपि वे चुने नही गये और मैंने अनुभव किया कि समाजो में चुनाव के समय जोड़ तोड़ की जो राजनीति चलती है, वह हर एक के बूते की नही होती। यही अनुभव मुझे आगे आर्यसमाज रातानाड़ा के चुनाव मे भी हुआ जब प्रधान पद के हमारे उम्मीदवार श्री रावतसिंह जी, श्री महावीर सिंह गहलोत के समक्ष पराजित हो गये किन्तु मन्त्री पद पर मैं अपने से बुजुर्ग श्री सोहनलाल जी को पराजित कर विजयी हुआ।

सरदारपुरा आर्यसमाज का वातावरण नगर आर्य समाज के वातावरण से भिन्न था। नगर समाज मे हमारा युवक मण्डल प्रभावी था, जो आर्यसमाज की सभी गतिविधियो का प्राण था। सरदारपुरा मे हमे जो साथी मिले वे आयु मे मुझ से बड़े थे। अपने सांसारिक दायित्वो से भी वे इतने दबे हुए थे कि हमारी युवा मण्डली की भांति घण्टो तक समाज मन्दिर में बैठ कर गपशप करने तथा जमीन आसमान के कुलाबे मिलाने की फुर्सत उन्हे नही थी। सरदारपुरा समाज मे भी वाचनालय था और मैं तथा मेरे साथी प्राय रात को वाचनालय की मेज पर इकट्ठे होते थे, किन्तु इस गोष्ठी में वैसी नियमितता नही थी, जिसका अनुभव मैंने नगर आर्य समाज मे किया था, जहां बिना नागा हम लोग निरन्तर कई वर्षों तक रात्रि को समाज मे आते और पारस्परिक विचार विमर्श करते। मेरे नगर आर्य समाज को छोड़ते समय वहां की आर्यकुमार सभा भी बहुत कुछ शिथिल हो गई थी, किन्तु श्री गणेशीलाल के कारण नये-नये विद्यार्थी कुमार सभा मे आते ही रहते। सरदारपुरा में आर्यकुमार का कोई सगठन ही नही था, हां आर्य वीरदल और महिला आर्य समाज की प्रवृत्तियां यहां विशेष रूप से दिखाई दीं।

हमारे नगर मे आर्य समाजियों का एक अभिजात्य वर्ग भी था। इन्होने अपना अलग पारिवारिक सत्संग चला रखा था। इसमें जोधपुर के कमिश्नर श्री दौलतसिंह जी, पजाब नेशनल बैंक के मैनेजर श्री एम्. के. एल. बेदी, सरकारी प्रेस के अधीक्षक स्व० धर्मेन्द्र शिवहरे, व्यवसायी स्व० श्री आनन्दसिंह कछवाहा तथा राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति डी. एस. दूबे आदि मुख्य थे।

(क्रमशः)

न रहे बांस न बजे बांसुरी

—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार—

भारत का संविधान बनाने वाले सब राजनीति के पंडित थे। उनके सामने यूरोप का इतिहास था जहां सामाजिक-विकास होते-होते मनुष्य 'डेमोक्रेसी' तक पहुंचा था। वे यहीं तक पहुंच पाये थे कि प्रत्येक मानव को वे सब अधिकार प्राप्त होने चाहिये जो देश के किसी भी मानव को प्राप्त हैं। मनुष्य मनुष्य मे जो भेद है कोई ऊंचा कोई नीचा—इस भेद को मिटाने का उनके पास एक ही तरीका था—और वह तरीका सिर्फ यह था कि विधान में लिख दे कि सब मनुष्य एक-समान हैं, कोई ऊंचा नहीं, कोई नीचा नही। परन्तु सामाजिक रचना संविधान बना देने या उसे लिख देने से नहीं बनती। सामाजिक-रचना परिश्रम पूर्वक बनाने से बनती है, बिगाडने से बिगड़ती है। विधान में तो १९४७ मे लिख दिया गया था कि संविधान की दृष्टि में सब एक-समान हैं, परन्तु वह कानून की पुस्तकों में लिखा ही रहा, क्रियात्मक रूप मे मनुष्य मनुष्य मे भेद बना ही रहा। यूरोप मे गोरे-कालों के भेद को कोई न मिटा सका। भारत मे छूत-अछूत के भेद को कोई न मिटा सका। यह भेद जन्म के आधार पर या जिसे अन्य देशों मे 'रेस' के नाम से और भारत मे 'जाति' के नाम से पुकारा जाता है। अन्य देशों का काले-गोरों का भेद जन्म के आधार पर टिका है। भारत में ऊंच-नीच जाति का भेद भी जन्म के आधार पर टिका है। इस भेद-भाव को इन-तरीको से मिटाया जा सकता है—यह भेद-भाव राजनैतिक-क्रांति से मिट सकता है, या सामाजिक क्रान्ति से मिट सकता है। दोनो क्रांतियो से हल सम्भव नही, आर्यसमाज के पास ही इस समस्या का हल है। सामाजिक विषमता को मिटाने के लिये तीन हल हैं जो निम्न प्रकार कहे जा सकते हैं :

(क) सामाजिक क्रांति—सामाजिक-क्रांति का अर्थ है कि समाज के नेता अपने व्याख्यानो, उपदेशो या क्रियात्मक-जीवन से ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दें जिससे समाज के हर वर्ग के लोग एक-दूसरे को भाई के समान समझने लगें और सब से समान-भाव से व्यवहार करे। इस प्रकार की सामाजिक-क्रांति मे कुछ बातो मे भेद-भाव के रहते हुए भी ग्लानि का भाव या अधिकार-हीनता का भाव नहीं रहता। उदाहरणार्थ, १९४७ से पूर्व हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई की तरह रहते थे यद्यपि उनमे अनेक बातो मे भेद-भाव था। ऐसी क्रांति मे उबाल तभी आता है जब कोई स्वार्थी वर्ग अधिकार-हीनो को भडकाने के लिये उठ खड़ा हो। अगर कोई न भडकाये तो समाज के सब लोग शान्ति से एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। मनुष्य का स्वभाव शान्तिपूर्वक जीवन बिताना है। फिर भी सामाजिक क्रांति से मानव-मानव मे अन्तर्निहित भेद-भाव के उबल पडने का खतरा बना ही रहता है जैसा भारत-विभाजन के समय स्पष्ट हुआ।

(ख) राजनैतिक क्रांति—राजनैतिक-क्रांति का अर्थ है कि राज्य ऐसे कानून बना दे जिनके द्वारा ऊंच-नीच का भेद-भाव ही न रहे। यह रास्ता 'मंडल कमीशन' का है। इस रास्ते को हमारे भूतपूर्व प्रधान-मन्त्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अपनाया था। इस रास्ते का जो परिणाम हो सकता था वह हमारे सामने रैलियो तथा उपद्रवों के रूप मे है। कानून के दो काम हो सकते हैं। या तो जो लोग ऊंच-नीच को बढावा देते हैं उन्हे 'सजा' दे ताकि मानव मानव मे भेद-भाव न रहे, या जिन लोगो को समाज निचले दर्जे मे रखता है उन्हें विशेष 'रियायतें' देकर उन्हें उच्च-जाति के समकक्ष बना दे। इसी को 'रिजर्वेशन' या 'संरक्षण' की नीति कहते हैं।

'संरक्षण' की नीति का क्या परिणाम है? 'संरक्षण' का अर्थ है–रियायत', 'रियायत' का अर्थ है—जो जिस काम के योग्य नहीं है उसे उस काम के लिये योग्य समझकर रियायत के तौर पर वह काम दे देना।

जिस रास्ते पर चलने से रियायत मिले, अयोग्यता के होते हुए भी योग्यता का प्रमाण-पत्र मिले, उस सहज मिलने वाले मार्ग को कौन छोड़ेगा? 'रिजर्वेशन' का परिणाम यह होगा कि प्रत्येक व्यक्ति 'रिजर्वेशन' चाहेगा, अगर दलित या 'भंगी' या 'चमार' कहे जाने वाले व्यक्ति को नोकरी मे रियायत मिलेगी तो सभी लोग अपने को 'भंगी' या 'चमार' कहलाना पसन्द करेंगे। जैसे आज उच्च-जाति का होना एक गौरव की बात है, वैसे मंडल-कमीशन के मार्ग पर चलने से अपने को नीच-जाति का कहलाना फैशन हो जायगा, गौरव की बात हो जायगी और यह बात सदा के लिये पक्की हो जायगी। उक्त विवरण से स्पष्ट है कि जन्म की जाति पर रियायत के रास्ते पर चलने से देश का विभाजन बढ़ता चला जायगा। आज अछूत या दलित को रियायत दी जाय, कल जाटों को, किसानो को, अहीरों को—सभी को रियायतें देने का सिलसिला जारी हो जायगा। देखा जाय, तो सभी दलित दलित ही रह जायेंगे, उच्च वर्ग कहलाने वाला कोई नहीं रहेगा। 'उच्च-वर्ग' का अर्थ ही बदल जायगा, इसका अर्थ 'नीच-वर्ग' हो जायगा। देश में ३७४३ दलित कही जाने वाली जन्मजात जातियां हैं। इन सबको रियायतें देकर कौन सम्भाल सकेगा।

तो फिर इस पचे से कैसे निबटा जाय? इस धन्धे से निबटने का मार्ग अब कुछ-कुछ 'रिजर्वेशन' वादियो को सूझने भी लगा है। एक तरफ तो वे खम ठोक कर कहते हैं कि आरक्षण की नीति सोलहों आना चल कर रहेगी, दूसरी तरफ इस नीति के विरुद्ध इतना हो-हल्ला, रैलियां और मार-धाड़ देख कर वे पलटने लगे हैं, और कहने लगे हैं कि सैनिक सेवाओं मे, शिक्षा के क्षेत्र में, भिन्न-भिन्न राज्यों मे यह नीति चलना आवश्यक नही है। आवश्यक हो, या न हो, इतना तो स्पष्ट है कि इस नीति से जन्म की जात-पात की जड़ें मजबूत हो जावेंगी और ज्यो-ज्यों दवा करेंगे त्यों त्यों मर्ज बढ़ता जायगा।

हम पहले लिख आये हैं कि जन्म-जात भेद-भाव को मिटाने का इलाज रियायतें या रिजर्वेशन देने से न होगा, इससे सिर्फ जात-पात की जड़ें पक्की होकर पाताल तक पहुंच जायेंगी। इसका इलाज सिर्फ आर्यसमाज के पास है, और किसी के पास नही है। आर्यसमाज का कहना है कि सारे झगड़े की जड़ जन्म की जात-पात है। कानून से इसे पक्का करने के स्थान मे इसे ही मिटा दो, न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।

(ग) आर्यसमाज का दृष्टिकोण—आर्य समाज का दृष्टिकोण यह है कि न कोई जन्म से ब्राह्मण होता है, न जन्म से शूद्र या दलित होता है। यह एक छोटी-सी, समझदारी की बात है। ऐसा लगता है कि पहले भी कभी इस देश में जन्म से ऊंच-नीच की समस्या उठी थी और उस समय यहां के विद्वान् समाज ने इसका हल करते हुए कहा था—'जन्मना जायते शूद्र, संस्कार द्विज उच्यते'—जन्म से कोई ऊंचा नहीं कोई नीचा नहीं। पैदा तो सब शूद्र ही होते हैं, कर्म से, अपनी योग्यता से कोई ब्राह्मण हो जाता है—'ब्रह्म जानाति इति ब्राह्मणः। उस समय आज की तरह उपद्रव हुए होंगे और विद्वानो ने उस समय जन्म की जात-पात को मिटा दिया होगा। समाज मे समय-समय पर इस प्रकार की विसंगतियो का उत्पन्न होना तथा उनका विद्वानो द्वारा समझा-बुझा कर मिटा देना स्वाभाविक है। आज उन्नत देशो मे क्या इस प्रकार की समस्याएं नही उत्पन्न होतीं? होती हैं, मिटती भी हैं। भारत की कठिनाई यह है कि इस देश की वर्तमान स्थिति में यह समस्या राजनीति के साथ जुड़ गई है और क्योंकि इस देश में दलित-वर्ग के लोगों की संख्या बहुत अधिक हो गई है इसलिये चुनाव में उनका वोट लेने के लिये आरक्षण जैसी रिश्वत देकर उनके वोटो को खरीदने की कोशिश होना स्वाभाविक है। यद्यपि यह जरूरी नहीं कि आरक्षण मिल जाने के बाद दलित वर्ग के सब लोग अपना वोट उसी पार्टी के उम्मीदवारो को देंगे जिन्होंने वर्तमान-स्थिति मे उनका साथ दिया है।

आर्यसमाज का कहना है कि जात-पात के झगड़े को ही समाप्त कर देना अत्युत्तम है। पहले भी कभी यही हल किया गया था, अब भी इस समस्या का यही हल है, अन्यथा यह समस्या सदा बनी रहेगी। समझदारी की बात भी यह है कि समाज की उन्नति में योग्य व्यक्तियों के हाथ में ही देश की बागडोर होनी चाहिये। 'संरक्षण' द्वारा उच्च-पदो पर आये व्यक्तियों के हाथ में नहीं। ऐसे व्यक्ति किसी भी जात में हो सकते हैं, ब्राह्मणो में भी, शूद्रों में भी। हर हालत में समाज की रचना रियायती लोगों के हाथ में होकर नहीं, योग्यता के आधार पर विशिष्ट व्यक्तियों के हाथ में होनी चाहिये। यह आर्यसमाज का दृष्टिकोण है। तभी गीता में कहा है—'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः।

आर्य समाज साकेत

आर्य समाज साकेत मे २२-४-६१ से २८-४-६१ तक प्रति दिन सायं ७ बजे से ८ बजे तक श्री गुलाब सिंह राघव के भजन हुए और आर्य समाज साकेत के मन्त्री श्री राजेन्द्र पाल के वेद मन्त्रों पर आधारित प्रवचन हुए।

२७ अप्रैल १६६१ को २ बजे से ५ बजे तक स्त्री आर्य समाज का वार्षिक उत्सव हुआ जिसमें दक्षिण दिल्ली की महिलाओं ने अति उत्साह के साथ बड़ी सख्या में भाग लिया।

२८-४-६१ को आर्य समाज साकेत का बारहवा वार्षिकोत्सव तथा दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्वावधान मे ११६वा आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। इन मे बड़ी सख्या मे दक्षिण दिल्ली की आर्य समाजों तथा निवासियो ने भाग लिया। सभा की अध्यक्षता लाला इन्द्र नारायण जी हाथी दात वाले ने की, तथा डा० धर्मपाल जी प्रधान दल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा श्री सूर्य देव जी, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, प० यशपाल सुधांशु, श्री प्रेमचन्द्र श्रीधर, डा० श्रीमती प्रभा कुमार आदि ने सम्बोधित किया। श्री गुलाबसिंह राघव एव श्रीमती चारू धीला के मनोहर और सुन्दर भजन हुए। सभा मे अत्यन्त जोश व उत्साह था। आगामी युगत्र मे आर्यों को उनके कर्तव्यो का बोध कराया गया। सभा का संचालन दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मडल के महामन्त्री श्री रामशरण दास आर्य ने किया।

इस अवसर पर लाला इन्द्र नारायण हाथी दात वाले ने इगलिश भाषा मे एक पुस्तक वैदिक धर्म का सार (Essence of Vaidic Dharma) का विमोचन किया। पुस्तक के लेखक आर्य समाज साकेत के मन्त्री श्री राजेन्द्र पाल गुप्त हैं तथा आमुख स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी ने लिखा है। शुभ कामनाए श्री लखीराम कटारिया प्रधान आर्य समाज साकेत ने लिखी है।

समारोह के पश्चात् विशाल सख्या मे नर-नारियो ने सहयोग पूर्वक प्रेम के साथ प्रीति भोज मे भाग लिया।

—लखीराम कटारिया

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, हरिद्वार में सार्वदेशिक आर्य वीर दल व्यायाम शिविर

नई दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वावधान में व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण शिविर दिनांक ६ जून से २३ जून १६६१ तक आयोजित किया जा रहा है।

इस शिविर में डा० वेदव्रत जी व्यायामाचार्य उप प्रधान सचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिक्षार्थियो को स्वय प्रशिक्षण देंगे। सार्वदेशिक आर्य वीर दल की सार्वभौमिकता और युवा शक्ति के चारित्रिक अभ्युत्थान हेतु प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर जी हस शिविरार्थियो को सबोधित करेंगे। इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती तथा अन्यान्य वैदिक विद्वान समय-समय पर शिविरार्थियो को सदेश देंगे। स्मरण रहे इस शिविर मे वही शिविरार्थी भाग ले सकेंगे जिन्होने आर्य वीर दल के दो शिविर इससे पूर्व पूर्ण किए हों।

—हरिसिंह आर्य व्यायाम शिक्षक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य वीर दल शिक्षक शिविर

आगामी १ जून से ६ जून तक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर नेहड़ा (मेरठ) मे लगाया जा रहा है। जिसमे उत्तर प्रदेश के प्रधान शिक्षक श्री समरसिंह जी, रामगोपाल आर्य (सचिव) सा० आर्य वीर दल, समरपाल जी एव धर्मवीर जी आदि व्यायाम शिक्षक प्रशिक्षण देंगे।

शिक्षकों के लिए विशेष सूचना

आर्य वीर दल के सभी शिक्षकों को सूचित किया जाता है कि सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रमाण पत्र एव अक तालिका कार्यालय पलडी मे छपे रखे है। अत: अलग से कोई भी शिक्षक न छपवाये। ५ रुपये प्रति प्रमाण पत्र के हिसाब से कार्यालय मे जमा करके प्रमाण पत्र प्राप्त कर लें।

कार्यालय सचिव—सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलडी २५०६२२ (मेरठ)

राजनेता—गंगा गये तो गंगादास अजमेर गये तो मुल्लादास

या तो किसी सभा या पचायत में बैठो मत, बैठो तो वहां सत्य के विरुद्ध मत बोलो और न सत्य का हनन होने दो। दुर्योधन ने अपने भाईयों पर अत्याचार किया। उन्होने पांच गांव मांगे मगर दुर्योधन ने सुई के बराबर जमीन देने से भी इन्कार कर दिया, भगवान कृष्ण ने पांडवों का दूत बन कर दुर्योधन को समझाया, धर्म पर चलने की सलाह दी, मगर उसने कृष्ण जैसे राजनीतिज्ञ धर्मात्मा वीर पुरुष का निरादर किया तो योगीराज कृष्ण ने पांडवो का पक्ष लिया और दुर्योधन का विरोध

जो सत्य है निडर होकर कहो, डरने वाला कायर है।

इसे विद्वान आत्म हत्या कहते हैं ॥

किया, आज कल के राजनेता गगा पर गए गगादास और अजमेर गये तो मुल्ला दास और नागालैण्ड गये तो पोप महाराज, इस प्रकार धर्म के विरुद्ध आचरण करते हैं। राष्ट्र को क्या से क्या बना दिया ? हिन्दी राष्ट्र भाषा है, मगर हिन्दी से घृणा. गऊ माता है, मगर माता का कत्ल हो रहा है। काश्मीर हमारा है, मगर वहा तिरगा नही लहरा सकते, कोई बाहर का नागरिक वहाँ बस नही सकता। पजाब हमारा है, मगर दिन दहाड़े उग्रवादी हत्या कर रहे है। इनके पास कोई हल नही। अयोध्या हमारी है, मगर वहां राम मन्दिर नही बन सकता। हिन्दुस्तान हमारा है, मगर हिन्दू कहने मे शर्म आती है। ये राजनेता ऐसा ही करते रहे तो देश की क्या दुर्दशा होगी ? एक दिन इस देश का नौजवान अपने हाथ से इस बगीचे मे आग लगा देगा। ठीक ही कहा है—

वो चमन खाक मे मिल जाया करते हैं,
जहा बागवां की पाक नजर नही होती।

—कार्यालय सचिव, आर्य वीर दल आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली-६,

आर्यसमाजों के अधिकारियों से विनम्र अनुरोध

महोदय, आप चाहते हैं कि आर्यसमाज मे युवा शक्ति आये और आर्यसमाज का भविष्य उज्जवल हो तो दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का समस्त आर्यसमाजो के अधिकारियो से अनुरोध है कि वे अपनी अपनी आर्यसमाज से कम से कम दो युवक, आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा ३१ मई से ९ जून १९९१ तक महाशय चुन्नीलाल बाल मदिर हायर सेकेण्डरी स्कूल, एल-ब्लाक, हरि नगर, नई दिल्ली-६४ मे आयोजित प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें। आर्य वीर दल के शिविर मे युवको को भेजने से निश्चय ही युवक सस्कारी, चरित्रवान बनेगे और आर्यसमाज के प्रचार प्रसार मे आगे आयेंगे। प्रत्येक आर्यसमाज कम से कम २५१/ रुपए की आर्थिक सहयोग राशि शिविर निमित्त नकद/मनिआर्डर/बैंक ड्राफ्ट/क्रास चैक द्वारा आर्य वीर दल दिल्ली अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम का सभा कार्यालय १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भेजे। सम्पन्न आर्यसमाजें उपरोक्त राशि से अधिक भी अपनी सामर्थ्य अनुसार भेजें। इस प्रशिक्षण शिविर में २५० आर्य वीरो को प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा नि:शुल्क आवास, भोजन, पारितोषिक देने की समुचित व्यवस्था की गयी है तथा समापन समारोह (अन्तिम दिन) सभी आर्य बहन भाईयो के लिए ऋषि लगर की व्यवस्था भी की गयी है। इसके लिए आप अपनी ओर से/अपनी आर्यसमाज/सस्था की ओर से खाद्य सामग्री, दूध, आटा, दाल, चावल आदि भी भेज सकते हैं। आपकी सूचना आने पर सामान आपके यहा से मगवाया भी जा सकता है।

आपका तन, मन, धन से सहयोग सादर अपेक्षित है। धन्यवाद।

डा० धर्मपाल प्रधान — निवेदक : — सूर्यदेव महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

१५, हनुमान रोड, नई दिल्ली—११०००१

स्मृति यज्ञ

श्री रवीन्द्र आर्य और श्री मनीष आर्य ने माता शान्ति देवी आर्या की स्मृति में अपने निवास स्थान पर स्मृति यज्ञ कराया। इस अवसर पर श्री० राजसिंह आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, आर्य समाज के प्रधान श्री ओमदत्त भारद्वाज तथा सोनीपत से आए हुए आर्य भाई-बहनों ने माता जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

माता जी एक निष्ठावान आर्यसमाजी थीं। उनका तथा उनके परिवार का जीवन वैदिक सिद्धान्त से ओत-प्रोत है। वे लम्बे समय तक स्त्री आर्य समाज शालीमार बाग की प्रधाना भी रहीं। उनकी त्याग और तपस्या का यह फल है कि यहां पर विशाल भवन बना हुआ है तथा एक विशाल यज्ञ-शाला निर्माणाधीन है। यह प्रसन्नता और सन्तोष की बात है कि उनके बेटे और बेटिया भी रात दिन आर्यसमाज के कार्य में सलग्न हैं।

चक्षु-यज्ञ

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा व्यवस्था

आप सभी को यह जान कर हर्ष होगा कि आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम मे वेणु नेत्र सस्थान, नई दिल्ली के प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञों द्वारा प्रत्येक शनिवार को प्रात: १० बजे आंखो के हर प्रकार के रोगों की मुफ्त जांच-पड़ताल, आप्रेशन एवं ऐनकों के नम्बर देने की व्यवस्था की गई है। अत: नेत्र रोगी प्रति शनिवार प्रात: १० बजे आश्रम में पधार कर लाभ लें।

आश्रम द्वारा अन्य सेवा कार्य

१. निराश्रित बालको की शिक्षा, आवास, भोजन, वस्त्र, सरक्षण आदि की समुचित व्यवस्था।

२ विकलांग व्यक्तियों को सहयोग—सहायता एव उनके जीवन में उत्साह भरना।

३. दैनिक यज्ञ—सत्सग एव वाचनालय—पुस्तकालय की व्यवस्था।

४. सदैव चालू रहने वाली जल व्यवस्था और ऋषि लगर एव अतिथि निवासार्थ व्यवस्था।

५ समय-समय पर नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा, योग साधना, सस्कृत एवं पुरोहित प्रशिक्षण शिविरों के साथ असाध्य रोगों के चिकित्सा शिविरो का आयोजन किया जाता है।

६ मानव मात्र के कल्याणार्थ वृहद् यज्ञ-सत्सगों का आयोजन, साहित्य प्रकाशन, ग्रामों, शहरों स्कूल कालेजों में आश्रम की ओर से प्रचारार्थ एवं विवाह, नामकरण आदि सस्कारों, शुभ अवसरों पर परिवारों मे यज्ञ-सत्संगो के लिए उपदेशक पण्डितों की व्यवस्था भी रहती है।

७. आश्रम से वैदिक साहित्य, आर्य समाज के कैसेट, आश्रम की चाय, हवन कुण्ड, शुद्ध हवन सामग्री, यज्ञोपवीत आदि यज्ञ के साधन प्राप्त किए जा सकते हैं।

प्रभु भक्तों ! उपरोक्त सेवा कार्य परमपिता परमात्मा की असीम कृपा एवं आप सभी के स्नेह-प्यार एवं सहयोग से ही चल रहे हैं। शुभ कार्यों में दिया हुआ दान, दानी को सदैव तृप्त करता है।

सूचना—धर्मार्थ आयुर्वेद औषधालय योग्य वैद्य एवं अर्थाभाव के कारण कुछ समय से बन्द है, आशा है ईश कृपा एव आप सभी के सहयोग से शीघ्र पुन: प्रारम्भ हो जायेगा।

शुभ कामनाओं सहित :

जनता सेवक : स्वामी धर्ममुनि (मुख्याधिष्ठाता)

आत्मशुद्धि आश्रम (रजि० ट्रस्ट) बहादुरगढ़ (रोहतक) हरियाणा

प्रवेश सूचना

(सत्र-१९९१-९२)

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

(अन्तर्गत : आर्य विद्या सभा, डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति)
नई दिल्ली

पद : धर्म शिक्षक

प्रवेश योग्यता : एम० ए०/आचार्य, हिन्दी, सस्कृत व अग्रेजी भाषा, वैदिक सिद्धान्तो तथा कर्मकाण्ड का ज्ञान आवश्यक।

प्रशिक्षण अवधि : एक वर्ष

सुविधाए : नि:शुल्क शिक्षा, विशाल पुस्तकालय उपलब्ध, छात्रावासियो को आवास, पानी, बिजली सर्वथा नि:शुल्क व भोजन नि:शुल्क।

प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद अभ्यर्थियो को डी० ए० वी० शिक्षण सस्थाओं मे "धर्म शिक्षक" पद पर उचित वेतन पर नियुक्त किया जाएगा।

गत पाँच वर्षों में उत्तीर्ण सभी छात्रो को सर्विस मिल चुकी है। केवल निष्ठावान आर्य समाजी पूर्ण विवरण (नाम, आयु, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव आदि) सहित आवेदन पत्र १५ जून, १९९१ तक निम्न पते पर भेजे :— 'प्रो० रत्न सिह,
प्राचार्य—डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्य समाज मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली—११०००१
फोन : ३४३७१८"

स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती दिवंगत

स्वामी प्रज्ञानन्द जी सरस्वती का जन्म तेली के घर हुआ किन्तु आपको शुरू से ही आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के सत्यार्थ प्रकाश ने आकर्षित किया और आपने अपनी कवित्व शक्ति के आधार पर कई भजनो की पुस्तकें लिखीं, जिन्हे ग्रामीण क्षेत्र के भजनोपदेशक भली प्रकार से आज भी गाते हैं। आपने सदैव अन्धविश्वास और पशु बली का भारी विरोध किया। और अनेक बार इस बुराई को हटाने हेतु आपको अनशन व्रत पर भी बैठना पड़ा निर्भीकता और वैदिक धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा ने आपको सदैव कर्म क्षेत्र मे सफलता दिलाई।

प्रज्ञा चक्षु होने और ८४ वर्ष की आयु प्राप्त करने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आपको २०० रुपये मासिक वृद्धत्व सहायता दी थी। क्योंकि स्वामी जी ने ग्रामीण क्षेत्रों मे प्रसिद्ध भजनोपदेशक के रूप में लम्बे समय तक सेवा की थी।

सभा स्वामी जी के अभाव को अनुभव करती हुई उनके सजग अनुयायी बन्धुओं से आशा करती है कि वे स्वामी जी द्वारा दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए वेद धर्म का प्रचार कार्य उनके क्षेत्र मे जारी रखे।

बालदिवाकर हस (प्रधान सचालक)

तपोवन में १६ मई से ३१ मई तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण तथा योग-दर्शन अध्यापन

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून मे श्री स्वामी सत्यपति जी की अध्यक्षता मे १६ मई से ३१ मई १९९१ तक "क्रियात्मक योग प्रशिक्षण तथा योगदर्शन अध्यापन शिविर" आयोजित होगा जिसमें ऐसे सज्जन और देवियां भाग ले सकेंगे जिनकी आयु कम से कम १५ वर्ष, हिन्दी पढने लिखने की योग्यता तथा कम से कम कक्षा ८ तक की शैक्षिक योग्यता हो। जो नीरोग हों और धूम्र-पान आदि व्यसनो से रहित हो। अति वृद्ध या रोगी व्यक्ति नही लिए जावेंगे।

प्रवेश पाने के इच्छुक जन अपना आवेदन तुरन्त अपने नाम, पते, वय, योग्यता और व्यवसाय को लिखते हुए निम्न पर भेजे—

—मन्त्री, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून-२४८००८

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 16-17-5-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३६
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" १९ मई, १९९१

शोक-प्रस्ताव

रविवार १२ ५ ९१ को आर्य समाज दीवान हाल की यह महति सभा ऋषि भक्त स्व० ला० चतुरसैन गुप्त लेखक एव विचारक की धर्मपत्नी तथा आर्य-समाज दीवान हाल के पूर्व मन्त्री एव प्रतिष्ठित सदस्य श्री मूलचन्द गुप्त की माता के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करती है, तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि उनकी दिवगत आत्मा को सदगति तथा उनके संतप्त परिवार एव इष्ट मित्रो को इस महा शोक को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—सूर्यदेव
प्रधान—आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली—६

शोक समाचार

आर्य समाज डिबाई (बुलन्दशहर) के भूतपूर्व प्रचार मन्त्री श्री नेत्रपाल सिह आर्य 'कवि' का गत मास दिनांक २३ मार्च १९ ९१ को लम्बी बामारी के बाद उनका शरीरान्त हो गया।

वे गत २२ वर्षो से पौराणिक मत को त्याग कर एक कट्टर आर्य समाजी बन कर दैनिक सध्या यज्ञ कर समाज के प्रचार कार्यों को बड़ी कुशलता से करते थे। 'आर्य सन्देश' शोक सतप्त परिवार के लिए ईश्वर से धैर्य एव शान्ति की कामना करता है।

आर्य समाज परमानन्द बस्ती रघसाना बीकानेर

चुनाव समाचार

आर्य समाज, परमानन्द बस्ती बीकानेर का वार्षिक निर्वाचन श्री लाला अमरनाथ चावना की अध्यक्षा मे सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

डा० जयकृष्ण जी—प्रधान
श्री रामनारायण जी—वरिष्ठ उप प्रधान
डा० शिवनारायण आर्य—मन्त्री
श्री सेठ छगनलाल जी आर्य—कोषाध्यक्ष

निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज धार म० प्र० के वर्ष १९९१ के लिए निर्वाचन सम्पन्न हुए। निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

१. प० बालकृष्ण चतुर्वेदी—प्रधान
२. श्री गजानन्द शर्मा—उपप्रान
३. श्री भगवन्त राव तिवारी—मन्त्री
४ श्री रामचन्द्र जोशी—कोषाध्यक्ष

सेवा में—

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक २९ | रविवार, २६ मई, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष . ३१०१५०

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती

—डा० धर्मपाल, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्यसमाज का गौरवपूर्ण इतिहास आन्दोलन का इतिहास है। आर्यसमाज ने राष्ट्रोत्थान के लिए तथा सामाजिक कल्याण के लिए अनेक कार्यक्रम हाथ में लिया। स्वाधीनता आन्दोलन मे आर्यसमाज की सराहनीय भूमिका से सभी सुपरिचित है। हम आज भी श्रद्धापूर्वक उस तेजस्वी स्वामी श्रद्धानन्द को याद करते हैं जिसने घटाघर पर गोरे सिपाहियो की सगीनो के सामने छाती खोल दी थी, उसी प्रकार इतिहास मे स्वामी रामेश्वरानन्द जी को भी याद किया जाएगा, जिसने ७ नवम्बर १९६६ को गरजती हुई आवाज मे कहा था कि पार्लियामेंट को घेर लो और लोग उनकी आवाज पर पार्लियामेंट की ओर बढ चले थे। उनकी नेतृत्व शक्ति आर्यसमाज मे सदा प्राण फूकती रहेगी।

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, निर्भीक सन्यासी और स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती १९६२ में लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे। ससद में उनकी ओजस्वी वाणी, स्पष्टवादिता और क्रान्तिकारी राष्ट्रीय विचारों को आदरपूर्वक सुना जाता था। आपने ससद मे हिन्दी रक्षा, गोरक्षा, मद्य निषेध, गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली आदि विषयों पर सदैव आर्यसमाज का सबल पक्ष प्रस्तुत किया।

स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज वेदो के प्रकाण्ड विद्वान थे। वे गुरुकुल घरोडा के सस्थापक थे और आर्ष पाठविधि के अनुसार वैदिक ज्ञान के प्रसार मे सलग्न थे। स्वामी जी महाराज ने आर्यसमाज द्वारा चलाए गए विभिन्न आन्दोलनो—हैदराबाद धर्मयुद्ध (१९३९), पजाब हिन्दी सत्याग्रह (१९५७), दिल्ली गोरक्षा आन्दोलन (१९६६) आदि मे प्रथम पक्ति मे रहकर सफल नेतृत्व किया था।

१९६१ मे जब पजाबी सूबे की माग को लेकर मास्टर तारासिह ने आमरण अनशन शुरू किया, तो स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज ने भाषा के आधार पर बनाए जाने वाले पजाबी सूबे की माग के विरोध मे आमरण अनशन करने की घोषणा कर दी थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर स्वामीजी महाराज आर्यसमाज दीवान हाल मे १६ अगस्त १९६१ को प्रातःकाल यजुर्वेद पारायण यज्ञ के पश्चात् आमरण अनशन पर बैठ गए थे। अन्त मे मास्टर तारासिह के अनशन टूट जाने के बाद ही आपने २४ अगस्त को अपना अनशन समाप्त किया था। अनशन के दिनों मे स्वामी जी को मारने के अनेक प्रयास किए गए। एक दिन किसी दुष्ट ने दीवानहाल मे एक शक्तिशाली बम फेंक दिया था, जिसे सावधानी से उठाकर श्री ओमप्रकाश त्यागी ने एक बाल्टी में रख दिया था और दुश्मनो की चाल को असफल कर दिया था। उस समय श्री लाला रामगोपाल शालवाले (वर्तमान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती) और उनके साथी चौबीस घण्टे दीवानहाल मे ही रहते थे। बम की घटना वाले दिन रात को १२ बजे सेठ जुगल किशोर बिडला दीवानहाल मे आए और पूछने लगे कि बम वाली घटना का आर्य भाइयो पर कोई विपरीत प्रभाव तो नही पडा, तो उस समय लाला रामगोपाल शालवाले ने कहा था कि इससे हमारा उत्साह और ज्यादा बढ गया है।

स्वामी जी महाराज का शताधिक वर्षो की आयु मे ८ मई १९९० को निधन हुआ था। उस वीर पुरुष को हमारी विनत श्रद्धाजलि।

राष्ट्रीय निर्वाचन महाकुम्भ



यह हमारी राष्ट्रीय अव्यवस्था का द्योतक है कि जो राष्ट्रीय निर्वाचन पाच वर्ष बाद होना चाहिए था, वह मात्र उन्नीस महीने बाद हो रहा है। यह तो सही है कि हमारे राष्ट्रीय नेता कोई स्थायी नेतृत्व प्रदान नही कर सके हैं, पर यह भी सही है कि जनता भी ऐसे प्रतिनिधियों को नहीं चुन सकी जो स्थायी नेतृत्व प्रदान कर सकें, जो जोड़-तोड़ से ऊपर उठकर राष्ट्रोत्थान एव समाज कल्याण के कार्यो में भागीदार बन सकें, जो स्वार्थों से ऊपर उठकर परमार्थ की बात कर सके। इस महाकुम्भ मे भाग लेना बहुत महगा और अनावश्यक रूप से प्रदर्शन का तामझाम हो गया है। जो व्यक्ति इतना खर्च करके ससद तक पहुंचेगा, उससे क्या आशा की जा सकती है। ऐसा लगता है कि राजनैतिक जीवन भी राष्ट्रीय कल्याण हेतु समर्पण एव निष्ठा का जीवन न होकर, कुछ लोगो के लिए व्यवसायिक कार्य व्यापार बन गया है।

कुछ भी हो इस निर्वाचन से कोई भी व्यक्ति अछूता तो रह नही सकता। यह प्रेम को पथ कराल महा तरवार की धार पै धावनो है। जो उम्मीदवार है, उनके लिए भी और जो मतदाता है, उनके लिए भी यह कठिनाइयो से भरा मार्ग है। उम्मीदवार परेशान है कि वह किस प्रकार विजयश्री को प्राप्त करे, मतदाता परेशान है कि वह किसे अपना मत दे। ससद की सडक पर चलते-चलते सब एक से हो जाते हैं। हम चाहते हैं कि लोग निष्पक्ष हो, वे नैतिक हो, वे मानवमात्र को अपना समझें, वे जात पात क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता से ऊपर हो, पर ऐसा हो नही पाता। बडी पार्टिया उसे उम्मीदवार बनाती हैं जो जीत सकता हो, चाहे जैसे भी जीत सकता हो, चाहे बूथ पर कब्जा करके या भ्रष्टाचार पूर्ण हथकडे अपना कर। यहा अनेक सम्प्रदाय हैं, असमानता है, अनेक जातिया हैं, कुछ लोग धनसम्पन्न, कुछ गरीबी रेखा से भी नीचे के गरीब। धन सम्पन्न तो वोट डालने भी नही जाते। केवल गरीब जाते हैं, पर उनका अपने वोट पर कोई अधिकार नहीं है। उनका वोट उसके पास है जो उनका अन्नदाता है, जो उन्हे कर्ज देता है, जो उनका धर्मगुरु है, जिसके खेत या कारखाने मे वे काम करते है या जो उनकी कालोनी का दादा है। एक नया विचार आया है—पचायती वोट पचायत तय करती है कि वोट किसे देना है। सभी को वोट डालने जाने की जरूरत नही। कुछ ही लोग सबके वोट डाल देते हैं।

भाइयो, चिन्ता मत करो कि तुम्हारा नेता जीतेगा या नहीं। अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर वोट दो। उसे वोट दो जो सबका कल्याण करने वाले हो, जो राष्ट्र को घेरते वाले शत्रुओ का हनन करने वाले हो, जो आन्तरिक शत्रुओ को कुचलने वाले हो, जो अपनी इन्द्रियो को तथा प्रजा को वश मे करने वाले हो, जो बादलो के समान सुखो की वर्षा करने वाले हो, जो पापनाशक हो।

आओ, हम ऐसे ही लोगो को अपना नेता चुने। —डा० धर्मपाल

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

वेद के सार्वभौम प्रचार के लिये अनुसंधान कार्य आवश्यक

—स्व० पं० वीरसेन वेदश्रमी

वैदिक धर्म की जय हो–आर्य समाज अमर रहे, यदि इन जयघोषो को सफल करना है तो सफलता के मार्ग का अनुसधान करना होगा। अब आर्य समाज के लिये विद्वान, वक्ता, अन्वेषणकर्त्ता, शास्त्रार्थकर्त्ता, साहित्य रचने वाले, सम्पादक, कुरान, बाइबिल, जैनमत, पुराणमत के अध्ययनकर्त्ताओं का अभाव होता जा रहा है। आर्य समाजो मे कार्य एव प्रगति के अभाव से तथा नवीन सदस्यता के अभाव मे बैंक खुलने लगे क्योंकि हमारे पास कुछ कार्य करने को शेष नहीं रहा। हमने अपने आर्य मन्दिरो को शादी, विवाह गृह बना दिये। हमने जातीय सस्थाओ को राजनैतिक सस्थाओ को, उनके कार्यक्रमो को करने के लिये किराये पर कमरे दिये। कही पर छात्रावास के रूप मे छात्रो को रखकर केवल किराया लेना प्रारम्भ कर दिया और वे वहा अनैतिक कार्य करते हैं तो हम उन्हे पृथक भी नही कर सकते। आर्य समाज की इस दीन-हीन दशा पर विचारने का समय ही किसी को नही है।

वेद को विश्व व्यापी बनाने के लिये और आर्य समाज मे नवजीवन प्रदान करने के लिये नये चिन्तन के साथ कार्यक्रम बनाना होगा। आज विज्ञान का युग है। डेढ शताब्दी पूर्व विज्ञान का उदय हुआ व पृथ्वी पर व्याप्त हो गया। हमारे सारे व्यवहार और जीवन का अभिन्न सहयोगी बन गया। वह हमसे छूट नहीं सकता। वह पृथ्वी के ऊपर, हमारे अन्तरिक्ष मण्डल मे भी मडरा रहा है। नित्य नये आविष्कार हो रहे हैं। यह हमारे पठन-पाठन व्यवस्था में भी व्याप्त हो गया। आज हम विज्ञान के बिना जी नही सकते। कोई भी किसी धर्म, सम्प्रदाय, मत-मतान्तर का हो वह विज्ञान से, वैज्ञानिक सत्य से विमुख नही हो सकता। क्या वेद और वेद का विज्ञान विश्व मे जीवन के साथ इस प्रकार अभिन्न रूपता को प्राप्त हो सकता है? "उद्यमेन ही सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथै" प्रयत्न से, पुरुषार्थ से ही कर्म सिद्धि होता है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् लक्ष्य घोषित करके अकर्मण्य बनने मे कुछ नही होगा। अकर्मण्यता भी अविद्या है। अन्धतम प्रविशन्ति मन्त्र के अनुसार हमारी दशा महाअन्धकारमय है।

इस महान्धकारमयी स्थिति से निकलने का एक मात्र उपाय है–अनुसधान की दृष्टि, अनुसन्धान की वृत्ति और अनुसधान की सृष्टि। अनुसधान के बिना हम अपने लक्ष्यकृण्वन्तो विश्वामयम् को कभी भी प्राप्त नही कर सकते। वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। यह आर्य समाज का प्रधान घोष है अन्य किसी का नही। अत: आर्य समाज को सर्वाधिक प्रयत्न इसको सिद्ध करने और वेद के विज्ञान को विश्व व्यापी बनाने को करना ही पडेगा। इस निमित्त वेदानुसार विद्याओ की सूची तैयार करनी चाहिये। उनमे से कौन-कौन सी विद्याए आज प्रचलित है और कौन कौन सी अभी प्रचलित नही है, यह भी विभाग करना होगा। अप्रचलित विद्याओ के अनुसधान और विकास का प्रयत्न करना होगा। अर्थात् आर्य समाज को, आर्य समाज की शिक्षण सस्थाओ को अनुसधान कार्य को प्राथमिकता प्रदान करनी होगी और सैकड़ो ही नही हजारो विद्वानो को अनेक प्रकार से अनुसधान कार्य मे लगाना होगा। बडे-बडे जलूस, बडे-बडे मेले लगाना, करोडो रुपये के अस्पताल खोलने की योजनाए सगमरमर की विशाल बिल्डिग बनाने, शताधिक खम्बो की यज्ञशाला बनाने आदि कार्य अविद्यात्मक है, जब तक वेद विद्याओ के अनुसधान की आस्था को प्रतिष्ठा न हो।

किसी भी कार्य मे अनुसधान से ही प्रगति होती है। जहा अनुसधान कार्य नही वहा प्रगति का अभाव ही रहेगा। प्रगति का अभाव ह्रास का ही परिचायक है और कालान्तर मे वह सस्था काल कवलित ही हो जाती है। अत: आर्य समाज मे अनुसधान प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करना चाहिये। आर्य समाज के प्रारम्भिक काल मे अनुसधान की कुछ प्रवृत्ति थी तब आर्य समाज जीवित, जाग्रत् परम तेजस्वी एव पूर्ण सस्था मानी जाती थी। केवल सिद्धान्तमात्र मे विश्वास रखने से उन्नति नही होती है। जब तक उन सिद्धान्तों के प्रति अनुसधान न किया जावे।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मक्कारों के नाम

—श्री हरवंश लाल कोहली

भारत मा को खण्डित करने वालों को न करना माफ।
प्रयत्न करते रहना, यह दूर हो जाए परिताप ॥
सुरक्षा उप सना प्रेम मे जिनकी नही श्रद्धा।
ऐसे झूठे लोगो का फट जाए परदा ॥

जातिवाद में जो करते पीछे आगे।
वे ही आगे भागे, पीछे से कुत्ता भागे ॥

वेद गीता पढने मे जिन्हें आए हैं शर्म।
फल तो मिलना दूर रहा उनके फूटे कर्म ॥

सस्कृत की पढाई मे जो बनते घातक।
बन्द हो जाए उन पर ससद का फाटक ॥

ऐसे लोगो की न बने कभी सरकार।
क्या हम नही चाहते दूर हो भ्रष्टाचार ?

हिन्दी भाषण मे जिन्हे नही स्वाभिमान।
अंग्रेजी ही जिनकी हो दीनो-ईमान ॥

दांत जिनके खाने के दिखाने के और।
क्या वह अपना मित्र, या है वह चोर ॥

ऋषियो मुनियो के मन्तव्य जो जाने निभाना।
ऐ आर्यों तुम उनको ही गद्दी पर पहुचाना ॥

भीम और अर्जुन बन कर, रण मे आ जाओ।
अधर्मी और विधर्मी को दूर भगाओ ॥

सत्य और केवल सत्य का करो प्रचार
चाहे हो राजनीति या हो व्यापार ॥

राजनीति से पाखड को कर दो दूर।
और कुछ करो या न करो, यह तो करो जरूर ॥

शुद्ध चरित्र वालो की ही तुम बनाओ सरकार।
आर्यो ! तभी इस देश का, हो सकेगा उद्धार ॥

३/१ सर्वप्रिय विहार

सच्ची राह

—पं० गंगाप्रसाद विद्यार्थी

कीर्ति जगत मे उसने पाई, जिसने सच्ची राह दिखाई।
परम पिता के सभी है पुत्र, आपस मे है भाई ॥

स्वार्थ छोड करके यदि देखें, आपस मे होवे नही लडाई।
किसने यह आग लगाई जिससे मिटती नही बुराई ॥

सभी आर्य यदि मिल जावे मिल कर एक मात्र हो जावें।
तो फिर एक शक्ति बन जावे, पृथ्वी डुलावें समुद्र करावे ॥

दोष सभी मे होते है, दयानन्द से विरले हों।
अपने दोषो को दूर करो, पराए दोष नहीं तुम देखो ॥

दूसरों की यदि करो बडाई, तुम भी पावो मान बडाई।
साहसी सबल से लोहा ले, न हो निबल पर हो प्रभुताई ॥

आर्य बन्धु का पूछो हाल दुख विपत्ति में आवो काम।
सुख में दुख में रहना साथ, वक्त पडे पर देना साथ ॥

पता—१७५, जयनगर, जबलपुर सिटी

वेद के सार्वभौम प्रचार के लिये अनुसंधान कार्य आवश्यक

(पृष्ठ २ का शेष)

महर्षि स्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे यह प्रयत्न किया कि वेद में विविध विद्याओ का अस्तित्व मूल रूप से है, उन्हीं विद्याओं का विकास और अनुसंधान करने का प्रयत्न करना चाहिये। उसमें उन्होने बहुत प्रभावशाली रूप में युक्ति तथा प्रमाणपूर्वक दृष्टान्त सहित यज्ञ से वायुमण्डल की शुद्धि होती है और यह शुद्धि कार्य करना अनिवार्य है तथा यज्ञ द्वारा ही समुचित रूप से संभव है यह प्रतिपादन किया है। एक समय था जब युक्ति, प्रमाण से ही सब निर्णय मान्यता को प्राप्त होते थे। परन्तु वर्तमान समय मे अनुसंधान एव प्रयोग प्रदर्शनपूर्वक परिणाम प्रकट करने पर मान्यता प्राप्त होती है अन्यथा नही। अत: यज्ञ के द्वारा वायु मण्डल मे किस-किस द्रव्य से क्या-क्या परिणाम प्रकट होते हैं और उनसे किस प्रकार के प्रदूषणो का विनाश होता है एव कौन से गुणो की वृद्धि होती है तथा उनका शुभ प्रभाव प्राणी जगत् एव वनस्पति पर क्या होता है। इसके अनुसंधान व प्रयोग के लिये वैदिक विज्ञान प्रयोगशालाये विविध स्थानो पर सक्षम स्थापित करनी होगी।

यज्ञ द्वारा अन्तरिक्षस्थलो की शुद्धि होती है और उससे वृष्टिजल की वृद्धि होती है। ऐसा महर्षि के वेदभाष्य मे अनेक स्थानो पर लिखा है अत. सामान्य वृष्टिजल और यज्ञ प्रभावित वृष्टि जलो का विश्लेषण करके दोनो की सामर्थ्य तथा उपयोगिता का प्रतिपादन करना होगा। यज्ञ प्रभावित वायु मण्डल, यज्ञ द्वारा सुसंस्कृत भूप्रदेश, यज्ञ द्वारा सुसंस्कृत जल का कृषि पर क्या-क्या प्रभाव पडता है तथा यज्ञ प्रभावहीन भूमि, जल, वायु का कृषि मे क्या-क्या अन्तर उत्पत्ति आदि पर होता और आर्थिक दृष्टि से भी लाभालाभ पर क्या अन्तर होता है, उसके परिणामो को, कृषि वैज्ञानिको को प्रकट करना होगा और क्रियात्मक रूप से प्रयोग प्रणाली का शिक्षण देना होगा।

महर्षि स्वामी दयानन्दजी सरस्वती ने वेदो मे जल, विद्युत, अग्नि के द्वारा यन्त्र, कला कौशल विमानादि जो जल, स्थल और आकाश मे चलने वाले हो, बनाने का लिखा है। शिल्प विद्या के प्रचार से सुख प्राप्ति का बार बार उल्लेख किया। अत: विविध प्रकार के यन्त्रो से निर्माण का अनुसन्धानात्मक प्रयत्न करना चाहिये।

यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है तो शिल्प यन्त्रादि मे अग्रसर होना चाहिये। भारद्वाज का विमान शास्त्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाशित किया। यह बहुत ही प्रशसनीय कार्य किया है। अत: इसके आधार पर यन्त्रादि का निर्माण विमान आदि तथा उनके यन्त्रों का निर्माण का प्रयत्न करने से ही विश्व के वैज्ञानिक वेद के विज्ञान की ओर आकृष्ट हो सकेंगे। ऋग्वेद का उपवेद आयुर्वेद है। अनेक वृक्ष, वनस्पति औषधियो के नाम व गुणो का वर्णन ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद मे आते हैं। अनेक नाम वर्तमान समय में अप्रचलित भी हैं। उनका अनुसन्धान, उनको विशेष प्रभावशाली करने का, उन वनस्पतियो का उद्यान निर्माण तथा औषधियो का विविध प्राणियों पर प्रयोग करके उनकी उपकारिता प्रकट करने का प्रयत्न होना चाहिये।

महर्षि ने गणित विद्या का मूल वेद है, यह ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा वेद भाष्य मे लिखा है। इतने मात्र से वेद की वर्तमान समय मे उपयोगिता नही हो जाती है। वेद की ओर सर्वसामान्यजनों प्रवृत्ति की करने के लिये वेद के आधार पर गणित के अध्ययन की परिपाटी का स्वरूप अन्वेषित करना चाहिये। जो सुगम भी हो। इस बारे में श्री प० अयोध्याप्रसादजी ने कुछ प्रदर्शन वैदिक गणित के किये थे, परन्तु वे अपर्याप्त थे। पुन: पुरी के पूर्व शंकराचार्यजी ने वैदिक गणित के प्रशिक्षण केन्द्रो द्वारा कार्य किया था। उन्होने वैदिक मैथेमैटिक्स पुस्तक अंग्रेजी में लिखी उस आधार पर आर्य संस्थाओ में, गुरुकुलों एव डी. ए वी. संस्थाओं मे प्रशिक्षण दिया जाना था तथा उसे व्यावहारिक बनाना था। उसे अमेरिका के शिक्षण संस्थाओं मे प्रधानता प्राप्त हुई। हमें भी उस आधार पर से सामान्य एव उच्च गणित का अनुसंधान करना चाहिये। जिससे वेद का प्रचार प्रशिक्षण संस्थाओ में हो सके।

अनेक आर्य समाजो में होम्योपैथिक या अन्य चिकित्सा की व्यवस्था है। इससे तो यही प्रकट होता है कि हमारे भवन की उपयोगिता हमारे कार्यों के लिए नही है क्योंकि हमारे पास अब कुछ कार्य करने की योजना नहीं है। इससे वेद विद्या की उन्नति या प्रचार का क्या प्रयोजन ? एक ओर यज्ञ से वायु मण्डल की शुद्धि, रोगो के विनाश का प्रतिपादन व्याख्यानों मे व लेखो से हम करें और दूसरी तरफ यज्ञ को विरोधी चिकित्सा प्रणालियो को प्रोत्साहन एव आश्रय दे ये परस्पर विरोधी कार्य नही होने चाहिए। हमे यज्ञ चिकित्सा प्रणाली से रोग निवारण के केन्द्र आर्य समाजो मे खोलने चाहियें और उसके लिए वानप्रस्थो को, पुरोहितो को प्रशिक्षित कर यज्ञ चिकित्सको को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए। कुशल वैद्य पचकर्म द्वारा रोगी के शरीर को शोधन कर औषधि देकर आरोग्यता प्रदान करता है। ये पचकर्म स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन आदि स्वाभाविक रूप से यज्ञ में होते है। शुद्ध भेषज वायु की प्राप्ति द्वारा अतिशीघ्र आरोग्यता प्राप्त होती है। इसमे वेद की चिकित्सा क्षेत्र मे प्रतिष्ठा होगी।

महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मे उपासना योग का प्रकरण बहुत सुन्दर लिखा है। इतने मात्र से उद्देश्य की पूर्ति नही होती। आज ससार योग के लिये लालायित है। योग विद्या वेद की एक प्रमुख विद्या है। उसी के आधार पर पातजल योगदर्शन है। आज अनेक अवैदिक, वेद-विहीन लोगो के योग शिक्षण व आश्रम देश और विदेशो मे खुले हुए हैं। परन्तु देश विदेशो मे स्थापित आर्यसमाजो मे उपासना एव योग की उपेक्षा है। यदि किसी आर्य समाज में किसी योगाश का शिक्षण होता भी है तो वह महर्षि द्वारा प्रतिपादित उपासना योग के आधार पर नही है। अत योग विद्या के अनुसंधान तथा प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना होनी चाहिए। उपासना योग का व्यावहारिक रूप वैदिक सध्या है। उसी के आधार पर मन्त्रो द्वारा अष्टाग योग की साधना का प्रयत्न करना चाहिये। तभी वेद का प्रचार होगा।

यजुर्वेद अ० १८ मे यज्ञेन कल्पन्ताम् के द्वारा ४०० से भी अधिक अनुसन्धान कार्यों की गणना है। यजुर्वेद अ० ३० मे ५० से अधिक प्रकार की विद्या व कार्यो की गणना है। उनके प्रशिक्षण या उन विद्याओ पर वैदिक दृष्टि से अनुसधान कार्य हो सकते हैं। यजुर्वेद अध्याय १६ मे ७८ प्रकार के कार्यक्रमो को सत्कार योग्य बताया है। उन कार्यो के अनुसधान कार्य हो सकते हैं। इसी प्रकार यजुर्वेद अध्याय २४ मे अनेक पशु, पक्षी एव जलचरो के गुण कर्म उनके रगो के आधार पर एव अन्य प्रकार से लिखे हैं। वह भी अनुसन्धान के कार्य हैं। वेद के देवता तत्वों के आधार पर अनुसधान का महान क्षेत्र है। वेद मे विद्याओ का महान् सग्रह है। अनेक प्रकार के अनुसन्धान किये जा सकते हैं। अन्य कार्यो मे धन एव शक्ति का व्यय न करके वेद विद्याओ के अनुसन्धान मे अग्रसर होना चाहिए।

प्रवेश परीक्षाओं में हिन्दी का विकल्प

दैनिक नवभारत टाइम्स के १२-३-९१ के अक मे छपी सूचनानुसार पोत परिवहन महानिदेशालय, बम्बई द्वारा बम्बई मे ३ वर्षीय नेवीगेशन, पाठ्यक्रम (जिसके पश्चात् बी० एस० सी०) प्रेक्टिकल साइंस (की डिग्री दी जाएगी) तथा चार वर्षीय मेरीन इन्जीनियरिंग पाठ्यक्रम, कलकत्ता में प्रवेश हेतु जून, १९९१ मे एक प्रतियोगात्मक परीक्षा ली जाएगी। परीक्षा मे ४ प्रश्न पत्र होंगे। भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र और गणित के प्रश्न पत्रो के उत्तर हिन्दी में भी देने का विकल्प होगा। एक अग्रेजी का प्रश्न पत्र भी होगा जो केवल अर्हक प्रकार का (क्वालीफाइंग) होगा और इसके अक शेष ३ प्रश्न पत्रो के जोड मे सम्मिलित नहीं होंगे। परीक्षा के बाद साक्षात्कार भी होगा। बम्बई के पाठ्यक्रम में लगभग ८३ और कलकत्ता के पाठ्यक्रम में लगभग १२० स्थान होंगे।

पाठको से अनुरोध है कि हिन्दी विकल्प की जानकारी अधिक से अधिक व्यक्तियों को दी जाए जिससे कि वे हिन्दी माध्यम का विकल्प ले सके। उम्मीदवारो को हिन्दी मे प्रश्न पत्रो के उत्तर लिखे जाने मे सहायता देने के लिए सबंधित साहित्य को हिन्दी मे भी प्रकाशित कराने का यत्न किया जाए। अन्य इसी प्रकार की जिन-जिन परीक्षाओ मे हिन्दी का विकल्प नही हुआ है, उनके लिए प्रयत्न किए जाए।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा

स्वीकृत शिविरों की सूची

सन १९९१

१—२६ मई से २ जून १९९१ तक आर्यसमाज मकड़ोली (रोहतक) हरियाणा

२—२७ मई से २ जून १९९१ तक डी ए. वी स्कूल करनाल, हरियाणा

३—२७ मई से २ जून १९९१ तक दयानन्द महिला विद्यालय, सैक्टर एक, फरीदाबाद, हरियाणा

४—२९ मई से ७ जून १९९१ तक आर्यसमाज चनार्दना, सहारनपुर (उ.प्र)

५—३१ मई से ९ जून १९९१ तक महाशय चुन्नीलाल सरस्वती उच्चतर विद्यालय, एल० ब्लाक हरिनगर, दिल्ली

६—१ जून से ८ जून १९९१ तक आर्य समाज दादो, अलीगढ (उ० प्र०)

७—१ जून से ९ जून १९९१ तक आर्य इण्टर कालेज तेहडा, मेरठ (उ प्र.)

८—१ जून से ९ जून १९९१ तक आर्य समाज बाराकोटा राजस्थान,

९—२ जून से ९ जून १९९१ तक आर्य समाज नरवाणा, जीन्द हरियाणा

१०—२ जून से ९ जून १९९१ तक गाव पाथोद (नारनोल) हरि०

११—३ जून से ९ जून १९९१ तक आर्य समाज भिवानी (हरि०)

१२—१२ जून से २१ जून १९९१ तक गुरुकुल पुष्पावती पूठ, गाजियाबाद (उ० प्र०)

१३—२१ जून से ३० जून १९९१ तक महर्षि दयानन्द स्मृति भवन, जोधपुर (राज०)

१४—२४ जून से २९ जून १९९१ तक आर्य समाज कैथल, हरि०

१५—२४ जून से २९ जून १९९१ तक आर्य समाज सोहना, गुडगांवा (हरि०)

१६—२५ जून से ४ जुलाई १९९१ तक आर्यसमाज रामनगर, रोहतक रोड, जीन्द (हरि०)

१७—९ जून से २३ जून १९९१ तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल शिक्षक शिविर, गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार (उ०प्र०)

—बाल दिवाकर हस, प्रधान सचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल, दिल्ली

चुनाव समाचार

—आर्य समाज अशोक नगर, दिल्ली का वर्ष १९९१-९२ का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ।

श्री भगतराम आर्य-प्रधान, श्री चन्द्रभान सेतिया-महामन्त्री, श्री मिठन लाल जी-कोषाध्यक्ष।

—आर्य समाज पजाबी बाग, नई दिल्ली की साधारण सभा की बैठक मे १८-४-९१ को वर्ष १९९१-९२ के लिए निम्नलिखित अधिकारी चुने गए—

श्री बासदेव लाल धवन—प्रधान, श्री गिरधारी लाल गुलाटी—मन्त्री, तथा श्री टी० एन० महतानी—कोषाध्यक्ष

—आर्य समाज बड़ा बाजार कलकत्ता के साधारण अधिवेशन मे समाज के नवीन अधिकारियो का निर्वाचन अत्यन्त उल्लास पूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुआ, जिसमे सर्व सम्मति से परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री गजानन्द आर्य ने समाज के मन्त्री पद को सुशोभित किया। साथ ही श्री फूलचन्द आर्य—प्रधान तथा श्री दीनदयाल गुप्ता जी कोषाध्यक्ष चुने गये।

(पृष्ठ ४ का शेष)

महर्षि दयानन्द ने इस ग्रन्थ मे गाय को भारतीय अर्थ व्यवस्था का मूलाधार माना है। वे गाय के साथ बैल, भैंस, ऊट-ऊटनी, बकरा-बकरी, भेड़-भेडी आदि की उपयोगिता पर भी विचार करते हैं। उनका कहना है कि ये पशु जीवन भर घास-फूस खाकर आदमी की सेवा करते हैं और मर कर भी आदमी के काम आते है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने रिवाडी मे स्वय गौशाला की स्थापना की थी। समवत: आधुनिक युग मे यह भारत की सबसे पहली गौशाला थी जिसे सार्वजनिक हित की दृष्टि से स्थापित किया गया था।

पर्यावरण प्रदूषण समस्या का वैदिक समाधान

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
यजुः ३६/३

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आसुव ॥ यजु. ३०/३

ये दोनों सुप्रसिद्ध वेदमन्त्र सूर्य की महत्ता का वर्णन करते हैं। आराधक मानता है कि सूर्य के पास ऐसी शक्ति है जो हमें कुछ दे सकती है। एक अन्य वेद की ऋचा है—

सूर्यस्त्वाधिपतिर्मृत्योरुदायच्छतु रश्मिभिः ॥ अथर्व ४/३०/१५

अधिष्ठाता सूर्य अपनी प्रखर किरणों से तुम्हे मृत्यु से बचाए। एक अन्य मन्त्र जो हम प्रतिदिन पाठ करते हैं—

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम् सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा (यजु० ७/४२)

सूर्य इस ससार की आत्मा है। यह आध्यात्मिक रूप से तो सत्य स्वीकृत है ही, वैज्ञानिक रूप से भी सत्य है। आधुनिक चिकित्सा शास्त्र भी सूर्य की किरणो को महोषधि मानता है। सूर्य हमें ऊर्जा और स्वास्थ्य देने वाला है। पर यह कब तक हमें ऊर्जा और स्वास्थ्य देने वाला बना रहेगा, यह बात विचारणीय है। मनुष्य अपनी करतूतो से ऐसी परिस्थितिया पैदा करता जा रहा है कि सूर्य हमारा आराध्य देव नहीं बल्कि शत्रु बन जाएगा। वह मनुष्य की रोगो से रक्षा नही कर सकेगा, बल्कि मृत्यु की ओर ले जायेगा। सूर्य की किरणे कैंसर जैसे भयंकर रोग अपने साथ लाएगी। आदमी की रोग से लड़ने की क्षमता नष्ट हो जाएगी। गर्मी बेहद बढ़ जाएगी। पहाड़ो की बर्फ पिघल कर समुद्र तल को बढ़ायेगी। रेत का साम्राज्य बढ़ जायेगा। कुएं सूख जायेंगे। लोग शहर को छोड़ कर जगलों की ओर भागेंगे। यह कल्पना बहुत ही भयावह है। सूर्य तो हमारा रक्षक है, वह ऐसा क्यो करेगा? वह ऐसा करेगा क्योंकि मानव अहकार मे चूर है। वह प्रकृति और पर्यावरण से खिलवाड़ कर रहा है। हवा और पानी मे विषैली गैसें घोली जा रही है। हर कार्य का यन्त्रीकरण हो गया है। शहरो में बिना कूलर, हीटर बिजली, रेफ्रीजरेटर, एयर कडीशनर जीवन की कल्पना करना असम्भव हो गया है। वृक्ष अन्धाधुन्ध काटे जा रहे हैं। वृक्ष लगाये नहीं जा रहे हैं। यज्ञों की ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। आधुनिकता और विकास के नाम पर जो बाध बनाये जा रहे हैं, वही जान लेवा हो गये हैं। ऋतुचक्र अव्यवस्थित हो गया है। हाइड्रोजन तथा अन्य एटमी बम सारे वातावरण को विषाक्त कर रहे हैं। वर्षा कभी भी हो सकती है या कभी भी नही हो सकती। धरती का तापमान बढ़ गया है। दक्षिणी ध्रुव के पास ओजोन मे छेद हो गया है। यह ओजोन हमारी सूर्य की अनिष्टकारी किरणों से रक्षा करता है।

इस भयावह चित्र का निदान सम्भव है। सम्पूर्ण संसार के मानवशास्त्री इस कार्य के लिए प्रयत्नशील हैं। ससार के प्राचीन ज्ञान ग्रन्थ वेदो मे भी इसके निदान का सकेत है। परन्तु इसके लिए हमे परिश्रम करना पड़ेगा। निष्ठापूर्वक वैदिक आदेशों का पालन करना होगा। यदि तर्क तथा इच्छा शक्ति से काम लें तो इनका निदान कठिन नहीं है, परन्तु हमारे प्रयास विश्वजनीन होने चाहिए। भारत में पिछले दस वर्षों से वन तथा पर्यावरण की ओर ध्यान गया है, जबकि इनकी ओर हमारा ध्यान बहुत पहले जाना चाहिए था।

वेदों में आदर्श राष्ट्र का स्वरूप राष्ट्रीय प्रार्थना मे वर्णित है। उसमे जो साधन हैं, पर्यावरण से सम्बन्धित बाते इस प्रकार है—निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजु० २२/२२

हमारी कामना है कि समय पर ठीक वर्षा हो। यह तभी सम्भव है जब राज्य में उत्तम प्रजा हो और यज्ञादि शुभ कर्म किये जाए। यह सर्वसम्मत स्वीकृत तथ्य है, कि यज्ञादि शुभकर्म होगे तो मेघमण्डल शुद्ध होकर समय पर वर्षा भी होगी, अतिवृष्टि व अनावृष्टि से हमारी रक्षा होगी परन्तु हमतो इसके विपरीत कर्म कर रहे हैं। कोयले और बिजली के कारखानो से निकलने वाली गैस हमारे वायुमडल को समाप्त कर रही है। जिससे विविध रोगो की उत्पत्ति होती है। अतः हम यज्ञ करें इससे हमारी रक्षा होगी। यज्ञ विधान मे इस बात का वर्णन आता है कि विशेष वनस्पतिया डालने से, विशेष रोग से पीड़ित लोगो को लाभ मिलता है। उस विषय में गुग्गल को बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। राष्ट्र की अगली आवश्यकता है कि वनस्पतिया, फल-मूलादि प्रचुर मात्रा मे उत्पन्न हो। जो फलाहारी और शाकाहारी हैं वे दीर्घायु होते हैं। वनस्पतियां, वृक्ष आदि भू-क्षरण को रोकते हैं, जलप्लावन को रोकते हैं और वायुमण्डल को शुद्ध करते हैं। हमें वन्य पशुओं की भी रक्षा करनी चाहिए। वेद का आदेश है—मा हिंसीः पुरुष जगत्। प्राणी जगत् का विनाश मत करो। आज वनों में नये पेड़ जो स्वतः पैदा हो जाते थे, नही हो रहे हैं, इसका कारण यह है कि वृक्ष से गिरने वाला बीज जो वन्य पशुओं के खुरो से जमीन मे दब कर अकुरित होता था, वैसा नही हो रहा है। देवदार के बीज के लिए यही कठिनाई है।

यज्ञ द्वारा पर्यावरण शोधन के तो अनेक उदाहरण प्राप्य हैं—शन्नो वातः पवताम् (यजु० ३६/१०) यज्ञ से सुखकारी वायु चलने लगती है। हम प्रति दिन यज्ञ प्रार्थना में बोलते हैं—लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिये। वायु जल सर्वत्र हो शुभ गन्ध को धारण किए। शमु सन्तु यज्ञाः—यज्ञ हवन, कल्याणकारी हो। शं न ईषिरो अभिवातु वातः—चारो ओर सुखदाता वायु का प्रवाह चले। शं नः ओषधिर्वनिनो भवन्तु—वृक्ष वनस्पतियो का वन्य रूप हमे सुखकारी हो। गोघृत को विषनाशक शक्ति से युक्त माना गया हैं। आज भी गांव-देहात मे सर्प-काटे व्यक्ति को घी पिला दिया जाता है। अग्नि के मेल से तो घी की शक्ति और भी बढ़ जाती है, जैसे छौंक द्वारा चारो ओर सुवास फैल जाता है, अतः हमें यज्ञ करने चाहिए। "यज्ञस्य देवमृत्विजम्" यज्ञ ऋतुओ का निर्माता है। ऋतु से वर्षा, वर्षा से वृक्ष और वृक्षो से भेषज वात—यह प्रक्रिया प्रदूषण को समाप्त करेगी। यज्ञाद् भवति पर्जन्यः—साथ ही यज्ञ वर्षा की वृद्धि भी करने वाला है। मेघ बनने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है—वायु, धूम्र, अभ्र, मेघ। यही क्रम वेद मे भी उपलब्ध होता है—वाताय स्वाहा, धूम्राय स्वाहा, अभ्राय स्वाहा, मेघाय स्वाहा।
(यजु०:२२/२६)

द्यां मा लेखी, अन्तरिक्ष मा हिंसीः (यजु०: ५/४३) वैदिक ऋषि का ज्ञान "ओजोन" तक पहुंचा है, जब वह कहता है—द्युलोक और अन्तरिक्षलोक के विशाल क्षेत्र को विकृत मत करो। ओ३म् द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः (यजु०: ३६/१७) इसमे भी यही बात कही गयी है। वेद में कृषक के लिए भी विद्वान होने की कामनाएं हैं। सुसस्याः कृषीस्कृधि (यजु०:४/१०) हम उत्तम अन्नों की कृषि करें। हम भू सस्कार करें—पृथिवी च मे यज्ञेन कल्पताम् ॥

आवश्यकता इस बात की है कि पांचो महाभूतो मे जो प्रदूषण है, उसको समाप्त करने के लिए प्रयास करे। इसके लिए एक वैदिक समाधान है—हम वर्णाश्रम व्यवस्था का पूर्णतः परिपालन करें इस व्यवस्था के अन्तर्गत ब्रह्मचारी और वानप्रस्थी तो जगलो में ही रहेंगे, इसलिये वे प्रदूषण नही फैलायेंगे। गृहस्थी लोग यज्ञ करेंगे, जितना प्रदूषण वे फैलाएगे, इसका निराकरण वे यज्ञो द्वारा करेंगे।

इस लेख मे यह विस्तार सम्भव नही है कि पांचो महाभूत किस प्रकार विकृत होते हैं। उनसे क्या हानि है और उनका निदान कैसे करें पर यह निश्चित है कि वैदिक जीवनचर्या के द्वारा हम पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से निपट सकते हैं।

भारत की भूतपूर्व पर्यावरण विकास मन्त्री श्रीमती मेनका गाधी ने 'नीम' के वृक्षो को रोपने की बात कही थी। यह श्लाघ्य है। उन्होने विभिन्न वृक्षो की जीवनी शक्तियो के विषय मे एक पुस्तक भी लिखी हैं। यह विस्तार भी यहा सम्भव नही है। पीपल का वृक्ष पूज्य माना गया है। इसका वैज्ञानिक आधार है, क्योंकि यह सर्वाधिक आक्सीजन प्रदान करता है। अन्य वृक्षो के विषय मे विभिन्न तथ्य प्राप्त हैं जो हमारे रक्षक हैं।

भारत के राष्ट्रपति श्री आर० वेकटरमण ने २० दिसम्बर १९८९ को ससद के समक्ष भाषण मे पर्यावरण को विशेष महत्व देने की बात कही थी। पिछले दिनों मेरठ के प्रभात आश्रम मे इस विषय पर एक सगोष्ठी हुई थी और निर्णय लिया गया था कि सरकार को वैदिक समाधान सार रूप में भेजा जाएगा। वेद हमारी अमूल्य सम्पदा हैं जिनके आदेशो के परिपालन से हम सभी समस्याओं का मुकाबला कर सकते हैं।

—डा० धर्मपाल

महर्षि दयानन्द सरस्वती और कृषि

—डा० धर्मपाल—

भारत एक कृषि प्रधान देश है। इसकी लगभग अस्सी प्रतिशत जनता कृषि पर निर्भर है। अधिकांश किसान गांवो में रहते हुए, कृषि के संवर्धन मे लगे है। शहरो मे अनेक प्रयोगशालाओ मे कृषि को बढाने के लिए उर्वरको तथा बीजो की नस्ल मे सुधार के लिए, अनुसंधान किए जा रहे हैं। पूसा इन्स्टीट्यूट इस दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। देश मे हुई औद्योगिक और तकनीकी प्रगति का लाभ किसान को भी पहुचा है। कृषि आज वर्षा पर निर्भर नही है। सिंचाई के लिए नए अविष्कार किए जा चुके हैं। नहरो और ट्यूबवैलो का भरपूर उपयोग सिंचाई के लिए किया जाता है।

पिछले वर्षों देश मे सूखा पड़ा। इस का मुख्य कारण तो वर्षा न होना था। दूसरा कुओ में जल स्तर नीचे पहुच जाना था। जल स्तर के नीचे पहुचने के पीछे एक महत्वपूर्ण बात है। वह है पहाडो से जल्दी पानी बह जाना, नदियो मे भी पानी कम हो जाना। पहाडो पर से पेडो की कटाई निरन्तर हो रही है जिसके कारण वहां पानी नही रुकता। वृक्षों के कम होने से पर्यावरण की भी समस्या उठती है। सरकार का इन सब समस्याओ की ओर ध्यान गया है और इन्हे हल करने के लिए निरन्तर प्रयास भी किए गए है। सूखे का सीधा असर हमारी खेती और पशुओ पर पड़ा है। आदमियों के लिए तो खाद्यान्न के भण्डार हमारे पास थे, पर चारे का प्रबन्ध करने के लिए हमे बडी कठिनाई का सामना करना पड़ा।

हमारे प्रधानमन्त्री ने इस समस्या का शीघ्र समाधान खोजने और तत्काल कार्यवाही करने के लिए सितम्बर ८९ में सभी प्रान्तो के मुख्यमंत्रियो की एक बैठक बुलाई थी। इसमे निर्णय लिया गया था कि सूखे को अकाल का रूप नही लेने दिया जाएगा और किसी को भूखा नही मरने दिया जाएगा। इस घोषणा से देश के लाखों सूखा पीड़ित लोगों को नया, बल, विश्वास और भरोसा मिला है। हमारी सरकार ने इस सूखे से निपटने के लिए अनेक राहत कार्य किए थे। प्रधानमंत्री ने स्वय सेवी सस्थाओ से भी इस कार्य मे सहयोग की अपील की। वास्तव मे यह समस्या कुछ लोगो की, क्षेत्र विशेष की या सरकार की न रह गयी थी। यह तो राष्ट्र की समस्या थी। यह पूरे राष्ट्र के लिए एक चुनौती थी।

सूखे का प्रभाव सबसे ज्यादा गाव के लोगो पर पड़ा। इस सूखे का क्षेत्र राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, हरियाणा और उत्तर प्रदेश तक फैला हुआ था। सरकार ने इससे प्रभावित लोगो को सहायता पहुचायी और मानवतावादी स्वय सेवी सस्थाओ ने भी सहायता पहुंचायी। लोगो ने व्यक्तिगत रूप से भी सहायता पहुचायी।

सबसे भयकर स्थिति का सामना पशुओ को करना पड़ा। जब किसान, कुछ स्थानो पर उन्हें चारा मुहैय्या न कर पाए तो वे तड़प तड़प कर मर गए। पशुओं की रक्षा करना हमारी राष्ट्रीय जिम्मेदारी है: यह हमारी सरकार की भी जिम्मेदारी है और अनेक स्वय सेवी सस्थाओ की भी। देश मे अनेक गौशालायें हैं। इन सभी का सयुक्त दायित्व है कि वे सब मिलकर पशुओ की रक्षा करें। हमारी सरकार के बीस सूत्री कार्यक्रम मे भी जहा जहाँ ग्रामीण विकास की बात कही गई है, वहा वहा पशुओ के सरक्षण की बात कही गयी है। यहा तक कि हमारे सविधान की प्रस्तावना मे, तथा अन्य स्थानो पर पशुओ के सरक्षण की बात को याद रखा गया है। हमारे सविधान मे नीति निर्देशक तत्वो का स्थान महत्वपूर्ण है। उसके तत्व सख्या पाच और छः इस प्रकार हैं—पशु तथा कृषि सुधार; दुधारू पशुओ के वध पर रोक।

पशु तथा कृषि सुधार की बात अनेक महापुरुषों ने समय-समय पर उठाई है। ऐसे ही एक महापुरुष के विषय मे आज हम बात करेंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम समाज सुधारकों की पहली पंक्ति में बडे ही सम्मानपूर्वक याद किया जाता है। वे भारत के पुनर्जागरण काल के एक महान पुरोधा थे। राजा राम मोहन राय, महर्षि दयानन्द सरस्वती, अरविन्द और स्वामी विवेकानन्द राष्ट्र जागरण के लिए समर्पित महामानव थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रतिमा बहुमुखी थी। उन्होने समाज सुधार के अनेक कार्य किए। उनके कार्य देश, धर्म और समाज के कल्याण के लिए याद किए जाते हैं। उन्होने १८७५ मे बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य-समाज के नियमों मे मानवमात्र के कल्याण की अनुगूज है। उन्होंने एकेश्वरवाद की स्थापना करके भारत के लोगो को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया। १८७७ मे महारानी विक्टोरिया के दिल्ली दरबार के समय भारत के अनेक भागो से आए भद्रपुरुषो से मिलकर राष्ट्रीय एकता के लिए प्रयास किया। वे जन्मगत जातिवाद के विरोधी थे तथा गुण कर्म स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे। इसी आधार पर वे दलितो तथा हरिजनो को गले लगाकर, समान अधिकार दिलाने के पक्षधर थे। स्त्रियो के लिए उनका उपकार कभी भुलाया नहीं जा सकता था। जिन स्त्रियो को पढ़ने का अधिकार नहीं था, उनके लिए महर्षि दयानन्द ने पाठशालायें खुलवाई। 'स्त्री शूद्रौ नाधीयताम्' का विरोध किया। वे स्त्रियो के लिए समान अधिकार चाहते थे। उनकी मान्यता थी कि यदि पुरुष अपनी पत्नी के मरने के बाद पुनर्विवाह कर सकता है, तो स्त्री क्यो नही कर सकती। वे स्त्रियो के पुनर्विवाह के समर्थक थे। उन्होने सतीप्रथा का विरोध किया। टोना टोटका, बलि जैसी कुप्रथाओ का भी उन्होने जमकर विरोध किया। उन्होंने देश मे सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और आर्थिक क्रान्ति का सूत्रपात किया।

हमारे देश मे १८५७ की सशस्त्र क्रान्ति विफल हो चुकी थी। इसलिए वे जन जागरण मे विश्वास करते थे। उन्होने अनेक राजाओ को उपदेश देते समय स्वाधीनता, के महत्त्व का प्रतिपादन किया था। यहाँ तक कि अपने प्रवचनो में भी परमात्मा से स्वराज्य और स्वतन्त्रता के लिए प्रार्थना किया करते थे। दादाभाई नौरोजी ने १९०६ मे कहा था कि उन्होने स्वराज्य शब्द सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द के ग्रन्थो से सीखा।

महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन वायस राय लार्ड नार्थ ब्रुक से कलकत्ता मे स्पष्ट कहा था—मैं किसी भी स्थिति मे इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता। क्योकि मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियो के विकास के लिए, और ससार के राष्ट्रो मे सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए यह मेरा भारत वर्ष देश (आर्यावर्त्त) शीघ्र ही पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करे। मैं प्रतिदिन प्रातः साय भगवान से प्रार्थना करते हुए यह मांगता हू कि वह दयालु भगवान मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र मुक्त करे।

उन्होंने एक अन्य अवसर पर लार्ड नार्थ ब्रुक से अजमेर में आयोजित विदाई समारोह मे कहा था - आप लन्दन पहुच कर महारानी विक्टोरिया से कह दें—यदि भारतीयो के धार्मिक जीवन मे शासन इसी प्रकार हाथ डालता रहा और गाय जो भारत की अर्थ व्यवस्था की रीढ़ और सांस्कृतिक जीवन की प्रतीक है, उसका वध जारी रहा तो १८५७ की क्रान्ति भी दोहराई जा सकती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मानवमात्र के कल्याण के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की तथा अन्य अनेक ग्रन्थो की भी रचना की।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समस्त विभिन्न क्षेत्रों में कार्य किया। उन्होने कृषि तथा गौ आदि पशुओ के सरक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होने एक सस्था "गौ कृष्यादि रक्षिणी सभा" बनाई। इसके सविधान की प्रस्तावना की पहली पंक्ति है—'जिससे गवादि पशु और कृष्यादि कर्मों की रक्षा और वृद्धि होकर सब प्रकार के उत्तम सुख मनुष्यादि प्राणियो को प्राप्त होते हैं।' महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक पुस्तक 'गौ करुणा निधि' लिखी जो पहली बार संवत् १९३७ चैत्र अर्थात् सन् १८८० मे प्रकाशित हुई। इसके आवरण पृष्ठ पर अंकित है—

गाय आदि पशुओं की रक्षा से सब प्राणियों के लिए ॥
अनेक सत्पुरुषों की सम्मति से आय भाषा में बनाया है ॥
इसके अनुसार वर्तमान करने से संसार का बड़ा उपकार है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्रवेश सूचना

(सत्र-१९९१-९२)

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

(अन्तर्गत : आर्य विद्या सभा, डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति)
नई दिल्ली

पद : धर्म शिक्षक

प्रवेश योग्यता : एम० ए०/आचार्य, हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी भाषा, वैदिक सिद्धान्तो तथा कर्मकाण्ड का ज्ञान आवश्यक।

प्रशिक्षण अवधि : एक वर्ष

सुविधाएं : नि:शुल्क शिक्षा, विशाल पुस्तकालय उपलब्ध, छात्रावासियो को आवास, पानी बिजली सर्वथा नि:शुल्क व भोजन नि:शुल्क।

प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद अभ्यार्थियो को डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओ मे "धर्म शिक्षक" पद पर उचित वेतन पर नियुक्त किया जाएगा।

गत पांच वर्षो मे उत्तीर्ण सभी छात्रों को सर्विस मिल चुकी है। केवल निष्ठावान आर्य समाजी पूर्ण विवरण (नाम, आयु, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव आदि) सहित आवेदन पत्र १५ जून, १९९१ तक निम्न पते पर भेजें :— "प्रो० रत्न सिंह,
प्राचार्य–डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्य समाज मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली–११०००१
फोन : ३४३७१८"

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 23-24-5-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५१ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३९

तपोवन आश्रम, देहरादून का ग्रीष्म महोत्सव सम्पन्न

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के ४२वें वर्ष का ग्रीष्म महोत्सव २२ से २८ अप्रैल तक भव्यता से सम्पन्न हो गया। इस बार का यह समागम उपस्थिति की दृष्टि से अभूतपूर्व रहा।

सामवेद पारायण यज्ञ के मुख्य यजमान दिल्ली के श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री तथा उनके पारिवारिक जन थे। यज्ञ के ब्रह्मा जम्मू से पधारे आचार्य श्री अखिलेश्वर जी ने यज्ञ को अत्यन्त गरिमा और पावनता से सम्पन्न कराया। यज्ञ की समाप्ति पर श्री ओमप्रकाश वर्मा जी के भजन होते थे भजनों के अनन्तर श्री आचार्य जी का प्रवचन होता था।

सप्ताह-भर का योग-साधना शिविर महान् योगी श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज के निर्देशन मे चला। श्री स्वामी जी समय-समय पर शका-समाधान का सत्र भी लेते रहे। मध्याह्नोत्तर मे यज्ञ की समाप्ति के बाद भजनो के अनन्तर श्री स्वामी दयानन्द जी विदेह (वेद-सस्थान, नई दिल्ली) का प्रवचन होता था जो एक प्रकार से साधना का ही क्रियात्मक सत्र होता था।

रविवार २८ अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति के अनन्तर विशाल पण्डाल मे हुई सभा मे [illegible] जी ने [illegible] वाणी मे राष्ट्र-चर्चा करते हुए कश्मीर की वर्तमान स्थिति का चौंका देने वाला चित्र प्रस्तुत किया और श्रोताओं को आह्वान किया कि वे जागरूक हो और जिन लोगो ने सैक्युलरिज्म के पर्दे मे सदा सम्प्रदायवाद का खेल खेलते हुए इस देश के बहुसंख्यक वर्ग का ही अहित किया है उनसे सावधान हो जाए। तभी राष्ट्र रक्षा हो पाएगी।

इसी क्रम में बोलते हुए वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के मंत्री श्री देवदत्त बाली ने कहा कि ससार मे एकमात्र भारत ही ऐसा देश है जहां बहुमत को उतने अधिकार भी नही हैं जितने अहिन्दू कहलाने वालों को प्राप्त हैं। उदाहरण के लिए उन्होंने सविधान के अनुच्छेद ३० का उल्लेख किया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद-विभाग के प्राध्यापक आचार्य सत्यव्रत जी राजेश का वेद-प्रवचन सदा की भाति अत्यन्त प्रेरक रहा। कांगड़ी के ही आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार ने वेद के एक सूक्त की शोधात्मक व्याख्या प्रस्तुत की जिस पर विद्वान जन बहुत आनन्दित हुए।

वेद और यज्ञ मे श्रद्धा रखने वालो के लिए यह आश्रम एक महान् प्रेरणा-स्रोत का काम कर रहा है और जीवनोत्थान की प्रेरणा निरन्तर देता आ रहा है।

—देवदत्त बाली, मन्त्री वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

वेद प्रचार

[illegible] शालीमार बाग के सदस्य श्री महेश सूद के निवास स्थान पर वेद प्रचार का कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रो० रतनसिंह और डा० महेश विद्यालंकर ने आर्य समाज की प्रासगता पर अपने विचार व्यक्त किए।

सेवा में—

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सर्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५१)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ३० | रविवार, २ जून, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

प्रतिहिंसा और मतान्धता की पराकाष्ठा राजीव गांधी की हत्या

राजीव गांधी की श्री पेरुम्बटूर मे एक बम बिस्फोट के कारण हो गई। श्री राजीव गांधी अपने दिन भर के चुनावी दौरे के बाद यहां पर एक जनसभा को सम्बोधित करने के लिए कार से उतरे। श्री गांधी ज्यो ही मच की ओर बढ रहे थे तो कुछ लोगो ने मालाए पहनाई, कुछ लोगो ने गुलदस्ते भेट किए और कुछ लोगो ने उनका चरण स्पर्श किया। पलक झपकते हो जोरदार धमाका हुआ चिंगारी उठी भगदड मच गई, अनेक लोग मरे तथा अनेक लोग गम्भीर रूप से घायल हुए। श्री राजीव गांधी का रक्तरंजित पार्थिव देह मच के पास पड़ा था, लोग बिलख पड़े।



राजीव गांधी की हत्या निश्चित ही देश मे विक्षिप्त प्रतिहिंसा और मतान्धता की पराकाष्ठा है। यह भारतीय जनतन्त्र के अवसान का भी भयावह सकेत है। हिंसा का भयावह चेहरा ऐसे समय सामने आया है जब विघटनकारी ताकतें सक्रिय हैं। राजीव गांधी ५ वर्ष तक प्रधान मन्त्री रहने के बाद पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर चुके थे और इस समय सर्वाधिक लोकप्रिय नेताओ मे से थे। वे भले ही नेहरू की भांति अभी तक भारत के प्रतीक न बन पाये हो। परन्तु उनमे श्रीमती इन्दिरा गांधी और प० जवाहरलाल नेहरू जैसा सम्मोहन झलकने लगा था। आज करोड़ों भारतवासी उनकी हत्या पर स्तब्ध और शोकार्त हैं। उनकी हत्या से निश्चय ही देश अस्थिर होगा।

श्री गांधी ने अपनी माता की हत्या के बाद १९८४ मे प्रधान मन्त्री का पद सम्भाला। १९८९ में उनकी पार्टी पराजित हो गई थी। इस समय वे १९९१ के राष्ट्रीय चुनाव के अपनी पार्टी के चुनाव-प्रचार के अभियान पर निकले हुए थे। उनमे आत्मविश्वास था और वे पर्याप्त उत्साहित थे हत्या से कुछ ही समय पहले मद्रास हवाई अड्डे पर उन्होने कहा था कि इस बार कांग्रेस अपने बल बूते पर सत्ता मे लौटेगी। श्री गांधी अपनी पार्टी की विजय के प्रति आश्वस्त थे दिल्ली में ज्यो ही उनकी हत्या का समाचार मिला उनके १० जनपथ निवास के बाहर रोते-रोते और गुस्से से भरे लोगो का जनसमूह आना शुरू हो गया था। लोग किंकर्त्तव्य विमूढ थे। इस गुस्से का शिकार सामने पड़ने वाला हर कोई था, वह सुरक्षा कर्मी हो, पत्रकार हो अथवा छायाकार। लोग देश के लिए चिन्तित हैं, सोनिया के लिए चिन्तित हैं तथा राहुल और प्रियंका के लिए चिन्तित हैं। लोगो ने राष्ट्रपति के प्रति भी अपना क्रोध दर्शाने मे सकोच नही किया।

राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरमन ने श्री राजीव गांधी की नृशस हत्या को बर्बरतापूर्ण बताते हुए कहा है, कि वे अपने दुःख को शब्दों मे व्यक्त नही कर सकते। उन्होंने कहा कि भारत का एक बहादुर और समर्पित सपूत एक कायर की कार्यवाही से मारा गया है। उन्होने कहा कि इस कुकृत्य से हमे सार्वजनिक जीवन में व्याप्त हिंसा का मुकाबला करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए। राष्ट्रपति ने जनता से संयम रखने की अपील की और कहा कि दुख की इस घडी मे हमें अपनी जन्म भूमि पर शान्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। परीक्षा की घडी में भावनाओं में बहने की बजाए शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रयत्न करना होगा। उप-राष्ट्रपति श्री शकरदयाल शर्मा ने श्री गांधी की हत्या पर गहरा दुःख व्यक्त किया।

उनकी मृत्यु का समाचार सुनते ही देश-विदेश से शोक सदेश आने प्रारम्भ हो गये। अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज बुश ने कहा कि—यह सचमुच एक हादसा है, श्री राजीव गांधी उनके सच्चे मित्र थे। इगलैण्ड के प्रधान मन्त्री श्री जानमेजर ने श्री गांधी की हत्या को भारत और विश्व के लिए एक महान क्षति की सज्ञा दी। फ्रास की नई प्रधानमन्त्री ऐदित क्रेंसो ने कहा कि इन्दिरा गांधी के बाद उनका बेटा, ऐसी हत्या सचमुच भयावह होती है। पाकिस्तान के प्रधानमन्त्री श्री नवाज शरीफ ने गहरा दुःख व्यक्त किया। राष्ट्रमण्डल के देशो मे भी उनकी मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया गया। रूस के राष्ट्रपति श्री गोर्बाचोव ने कहा कि उन्होने एक मित्र खो दिया है।

भारत के प्रधान मत्री श्री चन्द्रशेखर ने श्री गांधी की मृत्यु पर गहरा शोक व्यक्त किया। आधी रात के बाद करीब २ बजे केन्द्रिय मन्त्रिमडल की राजनीतिक मामलो की समिति की बैठक हुई जिसमें श्री गांधी की मृत्यु से उत्पन्न स्थिति पर विचार किया गया।

कांग्रेस अध्यक्ष श्री राजीव गांधी की बम विस्फोट से हुई हत्या पर सभी राजनैतिक दलों सामाजिक और सांस्कृतिक सगठनो ने गहरा शोक व्यक्त किया है। इस निर्मम हत्या को कायरतापूर्ण कुकृत्य बताते हुए अनेक नेताओ ने घटना की कड़ी निन्दा की है। श्री एन टी. रामाराव, श्री अर्जुन सिंह, श्री के सी. पन्त, श्री एम. फारुखी, श्री बालासाहब देवरस, श्री एम करुणानिधि, श्री भास्कर फर्नान्डिस, श्री बसन्त साठे, श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, श्री लालकृष्ण आडवाणी, प्रो० सी. एन राव, श्री सिद्धार्थ शकर राय, श्री सुब्रमण्यम् स्वामी, श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह, श्री हरकिशन लाल भगत, श्री सज्जन कुमार आदि ने इसे जघन्य कृत्य बताया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय मे सभा प्रधान स्वामी आनन्द-बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे एक शोक सभा हुई, जिसमे डा० सच्चिदानन्द शास्त्री, डा० धर्मपाल, श्री विमल वधावन, श्री महाशय धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री राजसिंह, डा० ज्ञान प्रकाश श्री सजय कुमार, श्री प्रियतम दास रसवन्त एव अन्य कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए। सार्वदेशिक की ओर से शोक सवेदनाएँ श्रीमती सोनिया गांधी, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति एवं प्रधानमन्त्री को भेजी गई। प्रेस माध्यम को भी विज्ञप्ति जारी की गई। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने इसे महान अपूरणीय क्षति बताया।

श्री राजीव गांधी का पार्थिव देह तीनमूर्ति भवन मे रखा गया। सम्पूर्ण देश और विदेशो के गणमान्य लोगो ने श्री राजीव गांधी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। तथा विषादग्रस्त परिवार के प्रति अपनी सवेदना प्रकट की।

श्री गांधी की अन्त्येष्टि २४ मई को शक्तिस्थल और राजघाट के बीच सैनिक सम्मान पूर्वक की गई। स्व० राजीव गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए ६१ देशो के राष्ट्र प्रमुख उनके अंतिम सस्कार मे सम्मिलित हुए। श्री राहुल गांधी ने वैदिक मत्रोच्चार के बीच श्री राजीव गांधी का अन्तिम सस्कार किया। श्री गांधी की शवयात्रा मे भारी भीड थी। देश-विदेश के लोग बिलख-बिलख कर रो रहे थे। श्रीमती बेनजीर भुट्टो, श्रीमती मेनका गांधी, श्री अरुण नेहरू श्री गुलाम नबी आजाद, श्री आर के धवन, श्री एम एल. फोतेदार, श्री अमिताभ बच्चन, और अन्य अनेक नेता विषाद ग्रस्त थे। श्री राजीव गांधी की अस्थियो का चयन २६ मई को श्री राहुल गांधी ने किया। नेहरू परिवार की परम्परा के अनुसार एक विशेष रेल से इलाहाबाद ले जाया गया। कुछ समय के लिए पैतृक निवास आनन्द भवन मे इन अस्थि कलशो के रखने के बाद इन्हे सगम मे प्रवाहित किया गया।

गौरव और गरिमा के प्रतीक दलितो के परमहितैषी श्री राजीव गांधी को अश्रुपूरित नेत्रो से और विगलित हृदय से राष्ट्र ने अन्तिम विदाई दी। उस महान आत्मा के लिए हमारी सश्रद्ध विनत श्रद्धांजलि।

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

वेदों की सार्वभौमिकता

—पद्मश्री डा० कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

वेद ज्ञान की निधि हैं। वेदो में अनन्त ज्ञान और विज्ञान भरा हुआ है। विश्व संस्कृति के आधार वेद हैं, इनसे विश्व की विभिन्न संस्कृतियो का विकास हुआ है। अतएव स्मृति ग्रन्थों मे वेद को सर्वज्ञानमय बताते हुए इसे धर्म का आधार कहा गया है और द्विजमात्र के लिए वेदो के अध्ययन पर विशेष बल दिया गया है।

वेदोऽखिलो धर्ममूलम्। मनुस्मृति २-६
सर्वज्ञानमयो हि सः। मनु० २-७
वेदमेव सदाभ्यस्येत् तपस्तप्यन् द्विजोत्तमः। मनु०२-१६६
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा। यजुर्वेद ७-१४

वेदो के विषय में स्मृतियो आदि की यह अवधारणा गम्भीर चिन्तन का फल थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदो को अक्षय ज्ञान का स्रोत और मानव मात्र के लिए अभ्युदय का आधार माना है। वेदो की ज्योति से ही समस्त विश्व का कल्याण सम्भव है। अतएव ऋषिवर ने आर्य समाज के दस नियमो में सभी आर्यों के लिए वेदाध्ययन अनिवार्य कर्त्तव्य बताया है।

'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'। (नियम-३)

महर्षि यास्क का कथन है कि वेदो मे गूढ तत्व छिपे हुए हुए हैं। उन्हें ऋषि या तपस्वी ही जान सकते हैं।

नहि एषु प्रत्यक्षमस्ति अनृषेरतपसो वा। निरुक्त १३-१२

महर्षि दयानन्द ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' मे जहाँ अन्य विविध विषयों का विवेचन किया है, वहाँ उन्होने कतिपय वैज्ञानिक विषयो का भी विवेचन प्रस्तुत किया है। उसमें विशेष उल्लेखनीय विषय ये हैं—

पृथिव्यादि लोक भ्रमण-विषयः, आकर्षणनुाकर्षण विषयः, प्रकाश्य-प्रकाशक-विषय, गणितविद्या-विषयः, नौविमानादिविद्या-विषयः, तारविद्या विषय., वैद्यकशास्त्रमूलविषयः आदि।

अर्थात् पृथिवी आदि लोक घूमते हैं, सूर्य के आकर्षण से लोक रुके हुए है, सूर्य चन्द्रमा आदि को प्रकाश देता है, वेदो में गणित विद्या नौका, विमान आदि की रचना तथा तारविद्या और वैद्यक शास्त्र का मूल विद्यमान है।

महर्षि दयानन्द ने विविध मन्त्रो के उल्लेख द्वारा सिद्ध किया है कि विज्ञान की विविध विद्याओ से सम्बद्ध मत्र वेदो मे प्राप्त होते हैं और इनके गहन अध्ययन के द्वारा शिल्प और विज्ञान की अनेक विद्याओ का रहस्य का पता चलाया जा सकता है।

वेदार्थ प्रक्रिया और महर्षि दयानन्द—

वेदार्थ प्रक्रिया में महर्षि दयानन्द का अनुपम योगदान है—नैरुक्त प्रक्रिया निरुक्त प्रतिपादन इस प्रक्रिया मे वेदो के देवता आदि वाचक शब्द रूढ न होकर यौगिक है और वे यौगिक अर्थ के बोधक होने से तद्गुण विशिष्ट विभिन्न अर्थों का बोध कराते हैं। अतएव इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, सोम आदि शब्द परमात्मा, जीवात्मा, प्राण वायु आदि अनेक अर्थों का प्रसंगानुसार बोध कराते है।

पाश्चात्य विद्वानो की सबसे बडी भूल यह रही है कि इन विद्वानों ने इन शब्दो को रूढ मानते हुए एकार्थक माना है और वे इन शब्दो का रहस्य समझने मे असमर्थ रहे है। अतएव उनके लिए इन्द्र-वृत्र आदि शब्द केवल देव-असुर-सग्राम आदि तक ही सीमित रह गये हैं।

सायण आदि आचार्यों की भूल यह है कि उन्होने वेदो का अर्थ करने में सभी मन्त्रों को देव-स्तुति-परक या यज्ञ-परक मान कर तदनुसार मन्त्रो की व्याख्या की है। उन्होंने उन मन्त्रो के आध्यात्मिक या वैज्ञानिक अर्थो की सर्वथा उपेक्षा की है। पाश्चात्य विद्वानो ने उनके अर्थों को आधार मान कर अपने अनुवाद आदि प्रस्तुत किए हैं। अत. वे वेदार्थ की रहस्यात्मकता और गम्भीरता से वचित रह गये हैं।

वेदों मे आध्यात्मिक और रहस्यात्मक व्याख्या प्रस्तुत करने वाले विद्वानों मे विशेष उल्लेखनीय है—योगिराज अरविन्द घोष, प० मधुसूदन ओझा, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, प० रामदत्त शुक्ल एडवोकेट (लखनऊ), प० मोतीलाल शास्त्री आदि।

वेदो का वैज्ञानिक दृष्टि से अनुशीलन करने वाले भी कतिपय विद्वान् हैं। उनमे विशेष उल्लेखनीय हैं—

Positive sciences in the vadas के लेखक डा० डी० डी० मेहता।

"The Vedic Gods, As Figures of Biology के लेखक प्रो० वी० जी० रैले।

Founders of science in Ancient India के लेखक डा. सत्यप्रकाश सरस्वती।

Science in the Vedas के लेखक आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री।

वैदिक साहित्य संरक्षण—

वैदिक साहित्य के सरक्षण में अनेक भारतीय और पाश्चात्य विद्वानो ने श्लाघनीय प्रयत्न किए हैं। इनके प्रयत्न का ही फल है कि वैदिक वाङ्मय अभी तक सुरक्षित है और वैदिक ज्ञान का विश्व भर में प्रचार और प्रसार हुआ है। इन आचार्यों के लिए वैदिक शब्दो में यही श्रद्धांजलि है कि—

इद नम ऋषिभ्य पूर्वजेभ्य पूर्वेभ्य पथिकृद्भ्य। ऋग्वेद १०-१४-१५।

इन आचार्यों की बहुत लम्बी सूची है। कुछ विशेष उल्लेखनीय भारतीय आचार्य हैं—महर्षि दयानन्द, आचार्य सायण, आचार्य वेकट माधव, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, आचार्य नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, डा० हरिदत्त शास्त्री, डा० मगलदेव शास्त्री, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल, डा० सूर्यकान्त, जयदेव विद्यालकार—क्रमशः

आर्यत्व में प्रखरता लायें

—श्री बाबूरामसिह 'कवि'

विनती विनम्र हर आर्य से, आर्यत्व मे प्रखरता लायें।
संकल्प दृढ़ लें तन मन से, बुद्धिजीवी वर्ग आगे आयें॥

हर आर्यों के घर घर अन्दर वेदों का सुन्दर पाठ होवे।
जागरुकता, एकात्मा, आर्यत्व का पावन घाट होवे॥

गो पालन होवे घर-घर में तुलसी का पौधा लगवायें॥
सकल्प दृढ़ लें तन मन से बुद्धिजीवी वर्ग आगे आयें।

गो मां से सबकी रक्षा है, गो दूग्ध ही स्वास्थ्य सुधारक है।
जो गो भक्षण करने वाला कैसे वो सत्य विचारक है॥

है घोर नरक यह महापाप इस अत्याचार को रुकवाये।
सकल्प दृढ ले तन मन से बुद्धिजीवी वर्ग आगे आयें॥

ऋषिवर का पावन चरित्र हर आर्य उसका ध्यान करें।
अपनाकर अन्त:करण मे निज हृदय से अति सम्मान करे॥

यज्ञ, जनेऊ घर घर में सहयोग देकर के करवायें।
सकल्प दृढ ले तन मन से बुद्धिजीवी वर्ग आगे आयें॥

जो कवि, लेखक, उपदेशक है हर शहर-शहर प्रसार करे।
महिला मंडल भी संगठित हो धर्म वेदों का प्रचार करें।

जागरूक हो करके नर नारी मर मिटने की कसम खायें।
सकल्प दृढ़ ले तन मन से बुद्धिजीवी वर्ग आगे आयें॥

वेदो का ज्ञान ऋषिवर का मत हर जगह-जगह पर जा करके।
सद्भाव प्रेम दे जन-जन को लौटे प्रभु कृपा पा करके।

कर्त्तव्य यही हर आर्यो का मरते दम तक नहीं भूला पायें।
संकल्प दृढ लें तन मन से बुद्धिजीवी वर्ग आगे आयें॥

हर आर्य मूल में बोध भाव भी पूज्य रहे ऋषिवर मत से।
जानकारी हेतु सम्पर्क करें संस्था के उच्च सभासद् से।

अब चुप न रहे सह अत्याचार तन्द्रा निद्रा से जग जायें।
संकल्प दृढ़ लें तन मन मन से बुद्धिजीवी वर्ग आयें॥

मानवता, सदाचार, सद्गुण का अपने अन्दर योग करें।
तन-मन से आर्य संस्था का हर आर्य मिल कर सहयोग करें।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(१९ मई, ९१ के अंक से आगे)

. ये लोग शायद आर्य समाज मन्दिर में साधारण आर्य समासदों के साथ दरी पर बैठ कर सत्संग करने मे अपने उच्च पदो की गौरव हानि समझते थे। मुझे एक बार इनके सत्संग में उपस्थित होने का अवसर मिला। यों श्री शिवहरे आर्य समाज सरदारपुरा के सभासद ही थे। बाद में श्री महेशदत्त भार्गव भी सरदारपुरा मे रहने लगे। वे जोधपुर उच्च न्यायालय मे वकालत करते थे। सर्वं श्री घीसूलाल जी, विश्वम्भर दयाल जी, मानमल जी तथा छोटूमल जी से मेरी अधिक पटती थी। हम लोग प्राय: परस्पर मिलते तथा आर्य समाज से सम्बन्धित समस्याओ पर चर्चा करते।

आर्य पथ मासिक का प्रकाशन—

श्री घीसूलाल जी आदर्शवादी तथा कल्पनाशील मनोवृत्ति के व्यक्ति थे। उनमे भावुकता भी पर्याप्त मात्रा मे थी। अपने अध्यापकीय जीवन की जिम्मे-दारियों को निभाने के पश्चात् मेरे पास समय पर्याप्त रहता था। यद्यपि लेखन का काम तो चलता ही रहता था, किन्तु आर्य समाज की गतिविधियो मे चौबीस घन्टे उलझे रहने के कारण हम लोग आपसी विचार विमर्श मे भी पर्याप्त समय लगाते थे। इन्हीं दिनों मैंने अपनी मित्र मण्डली के सम्मुख "आर्य पथ" शीर्षक से एक मासिक पत्र निकालने का सुझाव रखा। श्री घीसूलाल जी आदि ने इसका उत्साह से स्वागत किया। हमने श्री चांदमल जी को सम्पादक और प्रकाशक बनाया जोधपुर के जिलाधीश से आर्य पथ निकालने की अनुमति भी मिल गई। उधर समाचार पत्रो के महा पजीकार ने इसका पञ्जीकरण भी कर दिया। हममें से कुछ लोगो ने प्रतिमाह १० रुपये पत्र के व्यय हेतु देने का निश्चय किया था। उन दिनो मुद्रण अधिक महगा नहीं था किन्तु पत्र के छपाने के लिए हमने किसी बडे प्रेस से अनुबन्ध नही किया।

उन दिनो सर प्रताप हाई स्कूल के मेरे सहकर्मी सहायक अध्यापक श्री बालकृष्ण भिवानी ने प्रभा प्रेस स्थापित किया और 'प्रभा' नामक मासिक पत्रिका भी निकाली थी। मैं भी इस पत्रिका के सम्पादक मण्डल में रहा था। हमने श्री भिवानी के प्रेस मे ही अपने पत्र के छपाने की व्यवस्था की। सम्पादन का कार्य तो मुझे ही करना था किन्तु सरकारी सेवा में रहने के कारण मैंने श्री चादमल जी को सम्पादक तथा प्रकाशक के रूप मे डिक्लेरेशन भरने के लिए राजी किया था। परामर्शदाता के रूप मे हमने प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति तथा श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा के नाम रखे थे। प० गगाप्रसाद उपाध्याय का आशीर्वाद हमे प्राप्त हुआ था।

आर्य पथ के ४-५ अक ही निकल सके। आर्थिक व्यवस्था सुदृढ होना पत्र के स्थायित्व की पहली शर्त होती है। हम तो १०-१० रुपया मासिक सहायता लेकर या अपने पास से देकर पत्र चलाना चाहते थे, फिर भला आर्यपथ को आर्थिक आत्म निर्भरता कैसे प्राप्त होती? दूसरा कारण हमारी असफलता मे प्रभा प्रेस द्वारा निर्धारित समय पर पत्र को न छापने का भी रहा।

आर्य समाज सरदारपुरा मे मुझे जब पारस्परिक सौहार्द का अभाव दिखाई दिया तो कुछ सज्जनो के आग्रह से मैं आर्य समाज रातानाडा का सभासद बन गया। यहा मैं उपप्रधान पद पर भी रहा और १९६२ मे मन्त्री चुना गया। यहा श्री महावीरसिंह गहलोत, जो साहित्यिक रुचि सम्पन्न व्यक्ति थे और व्यवसाय से वकील थे, प्रधान पद-पर आरूढ थे। उन्ही दिनो आर्य वीर दल का एक शिविर आर्य समाज रातानाडा मे लगा जिसमे मुझे बौद्धिक प्रवचन करने का कर्त्तव्य निभाना पड़ा। यदा-कदा मैं नगर आर्य वीर दल की शाखाओ मे भी प्रवचन देता था। इस आर्य समाज मे दयानन्द विद्या मन्दिर के नाम से एक मिडिल स्कूल चलता था जिसकी व्यवस्था आनन्द सिनेमा के मालिक श्री आनन्द सिंह कछवहा के अधीन थी। (क्रमश:)

सम्पादकीय

एक गरिमामय व्यक्तित्व: राजीव गांधी

श्रीमती इन्दिरा गांधी के निधन से इस देश के सामने एक भयानक सा निर्वात उत्पन्न हो गया था, परन्तु राजीव गांधी ने यद्यपि वे राजनीति में परिपक्व नही थे, श्रीमती गाधी के निधन के बाद के राष्ट्र को अपनी सूझ बूझ से संभाल लिया था। श्री गांधी ने राष्ट्र को स्थिर एवं अखण्डता प्रदान की। लोगो के मन का सन्देह कि हवाई जहाज चलाने वाला यह शर्मीला युवक क्या देश चला पाएगा, काफूर हो गया और उसने राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान किया, उसे विश्व के धरातल पर सम्मान जनक स्थान दिलाया।

अपने छोटे भाई श्री सजय गाधी के निधन के बाद वे राजनीति में आये थे। सजय आक्रामक राजनीति के प्रतीक थे, परन्तु राजीव के आयाम शान्त, सहज और मलमनसाहत से भरे थे। इसी व्यक्तित्व के कारण उन्हें पार्टी की और देश की विश्वसनीयता प्राप्त होती गई। परिवार का बडा नाम तो उनके साथ था ही। वे कांग्रेस के महासचिव बनाए गए। यह कार्यकाल छोटा था, पर इस काल को भी उनकी कम्प्यूटरी व्यवहारिकता के आधार पर याद किया जाएगा। उनका चिन्तन अत्यधिक आधुनिक एव व्यावहारिक था। उनके व्यवहार मे कहीं पर भी निषेधात्मकता नहीं थी, जैसी कि उनसे पहले की पीढी के लोगो में साम्राज्य विरोधी भावनाए थी, उनके मन में और व्यवहार मे तो सकारात्मक रचनात्मकता थी।

श्रीमती गांधी के बाद वे प्रधानमन्त्री बने। और तत्काल हुए चुनावो में उन्हें आशातीत भारी बहुमत मिला। राजीव गांधी ने घोषणा की कि वे मुठभेड के स्थान पर सामजस्य की राजनीति करेंगे। हमारा देश श्रीमती गांधी की चीता शैली मोहक अदा पर फिदा था, पर नए नेता की नई भावनाओ का लोगों ने स्वागत किया। श्री गाधी ने सबसे पहला समझौता सन्त हरचन्दसिंह लोगोवाल के साथ किया। इस समझौते का विरोध भी हुआ और समर्थन भी, पर श्री गाधी की मनचाही न हो पाई क्योकि सन्त लोगोवाल को ही उनके ही लोगों ने छीन लिया।

इसके बाद श्री गांधी ने लालकिला की प्राचीर से घोषणा की कि उन्होने राष्ट्रीय एकता एव अखण्डता की खातिर असम के छात्र प्रतिनिधियों से समझौता किया है। देश की अर्थव्यवस्था को चरमरा देने वाले इस समझौते से तसल्ली और शकून की लहर देश में फैल गई थी।

इन समझौतों का सम्भवत: वह परिणाम तो नही निकला जो वांछित था, परन्तु सारे देश को यह अवश्य पता चला कि श्री गाधी कुछ नया कार्य करना चाहते हैं। उनको आम जनता की स्वीकार्यता भी मिली। राजीव गाधी अपनी प्रतिभा और गरीमा के चरम शिखर की ओर चढने जा रहे थे। उनके बारे मे यही धारणा थी कि वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले आधुनिक विचारों वाले युवा है जो राजनीति को ज्ञात दुर्बलताओ से मुक्त करके नया प्रकाशस्तम्भ बनाएगे। पर उनकी इस अवधारणा को शाहबानो केस मे बहुत बड़ा धक्का लगा। राजीव की ओर बोफोर्स शक की सुई भी उठी थी, पर इसका निर्णय होने से पहले ही कि लोगो ने उनको उस शक से मुक्त कर दिया है, वे काल कवलित हो गये। आगामी चुनाव ही इसका निर्णय देंगे।

राजीव गांधी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक सहयोग एव सद्भाव को संवर्धित करने वाले कार्य किए। उन्होने अमेरिका से सम्बन्ध बनाए, गोर्बाचोव

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्य जनता से नम्र निवेदन—

गुरुकुल की पुण्य भूमि को बचाओ

—श्री वीरेन्द्र—

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने हरिद्वार से पांच मील दूर कांगड़ी ग्राम के पास अपने गुरुकुल की स्थापना की थी। जब वह वहां गये तो वहां एक बहुत बड़ा जंगल था। एक पहाड़ की गोद में गंगा के किनारे एक जंगल में उन्होंने अपनी धुनी रमा ली और धीरे-धीरे वहां एक बहुत बड़ी संस्था खड़ी कर दी गई। उसके साथ ही कई छोटे-बड़े भवन भी खड़े कर दिए गये और उसे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का नाम दे दिया गया। धीरे-धीरे सारे देश में और फिर देश से बाहर इसकी चर्चा होने लगी। जो भी वहां आता उसे देख कर चकित रह जाता कि एक जंगल में मंगल सा कर दिया गया है। जिस स्थान पर इस विश्वविद्यालय के भवन खड़े किये गये थे, वह वर्षा के दिनों में लगभग तीन मास तक बाकी दुनिया से कट कर रह जाता था। वहां पहुंचने के लिए कोई सड़क न थी और न ही कोई पुल था। स्वामी जी महाराज ने उसका भी एक उपाय कर लिया था। खाली टीन इकट्ठे करके उनकी एक तमेड़ बनाई जाती थी, उसके ऊपर बैठ कर गंगा पार की जाती थी। कनखल से वह चलती थीं और गंगा की उछलती कूदती लहरों के सहारे वह गुरुकुल कांगड़ी तक पहुंचा देती थी। उस पर बैठने वाले कई बार पानी में भीग जाया करते थे। इसलिये जब एक बार भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड गुरुकुल को देखने आये थे तो उनके लिए इस तमेड़ पर एक कुर्सी रख दी गई थी। ताकि उनके कपडे पानी से न भीग जाए। वह देखने आए थे कि यह गुरुकुल क्या है और इसे किस भावना से यहां प्रारम्भ किया गया है? उस समय की सरकार को यह रिपोर्ट मिल रही थी कि आर्य समाज ने यह एक ऐसा केन्द्र स्थापित किया है जहां बच्चों को देश-भक्ति और राष्ट्र भक्ति का पाठ पढ़ाया जाता है। उस समय की सरकार के लिये यह असहनीय था इसलिए सारी स्थिति को देखने के लिये उस समय के वायसराय स्वय वहां गये थे। उनके बाद उस समय के उत्तर प्रदेश के राज्यपाल लार्ड मैस्टन भी वहां गये थे और एक समय वह भी आया जब बर्तानिया के होने वाले प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डोनल्ड भी वहां गये। जब गांधी जी दक्षिणी अफ्रीका से वापिस भारत आए थे तो वह भी वहा गये थे और वहां कुछ दिन महात्मा मुन्शीराम जी के पास जाकर रहे और फिर धीरे-धीरे देश के सब बड़े-बड़े नेता वहा जाने लगे। यह सब यह देखने के लिये जाया करते थे कि यह गुरुकुल है क्या? स्वामी श्रद्धानन्द जी यह एक नया परीक्षण कर रहे थे और सब से अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि यह एक ऐसे स्थान पर गुरुकुल का भवन बनाया जा रहा था जहां एक मकान तो क्या एक कुटिया बनाना भी बहुत कठिन था। परन्तु धीरे-धीरे वहां एक बहुत बडा भवन खड़ा हो गया और यही भवन गुरुकुल कांगडी के नाम से सारे ससार में विख्यात हो गया।

इस गुरुकुल को बनाने का श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को भी है। इस गुरुकुल के प्रत्येक कमरे में जो पत्थर लगे हुए हैं वह यह याद दिलाते हैं कि इस महान् सस्था को बनाने मे पजाब के आर्यसमाजियो ने एक बहुत बडी भूमिका निभाई थी। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कांगडी ग्राम मे जाकर जो भूमि प्राप्त की थी उसकी रजिस्ट्री भी उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के नाम करवाई थी। परन्तु १९२६ मे गगा में बाढ आई और इसके कई छोटे बडे मकान गगा बहाकर ले गई। इस काण्ड के बाद आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के अधिकारियो ने सारी स्थिति पर विचार करने के पश्चात् यह निर्णय लिया कि अब गुरुकुल को यहा रखने से कोई लाभ न होगा, बाढ के द्वारा भवनो को तो नुकसान पहुच ही रहा है, हो सकता है गगा किसी दिन सभी कुछ बहा कर ले जाये और उसके साथ ही हम अपने ब्रह्मचारियो से भी हाथ धो बैठे। इसलिए हरिद्वार मे एक नया गुरुकुल प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया और फिर धीरे-धीरे गुरुकुल कांगडी को हरिद्वार में प्रारम्भ कर दिया गया और उसके बाद फिर वही गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय बन गया। मैं कई बार सोचता हू कि हमारे पूर्वज कितने महान् व्यक्तित्व के मालिक थे। पहले कांगड़ी ग्राम में एक बहुत बडी सस्था खड़ी कर दी गई थी और वहां बाढ़ आने पर वहां से कोई भी चीज बिना उठाये उसे ज्यो की त्यो छोड़ कर दूसरी संस्था उसके पश्चात् फिर हरिद्वार मे उससे भी बडी खड़ी कर दी गई। स्वामी श्रद्धानन्द जी

—प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महाशय, आचार्य रामदेव जी, पण्डित विशम्भर नाथ जी, महाशय कृष्ण जी, पण्डित ठाकुर दत्त शर्मा, पण्डित चमूपति जी और उनके कई सहयोगी, इन सबने मिल कर वह संस्थाएं खड़ी कर दी थीं। परन्तु आज यह पुरानी बिल्डिंग गिर रही है और इसकी एक-एक खिड़की, एक-एक दरवाजा हमें यह चुनौती दे रहा है कि हमारे बुजुर्गों ने तो बहुत कुछ कर दिया था। क्या हम उसकी रक्षा कर सकेंगे? जिन महानुभावों के नाम के पत्थर पुराने गुरुकुल के एक-एक भवन पर लगे हुए हैं उनको देख कर कई बार यह विचार अवश्य आता है कि वह लोग न जाने अब कहां होंगे। परन्तु जहां भी होंगे वह यह अवश्य कह रहे होंगे कि हम तो बहुत कुछ बना आये थे परन्तु हमारे पीछे उसे कोई सम्भाल न सका।

कांगड़ी ग्राम के पास जो पुराना गुरुकुल बनाया गया था उसके बहुत से भवन गंगा बहा कर ले गई थी। अब उसकी एक निशानी बाकी रह गई है। जिसे महाविद्यालय भवन कहा जाता था। यदि उसे बचाने का प्रयास न किया गया तो ऐसा प्रतीत होता है कि आगामी वर्षा ऋतु में गगा उसे भी बहा कर ले जायेगी और उसके साथ ही गुरुकुल की एक पुरानी निशानी भी खत्म हो जायेगी। जो भवन अब खड़ा है मैं उसे आर्य समाज के इतिहास का एक गवाह कहता हूं। इसलिए सारी स्थिति पर विचार करने के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने इस भवन को किसी न किसी तरह बचाने और उसके पश्चात् इस पुण्य भूमि में कोई सस्था खडी करने का निर्णय लिया है। वह संस्था क्या हो इसका फैसला उस समय किया जाएगा जब यह भवन बचा लिया जायेगा। परन्तु इस भवन को बचाने के लिये लाखों रुपयो की आवश्यकता पड़ेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अपनी तरफ से १० लाख रुपया इसके लिये देने का निर्णय लिया है परन्तु मैं समझता हू कि इस पर कम से कम २५-३० लाख रुपया व्यय हो जायेगा। यह राशि सारे आर्य जगत के लिए एक चुनौती है, यदि इसे इकट्ठा करके हम श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की यह पुरानी निशानी व यादगार बचा लेंगे तो यह एक बहुत बडा कार्य होगा। जिस पर आर्य समाज गर्व कर सकेगा। इसलिये मेरी इस देश की आर्य जनता से और विशेष रूप से सब प्रान्तीय सभाओ और आर्य समाजो से यह नम्र निवेदन है कि यह गुरुकुल कांगड़ी की इस पुण्य भूमि को बचाने के लिये अपनी ओर से, अपनी सस्था की ओर से व अपने मित्रों की ओर से जो भी दे सकते हैं अवश्य दें यह राशि वहा गुरुकुल पुण्य भूमि निर्माण कोष के लिये इसके सयोजक श्री सुभाष जी विद्यालंकार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार को भेजी जाये। हमारा यह भी प्रयास होगा कि जो भाई बहिनें इसके लिये बडी बडी राशि भेजेंगी उनके नाम वहां लिखवा दिये जाएगे और जब इस पुण्य भूमि में कोई सस्था प्रारम्भ की जायेगी तो उन सब को भी वहां आमन्त्रित किया जायेगा। हमारा यह भी प्रयास है कि यह सारा कार्य दो वर्ष के अन्दर अन्दर पूरा कर दिया जाये। यह एक यज्ञ है जो हम प्रारम्भ कर रहे हैं। इसलिए प्रत्येक आर्य बन्धु व प्रत्येक बहिन को इस यज्ञ में अपनी आहूति अवश्य डालनी चाहिये। आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि इसमें सबसे पहली आहूति कैनेडा में रहने वाले एक दृढ़ आर्य समाजी और ऋषि भक्त श्री हरनारायण खन्ना ने एक हजार रुपया भेज कर डाली है। इसके साथ ही एक नया यज्ञ आरम्भ हो गया है। हम आशा रखते हैं कि प्रत्येक आर्य बहिन और भाई इसमें अपनी आहूति अवश्य डालेंगे और हम सब मिल कर एक बार फिर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के स्वप्न को साकार बना सकेंगे।

- परोपकार और परहित करते समय अपना मान-अपमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।
- हमारे देश के लोग समय का महत्व नहीं जानते। नियम बद्ध कार्य करना उनके लिए दुष्कर कर्म है। प्रात: से सायं पर्यन्त इनके सारे काम अनियमित होते हैं। समय का व्यर्थ खोना, इनकी अस्त व्यस्त व्यवस्था का एक भारी कारण है। —महर्षि दयानन्द सरस्वती

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ की वेद गोष्ठी सम्पन्न

खाड़ी युद्ध से आन्दोलित पूज्यपाद स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती जी ने विश्व के प्राचीनतम साहित्य वेदों से युद्ध और शान्ति सम्बन्धी चर्चा को सार्वजनीन होने की इच्छा से १०-११ मई १९९१ को एक वेद गोष्ठी आयोजित की। वेदों के मूर्धन्य विद्वान स्वामी जी के निर्देशन में एवं डा० प्रीति अग्रवाल के संयोजकत्व में निर्धारित तिथियों को यह वेद गोष्ठी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। गोष्ठी के उद्घाटन समारोह में प्रो० त्रिविक्रम पति (निवर्तमान उपकुलपति इलाहाबाद विश्वविद्यालय) मुख्य अतिथि एव आर्य समाज के मूर्धन्य विद्वान् पं० मूलचन्द्र अवस्थी ने अध्यक्ष पद को सुशोभित किया। अत्याधिक अस्वस्थता के बावजूद पूज्य पाद स्वामी जी भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इससे सत्र में उत्साह का वातावरण रहा। श्री के० एल० भाटिया ने अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ का परिचय दिया एवं अतिथियों का स्वागत किया। डा० रुद्रप्रताप श्रीवास्तव (वरिष्ठ प्रवक्ता सी० एम० पी० डिग्री कालेज) ने अभ्यागतों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। आर्य कन्या डिग्री कालेज की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत वैदिक राष्ट्रीय वन्दना से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सत्र शिव संकल्प सूक्तगान के साथ समाप्त हुआ।

श्रीमती माधुरी श्रीवास्तव (भूतपूर्व प्रथम महिला जिलाधिकारी) प्रथम सत्र की अध्यक्ष मनोनीत की गई। सर्वप्रथम डा० अशोक शर्मा (प्रो० मोतीलाल नेहरू इन्जीनियरिंग कालेज) ने "वैदिक ज्ञान प्रक्रिया के अन्तर्गत आत्मचेतना का विज्ञान" विषय पर अद्भुत व्याख्यान प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् इलाहाबाद नगर की वेद विदुषियों कु० किरण द्विवेदी एव डा० तमिस्रा चटर्जी ने शोध-पत्र प्रस्तुत किया गया। सत्र का अन्त डा० उर्मिला श्रीवास्तव (प्रवक्ता-आर्य कन्या डिग्री कालेज) के विद्वतापूर्ण व्याख्यान से हुआ।

भोजनोपरान्त मध्याह्न सत्र डा० ज्योतिर्मित्र (प्रो० एव अध्यक्ष आयुर्वेद विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय) की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। सुश्री माधुरी तर्कसुका (अध्यापिका पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी) ने शोध निबन्ध प्रस्तुत कर सत्र का आरम्भ किया। तदुपरान्त डा० प्रशस्यमित्र (प्रवक्ता फिरोज गांधी डिग्री कालेज, रायबरेली) ने व्याख्यान के साथ ही श्रोताओं के आग्रह पर सस्कृत भाषा में कुछ हास्य व्यग मुक्तक रचनाए सुना कर वातावरण को प्रफुल्लित कर दिया। स्वामी दुधपुरी वेदालंकार जी (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार) के सारगर्भित व्याख्यान के साथ ही सत्र समाप्त हो गया।

द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो० तेजोमित्र आचार्य(देहारादून) ने की। इस सत्र के प्रथम व्याख्याता श्री दीनानाथ जी (अमेठी) के सुन्दर व्याख्यान के साथ डा० वेद प्रकाश (प्रो० एव अध्यक्ष सस्कृति विभाग-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार) ने गोष्ठी के विषय पर प्रकाश डाला। डा० अमलधारी सिंह जी (आचार्य-डिग्री कालेज बैसवारा) ने इस अशान्तिपूर्ण युग मे वेदों की महत्ता प्रतिपादित की। गोष्ठी के सभी सत्रों का संचालन अमेठी से आये डा० ज्वलन्त कुमार ने विवेचनापूर्ण शैली में की।

इस द्विदिवसीय व्याख्यानमाला मे प्रमुख विद्वानो ने संस्कृत मे भाषण दिए और अपने अनुसधान पत्र पढ़े। इसका अन्य विद्वानों और श्रोतागणो ने बड़ी हर्ष ध्वनि और तालियों से स्वागत किया। सभी ने वैदिक उदाहरण देकर अपने मत की पुष्टि की। लगभग सभी वेदज्ञों की मान्यता थी कि वेदो में युद्ध और शान्ति के बारे में विस्तृत प्रावधान और उल्लेख है। क्योंकि वेद ईश्वर की ओर से मानव जाति के लिए एक सर्वांगीण आचार-विचार संहिता है। अत इसमे मनुष्य के सभी भावो और कृतियो का उल्लेख होना आवश्यक है। यह वास्तव में युद्ध साधन है और शान्ति साध्य है। शान्ति की स्थापना के लिए आवश्यक एव अपरिहार्य है। वैदिक सिद्धान्तों को आदर्श मान कर लड़ा युद्ध धर्म युद्ध है, यदि इसकी योजना शत्रु विनाश, शान्ति के प्रचार-प्रसार इन दोनो तथ्यों पर आधारित है।

इस प्रकार से विभिन्न नगरों से पधारे विद्वज्जनो के विचारों के प्रस्तुतीकरण के पश्चात् गोष्ठी का अनौपचारिक समापन श्रीमती देवबाला (लखनऊ) के ओजस्वी भाषण से हुआ। किन्तु श्रोताओं के मन मे यह विचार दृढ़ हो गया कि आज की जटिलताओं का समाधान वेदों में ही उपलब्ध है।

अतः ऐसी विद्वतापूर्ण सामयिक गोष्ठियों के आयोजन से वैदिक धर्म की स्थापना का पुनर्प्रयास होना चाहिये। इसी मे समाज का सर्वतोमुखी विकास निहित है। अन्ततः स्वामी जी के आशीर्वाद एव मगल वचनों की इतिश्री हुई।

डा० रुद्रप्रकाश श्रीवास्तव ने सभी वक्ताओं एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस गोष्ठी के आयोजन करने और सुचारु रूप से प्रबन्ध करने का श्रेय गोष्ठी की संयोजक डा० प्रीति अग्रवाल एव उनके सहयोगी साथियों, मित्रों तथा विज्ञान परिषद् के अधिकारियों को ही जाता है। उन्होंने बड़ी लग्न एव निष्ठा से यह कार्य किया, वह इसके लिये बधाई के पात्र हैं।

इस अवसर पर आर्य समाज के नेताओं और विद्वानों के सन्देश भी प्राप्त हुए जिसमें उल्लेखनीय है स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, डा० धर्मपाल प्रधान एवं श्री सूर्यदेव महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रो० वेदव्यास जी प्रधान एव श्री दरबारी लाल सगठन मन्त्री डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध परिषद् नई दिल्ली, इनकी शुभकामनाओ से यह कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

—के० एल० भाटिया

नैतिक शिक्षा संस्थान

पांच वर्ष पूर्व डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा सस्थान [अन्तर्गत आर्य विद्या सभा] की स्थापना की गई थी। वह निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर है। इस समय देश-विदेश में पांच सौ से ऊपर डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाए चल रही है जिनमे हिन्दी तथा अग्रेजी माध्यम के लगभग ३५० पब्लिक स्कूल हैं। इन सभी पब्लिक स्कूलों में वैदिक धर्म शिक्षा एक अनिवार्य विषय के रूप मे पढ़ाई जाती जाती है। गत वर्ष से यह भी निर्णय लिया गया है कि अन्य विषयों की भांति धर्म शिक्षा की परीक्षा मे भी प्रत्येक छात्र को उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।

इस निर्णय से धर्म शिक्षा विषय का महत्व और अधिक बढ़ गया है। फलत. स्कूलो मे धर्म शिक्षकों की माग बहुत बढ गई है। इस माग को ध्यान मे रखते हुए निर्णय किया गया है कि डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा सस्थान मे प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षणार्थियो की संख्या मे वृद्धि कर दी जाए। यह विषय भी विचाराधीन है कि इस सस्थान की एक शाखा शीघ्र ही मोहन आश्रम हरिद्वार मे आरम्भ कर दी जाए।

इस समय सस्थान के प्राचार्य पद पर गत पाच वर्षों से आर्य विद्वान प्रो० रत्नसिंह जी कार्य कर रहे हैं और डी०ए०वी० कालेज, कानपुर से सस्कृत विभाग के सेवा निवृत्त प्राध्यापक डा० विजय पाल शास्त्री तथा श्री धर्मवीर शास्त्री सहायक अध्यापक पद पर कार्य कर रहे हैं। इस सस्थान की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए श्री दरबारी लाल जी ने बतलाया कि इस समय देश मे अनेक आर्य सस्थाए उपदेशक व पुरोहित तैयार करने का प्रशन्सनीय कार्य कर रही हैं। डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा सस्थान इस दृष्टि से समस्त आर्य जगत् में एक अनूठा उदाहरण है जहा सफल हुए सभी प्रशिक्षणार्थियों को डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलो मे अच्छे वेतन पर नियुक्त किया जाता है। इन पाच वर्षों मे जितने अध्यापको ने इस सस्थान मे प्रशिक्षण प्राप्त कर परीक्षा मे सफलता प्राप्त की है उन सभी को डी० ए० वी० पब्लिक स्कूलो में "धर्म शिक्षक" पर सर्विस मिल चुकी है। आगामी सत्र १९९१-९२ मे प्रवेश प्राप्त करने के इच्छुक छात्र अपने आवेदनपत्र पूर्ण विवरण सहित : प्रो० रत्नसिंह, प्राचार्य—डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा सस्थान, आर्य समाज मन्दिर मार्ग—नई दिल्ली-११०००१ "पते पर भेजे।"

(पृष्ठ ३ का शेष)

से व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए, पाकिस्तान, चीन, और बाग्लादेश के साथ भी नए रिश्ते बनाने की कोशिशें हुई। नेहरू की चीन यात्रा के बाद राजीव की ही चीन यात्रा हुई। इन सबके कुछ ठोस परिणाम सामने आते, इससे पहले ही वे हमारे बीच से चले गये।

श्रीलका के साथ समझौता करके उन्होने अपनी ओर से तमिल समस्या को सुलझाने की ईमानदार कोशिश की थी। मालदीव मे भारतीय सेनाए भेजी गई थी।

उन्होने जवाहर रोजगार योजना और पचायती राज बिल रख कर गरीबो के उत्थान के प्रति अपनी उत्सुकता और चिन्ता को रेखांकित किया। बाद की दोनो सरकारें उनके विरुद्ध कोई ठोस सबूत नही जुटा पाई।

राजीव गांधी का जन्म २० अगस्त १९४४ को हुआ था। वे अकाल ही २१ मई को इस असार ससार से विदा हो गये। उनके लिए अभी करने को बहुत कुछ था। उनकी हत्या करके पाशविक वृत्तियो ने एक गरिमामय जीवन का अन्त कर दिया। इससे प्रजातन्त्र को भी खतरा है। उस महामानव के प्रति विनत श्रद्धान्जलि

—डा० धर्मपाल

पुस्तक समीक्षा

आर्य महासम्मेलन, श्री गंगानगर राजस्थान की स्मारिका

आर्य समाज की स्थापना शताब्दी विशाल स्तर पर नई दिल्ली मे १९७५ मे रामलीला मैदान मे मनाई गई थी। उस समय भी भारतवर्ष मे तथा विदेशों मे आर्य समाज स्थापना शताब्दी अनेक स्थानो पर मनाई गई थी। आर्य समाज की स्थापना के बाद विभिन्न आर्य प्रतिनिधि सभाओ की शताब्दियां आयोजित की गयी। हरियाणा, उत्तर प्रदेश राजस्थान की स्थापना शताब्दिया अपनी अपूर्व भव्यता के साथ आयोजित की जा चुकी हैं। कुछ स्थानीय आर्य समाजों ने भी अपनी स्थापना शताब्दिया आयोजित की हैं। बम्बई, दिल्ली, मेरठ, रुड़की, देहादून, तथा अन्य अनेक स्थानों पर ऐसे आयोजन किये जा चुके हैं। इन आयोजनों से आर्य समाज आन्दोल को कोई लाभ पहुचता है, इस पर अनेक बार विचार किया जा चुका है। वास्तव में जब भी कोई आयोजन होगा, उसकी आवाज जन सामान्य तक तो अवश्य पहुचेगी, समाचार पत्रो, रेडियो और दूरदर्शन पर भी उसका जिक्र अवश्य आएगा। इससे धीरे-धीरे जनमत भी अवश्य बनता है। इनका एक लाभ और है, हम अपने अतीत मे झाक कर देखते हैं, उससे प्रेरणा ग्रहण करते हैं और आगे के लिये तैयार होते हैं? पिछले दिनो हैदराबाद के सत्याग्रहियो को हम ने स्मरण किया, गो भक्त शहीदो को स्मरण किया इससे निश्चय ही कुछ करने की भावना बलवती हुई है। हैदराबाद मे भी एक विशाल समारोह हैदराबाद सत्याग्रह की अर्धशताब्दी के उपलक्ष्य मे आयोजित किया जा चुका है। इन सभी कार्यों में सार्वदेशिक सभा की अपनी अह भूमिका होती है। उसकी प्रेरणा पर, सम्पूर्ण भारत की आर्य समाजों तथा प्रान्तीय सभाओं की ओर से त्रिसूत्री कार्यक्रम-गोरक्षा, अंग्रेजी हटाओ तथा मद्य निषेध के सम्बन्ध मे अनेक आयोजन हो चुके हैं। इन समारोहो से जनसामान्य को विचार करने का अवसर मिलता है।

इसी शृंखला मे श्री गगानगर राजस्थान मे राजस्थान आर्य समाज शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य मे आर्य महासम्मेलन का आयोजन ८-९-१० अक्तूबर १९८९ को किया गया था। यह स्वाभाविक ही है कि वहा पर अनेक सम्मेलन हुये, और भविष्य के लिये नये कार्यक्रम बनाये गये। वहां पर एक विशेष और उल्लेखनीय कार्य हुआ और वह है कि सुन्दर एवं भव्य स्मारिका का प्रकाशन। इस प्रकाशन की अपनी एक विशेषता है। इसमे आर्य समाज के दस नियमों की व्याख्या, अधिकारी विद्वानो से कराई गई है जो समयानुकूल है। मानवोत्थान के इन स्वर्णिम सूत्रो का ऐसा प्रासगिक विवेचन, आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के लिए उत्साह एवं प्रेरणा प्रदान करेगा। इस अवसर पर अखिल भारतीय जन विचार सगोष्ठी भी आयोजित की गई। इस विचार गोष्ठी में गम्भीर विषयो पर विचार हुआ। हमे विश्वास है कि इसकी प्रकाशित रिपोर्ट भी शीघ्र ही मिलेगी।

इस स्मारिका को तैयार करने वाले सभी बन्धुओं का साधुवाद एवं अभिनन्दन।

—डा० धर्मपाल

प्रवेश सूचना

(सत्र-१९९१-९२)

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

(अन्तर्गत : आर्य विद्या सभा, डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ समिति)
नई दिल्ली

पद : धर्म शिक्षक

प्रवेश योग्यता : एम० ए०/आचार्य, हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी भाषा, वैदिक सिद्धान्तो तथा कर्मकाण्ड का ज्ञान आवश्यक।

प्रशिक्षण अवधि : एक वर्ष

सुविधाएं : नि.शुल्क शिक्षा, विशाल पुस्तकालय उपलब्ध, छात्रावासियो को आवास, पानी, बिजली सर्वथा नि.शुल्क व भोजन नि:शुल्क।

प्रशिक्षण समाप्त होने के बाद अभ्यार्थियों को डी० ए० वी० शिक्षण संस्थाओं में "धर्म शिक्षक" पद पर उचित वेतन पर नियुक्त किया जाएगा।

गत पांच वर्षो मे उत्तीर्ण सभी छात्रों को सर्विस मिल चुकी है। केवल निष्ठावान आर्य समाजी पूर्ण विवरण (नाम, आयु, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव आदि) सहित आवेदन पत्र १५ जून, १९९१ तक निम्न पते पर भेजे :— "प्रो० रत्न सिंह,
प्राचार्य–डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्य समाज मन्दिर मार्ग
नई दिल्ली–११०००१
फोन : ३४३७१८"

कौमी एकता

राजकोट दूरदर्शन द्वारा उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के आचार्य पं० ओम्प्रकाश शास्त्री एव उपाचार्य प० अरुणकुमार विद्मर्थीय के सद्भावना कार्यक्रम के अन्तर्गत (साय ६.१५ बजे से ६ ५५ तक) कौमी एकता विषय पर क्रमश: दि०, २-५-९१ गुरुवार एव दि० १६-५-९१ गुरुवार को विचार प्रसारित किए गए। दोनों महानुभावों ने स्वामी दयानन्द एव आर्य समाज के राष्ट्रीय विचारो को प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया कि, आर्य समाज सारे संसार को एक सूत्र में पिरोने के लिए एक भाषा - एक धर्म एव एक राष्ट्र को भूमण्डल पर स्थापित करने के लिए पूर्णतया कटिबद्ध है। इसी से सभी प्रकार के विघटन समाप्त होकर महत्वपूर्ण भूमण्डल का मानव समाज एक होकर अपनी भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति कर सकेगा।

—ओम्प्रकाश शास्त्री

विशाल युवक निर्माण शिविर

युवा शक्ति को महर्षि दयानन्द की विचारधारा से ओतप्रोत करने तथा शारीरिक एव बौद्धिक रूप से सक्षम बनाने के उद्देश्य से 'केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान मे आगामी ८ जून से १६ जून ९१ तक, गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार (पौड़ी गढवाल) मे, विशाल युवक प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया गया है।

अपने जीवन मे कुछ परिवर्तन के इच्छुक नवयुवक अवश्य भाग ले। प्रवेश शुल्क ६०/-रु० है। विशेष जानकारी हेतु निम्नलिखित पते पर सम्पर्क करे।

श्री आनन्द प्रकाश आर्य, श्री ब्रह्मदेव गुप्ता एण्ड सन्स, गोखले मार्ग, कोटद्वार (दूरभाष-५१३ व १९०), दिल्ली मे श्री सत्यभूषण आर्य से (८२८८८८२) श्री अजय सहगल (६१५१९५) श्री धर्मपाल आर्य (७३४६१४) पर सम्पर्क करें।

—चन्द्रमोहन आर्य, महामंत्री (५१९२४७)

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O on 30-31-5-1991 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३९
साप्ताहिक "आर्यसन्देश" २ जून, १९९१

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के सुयोग्य महोपदेशक, शास्त्रार्थ महारथी, एव भू० पू० अधिष्ठाता उपदेश विभाग, श्री प० केशव देव शास्त्री वानप्रस्थ का दिनांक १७-४-९१ को आकस्मिक निधन हो गया। आप इकहत्तर वर्ष की अवस्था मे थे। उनके निधन से आर्य जगत मे एक ऐसा स्थान रिक्त हो गया है जिसकी निकट भविष्य में पूर्ति होना असम्भव है। आप मूलत: जनपद हरदोई के निवासी थे। दिवगत आत्मा के प्रति विनत श्रद्धांजलि।

सरला दे ी शर्मा वैदिक छात्रवृत्ति योजना

उपरोक्त छात्रवृत्ति योजना गुरुकुलों तथा आर्य महाविद्यालयों के ऐसे छात्र-छात्राओं के साधारण प्रोत्साहन हेतु देय हैं, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन को वैदिक धर्म प्रचारार्थ समर्पित करने का व्रत लिया है।

योग्य तथा निर्धन छात्र-छात्राए अपने आचार्य द्वारा प्रमाणित आवेदन पत्र शीघ्र निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें। —ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, महामन्त्री

११/१२४ पश्चिम आजाद नगर, दिल्ली-११००५१

वार्षिक-निर्वाचन

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य का वार्षिक निर्वाचन ९ जून १९९१ को साय ४ बजे आर्यसमाज हनुमान रोड के सभागार में होगा, कृपया यथा समय अपने दो-दो प्रतिनिधियों को भेजने की अपील करें।

—डा० शिवकुमार शास्त्री
महामन्त्री

सेवा में—

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ३१ | रविवार, ९ जून, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भारत के प्रसिद्ध व्यायामाचार्य डा० देवव्रत आचार्य और श्री बाल दिवाकर हंस के संरक्षण मे विशाल चरित्र निर्माण शिविर एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन महाशय-चुन्नीलाल बालमन्दिर सीनियर सेकण्डरी स्कूल एल ब्लाक हरिनगर मे ३१ मई १९९१ से ९ जून १९९१ तक किया गया है।

आर्य वीर दल शिविर का उद्घाटन १ जून १९९१ को प्रातः यज्ञोपरान्त किया गया। इस अवसर पर आर्यवीर महाशय राजीव जी, एम० डी० एच० के निर्देशक मुख्य अतिथि थे तथा श्री स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती अध्यक्ष थे। पं० प्रेमचन्द जी श्रीधर ने उद्बोधन भाषण दिया। श्री सत्यपति जी ने आशीर्वाद दिया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्यवीरों को उत्साहित करते हुए आशा व्यक्त की कि इस प्रशिक्षण शिविर के बाद ये २५० आर्यवीर अपने अपने क्षेत्रों में आर्यवीर दल की शाखाओ की स्थापना में सहयोग देंगे। किसी भी कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए संस्कारो का विशेष महत्त्व है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार निर्माण पर विशेष बल दिया है। संस्कार से तात्पर्य है अनगढ को गढकर सुन्दरतर और सुन्दरतम रूप प्रदान करना। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इन युवा छात्रो को पूरी तरह संस्कारित किया जाएगा तथा इन्हे मानव मूल्यो की महत्ता एवं उपयोगिता से परिचित कराया जाएगा।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री और आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर के अध्यक्ष श्री सूर्यदेव ने दिल्ली में आर्य वीर दल के बढते चरणो की समीक्षा की। उन्होने कहा कि आर्यसमाज का प्रचार प्रसार करने के लिए युवा-शक्ति को आगे लाने की आवश्यकता है। किसी भी आन्दोलन का इतिहास उठाकर देख लीजिए। सदैव युवाशक्ति ने ही इन आन्दोलनो मे प्राणो का संचार किया है।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल ने आर्यवीरो को आशीर्वाद प्रदान किया और हर सम्भव सहायता देने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्री प्रियतमदास रसवन्त, डा० ज्ञानप्रकाश, श्री खुशीराम शर्मा, श्री ईशकुमार नारग, ब्र० राजसिंह आर्य, श्री सुरेन्द्र आजाद, श्री कृष्णपाल, श्री हरीसिंह, श्री रणपाल, श्री विनोद श्री सुरेन्द्र, और अन्य साथियों ने प्राणपण से आर्यवीर दल में प्राण संचरित करने का व्रत लिया।

दिल्ली की विभिन्न आर्यसमाजों के प्रतिनिधियो ने आर्यवीरों को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र० राजसिंह आर्य ने किया।

आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह ९ जून १९९१ को प्रातः ११.०० बजे आयोजित किया गया। इस समारोह मे पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, श्री सुरेन्द्र आर्य, डा० वाचस्पति उपाध्याय, डा० धर्मपाल, श्री सूर्य-देव, महाशय धर्मपाल, डा० शिवकुमार शास्त्री, आचार्य हरिदेव जी, आचार्य आर्य नरेश जी आर्य युवको का मार्गदर्शन करेंगे।

श्री राजीव गांधी का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न

राष्ट्रवासियों ने अपने प्रिय नेता को अश्रुपूर्ण विदाई दी

विश्व भर के नेताओं ने अन्तिम संस्कार में भाग लिया

२४ मई १९९१, कोटि कोटि देशवासियो के हृदय सम्राट श्री राजीव गांधी का अन्तिम संस्कार दिल्ली के शक्ति स्थल के समीप पूरे राजकीय सम्मान के साथ, पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। भारतीय राजनीति मे धूमकेतु की तरह उभरे राजीव गांधी ने थोड़े से समय मे विश्व भर मे अपना इतना गहरा स्थान बना लिया, यह किसी को आशा नही थी। उनकी अन्त्येष्टि में विश्व भर के राष्ट्राध्यक्षों तथा वरिष्ठ नेताओं ने बड़ी संख्या में भाग लेकर स्व० राजीव की स्मृति को चिरस्थायी बनाने का काम किया। तीन मूर्ति भवन से प्रारम्भ हुई शव यात्रा लगभग साढ़े तीन घण्टो का लम्बा मार्ग तय करके जब शक्ति स्थल पर पहुची तो वहां हृदय विदारक दृश्य था। अपने प्रिय नेता के इस विदाई समारोह में लाखों लोगों के नेत्रों से अश्रु फूट पड़े। लगभग साढ़े पाच बजे ४ फुट ऊंचे चबूतरे पर चन्दन की लकड़ी से तैयार की गई चिता पर राजीव गांधी के पुत्र श्री राहुल गांधी ने वैदिक मन्त्रोच्चारण के बीच मुखाग्नि दी। अन्तिम संस्कार पूर्ण रूप से आर्य नेता और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की देखरेख में सम्पन्न हुआ। गुरुकुल गौतमनगर के ब्रह्मचारियो के सस्वर वेद पाठ से वातावरण गुंजायमान हो गया। श्री नेत्रपाल शास्त्री, श्री दिनेश चन्द्र शास्त्री श्री बालदिवाकर हंस, आचार्य जयत महाराज, आचार्य गणपति राय, मदन लाल पटेल, राम अवतार पाण्डे, पंडित शिवप्रसाद मिश्र तथा पंडित रामा महाराज ने अन्तिम संस्कार क्रिया मे सहयोग दिया।

अन्त्येष्टि के समय श्रीमती सोनिया गांधी, पुत्री प्रियंका गांधी, अमिताभ बच्चन, श्री गौतम कौल और उनके रिश्तेदार चबूतरे पर उपस्थित थे। भारत के राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, केन्द्रीय मंत्री गण, कांग्रेस के नेतागण तथा देश विदेश से पधारे हुए राष्ट्राध्यक्ष और नेता जो शव यात्रा के वहा पहुंचने से पहले ही भीषण गर्मी मे बैठे हुए थे, अग्निदाह के अनन्तर सबने खड़े होकर राजीव को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। भीषण गरमी के बावजूद लाखो लोगो की उपस्थिति मे बरबस ही नम होती आंखो के साथ राजीव गांधी अमर रहे के नारो से आकाश गूंजता रहा और महा यात्रा का राही तब तक पता नही कहा पहुंच चुका था।

—प्रचार विभाग

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

वेदों की सार्वभौमिकता

—पद्म श्री डा० कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

(गताङ्क से आगे)

विश्वबन्धु शास्त्री, क्षेमकरण त्रिवेदी, प० गिरधारीलाल शर्मा चतुर्वेदी, डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, डा० रघुवीर । पाश्चात्य विद्वानो में विशेष उल्लेखनीय हैं—प्रो० मैक्समूलर, प्रो० ग्रिफिथ, प्रो० विल्सन, प्रो ग्रासमान, प्रो० लुडविश, प्रो० ग्रोल्डेनबर्ग, प्रो० लाँग्ला, डा० मैक्डानल, डा० कीथ, प्रो० आर रोठ, प्रो० बाट-लिंक, प्रो० वलूमफील्ड, प्रो० लुई रेणु, प्रो० वाकरनागेल, प्रो० वेबर, प्रो० ह्विटनी, प्रो० कैलेन्ड, प्रो० स्टेन कोनी, प्रो० वाकरनागेल, प्रो हिलेब्राट, प्रो० जे गोंड आदि।

वैदिक भाषा

वैदिक भाषा का महत्व है कि वैदिक मन्त्रो मे बहुत थोडे शब्दो मे अगाध भाव गाम्भीर्य भरा हुआ है । उदाहरणार्थ कुछ मन्त्र प्रस्तुत किए जा सकते हैं, जो भावगाम्भीर्य की चरमसीमा का दिग्दर्शन कराते है ।

समस्त अध्यात्म का सार एक मन्त्र मे प्रस्तुत किया गया है । इसमे ब्रह्म का स्वरूप, उसकी प्राप्ति का सवाल उसकी पात्रता आदि का वर्णन है ।

हंस: शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद्
होता वेदिषद् अतिथिर्दुरोणसत् ।
नृषद् वरसद् ऋतसद् व्योमसद्
अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋत बृहत् ।। ऋग० ४-४०-५, यजु १०-२४

अथर्ववेद के एक मन्त्र मे सूत्ररूप में मनोविज्ञान के सभी विषयो का संकलन प्राप्त होता है—

मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये ।
मत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम् ।। अथर्व० ६-४१-१

इस मन्त्र मे इन शब्दो से इन विषयों का सकलन है—

१—मत्यै-सवेदना (Sensation) और प्रेरणा (Motivation), २—चेतसे-चेतना (Consciousness) और चिन्तन (Thinking) ३ - धिये-ध्यान या अवधान (Attention), ४—आकूतये-अनुभूति (Feeling), और सवेग (Emotion) ५—चित्तये-चित्त का धर्म स्मरण (Remembering) और तद-भावरूप मे विस्मरण (Forgetting), ६—मत्यै-बुद्धि (Intelligence), ७—श्रुताय-श्रवणा पठन एव शिक्षण (Learning), ८—चक्षसे-चक्षुकार्य, दर्शन या प्रत्यक्षीकरण (Perception) ।

भगवतगीता का मूल आधार है—निष्काम कर्मयोग ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भू-मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।। गीता २-४७

इस श्लोक का आधार है, यजुर्वेद का निम्नलिखित मन्त्र—

कुर्वन्नेवेह कर्माणि, जिजीविषेच्छत समा: ।
एव त्वयि नान्यथेतोऽस्ति, न कर्म लिप्यते नरे ।। यजु० ४०-२

इस प्रकार सम्पूर्ण गीता का यह मूल मन्त्र है ।

इसी प्रकार सम्पूर्ण बाईबिल का मूलमन्त्र है—प्रेमभाव और मैत्री । यह भाव यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र से लिया गया है ।

मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।। यजु० ३६-१८ ।।

कुरान का मूलमन्त्र है—एकेश्वरवाद, अल्लाह की एकता, उसके गुण-धर्म सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्, कर्ता, धर्ता सहर्ता, दयालु आदि । देखें–कुरान ७-१६५, १२-३६, १३-३३, ५७-१-६, ११२-१-४, २-२६, २-६६, ३७-१-६,८७-१-५, ४४-६-८, ४८-१४, १-२, २-१४३ आदि) इसके आधार मन्त्र हैं–

(क) इन्द्र मित्रं वरुणमग्निमाहु रथो दिव्य: स सुपर्णो गरुत्मान् ।
एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति अग्नि यम मातरिश्वानमाहु ।।
१-१६४४६ ऋग्०

(ख) स एष एक एकवृद्ध एक एव । अथर्व० १३-४-१२
(ग) न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते । अथर्व० १३-५-१६

वेद और विज्ञान

वेदो मे जहा पुरुषार्थ चतुष्टयरूप धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का वर्णन है, वहाँ साथ ही विज्ञान के विभिन्न सूत्र स्थान-स्थान पर दिए गये हैं । वेदो मे सूत्र रूप मे वैज्ञानिक तत्वो का समावेश है । इनका विस्तृत और प्रयोगात्मक पक्ष कहीं पर भी स्पष्ट नही किया गया है । सक्षेप मे कुछ सूत्रो का उल्लेख किया जाता है ।

सूर्य चन्द्रमा को प्रकाश देता है । सूर्य की सुषुम्ण नामक किरण चन्द्रमा को प्रकाशित करती है । निरुक्तकार यास्क ने भी इस तथ्य को स्पष्ट किया है कि सूर्य की एक किरण चन्द्रमा को प्रकाशित करती है ।

सुषुम्ण: सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व: ।यजु० १८-४०
अथापि अस्येको रश्मिश्चन्द्रमस प्रति दीप्यते । निरुक्त २-६

सूर्य की ऊर्जा का आधार सोम (Hydrogen, Helium) हीलियम या हाईड्रोजन है ।

सोमेनादित्या बलिन । अथर्व १४-१-२

यजुर्वेद मे जल के रस का रस सूर्य मे बताया है । यह हाईड्रोजन के सूक्ष्मतम रूप हिलियम (Helium)की सत्ता सूर्य में बताता है ।

अपा रसम् उद्वयस सूर्ये सन्तं समाहितम् । अपां रसस्य यो रस । यजु० ९-३

यजुर्वेद मे इस वैज्ञानिक तथ्य का उल्लेख किया गया है कि पृथिवी ही अपने कक्ष मे नहीं घूमती है, अपितु सूर्य भी अपने कक्ष मे चक्कर काटता है । सारा ससार घूमता है ।

समावर्वति पृथिवी समुषा: समु सूर्य: । समु विश्वमिद जगत् । यजु० २०-२३

सूर्य सारे चर और अचर जगत् को आत्मा है । सूर्य ही इस समस्त ससार की शक्ति का स्रोत है ।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च । अथर्व० १३-२-३५

अनेक मन्त्रो मे सूर्य की आकर्षण शक्ति का उल्लेख है । सूर्य अपनी किरणों से पृथ्वी को रोके हुए हैं । सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति से द्युलोक को रोके हुए है ।

दाधर्थ पृथिवीम् अभितो मयूखै यजु० ५-१६
सविता यन्त्रै: पृथिवीम् अरम्णात् । ऋग १०-१४९-१
सूर्येण-उत्तभिता द्यौ । ऋग् १०-८५-१

जल के विषय मे कहा गया है कि इसमे अग्नि (Oxygen) और सोम (Hydrogen) दोनो तत्व मिले हुए हैं ।

अग्नीषोमौ बिभ्रति-आप इत् ता: अथर्व० ३-१३ ५

जल मन्थन से अग्नि विद्युत की उत्पत्ति का वर्णन यजुर्वेद में प्राप्त है ।

त्वामग्ने पुष्करादधि-अथर्वा निरमन्थत । यजु० ११-३२

वनस्पतिशास्त्र का एक महत्वपूर्ण मत्र अथर्ववेद में मिलता है कि अवि तत्व (जीवन रक्षक तत्व (Chlorophyll) के द्वारा वृक्ष-वनस्पतियो मे हरियाली होती है ।

अविर्वै नाम देवता-ऋतेनास्ते परीवृता ।
तस्या रूपेणेमे वृक्षा हरिता हरितस्रज: ।। अथर्व० १०-८-३१

वेदो मे वैज्ञानिक व्याख्या के प्रवर्तकों मे महाभाष्यकार महर्षि पतञ्जलि का नाम अग्रगण्य है । उन्होने महाभाष्य के प्रथम आह्निक मे 'चत्वारि शृङ्गा' (ऋग्० ४-५८-३), चत्वारि वाक्० (१-१६४-४५), सुदेवो असि वरुण० ऋग्० ८-६९-१२) आदि मन्त्रों का भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन प्रस्तुत करके मन्त्रो के वैज्ञानिक अर्थ को प्रक्रिया का दिशा निर्देशन किया है । ऋषि दयानन्द ने भी उसी पद्धति को अपनाते हुए अपने वेदभाष्य में तथा ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में नौ विमानादि विद्याओं का उल्लेख किया है ।

(क्रमश:)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

धूम्रपान निषेध दिवस और दिल्ली प्रशासन



यह पढ कर अच्छा लगा कि दिल्ली प्रशासन के सभी कार्यालयो और सगठनों मे सिगरेट आदि पीने पर पाबन्दी लगा दी गई है। परन्तु समस्या यह है कि क्या सरकार राजस्व को होने वाली हानि को सहन कर पाएगी ? ऐसा प्रतीत होता है कि यह प्रशासन की दोगली नीति है। एक बार यह पता चला था कि एक सस्थान के बडे अधिकारी ने मद्य निषेध पर एक पुस्तक लिखी और उस पुस्तक के लिये धन जुटाने के लिए उसने मद्य विक्रेताओ से ही दान लिया। यह भी कोई गोपनीय तथ्य नही है कि कभी-कभी आन्दोलनों को चलाने के लिए भी धन जुटाने के ऐसे जन सम्पर्क अधिकारियो का सहयोग लिया जाता है, जिनके विरुद्ध आन्दोलन चलाया जाना है। एक बार एक बडे नेता ने घोषणा की कि वे मद्य निषेध आन्दोलन चलाएगे। उनसे उनके एक कनिष्ठ साथी ने पूछा कि इस आन्दोलनो के लिये धन कहा से जुटाएगे, तो नेता जी तपाक से बोले—इसमे क्या मुश्किल है, हम सभी व्यापारियो से लाइसेंस देते समय कुछ पैसा तो अवश्य वसूलते हैं, हम दो चार शराब के ठेके और दे देंगे तथा उससे जो रुपया मिलेगा, उससे आन्दोलन चलायेंगे। यह भी सभी को पता है कि प्रशासन का एक विभाग बड़े-बड़े पोस्टर निकालता है कि शराब बुरी चीज है और वही विभाग शराब पीने वालों के लिए परमिट भी जारी करता है। धूम्रपान के विरुद्ध भी प्रशासन बड़े-बड़े पोस्टर निकालता है। उन पर एक वैधानिक चेतावनी भी लिखी होती है, फिर भी सिगरेट बनाने वालों को कच्चा माल तथा ऋण सुविधा प्रशासन ही उपलब्ध कराता है। अनेक धर्म गुरु भी त्याग और तपस्या पर व्याख्यान देते हैं और अपना घर भरते जाते हैं।

चाहे जो हो, दिल्ली प्रशासन की यह घोषणा पढ कर मन को अच्छा लगा। आशा है कि इस घोषणा को क्रियान्वित भी किया जायेगा और कम से कम वे अधिकारी जो इस घोषणा से जुडे हैं, वे तो सिगरेट पीना छोड़ ही देगे। प्रशासन की विज्ञप्ति मे कहा गया है कि कार्यालयों के बरामदे प्रतीक्षा कक्ष, स्वागत कक्ष और सम्मेलन कक्ष आदि मे भी धूम्रपान करने की मनाही है। इन स्थानो पर इस आशय की पट्टिया भी लगाई जायेगी।

विश्व भर में ३१ मई को 'तम्बाकू निषेध दिवस' मनाया जाता है। यह अच्छी बात है, पर इसे मात्र औपचारिकता नही बनाया जाना चाहिये। इस सबध में एक सभा का आयोजन भी किया गया जिसमे विश्व स्वास्थ्य सगठन के स्थानीय निदेशक डा० कोको अध्यक्ष के रूप मे और दिल्ली के उपराज्यपाल श्री मार्कण्डेय सिंह मुख्य अतिथि के रूप मे सम्मिलित हुए। सभा मे यह आम राय थी कि इस योजना को क्रियान्वित करने में डाक्टरों, सरकारी प्रतिनिधियो, स्वय सेवी सगठनो और मीडिया से जुडे लोगो को भी आगे आना चाहिये। सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करने की मनाही होनी चाहिए, और व्यक्तिगत स्तर पर लोगो को समझाया जाना चाहिए।

आर्य समाज बहुत पहले से ही इस दिशा मे जागरूक है। उन्हे और अधिक इस दिशा मे सक्रिय हो जाना चाहिये।

सिगरेट के धुंए मे वाष्पीकृत तारकोल, निकोटिन और हाइड्रोजन, साइनाइड कार्बन, मोनो आक्साइड और २०० से भी ज्यादा अन्य खतरनाक रसायन होते हैं। धूम्रपान करने वालों को तो नुकसान होता ही है, उनके परिवार पर भी इसका बुरा असर पड़ता है।

—डा० धर्मपाल

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२ जून, ९१ के अक से आगे)

स्कूल को लेकर आर्य समाज तथा विद्यामन्दिर की प्रबन्ध समिति के बीच विवाद चलता रहता था। मैंने भी आर्य समाज के हित को देखते हुये अपनी यह धारणा बना ली थी कि समाज मन्दिरो मे विद्यालय को चलाना आगे चल कर हानिकर ही होता है।

जिस वर्ष मेरा स्थानान्तरण गवर्नमेंट कालेज पाली मे हुआ मैं आर्यसमाज रातानाडा का मन्त्री था। तत्कालीन प्रधान श्री महावीर सिंह गहलोत ने मेरे पाली स्थानान्तरित होने पर एक विदाई सभा का आयोजन किया। मेरी जोधपुर की आर्यसामाजिक प्रवृत्तियो से एक दीर्घकाल तक सम्बन्ध रहा था तथा मैं १९४६ से १९५४ तक नगर आर्यसमाज, १९५४ से १९५८ तक सरदारपुरा आर्य समाज १९५८ से १९६२ तक रातानाडा आर्य समाज का सदस्य रहा। इस प्रकार नगर के सम्पूर्ण आर्य समाजी जगत से मेरा निकट का सम्बन्ध बना। मेरे इस विदाई समारोह में जोधपुर की सभी आर्य समाजो के प्रमुख सभासद उपस्थित थे। जोधपुर से विदा लेना सक्रिय आर्य सामाजिक जीवन से विराम तो नही कहा जा सकता. किन्तु पाली में निश्चय ही आर्य समाज की गतिविधियां उतनी सघन तथा अधिक नही थीं।

आर्य समाज पाली और मैं—

१९६२ की जुलाई में मैं पाली पहुंचा और वहां की आर्य समाज का सभासद बन गया। इसी वर्ष मुझे स्थानीय आर्य समाज का प्रधान निर्वाचित कर लिया गया। पाली में आर्य समाज की प्रवृत्तियां अत्यन्त सीमित थी। सत्सगों में उपस्थिति बहुत कम रहती थी। मैंने व्यवस्थित रूप से सत्सगों का कार्यक्रम आरम्भ किया। कथा, प्रवचन आदि का मुख्य भार भी मेरे ही जिम्मे रहता था। यहां के प्रमुख सभासदो मे श्री जेठमल राठी, श्री जगदीश चन्द्र आर्य, श्री गणपतलाल जी, श्री मागीलाल जी स्वर्णकार, श्री लालचन्द शर्मा, श्री पारसमल जी आदि के नाम गणनीय हैं। श्री परशुराम आर्य तो जोधपुर की नगर तथा रातानाडा आर्य समाजो मे सेवक के रूप मे रह चुके थे। उनकी यज्ञादि नित्यकर्मों मे प्रबल निष्ठा थी। पाली नगर व्यवसाय और उद्योग का केन्द्र है। अतः यहा के लोगो में आर्य समाज के प्रति बहुत रुचि नही थी। यहा की अधिकाश जैन आबादी अर्हत धर्म के प्रति आस्थावान थी तो अन्य लोग वैष्णव निष्ठा वाले थे।

पाली से लगभग ३ किलोमीटर दूर आर्य सन्यासी स्वामी ऋतमानन्द ने अपना आश्रम बना रखा था। सम्भवत: १९५५ मे मैं एक बार जोधपुर से इस आश्रम मे आयोजित उत्सव मे सम्मिलित होने के लिये आया था। उस समय प० बुद्धदेव जी विद्यालकार इस उत्सव मे प्रमुख वक्ता के रूप मे उपस्थित थे। मेरे साथ मेरे मित्र श्री बाऊलाल टाक और सरदारपुरा निवासी धीमूलाल जी आर्य भी थे। स्वामी ऋतमानन्द, जिनका पूर्वाश्रम नाम श्री रूपराम था, का समीपवर्ती ग्रामीण जनता पर बहुत प्रभाव था। आस पास के गाव की जनता उन्हे गुरु तुल्य आदर देती थी। पाली आने पर मेरा उक्त स्वामी जी से पुन सम्पर्क हुआ। आश्रम और उनका समीपवर्ती परिवेश अत्यन्त रम्य था। एक वर्ष हमने श्रावणी का पर्व यज्ञ इसी आश्रम मे किया। आर्य समाज पाली मे विभिन्न पर्वों आदि का आयोजन करने मे हमे विशेष श्रम करना पड़ता। यदा कदा बाहर के उपदेशको के आने पर उनके प्रचार की व्यवस्था भी करनी पडती। स्थानीय आर्य समाज के सदस्यों की सामाजिक कामो मे रुचि नगण्य ही थी। अत प्रचार व्यवस्था और आगन्तुको के भोजन, आतिथ्य आदि का दायित्व भी प्रमुखत: मुझे ही वहन करना पड़ता। एक बार तो मैंने प्रातीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग सभा का अधिवेशन भी पाली मे ही आमन्त्रित किया। अन्तरग के अधिकाश सदस्य अजमेर से परोपकारिणी सभा की जीप मे आये। इन सबके भोजन एव विश्राम की सुचारु व्यवस्था मैंने स्वगृह पर ही की। पाली निवास की अवधि मे ही मैंने अपना पी० एच० डी० का शोध प्रबन्ध लिखा और वह १९६८ मे उपाधि हेतु स्वीकृत भी हुआ।

(क्रमश)

२१वीं शताब्दी का धर्म : आर्य समाज

—डा० गंगा प्रसाद—

'आर्य समाज' वास्तव मे आर्य अर्थात् विवेकशील, सभ्य, उन्नत, तर्क एव बुद्धि से सत्य का परीक्षण करने वाले मानव मूल्यो के उपासको का समाज है। और आज हम जिन समाजो के बीच जी रहे हैं वे संकीर्ण किस्म के धर्मावलम्बियो के समाज है जो हिंसा द्वारा अपने महत्व को स्थापित करने मे लगे हैं। ऐसे धर्म या मतानुग्राही समाजो के इतिहास को देखें तो हम पायेंगे कि उनका सम्पूर्ण अतीत आतंक, हिंसा, असहिष्णुता से भरा पड़ा है। आश्चर्य है कि बीसवी शताब्दी का आदमी उनके अतीत से भी यह अनुमान नही लगा पाया कि ये धर्म-मत वास्तव मे मानव कल्याण कर रहे है या मानव अहित कर रहे हैं?

'आर्य समाज' की स्थापना के पीछे किसी धर्म या मत की स्थापना नहीं रही। अपितु एक उदारवादी, वैश्विक किस्म की अत्यन्त लोकोपयोगी आचरण विधि का प्रचार-प्रसर रहा है वैदिक सस्कृति विश्ववारा सस्कृति रही है। और इस विधि का अन्वेषण कर आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने खुले मन से पौर्वात्य सस्कृति के महानतम अवदाय मे से जो सूत्र दिए गये हैं उनका प्रयोजन मनुष्य को सकीर्णता से उबारना। इस सकीर्णता से उभारने के लिये भारत के पास जो समृद्ध भण्डार है उसका उत्खलना महर्षि दयानन्द ने किया और उन्होने उदार आधार का प्रणयन किया जिसमे तमाम मानव जाति के उच्चतम गुणो का समावेश है।

आर्य धर्म एक सनातन विकासमय मार्ग पर अनादिकाल से आरूढ है। उसके प्रयास हमे ऋषियो द्वारा व्याख्यायित साहित्य मे मिलते हैं जो उपनिषदो यथा पुराणो आदि के रूप मे आज मानव जाति के सम्मुख है। विडम्बना यह है कि इस ज्ञान को पश्चिम ने यह कह कर गहराई से नही जानना चाहा है कि यह पूर्व का है और पूर्व ने इसके आन्तरिक गुण धर्म की उपेक्षा कर इसके बाह्य रूपाकार को महत्व देकर निजि हित-स्वार्थ वाले वर्गो द्वारा समय समय पर जोडे गये आडम्बर को ही सब कुछ समझ लिया। इस तरह पूर्व के पास इस ज्ञान का वह रूप जीवन विधि के रूप मे प्रचलित है जो मूल स्वरूप है। पश्चिम ही उसकी महत्ता को जानने के लिए उत्सुक है। सम्पूर्ण मानव जाति अपने पादार्थिक अहंकार के कारण महत्तम सपदा से वचित है।

प्राचीन ज्ञान सम्पूर्ण मनुष्य जाति का ज्ञान है। वह किसी व्यक्ति, कुल-वश, वर्ग, धर्म, जाति या राष्ट्र का नहीं है। वह सम्पूर्ण मानव जाति की विरासत है। प्राचीन भारतीय 'ज्ञान' या वेद, उपनिषद्, षड्दर्शन व अन्य पुरा सामग्री मे न कहीं 'वर्गो' का उल्लेख है न धर्मो जातियो, कुलगोत्रो का ही वर्चस्व स्वीकार किया है। वेद, वेदांग एव वेदान्त का समग्र ज्ञान सभी लोगो के लिए है।

सृष्टि के सम्बन्ध में प्राचीन काल से अब तक जो विचार चला आ रहा है वह ईश्वरवादी, अनीश्वरवादी या आस्तिक या नास्तिक, ब्रह्मवादी या अब्रह्मवादी आदर्शवादी या पदार्थवादी, भाववादि या तर्कवादी इत्यादि अनेक आधारो, विभाजनों आदि के अन्तर्गत किया गया है। इसमे अधिकांश पक्ष ससार को मिथ्या मानने वालो का है परन्तु आर्य धर्म या आर्य समाज इस ससार को सत्य मान कर इसी ससार मे पराशक्ति के अनुभावन एव सत्य के सत्यासत्य रूप के इतर परिदर्शन के लिए मानव चेतना को सक्षम मानता है। स्पष्ट है कि आर्य समाज किसी भौतिकवादी परीक्षा विधि के अनुरूप ही जीवन के सत्य को स्वीकार करता है। इससे यह तो सिद्ध हो जाता है कि आर्य समाज सड़े-गले, जड़-तीर्थ धर्मों की तरह केवल भावुकता या समर्पण की जिद पर आश्रित नहीं है। आर्य समाज आधुनिक ससार की विकासमय स्थिति मे मनुष्य की सतत उन्नति का समर्थक है व साथ ही साथ उसे उस आध्यात्मिक उत्कर्ष का परिज्ञान कराने वाला भी है जो आधुनिकता की दौड़ में भुला दिया गया है।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या आगामी मनुष्य को धर्म की आवश्यकता रहेगी भी? आज की स्थिति को देखते हुए लगता है कि आगामी आदमी धर्म के विकृत स्वरूप से खुद को अलग करेगा परन्तु जैसे-जैसे उसका ज्ञानात्मक परिचय बढेगा वह अतीत से अच्छी चीजे खोजने का प्रयास करेगा। पिछली शताब्दी में ऐसा ही कुछ महर्षि दयानन्द ने किया था। उन्होंने शास्त्र और विज्ञान से वह महत्तम खोजने के लिए लोगो को प्रेरित किया। आश्चर्य नही होना चाहिये कि धर्म और साधनाओ के नितान्त व्यक्तिगत स्वरूप को उन्होंने जन सुलभ बनाने की दिशा में एक क्रान्तिकारी काम किया था। उन्होने जनचित्र को झकझोरा। उस की सामूहिक नियति के प्रश्नो के सामने उसे ला खड़ा किया। भौतिक दुनिया मे अर्थशास्त्र और राजनीति के विभिन्न कोणो का जो 'पदार्थवादी' स्वरूप पश्चिम मे मार्क्स और लेनिन ने स्पष्ट किया था उसे एक सतुलित रूप मे सामने लाने का कार्य दयानन्द सरस्वती ने किया। भारत में गांधी, अरविन्द, नेहरू, प्रेमचन्द, लाला लाजपत राय जैसे लोग सीधे-सीधे दयानन्द सरस्वती व उनके विचारों से प्रेरित थे। कहना चाहिये कि दयानन्द उन्नसवीं शताब्दी के प्रमुख क्रान्तिवादी थे। उन्होने विचार, आचरण, अनुष्टान, निष्ठा और अनुशासन का एक अद्भुत समन्वय दिया था। यह समन्वय भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का भी था सांख्य और न्याय का भी और मानव जाति के उत्कर्ष के लिए सभी उच्च गुण धर्मी विचारो का भी। भारतीय विचार क्षितिज में यह क्रान्तिकारी कदम व्यक्तिवाद की जगह समूह के समग्र विकास का कदम था। इस अर्थ मे इस कदम को साम्यवादी-क्रांति से भी अधिक क्रान्तिकारी, भौतिकवादी एकपक्षीय सुधार की जगह सर्वाङ्गवादी क्रान्तिकारी कह सकते है।

'आर्य समाज' की सज्ञा ही स्वय स्पष्ट कर देती है कि यह 'समाज' है जो मिल-जुल कर सहयोगी सरकारी भावना से मानव कल्याण की ओर अग्रसर है जिसका मूल मन्त्र है 'सर्वं भद्राणि···।' इस समाज को आदिम, असभ्य, पशुवत आचरण से उबार कर जिन विषयो का अनुगमन आवश्यक माना गया है यदि आप आज उनकी समयानुपेक्षी, व्याख्या करें तो वे नियम एक जीवित जन-समाज को ऊर्जा देने वाले, योगादि विज्ञान के अनुरूप, पर्यावरण सरक्षा से अनुप्रेरित हैं। यह नियमागत अनुशासन 'समाज' को कार्यादित रूप से विकास की ओर सलग्न करने के लिए जरूरी हैं। समूह' सघ, भीड़ की उपेक्षा समाज अधिक उत्तरदायित्वपूर्ण सज्ञा है और यह समाज जो आर्यजनों का समाज है अपने प्रत्येक क्रिया कलाप में समग्र विश्व के कल्याण की कामना करता है व तदनुरूप कार्य भी करता है। अत स्पस्ट है कि जिस समतापूर्ण समाज की कल्पना साम्यवाद करता है उससे कही अधिक समतापूर्ण आर्य जनो का समाज है। इसमे न वर्ण हैं, न कुलगोत्र, न ऊच-नीच। अत. यह समाज वास्तव मे मानव जाति के सर्वाङ्ग विकास के लिए प्रतिबद्ध समाज है।

आर्य समाज समतावादी, समन्वयकारी दृष्टि पर आधारित है। यह समतावादी दृष्टि उस दर्शन मे फलीभूत होती है जो 'वेदों' से आरम्भ होती है। वेदो' के आधुनिक व्याख्याता भी स्वीकार करते है कि वे जड़ ग्रन्थ नही अपितु उनमें मनुष्यता के लिए वह महान सन्देश छिपा है जो विकासवादी मनुष्य जाति के लिए अनिवार्य है। वेदोपासना का ढोंग आर्य समाज नही सिखाता अपितु वह वेद ज्ञान से बोध प्राप्त करने के लिए व्यक्ति और समाज को मानसिक रूप से तैयारी के लिये प्रदीक्षित करता है। मानव जाति का सनातन सत्य वेदवाणी मे संरक्षित है। वह उस अमूल्य कोष की तरह है जिसकी कुंजी वेदो में ही सुरक्षित है।

प्रासंगिकता

कुछ उदाहरणो से बात स्पष्ट करे। विश्व के अनेक वैज्ञानिक चमत्कृत हैं कि अथर्ववेद मे १६ सूक्त ऐसे है जो समग्र गणित, रेखागणित, अंकगणित के उच्चतम ज्ञान को सरक्षित किए हुये हैं। आज जर्मनी और अमरीका के उन्नत विश्वविद्यालयों मे हो "वैदिक गणित" विद्यार्थियो को पढाया जाता है। यही वैदिक गणित अन्तरिक्ष अनुसधान के अध्येताओं के काम का है। आश्चर्य ही होना चाहिए कि जिस ऋषिकुल ने हजारो वर्ष पूर्व इनकी रचना की होगी क्या वे स्वय उन्नत किस्म के विज्ञ-जन नही रहे होगे। क्या वे लोग केवल कल्पनात्मिक साहित्य रच रहे थे? या उनके पास अनन्त-ज्ञान राशि के सक्षेपण की विधि भी इस रूप में

(शेष पृष्ठ ५ पर)

२१वीं शताब्दी का धर्म : आर्यसमाज

(पृष्ठ ४ का शेष)

उपलब्ध थी कि आज सहसा हमारे तथाकथित भौतिक ज्ञान से अभिभूत मन को उस पर विश्वास नहीं होता। परन्तु वास्तविकता यह है कि वेदों मे ज्ञान विज्ञान सरक्षित है। और उसे हम पा सकते हैं—उसके रहस्य की कुंजियो को खोल सकते हैं यदि हम ऋषि प्रणीत आर्य विचार धारा के आचरण विधान के अनुरूप अपने को ढाले। और यही वह प्रमुख भूमिका है जहा 'आर्य समाज' सार्थक और प्रासंगिक है।

गम्भीर आध्यत्मिक अध्यव्यवसाय का ही परिणाम है कि एक सोती हुई जाति को जगाने के लिए पिछली शताब्दी में महर्षि दयानन्द ने एक समाज की स्थापना की—और आर्य समाज के सामूहिक प्रतिदान से जन चेतना मे उसके उच्चतम स्वरूप का भाव प्रतिष्ठापित किया। उनके आत्यात्मिक स्वभाव का निष्कर्ष ही यह आर्यसमाज है जो एक यथार्थवादी दर्शन पर आधारित है। यह यथार्थवादी दर्शन मनुष्य को दासता से मुक्त देखना चाहता है। यह उसे चिन्तन के सर्वोच्च स्तर तक ले जाने मे सक्षम दर्शन है। वेद की व्याख्याओ से स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत वासियों की आखें तो खोली ही उन्होंने उस आडम्बरपूर्ण व्यवस्था पर भी कस कर प्रहार किया जो अन्ध-विश्वासो का प्रसार करता है, जो जड़ और अर्थहीन मान्यताओ का विकास करता है। उन्होंने मनुष्य को व्यर्थ के आडम्बरों से बचाने का प्रयास किया। वेदवाणी के उत्कृष्ट अशो की आधुनिक युगानुकूल व्याख्याए दी। उन्होने वेद की व्यवस्थाओं को वे अर्थ दिए जिनके अनुसार मनुष्य जीवन के मूल उत्स को जान सके। यज्ञादि कर्मों द्वारा सुचिता के एक नये प्रारूप को सामने रख कर वायुमण्डलीय प्रदूषण को परिसीमित करने का विचार भी सामने रखा। आज तो समग्र विश्व के सुविज्ञ वैज्ञानिक पर्यावरण असन्तुलन से इतने चिन्तित हैं कि वे प्रकृति के विनाश को मानव जाति के विनाश से जोड़ रहे हैं तथापि महर्षि दयानन्द ने एक शताब्दी पूर्व ही इस परिस्थिति का पूर्वाभास पा लिया था। इसलिए उन्होंने आर्यजनों के लिए 'हवन' (यज्ञ) का प्रावधान रखा तथा धरती से अनेक प्रकार की सम्पदाओ को प्राप्त करने के लिए एक उन्नत एव ऐश्वर्यपूर्ण मानव समाज की रचना के लिए पुरुषार्थ को समर्थन किया। जिस एक महत्तम मानवीय समस्या के पूर्वाभास के उपरान्त आर्य पद्धति के आचरण विधान का सूत्रपात पिछली शताब्दी मे किया गया था। उसका लक्ष्य था एक प्रदूषण मुक्त पर्यावरण का निर्माण। और यह निर्माण 'मनुष्य' के शरीर यत्र के स्वास्थ्य एव सुविकसन के लिए अनिवार्य था। जो बात महर्षि दयानन्द ने गत शताब्दी मे सामने रखी थी इस शताब्दी मे अनेक धार्मिक अहकारो ने उसे समझा ही नही। एक महामानव की अवतारणा की जगह एक ओछे, राक्षसी वृति वाले, आत्महन्ता मनुष्य पीढी की अवतारणा हुई। और अब इस शताब्दी के बाद अगली शताब्दी के आदमी के पास ओछे मानव के द्वारा छोडे गये ओछे किस्म के राजनैतिक मतवाद का अन्धानुचरण करने के अलावा कोई विकल्प है तो वह विकल्प है 'आर्य समाज'। ऐसा आर्य-जन समाज जिसमे मनुष्य के सामुदायिक कल्याण का लक्ष्य सर्वोपरि है।

महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया था कि पृथ्वी पर 'मनुष्य के अवतरण का प्रयोजन" है। पादार्थिक, भौतिक उत्कर्ष के साथ-साथ सहज सौम्य, अहकारविहीन मनुष्य का रूपायन। इस रूपायन से उसमे सह-अस्तित्व की महत्ता जागृत होगी, सह-जीवन के लिये अनुप्रेरणा मिलेगी और इसी मार्ग से वह जीवन के उन गूढ प्रश्नो की ओर उन्मुख होगा जो वेद, वेदाग मे सरक्षित है। अतीत को जानना उतना महत्वपूर्ण नहीं जितना यह जानना कि जो कुछ मानव युवित ने अन्वेषित किया है वह शाश्वत है। मनुष्य के अवतरण का प्रयोजन सज्ञानता, विद्या और गम्भीर आध्यात्मिक आलोक के द्वारा ही जाना जा सकता है। उनके लिये अन्य धर्म मार्ग सकीर्ण से हैं। यदि कोई मार्ग वैज्ञानिक है, उदार और वेद ज्ञान द्वारा आलोकित हो सकता है तो वह आर्य समाज है।

आइये २१वीं सदी के पदार्पण मे उस आलोक के सहभागी बनें—उस समाज के सहयात्री बनें जो मनुष्य के उत्कर्ष का एक मात्र ध्वज उठाये गतिमान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजीकृत)

कार्यालय : १५-हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

आर्यसमाजो के अधिकारियों की सेवा में नम्र निवेदन

मान्यवर, सभा के परिपत्र दिनांक ९-४-९१ का अवलोकन करें। उपरोक्त परिपत्र मे आर्य समाजो के अधिकारियो से निवेदन किया गया था कि, आर्यसमाजो का वित्तीय वर्ष ३१ मार्च १९९१ को समाप्त हो गया है। आप आगामी वर्ष के लिए वार्षिक साधारण सभा की बैठक विधानानुसार आर्यसमाज के नियमो उप-नियमों के अनुसार ३१ मई १९९१ तक अवश्य आयोजित कर लें तथा आगामी वर्ष के लिए अधिकारियो, आर्य वीर दल के अधिष्ठाता का तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचन यदि गत वर्ष न किया हो, तो कर लें। आपकी आर्यसमाज की ओर से प्रथम दस सभासदों पर एक और प्रत्येक अतिरिक्त बीस सभासदो पर एक प्रतिनिधि निर्वाचित किया जा सकता है, जिसकी आयु २५ वर्ष से कम न हो और जो पिछले दो वर्षों से समाज का सभासद रहा हो।

१५ मई १९९१ तक निम्नलिखित विवरण तथा धनराशि सभा कार्यालय में भिजवाने की कृपा करें।

१— १ अप्रैल १९९० से ३१ मार्च १९९१ तक का वार्षिक विवरण :—

(अ) यज्ञ, सस्कार, शुद्धिया, अन्तर्जातीय विवाह, दिन के समय साधारण रीति एव बिना दहेज कराये गये विवाहों का तथा समारोहो का विवरण।

(आ) समाज के अधीन चल रही सस्थाओ, विद्यालयों, चिकित्सालय, पुस्तकालय सेवा समिति, आर्य वीर दल आदि का विवरण

२— १ अप्रैल १९९० से ३१ मार्च १९९१ तक का आय-व्यय विवरण।

२— सदस्य सूची निम्नलिखित फार्म के अनुसार स्वय बना ले—

क्रम सख्या	सदस्य का नाम	पिता का नाम	पता	वर्ष भर मे प्राप्त सदस्यता शुल्क

४— सदस्यता शुल्क का दशाश, वेदप्रचार राशि और आर्य सन्देश का वार्षिक शुल्क २५/-रुपये।

आपसे अनुरोध है कि आप इस सम्बन्ध मे यदि अब तक कोई कार्यवाही न की हो तो यथाशीघ्र कार्यवाही कर अपना तथा अपनी समाज का सहयोग प्रदान करे। धन्यवाद,

—सूर्य देव
महामन्त्री

चुनाव समाचार

— आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के मन्त्री एव आर्य युवक सभा पजाब के उप-प्रधान श्री मनोहर लाल आर्य के प्रयासो के फलस्वरूप दीनानगर और अबाला मे नवीन शाखाओ की स्थापना की गई है। जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री प्रो० बनीसिह यादव, उपप्रधान—श्री रणजीत कुमार, मन्त्री—श्री भारत भूषण।

— आर्य युवक सभा पजाब की बैठक आर्य समाज अहमदगढ मे हुई जिसमे सर्वसम्मति से सम्पन्न चुनाव में निम्न अधिकारी चुने गए—

श्री सुनीत हिन्द प्रधान, श्री प्रमोद गुप्ता—मन्त्री तथा श्री प्रकाश चन्द शास्त्री—सचालक।

— आर्य समाज सीहोर गज के वर्ष १९९१-९२ हेतु दिनाक १२-५-९१ को सर्वसम्मति से हुए चुनाव मे निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए—प्रधान—श्री ओमनाथ जी आर्य, मत्री—श्री राजवीर आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री रामभरोसे जी आर्य।

जीवन का दिव्य पक्ष

आदर्शचिन्तनम्

आदर्श चिन्तन

सफल जीवन-यात्रा के लिए आदर्श-चिन्तन, सदसद्विवेचन में समर्थ बुद्धि, स्वकर्तव्य-परिज्ञान, आत्म-विश्वास, आशावाद और साथ ही विश्व को नियन्त्रण मे रखने वाली आद्या महाशक्ति के सान्निध्य की भावना की महती आवश्यकता है। इसी सिद्धान्त का विशदीकरण नीचे के पद्यों में किया गया है।

सौभाग्यमेतदतुल मम येन लब्ध मानुष्यक प्रभुप्रसादललामभूतम्।
याचे तमीशमधुना सदसद्विचारोद्युक्तां धिय सफलताधिगमाय तस्य ॥१॥

मेरा यह अद्वितीय सौभाग्य है जिससे मुझे भगवान के उत्कृष्ट प्रसाद के रूप में मनुष्यता प्राप्त हुई है। मैं अब उसकी सफलता के लिए ईश्वर से सद्सद् के विचार (विवेक) मे तत्पर बुद्धि की प्रार्थना करता हूं।

याचे मुहुर्मुहुरह तमज परेश सत्ये दृढ़ामथ विवेकरतां सुबुद्धिम्।
मार्गे यथातिविषमे निजजीवनस्य कर्तव्यपालनपर: कुशली व्रजेयम् ॥२॥

उस अनादि परमेश्वर से मैं बार-बार सत्य मे दृढ़ और विवेकोन्मुख सद्-बुद्धि की याचना करता हूं, जिसकी सहायता से मैं कर्त्तव्यों का पालन करते हुए अपने जीवन के अत्यन्त कठिन मार्ग पर सकुशल यात्रा कर सकू।

जनमाप्य लोक इह बुद्धिमत्ता जनेन मार्ग: स एव सुतरामवलम्बनीय:।
कर्त्तव्यपालनपुर: सरमेव येन कल्याणमेष लभतेऽत्र परत्र चापि ॥३॥

इस लोक मे जन्म पाकर बुद्धिमान मनुष्य को दृढ़ता से उसी मार्ग का अवलम्बन करना चाहिए जिससे उसे अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए इस लोक और परलोक दोनो में कल्याण की प्राप्ति हो।

रे रे मनो ! विसृज दैन्यमिदं दुरन्त
नैराश्यमाहुरिह सर्वविनाश हेतुम्।
आशावतां धृतिमतां मत एष लोको
विश्वासमात्मनि च ये नियत भजन्ते ॥४॥

अयि मन ! इस दु:खदायिनी दीनता को छोड़ दे। निराशावाद की भावना सर्वविनाश का कारण होती है। यह लोक उन्ही के लिए है जो आशावादी तथा धृति वाले हैं और जिनको निश्चय रूप से अपने मे विश्वास है।

रक्षा चकार जननी जठरे स्थितस्य
स्तन्य य एव तदनु स्तनयो: ससर्ज।
सवर्ध्य मा बहुविधैरितरै: प्रकारै-
र्देवेन तेन न हि सम्प्रति विस्मृतोऽहम् ॥५॥

माता के गर्भ मे रहते हुए जिन्होने मेरी रक्षा की थी, तत्पश्चात् माता के स्तनो मे जिन्होने दुग्ध उत्पन्न कर दिया था, अन्य अनेक प्रकारो से भी मेरा सवर्धन करके, उन विश्वम्भर भगवान् ने अब मुझे भुला नही दिया है।

—डा० मगलदेव शास्त्री

पुस्तक समीक्षा

स्वास्थ्य सोपान (छठापुष्प)

वैदिक धर्म की यह विशेषता है कि इसमे पारलौकिक एव इहलौकिक क्रिया कलापो तथा उपलब्धियो को समान महत्त्व दिया गया है। धर्म की राह पर चलने वालो का स्वास्थ्य भी ठीक होना चाहिए—'शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनम्'। नीरोग कैसे रहे – यह पुस्तक मे बताया गया है। आदरणीया श्रीमती दयावती बनाती ने रोग के कारणो, निदान तथा रोग से दूर रहने के उपाय बताए हैं। उन्होने व्यायाम पर विशेष बल दिया है। मन और शरीर का परस्पर पूरक सम्बन्ध है। 'मन चगा तो कठौती मे गगा'। मन स्वस्थ है तो शरीर भी स्वस्थ होगा। शरीर स्वस्थ होगा तो मन भी स्वस्थ होगा। व्यायाम मानसिक तनाव को समाप्त करने तथा आरोग्य वृद्धि मे सहायक है। हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति ही जीवन के सघर्षमय पथ पर आगे बढ़ सकता है।

[स्वास्थ्य सोपान—श्रीमती दयावती बनाती १/८ वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार मूल्य—केवल पढ़ना और स्वस्थ रह कर समाज की सेवा करना]।

—मूलचन्द गुप्त,

लंदन में आर्यसमाज की गतिविधियां

इस माह साप्ताहिक सत्सग यथासमय डा० तानाजी आचार्य के पौरोहित्य तथा श्री प्यारेलाल चड्ढा एव आर्य परिवार के यजमानत्व में सम्पन्न हुए।

दि० १४ अप्रैल को गायत्री महायज्ञ का विशेष आयोजन किया जिसमें लगभग एक हजार श्रद्धालुओं ने भाग लेकर इस धार्मिक अनुष्ठान का लाभ उठाया और आर्य समाज को मुक्तहस्त से दान दिया। इस गायत्री महायज्ञ का पौरोहित्य प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज डा० तानाजी आचार्य, श्री विनय कुमार जी, श्री सहदेव मल्होत्रा, श्री मेहता बलदेव मोहन एवं डा० श्रुतिशील शर्मा ने सफलता पूर्वक किया। प्रसाद के रूप में स्वादिष्ट ऋषिलंगर का आयोजन श्रीमती वेदवती सोफत एव परिवार ने किया था। इस अवसर पर भक्तगणों की श्रद्धा, प्रेम और उत्साह दर्शनीय था।

वेद सुधा मे प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज एव डा० तानाजी आचार्य ने वेदमन्त्रो की रोचक व्याख्या की। इसके अतिरिक्त श्री वीरेन्द्र वीर वर्मा ने म० ज्योतिबा फूले के कार्य और विचारों की समालोचना की। श्री जी. वी. पटेल ने प्राणायाम विधि तथा प्राणायाम के लाभों पर प्रकाश डाला। प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज ने वैशाखी के पर्व का महत्व बताया। श्री पं० सत्यदेव भारद्वाज जो भारत से पधारे है ने रामजन्मभूमि के सन्दर्भ में आर्यसमाज के दृष्टिकोण से सबको अवगत कराया।

तत्पश्चात चि० मधुर आर्य, आशुतोष आर्य, श्रीमती सावित्री छाबड़ा, कैलाश भसीन, यशवेदी, सुमन चोपड़ा, सुवर्णा शर्मा, वेदी मन्त्री, प्रेम दुखिया आदि का मधुर भजन गायन हुआ।

प्रति शनिवार वेद पाठ की महिलाओं ने परिवारों में पारिवारिक सत्संग के रूप मे वेदपाठ का सफल आयोजन किया। वैदिक संस्कार तथा पारिवारिक हवन भी कराए गए।

सेवानिवृत्त वृद्धजनो का सत्संग प्रति बुधवार सम्पन्न होता रहा, जिसमें २५-३० लोगो ने भाग लिया।

विवाह विषयक नि:शुल्क सुझाव' तथा हिन्दी की कक्षा नियमित रूप से चलाई गई।

प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

आर्य समाज लण्डन की ट्रस्टी परिषद एव कार्यकारिणी का निर्वाचन २८ अप्रैल १९९१ को सम्पन्न हुआ। १९९१ से १९९६ तक के लिए निम्न ट्रस्टी नियुक्त हुए—प्रोफेसर सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज, डा० मदन बहल, श्री एस. के बेदी, श्रीमती सावित्री छावडा, श्री जे. आर. शर्मा, श्री डी वी. पुरी और श्री डी पी भसीन।

कार्यकारिणी परिषद वर्ष १९९१-९२

प्रधान--श्री सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज, उपप्रधान--श्री पी. बी. चोपड़ा तथा श्री वी. वी. वर्मा महामन्त्री-श्रीमती प्रतिमा बहल, संयुक्त मन्त्री--आर के. चोपड़ा, वाई डी. प्रिन्जा, कोषाध्यक्ष-एस. के. बेदी, संयुक्त कोषाध्यक्ष--डी. पी. भसीन, जनसम्पर्क अधिकारी--एस. पी. बत्रा, पुस्तकाध्यक्ष--श्रीमती ऊषा भसीन।

● सत्य के लिए कारावास कोई लज्जा की बात नहीं है। धर्म पथ पर आरूढ होकर मैं ऐसी बातो से सर्वथा निर्भय हो गया हूं। प्रतिपक्षी लोग यदि अपने प्रभाव से ऐसा कष्ट दिलावेंगे, तो जहां कष्ट सहते हुए मेरे चित्त में शोक का कोई तरंग भी उत्पन्न न होगा वहां मैं अपने प्रतिपक्षियो की अकल्याण कामना भी कभी नहीं करूंगा। पादरी जी मैं लोगों के डराने से सत्य को नहीं छोड़ सकता। ईसा को भी लोगो ने फांसी पर लटका ही तो दिया था।

● जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाये हैं वैसे ही वेद भी सब मनुष्यो के लिए प्रकाशित किये है।

शोक समाचार

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् एव लेखक श्री देवीचरण जी बसल (महात्मा देवेश भिक्षु) की धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला देवी जी का देहावसान ६ मई, १९९१ को हो गया है। महात्मा देवेश भिक्षु जी वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान के प्रधान हैं। एव देश विदेश में अपनी वाणी और लेखनी से आर्य समाज का प्रचार कार्य करते हैं। वे पुनः १२ जून को चार मास के लिए अमरीका और कनाडा मे आर्य समाज के प्रचारार्थ जा रहे हैं।

इस समय जो गहरा शोक उनको और उनके परिवार को व्याप्त हुआ है। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवङ्गत आत्मा को शान्ति दे। आर्य समाज और वेदोद्धारिणी प्रतिष्ठान की ओर से हम गहरी शोकानुभूति प्रकट करते है।

—समित्पाणि शर्मा बी० ए० शास्त्री

शामली (उ० प्र०) निवासी प्रचारक—लेखक—सम्पादक स्व० लाला चतुरसेन जी के साथ मुझे साप्ताहिक पुण्यभूमि के सम्पादन काल मे १९५०-५२ मे परिचय पाने का अवसर मिला। सेवा विद्वत्ता की वे प्रतिमूर्ति थे। उनके इन कार्यो में सबसे बडी सहयोगी उनकी धर्म-पत्नी रही। उनका भी ८५ वर्ष की आयु मे देहान्त का समाचार हाल मे सार्वदेशिक पत्र से मिला।

इस अवसर पर हम उनके सुयोग्य पुत्र श्री मूलचन्द गुप्त व उनके परिवार से हार्दिक समवेदना, तथा दिवगत आत्मा की सद्गति के लिये प्रार्थना करते हैं।

—ब्रह्मदत्त स्नातक, भारतीय सूचना सेवा (रिटायर्ड)
सी ४ बी-३३२ जनकपुरी

प्रवेश सूचना

आर्य समाज मे उपदेशको का नितान्त अभाव होने से उपदेशक विद्यालय की ब्रजघाट जनपद गाजियाबाद मे स्थापना हो चुकी है जहा दो साल मे ही गहन अध्ययन निःशुल्क कराकर प्रमाणपत्र भी दिया जायेगा तथा सभा मे नियुक्ति का भी आश्वासन। इच्छुक व्यक्ति कम से कम इण्टर अथवा मध्यमा पास। साक्षात्कार के लिये १५ जून से ३० जून तक पधारने का कष्ट करे।

—आचार्य देवव्रत, प्राचार्य वैदिक धर्मप्रचारक महाविद्यालय
प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति भवन ब्रजघाट जनपद गाजियाबाद

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Post in N D P S O on 6 7-6 1991 Licenced to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

जेल के सींखचों से राष्ट्रसेवा तक का सफरनामा

अंग्रेजों के जड भारत मे जमाने और इस्लामी खिलाफत साम्राज्य के ब वेदार हैदराबाद के निजाम को आर्यसमाज द्वारा सत्याग्रह (१९३८ ३९) को राष्ट्रीय स्तर पर चलाने और बाद मे भारत सरकार द्वारा पुलिस कारवाई करने के बाद भारत मे विलय करना पडा था।

उस संघर्ष मे भाग लेने वालो का स्वाधीनता सेनानी का सम्मान व पेंशन (उनकी विधवाओ को भी) की कहानी सर्वप्रथम १९६३ से शुरू हुई थी, और १९८५ मे भारत सरकार ने उसके लिये सरकारी आदेश जारी किया।

५० साल के इस सार विवरण का आंखो देखा और स्वय भुगता वर्णन लौह लेखनी से दर्ज—

हैदराबाद सत्याग्रह पर प्रामाणिक दस्तावेज

यानी

जेल के सींखचों से राष्ट्रसेवा तक का सफरनामा में पढ़िये। पत्रकारों एव समीक्षको द्वारा प्रशंसित।

मूर्धन्य शिरोमणि संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती लिखते हैं—हैदराबाद सत्याग्रह के सम्बन्ध मे जो पुस्तक लिखी है आपने यह कार्य बहुत ही प्रशसनीय किया है। इसमें आर्य समाज की विजय हुई इतिहास मे एक बहुत बडी यह घटना थी आपने उसमें भाग लेने वाले बहुतों का वर्णन अपनी इस पुस्तक मे किया है। आप धन्यवाद के पात्र है। यह पुस्तक आर्यसमाज की सभी सस्थाओं और पुस्तकालयों मे होनी चाहिये।

पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती के अलावा पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एव जानेमाने सम्पादक श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य समाज स्थापना दिवस के १७ मार्च के अंक मे कहा है इसमें सन्देह नहीं कि श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने इस पुस्तक को तैयार करने के लिये बहुत अधिक परिश्रम किया है। हैदराबाद सत्याग्रह की कहानी को एक बार पढ़ लें तो हो सकता है कि आर्यसमाज में एक नया उत्साह और बलिदान की भावना पैदा हो जाय। उन्होंने इस पुस्तक को अधिकाधिक पढने को कहा है। मूल्य २० रु० समाजों को रियायत।

पता—ब्रह्मदत्त स्नातक
सी ४ बी—१३२ बी, जनकपुरी, दिल्ली-५८

इलीप न० ९६१४ ८

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस दरियागज नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१ • फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ३२ | रविवार, १६ जून, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह सम्पन्न

राष्ट्र कल्याण के लिए प्रतिबद्ध आर्यसमाज : स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से भारत के प्रसिद्ध व्यायामाचार्य डा० देवव्रत आचार्य और श्री बाल दिवाकर हंस के संरक्षण मे विशाल चरित्र निर्माण एव व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन महाशय चुन्नीलाल बाल मन्दिर सीनियर सेकण्डरी स्कूल हरिनगर एल-ब्लाक मे ३१ मई १९९१ से ९ जून १९९१ तक किया गया।

रविवार ९ जून १९९१ को प्रात विद्यालय के विशाल प्रागण में शिविर का समापन समारोह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

आर्य वीर दल की टुकड़ियों ने सर्व प्रथम पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का सैन्य अभिवादन किया, आर्य वीरो ने व्यायाम, शरीर सौष्ठव, पी-टी० लाठी, भाला, तलवार, योग आदि के अनेक मनोहारी प्रदर्शन प्रस्तुत किए। इन कार्यक्रमो के दौरान सम्पूर्ण प्रागण अनेक बार तालियो की गड-गड़ाहट से गूंज उठा। रस्से को मलखम बना कर अनेक प्रदर्शन किए गए। आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री महाशय धर्मपाल की प्रसन्नता का पारावार न था। उन्होने मलखम पर प्रदर्शन करने वाले, प्रत्येक युवक को १००) रुपये का पुरस्कार देना प्रारम्भ किया। अन्य आर्यजनो ने भी आर्य वीरो का उत्साह वर्धन किया।

आर्यवीर सैनिकों की टुकड़ियों ने मार्च पास्ट करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल एव आर्य केद्रीन्य सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल का सैनिक अभिवादन किया। इस मनोहारी दृश्य से सारा पण्डाल चमत्कृत था।

पूज्य श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने विशिष्ट कार्य करने वाले सहयोगियो एवं शिक्षको को तथा शैक्षणिक एव बौद्धिक प्रतियोगिताओ मे विजयी आर्यवीरो को सम्मान पदक प्रदान किए।

सभा को सम्बोधित करते हुए डा० वाचस्पति उपाध्याय ने कहा कि ये करतब तो सर्कस वाले लोग हमारे आर्य वीरो की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह दिखा सकते हैं, परन्तु हमारी विशेषता है कि इन आर्य वीरों ने शारीरिक क्रिया प्रदर्शन के साथ साथ अपने चरित्र को भी उत्कृष्ट बनाया है।

सभा को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, महामन्त्री श्री सूर्यदेव, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती और स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने सम्बोधित किया। अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्री स्वामी जी महाराज ने कहा कि जिस कार्य को करने मे हमारे सैनिक हिचक रहे थे और उच्चाधिकारियो के आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे, उस कार्य को हमारे एक आर्य वीर ने सम्पन्न कर दिखाया था। पाकिस्तान के सैनिकों ने भारत की भूमि पर अपने देश का ध्वज लगा दिया था और वे उसकी रक्षा पूरी शक्ति से कर रहे थे। भारतीय सेनाओ के जवान कुच्छ करने से पहले आदेश की प्रतीक्षा मे थे। परन्तु हमारे आर्य वीर श्री ओ३म् प्रकाश त्यागी घूटनो और कुहनियो के बल रेंग कर आंखे बचाते हुए आगे बढे और उस ध्वज को उतार लाए। हमने वह ध्वज तत्कालीन गृह मन्त्री श्री सरदार पटेल को भेंट किया। उन्होने यह ध्वज सार्वदेशिक सभा को सम्मान पूर्वक दिया जो आज भी हमारे कार्यालय मे रखा हुआ है। राष्ट्र कल्याण के लिए आर्य समाज प्रतिबद्ध है।

समारोह समापन हेतु आर्यवीरो ने पुन: मार्चपास्ट किया और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तथा आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के अध्यक्ष श्री सूर्यदेव का सैनिक अभिवादन किया।

समारोह का सचालन ब्र० राजसिंह आर्य ने किया।

(शेष समाचार अगले अंक मे)

सुप्रसिद्ध समाजसेवी, मानवता के पोषक, उद्योगपति श्री महाशय धर्मपाल जी आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान निर्वाचित

आर्यसमाज हनुमान रोड के विशाल सभागार में आर्य केन्द्रीय सभा का वार्षिक अधिवेशन ९ जून १९९१ को सभा प्रधान महाशय धर्मपाल की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। ईश वन्दना के पश्चात् दिवगत महानुभावों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा महामन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री ने वर्ष १९९०-९१ का वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया। सभी उपस्थित आर्यजनों ने सभा के वार्षिक कार्य की सराहना की और अधिकारियो का धन्यवाद किया। सर्व सम्मति से रिपोर्ट स्वीकृत की गई। सभा के कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश कपूर ने आय-व्यय विवरण तथा



(महाशय धर्मपाल जी)

बजट प्रस्तुत किया। मान्य सदस्यो ने कुछ जानकारिया प्राप्त की तथा अपने सुझाव दिए। आय-व्यय तथा बजट एव शेष पत्र की स्वीकृति के पश्चात् डा० शिवकुमार शास्त्री ने सविधान मे सशोधन प्रस्तुत किया कि आर्य समाजो से सबध शुल्क प्रति वर्ष न लेकर, केवल एक बार २५० रुपए लिया जाए। यह सशोधन को सर्व सम्मति से स्वीकृत किया गया। वर्तमान अधिकारियो एव कार्यकारिणी के सदस्यो का धन्यवाद प्रस्ताव लाला बटेश्वर दास ने प्रस्तुत किया जिसे सहर्ष स्वीकार किया गया।

तत्पश्चात् निर्वाचन की प्रक्रिया पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की अध्यक्षता मे प्रारम्भ हुई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने श्री महाशय धर्मपाल का नाम प्रधान पद के लिये प्रस्तावित किया श्री सूर्यदेव श्री रामनाथ सहगल, श्री लाजपत राय निभावन श्रीमती कृष्णा चड्ढा आदि

(शेष पृष्ठ ६ पर)

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

वेदों की सार्वभौमिकता

—पद्म श्री डा० कपिलदेव द्विवेदी
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

(गताङ्क से आगे)

महर्षि भारद्वाज ने अपने "यन्त्रसर्वस्व" ग्रन्थ के "वैमानिक प्रकरण" में विमानों के निर्माण एवं उनके विविध यन्त्रों का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने "बृहद् विमान शास्त्र' नाम से छापा है। इस ग्रन्थ के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्राचीन भारत में विमान आदि के निर्माण से सम्बद्ध अनेक ग्रन्थ विद्यमान थे। इसमें उल्लेखनीय है कि—

नारायणः शौनकश्च गर्गो वाचस्पतिस्तथा।
चाक्रायणि धुंण्डिनाथश्चेति शास्त्रकृत. स्वयम् ॥ ३४
विमानचन्द्रिका व्योमयानतन्त्रस्तथैव च।
यन्त्र कल्पो यानबिन्दुः खेटयान प्रदीपिका ॥ ३५
व्योमयानार्क प्रकाशश्चेति शास्त्राणि षट् क्रमात्
नारायणादिमुनिभिः प्रोक्तानि ज्ञानवित्तमैः ॥ ३६ ॥

बृहद्विमानशास्त्र १. ३४-३६

वैज्ञानिक ग्रंथों के लेखक ये ६ ऋषि हैं—नारायण, शौनक, गर्ग, वाचस्पति चाक्रायणि और धुण्डिनाथ। उनके बनाये हुए ६ वैज्ञानिक ग्रन्थ क्रमशः ये हैं— विमानचन्द्रिका, व्योमयानतन्त्र, यन्त्र कल्प, यान बिन्दु, खेटयान प्रदीपिका और व्योमयानार्क प्रकाश।

विमान की व्याख्या से ज्ञात होता है कि ये विमान, पृथ्वी, जल और अन्तरिक्ष तीनों में चल सकते थे और इनके द्वारा देश-देशान्तर, द्वीप-द्वीपान्तर और विभिन्न लोकों तक यात्रा की जा सकती थी।

पृथिव्यप्स्वन्तरिक्षेषु खगवद् वेगतः स्वयम्।
यः समर्थो भवेद् गन्तु स विमान इति—स्मृतः ॥ (नारायण)
देशाद् देशान्तर तद्वद्, द्वीपाद् द्वीपान्तरं तथा।
लोकाल्लोकान्तर चापि योऽम्बरे गन्तुमर्हति।
स विमान इति प्रोक्तः खेटशास्त्रविदां वरैः ॥ (विश्वभर)

महर्षि भारद्वाज ने स्वीकार किया है कि यह विमानविद्या वेदों से प्राप्त की गई है।

त्रयीहृदय-सन्दोह साररूप सुखप्रदम्।
अनायासाद् व्योमयान-स्वरूप-ज्ञान-साधनम्।
वैमानिक प्रकरण कथ्यतेऽस्मिन् यथाविधि ॥बृहद्विमानशास्त्र, मगलाचरणम्

अश्विनीकुमार के रथ का वर्णन करते कहा गया है कि यह रथ पृथ्वी और आकाश दोनों में चल सकता है। इसका वेग, मन की गति से भी तीव्र था।

रथो ह वाम्...परि द्यावापृथिवी याति सद्यः। ऋग्० ३-५८-८
यस्ते रथो मनसो जवीयान्। ऋग्० १०-११२-२

विमान में तीन पहिये होते थे। यह त्रिकोण आकार का होता था। इसमें तीन सीट होती थी।

त्रिबन्धुरेण त्रिवृता रथेन त्रिचक्रेण सुवृता यातमर्वाक् ॥ ऋग्० १-११८-२

विशाल समुद्री पोतों का भी उल्लेख मिलता है। इनमें सैंकड़ो पतवार होती थी।

दैवी नाव स्वरित्राम् अनागसम्,
अस्रवन्तीम् आ रुहेम स्वस्तये।
शतारित्रां शतस्फ्याम् अच्छिद्रां पारयिष्णुम् ॥ तैत्तिरीय संहिता १-५-११-६

समुद्र के अन्दर चलने वाले पोतों का भी उल्लेख मिलता है—

यास्ते पूषन् नावो अन्तः समुद्रे।
हिरण्ययी रन्तरिक्षे चरन्ति ॥ ऋग्० ६-५८-३

आयुर्वेद विषयक सामग्री का विपुल भंडार वेदों में प्राप्त होता है। इसका विस्तृत विवेचन मैंने (The Essence of the Vedas) में प्रस्तुत किया है। इसमें अग्नि चिकित्सा, जल चिकित्सा, मृत्-चिकित्सा, सूर्य-किरण चिकित्सा, यज्ञ चिकित्सा, विष चिकित्सा, मानस चिकित्सा आदि का वेदोक्त विधि से वर्णन किया है।

पर्यावरण एवं प्रदूषण समस्या आज विश्व की ज्वलन्त समस्या है। इसके लिए वेदों में कतिपय उपाय सुझाए गए हैं। वे हैं—

१—वृक्ष-वनस्पतियों की सुरक्षा, २—वृक्षादि को न काटना, ३—सौर ऊर्जा का उपयोग, ४—रेडियो-तरंगों के उपयोग से वायु मंडल शुद्धि, ५—यज्ञों का प्रचार ६—प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना।

वेदों में पर्यावरण की रक्षा के लिए वायु जल और औषधियों के संरक्षण का निर्देश दिया गया है।

त्रीणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे, पुरुरूप दर्शतं विश्वचक्षणम्।
आपो वाता ओषधयस् तान्येकस्मिन् भुवन आर्पितानि ॥ अथर्व० १८-१-१७
वृक्षों को न काटो। जल और पृथ्वी की रक्षा करने। पृथ्वी से उतना ही भाग निकालो जिसकी क्षतिपूर्ति की जा सके।
मा काकम्बीरम् उद्वृहो वनस्पतिम् अशस्तीर्वि हि नीनशः। ऋग्०६-४८-१७
मा आपो हिंसीः मा ओषधीर्हिंसीः। यजु० ६-२२
द्यां मा लेखीरन्तरिक्ष मा हिंसीः। यजु० ५-४३
पृथ्वीं दृह, पृथिवीं मा हिंसीः। मैत्रायणी सं० २-८-१४
यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि-तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि, मा ते हृदयमर्पिपम् ॥ अथर्व० १२-१-३५

यहां यह उल्लेख करना उपयुक्त होगा कि यजुर्वेद (अध्याय १६ रुद्राध्याय) वनस्पतियों को रुद्र या शिव का रूप माना गया है। रुद्र की वृक्षों और वनस्पतियों के स्वामी के रूप में स्तुति की गई है।

नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः, वनानां पतये नमः,
वृक्षाणां पतये नमः, औषधीनां पतये नमः,
कक्षाणां पतये नमः, अरण्यानां पतये नमः ॥ यजुर्वेद अ० १६ मन्त्र १७ से २०

वृक्ष-वनस्पति रुद्र के रूप में इस प्रकार है कि वे कार्बन डाइआक्साइड (Carbon dioxide) रूपी विष को पीते हैं और आक्सीजन (Oxygen) अर्थात् प्राण वायु रूपी अमृत को निकालते है। शिव के विषपान और अमृतदान का एक रूप यह भी है। अतएव वृक्षों को शिव का मूर्तरूप समझना चाहिए और वृक्ष-वनस्पतियों के संरक्षण को शिवोपासना का एक प्रकार मानना चाहिए।

वृक्ष-वनस्पतियों की संख्या अनन्त है, अतएव यजुर्वेद में भूतल पर रुद्रों की संख्या भी अनन्त कही गयी है।

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। यजु० १६-५४

ऋग्वेद और अथर्ववेद में "महान उल्ब" शब्द के द्वारा विशाल ओजोन-परत Ozone Layer का संकेत है। गर्भ के ऊपर झिल्ली या जेर को उल्ब कहते हैं। यह गर्भस्थ बालक का संरक्षण करती है, इसी प्रकार यह "महान् उल्ब" (ओजोन की परत) संसार की रक्षा करती है। अथर्ववेद में इसका रंग सुनहरी (हिरण्यरूप) माना गया है। ऋग्वेद में इसे व्यापक और मोटी परत कहा गया है कि इसके द्वारा जलीय वातावरण का नियंत्रण होता है।

महत् तदुल्ब स्थविर तदासीद्, येनाविष्ठितः प्रविवेशियापः। ऋग्०१०-५१-१
आपो वत्स जनयन्तीर्गर्भमग्रे समैरयन्, तस्योत जायमानस्योल्ब आसीद् हिरण्ययः।
अथर्व० ४-२-८

आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह ओजोन की परत भूतल से १५ से ३० किलोमीटर ऊंचाई पर है। यह सूर्य की अल्ट्रा वायलेट किरणों को आत्मसात् कर लेती है, जो कि वृक्ष वनस्पतियों के लिए अत्यन्त घातक हैं। ओजोन जल और वायु को शुद्ध करता है।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

साप्ताहिक ओ३म् आर्य सन्देश

धर्म और उसका संकुचित अर्थ



धर्म का अर्थ व्यापक है और विस्तीर्ण भी परन्तु हम अज्ञानवश उसका प्रयोग सीमित अर्थ में करते हैं और उसके विस्तार को भी बहुत ही सकुचित कर देते हैं। वैदिक अवधारणा को समझ पाना और धर्म की सच्ची पृष्ठ-भूमि को समझ लेना सामान्य व्यक्तियों के लिए कम और विद्वानों के लिए अधिक कठिन हो गया है। यदि हम चाहते हैं आज के विखण्डन और अविश्वास के अन्धकार को दूर करें तो हमारा कर्त्तव्य है कि धर्म को हम व्यापक और विशद अर्थ मे ही ग्रहण करें। धर्म का मुख्य अर्थ है—जो जीवन को धारण करे। सरल शब्दों मे कहे तो धर्म वह है जो हमारे जीवन को सम्भाल कर रखे। धर्मशास्त्र जीवन की एक पूजा पद्धति ही नहीं है बल्कि यह तो एक व्यवहार पद्धति है। धर्म को प्राप्त करने के लिए जीवन को जीना, जीवन को पूरे मन से स्वीकार करना और जीवन की सार्थकता को पहचानना अनिवार्य है। जीवन की सार्थकता मनुष्यता के अभाव में है। वेद सर्वत्र धर्म की संकुचित परिभाषाओं से ऊपर उठ कर सबको यही आदेश देता है कि तुम मनुष्य बनो। यह मनुष्य भाव ही जीवन की सार्थकता है। मनुष्य भाव अपेक्षा करता है कि सबके भाव को अपना भाव माने। इस भाव से कटना नृशंसता है। यह मनुष्यता की जघन्य हत्या हैं। जो इस भाव से मुक्त हो जाता है, वह ही सच्चा धार्मिक है और उसका भाव ही परम धर्म है।

धर्म का दूसरा पक्ष है सहज होना। धर्म प्रदर्शन नहीं है। धर्म आरोपित नहीं होता, धर्म वह है जो मनुष्य के अन्दर होता है। मनुष्य का विवेक उसके जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। अपने में डूबता है तो सोचता हूं कि मेरे भीतर के आदमी को क्या अच्छा लगता है। धर्म का यह सिद्धांत है कि वे दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसे व्यवहार की वह दूसरे से अपने लिए अपेक्षा करता है। सत्य असत्य के निर्णय में भी इसी विवेक का सहारा लिया जाता है। महाभारत में एक धर्मव्याध की कथा आती है। जिसमे बताया गया है कि शिकार करने वाला वह व्याध भी धार्मिक है। क्योंकि वह अपना काम पूरा करने बाद घर जाकर नहा धोकर वृद्ध माता पिता की सेवा करने के पश्चात घर के पशुओ तक की चिन्ता करता है। दूसरी ओर ब्राह्मण विश्राम करते-करते, अच्छा भोजन करते हुए, हर तरह की आवभगत होने के बावजूद ऊब जाता है, झल्ला उठता है और गुस्सा करता हैं। अब आप ही देखिए धर्म कौनसा हैं, धर्म सहज कर्म हैं। नदी बहती हैं, हवा बहती है, माम चलती ह, वह सब धर्म हैं। इसी तरह से जो आदमी सहज रूप मे जो काम करता हैं, वह धर्म हैं। जो कुछ दिखावे के लिए काम करता है, वह धर्म नही हैं।

धर्म का तीसरा पक्ष है गतिशीलता। वेदो में दो शब्द आए हैं, ऋत और सत्य इन दोनों का मिला-जुला रूप ही धर्म हैं। ऋत का अर्थ हैं गति और सत्य का अर्थ हैं सत्ता में बने रहना। गति ऐसी न हो जो स्वरूप की पहचान को नष्ट कर दे। बने रहने का अर्थ यह नहीं हैं कि टिक जाए, ठहर जाये और सड़ जाये। अतः जो न टिके, जो न सड़े, जो चलता रहे और जो अपने स्वरूप को भी सम्भाले रखे वह धर्म हैं। इन तीनों, पक्षो को यदि हम समझ लें तो हमे कोई दुविधा न रहेगी। और यही धर्म उस मानव मात्र का हैं। जो सम्पूर्ण जीवन को सम्भाल कर रखे वह धर्म हैं। जो सहज हो और आरोपित न हो वह धर्म हैं जो सत्य और ऋत का समन्वित रूप हो वह धर्म हैं।

आज के मनुष्य ने धर्म के इस वैदिक स्वरूप को, इस विशाल स्वरूप को बहुत ही संकीर्ण बना दिया हैं जबकि वैदिक धर्म की अवधारणा पूर्ण मनुष्यता के कल्याण में निहित हैं। मनु के द्वारा प्रतिपादित धर्म के दस लक्षण उसी वैदिक धर्म की व्याख्या हैं।

—डा० धर्मपाल

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(९ जून, ९१ के अंक से आगे)

दो वर्ष की निश्चित अवधि में शोध कार्य को पूरा करना इस लिए भी सम्भव हो सका, क्योंकि पाली नगर में मेरी सार्वजनिक गतिविधियां अधिक विस्तृत नही थीं और लेखन कार्य में मैं अपना अधिकाधिक समय लगा सकता था। उपाधि मिलने पर शोध ग्रन्थ के टंकण व्यय के लिये स्थानीय महाराजा उमेद मिल्स के मैनेजर श्री मोहनलाल गुप्त ने उम्मेद चेरिटेबल ट्रस्ट के २५० रुपये सहायतार्थ दिलवाये। उस समय २५० रुपये की आर्थिक सहायता भी बहुत महत्व की थी।

मेरे शोध का विषय पं० युधिष्ठर मीमांसक ने सुझाया था। शोध प्रबन्ध की पांडुलिपि को मैंने डा० सुधीरकुमार गुप्त, पं० भगवद्दत्त जी तथा उनके सुझावों को यथास्थान उसमें समाविष्ट भी किया था। रामलाल कपूर ट्रस्ट ने इसे छापने का विचार किया। मेरे लिए तो यह सचमुच गर्व एवं गौरव का विषय था कि उपाधि मिलते ही मेरा शोध प्रबन्ध प्रकाशित होने की स्थिति में आ गया।

उस वर्ष ट्रस्ट का अपना प्रेस बहालगढ़ (जिला सोनीपत) में स्थापित हुआ ही था और मेरा शोध ग्रन्थ ही इसमें मुद्रित होने वाला प्रथम ग्रन्थ था। श्री मीमांसक जी ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में आर्थिक सहायता देने के लिये वेदवाणी में एक अपील निकाली। इसके परिणाम स्वरूप बंगलोर के सेठश्री कृष्णलाल पोद्दार ने सेठ आनन्दी लाल पोद्दार ट्रस्ट की ओर से चार हजार रुपये की आर्थिक सहायता मुझे दिलवाई। मैंने स्वयं अपनी ओर से मुद्रण हेतु १००० रुपये दिये और इतने ही मूल्य की पुस्तकें मुझे छपने पर रामलाल कपूर ट्रस्ट ने प्रदान की। जोधपुर की तीनों आर्य समाजों ने १००-१०० रुपये इस शर्त पर दिए कि शोध ग्रंथ की १६-१६ प्रतियां उन्हें दी जायेंगी। सेठ पोद्दार का आग्रह था कि शोध ग्रन्थ का मूल्य लागत मात्र रखा जाय ताकि साधारण व्यक्ति भी उसे सुविधापूर्वक खरीद सके। फलतः 'आर्य समाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देने' का सांगोपांग विवेचन करने वाला ४०० पृष्ठों में छपा यह महत्वपूर्ण शोध ग्रंथ १९६८ में मात्र ६ रुपये में ही उपलब्ध कराया गया। अब भी इसका मूल्य २५ रुपये ही हैं जो अधिक नहीं है। अब तो यह समाप्त प्राय है।

मेरा आर्य समाज सरदारपुरा जोधपुर से पर्याप्त समय तक सम्पर्क रहा था। यहां के आर्य बन्धुओं ने निश्चय किया कि वे मेरे शोध कार्य के सम्पन्न होने पर सामाजिक एव साहित्यिक सेवाओ के उपलक्ष्य में मेरा सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे। आर्य समाज सरदारपुरा के वार्षिकोत्सव पर ही यह आयोजन किया गया और अभिनन्दन का कार्यक्रम आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्कालीन प्रधान डा० मथुरालाल शर्मा की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुझे एक अभिनन्दन पत्र भी भेंट किया गया।

'ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की सस्कृत साहित्य को देन' शीर्षक मेरा शोध ग्रन्थ १९६८ मे ही छप गया। इसका विमोचन भी आर्य समाज सरदार-पुरा जोधपुर के सभागार में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प० युधिष्ठिर जी मीमांसक स्वयं पधारे थे। ग्रंथ विमोचन सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान डा० फतहसिंह के कर कमलों से सम्पन्न हुआ, जो उस समय जोधपुर स्थित राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान के निर्देशक पद पर आसीन थे। इस समारोह में जोधपुर के सभी आर्य पुरुष उपस्थित थे। समारोह पूर्णतः सफल रहा।

प्रचार कार्य का प्रारम्भ—

पाली निवास के काल मे ही मैं प्रचारार्थ बाहर की आर्य समाजो द्वारा आमन्त्रित किया जाने लगा था। आर्य समाज अजमेर, के तत्कालीन मन्त्री डा० सूर्यदेव शर्मा जी ने मुझे अपनी समाज के वार्षिकोत्सव मे सम्मिलित होने के लिए तार भेज कर आमन्त्रित किया। इस उत्सव मे प० वाचस्पति शास्त्री तथा प० प्रकाशचन्द्र जी कवि रत्न आदि जाने माने उपदेशकों के साथ २-३ दिन व्यतीत करने का अवसर मिला। चण्डीगढ के युवक आर्य नेता डा० रामप्रकाश जी की प्रेरणा से आर्य समाज दयालपुरा करनाल के वार्षिकोत्सव मे मुझे १९६८ मे आमन्त्रित किया गया। यहां प० ओमप्रकाश जी जालंधर, स्वामी वेदानन्द जी (रोपड़), श्री उत्तम चन्द जी शरर आदि बन्धुओ से प्रथम बार मिलने का मौका मिला। क्रमशः

धर्म और राजनीति : पूरक या विरोधी ?

—डॉ० धर्मचंद्र विद्यालंकार—

आज कल एक प्रश्न प्राय: उठाया जाता है कि आखिर राजनीति और धर्म का सम्बन्ध क्या है ? क्या धर्म और राजनीति परस्पर अन्योन्याश्रित है अथवा प्रतिस्पर्धी ? यदि प्राचीन शास्त्रकारों की दृष्टि से इस विषय पर विचार किया जाये तो ये दोनो परस्पर पूरक ठहरते हैं। क्योंकि उनकी दृष्टि मे राजनीति स्वयं साध्या और धर्मनिरपेक्ष नही थी, उनकी दृष्टि मे वह साधन स्वरूपा और धर्म-सापेक्ष थी। मनु के अनुसार तो राजनीति ही धर्म है, जैसा कि उनका कथन भी है : "दण्ड: धर्मों विदुर्बुधा:" अर्थात् विद्वानों ने राजनीति (दण्ड) को ही धर्म माना है। यह एक प्रकार से राजनीति की लाक्षणिक परिभाषा है। जैसेकि आयुर्वेद मे घी के लिए कह दिया कि "घृतवै आयु: घृत वै प्राण:" आदि आदि। जिस प्रकार से घृत को आयु,–वीर्य: और प्राणो का पुष्टिकर्त्ता मान कर साक्षात् आयु वीर्य और प्राण ही कह दिया, उसी प्रकार से मंत्रादि शास्त्रकारो ने राजदण्ड (राजसत्ता) को धर्म का परिपालक होने के कारण उसे साक्षात धर्म ही कह दिया। सामान्य और व्यापक धर्म से उसे अलगाने के लिए उसका नाम रक्षा–राजधर्म, जिसे हम आजकल राजनीति या राष्ट्रनीति कह कर पुकारते हैं।

हमारी यह बात एक और दृष्टांत से भी परिपुष्ट होती है। जब महाभारत का युद्ध सम्पन्न हो चुका था तो युधिष्ठिर उस रक्तपात से बहुत ही ग्लानि गलित हो रहे थे। ऐसी विषादपूर्ण मन:स्थिति मे वे शर-शैया पर शायित भीष्म पितामह के समीप इस विनाशकारी युद्ध का कारण जानने के लिए गये। तब भीष्म पितामह ने उनकी मन:शान्ति के लिये एक ही बात कही थी—"निमज्जते दण्ड-नीति त्रयी निमज्जेत्"। अर्थात् जब राजनीति पतनशील हो जाती है तो सारे वेद शास्त्र, धर्म-कर्म, आचार-विचार, मान्यता-मर्यादा सभी ह्रासशील हो जाते हैं। ठीक यही बात आज के हमारे अपने समय पर सही रूप से चरितार्थ हो रही है। आज जब चारों ओर राजनीति में छल-छद्म का बोलबाला है, उठा-पटक है, आपा-धापी है; तब भीष्म पितामह की वह बात सोलह आने सही लग रही है। राजनीतिकों के आधारहीन होने से आज समाज के सभी सम्मान्य जीवन-मूल्य सदर्महीन हो गये हैं। आचार-विचार की मान्य मर्यादाएं खड़ी होकर अबलावत् अश्रु प्रवाह कर रही है। नैतिकता खडी-खड़ी सिसकिया ले रही हैं। उसके बावजूद भी तुर्रा यह कि यह 'राजनीति" है, जबकि इसमें केवल राज (सत्ता) ही राज है, नीति नहीं है, उसके स्थान पर अनीति है।

हमारे युग के महान राजर्षि महात्मा गांधी ने जब देखा कि धर्म-निरपेक्षता के नाम पर राजनीति अनीति की ओर बढ रही है तो उन्हे अन्तत: कहना पडा था कि "राजनीति बिना धर्म के वेश्या है।" हमारे प्राचीन शास्त्रकार इस बात को पहले ही कह चुके थे जब उन्होंने लिखा कि "वारांगना वत नीतिनृपाणाम्" अर्थात् धर्महीन राजाओ की नीति तो वेश्याओ की भांति होती है। आज के हमारे तथाकथिक धर्मनिरपेक्ष नीति रहित राजनीतिकों की नीति भी क्या वेश्याओ के आचरण से अच्छी है ? आखिर इस राजनीति को वेश्या की तरह पतित बनाया किसने—केवल और केवल धर्महीनता ने, तिस पर भी हम धर्म निरपेक्षता की दुहाई दिये जा रहे हैं। प्राचीन काल मे हमारे यहा राजा को धर्माधिकारी भी माना और कहा जाता था, क्योकि वह धर्म और न्याय का रक्षक था, लेकिन आज के हमारे ये तथाकथित धर्मनिरपेक्ष नेता सामाजिक न्याय और समता का नारा तो देते हैं, लेकिन क्या वे सब चीजे उनके अपने व्यक्तिगत जीवन मे भी हैं। तब वे न्याय और नीति की क्या खाक रक्षा करेगे ? आज समाजवाद के नाम पर हमने अपना व्यैक्तिक जीवन खोखला बना लिया है। न उसमें भक्ति है न आस्था:, न दया है न करुणा, तब ऐसा अधार्मिक राजनैतिक जनता के साथ कैसे प्रीति पूर्ण और न्याय सगत व्यवहार कर सकता है। पुराने जमाने में यदि किसी राजा के राज में अकाल या दुर्भिक्ष पड जाता था तो उस राजा को अधार्मिक या नास्तिक मान कर उसे ही प्रजा इस प्राकृतिक प्रकोप के लिए दोषी ठहराती थी। क्योकि उसके अनुसार राजा धर्म का साक्षात् विग्रह होता था। धर्म का व्यापक अर्थ राजनीति और सामाजिक जीवन में न्याय, नैतिकता, दया, करुणा, सत्य और कर्त्तव्यपालन है। लेकिन आज की राजनीति धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इन मानवीय मूल्यों को सर्वथा नकार रही है। तब यह राजनीति की गगा शुद्ध कैसे रह सकती है ? जिस की गंगोत्री मे ही अनीति बैठी हुई है।

आज कल एक बड़ा ही दुष्प्रचार राजनीति के बारे में चल पड़ा है कि—"अरे राजनीति तो बड़ी गन्दी चीज है, यह तो बदमाशो का घिनौना खेल, है, इसमें सज्जन व्यक्तियों को नहीं आना चाहिए।" लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि क्या राजनीति स्वय मे कोई पवित्र या अपवित्र वस्तु है क्या ? वह स्वयं साध्य तो है नहीं, साधन स्वरूपा है। साधन कभी पवित्र या अपवित्र नहीं होता। पवित्र या अपवित्र तो उसका प्रयोगकर्ता होता है। जहर से एक दुष्ट व्यक्ति किसी के प्राण भी ले सकता है, जबकि परोपकारी वैद्य उसे औषध के रूप में प्रयोग करके किसी रोगी की प्राण-रक्षा भी कर सकता है। तब अपवित्र विष हुआ या व्यक्ति ? यदि राजनीति इतनी गन्दी चीज है तो मैं उन आरोपकर्ताओं से यह पूछना चाहूंगा कि तब आप राम और कृष्ण को क्यों पूज्य मानते हैं ? आखिर वे भी थे तो राजनीतिक ही थे। राजाओं के घरों में जन्म लिया और राज भी किया तथा राजनीति भी खेली। फिर आप आज के राजनेताओं की तरह उनके लिए गालियां क्यों नही निकालते ? आप कहेगे कि वे तो महान और पवित्र व्यक्ति थे। मेरा प्रश्न है कि फिर वे राजनीति के पंक में रहकर कमल की तरह शुभ्र और उज्ज्वल रह कैसे गये ? तो आपका एक ही उत्तर होगा कि उनकी राजनीति धर्म के अनुकूल थी। यही बात आज लागू होनी चाहिए। व्यवस्था बुरी नहीं होती उसको चलाने वाले व्यक्ति बुरे हो सकते हैं : राजनीति बुरी नहीं, उसमें रहने वाले लोग गदे हो सकते हैं। यदि आज भी अच्छे सदाचारी, विद्वान् और धार्मिक पुरुष राजनीति में प्रवेश करने लगें तो कोई कारण नहीं कि हम इसे हुगली से फिर गगा बना सकें। यदि सज्जन लोग यही सोच कर घरों में बैठे रहें कि भाई राजनीति हमारे लायक नहीं है, या फिर हम ही राजनीति के काबिल नहीं है तो क्या होगा एक दिन सारी राज-व्यवस्था और तन्त्र पर भी गुण्डे बदमाशों का अधिकार हो जायेगा। फिर आप घर मे बैठे माला जपते रहियेगा और जब कोई काम पडेगा तो उन दुर्जन राजनीतिकों के सम्मुख जाकर गिडगिडाइएगा—क्या यह सब ठीक रहेगा। लेकिन यह आज के सामाजिक जीवन का वस्तु-सत्य है।

अर्थशास्त्र में एक कहावत प्रचलित है कि "खोटी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है।" मुहम्मद तुगलक सुलतान के साथ यही तो हुआ था। उसने सोने के सिक्के जारी किये तो बेईमान लोगों ने क्या किया कि सोने के सिक्के तो घरों मे रख लिए और उनके स्थान पर पीतल के सिक्के बना कर बाजार में चला दिए। एक स्थिति यह पैदा हुई कि सोने के सिक्के चलन से बाहर हो गये। ठीक यही हालत आज राजनीति मे हो रही है। अधिकाश सज्जन तो राजनीति मे आते नहीं हैं और यदि कोई इक्का-दुक्का, भूला-भटका आ भी जाता है तो वह अप्रासगिक हो जाता है।

मेरी यह मान्यता है कि आज भी समाज में सज्जन अधिक हैं और दुर्जन कम हैं। लेकिन सज्जन सगठित और सक्रिय नहीं हैं, जबकि दुर्जन सगठित भी हैं और सक्रिय भी हैं, इसलिए शक्तिशाली भी वही हैं। यदि सज्जन धर्मात्मा-परोपकारी-सदाचारी राजनिति मे नहीं आयेगे तो दुर्जन-दुराचारी तो आयेंगे ही—उनको आप रोक नही सकते। उनको तो एक प्रकार से वाक्-ओवर मिल रहा है। दुनिया का नियम यह है कि जब एक वस्तु अपने स्थान से हटती है तो दूसरी चीज उसका स्थान स्वय ले लेती है, जब सज्जन राजनीति से हटेंगे तो दुर्जन तो डटेंगे। इसलिए दुर्जनों को राजनीति में स्थापित होने का अवसर देने वाले तो ये तथाकथिक दुर्बल मना सज्जन ही हैं। आज जो सत्य के लिए कोई संघर्ष नहीं कर सकता वही मजबूरी में सज्जन बना बैठा है। वही शक्तिहीन। खाली सिद्धान्तों की जुगाली करती है, महान मूल्यों की महत्ता का बखान करता है।

वेद में कहा गया है कि "अद्य जीवानि माश्व" दुष्ट आज है कल नहीं रहेगा। अर्थात अधर्म और अनीति चिरस्थाई नहीं होते, लेकिन सज्जनों की

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर, जिला जालन्धर पंजाब में नये छात्रों का प्रवेश १५ जून से ३० जून १९९१ तक होगा। आधुनिक विषयों के साथ-साथ संस्कृत तथा धर्म शिक्षा की समुचित व्यवस्था। निशुल्क शिक्षा हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी शिक्षक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध तथा आवास आदि की सर्वथा निशुल्क सुविधा। छात्रों की प्रवेश योग्यता कम से कम कक्षा ६ उत्तीर्ण हो। प्रवेश हेतु शीघ्र मिलें अथवा पत्राचार करें —आचार्य

श्री विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर—१४४८०१ (जिला जालन्धर)

मानवता की हत्या

विगत दिनो पूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी की हत्या वास्तव में मानवता की हत्या है। लगता है दयानन्द, गांधी व गुरुओं के इस पावन देश को विश्वासघातियो के विष ने मृतप्रायः बना दिया है। मानवता मानो कोसों दूर चली गई हो, अहिंसा व प्यार शब्द का लोप होता जा रहा है तथा विश्वास दिन प्रतिदिन उठता जा रहा है। समस्त विश्व को हिला देने वाली इस दर्दनाक मौत ने हमे एक बार फिर सोचने पर मजबूर कर दिया है कि देश का भविष्य कैसा होगा। लगता है वह दिन दूर नहीं जब यह देश मात्र विश्वासघातियो का देश बन जायेगा।

—मा० रामचन्द्र आर्य
आर्य समाज नलवा हिसार

आवश्यकता है

—आर्य समाज बिडला लाईन्स, कमला नगर मे एक 'वेद प्रचारक' की उपयुक्त मानदेय पर—सच्चरित्रता, कर्मठता व मृदुल सेवाभावी ही सम्पर्क करें।

नोट—विविध कक्षाए (संस्कृत, संगीत, चित्रकला, योगासन आदि। संचालित करना व उपयुक्त कमीशन पर वैदिक साहित्य, आयुर्वेदिक औषधीया विक्रय करना अतिरिक्त योग्यता)

—एक कुशल आयुर्वेदिक वैद्य इन्चार्ज (प्रातः ८-३० से १-०० दैनिक सेवा) हेतु मानदेय ८०० रुपये मासिक पर चाहिए।

—एक सच्चारित्र, सक्षम सेवक बिक्री कमीशन व ३०० रुपये मासिक पर चाहिये। प्रधान —जयप्रकाश आर्य, आर्य समाज बिडला लाइन दिल्ली-८

वेदों की सार्वभौमिकता

(पृष्ठ २ का शेष)

आधुनिक समय में वैदिक मैथमेटिक्स के पुनरुद्धारक-पुरी के भूतपूर्व शंकराचार्य स्व० श्री स्वामीभारती कृष्णतीर्थ जी थे। उन्होने वैदिक मैथमैटिक्स, १६ सूत्रों पर १६ ग्रंथ लिखे थे, जिनमे संप्रति केवल एक ग्रन्थ उपलब्ध है। इसमें उन्हों ने अथर्वपरिशिष्ट के १६ सूत्र और १३ उपसूत्र दिए हैं। उनकी मान्यता है कि ये सूत्र अथर्ववेद के परिशिष्ट ग्रन्थ "अथर्वपरिशिष्ट" से लिए गये हैं और इनसे गणित के गूढ़ एव कठिन प्रश्नों को अत्यन्त सरल ढंग से कम्प्यूटर की तरह कुछ ही क्षणो मे हल किया जा सकता है। उनका कथन है कि—

"We were agreeably astonished and intensely gratified to find that exceedingly tough mathematical problems can be easily and readily solved with the help of these ultra-easy Vedic Sutras (Mathematical Aphorisms) contained in the Parisista of Atharaveda."

Vedic Mathematics Introduction, P. 15

अभी तक उपलब्ध किसी भी अथर्वपरिशिष्ट में ये सूत्र उपलब्ध नही है। ग्रन्थ के सम्पादक डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है कि सम्भव है यह अथर्व परिशिष्ट ग्रन्थ स्वयं श्री भारती कृष्ण तीर्थ की बौद्धिक देन हो।

इन १६ सूत्रो से कतिपय सूत्रो का आधार अथर्ववेद मे प्राप्य हैं। कुछ मत्रो मे इन सूत्रो के आधारभूत शब्दो या सिद्धांत भी उपलब्ध हैं। जैसे—ये सूत्र हैं—

एकाधिकेन पूर्वेण (सूत्र-१) अर्थात्—पूर्ववर्त्ती संख्या में एक जोड दें।

यस्मिन् एकं युज्यते यस्मिन एकम् ।अथर्व० ८-९-३। अर्थात् एक जोड़ दो।

ऊर्ध्वतिर्यग्भ्याम् (सूत्र ३) अर्थात् ऊपर और तिरछे गुणा आदि करो।

अह्मे दयमूर्ध्वं तिर्यक् च। अथर्व० १०-२-२५

इस मन्त्र में ऊपर और तिरछे कार्य करने का संकेत है। इन सूत्रो के द्वारा गुणा, भाग, वर्ग, वर्गमूल समीकरण आदि के सभी प्रश्न अत्यन्त सरल विधि से हल कर दिए जाते हैं।

श्री भारती कृष्ण तीर्थ अथर्ववेद के उपवेद स्थापत्यवेद के अन्तर्गत गणित, इंजीनियरिंग आदि विद्याओं को लेते हैं। इस समय विदेशो मे भी वैदिक मैथेमेटिक्स विषय को मान्यता प्राप्त हो रही हैं और इस विषय पर पर्याप्त शोधकार्य हो रहा है। इस प्रकार अन्य बहुत सी विद्याओ का मूल वेदो मे प्राप्त हो सकता है।

मैंने यूरोप और अमरीका आदि की यात्राओं में यह अनुभव किया कि आज भी वहा वेदो के प्रति गहरी आस्था है और वे वेदो का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आतुर हैं। उनकी आकाक्षा की पूर्ति करना हमारा कर्त्तव्य है।

अत वैदिक विज्ञान की सुरक्षा के लिए तथा उसके अन्वेषण के लिए सभी भारतीय वैदिक विद्वानो को प्रयत्नशील होना चाहिए। इस दिशा में किया गया प्रत्येक शुभ कार्य विश्व कल्याण और विश्वबन्धुत्व के लिए सहायक सिद्ध होगा।

वेदो का प्रचार प्रसार ही विश्व मे स्थाई शान्ति की स्थापना कर सकता है। वेदो के प्रचार प्रसार के द्वारा ही हम देश और विदेशो मे 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का सन्देश पहुचा सकते हैं। ●

(पृष्ठ ४ का शेष)

निष्क्रियता और शक्ति हीनता इनको चिरजीवी बनाती है। वेद का स्पष्ट आदेश है कि "दुष्ट व्यक्ति हमारा स्वामी न बने, वह हम पर अपना शासन न चलाये।" यह कब सम्भव है जब दुनिया के सारे सज्जन सगठित और सक्रिय तथा संघर्षशील हो जावें। इसलिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने क्रान्तिकारी आह्वान किया था कि "संसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ" क्योंकि उन्हें ज्ञात था कि सज्जनों की एकता ही उनको शक्ति प्रदान कर सकती है। यदि सज्जन लोग जाति, मत पथ में बिखरे रहेंगे तो दुष्ट ही राज करेंगे। भगवान वेद का भी स्पष्ट आदेश यह है कि—"अहंभूमि अददामार्याय" अर्थात् मैंने तो यह वसुंधरा श्रेष्ठ लोगों के भोग करने के लिए प्रदान की है। श्रेष्ठों को ही क्यों दी है? इसका भी कारण यह बताया है कि "आर्या व्रता: विसृजन्तो अधि क्षमी" अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष ही दुनिया में अच्छे नीति-नियमों और परम्पराओं का विस्तार करते हैं। जबकि दुष्ट कुनीति-भ्रष्टाचार अनाचार का प्रचार करते हैं। अतएव गदी राजनीति नही है अपितु उसको चलाने वाले लोग गंदे हो सकते हैं। आज की राजनीति के विकृत वातावरण को देख कर उससे दूर भागने की जरूरत नहीं है। यदि नाक में जुखाम हो जाये तो नाक को काट कर ही नहो फेंका जाता अपितु उसका इलाज कराया जाता है। इसी प्रकार से आज राजनीति की इस कल मलतारिणी शुभ्र धवल गंगा को पुनः पवित्र करने की आवश्यकता है।

धर्म और राजनीति का विवाद तो इन सत्ता लोलुप विकृत सेकुलरवादी लोगो ने उठाया है। उन्हें मालूम है कि इस का अल्पसंख्यक मजहब के नाम पर वोट देता है इसलिए उसका तुष्टिकरण किया जाता है। उन्हे पता है कि हिन्दू धर्म के स्थान पर जाति और दल के नाम पर वोट देता है तो हिन्दू धर्म की बात को मानना जरूरी नही है। जिस दिन हिन्दू इस देश मे धर्म के नाम पर सगठित होकर मतदान करेगा उस दिन कोई भी राजनीतिक दल या नेता उसकी बात को अनसुनी नही कर सकेगा। लेकिन हिन्दू के धर्म को तो सांमप्रदायिक बताया जाता है, जबकि औरों का धर्म (मत) लोकतान्त्रिक है। इतना उदार और सहनशील होते हुए भी इस देश मे हिन्दू होना या कहलाना गुनाह हो गया है, जबकि अल्पसंख्यक चाहे जितना जहरीला अनुदार, अराष्ट्रीय है, वह सह्य हैं, क्योकि उसका वोट मजहब के नाम पर मिलता है। इसी दृष्टिकोण के चलते आज राणा प्रताप और शिवाजी भी एक सम्प्रदाय के नायक बना दिए गये हैं, राष्ट्र के नायक नही रहे। यदि सच्चे धर्म और नैतिकता के लिए राजनीति मे स्थान नहीं होगा तो जीवन के उच्च और उदात्त मूल्यो का उसमे अभाव होना स्वाभाविक है। यदि राजनीति के लिए बिना धर्म लगड़ा है तो धर्म के बिना राजनीति भी अंधी है, विवेकहीन है। अतएव इन दोनों का मणिकचन-योग समाज के स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

—सनातन धर्म महाविद्यालय, पलवल

मानवता की जघन्य हत्या

भूतपूर्व प्रधान मन्त्री एव कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष श्री राजीव गांधी की निर्मम हत्या से आर्य कन्या गुरुकुल तथा तथा प्रान्तीय आर्य महिला सभा की बहनो को अत्यन्त दुख और हार्दिक पीडा हुई। राष्ट्र इस समय सकट की घडियो से गुजर रहा है, चारो ओर आतंकवाद फैला हुआ है, ऐसी विषम परिस्थितियो मे महान देश भक्त, कुशल प्रशासक, वीर, साहसी, नवयुवक योद्धा को खोना भारत का दुर्भाग्य है, जिसकी क्षतिपूर्ति करना असम्भव है। मान्य राजीव जी का जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित था देश प्रेम, राष्ट्रोत्थान एव राजनीतिक निपुणता पर राष्ट्र पिता महात्मा गांधी, शान्ति के देवता जवाहरलाल नेहरू, और श्रीमती इन्दिरा गांधी की छाप थी। हम दिवंगत आत्मा को श्रद्धान्जलि देते हुए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे और पारिवारिक जनो को यह दारुण दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे।

—श्रीमती कृष्णा चड्ढा, मन्त्रिणी प्रान्तीय आर्य महिला सभा दिल्ली

पुण्य स्मृति पर दान

—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ मन्त्री श्री मूलचन्द गुप्त जी की पूज्या माता जी तथा विख्यात आर्य चिन्तक, लेखक कार्यकर्त्ता स्व० लाला चतुरसेन गुप्त की धर्मपत्नी श्रीमती क्षमा देवी के अकस्मात देहावसान पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी एव कर्मचारी गहरा दुःख एवं शोक व्यक्त करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की सद्गति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं, तथा उनके परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते है। श्रीमती क्षमा देवी जी का गत ८ मई को देहावसान हो गया था। उनकी पुण्य स्मृति में उनके परिवार द्वारा निम्न सस्थाओं को दान दिया गया—

आर्य समाज, शामली	५०१ रुपए
श्री मन्दिर हनुमान टीला, शामली	५०१ रुपए
आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली	५०१ रुपए
आर्य अनाथालय, दिल्ली	५०१ रुपए
श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल, खेड़ाखुर्द, दिल्ली	५०१ रुपये
आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली	५०१ रुपये
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	५०१ रुपए

सुप्रसिद्ध समाजसेवी...

(पृष्ठ १ का शेष)

महानुभावो ने अनुमोदन किया। स्वामी जी ने कहा कि कोई अन्य नाम प्रस्तावित करा चाहे, तो करे। कोई भी नाम नही आया और महाशय धर्मपाल जी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया।

श्री लाजपत राय निभावन ने प्रस्ताव रखा कि पदाधिकारियो तथा कार्यकारिणी के गठन का अधिकार नव निर्वाचित प्रधान श्री महाशय धर्मपाल जी को दे दिया जाए। श्री रामनाथ सहगल और श्री सूर्यदेव ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया। यह प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। श्री महाशय धर्मपाल जी ने उपस्थित आर्यजनो का धन्यवाद किया और महामन्त्री पद पर डा० शिवकुमार शास्त्री को मनोनित किया। श्री कृष्ण कुमार सेठी ने कहा कि अन्तरग सभा का गठन दोनों अधिकारी मिल कर कर ले। सभी ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती के निर्देश पर वार्षिक अधिवेशन का समापन करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आर्य समाज के सगठन और क्रिया कलापो को रेखांकित करते हुए दोनों अधिकारियों के दीर्घायुष्य की कामना की तथा आशा व्यक्त की कि आर्य केन्द्रीय सभा के माध्यम से आर्य समाज का कार्य और आगे बढ़ेगा।

शान्ति पाठ और आये हुए आर्य जनो के धन्यवाद के साथ सभा की कार्यवाह सम्पन्न हुई।

चुनाव समाचार

वेद प्रचार मण्डल इस्टरी पश्चिमी दिल्ली-३४ का वार्षिक चुनाव माननीय विद्या प्रकाश जी वर्मा की अध्यक्षता मे दिनाक ५-५-१९९१ को सम्पन्न हुआ, जिसमें वर्ष १९९१-९२ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री प्रभुदयाल जी भाटिया
मन्त्री—लाजपत राय आहूजा
कोषाध्यक्ष—श्री नरेश जी आर्य

आर्य समाज हनुमान रोड का अधिवेशन सम्पन्न

श्री सरदारी लाल वर्मा पुन सर्वसम्मति से समाज के प्रधान निर्वाचित।

नई दिल्ली की प्रमुख आर्य समाज हनुमान रोड, नई दिल्ली का ७०वां वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनाक २६-५-९१ को श्री सरदारी लाल वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सर्व प्रथम देश के पूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी की निरकुश हत्या एव वर्ष मे दिवगत अन्य भाई बहनो के उपलक्ष में शोक प्रस्ताव दो मिनट मौन रह कर पारित करने के पश्चात् वर्ष की गति विधियो की रिपोर्ट मन्त्री द्वारा सुनाई गई। रिपोर्ट, वर्ष की आय-व्यय की आडिट रिपोर्ट, हिसाब इत्यादि पारित करने के पश्चात अगले वर्ष के लिए अधिकारियों का निर्वाचन श्री राममूर्ति कैला जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। जिसमे श्री सरदारी लाल वर्मा को सर्व सम्मति से पुन प्रधान निर्वाचित कर उन्हें अन्य अधिकारी, अन्तरग सभा एवं सभा के प्रतिनिधियों के चयन का पूर्ण अधिकार दिया गया। प्रीति भोज के पश्चात् सभा समाप्त हुई। प्रधान जी द्वारा गठित अन्तरग सभा की सूची संलग्न है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियो की सूची की घोषणा पृथक् की जाएगी।

प्रधान—श्री सरदारीलाल वर्मा
मन्त्री—श्री त्रिलोकी नारायण मिश्र
कोषाध्यक्ष—श्री ओमप्रकाश आहूजा

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना की साधारण सभा के दिनांक १६-५-९१ रविवार को सर्वसम्मति से निम्न अधिकारी चुने गए।

प्रधान—श्री रणबीर भाटिया
महामन्त्री—श्री महेन्द्र प्रताप आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री श्रवण कुमार आर्य

आर्य समाज ब्रह्मपुरी का चुनाव सम्पन्न

प्रधान—श्री ओमप्रकाश मदान
मन्त्री—श्री कृष्ण आर्य
कोषाध्यक्ष—श्री कमल कुमार गुप्ता

पुस्तक समीक्षा

वेद परिचायिका

इस पुस्तक मे सुश्री विद्वान लेखक डा० कृष्ण बल्लभ पालीवाल ने वेद का सक्षिप्त परिचय प्रश्नोत्तर रूप मे दिया है। वेद, वेदांगों, धर्म शास्त्रो, उपनिषदों, पुराण तथा स्मृतियो को सक्षिप्त परिचय देने के बाद वेदो में वर्णित विषयों का प्रतिपादन किया गया है। वेदो मे वर्णित ज्ञान आज के विज्ञान व तकनीक के ग्रन्थो से कही अधिक उच्च श्रेणी का है। उन्होंने श्री अरविन्द को उद्धृत करते हुए लिखा है—'जो विज्ञान मनुष्य को पता नहीं, वह भी वेदो है।' वह सब ज्ञान सूत्र रूप में है। इसकी लोक मगल साधन कारी व्याख्या अपेक्षित है। 'वेद ईश्वरीय ज्ञान है, यह विषय अति गूढ़ है, पर विद्वान लेखक ने इस विषय का प्रतिपादन सरल एव सुबोध शैली में किया है। उन्होंने यह भी बताया है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान क्यों है? पुस्तिका के अन्त में स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य की विशेषताए भी दी गयी है। यह छोटी सी पुस्तक प्रत्येक आर्य के लिए पठनीय है।

[वेद परिचायिका—डा० कृष्ण बल्लभ पालीवाल—गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली-६ पृष्ठ—४०, मूल्य ५-००]

—मूलचन्द गुप्त

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

श्री दरबारी लाल जी अध्यक्ष निर्वाचित

नई दिल्ली, २६ मई। आज आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष बाबू दरबारी लाल ने सभा के वार्षिक अधिवेशन मे देशभर से समागत प्रतिनिधियो का स्वागत एव अभिनन्दन करते हुए कहा कि उनके सतत सहयोग से सभा का कार्य निरन्तर प्रगति कर रहा है और इस प्रकार समस्त विश्व मे आर्य-समाजो की स्थापना के साथ-२ स्वामी दयानन्द के मन्तव्यो का भी प्रचार-प्रसार हो रहा है। संसार चक्र परिवर्तन शील है, समय की गति के साथ न चलने वाला समाज एव जाति कभी उन्नति नही कर सकती, किन्तु आर्य समाज सदा ही जागरूक समाज के रूप मे कार्य करता रहा है। यही कारण है कि अपने आरम्भ काल से आरम्भ कर आज तक वह निरन्तर प्रगति कर रहा है।

सभा में समुपस्थित देश भर के प्रतिनिधियो ने अपनी अपनी समस्याये प्रस्तुत की और परस्पर के विचार विनिमय से उनका समाधान भी प्रस्तुत होता गया। कुछ सदस्यों का कहना था कि हमे युवा वर्ग को आर्य समाज की ओर आकृष्ट करने के लिये विशेष प्रयत्न करना चाहिये। आर्य समाज को संस्था के रूप में भारत की ससद मे अपने प्रतिनिधियो को भेजना चाहिये।

अधिवेशन मे लगभग ३०० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सभा मन्त्री ने सभा की गत् वर्ष की रिपोर्ट सुनाई, आय व्यय का विवरण पेश किया और आगामी वर्ष के लिये बजट पास हुआ।

प्रतिनिधि सभा ने सर्वसम्मति से प्रो० वेद व्यास जी को सभा संरक्षक तथा श्री दरबारी लाल जी को अध्यक्ष मनोनीत किया तथा उन्हे कार्यकारिणी के गठन का अधिकार दिया।

शोक समाचार

आर्य समाज शान्ताक्रुज बम्बई की यह महति शोक सभा भारत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री एव कांग्रेस अध्यक्ष स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी की जघन्य हत्या पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। इस अवसर पर आर्य समाज शान्ताक्रुज ने अपने साप्ताहिक सत्सग के समस्त कार्यक्रम स्थगित कर स्वर्गीय श्री राजीव गाधी जी को श्रद्धाजलि दी। आर्य समाज शान्ताक्रुज के उपप्रधान कैप्टिन देवरत्न आर्य, महामन्त्री श्री नरेन्द्र कुमार पटेल ने भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए कहा "श्री राजीव गाधी भारत देश के ही नही अपितु विश्व के माननीय नेताओ मे से एक थे। देश को उनसे बड़ी आशाए थी। उनके नेतृत्व मे भारत की जो चहुमुखी उन्नति हुई वह सदा स्मरणीय रहेगी। उनके देहावसान के समाचार से सारा देश स्तब्ध रह गया, ऐसा लगा जैसे सब कुछ रुक गया है। उनका अभाव सदा अनुभव किया जाएगा।

शोक सभा मे इस हत्या की कड़े शब्दों मे निन्दा की गई और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की ग कि उनकी आत्मा को शान्ति एव सद्गति प्रदान करें। सभा में प्रसिद्ध गायिका श्रीमती शान्ता मलिक द्वारा भक्ति संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

(नरेन्द्रकुमार पटेल)
महामन्त्री

—आज दिनांक २६-५-९१ रविवार सायं ५ बजे वेद प्रचार मण्डल यमुना-पार क्षेत्र की एक आपात कालीन बैठक डा० शोरन लाल शर्मा के निवास स्थान श्याम गली, मौजपुर दिल्ली-५३ पर सम्पन्न हुई, जिसमे भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी की नृशंस हत्या पर दुःख व्यक्त किया गया। दिवंगत आत्मा की शान्ति, परिवार जनों को दुःख सहनशक्ति हेतु परमपिता परमात्मा से मौन प्रार्थना की गई और भविष्य मे भी देश व परिवारजनों की सुख समृद्धि हेतु कामना की गई।

—विश्व बन्धु आर्य, "वेद प्रचारक"
महामन्त्री

R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 13-14-6-1991 Licence to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ बिना भुगतान किये भेजने का लाइसेंस नं० यू १३९

संस्कृत—शिविर

स्थान—आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ, तिथि—२०-६-९१ से ३०-६-९१ तक, समय—प्रातः ९ से ११ सायं; ४ से ६ बजे तक।

प्रशिक्षक—आचार्य सूर्यनारायण शास्त्री, मुख्यातिथि—श्री डा० रवीन्द्र नागर।

संस्कृतप्रेमी बन्धुओ!

राष्ट्र, धर्म और मानवता के सबल रक्षक आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के तत्वावधान में २० जून से ३० जून तक संस्कृत शिविर का आयोजन किया जा रहा है। प्रातःकाल ९ से ११ तक संस्कृत में वार्तालाप करना सिखाया जाएगा और सायंकाल ४ से ६ बजे तक संस्कृत अध्यापन की विधियां बताई जाएंगी। आप सबसे सानुरोध प्रार्थना है कि इस शिविर में अपने बच्चों को भेजकर ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग करायें।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ की प्रमुख गतिविधियाँ

● दैनिक सत्संग ● वैदिक संस्कारों, यज्ञ एवं प्रचार की व्यवस्था ● समय-समय पर विभिन्न शिविरों का आयोजन ● निराश्रितों एवं विकलांग असहायों की सहायता ● पुस्तकालय, वाचनालय, व्यायामशाला एवं अतिथिगृह।

● शिविरार्थी मुख्याधिष्ठाता से सम्पर्क करें।

— आश्रम में रहने वालों की भोजन व्यवस्था आश्रम की ओर से होगी, कृपया ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाएं।

— दानी महानुभाव मुक्तहस्त से दान देकर आश्रम की गतिविधियों में सहयोग देने की कृपा करें।

स्वामी धर्ममुनि सरस्वती
मुख्याधिष्ठाता

डा० शिवकुमार शास्त्री
संयोजक (शिविर)

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना को एक पूरे समय के लिए सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। निवास सुविधा के साथ वेतन योग्यता अनुसार। संगीतज्ञ या हारमोनियम जानने वाले को प्राथमिकता दी जायगी। सम्पर्क करें या स्वयं मिलें।

—महेन्द्र प्रताप आर्य
महामन्त्री

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक १३ | रविवार, २३ जून, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये, | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

निर्दोष रेल यात्रियों का नरसंहार उग्रवादियों की अमानवीयता की चरम सीमा है

— स्वामी आनन्दबोध सरस्वती —

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती ने पंजाब में उग्रवादियों द्वारा रेलयात्रियों का नृशंस हत्या करने की भर्त्सना की। उन्होंने पंजाब में चुनाव न किये जाने की अपनी मांग को पुनः दुहराया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार अकर्मण्य हो गई है। यह प्रान्त तुरन्त सेना के हवाले कर देना चाहिये। पाकिस्तान की गतिविधियों को रोकने के लिये यह नितान्त आवश्यक है कि सीमावर्ती इलाकों में एक सुरक्षा पट्टी का निर्माण किया जाए। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बतलाया कि आतंकवादियों का कहर केवल हिन्दुओं पर टूटा।

इस अमानवीय कृत्य की राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरमण उपराष्ट्रपति डा० शंकरदयाल शर्मा, प्रधान मन्त्री श्री चन्द्रशेखर तथा अन्य राजनेताओं ने भर्त्सना की है। सभी धार्मिक एवं सामाजिक नेताओं ने भी इस कायरतापूर्ण कार्यवाही की निन्दा की।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल और महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि आज सारा देश आतंकवाद की आग में सुलग रहा है। आज पुनः वैदिक मान्यताओं की प्रतिष्ठा की आवश्यकता है। वेद प्रतिपादित मातृभूमि की अवधारवाही देश में शान्ति और सद्भाव का वातावरण बना सकती है। चुनावों की विभीषिका तो बहुत ही भयावह सिद्ध हुई।

दिल्ली के विद्यार्थी एक लाख लोगों को साक्षर बनायेंगे

दिल्ली प्रशासन के शिक्षा निर्देशालय द्वारा संघीय क्षेत्र दिल्ली में वर्ष १९९१ के दौरान एक लाख लोगों को साक्षर बनाया जायेगा। इस विशेष अभियान में दिल्ली के विविभिन्न स्कूलों के ५० हजार छात्र-छात्राएं, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक तथा स्काऊट्स एवं गाईड भाग ले रहे हैं। इस अभियान का पहला चरण १५ मई, १९९१ से आरम्भ हो चुका है।

यह जानकारी आयुक्त एवं सचिव (शिक्षा) श्री नरेन्द्र प्रसाद ने आज संजय कालोनी के यमुना पुस्ता पर आयोजित एस० एम० खालसा स्कूल दरियागंज के राष्ट्रीय सेवा योजना के समापन समारोह के अवसर पर दी।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री प्रसाद ने विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा नव साक्षरों का आह्वान किया कि वे इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये लगन एवं समर्पित होकर कार्य करें। उन्होंने जनता से भी सहयोग की अपील की ताकि संघीय क्षेत्र दिल्ली को पूर्ण साक्षर बनाया जा सके। अपने अध्यक्षीय भाषण में शिक्षा निर्देशक श्री बी० पी० सूरी ने बताया कि इस अभियान के अन्तर्गत १०-१० दिन के १८ शिविर लगाये जायेंगे जो दिल्ली की विभिन्न १३ पुनर्वास बस्तियों, झुग्गी-झोपड़ी कालोनियों, स्लम तथा अन्य बस्तियों, जहां निम्न वर्ग के लोग रहते हैं, को दिसम्बर, १९९१ तक पूर्ण साक्षर बनाया जायेगा।

जोधपुर शिविर स्थगित

जोधपुर नगर का तापमान अत्याधिक बढ़ जाने के कारण जोधपुर से श्री रमेश भाटिया का पत्र आया है कि इतनी भीषण गर्मी में आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर जो आगामी २१ जून से ३० जून १९९१ तक लगाया जाना था जोधपुर में नहीं लगाया जा सकता है। अतः शिविर स्थगित किया जाता है। अगली तिथियों का इन्तजार करें।

बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक
सार्वदेशिक आर्य वीर दल

सरकारी दफ्तरों के सार्वजनिक स्थानों में धूम्रपान पर पाबन्दी

दिल्ली प्रशासन ने आज जारी किये गये अपने एक आदेश में दिल्ली प्रशासन के सभी कार्यालयों और संगठनों के सभी सार्वजनिक स्थानों पर सिगरेट आदि पीने पर पाबन्दी लगा दी है। इन स्थानों में कार्यालयों के बरामदे, प्रतीक्षा कक्ष, स्वागत कक्ष और सम्मेलन कक्ष आदि शामिल हैं। कार्यालयों से यह भी कहा गया है कि वे ऐसे सभी स्थानों पर धूम्रपान निषेध के संकेत या पट्टियां भी लगायें।

इन आदेशों के अमल पर लगातार नजर रखने के लिये कार्यालयों से विशेष अधिकारी नियुक्त करने को भी कहा गया है। इस सम्बन्ध में हर महीने मुख्य सचिव के साथ होने वाली बैठक में भी समीक्षा की जायेगी।

आज का दिन विश्व भर में तम्बाकू निषेध दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष इस दिवस के मनाने का उद्देश्य वाक्य है—"सार्वजनिक स्थान और परिवहन—तम्बाकू मुक्त हो।" दिल्ली प्रशासन के सूचना एवं प्रचार निर्देशालय ने धूम्रपान की बुराइयों के बारे में लोगों को जानकारी देने के लिये आज से एक पोस्टर अभियान भी शुरू किया है।

'श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार'

आर्य साहित्य के लेखकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मस्कत निवासी श्री मेघजीभाई नैनसी की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कनक सिंह मेघजीभाई के द्वारा प्राप्त आर्थिक सहयोग से आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई ने प्रतिवर्ष 'आर्य साहित्य पुरस्कार' देने का निश्चय किया है। अनेक ग्रन्थों के सिद्धहस्त लेखक, ओजस्वी वक्ता एवं वैदिक धर्म के प्रति समर्पित प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर को आर्य समाज सान्ताक्रूज ने यह प्रथम पुरस्कार देने का निश्चय किया है। श्री मेघजी नैनसी की पुण्य स्मृति में २३ जून से ३० जून तक पं० राजगुरु शर्मा के ब्रह्मत्व में आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई ५४ में यज्ञ का आयोजन किया गया है।

पुरस्कार समारोह ३० जून १९९१ रविवार को यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद श्रद्धेय स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा।

कैप्टन देवरत्न आर्य
संयोजक—आर्य साहित्य पुरस्कार समिति

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

धर्मसूत्र और कल्पसूत्रों के आदेश

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. आर्यसमाज गोरखपुर)

धर्मसूत्रकार गौतम कर्मवादी हैं और उन्होने निष्क्रमण संस्कार तथा अन्त्येष्टि सस्कार को सस्कार नही माना है। श्री रामगोपाल शास्त्री की 'संस्कार विधि मडनम्' पुस्तक के आधार पर बताया गया हैं कि संस्कार विधि में जो-जो सस्कार दिए गये हैं उनके प्रमाण देने के बाद 'विधि' शीर्षक से उस शीर्षक की विधि दी गई है। पर गृहाश्रम के लिए कोई विधि नही दी गई है। और अन्त्येष्टि की विधि भी दी गई है अत गृहाश्रम कर्म और अन्त्येष्टि सस्कार है। अत सत्यव्रत सिद्धान्तालकार ने भी सस्कार विधि की वैज्ञानिक व्याख्या में यही बात स्वीकार की है। परन्तु धर्म सूत्रकार गौतम के अनुसार १४ सस्कार है। उन्होंने गौतम धर्मसूत्र (८.२०.२५) मे लिखा है "सस्कारो से युक्त व्यक्ति भी यदि सद्गुण रहित है वे न तो ब्राह्मण कहे जायेंगे और न ब्रह्म को पा सकेंगे।" आगे ,वे कहते हैं "हा जो नित्य और नैमित्तिक यज्ञो को करते हैं और काम्य कर्मों के लिए कोई चेष्टा नही करते अथवा चेष्टा करने मे असमर्थ हैं। वे भी सत्य, सदाचार आदि सद्गुणो के द्वारा ब्रह्मलोक को जा सकेंगे और ब्रह्मलोक को पा सकेंगे।"

इसी प्रकार वशिष्ट धर्म सूत्र (६-३) मे भी कहा गया है "जैसे चिडियो के बच्चे पख हो जाने पर घोसले को छोड कर चले जाते है, वैसे ही ही वेद और वेदाग भी सद्गुण शून्य मनुष्य का त्याग कर देते हैं।" इस प्रकार सत्य और सदाचार को कल्प सूत्रो ने बहुत महत्व दिया है। आश्वलायन श्रौत सूत्र मे १२ अध्याय हैं और सब मे यज्ञ के विवरण भरे पड़े हैं। यह आश्वलयन शोनक ऋषि के शिष्य थे। ऐतरेय आरण्यक के अन्तिम दो अध्याय इन ही गुरु शिष्यो के थे। इस श्रौत सूत्र मे भी यज्ञो का विवरण है। आश्वलायन गृहस्थ सूत्र मे भी यज्ञ और सस्कारो की चर्चा है। पहले अध्याय मे विवाह प्रकरण, चैत्य यज्ञ गर्भाधान, पुसवन, सीमतोन्नयन, उपनयन आदि सस्कारो और दूसरे मे श्रावणी आग्रहायणी, गृह प्रवेश का विवरण है। इसी प्रकार शाखायन श्रौत सूत्र और शाखायन गृह सूत्र भी है। ऋग्वेद का धर्मसूत्र वशिष्ठ धर्मसूत्र है।

अन्य भी परशुराम कल्पसूत्र, मानव धर्म सूत्र आदि भी है। बोधायन श्रौत सूत्र है। आपस्तम्ब के भी सभी कला सूत्र मिलते है। हिरण्यकेशी गृह सूत्र और श्रौत सूत्र भी है। जैमिनीय गृह सूत्र, पारस्कर गृह सूत्र द्राह्यायण श्रौत सूत्र, गौतम धर्म सूत्र यह सामवेद का है और अथर्ववेद का वैतान धर्म सूत्र भी है।

यह भी ध्यान रखने की बात हैं कि मनु स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति, वसिष्ठ स्मृति, पाराशर स्मृति आदि अनेको स्मृतियो की उत्पत्ति और रचना इन्ही कल्प सूत्रो की देन है। हिन्दू या वैदिक धर्म के सस्कारो, राजधर्मों व्यवहार दर्शनो, दाम्पत्य धर्मो, प्रायश्चितों और दायभाग आदि के आधार कल्प सूत्र है। इनका स्वाध्याय करना चाहिए।

अब कल्पसूत्रो के आदेश भी देखिये। इससे पूर्व यह स्पष्ट किया जा चुका है कि साक्षात वेदो मे कथित यज्ञादि विषयक विधि विधानो का बतलाने वाले कल्प सूत्रो को श्रौत सूत्र, गृहस्थ के कार्यो को सम्पन्न करने के लिए चिरकाल से स्थापित या समय-समय पर स्थापित अग्नि के द्वारा करणीय यज्ञादि विषयक सूत्रो को गृहसूत्र और विभिन्न पारमार्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक कर्त्तव्यो को बताने वाले सूत्रो को धर्म सूत्र बताया गया है।

ऋग्वेद की आश्वलायन शाखा तो नही मिलती। किन्तु इनके श्रौत और गृहसूत्रो मे यज्ञ करने का आदेश दिया गया है और इन्हे कैसे और किस विधि से करना चाहिए यह भी विस्तृत रूप से बताया गया है। आश्वालायन श्रौत सूत्र मे ऐतरिय ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थो मे जो यज्ञ विस्तृत रूप मे है आश्वलायन मे सक्षेप से उनकी विधि है।

आश्वलासन श्रौत सूत्र मे कहा गया गया है कि श्रौताग्नि ग्रहण करने वाले का ही यज्ञ का अधिकारी माना है। श्रौताग्नि ग्रहण करने का मतलब है नित्य अग्नि होत्री।

अमावस्या या पूर्णमासी को किए जाने वाले यज्ञो के अधिकृत व्यक्तियो को वेदी के उत्तर पूर्वाभिमुख बैठ कर और यज्ञोपवित धारण करके यज्ञ करने चाहिये।

यज्ञोपवीत धारण कर यज्ञ मे बैठने वालो को यज्ञोपवीती, प्राचीनावती और निविति कहा गया है यज्ञोपवीती वह है जो बाए कन्धे से दक्षिण पार्श्व में यज्ञ सूत्र धारण करता है और जो दाए मे बाए पार्श्व में पहनता है वह प्राचीनावती और गले में माला की तरह पहनने वाले को निवीती माना गया है।

हमारे यहा विशेष यज्ञो में कुछ पुरोहित यज्ञभूमि की प्रदक्षिणा करवाते हैं और इस प्रदक्षिणा पथ को तीर्थ माना गया है और तीर्थ की प्रदक्षिणा करना होता का प्रथम और आवश्यक अग माना गया है। पर यह प्रायः नहीं होता। सनातनी पण्डित करवाते है।

इस श्रौत सूत्र के दसवे सूत्र 'यज्ञोपवीत शौचे च' यज्ञ करने कराने वाले समस्त व्यक्तियों का यज्ञोपवीत होना आवश्यक है, उनके बिना अग शुद्धि नही मानी गई है।

यज्ञ वेदी की ओर जिसे विहार भूमि कहा गया है पीठ नही दिखानी चाहिए।

दान के विषय मे विधान करते हुए दान करना चाहिए यह लिखा है पर इसका मतलब यह नही कि दान यजमान की इच्छा पर है, वह करना विधान है—कानून है।

एक बात और है कि अनेक श्रौत ग्रन्थो मे यज्ञ का मन्त्र का केवल प्रथम चरण लिखा है वहा पूरा मन्त्र पढना चाहिए।

जहा आधी ऋचा लिखी गई है वहा ऋचा के साथ समस्त सूक्त पढ़ना चाहिए।

एक बात और लिखी है कि जप (पाठ), अनुमत्रण (अर्थ स्मरण के साथ पाठ) आप्यायन (जल स्पर्श के साथ अर्थ स्मरण करते हुए पाठ, उपस्थान (भाव से अर्थ स्मरण के साथ पाठ) जहा कही विधान किया गया है वहा मन्त्रो के पृथक उच्चारण अर्थात् निशुल्क जीभ चला कर पाठ करना चाहिए।

मन्त्रों के उच्चारण के साथ अर्थ स्मरण भी करना चाहिए। आश्वलायन गृह सूत्र मे प्रदक्षिणा के बाद कहा बैठना चाहिये और कैसे बैठना चाहिए, हाथ कहा रखना चाहिए, दोनो हाथ की अगुलियो को कैसे रखना चाहिए आदि बातें बता कर वेदी के उत्तर श्रेणी हो होना का कर्म बताया गया है।

आश्वलायन गृह सूत्र के तृतीय अध्याय की प्रथम याचिका मे तीन सूत्रो में देव यज्ञ (सध्या) ब्रह्म यज्ञ (हवन) पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ जिसे मनुष्य-यज्ञ नाम दिया है और पितृ यज्ञ-"जीवित माता पिता का सत्कार सेवा आवश्यक बताया है। तानेतान् यज्ञानहरह कुर्वीत" इन पाचो यज्ञो का प्रतिदिन करने का आदेश हैं।

इसमें नित्य अग्निहोत्री को अन्त्येष्टि क्रिया का वर्णन पढने योग्य है। पर स्थानाभाव से अभी उसे छोड रहे हैं।

सामवेद की कास्तुभ शाखा के विभिन्न सूत्र में उपर्युक्त वर्णन तो है ही, विवाह विधि का पूर्ण रूप मे वर्णन है। सातवे अध्याय मे जात-कर्म सस्कार आठवें मे निष्क्रमण-सस्कार, इसमे नामकरण विधि भी है। उसमे लिखा है जन्म तिथि से दसवे या सौवे या एक वर्ष बाद ग्यारवें दिन नामकरण की विधि है। नवम मे चूडाकरण और द्वादश मे उपनयन सस्कार का वर्णन है। उपनयन का मतलब है कुमार को वेदाध्ययन के लिए गुरु के पास ले जाना। यह भी बताया गया है कि उपनयन सस्कार कब कब होना चाहिए। यह भी लिखा है कि उपनयन के बाद तीन दिनो तक नमक नही खाना चाहिए। सम्भवत कारण नही आया है।

सामवेद की अनुपलब्ध गौतम सहिता के बिना भी गौतम धर्म सूत्र मिलता है। इसमे आश्रम धर्म, सस्कारो और राजधर्म का उल्लेख है। आश्रम मे चार ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ या सन्यास जिसे भिक्षु नाम भी दिया गया है, वर्णन है। ११वें सूत्र मे सन्यासी का वर्णन है और उसके कर्त्तव्यो का वर्णन है। २६वें सूत्र बैखानस (वानप्रस्थी) के कर्त्तव्य लिखे हैं। वहा वानप्रस्थियो को पचयज्ञ और योग्य अतिथि की सेवा भी करनी चाहिए।

इसके आठवे अध्याय मे ब्राह्मण, राजा का स्वरूप, लक्षण आदि कह कर सस्कारो का वर्णन है। प्रजा का स्थान, धर्मानुष्ठान, और व्यभिचार आदि को रोकना है।

गौतम धर्म सूत्र १० १ २ मे ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के अध्ययन, यजन और दान कर्म बताये हैं। परन्तु धर्म से ब्राह्मणो के लिए अध्यापन, याजन और

(शेष पृष्ठ ५ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आतंकवाद का दुस्साहस

सम्पादकीय

भारतवर्ष के कई सीमान्त प्रदेशो मे आतङ्कवाद का विषधर फण उठाये खड़ा है। यह समझ नही आता कि रेलयात्रियो की नृशस हत्या करके उन्हे क्या मिल जाता है। उग्रवाद की यह परिधि प्रारम्भ मे सम्बन्धित नेताओ एव अधिकारियों तक सीमित थी। अब इसका दायरा बढता जा रहा है। आतकवादियो का दुस्साहस बढता ही जा रहा है। उनके आदेश प्रकाशित प्रचारित किए जाते हैं। पहनावे का वे निर्देश देते हैं। क्या बोलें, और कैसे बोले अथवा किस भाषा में बोलें, बोलते समय स्वर का अनुमान कैसा हो, इसका निर्देश भी वही देते हैं। हमारी सरकार क्या कर रही है? हमारे सुरक्षा बल क्या कर रहे है? देश के प्रधान मन्त्री की हत्या हो सकती है। सब से बडी पार्टी के नेता की हत्या हो सकती है। फौजी जनरलों की हत्या होती है। पुलिस अधिकारियों की हत्या होती है। सूचना प्रसारण के अधिकारियो पर दिन दहाडे गोलिया बरसाई जाती हैं। विवाह शादियो के अवसरो पर लोगों को भून दिया जाता है। अखबारों के कार्यालयों में पार्सलों से बम भेजे जाते हैं। पिछले दिनो तो मानव बम का भी प्रयोग किया गया।

इन आतकवादियों से बातचीत का सिलसिला भी अनेक बार शुरू किया गया है, परन्तु क्या मिला। क्या ऐसी शर्त नहीं हो सकती कि वे पहले हिंसा त्याग दें, उसके बाद बात चीत हो सकेगी। काश्मीर, पजाब, आसाम, नागालैण्ड, बोडो, झारखड, तमिलनाडु आन्ध्र प्रदेश कौन सी जगह बची है, जहा पर यह आतकवाद नहीं है। यह सामान्य नियम है कि हताश व्यक्ति अन्तिम हथियार का भी प्रयोग करता है। नैतिक पराजय हमेशा बौखलाहट पैदा करती है। इस सब पर काबू पाने के लिये एक समझदार मजबूत इरादो वाली सरकार की जरूरत है।

इस समय देश में राष्ट्रीय निर्वाचनो के परिणाम आ रहे है, पर लगता है कि कोई एक पार्टी सरकार नही बना पायेगी। इसलिये कार्यक्रम भी खिचडी बनेंगे। किसी भी एक के नाराज होने से सरकार टूटेगी। मजबूत कदम कोई भी सरकार नही उठा पाएगी। कदम मजबूत नही होंगे, तो उच्छृखलता बढ़ेगी।

आज देश में राष्ट्रीय भावना को जागृत करने की आवश्यकता है। इसी से एकता और सद्भाव कायम हो सकेंगे।

—डा० धर्मपाल

जब तक जियें शान से

जब तक जीये शान से, आन-बान-सम्मान से।
मरना हो तो मरें, मगर नही कभी अपमान से॥
हर दिन कायर मरते देखे, शूर एक दिन मरता है।
पर अपने सुचिरतम जीवन से, भू का आचल भरता है॥

—०—

नित्य अपमान के घूट पिया करते है।
सुख-जिन्दगी न कायर जिया करते हैं॥
इसलिए निरन्तर जिन्दादिली चाहिए।
जिन्दादिल जिन्दगी के मजे लिया करते हैं॥

—भूदेव साहित्याचार्य

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(९ जून, ९१ के अक से आगे)

अपने प्रान्त से बाहर मैं पहली बार आचारार्थ करनाल ही आया था। आर्य समाज पीपाड सिटी के वार्षिकोत्सव पर जाने और यजुर्वेद परायण यज्ञ मे ऋत्विक रूपेण भाग लेने का भी अवसर मिला। यज्ञ के ब्रह्मा प० भगवान स्वरूप जी न्यायभूषण थे। यही प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओमप्रकाश वर्मा से भी मुलाकात हुई जो आगे चल कर घनिष्टा में बदल गई। आर्य समाज शिवगज की रजत जयन्ती के अवसर पर आयोजित यजुर्वेद परायण यज्ञ के ब्रह्मा के पद पर अधिष्ठित होकर मैंने यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर प्रान्तीय सभा वार्षिक अधिवेशन भी हुआ। प० भगवान स्वरूप जी प्रधान और श्री श्रीकरण जी शारदा मन्त्री निर्वाचित हुए। मैं सार्वदेशिक सभा के लिए प्रान्त की ओर से प्रतिनिधि निर्वाचित हुआ। पीपाड सीटी के निकट के देहाती क्षेत्र मे एक अपढ कबीरपथी साधु से शास्त्रार्थ करने का अवसर मिला। पीपाड़ सिटी के निकट के देहाती क्षेत्र मे एक अपढ कबीरपथी साधु नास्तिकता का प्रचार कर रहा था। आर्य समाज पीपाड ने उसे शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। जब शास्त्रार्थ होने की सम्भावना प्राय सुनिश्चत सी हो गई तो उक्त आर्यसमाज के अधिकारियों ने मुझे इस कार्य हेतु आहूत किया। मैं स्वयं को आर्य समाज के शास्त्रार्थ कला मे स्वय को पारगत ही समझता था। तथापि आर्य जनों के आग्रह को मान कर मै पीपाड के निकटवर्ती उक्त ग्राम मैं पहुंचा। वहा के उत्साही आर्य गण एक बस किराये पर लेकर वैदिक धर्म का जय जयकार करते हुए शास्त्रार्थ स्थल पर पहुचे। प्रारम्भ मे हमने सम्मिलित होकर यज्ञ किया तदुपरान्त मारवाड़ का स्वादु भोजन 'दाल-बाटी चूरमा' ग्रहण कर अपनी उदरदरी को तृप्त किया। साझ होते-होते सैकड़ो की सख्या मे देहाती स्त्री पुरुष सभा स्थल पर शास्त्रार्थ सुनने के लिए एकत्र हो गए। प्रारम्भ मे तो यह सुना गया कि कबीरपथी साधु शास्त्रार्थ हेतु उपस्थित होने मे सकोच कर रहा है, किन्तु अपने ही अनुयायियो के द्वारा बार बार प्रेरित किये जाने पर अन्ततः वह आकर अपने आसन पर बैठ ही गया। दोनो पक्षो के प्रवक्ताओ के लिए श्वेत चादनी युक्त गद्दे लगा कर एक मच पर बैठने की व्यवस्था पहले ही कर दी गई थी। जब सभी लोग दत्तावधान होकर शास्त्रार्थ श्रवण के लिए उत्सुक दिखाई पड़े तो मैंने अपने प्रारम्भिक वक्तव्य मे कबीर की निर्गुणोपासना तथा उनके द्वारा प्रतिपादित परमात्मा के निराकार, निरञ्जन स्वरूप का स्वल्प उल्लेख किया। साथ ही धर्म और समाज मे प्रचलित नाना आडम्बरो तथा पाखण्ड पूर्ण आचरणो की कबीर द्वारा की गई आलोचनाओ की ओर प्रतिपक्षी का ध्यान आकर्षित किया। इसके पश्चात मैंने ऋषि दयानन्द के द्वारा उपदिष्ट परमात्मा के रूप का भी उल्लेख किया और कबीर तथा दयानन्द के सिद्धान्तो मे दिखाई पडने वाली कतिपय समानता मे भी बताई। इस प्रकार के समन्वयात्मक दृष्टिकोण को हमारे उत्साही आर्य बन्धुओ ने अधिक पसन्द नही किया। वे तो चाहते थे कि मै कबीर की विचार धारा पर तीखे प्रहार कर प्रतिपक्षी साधु को सर्वथा अप्रतिभा (उनके दृष्टिकोण से परास्त) कर दू। मेरे इस मृदु कथन का उस साधु पर अनुकूल असर पड़ा और वह मुझे धन्यवाद देकर अपने स्थान पर चला गया। पाली में मैं सात वर्ष (१९६२-६९) तक रहा। यहाँ मेरा आर्य सामाजिक जीवन प्राय: शान्त, निर्विघ्न तथा घटना शून्य सा रहा। साप्ताहिक सत्सग मे मैं नियमित रूप से उपस्थित होता, कथा, प्रवचन आदि करता। उपस्थिति थोड़ी ही होती थी। पर्व आदि भी साधारण रूप से मना लिए जाते। वार्षिकोत्सव करने जितनी शक्ति या सामर्थ्य यहाँ के सदस्यो मे था ही नही। ऐसी बात नहीं कि इस प्रकार के आयोजन सर्वथा कठिन ही थे। यदि दो चार व्यक्ति ही कृतसंकल्प होकर धन एकत्रित करते तो उत्सव के व्यय जितना द्रव्य प्राप्त कर लेना कुछ कठिन नही था। मैं अपने पठन और लेखन मे लगा रहता और अन्य सदस्यो ने कभी कोई उत्साह प्रदर्शित ही नही किया। यदा कदा कोई उपदेशक अनाहूत ही आ जाता तो उसके भोजन, निवास तथा प्रचार की व्यवस्था तो हम येन केन प्रकारेण कर ही देते। प० विश्वबन्धु शास्त्री, प० ज्ञानेन्द्रदेव सूफी के अतिरिक्त राजस्थान सभा के उपदेशक प० रामसहाय जी तथा प० भगवती प्रसाद जी अवश्य यदा कदा आते ही थे।

क्रमश:

घर बैठे अनेक बीमारियों का आयुर्वेदिक नुस्खों द्वारा इलाज

—नेतराम शर्मा—

प्रधान भारतीय योग संस्थान पूर्वी जिला, दिल्ली। दूरभाष : निवास—२२४६४६६ विद्यालय—२२१३४८५, ए-७/६, कृष्णनगर, दिल्ली-५१

१— श्वेत कुष्ठ पर अनुभूत योग :—

(१) त्रिफला, त्रिकुटा, चित्रक, नागरमोथा, वायविडिंग और वच समान भाग लेकर कूट पीस छान कर रख लो। एक तोला गरम पानी के साथ शाम को खाने से कुष्ठ ठीक हो जाता है। समय तीन माह।

(२) नीम के पत्तो को जल में उबाल कर स्नान करना।

(३) गाय के दूध मे तीन ग्राम नीम के पत्तो को पीस कर दो-तीन मास तक सेवन करना।

(४) रात मे नीम की छाया के नीचे सोना।

२—सफेद दाग :—

(१) बासी मट्ठा थोडा बेसन और थोड़ी हल्दी मिलाकर रोज सफेद दागो मे लगाकर सोना चाहिए और मुह अंधेरे नीम के गरम पानी से धो देना चाहिए।

(२) प्रतिदिन मट्ठा पानी चाहिए।

(३) बावची और मूली के बीज दस दस ग्राम पीस कर एक छोटा चम्मच हल्दी मिलाकर मट्ठा मे घोलकर उबटन बना कर दागो पर लेप करना चाहिए। समय दो माह।

३—छपाकी :—

(१) बीस ग्राम गुड, बीस ग्राम अजवायन कूटकर दो मात्रा बना लें। पहली मात्रा दिन मे ताजा मट्ठा के साथ, दूसरी मात्रा सांय ताजा पानी के साथ निगल जाये।

(२) पाच ग्राम गेरू पीसकर २५ ग्राम शहद के साथ सेवन करें।

४—हर्निया (अण्ड वृद्धि पर) :—

(१) कटेली की ताजा जड की छाल १५ ग्राम, काली मिर्च ७ नग पानी के साथ पीस छानकर रोज पीने से बीमारी दूर।

(२) गोमूत्र मे ६ ग्राम गूगल ६ ग्राम अरंडीतेल मिलाकर चालीस दिन पीने से रोग दूर।

(३) तमाखू के पत्ते को गर्म कर गूगल लगाकर बांधना।

५—बाझपन दूर करने के उपाय :—

यदि माहवारी खुलकर आये और पुरुष के वीर्य मे दोष न हो, इसके बावजूद गर्भाधान न हो तो इनमे से कोई नुस्खा उपयोग करे।

(१) माहवारी हो जाने के पश्चात हाथी दात का बुरादा बारीक पीस कर डेढ़ ग्राम सुबह व डेढ ग्राम शाम दूध के साथ तीन चार रोज सेवन करे।

(२) नागोरी असगध बारीक पीसकर, छानकर माहवारी के बाद ३ ग्राम चूर्ण २५० ग्राम दूध के साथ तीन-चार रोज।

(३) शिवलिंगी का चूर्ण भी कपड़ छानकर दूध के साथ ३ ग्राम सात दिन।

६—आतो में सूजन :—

ताजा दही में जीरा, काली मिर्च और सेंधा नमक रोज पीने सूजन खतम।

७—सतान निग्रह :—

(१) मासिक धर्म के पश्चात २ तोले करेला का रस रोज लेने से गर्भ नही रहता।

(२) पुराना गुड २ तोले पानी में औटा कर १५ दिन पीने से कभी गर्भ धारण नही होगा।

(३) पीपल, वायविडिंग, सुहागा समान भाग लेकर ऋतु के समय ६ माशे जल के साथ ५-६ रोज सेवन से गर्भ कभी धारण नहीं होगा।

८—पुत्र पैदा होने का अजमाया हुआ नुसखा :—

मयूर पुच्छ चन्द्रका को गुड मे गोली के रूप मे लपेट कर जब दो मास का गर्भ हो जाये, तीसरे मास के पहले हफ्ते में प्रातः काले बछडे वाली गाय के दूध में निगली हुई तीन गोलियां तीन दिन एक-एक शर्तिया लड़का पैदा करती हैं। एक मयूर पक्ष चन्द्रका एक गोली मे होना आवश्यक है। (यह योग पं० परमानन्द बामनौली वालों का परीक्षित है।

९—छाजन पर अनुभूत योग (धनवन्तरि, जनवरी १९५८ से प्राप्त—

(१) महुआ पानी में सड़ाकर पीसकर, नीम के गर्म पानी से धोकर साफ कर मोटा लेप करे ऊपर असली सिन्दूर बुरक कर पट्टी बाध, २४ घण्टे बाद दूसरी पट्टी, फिर तीसरी। इस रोग के कीटाणु सूक्ष्म सूत की तार की तरह पट्टी के साथ निकलेंगे। रोग जड से नष्ट हो जायेगा।

(२) हल्दी का गाढ़ा लेप दिन मे तीन बार २० दिन तक यदि छाजन से पानी रिसता हो।

(३) आक (मदार) के दूध मे पीपल की छाल पीस कर मक्खन में मिलाकर लगाने से भी छाजन ठीक हो जाते हैं।

(४) ढाक के बीज बारीक पीस कर खट्टी दही मे मिलाकर कुछ दिन लेप करे।

१०—दाद :—

(१) आक (मदार) के दूध को नीम पानी से धोकर साफ करके लगाना।

११—खुजली :—

(१) नीबू का रस, चमेली के तेल मे बराबर बराबर मिलाकर लगाने से सूखी खुजली खत्म।

(२) आवले का चूर्ण चमेली के तेल मे बराबर बराबर मिलाकर लगाना।

(३) १० ग्राम नारियल तेल में कपूर ३ ग्राम मिलाकर शरीर मे मालिस करना। साबन प्रयोग बन्द। बासी दही, मट्ठा शरीर मे लगाकर नहाने से फायदा हो जाता है।

१२—चर्म रोग पर अनुभूत योग —

चौल मोगरा तेल के सेवन करने से सभी प्रकार से चर्म रोग खाज, खुजली चकता, गर्मी, बद, कंठमाला, नासूर तथा दाद भी ठीक हो जाते हैं। इसका तेल खाया भी जाता है लगाया भी जाता हैं।

१३—मुख मे छालो पर अचूक दवा :—

(१) केला गाय के दही के साथ कुछ दिन सेवन करे।

(२) तरबूजा के छिलके को जलाकर राख को जीभ पर मलें।

१४—मुहासे नाशक अनुभूत योग :—

(१) जायफल और काली मिर्च दोनो को दूध में घिसकर मुहासे पर लगाना।

(२) सरसों के तेल में थोड़ा सा नमक डाल, नीबू के रस में घोटकर मुहासे पर मले। एक दो घण्टे बाद पानी से साफ करें।

(३) गेंहू का चोकर एक चम्मच फांक कर दूध पीये और सो जाये। एक सप्ताह में मुहासे गायब।

१५—औरतों के चेहरे पर बाल :—

सरसों-बेसन का उबटन। पहले सरसो पीसकर बेसन मिला पानी मे नरम कर लेप मलने से एक ही हफ्ते में चेहरे पर महिलाओं के फालतु रोयें साफ।

१६—गले में जलन और सूजन :—

पालक के थोड़े से पत्तें थोड़े से पानी में उबालिये और उसकी लुगदी की पुल्टस बना गले मे बांधिये और दवा का करिश्मा देखिये।

१७—कनफेड़े :—मेथी और जो सिरके में पीस कर गले पर लेप करना।

एक अनुपम भेंट

भजनो के क्षेत्र मे नई क्रान्ति नई पुरानी आधुनिकतम धुनो से युक्त, स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित अलभ्य पुस्तके अब पुन· अपनी पुरानी समस्त सामग्री के साथ-साथ और भी नये-नये गीतों से युक्त होकर आकर्षक साज-सज्जा मे उपलब्ध हैं।।

- सगीत महोदधि (सचित्र टाईटिल)
- ठुकराया वीर (ऐतिहासिक मार्मिक गाथा)
- प्रभुगीत वाटिका (प्रभु भक्ति गीत)

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-१

छात्र-वृत्तियां

(नव सत्र: जुलाई १९९१ से अप्रैल १९९२)

श्री वजीरचन्द धमार्थ ट्रस्ट की ओर से नये सत्र के लिए गुरुकुलो, स्कूलो, महाविद्यालयो, व्यवसायिक प्रशिक्षणालयों और अनुसन्धान सस्थानों के सुयोग्य और सुपात्र छात्र/छात्राओ और स्पर्धात्मक परीक्षाओं के परीक्षार्थियो और परीक्षार्थिणियो को छात्रवृत्तियाँ देने का कार्यक्रम शुरू हो गया है।

इन छात्रवृत्तियो से लाभ उठाने के इच्छुको को चाहिए कि ट्रस्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र मगवा कर शीघ्र ही ट्रस्ट के आदरी सचिव के नाम पर निम्न-लिखित पते पर भेजे।

गत सत्र मे इस कार्यक्रम पर रुपये २६००० व्यय किए गए है। इस सत्र के लिए यह राशि बढा कर रुपये ३५००० कर दी गई है।

सत्यदेव, आदरी सचिव
श्री वजीरचन्द धर्मार्थ ट्रस्ट सी-३२ अमर कालोनी
लाजपत नगर नई दिल्ली-११००२४

वेद प्रचार शिविर

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) डा० भोला झाल मेरठ की ओर से गगा दशहरा के पर्व पर दिनाक २१ जून १९९१ को एक विशाल वेद प्रचार शिविर निरीक्षण भवन भोला झाल मेरठ पर लगाया जाएगा। जिसमे यज्ञ प्रात. ९ बजे, से भजन प्रवचन आदि होगे।

जनता जनार्दन से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक सख्या मे पधार कर धर्मलाभ उठावें। प० इन्द्रराज, मत्री

युवा कुरीतिया दूर करें

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान में ८ से १६ जून तक गुरुकुल कण्वाश्रम मे "युवक निर्माण व योग साधना शिविर" मे भाग लेने वाले २०० शिविरार्थियो का "विदाई समारोह" आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। आर्य नेता डा० आर्य ने शुभकामनायें देते हुए कहा—युवक देश व समाज कल्याण के रचनात्मक कार्यक्रम बनाये। समाज मे फैली कुरीतिया दूर कर महर्षि दयानन्द का सन्देश जन-जन तक पहुचे।

दिल्ली फरीदबाद, उत्तर प्रदेश से शिवरार्थी भाग ले रहे हैं।

चन्द्रमोहन आर्य, पत्रकार

(पृष्ठ २ का शेष)

प्रतिग्रह कार्य माने हैं। गौतम धर्म सूत्र मे राजा के धर्म बताये गए है।

इस प्रकार अत्यन्त सक्षेप से, रूप रेखा रूप से वेद के अग और सस्कारादि के मार्गदर्शक कल्प सूत्रों और उनके आदेशो का उल्लेख किया है। न कल्पसूत्रो का वैदिक धर्मियों और हिन्दुओं के भी अपरिचित होने से ध्यानाकर्षण के लिए रूप-रेखा रूप मे प्रस्तुत किया है। यदि हम कल्पशास्त्र के अनुपम आदेशो के अनुसार धर्माचरण करें, कर्त्तव्य का पालन करे, सद्गुण सम्पन्न बनें तो विश्व मे शान्ति स्थापना और शुद्ध वैदिक राष्ट्र का निर्माण और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' के लक्ष्य की ओर बढ सकेंगे।

बृहद् गायत्री यज्ञ एवं शान्ति मार्च

आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री क्रान्ति कुमार जी कोरटकर ने प्रेस वक्तव्य में बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में एक "बृहद् गायत्री यज्ञ" शनिवार दिनांक ८ जून १९९१ को आन्ध्र सारस्वत परिषद् रामकोट हैदराबाद में आयोजित किया गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री प० मदनमोहन विद्यासागर जी ने ब्रह्मा के रूप में इस विशाल गायत्री यज्ञ का निर्वाह किया। यज्ञ के उपरान्त अध्यक्ष श्री क्रान्ति कुमार जी के नेतृत्व में राज्य के आर्य समाजी बन्धुओं ने सामूहिक रूप से दस सूत्री प्रतिज्ञा की जो इस प्रकार है :—

१. हम सब आर्य हैं। सच्चे आर्य बनेंगे।

२. वैदिक धर्म समूचे संसार का हित चाहता है। हम उस धर्म का पालन करने में हर सम्भव त्याग करेंगे।

३. आर्यावर्त हमारे देश का मूल नाम है। संविधान में इस तथ्य को समाविष्ट करायेंगे।

४ सच्चे पंथ-निरपेक्ष राज्य की कल्पना को प्रतिपादित करेंगे। और इस को अमल में लाने के लिए हर सम्भव त्याग करेंगे। संविधान के निर्देशन तत्वों में उल्लिखित धारा ४४ के कार्यान्वियन कराने हेतु हम सरकार को मजबूर करेंगे।

५ हमारी संस्कृति मनोविकाश का वह स्तर है जो भारतीयता से निकल कर हमारे बातचीत, व्यवहार और रीति-रिवाजों में प्रस्फुटित होती है। इसकी रक्षा के लिये, हम हर सम्भव त्याग करने के लिये उद्यत रहेंगे।

६. हम प्रादेशिक राष्ट्रीयता नहीं सांस्कृतिक राष्ट्रीयता में विश्वास रखते हैं। इस विश्वास को समूचे राष्ट्र का विश्वास बनायेंगे।

७. हम सब एक हैं। प्रादेशिकता, भाषा सांस्कृतिक मजहब के आधार पर अल्प संख्यक, तथाकथित सामाजिक न्याय के नाम पर हमें विभक्त नहीं किया जा सकता।

हम इस सम्बन्ध में भारतीय संविधान को बदल डालने के हमारे संकल्प को सरकार से मनवा कर रहेंगे।

८. सच्चे वर्णाश्रम व्यवस्था में हम विश्वास रखते हैं। भारतीय संविधान की धारा ३८ को सही दिशा देकर कार्यान्वित करायेंगे।

९ देश में बढ़ती हुई हिंसा को रोकना तथा विघटनवाद को खत्म करने में हम हर सम्भव त्याग करेंगे।

१० देश की अखण्डता को बचाये रखने में हम आर्य हर सम्भव त्याग करेंगे।

सामूहिक प्रतिज्ञा के उपरान्त देश में बढ़ती हुई हिंसा, जातीयता, तथा क्षेत्रीयता के विरूद्ध एवं भारतीय जनता में बन्धुत्व की भावना जागृत करने के उद्देश्य, से आर्य समाजी बन्धुओं का एक विशाल जुलूस यज्ञ-स्थल से सरदार पटेल की प्रतिमा, बागआम तक गया जिसका नेतृत्व अध्यक्ष सर्वश्री क्रान्ति कुमार जी, टी० नरहरिराव, के० नरहिना रेड्डी, रामदेव शास्त्री, ओमप्रकाश आदि आर्य नेताओं ने किया। यह उल्लेखनीय है कि शान्ति मार्च में स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती प्रधान एवं प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव जी वरिष्ठ उप-प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली सम्मिलित हुए।

आवश्यकता है

प्रौढ़ अथवा सक्षम सेवा निवृत व्यक्ति जिसे शैक्षणिक एवं प्रशासनिक अनुभव हो चित्तौड़गढ़ गुरुकुल आश्रम बालकों की परिचर्या हेतु छात्र संरक्षक पद के लिए अपेक्षित है। स्नातक एवं अनुभवी व्यक्ति को प्राथमिकता देय, वेतन योग्यतानुसार विवरण सहित आवेदन पर आमन्त्रित पत्र माध्यम से स्वयं मिलें अथवा सम्पर्क करें।

मुख्याधिष्ठाता—श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान ३१२००१

वार्षिक निर्वाचन

दिनांक २६-५-९१ को आर्य समाज, आदर्श नगर की कार्यकारिणी का सर्व सम्मति से गठन हुआ है। जिसके पदाधिकारी निम्नलिखित हैं।

प्रधान—श्री रामलाल गुलाटी

मन्त्री—श्री सुनील कुमार मादू

कोषाध्यक्ष—श्री नाथूलाल शर्मा

शोक प्रस्ताव

—"आर्य युवा विकास परिषद्" पालम कालोनी नई दिल्ली के अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी समिति ने कर्मठ युवा नेता श्री राजीव गांधी, अध्यक्ष कांग्रेस (आई) एवं भूतपूर्व प्रधान मन्त्री की जघन्य हत्या पर दिनांक २४-५-९१ को शोक सभा का आयोजन किया गया। परिषद् उनकी नृशंस हत्या पर गहरा शोक प्रकट करती है। परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शांति मिले। एवं परिवार जन को धैर्य एवं साहस मिले। उनकी स्मृति में उसी दिन शांति यज्ञ का भी आयोजन किया गया।

परिषद को विश्वास है कि स्वर्गीय राजीव गांधी के परिवारजनों को यह जान कर सांत्वना एवं शक्ति प्राप्त होगी कि इस दुख की घड़ी में करोड़ो द्रवित हृदय उनके साथ हैं। —प्रचार सचिव, राजेश आर्य

—नगर आर्य समाज के तत्वावधान में बिस्मिल स्मारक यज्ञशाला लालडिग्गी पर भूतपूर्व प्रधान मन्त्री राजीव गांधी की जघन्य हत्या हो जाने पर दुखी हृदय से दिनांक २२ मई से २६ मई तक उनकी आत्मा की शान्ति हेतु वैदिक यज्ञ हुआ। यज्ञ समाप्ति के पश्चात एक शोक सभा आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, गोरखपुर के अध्यक्ष पंडित द्विजराज शर्मा की एवं संचालन मन्त्री रमेश प्रसाद गुप्त ने किया।

बैठक को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष प० द्विजराज शर्मा ने इस अमानुषिक हत्याकाण्ड को जघन्य अपराध बताते हुए देश के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया, साथ ही देश के लोकतन्त्र के लिए भी खतरा कहा।

वक्ताओं में जिला मन्त्री रमेश प्रसाद गुप्त रजित नन्दन लोहिया पारस नाथ गुप्त, सरस्वती आर्या, मनोरमा लोहिया गुनवती आर्या आदि अनेक लोगो ने दुःख व्यक्त किया। सभा के अन्त में दो मिनट का मौन धारण कर परम पिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को शान्ति के लिए प्रार्थना की गयी। तत्पश्चात् शान्ति पाठ के बाद सभा समाप्त की गयी। —रमेश प्रसाद गुप्त

मन्त्री–जिला आर्योप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर

—आर्य समाज मायापुरी–नई दिल्ली ६४ की साधारण सभा पूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी की तमिलनाडु में मद्रास के निकट श्रीपेरमपुदूर में की गई निर्मम हत्या की घोर निन्दा करती है।

श्री राजीव गांधी का बिछोह आप व आपके परिवार के लिए अपूर्णतीय क्षति तो है ही, राष्ट्र के लिए भी गहरा सदमा है। सात वर्ष के अन्दर एक ही उद्देश्य परन्तु भिन्न नाम के देश द्रोहियों ने भारत के उन दो कर्णधारों की हत्या की है जो नाना आशा बातों में राष्ट्र को निकाल कर प्रगति के चरम बिन्दु पर ले जाने का भागीरथ प्रयत्न करते रहे।

श्रीमती सोनिया जी, आर्य समाज मायापुरी आपके प्रति अमर हुतात्मा राजीव जी की दुःखद हत्या पर संवेदना प्रकट करता है तथा परमात्मा से प्रार्थना करता हैं कि हुतात्मा को शान्ति प्रदान करे तथा आपको इस अतीव दुःख को सहने का सम्बल दे। —ठाकुर सुरेन्द्र सिंह, मन्त्री

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश आरम्भ

महर्षि दयानन्द मनोवाछित देश का सुप्रसिद्ध शिक्षणालय आपका चिर परिचित श्री आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़, अरावली की सुन्दर पहाड़ियों में गम्भीरी नदी के तट पर एकान्त स्थल पर अवस्थित है शिक्षा। यहां सर्वथा निशुल्क है, यहां लगभग सभी प्रान्तो के बालक बिना किसी भेदभाव के शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यहाँ की आश्रम प्रणाली सुनियोजित एवं अनुपम विशेषता सहित उल्लेखनीय है। यहाँ सुयोग्य एवं विद्वान गुरुओं की देख रेख में बालकों का सर्वांगीण विकास मुखरित होता है। वेद, वेदांग संस्कृत, साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद आदि की पढ़ाई को प्रमुखता दी जाती है। पहली से आठवीं तक यहां संस्कृत विशेष के साथ आर्वाचीन सभी विषय–इगलिश, गणित, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान, भूगोल, हिन्दी वाणिज्य आदि विषय पाठ्यक्रम में समाहित है, गुरुकुल संस्कृत शिक्षा विभाग राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त है।

संस्कृत विश्व विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बद्ध आर्ष पद्धति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त, प्रक्रिया से मध्यमा, शास्त्री, व आचार्य कक्षा तक की पढ़ाई व परीक्षा का समावेश है, विगत वर्षो में यहां का परीक्षा परिणाम विद्यालय अध्यापन व्यवस्था व शिक्षा के अच्छे स्तर के कारण अति उत्तम रहा व रह रहा है, पढ़ाई एक जुलाई से प्रारम्भ होती है, तथा नवीन बालकों का प्रवेश २७ जून से अधिग्रहण है, प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए—

मुख्याधिष्ठाता—श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़/राजस्थान ३१२००१। इस पते से पत्र व्यवहार व सम्पर्क करें।

योग एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

दिनांक २३ जून से ३० जून १९९१ तक

सर्व सज्जनो को सूचित किया जाता है कि आर्य समाज गाजियाबाद की ओर से महर्षि दयानन्द गुरुकुल महाविद्यालय में उक्त तिथियो में योग एव व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जायेगा। दण्ड-बैठक, लाठी, जूडो कराटे, तलवार व छुरी आदि का प्रशिक्षण तथा अनेक शारीरिक रोगों को दूर करने के लिये योगमार्तण्ड डा० सुनील कुमार जी शास्त्री के निर्देशन मे योगासन सिखाये जायेगे। इसके साथ ही बौद्धिक प्रशिक्षण के अन्तर्गत वैदिक सिद्धान्तो पर वैदिक विद्वानो के प्रवचन कराये जायेगे। शिविर का सचालन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान सचालक प० बाल दिवाकर जी 'हस' करेगे।

शिविर के नियम :—

(१) युवक की आयु १२ वर्ष से २५ वर्ष के लगभग तथा न्यूनतम योग्यता ८वी कक्षा पास हो।

(२) सामान्य वस्त्रो के अतिरिक्त खाकी नेकर, सफेद कमीज, गोल गले की बनियान, काला कच्छा, लगोट, आसन जूते, सफेद मोजे तथा हल्का बिस्तर, पांच का थाली, कटोरी, गिलास, डायरी, पैन, साबुन, तेल आदि आवश्यक सामान अपने साथ अवश्यमेव लायें।

(३) शिविर का प्रवेश शुल्क २० रुपये होगा। भोजन आवास की व्यवस्था निशुल्क रहेगी।

(४) अनुशासन तथा व्यायाम परीक्षा मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने पर पुरस्कार एव सभी को प्रमाण-पत्र दिये जायेगे।

मार्ग निर्देश—पटेल मार्ग पर टेलीफोन एक्सचेंज (पुराना) के सामने।

नोट—शिविर में भाग लेने वाले युवक २० जून तक अपना नाम कार्यालय मे भेज दें।

—घनश्याम सिंह आर्य—मन्त्री

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R.N. No. 32387/77 Post in N.D.P.S.O. on 20-21-6-1991 Licence to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३९

श्री वीरेन्द्र वर्मा, हिमाचल प्रदेश द्वारा

दीन बन्धु पब्लिक स्कूल घेवरा

तथा

महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल बवाना

के छात्र-छात्राओं एवं अध्यापक, अध्यापिकाओं को दिनांक २८-५-९१ को दिया गया शुभाशीर्वाद

सर छोटूराम एज्जूकेशनल ट्रस्ट द्वारा सचालित दीन बन्धु पब्लिक स्कूल घेवरा एव महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल बवाना के ७५ छात्र एव छात्राए तथा ६ अध्यापक अध्यापिकाए २ चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, श्री इन्द्र सिह ढाका (सेवा निवृत प्रधानाचार्य) वैद्य वनवारी लाल जी ट्रस्टी, तथा प्रि० होशियार सिह, अवैतनिक महासचिव के सरक्षण मे शिमला भ्रमण एव शैक्षणिक अध्यवन के लिए २७-५-९१ [illegible]यकाल शिमला पहुचे। मान्यवर राज्यपाल महोदय की कृपा से पचायत [illegible]ने बडे हाल (मौसम की भीड भडाका होते हुये भी) भ्रमण पार्टी के [illegible] उपलब्ध कराये तथा २८-५-९१ के लिये हिमाचल परिवहन की दो बसें छात्रो के स्थानीय भ्रमणार्थ किराये पर दिलवाने में योगदान दिया। जब ४ बजे सभी बच्चे, अध्यापक एव सरक्षक राजनिवास पहुचे तो राजनिवास के स्टाफ ने एव राज्यपाल महोदय के ए० डी० सी० ने हमारा बडा अभिनन्दन किया। पहले तो सभी बच्चो को और सारी पार्टी को जलपान कराया और तदुपरान्त निम्न अमोल वचन राज्यपाल महोदय ने बच्चो के आशीवाद हेतु कहे—

१ बच्चो को अपने चरित्र का पूरा-पुरा ध्यान रखना चाहिए।

२. बच्चों की स्वस्थ, सुन्दर सुडौल होना चाहिए। इसके लिए राज्यपाल महोदय ने खेल-कूद, शारीरिक व्यायाम, जिमनास्टिक, योगासन, प्राणायाम एव शुद्ध भोजन पर बल दिया।

३. बच्चो को चेतावनी दो कि उन्हे धूम्रपान से बचना चाहिये, मद्यपान आदि नशा करने वालो से अलग रहना चाहिये। अगर उनके घर का कोई सदस्य पिता, चाचा या भाई मद्यपान करता हो तो उसे आदरपूर्वक अनशन करके रोकने का प्रयास करना चाहिए, क्योकि इनके मतानुसार शराब सर्वनाश का कारण होती है।

४. पारिवारिक और सामाजिक जीवन के शुद्ध स्वच्छ सात्विक एव स्वस्थ बनाने के लिये मान्यवर राज्यपाल जी ने सर छोटू राम ट्रस्ट के प्रबन्धकों से परामर्श दिया कि धुआ रहित चुल्हो और सुलभ शोचालयों के प्रसार-प्रचार हेतु एवं नारी जगत के स्वास्थ्य के लिये हमे अधिक से अधिक प्रयास करना चाहिए। सर छोटू राम की महानता की अद्वितीय प्रशसा करते हुये उन्हो बच्चो को महर्षि दयानन्द, महात्मा गाधी एव सर छोटू राम द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिये।

इन आशीर्वाद बचनो के साथ राज्यपाल महोदय ने बच्चो के साथ सामूहिक चित्र खिचवाने की अनुमति प्रदान कर दी। सभी बच्चों ने मान्यवर राज्यपाल की शिक्षाओ को गाठ बाध लेने का मूक आग्रह कर राजनिवास से विदाई ली।

प्रि० होशियार सिह
—महासचिव, सर छोटू राम एज्यूकेशनल ट्रस्ट कन्झावला, दि[illegible]

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ३४	रविवार, ३० जून, १९९१	विक्रमी सम्वत् २०४८	दयानन्दाब्द : १६६	सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे	वार्षिक—२५ रुपये	आजीवन २५० रुपये	विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर	दूरभाष : ३१०१५०

आर्य समाज द्वारा पंजाब में चुनाव स्थगित करने का स्वागत

दिल्ली २१ जून। आर्य समाज की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने श्री पी० वी० नरसिंह राव को अगला प्रधान मन्त्री चुने जाने का स्वागत करते हुए कहा है कि पंजाब में तीन महीने के लिए चुनाव स्थगित कराकर नई सरकार ने अपने साहस, इच्छा शक्ति और मजबूती का परिचय दिया है। चुनावों के बाद कांग्रेस पार्टी की यह पहली विजय है।

स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज ने शुरू से ही पंजाब में चुनाव कराए जाने का बड़ा विरोध किया था। पिछले २ महीने में पंजाब में बड़े पैमाने पर हुए जान और माल की क्षति के लिए उन्होंने चन्द्रशेखर सरकार को दोषी ठहराया।

दसवीं लोकसभा के लिए चुनाव परिणामों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए आर्यसमाज के नेता ने कहा कि कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी दोनों दलों की मजबूती तथा जनता दल जैसे समाज विरोधी संगठनों की कमजोरी का जनता का निर्णय सर्वोत्तम है। स्वामी जी ने कहा कि जनता दल तथा उनकी सहयोगी पार्टियां अभी भी यदि जन्मगत, जातिवाद को बढ़ावा देती रहीं तो उनका भविष्य और अधिक अन्धकारमय हो जाएगा।

स्वामी आनन्दबोध ने कहा कि आज देशवासियों को सांस्कृतिक एकता के सूत्र में बांधने की आवश्यकता है जिससे धार्मिक स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय अखण्डता दोनों प्राप्त हो सकें।

पं० वन्देमातरम् सारस्वत सम्मान से सम्मानित

श्री कृष्णदेवराय आंध्रभाषा निलयम् एवं आंध्रप्रदेश जनपद साहित्य परिषद् के संयुक्त तत्वावधान में प्रसिद्ध देशभक्त स्वतन्त्रता सेनानी व आर्य नेता श्री पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी के ७५ वें जन्म-दिवस वर्ष के अवसर पर अमृतमहोत्सव २५ अप्रैल १९९१ को श्री कृष्णदेवराय आंध्रभाषा निलयम हैदराबाद में आयोजित किया गया और इस शुभ अवसर पर उनका सार्वजनिक रूप से "सारस्वत सम्मान" किया गया। अमृत महोत्सव के सन्दर्भ में उस्मानिया विश्वविद्यालय के तेलुगु विभाग के पूर्वाध्यक्ष प्रोफेसर बी रामराजू ने अपने नवीनतम ग्रन्थ "ग्लिम्प्सेस इनटु तेलुगु फोकलोर"



को श्री पं० वन्देमातरम् को ससम्मान अर्पित किया। पचास से अधिक आर्य-समाजों एवं हिन्दी-तेलुगु साहित्यक संस्थाओं की ओर से पं० वन्देमातरम् दम्पत्ति का सार्वजनिक सम्मान किया गया।

सार्वत्रिक विश्वविद्यालय हैदराबाद के उपकुलपति प्रो. चन्द्रशेखररावजी ने समारोह की अध्यक्षता की। आंध्रप्रदेश हाई कोर्ट के अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश श्री गोपालरावजी एकबोटे समारोह के मुख्यअतिथि थे। वक्ताओं में सर्वश्री टी नरहरिराव, प्रो० मोदलि नागभूषण शर्मा आदि थे। सभी वक्ताओं ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम विशेषकर निजाम राज्य में आर्य सत्याग्रह संग्राम में श्री पं० वन्देमातरम् जी की सेवाओं को अविस्मरणीय बताया। श्री कृष्णदेवराय आंध्र भाषा निलयम् के कार्यदर्शी श्री एम एल नरसिंहराव जी ने मुख्य अतिथियों का स्वागत् किया। आंध्र प्रदेश जनपद साहित्य परिषद के कार्यदर्शी श्री कसिरेड्डी वेंकटरेड्डी ने कार्यक्रम का संचालन तथा अन्त में आभार प्रदर्शित किया। यह "सारस्वत सम्मान" एक ऐतिहासिक समारोह बन गया।

क्रान्तिकुमार आर्य प्रतिनिधि सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित

दिनांक ७-४-१९९१ को साय स्थानीय आर्य समाज के प्रधान श्री लक्ष्मण आर्य की अध्यक्षता में वरंगल में आयोजित दस जिलों के आर्य समाजों के कार्यकर्ताओं के बृहत् सम्मेलन में सर्वसम्मति से स्व० विनायकराव विद्यालंकार के सुपुत्र श्री क्रान्तिकुमार जी को आर्य प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष सर्व सम्मति से निर्वाचित किया गया और भावी कार्यक्रमों और संगठन को शक्तिशाली बनाने हेतु नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री क्रान्तिकुमार जी के नेतृत्व में बहुत शीघ्र ही हैदराबाद में आन्ध्र प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं का एक बृहत सम्मेलन आयोजित करने का निश्चय किया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष जी का नाम स्वीकृति के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को भेजा गया।

वरंगल में आयोजित आर्यकर्त्ता सम्मेलन के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने १४वें अन्तर-राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में पारित घोषणा पत्र की सविस्तार व्याख्या की और सिंह-गर्जना की कि घोषणा-पत्र के महत्वपूर्ण अंशों को भारत सरकार द्वारा कार्यान्वित कराने हेतु जन आन्दोलन छेड़ा जाएगा—हमारा मूल मंत्र होगा—हम सब आर्य हैं आर्यवर्त्त हमारा देश है। पं० वन्देमातरम् जी ने यह भी घोषणा की कि विदेशों में आर्य समाज के प्रचार हेतु एक प्रचारक को वे अपने निजी खर्च से मारिशस भेजेंगे।

सम्मेलन का आरम्भ आर्य प्रचारिका श्रीमती त्रिभुवनादेवी जी के प्रार्थना गीत के साथ हुआ। आर्य समाज के मंत्री श्री गोविन्द आर्य ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। अनेक आर्य समाजों के अनेक प्रधानों एवं मंत्रियों के अतिरिक्त सर्वश्री राजवीर आर्य सूर्यनारायण आदि ने सम्मेलन को सम्बोधित किया। तेलंगाने के दस जिलों के आर्य समाजों के सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने इस सम्मेलन में भाग लिया। कार्यकर्त्ताओं में भारी उत्साह देखा गया। गगनभेदी वैदिक नारों के साथ सम्मेलन समाप्त हुआ।

परामर्श—डा० धर्मपाल प्र० सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

वेदवाणी

—नारायण नागपाल—

जीवन मे अगर सफलता प्राप्त करनी है तो वेदमार्ग पर चलना होगा जिस मे सभी समस्याओं पर बल दिया गया है। वेद वाणी प्रभु (परम पिता परमेश्वर) का उपदेश और आदेश है। चारो वेद, जीवन बिताने का रास्ता बताते हैं जैसे—ऋगवेद का सगठन सूक्त कहता है कि "ओ३म् सम् समिधुवसे...मनो यथा व सुमहासति"

हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हे है कीजिये घन वृष्टि को।
प्रेम से मिल कर चलो, बोलो, सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजो की भाति तुम कर्त्तय के मानी बनो।
हो विचार समान सबके, चित्त, मन सब एक हो।
ज्ञान देता हू बराबर, भाग्य पा सब नेक हो।
हो सभी के दिल तथा सकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हो प्रेम से, जिस से बढे सुख सम्पदा।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वेद मन्त्र की अपने महान ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे व्याख्य करते हुए कहा है स्त्रिया भी ब्रह्मचारिया हो, ब्रह्मचारिया बने और स्त्रियो को भी पूरी शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है। क्योकि मध्य काल मे स्त्रियो को शिक्षा नही दी जाती थी और न ही यज्ञ हवन मे बैठने दिया जाता था।

यजुर्वेद के मन्त्र ३/५ मे परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई है कि सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर ! मेरा मस्तिष्क ज्ञान-ज्योति से जगमगा उठे। मै द्युलोक के समान महान, अनन्त बन जाऊ। मेरा हृदय अन्तरिक्ष के समान विशाल हो। अथर्व वेद का मन्त्र न० २/१७से २-१८-५। प्रभो से यह मागना सिखता है कि हे ! बल धारक प्रभु "ओजो असी परमानम् परिमान चक्षुर्मेद्ध स्वाहा। आप ओज स्वरूप है, मुझे ओज प्रदान करो। आप आयु स्वरूप हैं, मुझे आयु प्रदान करे। वेदो के एक-एक पृष्ट मे, एक-एक मन्त्र मे ज्ञान भरा पडा है अथर्व वेद के मन्त्र १/३५/२ के माध्यम से प्रभु से विनती की गई है कि हे प्रभो ! मेरी जिह्वा के अग्र भाग मैं मधु हो, जिह्वा के मूल भाग में (मन मे) भी मधु हो, मेरे कर्मो मे तेरा वास हो। मेरे चित्त में तू व्याप्त रहे। मै वाणी द्वारा मधुरता युक्त वचन बोलू। मेरा देखना और दिखाना दोनो मधुर हो। मै शहद से भी अधिक मीठा बोलू, मीठा बनू, मिठाई से भी अधिक मीठा बनू।

वेद मे परमपिता परमेश्वर ने कई प्रकार के आदेश दिये है और प्रभु भक्ति के करने की कई विधिया बताई है। वेदो मे परमेश्वर के कई रूप बताए गये है। जैसे कि प्रभु के बारे मे कहा जाता है कि प्राण प्रिय है, सृष्टि कर्ता है। वह ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप है, निराकार है, सर्वशक्ति मान है, अजर, अमर है, नित्य है, न्यायकारी है, दयालू है, अजन्मा है, अनन्त है, अनादि है, अनुपम है, सर्वाधार है, सर्वव्यापक है, सर्वान्तर्यामी है।

यजुर्वेद का ईश्वर स्तुति मन्त्र कहता है कि हे प्रभो ! हे सकल जगत के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त परमेश्वर आप (ओ३म् विश्वानि देव मन्त्र) हमारे सारे दुःखो को दूर कर दीजिये, जो कल्याण कारक पदार्थ है, वे सब हमको प्राप्त कराइये।

कई सदियो से ऋषि, मुनि, महर्षि, सन्यासी वेद मन्त्रो का पाठ करते आये है। भगवान श्री राम वेद मन्त्रो का उच्चारण करते थे और भगवान श्री राम, श्री कृष्ण वेद मन्त्रो पर बल देते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेदो का डका बजा दिया सारे ससार मे। वेदो पर खूब प्रकाश डाला। सत्यार्थ प्रकाश, सस्कार विधि आदि कई ग्रन्थ लिख डाले। महर्षि दयानन्द ने सारे विश्व का कल्याण चाहा। वेद कहता है कि सब सज्जन बने, सब सज्जन हो किसी जाति, धर्म विशेष का नही बल्कि सबका भला चाहा। श्री गुरु नानक देव जी महाराज ने भी वेद की वाणी को अपने ग्रन्थ साहब मे उल्लेख किया है। वेद वाणी की महिमा बतलाई है। सामवेद और यजुर्वेद मे ऋतुओं के बारे मे विस्तार से बताया गया है। गुरु गोविन्दसिह जी महाराज ने भी वेदो के मन्त्रों को माना और प्राय चर्चा की थी।

वेद चार है—

(३)—सामवेद=उपासना का वेद है। परमात्मा के गुणो को आचरण में उतारना।

(१)—ऋग्वेद=ज्ञान का वेद है। तिनके से सूर्य पर्यन्त पूरा-पूरा ज्ञान दिया हुआ है।

(२)—यजुर्वेद=ज्ञान को कर्म मे उढेलने का मार्ग बताया है। ज्ञान को कर्म मे लाना ही मोक्ष है।

(४)—अथर्ववेद=विज्ञान का वेद हैं। प्राकृतिक शक्तियो के बारे मे बताया गया है। परमेश्वर वेद के माध्यम से मनुष्यो को उपदेश देता है।

यजुर्वेद का गायत्री महामन्त्र बहुत अच्छी तरह से कहा गया है। गायत्री मन्त्र मे पहले प्रभु के गुणो का गुणगान किया गया है फिर प्रभु के पास जाने का रास्ता बताया गया है और मन्त्र के अन्त मे प्रभु से मगल कामना की इच्छा की गई है। मेधा बुद्धि मागी गई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी कहा है कि भगवद् भक्ति के बिना मोक्ष की प्राप्ति नही हो सकती। मनु महाराज ने अपने मनुस्मृति मे धर्म के १० लक्षणो पर प्रकाश डाला है और वे धर्म के १० लक्षण Universal Truth वैसे ही है जैसे कि वेद के अति सुन्दर वेद मन्त्र जिस पर सब को पालन करना पडेगा। जीवन मे तरक्की मिलेगी और हमारा जीवन सफल होगा, हमारा जीवन सार्थक होगा आर्य समाज के नियमो मे भी लिखा है कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है, वेद का पढना, पढाना सब आर्यो (सज्जन पुरुषो) का परम धर्म है।

सन्ध्या उपासना विधि मे कही ऋग्वेद का अघमर्षण मन्त्र में सकल जगत का धारण करने वाला और पोषण करने वाला और सबको वश मे करने वाला परम पिता परमेश्वर बताया गया है तो कही उसे सर्वज्ञ बताया गया है तो कही जगदीशवर कहा गया है। अथर्ववेद के मनसा परिक्रमा मन्त्र मे कई प्रकार से नमस्कार किया है जैसे—हे ! शरीर रक्षक प्रभु ! आपको बार-बार नमस्कार ! जो प्राणी अज्ञान से हम से द्वेष करता है और जिस अज्ञान से हम लोग द्वेष करते है उन सबकी बुराई को उन बाण रूप किरण से मुख रूप के बीच मे दग्ध कर देते हैं कि जिससे हम लोग बैर न करे बल्कि हम लोग परस्पर मित्र भाव से बरते।

भगवान जी राम की शोभा बारात के समय भी वेद मन्त्रो का उच्चारण किया गया वेदो मे ज्ञान ही ज्ञान भरा पडा है। वेद मे प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हे प्रभो ! मेरा मन शुभ सकल्प वाला हो (यह यजुर्वेद का मन्त्र कहता है), ऋग्वेद के मन्त्र मे प्रभो से कहा गया है कि हे ऐश्वर्यशाली जगदीश्वर भगवन ! आप सबके आधार है (सर्वाधार हैं) हमे भी ऐश्वर्य प्रदान कीजिए क्योकि भगवान की कृपा के बिना किसी को ऐश्वर्य प्राप्त होना असम्भव है यानि कि प्राप्त नही होता। आर्य समाज वेद प्रचार मे लगी हुई है देश विदेश मे हजारो वेद की ज्योति जल रही हैं। अपनी रक्षा के लिए हम आपको बुलाते है (ऋग्वेद का सातवा मन्त्र) आप प्रकाश स्वरूप है। आप सर्वत्र व्यापक है। आगे-पीछे ऊपर-नीचे, दाये बाये। आप सर्वोत्तम है व्याप्त है।

भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज के विवाह मडप मे भी वेद मन्त्रो का पाठ होता रहा और विवाह की वेदी पर बैठने से पूर्व वेद मन्त्रो का उच्चारण किया गया था और सब देवता, मुनि विश्वामित्र आदि सब प्रसन्न मुद्रा मे विराजमान थे। राजा जनक, माता जी भी फूले न समा रहे थे। यजुर्वेद का मन्त्र कहता है कि हे जगदन् (भगवान) अपनी कृपा से हम को सदा उत्तम पराक्रम युक्त और दृढ प्रयत्न करने वाला बना दीजिए। हमारी पूजा का रक्षण सदा कीजिए और हम सदा पुरुषार्थी बने। गीता मे यजुर्वेद का मन्त्र है जिस मे यह सन्देश है कि मनुष्य ससार मे निष्काम भाव से कर्म करता हुआ सौ वर्ष तक जीये। आर्य समाज की आधार शिला भी वेद ही है। यजुर्वेद का मन्त्र (अ० ३५, म० १४) प्रभु से से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि हे परमेश्वर ! आप प्रकाश स्वरूप हो, हमारी रक्षा करना आपके हाथ है क्योकि हम लोग आपकी शरण मे

(शेष पृष्ठ ७ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यसन्देश

राष्ट्रीय एकता और अखंडता की समस्या भयावह



गत सप्ताह राजनैतिक गतिविधियों का सप्ताह रहा है। जब से राष्ट्रीय निर्वाचन के परिणाम आने प्रारम्भ हुए थे, यह स्पष्ट होने लगा था कि ससद मे किसी भी पार्टी का बहुमत नहीं आ पायेगा, परन्तु सबसे बडी पार्टी कांग्रेस ही रहेगी। पिछली ससद मे भी सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस ही थी, परन्तु उस समय की, और इस समय की परिस्थितियों मे अन्तर आ गया। उस समय कांग्रेस हारी थी, अब की बार कांग्रेस जीती है। यह एक बहुत बड़ा अन्तर है। अब कांग्रेस के नेता कहें कि हम विपक्ष मे बैठेंगे, जैसा कि पहले उन्हो कहा था, किसी भी प्रकार सार्थक मूल्य नहीं रखता। अत: यह आवश्यक लगने लगा था कि कांग्रेस को ही सरकार बनानी चाहिए। सप्ताह पूरा होते-होते कांग्रेस ने केन्द्र मे अपनी सरकार बनाली है। विपक्ष मे राष्ट्रीय मोर्चा और भाजपा है। यह निर्वाचन भाजपा के लिए विशेष उपलब्धियां सजोकर लाया है। इस समय भाजपा राष्ट्रीय पार्टी है। उसे केरल और असम जैसे सुदूर प्रान्तो मे भी लोक सभा मे प्रतिनिधित्व करने का अवसर इस बार मिला है। वे दिल्ली मे भी अपने गढ को ढहने से बचाने मे समर्थ हुए हैं। यह बात अलग है कि कुछ ऐसे महारथी हार गए हैं जिनसे उन्हे और उनकी पार्टी को आघात लगा है।

प्रधान मन्त्री बनने के बाद, श्री पी० वी० नरसिंह राव ने राष्ट्र के नाम अपने सदेश में अपने कार्यों की प्राथमिकताओ को रेखांकित किया है। इसमे कोई दो राय नही हो सकती कि उनके सामने अनेक समस्याएं हैं। राष्ट्रीय एकता और अखंडता की समस्या संभवत सर्वाधिक भयावह है। साम्प्रदायिक उन्माद भी देश मे इस समय कम नही है। देश का आर्थिक ढाचा डावांडोल है। उसे अनेक ऋण लेने हैं, पर उसके लिए साख चाहिए। इस साख को रक्षा करनी है। देश में वर्ग संघर्ष की स्थिति बनी हुई है। संस्कृति का अध:पतन हो चुका है। अब श्री नरसिंह राव के कन्धो पर यह भार आया है कि वे जिस तरह भी हो, इसे पार ले जाए। यह बात भी उल्लेखनीय है कि यह समस्या पिछले डेढ वर्षों के गैर कांग्रेसी शासन के कारण ही नही है, बल्कि इसके बीज-बिन्दु काफी पहले से पनपते आए हैं और अब ये समस्यायें पुष्पित पल्लवित हो चुकी है।

श्री राव कुशल प्रशासक हैं। शिक्षा विद् हैं। उनका विभिन्न विभागो को सफलतापूर्वक सभालने का अनुभव भी पर्याप्त लम्बा है। हमे आशा है कि वे इस देश को सही रास्ते पर ले जाएगे। सभी देशवासी इस भूमि के प्रति, इस देश के प्रति, इस राष्ट्र के प्रति समर्पित होंगे। वे इस भारत भूमि के पुत्र हैं। यह उनकी माता है। यह रिश्ता ही हम सभी को एक सूत्र मे जोडने मे सफल हो सकता है।

—डा० धर्मपाल

- जब पांच वर्ष का लड़का लड़की हो तब उनको देवनागरी अक्षरों का अभ्यास कराना चाहिए। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी अभ्यास कराना उचित है।

- अनिवार्य शिक्षा के विषय मे लिखते हैं 'इसमे राज नियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें वर्ष के उपरान्त कोई मनुष्य अपने लड़कों या लडकियो को घर मे न रख सके। अवश्यमेव उन्हें पाठशाला मे भेजें। यदि न भेजे तो वह दण्डित किया जाय।

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२३ जून, ९१ के अक से आगे)

प्रतिनिधि सभा का मन्त्रित्व—

१९६६ मे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपना वार्षिक अधिवेशन आबू रोड मे किया। इस बार यहां एकत्रित प्रान्तीय प्रतिनिधित्व ने सर्व सम्मति से मुझे सभा का मन्त्री चुन लिया। मैने मन्त्री पद को स्वीकार तो किया, किन्तु मेरे समक्ष एक व्यावहारिक कठिनाई थी। सभा का कार्यालय अजमेर मे था। अत मुख्यालय से दूर रह कर सभा का सचालन करना तथा उसकी दैनन्दिन गतिविधियो को देखना शक्य नही था। मैं इस वर्ष के ग्रीष्मवकाश मे इसी ऊहापोह मे रहा कि पाली रहते हुए सभा का मन्त्रित्व कैसे निभा पाऊंगा? किन्तु जुलाई में कालेज के खुलते ही मेरे गवर्नमेंट कालेज अजमेर मे स्थानान्तरित होने के आदेश आ गये और मैं उक्त कठिनाई से सहज ही मुक्ति पा गया। पाली के आर्य बधुओ ने मुझे भावभीनी विदाई दी। यहा की सामाजिक, साहित्यिक एव सांस्कृतिक गतिविधियों में भी मैं प्राय. भाग लेता ही था। अत: पाली की साहित्य साधना समिति नामक एक साहित्यिक सस्था ने मुझे विदाई देते हुए नगर मे मेरी अनुपस्थिति से उत्पन्न शून्य की बात कही। किन्तु ससार चक्र तो मिलन और वियोग का ही नाम है।

अजमेर का सामाजिक जीवन—

मैं जुलाई १९६६ मे अजमेर आया और ७ नवम्बर १९८० तक रहा। ग्यारह वर्ष की इस अवधि मे मेरे आर्यसामाजिक क्रियाकलापो मे अत्यधिक वृद्धि हुई तथा सामाजिक जीवन के दायित्व तथा व्यस्ततायें भी बढ़ी। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा का मन्त्री इसी वर्ष निर्वाचित हुआ था। सभा का कार्यालय दयानन्द आश्रम मे था जहां एक लिपिक कार्यालय सम्बन्धी पत्राचार तथा हिसाब किताब की देख-रेख करता था। उन दिनो एक अवकाश प्राप्त सज्जन श्री मदन मोहन गुप्ता कार्यालय का काम देखते थे। मुझे नियमित रूप से कार्यालय मे जाना पड़ता और नित्य की डाक देख कर पत्रादि लिखाने पडते। मैं प्राय. सायं ४ बजे सभा कार्यालय मे नियमित रूपसे उपस्थित होता। यदा कदा प्रात १० बजे भी चला जाता, यदि कालेज मैं मेरा कोई पीरियड रिक्त होता। उस समय परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री श्रीकरण शारदा भी नियमित रूप से सभा मे आते। परोपकारी के सम्पादक, परोपकारिणी सभा के पुस्तकाध्यक्ष तथा हमारी प्रान्तीय सभा के प्रधान प० भगवान स्वरूप जी न्यायभूषण भी प्रात ही कार्यालय मे उपस्थित होते थे। अत: इन सबसे मिलना हो जाता। सभा के कार्यों से मुझे प्रान्त के विभिन्न स्थानो पर जाना पड़ता। समीपवर्ती तथा दूरवर्ती ग्रामो एव नगरो की यात्रायें करनी पड़ती। समाजो के पारस्परिक वाद-विवादो को निपटाने के लिए तत्-तत् स्थानो पर जाना आवश्यक था। विवादास्पद मामलो के समाधान के लिये मैं नसीराबाद, नागौर, लाडनू, जोधपुर आदि अनेक स्थानो पर गया। उत्सवो तथा प्रचार कार्यक्रमो मे भी सभा मन्त्री के नाते यत्र तत्र जाना होता।

अजमेर मे परोपकारी तथा आर्य मार्तण्ड पत्रो के कार्यालय थे। इन पत्रो में मै नियमित रूप से वर्षों से लिखता आया था। परोपकारी का सम्पादन मैंने तब आरम्भ किया जब १९७२ मे प० भगवान स्वरूप जी का निधन हो गया। आर्य मार्तण्ड के सम्पादक प० रामसहाय जी शर्मा (स्वामी ओमभक्त जी) ने सम्पादन कार्य के लिए मुझे सर्वाधिक उपयुक्त समझा और स्वय हो त्याग पत्र देकर इन कार्य से निवृत हो गये। इस प्रकार एक पाक्षिक तथा एक मासिक पत्र के सम्पादन का दायित्व मुझ पर आ गया।

परोपकारिणी सभा की सदस्यता—

१९७० ई० मे दीपावली पर आयोजित कृषि मेले मे मुझे परोपकारिणी सभा का सभासद चुना गया। यह सदस्यता बैरिस्टर चरणदास पुरी के निधन से उत्पन्न सदस्यता के खाली होने से हुई थी उस समय सभा के प्रधान लाला हुलराज तत्कालीन सभासदो ने सभा मे प्रवेश पाने पर मेरा स्वागत एव अभिनन्दन किया। डा० मथुरालाल शर्मा, डा० परमात्मा शरण, डा० मगलदेवशास्त्री आदि विद्वद्वर्ग ने सभा मे मेरे आने को शुभ लक्षण माना। क्रमश:

घर बैठे अनेक बीमारियों का आयुर्वेदिक नुस्खों द्वारा इलाज

—नेतराम शर्मा—

प्रधान भारतीय योग संस्थान पूर्वी जिला, दिल्ली । दूरभाष : निवास—२२४६४३९ विद्यालय—२२१३४८३, ए-७/६, कृष्णनगर, दिल्ली-५१

१८ बन्द पेशाब खोलना :—

१. कलमी शोरा, मिश्री, राई बराबर बराबर लेकर १० ग्राम की मात्रा पानी के साथ दिन मे तीन बार।

२. ढाक के फूल पानी मे पीसकर नाभि पर लेप करना।

३ गेहू की चोकर को गर्मकर पोटली बना पेडू, कमर पर सेकना।

१९. मूत्र का बार बार आना :—

१. १० ग्राम बरियारी की जड की छाल, २५० ग्राम दूध मे मिश्री मिलाकर १५ दिन तक पीना।

२ अनार के छिलके का चूर्ण ३ ग्राम, पानी के साथ सुबह शाम लेना।

३. जाडो मे १०० ग्राम काले तिल, २५० ग्राम गुड की चासनी मे लड्डू बना, बीस ग्राम का लड्डू रोज खाना।

४. भुने हुए चने चबाकर खाना।

२० कठ माला :—

१. चिरचिटा की जड के ८-१० टुकडे लेकर उसकी माला बना रोगी के गले मे पहना दे। कुछ दिनो मे ठीक।

२. मूली के बीज बकरी के दूध मे पीसकर लेप करे। अथवा सरसो पीसकर लेप करे। शीघ्र लाभ।

२१ पथरी :—

१. मूत्राशय की पथरी तोड़ने के लिये रोज छाछ पीते रहिए। चिकनाई मलाई बन्द। छाछ में जरा सी फूली फिटकरी मिला लें।

२. ५ ग्राम गोखुरू के बीजों का चूर्ण १० ग्राम शहद के साथ चाटे।

३ गेहू चने उबाल कर पानी को ठन्डा कर पीना। उबले हुए चने गेहू मे शक्कर मिलाकर खाना। मात्रा-गेंहू चना मुट्ठी भर।

४. २५ ग्राम पालक रस दिन मे दो बार, २५ ग्राम चुकन्दर रस दिन मे दो बार, पात गोभी का रस एक-एक कप दो बार।

५. मूली का रस २५ ग्राम रोज पीने से पथरी गलकर मूत्र के रास्ते निकल जाती है। मूली रस मे आवले का चूर्ण ३ ग्राम मिलाकर सेवन करने से और भी अधिक फायदा होता है।

२२ सूजन :—

१. मुट्ठी भर गेहू पानी मे उबाल कर सुहाते सुहाते पानी से रूई से धोना। गेहू निकाल कर शहद या शक्कर मिलाकर खाना।

२ मटर को पानी मे उबाल कर उसके पानी से सूजन को धोना।

३ आवले के रस मे घी मिलाकर पीने से भी लाभ।

२३ शीघ्र पतन :—

१ ५ ग्राम जगली पालक के बीजो का चूर्ण सुबह शाम दूध मे छुहारे औटा कर लेना। समय ४० दिन, सहवास से परहेज।

२४ शुक्राणुओ की कमी :—

१ ५ ग्राम बथुआ के बीजो का चूर्ण सुबह शाम छुआरे वाले दूध के साथ लेना। समय ४० दिन। सहवास से दूर।

२५ नपुसकता :—

१ त्रिफला, घी और शहद मिलाकर सेवन करे–याद रहे कि शहद और घी बराबर न हो।

२. बड का दूध ५-७ बूद बतासे मे डाल सूर्य उदय से पहले खाली पेट लेने मे एक हफ्ते मे दूर।

२६ मूत्र नलो मे जलन :—

१. चौलाई के पत्ते मुट्ठी भर गर्म पानी मे उबाल थोडा ठण्डा होने पर मलकर छानकर आधा आधा कप दिन में तीन बार। पेशाब खुलकर आयेगा और जलन खत्म हो जायेगी।

२. पालक के पत्तों का रस पचास ग्राम दिन में तीन बार। पेशाब की जलन व रुकावट दूर।

२७. पेशाब मे खून :—

कुलफा पत्तो का रस पचास पचास ग्राम दिन मे तीन बार। एक हफ्ते मे चमत्कारी प्रभाव।

२८ फेफडो मे सूजन :—

पालक के पत्तों के रस से कुल्ले कर दो तीन बार थूकना। इसके बाद छोटे-छोटे घूट पीना। यदि सर्दी लगने से फेफडो मे सूजन हो तो पालक का पचाग (पत्ते, शाखा, फूल, छाल और मूल) मुट्ठी भर लेकर काढा बनाइये और छोटे छोटे घूट लेकर पीजिये और सूजन को दूर भगाइये।

२९ फेफडो से खून :—

बथुआ का रस पीने से टी०बी० के कीटाणु भी नष्ट हो जाते हैं। मुंह से खून आना बन्द हो जाता है। (क्रमशः)

विशेष गुण सम्पन्न इलायची

इलायची भारत में उगाये जाने वाले पौधे से प्राप्त की जाती है। इसकी उपज सर्वाधिक तमिलनाडु, केरल तथा कर्नाटक में होती है। इसके लिए ढलवा भूमि, कोहरा तथा नम हवा उपयुक्त जलवायु होती है।

इलायची जो स्वय मे एक वैद्य है, हमारी शान है। यह जहा दूसरो को पेश करने का अजीबो-गरीब तोहफा है, वहीं मुह की दुर्गन्ध दूर करने की एक महौषधि भी हैं।

इलायची अपनी अत्याधिक सुगन्ध एव विशिष्ट स्वाद के कारण विश्व प्रसिद्ध हैं, जिससे इसका विदेशो मे भी निर्यात किया जाता है। यह जहां विचित्र व्यजनो मे काम आती है, वहा अनेक प्रकार के रोगो मे भी इसका उपयोग किया जाता है।

इलायची को भारत के विभिन्न क्षेत्रो मे जहा भिन्न-भिन्न नामो से पुकारा जाता है, वहीं इसका महत्व और अधिक हो जाता है। वनस्पति विज्ञान में जहा इसे कार्डमोम के नाम से पुकारा जाता है वहा बगाली मे इसे छोटी इलायची, मिस्र में 'एलम' सस्कृत मे 'ऐला' और गुजराती मे 'एलजी' आदि कहा जाता है।

इलायची को मान प्रतिष्ठा का प्रतीक भी माना जाता है। इसके सम्बन्ध मे एक कहावत चरितार्थ है कि 'मान के लिये एक इलायची काफी है।" वैसे भी जहा नाश्ते अथवा भोजन के बाद सौफ, मिश्री आदि पेश की जाती है, वहा इलायची भी जरूर पेश की जाती है। इलायची के बिना न तो सौफ अच्छी लगती है और न मिश्री। मगर हा सौफ व मिश्री के बिना इलायची अकेली ही अपने आपमें पर्याप्त है। इसे जहा कुछ लोग मुह की दुर्गन्ध दूर कर सुगन्ध के लिये प्रयोग करते हैं, वहा कुछ व्यक्ति मुंह की खुश्की मे इसका उपयोग करते है। पान मे इसका प्रयोग सर्वाधिक होता ही है।

इलायची जहाँ खीर, आइसक्रीम, चाय और अन्य स्वादिष्ट व्यजनो मे भरपूर रूप मे इस्तेमाल की जाती है, वहा विभिन्न रोगो मे भी इसका भरपूर योगदान है। इसलिए इसे स्वय में एक वैद्य कहा जाता है।

बदहजमी—घी, तेल व भाय पदार्थो का सेवन करने पर हुई बदहजमी के समय इलायची का प्रयोग किया जाता है, जो काफी गुणकारी सिद्ध होता है।

मोटापा—मोटापे को कम करने मे इसका विशेष योगदान है।

पीलिया—पीलिया जैसे भयकर रोग मे इलायची वास्तव मे राम बाण का काम करती है।

बवासीर—इलायची की तासीर ठण्डी होने के कारण यह बवासीर मे भी अति गुणकारी है।

कफ—कफ जैसे विशिष्ट रोगो को नष्ट करने में इलायची का काफी योगदान रहता है।

पित्त—इलायची के सेवन से पित्त वाले रोगो को आराम पहुंचता है।

अणुबम से भी खतरनाक है 'अखिल इस्लामवाद'

— प्रो० शेर सिंह —

अफगानिस्तान, तुर्की ईरान, चीन आदि देशों से घिरे हुए तुर्कमेनिस्तान, अजरबैजान, उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान आदि रूस के रिपब्लिकों मे जहा मुसलमानों का बहुमत है, रूस से अलग होने की बात चल पड़ी है। अर्मीनिया ने अपने आपको बाल्टिक के रिपब्लिकों की तरह स्वतन्त्र भी घोषित कर दिया है। उन रिपब्लिकों मे कुछ जगहो पर फसाद भी हुए है और लोग हताहत हुए हैं। चीन के प्रदेश सिक्याग, जिनज्यांग में भी अवस्था बिगड रही है। मुस्लिम अलगाववाद और आतंकवाद ही तीनों देशो को अस्थिर करने और तोडने मे लगा हुआ है। इस कारण इस क्षेत्र में राजनैतिक परिवर्तन आया है और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो के समीकरण बदल रहे है। —सम्पादक

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हीरोशिमा और नागासाकी पर अणुबमों से किया गया हमला बीसवी सदी की सब से बड़ी त्रासदी है, ऐसा सभी मानते हैं। लेकिन युद्ध की समाप्ति के बाद जहा एक और आणविक शस्त्रो की होड मे विश्व की महाशक्तिया विलक्षण मानवीय प्रतिभा और दुर्लभ नैसर्गिक ससाधनो को झोकती रही, वहीं सम्पूर्ण विश्व समाज से इस होड को समाप्त कर देने का दबाव भी उत्तरोत्तर बढता गया। परिणाम यह है कि आणविक शस्त्रो के विसर्जन की प्रक्रिया का श्रीगणेश हो चुका है।

लेकिन इक्कीसवी शताब्दी मे जिस भयकर त्रासदी की कल्पना से आज विश्व आतंकित व चिन्तित है वह आधी से ज्यादा दुनिया मे फैला, कट्टरपथी मुल्लाओ द्वारा सचालित अखिल इस्लामाबाद और उससे जनित अलगाववाद और आतंकवाद की मुहिम है। इसमे तनिक भी सन्देह नही कि इस्लामी कट्टरपथी का यह बम अणुबम से कहीं अधिक विनाशकारी हो सकता है, क्योंकि इसकी प्रतिक्रिया मे दूसरे मजहबो मे भी कट्टरवाद फैलेगा और यह टकराव मानव समाज के विनाश के लिए उत्तरदायी होगा। ब्रिटेन की पूर्व प्र० मन्त्री श्रीमती थैचर विश्व को यह चेतावनी दे रही है कि इक्कीसवी शताब्दी मे इस्लामी कट्टरपथी मुल्ला ही विश्व के सामने सबसे बडी चुनौती बनेंगे।

अखिल इस्लामाबाद के नजरिये को अमलीजामा पहनाने के लिए जो साधन चाहिए थे, अरब देशो से वे मिलने लगे। छप्पर तोडकर नही, पाताल फोड कर बेतहाशा पेट्रो डालर अरब देशों के हाथ लगे। इसके लिए न उनको कुछ तप करना पड़ा और न परिश्रम। इन देशो की मरूभूमि के नीचे तेल निकल आया और उसको निकालने के लिए अन्य परिश्रमी देशो द्वारा विकसित यन्त्र और तकनीक सेवा मे उपस्थित हो गये। पहले लीबिया ने इस्लामिक परमाणु बम बनाने के लिए अरबो रुपए पाकिस्तान और उसके वैज्ञानिको को देने की घोषणा की और बाद मे अमेरिका और लीबिया का विवाद छिड़ने के बाद वही काम सऊदी अरब ने किया। पाकिस्तान परमाणु बम बना पाया है या नही और यदि बना पाया है तो इस्तेमाल कर पाएगा कि नही, यह तो निश्चय से नही कहा जा सकता। परन्तु अखिल इस्लामवाद द्वारा जनित अलगाववाद तथा आतंकवाद रूपी इस्लामिक बम का विस्फोट तो जगह-जगह हो रहा है।

अखिल इस्लामवाद के चलते अब ईरान, सऊदी अरब तथा अन्य मुस्लिम कट्टरवादिता मे विश्वास रखने वाले देश जिन-जिन देशो मे मुसलमान रहते है उनके अन्दरूनी मामलो मे दखल देना अपना अधिकार मान बैठे हैं, और उन देशो को अस्थिर करने और तोडने के लिए अलगाववादियो को सब प्रकार की सहायता पहुचाने को हक बजानिब कहने मे जरा भी सकोच नही करते। कुछ तो अरब देशो के नेताओ, मुसलमानो व अमीरो की महत्वकांक्षाओ के कारण कुछ आर्थिक स्वार्थों के टकराव से उपजे विवादो के कारण और कुछ परिश्रमी देशो की कूटनीति के कारण अरब देश आपस मे बटे हुए हैं, नही तो अलगाववाद और आतंकवाद भारत रूस और चीन मे और भी विकराल रूप धारण कर लेते। इन देशो मे जो खेल हो रहा है वह दिन प्रति दिन बढ रहा है और इनमे सबसे बड़ी भूमिका पाकिस्तान की है क्योंकि मध्य एशिया में वह फ्रन्ट लाइन देश माना जाता है और उसकी पीठ पर है अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के देश।

पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों ही अपने अपने आपको मुस्लिम देश कहते है। पाकिस्तान मे हिन्दू तो नाम मात्र ही रह गए, सिन्ध से वे भी पलायन कर रहे हैं। बाग्ला देश से भी बहुत बड़ी सख्या मे हिन्दू और बौद्ध निकल आए हैं। जो हैं, उनको बराबर के नागरिक का अधिकार नही है। पाकिस्तान मे अहमदियो को कोई नागरिक अधिकार नही। मुहाजिर भी जैसे तैसे दिन काट रहे है।

अफगानिस्तान की हुकूमत का तख्ता पलटने के लिए अमेरिका ने जैसे ही पाकिस्तान को अफगान मुजाहिदीनो के लिए हथियार पैसा और अन्य साधन दिए, वैसे ही पाक ने मुजाहिदीन के साथ-साथ पजाब के सिख नौजवानो और कश्मीर के पाक समर्थक जवानो को हथियार प्रशिक्षण और दूसरे साधन देने शुरू कर दिए जब भारत ये तथ्य दुनिया के सामने रखता है तो वह भारत को अस्थिर करने और तोडने के लिए दी जाने वाली प्रमाणित मदद से भी साफ इन्कार कर देता है और प्रतिक्रिया में और अधिक मदद देने लगता है। अब जब अफगानिस्तान से रूसी फौजें वापस चली गई और मुजाहिदीन अफगानिस्तान की सरकार को नही उखाड सके, तब अमेरिका ने रूस से मिल कर सैनिक हल की बजाय समस्या का राजनीतिक हल निकालने की सोची। परन्तु दिल्ली के भागो छीका टूटा, इराक का द्वन्द्व अमेरिका और सऊदी अरब के साथ छिड गया। पाकिस्तान की सेना के अध्यक्ष और राष्ट्रपति ने बेनजीर को चलता किया और सऊदी अरब मे अमेरिका सेना आ गई। फारस की खाडी मे अमेरिका की सहायतार्थ पाकिस्तान अग्रिम पक्ति वाला देश बन कर खडा हो गया। अब फिर अमेरिका की नौसेना के तथा दूसरे आधुनिक हथियार और साधन उसके पास आ गये और उनके राष्ट्रपति इसहाक खा ने कश्मीर को पाकिस्तान मे मिला कर अपनी अधूरी क्रान्ति को पूरा करने की बात कह डाली।

२० अप्रैल १९७० को चीनी दूरदर्शन पर अचानक सूचना प्रसारित की गई जो तिब्बत में किए गए आजादी के लिए विरोध प्रदर्शनों से कही अधिक भय प्रसारक थी। ५ और ६ अप्रेल को सिक्याग मे हुई बर्बरतापूर्ण लडाई और हत्याओ के दृश्य दिखाए गये। उसके एक महीने बाद २४ मई को बी० बी० सी लन्दन के पेइचिंग स्थित सवाददाता ने विस्तार से बताया कि सिक्याग मे अलगाववादी मुस्लिम नेताओ ने उस क्षेत्र को चीन से अलग करने के लिए जेहाद की तैयारी कर ली थी और १३ अप्रैल को अबुल कासिम के नेतृत्व मे बगावत का शख क्षेत्र के बडे-बडे नगरो मे एक साथ बजाना था। परन्तु चीन के गुप्तचरो को सारी योजना का पता चल गया इसलिए ५ और ६ अप्रैल को ही धमाका हो गया। यह भी पता चला कि विदेशी शक्तियो द्वारा प्रेरित मुस्लिम कट्टरपथी [illegible] के द्वारा इस क्षेत्र मे अवैध रूप से गावो तक मे अनेक स्कूल खोल दिए गये थे जिनके द्वारा स्कूल के बच्चो मे साम्प्रदायिक और जातीय घृणा फैलाई जा रही थी। इन्ही कारणो से ५ और ६ अप्रैल की घटनाओ के बाद सिक्याग की पीपल्स कांग्रेस ने धार्मिक गतिविधियो पर नियत्रण के कानून बहुत कडे कर दिए है। फलस्वरूप न तो अब वहा कोई नई मस्जिद बन सकती है और न मुल्लाओ के द्वारा प्रचार हो सकता है। सिक्याग को २०वी शताब्दी के दूसरे दशक और उसके बाद बहुत दिनो तक पूर्वी तुर्किस्तान गणराज्य के नाम से जाना जाता था, उसका चीन मे विलय १९५० में हुआ था। रूस के तुर्किस्तान और सिक्याग के युघुर लोगो मे गहरा सम्बन्ध रहा है और युघुरो मे जब अशान्ति फैली तब ५०,००० युघुर सिक्याग छोड कर रूस के तुर्कमेनिस्तान मे चले गये।

मुस्लिम अलगाववाद और अखिल इस्लामवादी का प्रहार विशेष रूप से तीन देशो को झेलना पड़ेगा। वे तीन देश हैं भारत, रूस और चीन। भारत मे मुस्लिम आबादी करीब दस करोड है, रूस मे सात-आठ करोड और करीब-करीब इतनी ही चीन मे है।

अफगानिस्तान तुर्की ईरान चीन आदि देशो से घिरे हुए तुर्कमेनिस्तान, अजरबैजान उजबेकिस्तान, कजाकिस्तान आदि रूस के रिपब्लिको मे जहा मुसलमानो का बहुमत है रूस से अलग होने की बात चल पड़ी है। अर्मीनिया ने अपने आपको बाल्टिक के रिपब्लिको की तरह स्वतन्त्र भी घोषित कर दिया है। उन रिपब्लिकों मे कुछ जगहो पर फसाद भी हुए हैं और लोग हताहत भी हुए है। चीन

(शेष पृष्ठ ९ पर)

बृहद् गायत्री यज्ञ सम्पन्न

आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद द्वारा शनिवार दिनाक ८ जून १९९१ को आन्ध्र सारस्वत परिषद में आयोजित बृहत गायत्री यज्ञ प्रात. ८-३०बजे प्रारम्भ हुआ। इस अवसर के मुख्यातिथि थे, सुप्रसिद्ध आर्य समाजी नेता डा० टी० वी० नारायण, आन्ध्र प्रदेश पब्लिक सर्विस कमीशन के सेवा-निवृत्त, सदस्यो ने विधिवत् झण्डाबन्दन किया जब कि आर्य वीर दल के सूबेदार व्यकटेश ने झण्डा-वन्दन का अनुशासन दिया। तेलगाने के नगर के अतिरिक्त विभिन्न जिलो से हजारों आर्य प्रतिनिधि समारोह मे उपस्थित रहे। डा० टी० वी० नारायण जी ने अपने सदेश मे आर्य समाजियो को सगठित होकर न केवल समस्त भारत मे अपितु विश्वमच पर आर्य झण्डा पहराने की कामना की।

सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री प० मदन मोहन विद्यासागर ने बृहत गायत्री यज्ञ के "ब्रह्मा" की भूमिका अदा की। प्रात: के सत्र में अनेक वक्ताओं–अध्यक्ष सर्वश्री क्रान्तिकुमार जी कोरटकर, टी० नरहरिराव, के० नरसिह्मा रेड्डी, सूर्यानारायण, सम्पादक ढका (तेलुगु-अग्रेजी) रामदेव शास्त्री, त्रिभुवना देवी, आदि ने सम्बोधित किया।

साय के सत्र मे आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के अध्यक्ष श्री क्रान्ति कुमार कोरटकर ने उपस्थित आर्य बन्धुओ से घोषणा-पत्र पर आधारित दस सूत्री प्रतिज्ञा सामूहिक रूप से करायी, जो इस प्रकार है :—

१. हम सब आर्य हैं। सच्चे आर्य बनेंगे।

२. वैदिक धर्म समूचे संसार का हित चाहता है। हम उस धर्म का पालन करने में हर सम्भव त्याग करेंगे।

३. आर्यवर्त हमारे देश का मूल नाम है। सविधान मे इस तथ्य को समाविष्ट करायेंगे।

४. सच्चे पथ-निरपेक्ष राज्य की कल्पना को प्रतिपादित करेंगे। और इस को अमल मे लाने के लिए हर सम्भव त्याग करेंगे। सविधान के निर्देशन तत्वो में उल्लिखित धारा ४४ के कार्यान्वियन कराने हेतु हम सरकार को मजबूर करेंगे।

५. हमारी सस्कृति मनोविकास का वह स्तर है जो भारतीयता से निकल कर हमारे बातचीत, व्यवहार और रीति-रिवाजो मे प्रस्फुटिव होती है। इसकी रक्षा के लिये, हम हर सम्भव त्याग करने के लिये उद्यत रहेगे।

६. हम प्रादेशिक राष्ट्रीयता नहीं सांस्कृतिक राष्ट्रीयता में विश्वास रखते हैं। इस विश्वास को समूचे राष्ट्र का विश्वास बनायेंगे।

७. हम सब एक हैं। प्रादेशिकता, भाषा, सांस्कृतिक, मजहब के आधार पर अल्प सख्यक, तथाकथिक सामाजिक न्याय के नाम पर हमे विभक्त नही किया जा सकता।

हम इस सम्बन्ध मे भारतीय सविधान को बदल डालने के हमारे सकल्प को सरकार से मनवा कर रहेंगे।

८. सच्चे वर्णाश्रम व्यवस्था मे हम विश्वास रखते हैं। भारतीय सविधान की धारा ३८ को सही दिशा देकर कार्यान्वित करायेंगे।

९. देश में बढती हुई हिंसा को रोकना तथा विघटनवाद को खत्म करने में हम हर सम्भव त्याग करेंगे।

१० देश की अखण्डता को बचाये रखने मे हम आर्य हर सम्भव त्याग करेंगे।

साय ४-३० बजे विशाल शान्ति जुलूस, यज्ञ स्थल से निकलकर सरदार पटेल प्रतिमा बाग आम तक पहुचकर सभा के रूप में बदल गया। पं० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव जी वरिष्ठ उपाध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश की एकता एव अखण्डता की रक्षा हेतु आर्य जनो से अपना लहू बहाने का आह्वान किया। सभा मे देश के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी की जघन्य हत्या की कठोर शब्दो मे निन्दा की गई और मांग की गई इस हत्या के पीछे छद्म-तत्त्वों का पता लगाकर उन्हे कठोर सजा दी जाए।

—डा० शीलम् वेंकटेश्वर राव

पुस्तक समीक्षा

शाश्वत वाणी

शाश्वत वाणी मासिक का साहित्यकार गुरुदत्त श्रद्धांजलि अक पिछले दिनों प्रकाशित किया गया। वैद्य गुरुदत्त की लम्बी साहित्य यात्रा का विवेचन इस पत्रिका में किया गया। पत्रिका को देखने से ऐसा प्रतीत नही होता कि उस महान लेखक के लिए समुचित श्रद्धाजलि इस अंक में प्राप्य होंगी। इसका कलेवर भव्य नही है। इसके पृष्ठों की संख्या भी मात्र ४८ है, परन्तु फिर भी इस पत्रिका को लपक कर पढने को मन करता है। इसका एक मात्र कारण यही है कि इस पर लिखा है—'गुरुदत्त' आगे छपा है गुरुदत्त का प्रभावी चित्र इसके सम्पादक अशोक कौशिक ने परिश्रम करके केवल वे ही लेख इसमें दिए हैं जो गुरुदत्त के जीवन के विभिन्न आयामो को उजागर करते हैं। अनावश्यक औपचारिकताओं को तो कही स्थान ही नहीं दिया गया। किसी भी महान व्यक्ति के निधन पर श्रद्धासुमन लिखना मात्र औपचारिकता ही है। वास्तविक आवश्यकता तो इस बात की होती है कि जीवन मूल्यो की रक्षा के लिए अथवा जीवन मूल्यो को ऊचा उठाने के लिए उस व्यक्ति ने क्या किया था। इस पहलू को ध्यान में रख कर ही अशोक कौशिक ने देश, धर्म और जाति के सरक्षक गुरुदत्त के जीवन के विभिन्न आयामों तथा उनकी विभिन्न क्षेत्रो में हुई उपलब्धियो का आकलन, इस स्मृति अक में किया है। वास्तव में जीवन उसी का सार्थक है जिसके आश्रय में अन्य अनेक व्यक्ति अपना जीवन बिताते हैं, अन्यथा अपना पेट तो अपनी छोटी सी चोंच से कौआ भी भर ही लेता है। यह उक्ति हितोपदेशक की है और यह अक्षरश: गुरुदत्त पर चरितार्थ होती है।

इस अक में अनेक धुरन्धरो के शब्द सग्रहीत हैं। उनमें प्रमुख है—मधुकर दत्तात्रेय देवरस, वीरेन्द्र सिह परमार, बलराज मधोक, डा० विद्यासागर, शिवकुमार गोयल, कृष्ण मित्र, नरेन्द्र अवस्थी, ऋषि भामचन्द्र कौशिक, डा० प्रकाश भारती, आशा विपानी, डा० मोहनलाल श्रीवास्तव, अश्विनी कुमार वर्मा, श्रीमती कमला रत्नम् प० इन्द्रसेन शर्मा, सुकुमार महाजन, भानुप्रताप शुक्ल। यह लम्बी सूची देने में मेरा अभिप्राय यह बिल्कुल नहीं है कि पाठक इन महान लोगों के नामो से अभिभूत हो जाए। मेरा अभिप्राय मात्र यह बतलाता है कि ये लोग किस सीमा तक गुरुदत्त के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रभावित रहे हैं।

अन्त में वैद्य गुरुदत्त के १९८ उपन्यासो की सूची दी गई है। दर्शन विज्ञान, समाज व राजनीति पर उनके लिखे ३४ ग्रन्थो की सूची भी दी गई है। इन सूचियो को स्थान दिए जाने से इस स्मृति अक की उपयोगिता बहुत बढ़ गई है। वैद्य गुरुदत्त ने एक पुस्तक और लिखी थी—धर्मवीर हकीकत राय। सम्भवत: यह पुस्तक सम्पादक के ध्यान में नहीं आयी। धर्मवीर हकीकत राय की भूमिका में वैद्य गुरुदत्त ने लिखा था कि मुझे धार्मिकता प्रदान करने में हकीकत राय की कहानी का विशेष योगदान है और मैं यह पुस्तक लिख कर अपने को हलका अनुभव कर रहा हूं। ऐसा था उस महान व्यक्ति का विनीत भाव। इस पुस्तक को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाशित किया था।

यह लघु स्मृति ग्रन्थ हमें उस दीपक की याद दिलाता है जो दूसरो को प्रकाशित करता हुआ, स्वय, तिल-तिल जलता रहा और अन्त में घोर अन्धकार में विलीन हो गया।

—डा० धर्मपाल

अणु बम से भी खतरनाक...

(पृष्ठ १ का शेष)

के प्रदेश सिक्यांग जिवज्याग मे भी अवस्था बिगड़ रही है। मुस्लिम अलगाववाद और आतंकवाद ही तीनों देशों को अस्थिर करने और तोड़ने मे लगा हुआ है। इसी कारण इस क्षेत्र में राजनैतिक परिवर्तन आया है और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के समीकरण बदल रहे हैं। अब रूस और चीन एक दूसरे के मित्र हैं, भारत और चीन के सम्बन्धों में भी सुधार आया है और आशा है कि उनमे उत्तरोत्तर सुधार होता जायेगा। इन तथ्यों से यह वास्तविकता विश्व के सम्मुख स्पष्ट हो गई है कि आतंकवाद जहां कहीं भी वार करता है उसके पीछे मुस्लिम अलगाववादियों का ही हाथ होता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य

१	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम द्वितीय) प्रत्येक		१.५०
२	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२ ००
३	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३ ००
४	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
६	धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५ ००
७.	फलैश आफ ट्रूथ	(डा० सत्यप्रकाश वर्मा)	२ ००
८	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	,, ,,	२ ००
९.	एटोनामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०	आर्यों का आदि देश	,, ,,	२ ००
११	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	,, ,,	२५ ००
१२	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	,, ,,	२ ००
१३.	चत्वारो वै वेदा	,, ,,	५ ००
१४	द्वैतसिद्धि	,, ,,	५ ००
१५	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ में	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	१०.००
१६	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५ ००
१७	हसता चल, हसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६ ५०
१८	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
१९	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२०	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
२१.	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
२२	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकडा

नोट उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नही लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

चुनाव समाचार

—२ जून १९९१ को सम्पन्न हुए साधारण वार्षिक अधिवेशन मे श्री चमन लाल जी आनन्द की अध्यक्षता मे निम्नलिखित अधिकारीगण निर्वाचित घोषित किए गए :—

प्रधान—श्री शांति प्रकाश बहल,

मंत्री—श्री गणेश दास ग्रोवर,

कोषाध्यक्ष—श्री हरवंस लाल सुभाष।

—सभी सदस्यो की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्य समाज साकेत की साधारण सभा की आगामी बैठक रविवार ३० जून १९९१ को प्रात ९-३० बजे (७-३० बजे से आरम्भ साप्ताहिक सत्सग के पश्चात्) होगी।

—राजेन्द्रपाल गुप्त मंत्री

(पृष्ठ २ का शेष)

हैं। यजुर्वेद का मत्र है—'ओ३म् आत्मदा बलदा कस्मै देवाय हविषा विधम" जो कि इस प्रकार से है, जो आत्म ज्ञान और बल को देने वाला है, जिसकी उपासना सब करते हैं और जिसकी छाया मोक्षदायक है जिसको न मानना मृत्यु का कारण है, हम लोग उसी परमात्मा की उपासना करे।

धर्म के दस लक्षण हैं—

(१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय=चोरी न करना (४) ब्रह्मचर्य=सब प्रकार के मैथुनो से दूर रहना, (५) अपरिग्रह=जरूरत से ज्यादा इकट्ठा न करना, (६) शोच=बाहर, भीतरी पवित्रता, (७) सन्तोष=सुख-दुख मे समान भाव (८) तप=धर्म पालन के लिए कष्ट सहना (९) स्वाध्याय=ईश्वर के गुणो का कीर्तन (१०) ईश्वर प्राणिधान=ईश्वर के स्वरूप का ध्यान' उनकी आज्ञा पालना।

सी-१/डी-२ (एन-१९६) आई० आई० टी० कैम्पस
होज खास, नई दिल्ली-११००१६

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 27-28-6-1991 Licence to post without prepayment, Licence No U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३६

पुस्तक समीक्षा

मद्यनिषेध गीतमाला

६ दिसम्बर १९८९ को चौबीसी मेहम से प्रारम्भ हुआ मद्यनिषेध जुलूस नई दिल्ली में बोटक्लब पर १९ सितम्बर १९८९ को पहुंचा था। उस समय बोट क्लब पर उपस्थित विशाल जनता को श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, प्रो० शेरसिंह तथा श्री सूर्यदेव ने सम्बोधित किया था तथा राष्ट्रपति द्वारा ज्ञापन पत्र न लेने के कारण राष्ट्रपति भवन पर सत्याग्रह भी किया था। उस समय मद्य निषेध के लिए जो गीत गाए गए थे अथवा उससे पहले गाए गए थे, अथवा सामान्य जनता को जागृत करने के लिए अभी भी गाए जा रहे हैं अथवा गाए जाने चाहिए, उन सभी गीतों को ब्रह्मचारी नन्द किशोर ने इस छोटी सी पुस्तिका में सम्मिलित किया है।

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। ऊधर्न नग्ना जरन्ते।

(ऋ ८।२। २)

(शराब को दिल खोलकर पीने वाले दुष्ट लोग आपस में लड़ते हैं और नंगे होकर व्यर्थ बड़ बड़ाते है।)

(मद्य निषेध गीतमाला-प्रथम भाग-ब्र० नन्द किशोर एम.ए. विद्यावाचस्पति, आचार्य, वेद मन्दिर ज्वालापुर (हरिद्वार)-मूल्य ५-०० रुपये।

—डॉ० धर्मपाल

श्री स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती अमृतसरी साहित्य माला

यह आर्य समाज के सौभाग्य है कि वैदिक विद्वान स्थान-स्थान से साहित्य प्रकाशन और उसके नि:शुल्क अथवा लागत मात्र मूल्य पर वितरण के द्वारा वैदिक धर्म तथा आर्य समाज की सेवा कर रहे हैं। पिछले दिनो आर्य समाज नजफगढ के वार्षिकोत्सव पर वीतराग सन्यासी श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती अमृतसरी से भेंट हुई। सन्यासी के नाम के साथ स्थान विशेष का नाम अटपटा सा लगता है। उनकी अनेक पुस्तको, ट्रैक्टो, विज्ञापन पत्रको का प्रकाशन श्री रोशन लाल मदान, एफ ८, ओ३म् विहार, उत्तम नगर नई दिल्ली-५९ द्वारा किया गया है। ऋषि वाणी भाग १ और भाग २ मे उन्होने सत्यार्थप्रकाश से ऐसे विशेष प्रसग लिए हैं जो नवयुवको का मार्ग प्रशस्त करने वाले हैं। 'ऋषि वाणी'। भाग ३' मे उन्होने सक्षेप मे उन मन्तव्यो का प्रकाश किया है जिन्हे आर्य समाज मानता है। 'तुलसी के राम' पुस्तक मे उन्होने बताया है कि 'राम' एक महापुरुष हैं तथा वे स्वय भी परमात्मा की आराधना करते हैं। वह परमात्मा कैसा है, यह सरल भाषा मे समझाया गया है। 'श्रीकृष्ण और आर्य समाज' पुस्तिका मे उन्होंने भागवत तथा महाभारत के कुछ प्रसगो की वैदिक व्याख्या प्रस्तुत की है। 'वेद मन्त्र' पुस्तिका मे कुछ चुने हुए वेद मन्त्रो की हिन्दी और अग्रेजी मे सरल व्याख्या दी गई है। 'मन मन्की' पुस्तिका मे यजुर्वेद के छ: 'शिवसकल्प मन' मन्त्रो की सरल व्याख्या दी गई है। उसके अतिरिक्त उन्होने प्रचारार्थ अनेक छोटे-छोटे कार्ड भी वितरणार्थ प्रकाशित कराये हैं।

—मूलचन्द गुप्त

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ म मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अक ३५ | रविवार, ७ जुलाई, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

वेदवाणी

—नारायण नागपाल—

"वेद वाणी का इतना महत्व है कि कई विश्वविद्यालयो मे वेदों पर पी० एच० डी० की उपाधी (Ph. D.) प्रदान की जा रही है और वेदो पर अभी भी अनुसंधान कार्य चल रहे हैं। वेदो को इतना पसन्द किया जाता है कि विदेशो में वेद पढ़े जा रहे हैं। वेदों का कई भाषाओं मे अनुवाद हो चुका है। लगभग पूरे विश्व मे वेदो का प्रचार-प्रसार, कार्य चल रहा है, खासतौर पर अमेरिका, रूस, लन्दन, मौरिशिस, नेपाल, इण्डोनेशिया, केनिया, अफ्रीका, इत्यादि मे। विश्व के हर कोने में आर्य समाज मन्दिर खुले हुए हैं और ,वेदो की वाणी पर चर्चा होती हैं। वेद मार्ग पर विश्व के लोग चल रहे है और धर्म लाभ उठा रहे है।

महान सन्त तुलसी दास ने पूरी रामायण में वेद की वाणी पर चलने को कहा है और यहा तक कि प्रारम्भ में ही बाल काण्ड मे वेद मार्ग पर चलने का उपदेश दिया है। अपनी चौपाइयों, दोहो मे, वेदो मे ही बताये गए मार्ग पर कई सन्तों, मुनियो, ऋषियों ने ध्यान/नाम पर बल दिया है अपनी-अपनी कृतियो मे, नाम/ध्यान उठते बैठते, जागते, सोते नाम/ध्यान मे ही हम सबका कल्याण है। अपने प्रवचनो, उपदेशो, कथाओ मे सभी सन्त, महात्मा नाम/ध्यान की ही हमेशा चर्चा करते हैं।

मुनि व्यास ने कहा है कि वेद का महामन्त्र गायत्री और ब्रह्मा मे कोई भिन्नता नहीं है। गुरु विश्वामित्र ने भी वेद को ही गायत्री मन्त्र की महत्ता बताते हुए कहा है। गायत्री मन्त्र के बारे मे श्री रामकृष्ण परम हस ने कहा है कि गायत्री मन्त्र के जाप से हमे बडी शक्ति मिलती हैं। समय-समय पर देश विदेशो मे वेद सम्मेलनो का भी आयोजन किया जाता है। वेद धर्म ग्रथों के रूप मे माने जाते हैं। मुनि व्यास, मुनि जैमिनी, पातजली आदि और गुरु शकराचार्य ने वेदो को खूब माना है। उनका खूब गुणगान किया है।

वेद न केवल हिन्दुओ का अपितु पूर्ण प्राणी मात्र का धर्म ग्रथ है, क्योंकि वह अनेक विषयो पर प्रकाश डालता है और परमात्मा का ही उपदेश-आदेश (वचन है)। परमात्मा की पवित्र वाणी है। मनु महाराज, मुनि याजवलक्य, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द जी ने भी वेदो को धर्म ग्रन्थ माना है। वेदो मे कई जगह पर अति स्पष्ट शब्दो में ईश्वर के स्वरूप का चित्रण किया गया है और उसकी उपासना का आदेश दिया गया है।

वेद का आदेश है कि हमे शुद्ध आचरण वाला होना चाहिये। स्वामी दयानन्द जी ने कहा है कि वेद सब सत्य विद्याओ की पुस्तक है। वेद का पढना, पढाना, सुनना, सुनाना सब आर्यों (सज्जन पुरुषो) का परम धर्म है। वेद ईश्वर की निर्मल वाणी है। स्वामी दयानन्द सरस्वती पहले व्यक्ति थे जिन्होने वेदो के अर्थों को समझाने का बीडा उठाया और वेदों का डका बजा दिया पूरे विश्व मे। दक्षिण अफ्रीका, बर्मा, थाईलैण्ड, सिगपुर आदि मे वेद पर अध्ययन जारी हैं और वहा के कई लोग वेद वाणी में विश्वास रखते हैं, वेदो के उपदेश के अनुसार आचरण करते हैं।

अथर्व वेद का मन्त्र जिसमे हम सबको आदेश/निर्देश दिया गया है कि हे मनुष्यों! तुम्हारे जीवन मे उन्नति होनी चाहिए अवनति नही। ऋग वेद का मन्त्र है जिसमे प्रभु से प्रार्थना की गई है कि हे जगदीश्वर! आपके अनुग्रह से सबको धारण करने वाला प्राण वायु हमारे लिये शान्तिदायक हो, सूर्य भी हमारे लिए सुख देने वाला हो। वसुन्धरा जो कि नाना प्रकार के पदार्थ हमे उपलब्ध कराती है हमारे लिए सुखदायिनी हो ध्रुवलोक और पृथ्वीलोक हमारे लिए मगल कारक हो। वेद और शास्त्रों मे परमात्मा का निज नाम ओ३म् है और उसी की उपासना (स्मरण करना) श्रेष्ठतम है। वेदो मे जो करने, पालन करने को कहा गया है, वही करना चाहिए और जिस गन्दे विचार को छोडने को कहा गया है हमे छोड़ देना चाहिए। श्रीराम चन्द्र जी जब १४ वर्षों के लिए बनवास गये तो तब पुत्र वियोग मे महाराज दशरथ ने अपने प्राण त्याग दिए। प्राण त्यागने के पश्चात् उनका अन्तिम सस्कार सरयू नदि के तट पर वेद मन्त्रो द्वारा ही सम्पन्न किया गया था। इससे हमे यह मालूम होता है कि वेद मन्त्रो का और वेदो का कितना महत्व है कि आदि काल से आज तक वेद मन्त्रो द्वारा ही सारे कार्य प्रारम्भ किए जाते हैं और वेद मन्त्रो द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। अथर्व वेद मे मास का सेवन निषेध लिखा है। आपने देखा होगा, सुना होगा कि हमारे देश के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री राजीव गाधी जी का अन्तिम सस्कार भी वैदिक रीति से ही किया गया था।

अस्माकं वीराः उत्तरे भवन्तु

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर मे ९ जून से २३ जून तक लगाया गया। डा० देवव्रत आचार्य के निर्देशन में विभिन्न शारीरिक सैन्य विद्याओ के सुयोग्य विद्वानो ने आर्यवीरों को प्रशिक्षित किया। इस शिविर मे दिल्ली, हरयाणा, पजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र और कर्नाटक के आर्य वीर प्रशिक्षण प्राप्त करते रहे हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने मगलवार १८ जून को आर्य वीरों का अभिवादन स्वीकार किया तथा सैन्य मार्च का निरीक्षण किया। इस अवसर पर आयोजित सभा मे डा० धर्मपाल ने कहा कि किसी भी कार्य को करने के लिए दृढ़निश्चय और अथक परिश्रम की आवश्यकता है। इसके लिए दिशा और लक्ष्य ज्ञान आवश्यक है। यदि लक्ष्य का ज्ञान नहीं होगा तो सारा परिश्रम व्यर्थ जाएगा और अभीष्ट की प्राप्ति नही होगी। इन शिविरो के माध्यम से हम इस युवा शक्ति को मानव कल्याण के लिए समर्पित, आचारवान्, चरित्रवान और बलशाली बनाना चाहते हैं। हमे इस बात की प्रसन्नता है कि आचार्य जी के नेतृत्व मे आर्य वीर दल उत्तरोत्तर प्रगति कर रहा है।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

आर्य समाज : आज के परिप्रेक्ष्य में

— आचार्य प्रेमभिक्षुः एम० ए०, सम्पादक "तपोभूमि" —

कुछ लोगो का विचार है कि—"आर्य समाज के सिद्धान्त आदर्श ऊचे और महान है, पर एह आज के परिप्रेक्ष्य मे वास्तविकता से मेल नही खाते।" जबकि सच्चाई यह है कि आर्य समाज के आदर्श और सिद्धान्त मात्र ऊचे और महान ही नही वरन् वे स्वयं मे किसी भी युग के लिए एक वास्तविकता है, वे सत्य, सनातन, शाश्वत और अपरिवर्तनीय एव सार्वभौम है।

यहां स्मरणीय है कि आर्य समाज न तो एक मत, पथ (दयानन्द पथ) या सम्प्रदाय है और न ही एक सामयिक आन्दोलन है, जिसका महत्व समय बीतने पर प्राय समाप्त या कम हो जाता है। ध्यान रहे कि आर्य समाज का मूलाधार स्वय परमेश्वर प्रभु की कल्याणी-वाणी-वेद है। इसीलिए आर्य समाज के तृतीय नियम मे—"वेद का पढना-पढाना और सुनना सुनाना परम धर्म है।" ऐसी व्यवस्था दी गई है, ऋषि दयानन्द कृत "सत्यप्रकाश" आदि के लिए यह व्यवस्था नही हैं। आर्य समाज के दस नियमो मे एक भी स्थल पर "दयानन्द" शब्द नही आया है। आर्य समाज मे प्रवेश के समय "बुद्धं शरण गच्छामि" की भाति 'दयानन्दम् शरण गच्छामि" कहने की आवश्यकता नही होती। तो वेद ही आर्य समाज का सर्वस्व है और आर्य समाज वेद प्रचारक सगठन है। चूंकि वेद सार्वभौम है, अत. आर्य समाज सार्वभौम है। और पवित्र वेद के प्रकाश मे ही वह मानवतावादी और राष्ट्रवादी है।

स्मरण रहे वैदिक धर्म ही सनातन धर्म है, मानव धर्म है, शाश्वत और सार्वभौमिक धर्म है। (वस्तुत धर्म एक ही है, मत पन्थ, सम्प्रदाय अनेक हैं) आर्य समाज के दस नियम सार्वभौम मानव धर्म के स्वर्ण सूत्र हैं। सत्य, न्याय, प्रेम, सेवा, परोपकार, सदाचार, सद्-व्यवहार और मानवता एव सच्ची-आस्तिकता ही इन नियमो की आत्मा है। "ससार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है।"

प्रकट है कि ऐसा सगठन कभी युग बाह्य नही हो सकता। हा, आज के वातावरण मे सत्य, न्याय, सेवा-सदाचार और परोपकार की बाते "युग बाह्य" समझी जा रही हैं और इसीलिये आर्य समाज को कोई युग बाह्य और वास्तविकता से दूर भले ही कहे। पर सत्य यह है कि इस लिए ही तो आर्य समाज युग की महती आवश्यकता है, क्योकि रोग अधिक व्यापक हो तो चिकित्सक की और भी आवश्यकता है।

यह ठीक है कि शराब मास के बढते हुए दौर, रहन-सहन और आचार-व्यवहार मे पाश्चात्य सभ्यता एव अग्रेजियत के बढते हुए दुष्प्रभाव, जीवन के प्रति सर्वथा अध्यात्म-शून्य अति भौतिकवादी दृष्टिकोण (आर्य समाज अध्यात्म और भौतिकता के समन्वय को स्वीकारता है) तथा वर्तमान युग के प्रतीक भ्रष्टाचार, दुराचार, इसी प्रकार धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक क्षेत्र मे बढते हुए काले बाजार का आर्य समाज किसी भी रूप मे समर्थन नही कर सकता, और इसी लिए यदि आर्य समाज मे भीड कम हो तो यह तो उसके लिए गौरव की बात है। आर्य समाज को भीड नही सदाचार और चरित्र चाहिए। यहा हम भूले नही 'सत्यमेव जयते मातृम्' अन्तत विजय सत्य की ही होगी। सत्य अमर है, मानवता अमर है, देवत्व अमर है, अत आर्य समाज अमर है।

कुछ सज्जनो को आर्य समाज की गतिविधिया इस लिए भी कम प्रतीत हो सकती है, क्योकि आर्य समाज शोर-शराबे, मात्र प्रदर्शन और असत्य मूलक एव अराष्ट्रीय प्रवृत्तियो मे विश्वास नही रखता, जो आज के युग का दूसरा नाम बन गई है। दूसरी ओर आर्य समाज "नींव का पत्थर' बन कर मानवता और राष्ट्रीयता के भव्य भवन के निर्माण कार्य मे आज भी पूर्ण शक्ति से लगा है। हम भूले नही कि देश में स्वराज लाने मे तदर्थ तप-त्याग बलिदान और स्वतन्त्र होने मे वह सबसे आगे था, इतिहास का यह सर्वमान्य तथ्य है कि सन् ३१-३२ तक आन्दोलनो मे तथा क्रान्तिकारी योजनाओ मे भाग लेने वाले ८० प्रतिशत प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से आर्य समाजी थे। बाद मे कांग्रेस की अराष्ट्रीय (मुस्लिम तुष्टिकरण की) दुर्निति, जिसके कारण ही पाकिस्तान बना और आज भी जिसके कारण राष्ट्र खण्ड-खण्ड होता जा रहा है, के कारण उसने अपने को प्रायः कांग्रेस से अलग ही कर लिया। परन्तु वह (आर्य समाज) राष्ट्रोत्थान के मूल कार्यों में, भारत माता और मा मानवता की सेवा में वेद स्वाध्याय, वेद प्रचार, वेदाचार, वैदिक शिक्षा प्रचार, सत्साहित्य निर्माण द्वारा निरन्तर सलग्न रहा।

देश के बटवारे के मूल्य पर जो कथित "स्वराज्य" मिला उसे "सुराज" बनाने चरित्र निर्माण या मानवता से युक्त मानव के निर्माण और राष्ट्र की आन्तरिक सुरक्षा, कुरीति-निवारण, सुरीति प्रसारण शान्ति और सद्भावना के निर्माणात्मक कार्यों मे वह आज भी सेवारत है।

नशा-निषेध, हिन्दी गौरव रक्षा, सस्कृत-सस्कृति-रक्षा, विद्यालयो मे नैतिक शिक्षा, सती-प्रथा-विरोध, नाथद्वारा मन्दिर मे सभी को समान प्रवेशाधिकार दिलवाने तथा शुद्धि सगठन द्वारा राष्ट्रीयता की रक्षा हेतु "धर्म रक्षा अभियान" के माध्यम से व्यापक कार्य इसके ताजा उदाहरण है। हा, आर्य समाज आज की राजनैतिक कुर्सियो की लडाई से दूर रहा है, इसी से उसका रचनात्मक कार्य सर्व साधारण को दिखता नही है, क्योकि आर्य समाज सफेद, लाल पीली टोपियो के बदलने मे विश्वास रखता है। वह वैचारिक क्रान्ति का अग्रदूत है।

फिर यह भी विचारणीय है कि हमारे इन मित्रों को यह तथ्य क्यों नहीं दीख पड रहा है कि आर्य समाज के स्वरों की ही आज सर्वत्र प्रतिष्ठापना हो रही है। आर्य समाज की वेदान्त एव वैज्ञानिक सत्य मान्यताओ का कब तक निषेध करने वाले, इसके साथ शास्त्रार्थ करने वाले भी आज उन्हे अपना रहे हैं। देश की स्वतन्त्रता को स्वर देने के साथ ही, आर्य समाज के नारी शिक्षा, नारी-सम्मान विधवा विवाह प्रचलन, बाल विवाह-वृद्ध विवाह निषेध, समुद्र यात्रा (विदेश यात्रा) प्रचलन, दलितोद्धार, शुद्धि-सगठन आदि विविध वेदोक्त सेवा कार्यों को आज सभी ने मान लिया है। यह तो आर्य समाज का दिग्विजय है। हा, यह बात अलग है कि अन्य सगठनो द्वारा इन सेवाकार्यों को अपना लेने से आर्य समाज के क्षेत्र में चहल-पहल कुछ कम दिखाई दे। पर साथ ही यह भी ज्ञातव्य है कि अन्य संगठनों द्वारा इन सेवा कार्यो को भी प्रायः स्वार्थवश या अज्ञानतावश भिन्न दिशा दे दी गई है, जिसके दुष्परिणाम भी प्रत्यक्ष हैं।

आर्य समाज का नारी जागरण-अभियान अपने मूल वैदिक (भारतीय) सस्कृति से हट कर आज पाश्चात्य सभ्यता से अभिभूत है। फलत देवियो के स्थान पर "लेडियां" उसे नेतृत्व दे रही है। हर क्षेत्र मे पुरुष के साथ प्रतिस्पर्द्धा जैसे उनकी टेक हो। आर्य समाज ने पर्दा प्रथा के विरुद्ध आन्दोलन किया था, पर आज बेपर्दगी चरम सीमा पर है। अर्द्धनग्न फिल्मी सभ्यता, कला के नाम पर कामाराधना और नारी विज्ञापन के खिलाफ आज मोर्चा लेने की आवश्यकता हो गई है। इसी प्रकार आर्य समाज का दलितोद्धार का कार्य भी "अज्येष्ठा सो अकनिष्ठासः रुते स भ्रातरो वावृधु" (न कोई बडा है, न छोटा है सभी आपस में भाई-भाई है) पवित्र वेद की ऐसी ही पावन ऋचाओ पर आधारित मानव समतामूलक एव विशुद्ध मानवतावादी था। दलितो को "हरिजन" सज्ञा देकर और इस प्रकार एक नया वर्ग बना कर उसे आज राजनैतिक खिलाडियो ने जो विकृत रूप दिया है उसी का परिणाम पनवारी (आगरा) जैसे दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड और इसी का दुष्कल जातीय आधार पर आरक्षण (मण्डल आयोग) की विकटतम समस्या है। इन सबका एक मात्र समाधान आर्य समाज द्वारा प्रस्तुत गुण, कर्म स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था ही है, जिसमे जन्मगत जाति पाति की विद्वेष, अन्याय मूलक अमानवीय मान्यता के लिये कोई स्थान नही है। आर्य समाज को भी अभी इस दिशा मे क्रियात्मक रूप से बहुत कुछ करना है।

आज का ज्वलन्त प्रश्न होने के कारण यहाँ हम इस सम्बन्ध मे कुछ विस्तार से विचार कर रहे हैं। सभी जानते है कि वर्ण चार है, तीन नही। पर कैसा दुर्भाग्य है कि राजनीति के पण्डो द्वारा "स्वर्ण" शब्द का प्रयोग मात्र ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य के लिए हो रहा है, शूद्र के लिए नही। आखिर शूद्र भी तो एक वर्ण है, वर्ण के अन्तर्गत है, फिर स्वर्ण क्यों नही ?

(क्रमश)

पंजाब में जघन्य हत्याकाण्ड की भर्त्सना

१६ जून रविवार को यहां आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे प्रातः १० बजे एक साधारण सभा हुई, जिसमे आर्य समाज के प्रधान श्री रणबीर जी भाटिया ने पजाब के बिगडते हुए हालात की चर्चा करते हुए पजाब सरकार तथा भारत सरकार को चेतावनी दी कि अब भी इस बिगडती हुई स्थिति को न सम्भाला गया तो हालात इतने बिगड जायेंगे कि फिर इसे सम्भालना कठिन होगा।

हमारा निरतर आग्रह रहा है कि पंजाब को सेना के हवाले किया जावे ताकि यह निर्मम हत्यायें बन्द हो सकें, परन्तु नेताओ के अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण वह लोगो की ठीक बात भी मानने को तैयार नही।

यह साधारण सभा भारत सरकार से पुरजोर प्रार्थना करती है कि पंजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाये और इस बिगडती हुई स्थिति मे बिना विलम्ब सुधार किया जाये।

—महेन्द्र प्रताप आर्य, महामन्त्री

आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

भागलपुर देवरिया १५ जून। गत १ जून से ६ जून तक लगाया गया, आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर, श्रीमच्चन्द्रबली गुरुकुल महाविद्यालय बासुदेवपुरम् के प्रागण मे अपने भव्य समापन-समारोह के साथ सकुशल उल्लासमय वातावरण मे सम्पन्न हो गया।

जहाँ शारीरिक शिक्षण का योग्य परिज्ञान श्री अभेदमुनि जी वानप्रस्थ, हाथरस ने दिया वही बौद्धिक प्रशिक्षण श्री आर्यमुनि जी वानप्रस्थ, श्री शंकरमुनि जी वानप्रस्थ, श्री नरेन्द्र लाल जी 'नैष्ठिक', डा० कस्तूरी लाल आर्य, डा० विद्यासागर आर्य व श्री रामाज्ञा 'आर्यपुत्र द्वारा दिया गया।

पूज्य स्वामी आनन्दबोध जी सहित देश के अनेकानेक मनीषियो द्वारा अपने संदेश गये।

रामाज्ञा आर्यपुत्र'

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N No. 32387/77 Posted at N.D.P.S O. on 4-5-7-1991 Licence to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३६

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा

दिल्ली-हरिद्वार, देहरादून मंसूरी तक प्रचार यात्रा व भ्रमण

२२-६-९१ रात्रि १० बजे कमला नेहरू पार्क सब्जी मण्डी दिल्ली से चलकर २५-६ ९१ को रात्रि दिल्ली वापसी।

आर्य बन्धुओ आपको जानकर अति हर्ष होगा कि आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के अभूतपूर्व शिविर के बाद एक प्रचार यात्रा का आयोजन किया गया जो कि २२-६-९१ रात्रि १० बजे दिल्ली से एक विशेष बस द्वारा चली, २३-६-९१ प्रात ५ बजे गुरुकुल ज्वालापुर पहुची। वहां पर सार्वदेशिक आर्य वीर दल के शिविर के समापन समारोह मे सम्मिलित हुए तथा वहा से दोपहर २ बजे चलकर ऋषिकेश, लक्ष्मण झूला आदि भ्रमण करके रात्रि देहरादून तपोवन वैदिक भक्ति साधना आश्रम मे विश्राम किया तथा २४-६-९१ को प्रातः भोजन करके सहस्र धारा आदि देहरादून के दर्शनीय स्थल देख कर रात्रि में मसूरी आर्य समाज में विश्राम किया तथा २५-६-९१ प्रात मसूरी भ्रमण करके रात्रि दिल्ली के लिए रवाना हुई। रास्ते मे स्थान-स्थान पर प्रचार करते हुए साहित्य बाटते इस भजन सत्सग करते हुए यह मनोरम यात्रा सम्पन्न हुई।

ब्र० राजसिंह आर्य
महामन्त्री आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

आर्य युवक निर्माण व योग साधना शिविर सम्पन्न

युवा किसी राष्ट्र की चेतना व उन्नति के प्रतीक होते हैं। आर्य युवक देशोद्धार व कुरीति उन्मूलन के लिए कार्य करें। डी० ए० वी० स्कूल फरीदाबाद से हम हर प्रकार का सहयोग करेंगे। ये विचार प्रि० आर्य वीर धमला ने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कोटद्वार, पौढी गढवाल मे "युवक निर्माण शिविर" समापन पर कहे। हिमालय की सुरम्य घाटियो में महर्षि कण्व की तपोभूमि व वीर भरत की जन्मस्थली गुरुकुल कण्वाश्रम मे आयोजित १० दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविर में आधुनिक भीम ब्र० विश्व पाल जयन्त व श्री विजय भूषण आर्य के निर्देशन में २०० युवको व योग साधकों ने योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, जूडो-कराटे बाक्सिग, तैराकी, फ्री स्टाईल कुश्ती व सगीत का प्रशिक्षण लिया।

आर्य प्रादेशिक सभा के महामत्री श्री रामनाथ सहगल, डी०ए०वी० प्रबन्धकर्त्री सभा के मन्त्री, श्री जी. पी चोपडा, दिल्ली आर्य वीर दल के महासचिव श्री ईश कुमार नारग, आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट के मंत्री श्री धर्मपाल आर्य आदि ने शिविर में युवको को मार्गदर्शन दिया। शिविर सचालक परिषद् अध्यक्ष श्री अनिल कुमार आर्य थे।

अनेक आर्य नर-नारियों ने शिविर समापन में भाग लिया।

चन्द्रमोहन आर्य
महामन्त्री

सेवा में—

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१, फोन ३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी०(सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ३६ | रविवार, १४ जुलाई, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

वैदिक ज्योतिर्पुञ्ज वेद शिरोमणि पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार

नई दिल्ली—सस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित एव चारो वेदो के भाष्यकार प० हरिशरण जी सिद्धान्तालकार के निधन पर शोक प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी ने कहा कि पण्डित जी ने वेदो की इतनी सरल एव सुबोध व्याख्या की है कि साधारण व्यक्ति भी इसे आसानी से समझ सकता है व अपना जीवन सुधार सकता है। पं० सिद्धान्तालकार जी ने वेदो की ज्योति जलाई है और आने वाली पीढियां उन्हें इस महान कार्य के लिए सदैव स्मरण करती रहेंगी। उन्होने आगे कहा कि प० जी ने अपना सारा जीवन स्वाध्याय एव वेद प्रचार मे लगा दिया। ये विचार स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने पं० हरिशरण सिद्धान्तालकार को श्रद्धाञ्जलि देने के लिए आर्यसमाज मन्दिर लाजपत नगर, सी-II नई दिल्ली में ७ जुलाई को आयोजित एक शोक सभा में व्यक्त किया।

पडित हरिशरण सिद्धान्तालकार जी का बुधवार दिनांक ३ जुलाई को ९० वर्ष की आयु में निधन हुआ।

पडित जी का जन्म पाकिस्तान मे लायलपुर (फैजलाबाद) मे हुआ था। उनकी शिक्षा दीक्षा आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द के सरक्षण मे गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार मे हुई थी। उन्ही की प्रेरणा से पण्डित जी वहां अध्यापन कार्य करने लगे। पण्डित जी ने सारी आयु अविवाहित रहकर वेद प्रचार के लिए अर्पित कर दिया। गत ५० वर्षों से पण्डित जी देश के विभिन्न भागो विशेषकर राजधानी मे वेद प्रवचनों द्वारा जनसाधारण को लाभान्वित करते रहे।

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने पं० सिद्धान्तालकार के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि पण्डित जी विद्वत्ता और सादगी के प्रतीक थे और उन्होंने सारा जीवन आर्य समाज के उत्थान एवं संगठन की भलाई में समर्पित कर दिया। उन्होने आगे कहा कि पवित्र वेद-वाणी सगच्छध्वं स वदध्व स वो मनासि जानताम्। देवा भाग यथापूर्वे स जनाना उपासते।

इस वेद मन्त्र के अनुसार हमे भी प्रेम पूर्वक मिल-जुल कर अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये और आर्य समाज के काम को आगे बढाने मे सहयोग देना चाहिए। डा० धर्मपाल ने आगे कहा कि कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज के कार्य एव वेद प्रचार के काम मे सहयोग देता है तो हमारा यह नैतिक कर्त्तव्य हो जाता है कि हम उनकी मदद करें। यही हमारी सिद्धान्तालकार जी के प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

पण्डित सिद्धान्तालकार जी एक उच्च कोटि के विद्वान् ही नही बल्कि एक सन्त भी थे। पडित जी हिन्दी, सस्कृत, उर्दू, पजाबी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं के विद्वान थे। गणित, विज्ञान आदि अनेक विषयों में उनकी अच्छी पैठ थी। पण्डित जी के मन मे वेद प्रचार कार्य के लिए अन्तर्वेदना थी। वे जहा भी जाते आर्य नर-नारियों को नियमित वेद पाठ की प्रेरणा देते थे। ये विचार आर्य जगत के सम्पादक पण्डित क्षितीश वेदालकार, पूर्व नगर पार्षद डा० प्रशान्त वेदालकार, आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल, स्वामी जगदीश्वरानन्द, प० नरेन्द्र विद्यावाचस्पति, श्री प्रियतमदास रसवन्त पूर्व पार्षद डा० रामलाल, श्रीमती शकुन्तला आर्य, श्री अजय मल्ला, श्रीमती कृष्णा चड्ढा ने विभिन्न धार्मिक एव सास्कृतिक साहित्यिक सगठनो की ओर से पण्डित हरिशकर सिद्धान्तालकार जी को श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए व्यक्त किए।

इस सभा में पण्डित हरिशकर सिद्धान्तालकार द्वारा वेद भाष्य के प्रकाशन कार्य को पूरा करने हेतु आर्य प्रादेशिक सभा, दिल्ली आर्य प्रान्तीय महिला सभा, आर्य समाज शालीमार बाग, आर्य समाज लाजपत नगर आर्य समाज चूना मण्डी आदि की ओर से धन राशि देने एव हर प्रकार की सहायता देने की घोषणा की गई।

—विमल कान्त शर्मा

श्री राजेन्द्र जिज्ञासु आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित

आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा अपनी पुरस्कारो की शृखला को आगे बढाते हुये इस वर्ष "श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार" समारोह का आयोजन किया गया। यह पुरस्कार आर्य जगत के जाने माने लेखक श्री प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी को देकर सम्मानित किया गया। आर्य समाज सान्ताक्रुज की ओर से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पू० स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने जिज्ञासु जी को ११०००/- की थैली भेंट की तथा पत्रकार श्री धर्मवीर जी भारती ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

समारोह में बोलते हुये सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने कहा कि जिज्ञासु जी ने आर्य समाज मे साहित्य सृजन का अद्वितीय कार्य किया है वह एक मनस्वी लेखक ही नहीं अपितु निर्भीक वक्ता भी हैं जिज्ञासु जी ने अपने साहित्य के द्वारा जो प्रेरणा दी है वह बहुत ही प्रशसनीय है।

स्वामी जी ने इस अवसर पर दृढता पूर्वक कहा कि आर्य समाज अपने कार्य को आगे बढाता रहेगा। महर्षि दयानन्द के उद्देश्यो की पूर्ति के लिये हम जीवन भर सघर्ष करते रहे हैं और आगे भी करते रहेगे। सार्वदेशिक सभा ने दिल्ली मे एक विशाल गो सम्वर्धन दुग्ध केन्द्र जिसमें १००० गायों को रखने की व्यवस्था है का निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया है इस योजना की सफलता मे सभी आर्य जनों का सहयोग अपेक्षित है। स्वामी जी ने कहा कि हमे विद्वानों का सम्मान सदा करना चाहिये ताकि आने वाली पीढी इनका अनुकरण करती रहे मैं आर्य समाज सान्ताक्रुज का धन्यवाद करता हू कि इसने यह सराहनीय कार्य किया।

इस अवसर पर श्री रामसिंह जी राठौर पं० राजगुरु जी शर्मा डा० सोमदेव जी शास्त्री के भी भाषण हुये। यह समारोह समाज के वरिष्ठ उपप्रधान कैप्टन देवरत्न आर्य के कुशल संयोजन तथा अथक परिश्रम के फलस्वरूप पूर्ण रूपेण सफल रहा।

परामर्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक— सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

आर्य समाज : आज के परिप्रेक्ष्य में

— आचार्य प्रेमभिक्षुः एम० ए०, सम्पादक "तपोभूमि" —

"यथेमा वाच कल्याणी मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजकन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ॥" इस पवित्र वेद मन्त्र तथा अन्य अनेकों मन्त्रों मे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य की भांति ही शूद्र और स्त्री अर्थात् सभी मनुष्य मात्र को समान रूप से वेदाध्ययन की व्यवस्था है महर्षि मनु तो सुस्पष्ट घोषणा करते हैं-शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम्" अर्थात् शूद्र कुल में उत्पन्न व्यक्ति (अपने गुण-कर्म स्वभावानुसार) ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है तथा ब्राह्मण कुलोत्पन्न शूद्रत्व को। हमारा इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। शूद्र कुलोत्पन्न बालिमकी, गणिका (वेश्या) के गर्भ से उत्पन्न वशिष्ठ क्या ऋषि, महर्षि, महामुनि (कुलगुरु) नही बन गये? गोत्र विहीन जाबालि पुत्र सत्यकाम ब्राह्मण बन जाता है। और ऋषि या ब्राह्मण कुल में उत्पन्न रावण तो शूद्रत्व से भी पतित होकर अनार्य (दस्यु) बन गया है। राम क्षत्रिय होकर सर्व पूज्य बन गये तथा क्षत्रिय कुलोत्पन्न विश्वामित्र राजर्षि और फिर ब्रह्मर्षि बने।

पवित्र वेद में चारो वर्णों की तुलना राष्ट्र-पुरुष के विभिन्न अंगो से की गई है—ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू: राजन्यः कृतः। उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रो अजायत ॥ यजुर्वेद ३१-११

यहा ब्राह्मण को राष्ट्र पुरुष का मुख, क्षत्रिय को उसकी भुजा और वैश्य को उरु (पेट-मध्य भाग) तुल्य कहा है। शूद्र को राष्ट्र पुरुष को खड़ा रखने वाले के तुल्य माना गया है। वह राष्ट्र पुरुष का आधार है। इसी से सभी चरण-वन्दना ही करते हैं। पैर मे कांटा लगता है तो आंखो मे आसू आता है। पौराणिक काल मे भी राष्ट्र की रक्षा करने वाली "अष्ट भुजी दुर्गा" की कल्पना (कार्टून) द्वारा बताया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—इनमे से प्रत्येक के दो-दो हाथ मिल कर जब "अष्टभुजी दुर्गा" के रूप मे सिंह वाहिनी अर्थात् एक शक्ति बन जाते हैं तभी राष्ट्र रक्षा सम्भव है।

इन सभी उद्धरणो मे कही भी छोटे-बड़े (ऊंच-नीच) की दुष्ट कल्पना नही है। महाभारत के पश्चात् मध्य युग या वाम मार्ग काल मे जब हमारा नाम-धाम, एक उपास्य देव, एक धर्म ग्रन्थ, एक धर्म एक गुरु मन्त्र, एक अभिवादन आदि सभी कुछ उलट गया तभी सामाजिक क्षेत्र में भी "पूजिय विप्रशील गुण हीना शूद्र न पूजिय वेद प्रवीना।" जैसी अवैदिक मान्यतायें चल पड़ी। यज्ञों में पशु बलि नारी-अपमान, जाति पाति की स्थिति तभी बनी। महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध जैसे युग पुरुषो ने इन अवैदिक मान्यताओं के विरुद्ध स्वर ऊंचे किए, पर पवित्र वेद से परिचय न होने के कारण कालान्तर मे मूर्ति पूजा के एक अन्य भयकर रोग को और साथ लेकर वही विकृतियां नये रूप मे पुन: आ गई। सन्त कबीर, भक्त रैदास, दाऊ दयाल, गुरु नानक आदि ने पुन: इन बुराइयो के विरुद्ध स्वर बुलन्द किए, पर पौराणिक मतवाद के रूप मे मनुष्य का स्वार्थ फिर हसने लगा और आज तो राजनीति की गोटी लाल करने के लिए भाई को भाई से अलग करके सडको पर युद्ध-रत किया जा रहा है। मण्डल आयोग योजना के आरक्षण के पीछे यही "फूट डालो और राज करो" की दुर्नीति चल रही है। इसका एक मात्र समाधान, जैसा कि पहले भी बताया है, गुण कर्म आधारित वेद विहित एव योगेश्वर कृष्ण द्वारा गीता मे अनुमोदित वैदिक वर्ण व्यवस्था है।

जन्मगत जाति मूलक हमारी इस दुर्बलता का लाभ विदेशी आक्रान्ताओं मुसलमान, ईसाईयो ने भरपूर उठाया। ईश्वर की महती कृपा से युगो के बाद महर्षि दयानन्द आये। उन्होंने सदियो, सहस्राब्दियो के बाद वैदिक शखनाद किया। "वेदो की ओर लौटो" का सन्देश दिया। जो हम भूल गये थे उसे पुन: याद कराया और अभिनव क्रान्ति के साथ नवयुग आया। उसी क्रम मे शुद्धि संगठन के स्वरूप स्वर गूजे। वैदिक धर्म का द्वार पुन: एक बार मानव मात्र के लिए खुला। स्वामी श्रद्धानन्द के सफल नेतृत्व में जो लाखो शुद्धियां हुई—हमारे ही जनपद मथुरा में उन्दी, नौगाव, तरौली, तेहरा आदि गाव के गांव नव मुस्लिमो के शुद्ध हुए वे आज भी हिन्दु समाज के गौरवमय अग बन राष्ट्रीय धारा के साथ अभिन्न है। पिछले दिनो ही मथुरा जनपद के नगला तुरावई (छोटी कोसी) गाव को शुद्ध किया गया। करसौरा उस पार के जाटव बन्धुओ की ईसाइयत के धार से रक्षा की गई। बाजना व चन्दूनगला मे श्री दयानन्द सेवाश्रम चला कर अराष्ट्रीयकरण का सफल सामना किया गया। उत्कल प्रदेश मे गत वर्ष ही स्वामी धर्मानन्द जी (गुरुकुल आमसेना) द्वारा ७ हजार सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान मे हुई। इतना ही नहीं मुसलमानों, ईसाइयों के कई प्रसिद्ध विद्वान् भी पिछले दिनो वैदिक विद्वान के रूप में दीक्षित हुए हैं, जिनमें श्री पं० जयप्रकाश जी आर्य डा० आनन्द सुमन, पं० महेन्द्रपाल आर्योपदेशक, पं० जीवन सिंह एवं पं० धर्मदेव आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ये सभी सर्वात्मना वैदिक सद्धर्म प्रचार में सलग्न हैं?

जहां तक जाटव बन्धुओं का सम्बन्ध है ये तो हमारे समाज के अभिन्न अग हैं। फिर सिद्धान्त: आर्य समाज पूर्ण समतावादी और मानवतावादी है? जैसा कि विवेचन किया जा चुका पवित्र वेद के एक मन्त्र—"समानी प्रपा सहवोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सहवोयुनज्मि। सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभि मिवाभितः" में बताया है कि जैसे पहिये मे धुरी से परिधि तक लगे सभी आरे समान होते हैं वैसे ही प्रभु देव की पावन प्रजा रूप सभी मानव समान हैं। प्रभु कहते हैं—तुम्हारी (प्रपा) धाऊ समान हो, तुम्हारा (अन्नभाग:) अन्न सेवन समान हो। तुम सभी को समान रूप से ससार रूप के जुए में जोड़ता हू।

आर्य समाज के गुरुकुलों मे शिक्षित अनेक जाटव बन्धु आज शास्त्री और आचार्य हैं। अनेको उपदेशक, भजनोपदेशक तथा सन्यासी है, जिनकी चरण वदना कर लोग स्वय को धन्य समझते है। बुरा हो आज की कुर्सीवादी राजनीति का जिसने आचार्य शास्त्री स्नातक बने आर्य विद्वानों को भी सुरक्षित सीट (आरक्षण) के लालच में पुन: जाटव मेहतर आदि की श्रेणी मे खड़ा कर दिया। इस प्रकार आज की दुष्ट राजनीति ने जन्मगत जातिवाद को सींचा है।

आर्य समाज आज भी दलितोद्धार-पतितोद्धार, मानव निर्माण और स्वराज सुराज बनाने के अपने राष्ट्रोद्धार और लोक कल्याण कार्य में लगा है। हां आर्य जनों द्वारा यह मान लिए जाने पर कि बड़े अंशों मे उनके सुधार कार्य को सभी ने अपना लिया है, उनमें कुछ शिथिलता आई है। आर्य समाज के अनेको ज्वलन्त जीवनो के राजनीति मे चले जाने से भी शिथिलता आई है। एक अमेरिकन विद्वान डेविड महोदय के शब्दो मे—"आर्य समाज आग की वह भट्टी हैं, जिसे स्वामी दयानन्द ने जलाया था और उसमे ससार भर का (सांसारिक) कूड़ा कचरा जल कर भस्म सात हो जायेगा। झीनी सी राख की (शैथिल्य) की परत उस पर आ गई।

महर्षि दयानन्द के १०७वें बलिदान पर्व पर हम भी आलेख्य के राही बनने का सकल्प ले राष्ट्र और मानवता के कल्याण का पथ प्रशस्त करें। और कवि के शब्दो मे—

'एक ही दीप बुझ गया आज ही अगणित जीवन दीप जला कर।
मेटे हम अज्ञान तमिस्त्रा अपनी जीवन ज्योति जला कर ॥"

पुस्तक समीक्षा

न्याय दर्शन (गौतम मुनि प्रणीत)

भाष्यकार—तार्किक शिरोमणि, स्व० स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
सस्थापक—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार

महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपरान्त आर्य जाति को दर्शनो की सरलतम प्रश्न उत्तर के रूप में जो व्याख्या साधारण मति वाले मानव को लिखकर दी थी। वह अपने में अनुपमेय है।

पूज्य स्वामी जी के दर्शनों की सरल व्याख्या को पढकर साधारण से इन्सान में भी बुद्धि का प्रकाश हुआ है उनके भावानुवाद से एक आवश्यकता की पूर्ति हुई है।

समय समय पर यह दर्शन भाष्य रूप मे जनता के समक्ष आते रहे हैं परन्तु तार्किक शिरोमणि स्वामी दर्शनानन्द जी के तर्क तीरो के सामने बड़े-बड़े महारथी भी धराशायी हुए हैं।

वैदिक वाङ्मय के पश्चात षड्दर्शनो का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। यह सूत्रो में रचनाकर साधारण मनुष्यो मे ज्ञान वर्धन का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

हम गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के अधिकारी गणों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अपने कुलपिता के साहित्य को जनता तक पहुंचाने का सकल्प लिया है।

आशा है पाठकवृन्द इस दर्शन का आनन्द प्राप्त कर प्रकाशक के उत्साह का वर्धन करेंगे।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

सम्पादकीय

पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार

प० हरिशरण सिद्धान्तालकार का जन्म कमालिया मे श्री लक्ष्मणदास के घर मे हुआ। आपने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से सन् १९२२ में विद्यालकार तथा १९२३ मे सिद्धान्तालकार की उपाधि प्राप्त की। वही पर आप अध्यापक भी रहे। कुछ समय आपने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में भी अध्यापन कार्य किया। आपका अधिक समय दिल्ली में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार मे बीता। आप आजन्म ब्रह्मचारी रहे। आप अच्छे व्याख्याता एव लेखक है। आप सस्कृत व्याकरण के स्वनामधन्य पण्डित और वेदो के उद्भट विद्वान है। आपने चारों वेदो का भाष्य किया है।

आपको आर्य समाज शान्ताक्रुज बम्बई ने १९९० मे वेद-वेदाग पुरस्कार से सम्मानित किया था। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने इसी वर्ष १३ अप्रैल १९९१ को विश्वविद्यालय की सर्वोच्च मानद उपाधि विद्यामार्तण्ड से विभूषित किया था।

आपके प्रमुख लेखकीय कार्य है—सध्या मन्त्र विशेष व्याख्यान (१९५० ई०) प्रार्थना मन्त्र, ईशोपनिषद् व्याख्या, सामवेद भाषा भाष्य (२०२९ वि०), सामवेद : उपासना-१ से १९ मन्त्र पर्यन्त (२०१२ वि०), प्रभु के चरणो में (२०३२ वि०), ऋग्वेद के ऋषि (१९५५ ई०), वैदिक परिवार व्यवस्था (२०१३ वि०), ऋग्वेद भाष्य—भगवती प्रकाशन दिल्ली से खण्डः प्रकाशित।

वेद हमारी सस्कृति के मूलाधार हैं। वेद परमात्मा की दिव्य वाणी है। वेद हमारे प्राण और जीवन का सर्वस्व है। समय के साथ-साथ ससार मे वेद के मर्म को, वेद के सन्देश को भुला दिया। १९वी शताब्दी मे आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद का पुनः प्रचार-प्रसार किया।

'वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।'

इस आदेश का महर्षि के अनुयायियो ने पालन किया। प० हरिशरण सिद्धान्तालकार ने भी इस दिशा मे कार्य किया। उन्होने चारो वेदो का अत्यन्त सरल भाषा मे भाष्य किया। उन्होंने कठिन समझे जाने वाले वेदो को सरल बना दिया। उन्होंने चालीस वर्ष तक कठोर साधना करके वेदो का भाष्य लिखा।

आज पडित जी इस ससार मे नही है। उनका दिया प्रकाश हमारे साथ है। हमारा कर्त्तव्य है कि इस प्रकाश को हम दूर-दूर तक फैलाए। उनके दिए ज्ञान को प्रकाशित-प्रसारित-प्रचारित करे।

श्रद्धेय पडित जी के प्रति विनत श्रद्धाजलि।

—डा० धर्मपाल

- मैं सन्यासी हूं, तुम्हारे किसी भी अत्याचार से चिढ तुम्हारा अनिष्ट चिन्तन नही करूगा। जाओ, ईश्वर तुम्हे सुमति प्रदान करे।
- योगी जनो का यह दृढ़ विश्वास है कि अविद्या की तमो-राशि को सत्य का सूर्य अकेला ही तुरन्त जीत लेता है। जो मनुष्य पक्षपात का परित्याग करके, केवल लोक हित के लिए ईश्वर की आज्ञानुसार सत्योपदेश करता है उसे भय कहा है?
- सन्यासीजन अपनी रक्षा निमित्त गढ और गुहा का आश्रय नही ढूढा करते। हमारा रक्षक तो केवल एक भक्त वत्सल भगवान है।
- देखो जिसे परमेश्वर न मारे उसे मारने के लिए कोई भी समर्थ नहीं हो सकता।

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(७ जुलाई, ९१ के अक से आगे)

चण्डीगढ़ में मेरा सामाजिक जीवन—

चण्डीगढ़ में मेरा आर्य सामाजिक जीवन नितान्त शान्त, स्थिर तथा घटनाविहीन रहा है। मैं यहा आते ही आर्य समाज सैक्टर १६ का समासद् बन गया। मुझे इस आर्य समाज की अन्तरग का समासद् भी चुन लिया गया। कालान्तर मे इस आर्यसमाज ने मुझे प्रतिष्ठित समासद् बना कर सम्मानित किया। मैं लगभग २ वर्ष तक आर्य प्रादेशिक सभा का प्रतिष्ठित समासद् भी रहा तथा एक बार उक्त सभा के वार्षिक साधारण अधिवेशन मे सम्मिलित हुआ। स्मरण रहे कि सैक्टर १६ का आर्यसमाज प्रादेशिक सभा से ही सम्बद्ध है।

चण्डीगढ के प्रायः सभी समाजो में मैं उपदेश तथा प्रवचन हेतु जाता हू। सैक्टर १६ तथा २२ की आर्य समाजो के साप्ताहिक सत्सगो, पर्वों तथा विशिष्ट आयोजनो मे जाने का क्रम तो चलता ही रहता है। शिवरात्री, जन्माष्टमी, आर्य समाज स्थापना दिवस तथा ऋषि दयानन्द निर्वाण के पर्व चण्डीगढ की विभिन्न आर्यसमाजें सम्मिलित रूप से मनाती है और ये आयोजन क्रमशः सैक्टर २२, १६, २७ तथा ७ की आर्य समाजो मे होते हैं। सैक्टर १६, ३१, २७, २२ तथा ७ मे मैंने यदा-कदा साप्ताहिक कथाये भी प्रस्तुत की हैं। चण्डीगढ निवास का एक अतिरिक्त लाभ यह भी मिला है कि यहा से समीपवर्ती पजाब, हरियाणा तथा हिमाचल प्रदेश के स्थानो में यदा-कदा प्रचारार्थ जाना सुगम सुविधापूर्ण रहता है। फलतः विगत १० वर्षों मे मैं जम्मू, मडी, शिमला, मनाली, अमृतसर, जालधर लुधियाना, अबोहर, पटियाला, रायपुरा, फगवाडा अम्बाला छावनी और शहर, कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, हिसार, रोहतक, पचकूला आदि नगरो मे प्रचारार्थ जाता रहा हूं।

चण्डीगढ मे प० आसूराम जी आर्य ने विगत कई वर्षों से विश्ववेद परिषद् की प्रवृत्तियो को स्वय पुरुषार्थ से ही जागृत कर रखा है। मेरे चण्डीगढ मे आने के साथ ही परिषद् ने मुझे अपना प्रधान चुन लिया। परिषद् की एक विशिष्ट प्रवृत्ति पूर्णिमा को किसी परिवार मे किए जाने वाला पारिवारिक सत्सग का कार्यक्रम होता है। प्रायः इस कार्यक्रम मे भाग लेता हू और प्रवचन भी करता हू।

दयानन्द शोध पीठ की प्रवृत्तियां—

चण्डीगढ मे रह कर मैंने विगत आठ वर्षों मे विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ की अध्यक्षता की। इस अवधि मे निम्न शोधार्थियो ने अपना शोध कार्य सम्पन्न कर पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की।

१ डा० वेदपालवर्णी—
शतपथ ब्राह्मण तथा दयानन्दीय यजुर्वेद भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन।

२ डा० (श्रीमती) वसुन्धरा रिहानी—
दयानन्दीय यजुर्वेद भाष्य मे देवता तत्त्व।

३ डा० धर्मदेव शर्मा—
दयानन्द कृत सस्कार विधि तथा गृह्यसूत्रो का तुलनात्मक अध्ययन।

४ डा० राजपाल सिंह—
षड्दर्शनो को आर्य समाज के दार्शनिक विद्वानो को देन।

५ डा० राजपाल नैन
मनुस्मृति प्रतिपादित राज धर्म।

६. डा० राजकुमार—
प्राच्य (प्राचीन) व्याकरण साहित्य को महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की देन।

७ डा० ओमप्रकाश शर्मा—
हिन्दी के धार्मिक तथा दार्शनिक साहित्य को आर्य समाज की देन।

८. डा० वीणा कल्ला—
हिन्दी काव्य पर दयानन्दीय विचार धारा का प्रभाव।

(क्रमशः)

वर्णाश्रम - धर्म

— भगवतीप्रसाद गुप्त —
भू. पू. प्रधान मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

प्रसन्नता का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित गत ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सभा ने अपने घोषणा पत्र मे समाज के सर्वागीण विकास के साथ साथ समस्त विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए वेदो मे वर्णित वर्णाश्रम पद्धति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को इसके प्राचीन शुद्ध रूप मे लागू करने का आह्वान किया है।

आज से लगभग २३ वर्ष पूर्व विक्रम स. २०२४ मे बोधरात्रि के शुभवसर पर पू० स्वामी समर्पणानन्दजी पूर्वनाम प० बुद्धदेवजी विद्यालकार ने "कायाकल्प" नाम की एक अमूल्य पुस्तक में वेदादि शास्त्रो एव महर्षि दयानन्दजी सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वर्णाश्रम व्यवस्था का प्राचीन स्वरूप अकित किया है जो ससार के समाज शास्त्रियो की आखे खोलने वाला है किन्तु दुर्भाग्य है कि आर्य समाज ने स्वय उसके स्वरूप को नही अपनाया तब और देशों की बात क्या कहनी।

स्वामीजी ने लिखा है कि प्राचीन वर्णव्यवस्था को लागू कर प्राचीन आर्यों ने करोडो वर्ष भूमण्डल पर चक्रवर्ती राज्य किया है यह व्यवस्था जहा मानव को उसके दु खो की अत्यन्त निवृत्तिकर आनन्द मग्न करती है वहा समाज को भी सुखो से भरपूर कर देती है यदि आर्य समाज इसे आज अपनाले तो आर्यावर्त का विगत स्वर्णिम इतिहास पुनर्जीवित हो सकेगा और फिर समस्त विश्व का मानव भी इसे अपनाये बिना न रहेगा। वेद के "कृण्वन्तोविश्वमार्यम्" एवम् "अहम् भूमिऽददाय आर्याय" के सदेश व आदेश भी तभी चरितार्थ हो सकेगे। छान्दोग्य उपनिषद् मे महाराजा अश्वपति जी की घोषणा कि "न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यप:। नानाहिताग्निर्ना विद्वान न स्वैरी स्वैरिणी कुत:।।छा. उ. ५/११/५

न मेरे राज्य में कोई चोर है न कजूस न शराबी, न अग्निहोत्र न करने वाला है, न अविद्वान है, न व्यभिचारी है व्यभिचारिणी स्त्री तो हो ही कहा सकती है" तभी चरितार्थ हो सकी थी। सत तुलसीदास जी का कथन कि रामराज्य मे कोई दु:खी नहीं था :—

देहिक दैविक भौतिक तापा
रामराज्य नहि कोऊ दु ख व्यापा

तथा आदि कवि बाल्मिकि ने

बाल्मीकि रामायण मे लिखा है कि

ब्राह्मणा क्षत्रिया. वैश्या: शूद्रा: लोभ विवर्जित:
सर्वे लक्षण सम्पन्ना सर्व धर्म परायणा.

बा. रा. युद्ध का सर्ग १२८

अर्थात् रामराज्य मे समस्त समाज गुण कर्म स्वभावानुसार चार वर्णों मे विभक्त था। ब्राह्मणादि चारो वर्ण अपने अपने कर्त्तव्यो मे सलग्न, धार्मिक कर्मों से सम्पन्न तथा लोभ वृत्तिसे रहित थे रामराज्य का गौरव वर्ण व्यवस्था को सही रूप मे अपनाने से ही था।

"कायाकल्प" पुस्तक के स्वाध्याय से प्रेरित हो वर्णाश्रम व्यवस्था की प्राचीन पद्धति पर कुछ लिखने का प्रयास किया जा रहा है किन्तु विषय की सूक्ष्म विवेचना एव उसका रहस्य जानने के लिए उस पुस्तक का स्वाध्याय आवश्यक है।

महर्षि ने धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष प्राप्ति को मानवजीवन का लक्ष्य बताया है तथा मोक्ष के अर्थ दु.खो से छूटकर आनदित होना कहे हैं तथा दर्शनकारो का भी यही मत है यथा साख्य का कहना है कि अर्थ त्रिविध दु.खात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थ: सा. १/१

अर्थात् आध्यात्मिक, आधिभौतिक एवं आधिदैविक इस त्रिविध दु:ख को छुड़ाकर मुक्ति पाना अत्यन्त पुरुषार्थ है। न्याय का कहना है कि:—

'तदत्यन्त विमोक्षोऽपवर्ग." न्याय अ. १/आ १/सू. २२

जो दु:ख का अत्यन्त विच्छेद होता है वही मुक्ति कहाती है। दु:ख से द्वेष करना मनुष्य का स्वभाव भी है यथा

इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दु ख ज्ञानान्यात्मनो लिगमिति न्याय १/१/१
दु:ख से द्वेष जीवात्मा की पहिचानो मे से एक है।

समाज मे भी लोग समष्टिरूप में अज्ञान, अन्याय एव अभाव दु:खों से पीड़ित होते हैं।

इस प्रकार व्यक्ति ससार में व्यक्तिगत एव समष्टिगत दु.खों से अपने को ग्रसित पाता है। महर्षि एव शास्त्र दु:खो को दूर करने का उपाय "धर्म" को बता रहे हैं जैसे—

यतोऽभ्युदय नि:श्रेयस सिद्धि . स: धर्म । वैशे. अ. पा. १/सू. २

जिसके आचरण से ससार मे उत्तम सुख और मोक्ष (दु ख से छूटना) की प्राप्ति होती है वह "धर्म" है अत महर्षि ने इस उद्देश्य पूर्ति के लिए ऋ. भा. भूमिका में वर्णाश्रम धर्म के पालन का आदेश दिया है जिसकी संपुष्टि वेदों द्वारा की है। और स प्र समु ८ मे कहा है कि —

आदि सृष्टि मे एक मनुष्यजाति थी पश्चात् "विजानीह्यार्यान्ये च दस्यव:" यह ऋग्वेद (१/५१/८) का वचन है। श्रेष्ठो का नाम आर्य, विद्वान, देव और दुष्टों के दस्यु अर्थात् डाकू, मूर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। "उत शूद्रे उतार्ये" अथर्ववेद (१९/६२/१) का वचन आर्यों मे पूर्वोक्त प्रकार से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार भेद हुए। द्विज विद्वानों का नाम आर्य और मूर्खों का नाम शूद्र।

महर्षि ने यजु० वेद अ ३१ के १० व ११ मत्र, प्रश्नोत्तर रूप मे दिये हैं:—

यत्पुरुष व्यदधु: कतिधा व्यकल्पयन्।
मुख किमस्यासीत्कि बाहूकिमूरू पादा उच्यते।। यजु० ३१/१०

अर्थात् पुरुष उसको कहते हैं जो सर्व शक्तिमान ईश्वर कहाता है जिसके सामर्थ्य को अनेक प्रकार से प्रतिपादन करते हैं क्योकि उसमें चित्र-विचित्र बहुत प्रकार का सामर्थ्य है। अनेक कल्पनाओ से जिसका कथन करते हैं। इस पुरुष के मुख अर्थात् मुख्य गुणो से इस ससार में क्या उत्पन्न हुआ है बल, वीर्य, शूरता और युद्ध आदि विद्या गुणो से इस संसार मे कौन पदार्थ उत्पन्न हुआ है व्यापार आदि मध्यम गुणो से किसकी उत्पत्ति हुई है मूर्खपन आदि निम्न गुणो से किसकी उत्पत्ति होती हैं इन चारो प्रश्नों के उत्तर ये हैं :—

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्य: कृत:
ऊरूतदस्य यद्वैश्य.पद्भ्या शूद्रो अजायत। यजु० ३१/११

इस पुरुष की आज्ञानुसार जो विद्या, सत्य भाषणादि उत्तम गुण और श्रेष्ठ कर्मों से ब्राह्मण वर्ण उत्पन्न होता है। वह मुख्य कर्म और गुणों से युक्त होने से मनुष्यो मे उत्तम कहाता है और जो ईश्वर के बल, पराक्रम आदि पूर्वोक्त गुणो से युक्त क्षत्रिय वर्ण को उत्पन्न किया है। खेती व्यापार और सब देशो की भाषाओं को जानना तथा पशुपालनादि मध्यम गुणों से वैश्य वर्ण सिद्ध होता है। जैसे पग सबसे नीचे का अग है वैसे मूर्खता आदि निम्न गुणों से शूद्र वर्ण सिद्ध होता है।

तात्पर्य यह है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य एव शूद्रता चार प्रकार के विभिन्न गुण भिन्न-भिन्न मनुष्य में, परमात्मा की सृष्टि से उत्पन्न होते हैं। यही बात गीता मे कृष्णजी महाराज ने कही है कि :—

चातुर्वर्ण्यं मयासृष्ट गुणकर्म विभागश:
तस्य कर्तारमपि मां विद्धय कर्तारमव्ययम् गी० ४/१३

हे अर्जुन वर्ण के स्रष्टा दो प्रकार के होते हैं। एक सद्गुण कर्त्ता एक अव्यय

(शेष पृष्ठ ५ पर)

वर्णाश्रम - धर्म

(पृष्ठ ४ का शेष)

कर्ता। वर्तमान युग में लोग जन्म के मिथ्याभिमान मे पड़कर चातुर्वर्ण्य के असली स्वरूप को भूल गये। चातुर्वर्ण्य का असली स्वरूप तो गुण कर्म विभाग पर आश्रित था वर्तमान युग में मैं रुष्टा हू इसलिए मैंने दुर्योधन के घर भोजन स्वीकार न करके विदुर के घर भोजन किया और तुम जानते हो कि जन्म के मिथ्याभिमान में पड़कर शिशुपाल मुझे गोप कहता था, क्षत्रिय नही मानता था किन्तु मैं तो इस जन्म के आधार पर चातुर्वर्ण्य को नही मानता और न भगवान कृष्ण द्वैपायन मानते हैं क्योंकि इस चातुर्वर्ण्य का असली कर्त्ता तो वेद का कर्त्ता भगवान है। वह इस गुणकर्म विभागश: चातुर्वर्ण्य का अव्यय कर्ता है। मैं यद्यपि इस युग मे इस गुण-कर्मानुसारिणी वर्ण व्यवस्था का कर्त्ता माना जाता हू परन्तु वस्तुत: मैं इसका कर्त्ता नही हू मैं तो पुनरुज्जीवित करने वाला होने के कारण कर्त्ता कहलाता हू इसका असली कर्त्ता प्रभु हैं, मैं नहीं।

मनुजी के अनुसार जन्म से सभी मनुष्य शूद्रभाव को प्राप्त होते हैं 'जन्मना जायते शूद्र: सस्कारात् द्विजोच्यते" अर्थात् उनके पूर्वजन्म के गुण प्रसुप्त अवस्था में रहते हैं जो आचार्य के सानिध्य मे उदय होते है तथा नवीन सस्कार भी डाले जाते हैं जिसकी पूर्ण उपलब्धि पर उसे द्विज की सज्ञा दी जाती है। महर्षि ने अपनी सस्कारविधि में इनका सविस्तार विवेचन किया है तथा उपनयन सस्कार द्वारा वर्ण-व्यवस्था की आधारशिला रखी है।

महर्षि ने निर्देश किया है कि पूर्वजन्म के सस्कारो एव जन्म से ही माता-पिता द्वारा बालक को शिक्षित करते करते जब वह बालक व बालिका उचितानुचित व कर्त्तव्याकर्त्तव्य को समझने की अवस्था प्राप्त कर लेते हैं और माता-पिता भी उसकी योग्यता को भाप लेते हैं तो वे उसका उपनयन सस्कार घर पर कर उसे आचार्य के सरक्षण मे रखने के लिए गुरुकुल में प्रविष्ट करने ले जाते हैं जहां आचार्य उसकी परीक्षा कर उसका पुन: उपनयन संस्कार करता है और उसे उसकी योग्यतानुसार किसी वर्ण के व्रत मे विद्याचिन्ह यज्ञोपवीत पहिनाकर अपने साथ जोड़ लेता है। बालक को जीवन-यज्ञ में आगे बढने का अधिकार व आदेश देता है। आचार्य कहता है :—

"यज्ञस्य यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि"

हे शिष्य मैं यज्ञ के प्रतिनिधि यज्ञोपवीत से तुझे बांधकर अपने पास रखता हू। इस प्रकार आचार्य बालक को अपने स रक्षण मे इस प्रकार रख लेता है जैसे माता अपने गर्भ मे सरक्षण एव उसे सस्कारित करती है। महर्षि का स प्र समु ३ में यह लिखना कि "प्रथम लड़को का यज्ञोपवीत घर मे हो दूसरा पाठशाला मे आचार्य कुल में" उसका यही तात्पर्य था।

गुरुकुल में प्रविष्ट होने पर बालक यह समझ लेता है कि उसके जीवन का उद्देश्य दु:खो की अत्यन्त निवृत्ति करना है और महर्षि के आदेशानुसार घर में माता-पिता द्वारा गायत्री मत्र के उपदेश एव जपादि से उसने समझ लिया है कि दु:ख नाशक एवं सुख स्वरूप तो परमात्मा ही है उसे ही समर्पण करना योग्य एव उसी के अविद्यादि क्लेशनाशक "भर्ग" स्वरूप का ध्यान व धारण करना है। स प्र समु. ७ मे महर्षि के कथनानुसार ईश्वर की स्तुति प्रभु के गुण कर्म स्वभाव को अपनाना है। ईश्वर का स्मरण सदा बना रहे इसके लिए अपने व पराये दु:खो को सदैव अपने समक्ष रखना आवश्यक है क्योंकि मनुष्य अपने स्वभावानुसार दु:ख में ही प्रभु को याद करता है जैसा कि उसने यह कहावत सुनी है कि "दु:ख में सुमरिन सब करें सुख में करे न कोय" कृष्ण जी ने भी गीता में कहा है कि उनके भक्तो में एक बडी संख्या उन लोगो की है जो दु:खी हैं। और वेद का आदेश है कि "तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्य: पन्था विद्यतेऽयनाय" का उपदेश भी उसे मिला है। अर्थात् उस परमेश्वर को जान व प्राप्त करने से ही क्लेशो से छुटकारा पाकर मोक्षानन्द प्राप्त किया जा सकता है अन्य कोई दूसरा मार्ग नही है—

यजु० ३१/१८

वैदिक सम्पत्ति के रचयिता प० रघुनन्दन शर्मा लिखते हैं :— "जब तक "मोक्ष" को जीवन का लक्ष्य नहीं स्थिर किया जाता तब तक समाज की कोई व्यवस्था सफल नही हो सकती।" इस प्रकार बालक इस निश्चय के साथ कि उसे ब्रह्म का ही साक्षात्कार करना है, अपनी योग्यतानुसार ब्रह्म के किसी भी गुण में आचार्य की सहायता से उसे दीक्षित होना है आचार्य से प्रार्थना करता है कि:—

"ब्रह्मचर्यमागाम् ब्रह्मचार्यसानि"

ब्रह्मचर्य के लिए मैं आया हूं, (ब्रह्मचारी बनाइये) वेद में भी लिखा है कि:-

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत
इन्द्रोह ब्रह्मचर्येण देवभ्य: स्वराभरत। अथर्वकां.११/अ.३/म १९

अर्थात् ब्रह्मचर्य और धर्मानुष्ठान से ही विद्वान लोग जन्म मरण को जीत के मोक्ष सुख को प्राप्त हो जाते हैं जैसे इन्द्र अर्थात् सूर्य परमेश्वर के नियम में स्थित होके सब लोकों का प्रकाश करने वाला हुआ है वैसे ही मनुष्य का आत्मा ब्रह्मचर्य से प्रकाशित होके सबको प्रकाशित कर देता है। इसलिए ब्रह्मचर्याश्रम ही सब आश्रमो मे उत्तम हैं।

आचार्य की देखरेख में निरतर अभ्यास करते करते बालक २५वे वर्ष की आयु मे तथा बालिका १६वे वर्ष तक ब्रह्म के किसी न किसी गुण (ब्राह्मणत्व, क्षत्रित्व अथवा वैश्यत्व) मे दक्षता प्राप्त कर लेना था जिसकी परीक्षा कर आचार्य उसके वर्ण की घोषणा करता था तथा तदानुसार ब्रह्मचारी दूसरे आश्रम मे प्रवेश करता था महर्षि स. प्र समु ४ में लिखते हैं —

यह गुण कर्मों की व्यवस्था कन्याओ के १६ वें वर्ष और पुरुषो की पच्चीस वें वर्ष की परीक्षा मे नियत करनी चाहिए। वर्णों के गुण तथा कर्मों का वर्णन करने के पश्चात् लिखते हैं कि "जिस जिस पुरुष मे जिस वर्ण के गुण हो उस वर्ण का उसे अधिकार देना। ऐसी व्यवस्था रखने से सब मनुष्य उन्नतिशील होते हैं क्योकि उत्तम (उच्च) वर्णों को भय होगा कि जो हमारे संतान मूर्खत्वादि दोष युक्त होगे तो शूद्र होना पडेगा और निम्न (नीच) वर्णों को उच्च (उत्तम) वर्णस्थ होने के लिए उत्साह बढेगा।"

"विद्या और धर्म के प्रचार का अधिकार ब्राह्मण को देना क्योंकि वे पूर्ण विद्यावान और धार्मिक होने से उस काम को यथा योग्य कर सकते है। क्षत्रियो को राज्य के अधिकार देने से कभी राज्य की हानि व विघ्न नही होता। पशु-पालनादि का अधिकार वैश्यो को ही देना योग्य है क्योकि वे इस काम को अच्छी-तरह कर सकते हैं। शूद्र को सेवा का अधिकार इसलिए है कि वह मूर्ख होने से विद्या-विज्ञान सम्बन्धी काम कुछ भी नही कर सकते किन्तु शरीर के काम सब कर सकते हैं। इस प्रकार वर्णों को अपने अपने अधिकार में प्रस्तुत करना राजादि सभ्य जनो का काम है।" स्वामी समर्पणानन्दजी ने भी अपनी पुस्तक "कायाकल्प" मे इस विषय मे बडा उत्तम प्रकाश डाला है। वे लिखते हैं 'समाज मे मर्यादा से अधिक शक्ति किसी भी वर्ग के हाथ मे आ जाने से वह वर्ग पतित होए बिना नही रह सकता अत भारतीय समाज शास्त्रियो ने किसी एक वर्ग के हाथ मे सम्पूर्ण शक्ति नही आने दी। विद्या व्यसनी ब्राह्मणवर्ण को उन्होने गौरव दिया है किन्तु धन सचय, ऐश्वर्य भोग तथा राज्यशासन का अधिकार उनसे छीन लिया है। अन्याय के साथ लडने मे प्राणो की आहुति देने वालो के हाथो मे शासन की बागडोर दी है उन्हें प्रभुत्व दिया है। तो आदर ब्राह्मणो से कम दिया है और लक्ष्मी भी सम्पत्ति निर्माताओ से कम दी है। सम्पत्ति उत्पन्न करने वालो को ऐश्वर्य भोग दिया है तो उन्हे गौरव और प्रभुत्व नही दिया है।"

आश्रम व्यवस्था :—

महर्षि स. प्र. मे लिखते है कि "जो पूर्ण विद्वान्, जितेन्द्रिय, विषयभोगो की कामना से रहित परोपकार करने की इच्छा से युक्त पुरुष हो वह ब्रह्मचर्याश्रम ही से सन्यास लेवे जो विषयभोग की इच्छा युक्त होवे विद्यापूर्ति पर अपने वर्ण की विदुषी नवयुवती से विवाह कर के गृहाश्रम मे प्रवेश करे।" अत: गृहाश्रम मे प्रवेश करने वाले गृहस्थ की मर्यादाओ की रक्षा करता हुआ समाज सेवा के लिए एक वा अधिक (यथावश्यक) उत्तम योग्य संतान उत्पन्न कर पत्नि परिवार, पडौसी मित्रादि के परस्पर प्रेमादर्श को उपस्थित करता तथा ब्रह्मचर्य-वानप्रस्थ एव सन्यास तीनो आश्रमवासियो की सेवा का आधार भी बनता था। अपनी योग्यतानुसार समाज के दु:ख को दूर करने मे सहयोग करता था। राम, कृष्ण ऋषि, मुनि, महर्षि दयानन्द, म. गांधी आदि अनेको महापुरुष गृहस्थाश्रम की ही देन हैं। जीवन

(शेष पृष्ठ ६ पर)

"उपनिषदों पर पत्राचार पाठ्यक्रम का शुभारंभ

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा पाठ्यक्रम का विमोचन

३० जून रविवार को आर्य समाज सान्ताक्रुज बम्बई मे श्री मेघजीभाई नेनसी आर्य साहित्य पुरस्कार समारोह के शुभ अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने डा० सोमदेव शास्त्री द्वारा सचालित स्वाध्याय पत्राचार पाठ्यक्रम के "उपनिषद् सन्देश" पाठ्यक्रम के प्रथम अक का विमोचन करके इसके शुभारम्भ की घोषणा की। प० राजगुरु शर्मा (उप प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने गत वर्ष के "सत्यार्थ प्रकाश और गीता" के पत्राचार पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियो को प्रमाण पत्र और पुरस्कार वितरित किए।

श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य (उप मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने पत्राचार पाठ्यक्रम की उपयोगिता और आवश्यकता पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि इसमे सभी आर्य जनो को सम्मिलित होना चाहिए।

पाठ्यक्रम के सचालक डा सोमदेव शास्त्री ने सूचित किया कि जुलाई, ९१ से "उपनिषदो" पर पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है - प्रति मास १६ पृष्ठ की एक लघु पुस्तिका डाक से भेजी जायेगी। पुस्तक के अन्त मे पाच प्रश्न होगे, जिनका उत्तर पठनार्थी को देना होगा। वर्ष मे सबसे अधिक सही उत्तर देने वाले प्रथम तीन पठनार्थियो को २०१, १५१ तथा १०१ रुपये का पुरस्कार व प्रमाण पत्र दिये जायेगे। चालीस प्रतिशत अक प्राप्त करने वाले प्रत्येक पठनार्थी को प्रमाण पत्र दिया जायेगा। पुस्तक, डाक व्यय, प्रमाण पत्रादि का व्यय मात्र केवल २५.०० रुपये (पच्चीस रुपये मात्र) वार्षिक शुल्क है। अत सभी आर्य बन्धुओ से आग्रह है कि वार्षिक शुल्क रुपये २५-०० पचीस रुपये एम० ओ०/ड्राफ्ट मे नीचे लिखे पते पर भेज कर सदस्य बने, उपनिषदो के ज्ञान से लाभान्वित हो तथा सही उत्तर देकर पुरस्कार प्राप्त करें।

डा० सोमदेव शास्त्री
३०४ सुमन अपार्टमेंट, यारी रोड, वर्सोवा,
अन्धेरी (प) बम्बई-६१

वर्णाश्रम - धर्म

(पृष्ठ ५ का शेष)

के पचास वर्ष की आयु तक इस आश्रम मर्यादा का उत्तम आदर्श उपस्थित करके परिवार प्रेम से ऊपर उठकर समाज सेवा मे विशेषकर शिक्षा क्षेत्र मे योगदान देने व ब्रह्मचर्याश्रम मे किये तप व आत्मचिंतन के अनुष्ठान मे स्वय पुन: विशेष रूप से सलग्न हो जाने के लिए गृहस्थाश्रम को छोड वानप्रस्थाश्रम को अपनाता था जहा वह ब्राह्मणो के सहयोगी के रूप मे विद्या व शिक्षा-प्रदान मे नि.शुल्क सहायक बनता था जिससे न्यूनतम व्यय मे अविद्या, निरक्षरता का कष्ट समाज से दूर होता था।

इस प्रकार आयु के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर व्यक्ति सन्यास आश्रम को ग्रहण करता था जहा वह ब्रह्मचर्याश्रम से सीधे सन्यास मे प्रवेश हुए त्यागी वैराग्यवान महात्माओ की श्रेणी मे आ मिल परिवार-देश प्रेम व सेवा के भाव से ऊपर उठ विश्व-प्रेम मे निमग्न हो प्राणि-मात्र मे ब्रह्म के दर्शन कर विश्व कल्याण में तत्पर हो कर ब्राह्मी स्थिति प्राप्त कर कृत-कृत्य हो जाता था। जैसा कि गीता मे भगवान कृष्ण ने कहा है :—

निर्मानमोहा जितसग दोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामा. द्वन्द्वैर्विमुक्ता.

सुख दु:खसज्ञैर्गच्छन्त्यमूढा पदमव्यय तत् अ. १५।५

जिन्होने मान तथा मोह अपने अन्दर से बिलकुल निकाल दिया है, जिन्होने फल मे आसक्ति का दोष बिलकुल दूर कर दिया है जो योगाभ्यासादि उन्नति के साधनो मे निरन्तर लगे रहते हैं जिन्होने अपनी आवश्यकता इतनी कम कर दी हैं कि वे आप्त काम होने के कारण निवृत्त-काम हैं तथा सुख दु:खादि-द्वन्दो से विमुक्त है अर्थात् सब अवस्थाओं में एक से भक्ति-परायण रहते हैं ऐसे समझदार लोग ही उस अव्यय पद पर पहुचते है (जहा मै पहुचा हू)। ॐ

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

प्रवेश सूचना

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार में ६ वर्ष से १० वर्ष की आयु के बालक १ जुलाई से ३१ जुलाई तक विभिन्न श्रेणियों मे योग्यतानुसार प्रविष्ट किए जायेंगे।

शहर के वातावरण से दूर गगा तट पर स्थित विश्वविद्यालय के विशाल प्रागण में बालको के खेल-कूद आदि की आदर्श सुविधाए हैं। केन्द्रीय विद्यालय के पाठ्यक्रम के साथ साथ सस्कृत, धर्म शिक्षा का अध्ययन अनिवार्य है। भोजन, निवास शुल्क तथा अन्य सम्बद्ध सूचनाओं के लिए १० रुपये का मनीआर्डर अधोहस्ताक्षरी को भेज कर नियमावली प्राप्त करे।

पजाब, कश्मीर तथा देश के अन्य भागो मे उग्रवादियो की हिंसा के कारण जो बालक निराश्रित हो गए हैं उन्हे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे नि:शुल्क शिक्षा, निवास और भोजन देने की व्यवस्था की गई है।

सहायक मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

वेद प्रचार के लिए अपनी सेवाएं समर्पित करें

पाखण्ड और अन्धविश्वास बढ रहा है और हम आपसी लडाई झगडों में पड कर चैन की बशी बजा रहा है। अत सम्पूर्ण विश्व में वेदो का डका बजाने के लिए सेवा निवृत्त व्यक्ति, वान प्रस्थी और सन्यासी कमर कसकर मैदान मे उतर आये। भोजन आदि से पूरा सत्कार किया जायेगा। इच्छुक महानुभाव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करे।

ब्रह्मप्रकाश शास्त्री
११/१२४ शास्त्री सदन पश्चिम आजाद नगर दिल्ली-५१

आर्य बाल संरक्षण गृह

केवल निराश्रित एव निर्धन छात्रो के लिए आर्य बाल सरक्षण गृह का नि.शुल्क शिक्षा, वस्त्र, भोजन व निवासादि का उत्तम प्रबन्ध।

आर्य जनो को प्राथमिकता न्यूनतम प्रवेश आयु १२ वर्ष, स्थान सीमित नियमावली तथा प्रवेश पत्र के लिए सम्पर्क करें।

आर्य बाल सरक्षण गृह ८६७८
नया मुहल्ला आर्य समाज, पुल बगश दिल्ली-६

वार्षिकोत्सव

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर मे दिनाक २७-९-९१ से २९-९-९१ तक "महर्षि दयानन्द स्मृति सम्मेलन" होगा तथा इस अवसर पर दिनाक २५-९-९१ से २९-९-९१ तक सामवेद पारायण यज्ञ होगा तथा आर्ययुवक सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि आयोजित होगे।

जगदीश सिंह आर्य, मन्त्री

चुनाव समाचार

रामगली आर्य समाज मन्दिर सी-११ हरिनगर घण्टाघर, नई दिल्ली-६४ का वार्षिक निर्वाचन श्री दयानन्द जी गौतम की अध्यक्षता मे निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री ओमप्रकाश खन्ना।

मन्त्री—श्री ओमप्रकाश शर्मा "सैलानी"।

कोषाध्यक्ष—श्री बनारसीदास सरना।

—"आर्य कुमार सभा (रजि) किग्जवे दिल्ली-९ का वर्ष १९९१-९२ हेतु वार्षिक चुनाव आर्य युवा, लेखक श्री प्रणवीर आर्य की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री भुवन चन्द्र।

मन्त्री—श्री धीरज मलिक।

कोषाध्यक्ष—प्रवीण ग्रोवर।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

१.	वैदिक शिक्षा (भाग प्रथम द्वितीय) प्रत्येक		१.५०
२.	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
३.	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३.००
४.	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४.००
५	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
६	धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५.००
७.	फलैश आफ ट्रूथ	(डा० सत्यप्रकाश वर्मा)	२ ००
८	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	" "	२.००
९.	एटोनामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०	आर्यों का आदि देश	" "	२ ००
११.	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	" "	२५ ००
१२.	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	" "	२.००
१३.	चत्वारो वै वेदा	" "	५ ००
१४.	द्वैतसिद्धि	" "	५.००
१५.	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	३०.००
१६.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५.००
१७.	हंसता चल, हंसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६ ५०
१८.	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
१९	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२०.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२१.	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२२.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकड़ा

नोट : उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नही लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान : **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

प्रवेश सूचना

गुरुकुल महाविद्यालय, रुद्रपुर प्राचीन आश्रम पद्धति के अनुसार समग्र व्यक्तित्व के विकास पर बल देने वाली यह संस्था उत्तर प्रदेश राज्य शासन से प्रथम श्रेणी में वर्गीकृत एवं अनुदान प्राप्त है। सुविधा की दृष्टि से अध्यापन क्रम निम्न वर्गों मे विभक्त है।

(अ) कक्षा १ से ५ तक बेसिक शिक्षा परिषद् के नियत पाठ्यक्रमानुसार के साथ धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा अनिवार्यत. दी जाती है। जिससे कि बच्चे को शिष्ट सभ्य तथा अनुशासित बनाया जा सके।

(ब) प्रथमा (षष्ठ) से आचार्य (एम० ए० समकक्ष) पर्यन्त संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से सम्बन्धित प्राचीन एव सभी आधुनिक विषयो (अग्रेजी, गणित, विज्ञान आदि) का अध्ययन एव परीक्षा क्रम सन्निहित है।

(स) अनुसन्धेय विषयो के गहन अध्ययन एव संस्कृत, हिन्दी विषयक स्नातकोत्तर उपाधि (एम० ए०, पी० एच० डी०) हेतु स्वतन्त्र रूपेण सेवा निवृत्त विद्वानो का सानिध्य सुप्राप्त है।

ज्ञातव्य है कि उक्त परीक्षाए समस्त राजकीय विभागो मे नियुक्ति प्रशिक्षण एव तकनीकी संस्थाओ मे प्रवेश हेतु निरापद रूप से मान्य है।

मेधावी छात्रों को पात्रता के आधार पर राजीकीय तथा केन्द्रिय छात्र वृत्ति सुविधा सुलभ है।

प्रवेश कालीन व्यय ४०० रु० तत्पश्चात् भोजन शुल्क प्रति मास १०० रुपये है। घृत दुग्धादि व्यय बच्चे की आवश्यकता के अनुसार पृथक से देय है। विद्युत चालित उपकरणो से युक्त गुरुकुल का एकान्त शान्त सुरम्य वातावरण अध्ययन मनन के लिए नितान्त उपादेय है।

प्रवेशार्थी सद्य: सम्पर्क स्थापित करें—!

प्राचार्य—गुरुकुल महाविद्यालय रुद्रपुर
तिलहर शाहजहांपुर (उ० प्र०)

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R.N. No 32387/77 Posted at N.D.P.S.O on 11-12-7-1991 Licence to post without prepayment, Licence No U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३६

संस्कृताश्रिता हि संस्कृति : तस्मान्वद संस्कृतम्

सस्कृत भाषा समग्र विश्व के लिए गौरव का विषय है। संस्कृत मात्र धार्मिक आध्यात्मिक भाषा ही नहीं है, अपितु यह एक उत्कृष्ट वैज्ञानिक भाषा भी है। प्राचीन काल मे यह लोक भाषा थी। आज भी यह सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। वैज्ञानिको की मान्यता है कि कम्प्यूटर के लिए भी सर्वाधिक ग्राह्य भाषा सस्कृत ही है। सस्कृत स्वाभिमान की भाषा है। सस्कृत सदाचार की भाषा है, संस्कृत नीति की भाषा है। विश्व का आदि ज्ञान वेद सस्कृत भाषा मे ही है। अत: सस्कृत को पुन: स्थापित करने मे सभी को आगे आना चाहिए। ये विचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल ने आत्म शुद्धि आश्रम बहादुर गढ़ में आयोजित सस्कृत सभाषण शिविर के समापन समारोह मे व्यक्त किए।

लोक भाषा प्रचार समिति के सहयोग से आत्म शुद्धि आश्रम के मन्त्री डा० शिवकुमार शास्त्री के सयोजन में, एक दस द्विमीय संस्कृत सभाषण शिविर आयोजित किया गया। आश्रम के अध्यक्ष श्री स्वामी धर्ममुनि जी महाराज ने, लोक भाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष श्री सूर्य नारायण और मन्त्री श्री सदानन्द जी को सभी प्रकार की सुविधाए प्रदान की। इस शिविर का उद्घाटन डा. रविन्द्र नागर ने २२ जून को किया था।

इस दस दिवसीय शिविर में बालकों के साथ-साथ माताओं और बहनो ने भी भाग लिया।

समापन समारोह में श्री ओमप्रकाश तलवाड़- चौ० रघुनाथ सिंह, श्री होशियार सिंह,, श्री गुलाटी, श्रीमती वर्मा, श्री भरपूर सिंह, स्वामी धर्म मुनि जी तथा अन्य स्थानीय महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किए। संस्कृत संभाषण के साथ नाटिकाओं के माध्यम से छात्रो ने संस्कृत भाषा में अर्जित योग्यता का प्रदर्शन किया। शिविरार्थियों को प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किए गए।

इस शृंखला में अगला शिविर वेद मन्दिर, नन्दा एन्क्लेव नजफगढ़ में ४ जुलाई से १४ जुलाई तक लगाया जाएगा। इसके बाद में आर्य समाज पंजाबी बाग मे एक शिविर लगाया जाएगा।

समारोह का संयोजन डा. शिवकुमार शास्त्री ने किया। उन्होने शिविरार्थियों को सत्कर्म करने की प्रेरणा दी तथा अभ्यागतो का धन्यवाद किया।

सेवा में—

श्री पुस्तकाध्यक्ष महोदय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ प्र)

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० न० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ३७ | रविवार, २१ जुलाई, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१

मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश में ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

सभाओं के निर्वाचन में वैदिक यतिमण्डल का कोई हस्तक्षेप नहीं

योग मन्दिर में छपे विज्ञापन का श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती द्वारा खण्डन

— स्वामी सर्वानन्द सरस्वती —

श्री आचार्य भगवान देव द्वारा प्रकाशित 'योग मन्दिर' पत्रिका में एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है जिसमें लिखा है कि "गाजियाबाद में यतिमण्डल की बैठक में सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को हटाने के लिए आर्य समाज रक्षा समिति बनाई गई।"

स्वामी सुमेधानन्द मन्त्री, वैदिक यतिमण्डल ने एक स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि "मैं यतिमण्डल के अध्यक्ष (स्वामी सर्वानन्द जी महाराज) की अनुमति से यह स्पष्टीकरण करना चाहता हूं कि उक्त बैठक एक स्वतन्त्र बैठक थी, यतिमण्डल की बैठक अध्यक्ष की अनुमति में ही बुलाई जाती है और प्रत्येक बैठक का ऐजेण्डा मैं ही सभी मान्य सदस्यों को भेजता हूं।

यतिमण्डल में यह प्रस्ताव पारित है कि मण्डल सभाओं के कार्य में सीधे हस्तक्षेप नहीं करेगा। यतिमण्डल की कार्यपद्धति के बारे में किसी प्रकार की भ्रांति न हो।

'योग मन्दिर' में छपे विज्ञापन की कड़े शब्दों में आलोचना करते हुए कहा कि उस विज्ञापन में पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रति अभद्र शब्दों का प्रयोग अनार्य का परिचायक है।

उपर्युक्त विज्ञापन के खण्डन को स्पष्ट करते हुए पूज्य स्वामी श्री जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी ने कहा कि आचार्य भगवान देव ने 'योग मन्दिर' पत्रिका में जो भी विज्ञापन छापा है वह अपनी इच्छानुसार छापा है। इसके लिए मुझ किसी प्रकार का परामर्श नहीं लिया गया।

—स्वामी सुमेधानन्द
मन्त्री, वैदिक यति मण्डल
दयानन्द मठ चम्बा (हि० प्र०)

पंजाब व काश्मीर के मामले में सरकार से कठोर कार्रवाई करने की मांग

दिल्ली १६ जुलाई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में आर्य समाज के एक शिष्टमण्डल ने आज प्रधानमन्त्री श्री नरसिंह राव से भेंट की।

शिष्टमण्डल ने प्रधानमन्त्री को सरकार द्वारा विश्वास का मत प्राप्त करने पर बधाई देते हुए कहा कि सरकार देश हित में जिस बात को ठीक समझे उसे लागू करने में किसी प्रकार का संकोच न करे। स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री जी को सुझाव दिया कि जम्मू-कश्मीर और पंजाब के मामले में सरकार को कठोर कदम उठाने चाहिए इसके लिए आवश्यक है कि पंजाब व कश्मीर के समूचे सीमा क्षेत्र में ५ मील चौड़ी सुरक्षा पट्टी का निर्माण करके इन राज्यों में ४१ लाख भूतपूर्व फौजी परिवारों को बसाया जाये और उन्हें हथियारबन्द किया जावे। क्योंकि कश्मीर आदि से जो हिन्दू इस समय अन्यत्र विस्थापितों का जीवन व्यतीत कर रहे हैं, उसके लिए आवश्यक है कि सरकार उनमें आत्मविश्वास पैदा करे और उन्हें ऐसा वातावरण दे कि वे भयमुक्त होकर अपने घरों को वापस हो सके।

स्वामी जी ने प्रधानमन्त्री जी को बताया कि आज से ३ वर्ष पूर्व उन्होंने सुरक्षा पट्टी के निर्माण और भूतपूर्व सैनिकों को बसाये जाने की मांग स्वर्गीय राजीव गांधी से भी की थी। स्वामी जी ने विश्वास व्यक्त किया कि जिस प्रकार लोकसभा के अध्यक्ष के निर्वाचन में उन्हें विपक्षी दलों का समर्थन मिला है, उसी प्रकार राष्ट्र हित के हर कार्य में भी प्रधानमन्त्री जी को राष्ट्रवादी जनता तथा राजनैतिक दलों का सहयोग मिलता रहेगा।

प्रधानमन्त्री जी ने शिष्टमण्डल की बातों को ध्यान से सुना और सुझावों पर गम्भीरता से विचार करने का आश्वासन दिया।

शिष्टमण्डल में सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव, के अतिरिक्त कई अन्य लोग भी शामिल थे।

मपरार्श—डा० धर्मपाल | प्र० सम्पादक—सूर्यदेव | सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री | व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

अक्षय सत्यनारायण व्रत कथा-१

— पं० देवनारायण भारद्वाज —

सत्य नारायण व्रत कथा भारत के सभी प्रदेशों में कही और सुनी जाती है। यह व्रत क्या है? सत्य नारायण कौन हैं?

पूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्धारित आठ वेद मन्त्रों की व्याख्या के आधार पर पं० देवनारायण भारद्वाज जी ने अक्षय सत्यनारायण व्रत कथा पर प्रकाश डाला है। जिसे आप धारावाहिक के रूप में क्रमशः पढ़ेंगे।

—सम्पादक

एक बार नैमिषारण्य तीर्थ मे शौनकादिक ८८ हजार ऋषियो ने सूत जी से प्रश्न किया, भगवान ससार में मानव प्राणी बहुत दु ख पा रहे हैं। इन सबसे छुटकारे का उपाय क्या है?

सूत जी ने बताया कि एक बार नारद जी मृत्यु लोक मे भ्रमण करने आये तो उन्होने भी लोगो को दु:खी देख कर यह प्रश्न विष्णु जी से किया कि भगवन मृत्यु लोक मे लोग बहुत दु खी हैं। कृपया ये मनुष्य लोग दु ख से छुटकारा पाये–इसका कोई उपाय बतलाइये। विष्णु भगवान ने कहा कि मनुष्य अपने अच्छे बुरे कर्मों के कारण सुख दुःख को भोगते है। दु ख व पीडा से छूटने का उपाय तो स्वय मनुष्यो के पास है, कि वे बुरे कार्य छोड़ कर विवेक पूर्वक अच्छे कार्य करने लगे, तो भोगानुसार शनै.-शनै खाते मे दु ख का भाग कम होता जायेगा और सुख का भाग बढने लगेगा। किन्तु नारद जी –लोग लोभ मोह के चक्कर मे पड़ कर समय पर बिवेक को छोड कर तत्कालिक स्वार्थ के वशीभूत होकर दीर्घ कालीन सकट मे फस जाते हैं।

कुछ दिन पूर्व शकर जी माता पार्वती सहित मृत्यु लोक में गए थे, उन्होने दो परिवारो मे एक-एक रात्रि बिताई थी। उसका विवरण मुझे सुनाया था। उससे भी यही सिद्ध होता है कि ससार मे दोनो प्रकार के मनुष्य हैं, सुकर्मी विवेकी और कुकर्मी अविवेकी। जहा शकर दम्पति जी ठहरे थे, वे दोनो परिवार अत्यन्त निर्धन व दु.खी थे। एक परिवार से जब वे चलने लगे तो माता पार्वती ने शंकर जी से आग्रह किया कि इस परिवार को कोई ऐसा वरदान दे कि इनकी गरीबी दूर हो जाय। शकर जी ने पार्वती जी को बहुत समझाया कि इनको अपने कर्मों का फल भोग लेने दो–अभी कोई सहायता काम नही आयेगी। जब दुष्ट कर्म फल भोग समाप्त हो जायेगा तो यह सभी शुभ कर्म फल से सम्पन्न हो जायेगे। पार्वती जी ने अपना आग्रह और बढाया तो शकर जी ने कहा– चलो आप कहती हैं तो हम इस परिवार के तीनो प्राणियो को एक-एक वर देने को सहमत है। यात्रा के लिए वैसे ही विलम्ब हो चुका है। अब ये लोग अति शीघ्र वर मागे। पार्वती जी ने सबसे पहले बुढिया माता से कहा कि तुम वर माग लो। उसको अपनी जवानी याद आ गई, झट उसने वर मागा मुझे जवान बना दीजिए। लो ! वह जवान हो गई। उसके बूढे पति को क्रोध आ गया कि मुझे बूढा छोड कर यह जवान हो गई। उसने शकर जी से कहा भगवान मुझे यही वर दीजिये कि जवानी की भूखी मेरी पत्नी कुतिया बन जाये। अब वह कुतिया बन गई। यह देख कर उसका पुत्र रो पडा और बोला–भगवन मुझे मेरी मा चाहिए। शकर जी ने उस पुत्र को वर दे दिया और वह कुतिया पुन बूढी माता बन गई। देखा ! नारद जी, शकर जी के तीन वरदान भी काम नही आये और वह अविवेकी परिवार ज्यो का त्यो दु ख भोगने के लिए विवश रहा।

विष्णु भगवान ने शकर जी के दूसरे परिवार का अनुभव भी नारद जी को इस प्रकार सुनाया। शकर पार्वती ने दूसरी रात्रि जिस परिवार मे बिताई वह भी अत्यन्त निर्धन था। इस परिवार मे भी तीन ही प्राणी थे। पति-पत्नी और उसकी अन्धी बूढी माता जी। इनको अपनी गरीबी के साथ-साथ सन्तान की भी चिन्ता थी। रात्रि निवास करके शकर जी प्रभात को वहा से भी चलने लगे तो परिवार के स्वागत सत्कार से प्रभावित होकर पार्वती जी ने इस परिवार को भी शकर जी से वरदान देने की प्रार्थना की। विचार विमर्श के बाद शकर जी ने कहा–वहा मेरे तीन वरदान व्यर्थ गये इसलिए मै एक ही वरदान दे सकता हू। शीघ्रता से कोई एक व्यक्ति मुझ से एक वरदान माग ले। बूढी माता जी ने हाथ जोड़ कर नम्रता पूर्वक शकर जी से प्रार्थना की, कि हे भगवन यदि आप प्रसन्न है तो मुझे ऐसा वरदान दे कि मैं अपने पौत्र को सोने के कटोरे मे सोने की चम्मच से दूध पीते हुए देखू। शकर जी ने कहा तथास्तु। इस परिवार ने एक ही वरदान से तीन लाभ प्राप्त कर लिए। मा की आखे, धन तथा सन्तान की प्राप्ति। विष्णु जी ने कहा यह तो समझाने के लिए है। किन्तु वास्तविकता यह है कि कोई मनुष्य अपने विवेक से सकट के दिन पार कर आगे सुखमय जीवन प्राप्त कर सकता है।

विष्णु जी ने नारद से कहा भूलोक मे मनुष्य, पशु व अन्य प्राणियों का जन्म अपने कर्म फल को भोगने के लिए ही होता है। जो लोग अच्छे कर्म करते है वे अच्छा फल भोगते है और जो लोग बुरा कर्म करते हैं वे दुःख भोगते हैं। बुरे कर्मों के फल से छूटकारा तो भोगने के बाद ही मिलता है। मानव अच्छे कर्मों की ओर अग्रसर हो इसके लिए एक उपाय अवश्य है वह है सत्य नारायण का व्रत धारण करना। इससे सद्विवेक जागृत होता है और मनुष्य दु.ख से छूट कर सुख की ओर अग्रसर होता है।

नैमिषारण्य क्या है?

वैसे तो एक तीर्थ सीतापुर जनपद मे इस नाम का है—पर वह तीर्थ यहा पर भी है जहा पर हम यह कथा कह रहे हैं। निमेष कहते हैं पल को–एक बार आंख की पलको को खुलने-मुंदने मे जितना समय लगता है–उसे एक निमेष कहते हैं। ऐसे ही निमेषों का अरण्य, जगल या समूह ही नैमिषारण्य है। वह वास्तव मे काल या समय है जो सृष्टि के आदि से चला आ रहा है। तीर्थ उसे कहते है जो हमे तार दे–पार कर दे। तो इसी जीवन का जो समय मिलता है उसे सही प्रकार से पार कर जाना ही नैमिषारण्य तीर्थ का निवास है। शौनकादि ८८००० हजार ऋषि कौन हैं—हमारा हृदय २४ घण्टे मे लगभग इतनी बार ही गति करता है। हृदय मे स्थित आत्मा इस काल चक्र से पार जाने के लिए हृदय की हर धडकन के साथ प्रश्न करता है कि हे प्रभु इस ससार सागर से हम कैसे पार हो? तभी सूत जी–काल चक्र को चलाने वाले सारथी सूत जी–सूत्र रूप में आत्मा को उत्तर देने लगते है। सूत जी सारथी के रथ मे ही तो आत्मा रूपी ऋषि बैठे है जो आत्मा के बाहर भी हैं और उसके भीतर भी है।

नारद (न+आरत) अर्थात् जो आत्मा दु खी नही है वही सर्वव्यापक प्रभु विष्णु जी से भेंट कर प्रश्न करता है कि भगवान ससार के लोगो के दुखो से छुटकारे का क्या उपाय है। उसी को सर्वान्तर्यामी प्रभु भी अपनी वेद वाणी द्वारा उपाय बता देता है कि सत्य नारायण व्रत ही वह उपाय है जिससे मानव मात्र का कल्याण हो जाता है। यहां पर प्रयुक्त विष्णु एव शकर दो नाम एक ही प्रभु के है जो आदि पत्रकार नारद के चिन्तन मनन से क्रमानुसार हृदय मे प्रकट होते है।

व्रत और नाम—

सत्यनारायण जी का व्रत क्या है?

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥

व्रत से दीक्षा, दीक्षा से दक्षिणा, दक्षिणा से श्रद्धा और श्रद्धा से सत्य प्राप्त होता है। वेद भगवान ने सत्य नारायण को प्राप्त करने के लिए यही उपक्रम बताया है। मन मे सकल्प करने से प्रभु को प्राप्त करने की विद्या या उपाय की दीक्षा प्राप्त होती है। दीक्षा मे दक्षता आने से किसी को भी दक्षिणा मिलने लगती है। प्रभु के नाम स्मरण का प्रसाद व सुख ही दक्षिणा है—जैसे पुरोहित को यज्ञ के बाद, चिकित्सक को चिकित्सा के बाद व गुरु या शिक्षक को शिक्षण के बाद आर्थिक दक्षिणा दी जाती है। यही दक्षता व दक्षिणा ही है जो अपने उद्देश्य के प्रति श्रद्धा अर्थात् सत्य धारणा उत्पन्न करती है और इसी श्रद्धा से सत्य नारायण से मिलन होता है।

(क्रमशः)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(१४ जुलाई, ९१ के अंक से आगे)

इनके अतिरिक्त सर्वश्री सुरेन्द्रकुमार, कमला, वेदपाल शास्त्री, उदयभानु धर्मवीर, नरसिंह चरण पाडा, अनीता वालिया, रामकृष्ण आर्य, कर्मसिंह शास्त्री, देवेन्द्रनाथ शास्त्री तथा सुकुमार आर्य को पी० एच० डी० उपाधि मेरे निर्देशन में कार्य करने के पश्चात् मिल गई है। अन्य लगभग ६ व्यक्ति शोधकार्यरत हैं।

मेरे कार्य काल में ऋषि दयानन्द के दर्शन, तथा वेदार्थ विषय के विभिन्न पद्धतियों पर दो सगोष्ठियां आयोजित की गई जिनमे विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा अन्य सस्थाओ के विद्वानो ने भाग लिया। गत १० वर्षों से मैं देश के विभिन्न भागो मे अखिल भारतीय प्राच्य विद्या परिषद द्वारा आयोजित होने वाले द्विवार्षिक सम्मेलनो मे मैं भाग लेता रहा हू तथा वहा पत्र वाचन भी करता रहा हू। इनका विवरण इस प्रकार है—

प्राच्य विद्या सम्मेलन का शान्ति निकेतन अधिवेशन १९८०

पठित निबन्ध—वेदाध्याय को स्वामी दयानन्द की देन।

जयपुर अधिवेशन—१९८२ नवजागरण के आन्दोलनो का दार्शनिक दृष्टिकोण अहमदाबाद अधिवेशन १९८५ ई०।

कलकत्ता-अधिवेशन मे १९८६ भारतीय नवजागरण और सस्कृत।

विशाखापट्टनम अधिवेशन—१९८९ वेदों मे पुरुषार्थ प्रेरित यथार्थवाद। चण्डीगढ़ मे आने के पश्चात् मेरी शोध, लेखन, पुस्तक प्रणयन आदि साहित्यिक प्रवृत्तियों का निरन्तर विस्तार एव विकास हुआ है। आर्य समाज और स्वामी दयानन्द विषयक शोध कार्य करने वाले सभी स्वदेशी एव विदेशी विद्वान् भी समय समय पर मुझ से परामर्श लेते रहे है। देश-विदेश के अनेक शोध कर्त्ताओ से मेरा सम्पर्क और पत्राचार होता रहता है।

स्वामी दयानन्द के जीवन, साहित्य एव कार्य विषयक जो अनुसधानात्मक कार्य मैंने विगत दो दशको मे किया है उसका कुछ सक्षिप्त उल्लेख यहा किया जा रहा है—

१ ऋषि दयानन्द के जीवन एव कार्यो पर समय-समय पर उठाये गए विवादो, एतद् विषयक किए गये आक्षेपो तथा भ्रान्ति मूलक प्रचार और टिप्पणियो का सप्रमाण खण्डन तथा सटीक निराकरण। इस सदर्भ मे ऋषि दयानन्द की तथाकथिक अज्ञात जीवनी (प्रस्तोता प० दीन बन्धु वेद शास्त्री), योगी का आत्म चरित्र (प्रस्तोता स्व० स्वामी सच्चिदानन्द) तथा ऋषि दयानन्द का अपना जन्म चरित्र (प्रस्तोता श्री आदित्यपाल सिंह) जैसे प्रयासो के खण्डन मे मेरे विस्तृत लेखन तथा आन्दोलन को भी सम्मलित करना होगा।

२ ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ, आत्मकथा, उनके द्वारा रचित ऋग्वेद के प्रथम २२ मन्त्रो की विस्तृत व्याख्या तथा चतुर्वेद विषय सूची का सम्पादन।

३ 'नवजागरण के पुरोधा' शीर्षक से स्वामी दयानन्द की बृहत् प्रामाणिक जीवनी का लेखन।

४ वेदवाणी के वार्षिक दयानन्द अको मे मेरे द्वारा निम्न शोवपूर्ण सामग्री छप चुकी है।

१. काशी शास्त्रार्थ मे उपस्थित पौराणिक विद्वानो का इति वृत्त।

२. मा जी बडनगरी जीवन वृत्त (इसे प्रथम बार खोजा गया)

३ कर्नेल आल्काट लिखित ओल्ड डायरी लीव्ज मे दयानन्द विषयक उल्लेखो का पाठ सम्पादन तथा समीक्षा।

४ रा ब. भोलानाथ साराभाई के जीवनचरित मे दयानन्द विषयक सदर्भ और उनकी समीक्षा।

५ श्री नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय लिखित स्वामी दयानन्द की प्रथम बगला जीवनी का पुनरुद्धार और सम्पादन।

६. मैडम ब्लैवेटस्की रचित 'इन दि केव्ज एण्ड जगल्स आफ हिन्दुस्तान' मे दयानन्द विषयक सदर्भो की सानुवाद समीक्षा।

७. जर्मन शिक्षाविद् डा० वाइज से स्वामी दयानन्द का पत्र व्यवहार। यह सामग्री फरवरी १९८९ में छपी।

आर्य लेखक कोश



पिछले दिनो आर्य लेखक कोश का प्रकाशन हुआ है। आर्य समाज के सभी लेखकों का परिचय देना एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। यह कार्य ऐतिहासिक है, इसलिए इसकी गरिमा का आकलन किया जाना, अपने आप मे एक विशिष्ट अनुभूति एव स्फुरण प्रदायक है। ज्यो गूंगे को गुड मन ही भावे। इसकी महत्ता का प्रतिपादन शब्दो के द्वारा असम्भव सा लगता है।

डा० भवानीलाल भारतीय आर्य समाज के सुप्रसिद्ध, लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान, विचारक, व्याख्याता, सम्पादक लेखक एव गवेषक है। उन्होने दीर्घकाल तक साधना करके इस सामग्री को सकलित किया तथा इस महान ग्रन्थ को पाठको को भेट किया।

इस ग्रन्थ मे उन्होने लगभग १२०० दिवगत एव वर्तमान आर्य लेखको का सम्यक् परिचय दिया है। जीवन परिचय के साथ उनके लेखन के प्रतिपाद्य एव एव उनकी शैली का विवेचन, इसे विशिष्ट आभा प्रदान करने मे सक्षम है।

पं० लेखराम का आदेश—आर्य समाज मे तहरीर और तकरीर का काम बन्द नही होना चाहिए निश्चय ही उनके लिए आदर्श रहा है। यह प्रसन्नता की बात है कि डा० भवानी लाल भारतीय ने इस महत्त्वपूर्ण एव श्रम साध्य कार्य को दक्षतापूर्वक पूरा किया है।

इस कोश मे वेदभाष्यकारो ब्राह्मण ग्रन्थो के व्याख्याकारो, उपनिषदों के टीकाकारों, रामायण, महाभारत, स्मृति ग्रन्थो, दर्शनो तथा अन्य प्राच्य विद्या के ग्रन्थो की विवेचना करने वालो का भी सुस्पष्ट विवरण दिया गया है।

इस कोश में महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज के विभिन्न पक्षो को लेकर किए गए शोध प्रबन्धो का भी परिचय दिया गया है।

यह कोश आर्य समाज की तो धरोहर है ही, यह ग्रन्थ आने वाली पीढियों के मार्ग को भी प्रकाशित करता रहेगा।

डा० भवानीलाल भारतीय को शतशः बधाई।

—डा० धर्मपाल

अन्तर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य उन्मूलन दिवस मनाया गया

समाज कल्याण निदेशालय ने २६ जून को अन्तर्राष्ट्रीय मादक द्रव्य सेवन उन्मूलन दिवस के रूप मे मनाया। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य मादक द्रव्य सेवन की बुराईयो के प्रति जनता का ध्यान आकर्षित करके इस बुराई को समाप्त करने की दिशा में चेतना उत्पन्न करना है। इस अवसर पर मादक द्रव्यों के सेवन की बुराई पर विचार विमर्श, पोस्टर प्रदर्शनी व नाटक आदि का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री नाफरी ने सरकारी एव स्वयसेवी सस्थाओ को मिल-जुल कर इस सामाजिक बुराई के विरुद्ध कार्य करने को कहा। स्कूली छात्रो मे बढती हुई इस बुराई की प्रवृत्ति के कारण एव दुष्परिणामों पर चिन्ता प्रकट करते हुए समाज के सभी वर्गो से अपील की कि वे इस बुराई को युद्ध स्तर पर रोके तथा देश की भावी पीढी के विनाश को रोकने में अपना सक्रिय योगदान दें।

द्वारा—सूचना एव प्रचार निदेशालय
दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

महर्षि दयानन्द का ब्राह्मणवाद

— भगवान देव "चैतन्य" —

भारत वर्ष की राजनीति ने नए समीकरणो और सम्भावनाओं में प्रवेश किया है। सबसे अहम् प्रश्न भारत वर्ष की मूल संस्कृति की अस्मिता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती एक बहु आयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे। उनके पास राष्ट्र की समस्याओ और उनके समाधान खोजने की जो पैनी दृष्टि थी वह हमें अन्य किसी भी महापुरुष में दिखाई नहीं देती। वे किसी भी बुराई या समस्या का गहराई से अध्ययन करके उसके स्थाई हल का मार्ग खोज निकालते थे। भारतीय राजनीति को वे वैदिक सिद्धान्तो की ओर प्रवाहित करके इसमें अमूल चूल परिवर्तन करने के पक्षधर थे। इसके लिए उन्होंने जहां राजस्थान के राजघरानो से सम्पर्क करके राजनीति मे वैदिक सिद्धान्तो को समाविष्ट करने का प्रयास किया उसके साथ-साथ स्वतन्त्रता संग्राम की न केवल नींव रखी बल्कि उसे फलीभूत करने के लिये उनकी प्रेरणा से नर्म व गर्म दल मे अनेकों वैदिक अनुयायियों ने प्रवेश करके राष्ट्र को स्वतन्त्र कराया। स्वतन्त्रता के पश्चात् उपरामता की स्थिति में रहने के कारण राजनीति पर आर्यसमाजियो की पकड ढीली हो गई अन्यथा आज जो समस्याएं राष्ट्र एवं समाज के समक्ष हैं वे न होती क्योंकि ये सभी क्षेत्रवाद, मजहबवाद, जातिवाद और स्वार्थवाद का ही परिणाम है। आर्यसमाज की इस सम्बन्ध मे एक स्पष्ट और निर्विवाद सोच है। इसलिए स्वतन्त्रता का प्रसाद सही ढंग से आर्यसमाज ही लोगो मे बांट सकता था। मगर ऐसा नही हो सका। महर्षि दयानन्द जी ने इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आर्यों को राज्य आर्य सभा के गठन का मार्ग प्रशस्त किया था मगर इस ओर किसी ने सक्रियता के साथ कार्य नही किया। आज भारतीय संस्कृति की ओर मुड़ने के अधकचरे प्रयास कुछ राजनैतिक क्षेत्रो मे किए जा रहे हैं मगर यह संस्कृति जिसका भारतीयता के लिए नारा दिया जा रहा है इतनी विशाल और स्पष्ट नहीं है कि सभी जातियो और मजहबों के लोग इसकी ओर आकृष्ट हो सकें। आर्य समाज की असाम्प्रदायिक, सार्वभौमिक और जातिगत संकुचितताओ से ऊपर की विचारधारा राष्ट्र को एक सही दिशा दे सकने में समर्थ है। यही वह संस्कृति है जो मूल आर्यों की संस्कृति है। इसका प्रचलन आज भी राजनीति के क्षेत्र में बखूबी किया जा सकता है मगर इसके लिए आर्यों को कुछेक ठोस और रचनात्मक कदम उठाने पड़ेंगे। हालाकि लगता तो यह है कि स्वतन्त्रता के बाद भी इतने वर्षों तक हम राजनीति से उपराम रहे अतः राजनैतिक पकड हमसे पूरी तरह से फिसल चुकी है क्योकि स्वार्थी राजनैतिक दलो की इस भीड मे हमे अपनी निःस्वार्थता और सार्वभौमिकता की पहचान कराने मे बहुत अधिक समय और साधनों की आवश्यकता हैं। फिर भी जो प्रयास बहुत पहले किए जाने चाहिए थे वे आज करने तो चाहिए ही।

आर्यसमाज बुद्धिजीवियो की संस्था है और इसके पास अत्यधिक प्रगतिशील राजनैतिक लोग हैं मगर अपना कोई मंच न होने के कारण वे कांग्रेस, भाजपा या अन्य कई दलो मे जाकर कार्य कर रहे हैं मगर वहां वे अपनी स्पष्ट नीति को कार्यान्वित नहीं कर पाते हैं क्योंकि जिस दल के वे सदस्य हैं उसी के घोषणापत्र और विचारधारा के अनुसार उन्हे चलना पडता है। स्वतन्त्रता के आरम्भ में ही ऐसे अपने लोगों को यदि अलग मंच दिया होता तो आज स्थिति कुछ और ही होती। कुछ वर्ष पूर्व कुछ युवा सन्यासी बहुत कुछ करने की भावना लेकर राजनीति मे गए थे। मगर दिशाहीन हो जाने के कारण वे एक सामूहिक अभियान की तरह आगे नही बढ़ सके बल्कि जिस तरह किनारो से रहित जल इधर उधर बिखरकर ही समाप्त हो जाता है वैसी ही स्थिति इन लोगो की भी हुई। ये स्वयं पता नही कितनी ही पार्टियों के झण्डे तले भटकते रहे। इस भटकाव ने उनकी निश्चित वैदिक विचारधारा को भी बहुत बिखराव दे दिया लगता है। क्योंकि प्रखर वक्ता और चर्चित व्यक्तित्व स्वामी अग्निवेश जो हाल ही मे जनता दल के टिकट पर पराजित हुए हैं—उन्होने हारने के तुरन्त बाद दूरदर्शन पर एक भेंट मे कहा कि इन चुनावो की एक बड़ी उपलब्धि वे यह मानते हैं कि जो ब्राह्मणवाद सिर उठा रहा था हमने उसे कुचल दिया है और अब भविष्य में विवेकानन्द की घोषणा के अनुसार शूद्रो का राज्य आने वाला है। स्वामी जी के ये शब्द महर्षि दयानन्द की मान्यताओ से कितने अधिक दूर हैं यह साधारण सा आर्यसमाजी भी सहज ही मे जान सकता है। उन्हें विवेकानन्द के शब्दों का सहारा लेना पड़ा जिनकी अपनी ही कोई निश्चित विचारधारा नही है। स्वामी अग्निवेश जी पता नहीं किस प्रवाह में ये बातें कह गए अन्यथा वे भी भली प्रकार जानते हैं कि महर्षि दयानन्द जी का ब्राह्मणवाद क्या और शूद्रवाद क्या है। जहां तक हमने महर्षि दयानन्द जी को समझा है उन्होंने सर्वत्र ब्राह्मत्व को ही प्राथमिकता दी है। उनकी दृष्टि मे ब्राह्मण ही सर्वोच्च वर्ण है। गुण कर्म और स्वभाव से जो परिष्कृत हैं, बुद्धिजीवि हैं उनकी दृष्टि मे वे ब्राह्मण हैं और इसके विपरीत जो समझाने पर भी न समझें वे शूद्र हैं। नीचे हम सत्यार्थ प्रकाश के कुछ प्रसंग दे रहे हैं जिससे स्पष्ट हो सके कि ब्राह्मण को महर्षि दयानन्द कितनी मान्यता देते थे।

प्रश्न :—सन्यास ग्रहण करना ब्राह्मण ही का धर्म है वा क्षत्रियादि का भी ?

उत्तर :—ब्राह्मण ही को अधिकार है, क्योंकि जो सब वर्णों मे पूर्ण विद्वान, धार्मिक, परोपकार प्रिय मनुष्य है उसी का ब्राह्मण नाम है। बिना पूर्ण विद्या के धर्म, परमेश्वर की निष्ठा और वैराग्य के सन्यास ग्रहण करने मे संसार का विशेष उपकार नही हो सकता। इसलिए लोकश्रुति है कि ब्राह्मण को सन्यास का अधिकार है, अन्य को नही। यह मनु का प्रमाण भी है :—

एष वोऽभिहितो धर्मो ब्राह्मणस्य चतुर्विधः
पुण्योऽक्षयफलः प्रेत्य राजधर्मं निबोधत। (मनु०)

यह मनु जी महाराज कहते हैं कि हे ऋषियो ! यह चार प्रकार अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम करना ब्राह्मण का धर्म है। यहां वर्तमान में पुण्यस्वरूप और शरीर छोडे पश्चात् मुक्तिरूप अक्षय आनन्द का देने वाला सन्यास धर्म है .. "(पांचवां समुल्लास) "जिसको पढ़ने पढ़ाने से कुछ भी न आवे वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहाता है।"।

अब स्वामी अग्निवेश जी स्वयं सोचे कि वे कैसा राज्य लाना चाहते हैं ? मगर जैसा कि मैंने ऊपर कहा—जब तक आर्यसमाज का एक सशक्त राजनैतिक मंच नही बनता है तब तक हम इसी प्रकार विभिन्न पार्टियों की ही बोली बोलते रहेंगे और इस प्रकार हम प्रखरता और मूल सिद्धान्तो से भी दूर बहुत दूर चले जायेंगे। हालांकि अब बहुत देर हो चुकी है मगर फिर भी यदि एकजुट होकर ईमानदारी और पूरी निष्ठा के साथ प्रयास किए जाए तो आज भी आर्यसमाज ऐसा राजनैतिक आधार राष्ट्र के सामने प्रस्तुत करने में सक्षम हो सकता है जहां पर क्षेत्रवाद, जातिवाद तथा मजहबवाद नहीं बल्कि मानवतावाद होगा। व्यक्तियों के बीच भेद भाव और वैर वैमनस्य की गहरी खाईयां खोदने की आवश्यकता नहीं है बल्कि प्यार और सौहार्द के साथ उन्हे एक दूसरे के समीप लाने की आवश्यकता है। शूद्रता नही बल्कि उच्च विचारधाराएं ही समष्टि के कल्याण की बात सोच सकती हैं। शूद्रता अछूत नही बल्कि उसे ब्राह्मणत्व के ऊंचे शिखर को छूने का पूरा अधिकार है। यही विचारधारा की उत्कृष्टता महर्षि दयानन्द का ब्राह्मणवाद है। आर्यसमाज श्रेष्ठ व्यक्तियो का समाज होने के नाते स्वयं ही ब्राह्मणत्व का प्रतीक है मगर इस शब्द के संकुचित अर्थ करके महर्षि दयानन्द की मान्यताओ से भ्रमित होने की आवश्यकता नही है। किसी छोटी जाति में उत्पन्न व्यक्ति ब्राह्मणत्व को प्राप्त नहीं हो सकता ऐसी कोई बात नही है। ऊंची जाति में उत्पन्न हुआ कहलाने वाला व्यक्ति अपने नीच कार्यों के कारण शूद्र ही कहलाएगा और ठीक इसी प्रकार छोटी जाति में उत्पन्न हुआ कहलाने वाला व्यक्ति अपने उत्कृष्ट कर्मो के आधार पर ब्राह्मण कहलाएगा। महर्षि दयानन्द की विचारधारा मे जन्मगत जाति को कोई स्थान नहीं है। उन्होने जातियों को उनके कर्मो के आधार पर माना है। आज भी समूची मानवता को हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, चमार, लुहार, ब्राह्मण, कोली, यादव आदि (हजारों ही) मे जाति और मजहब के आधार पर बांटने की बात करना महर्षि जी की मान्यता के एकदम विपरीत है। इसी तुष्टीकरण की नीति के कारण ही तो आज कई ज्वलन्त समस्याएं उभरकर राष्ट्र और समाज का अहित कर रही हैं। इन सबसे ऊपर उठकर आर्यसमाज की विचारधारा तो पूर्णतया मानवतावादी है। महर्षि दयानन्द की विचारधारा की उत्कृष्टता को सबसे पहले

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सर्वाधिक रोगों की जड़ धूम्रपान व तम्बाकू

— स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती —

"आज के दूषित वातावरण मे धूम्रपान एव मादक पदार्थों का सेवन महज एक आवश्यकता बन गई है। क्या किशोर, युवा, वृद्ध सभी इसको आदर व सम्मान देने लगे हैं। साधारण से साधारण व्यक्ति भी तम्बाकू का प्रयोग अधिक से अधिक करता है। यह अधिकाशत: बीमारियो की जड़ है। तम्बाकू जैसे अनेक मादक पदार्थ आज समाज मे पूजनीय हो गए हैं।"

जब हम प्राचीन सस्कृति की ओर नजर दौडाते हैं तो देखते हैं कि वेद, शास्त्र, पुराण, महाभारत रामायण, आदि ग्रथो मे ऋषि महर्षियों के द्वारा लाखो करोड़ों घर मे यज्ञ-हवन की धूमधाम का वृत्तान्त मिलता है। राजा दशरथ जी महाराज स्वयं यज्ञ करते थे। राजा दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ कराने पर ही उनके आगन में राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न ने जन्म लिया। इससे विदित होता है कि प्राचीन काल मे ऋषि-मुनिजन यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करते थे। इससे बढकर यज्ञ-हवन की और क्या महत्ता होगी।

आज के महात्माओं के विचार हैं कि यज्ञ हवन एक पाखण्ड है और बीड़ी-सिगरेट तथा तम्बाकू आदि पीना ही धर्म है। इन्हे पीना कोई पाप नही। जबकि तम्बाकू के धुएं के कारण लाखों प्रकार की बीमारिया फैल रही हैं। यहा सिगरेट, सिगार के गन्दे धुए फैलाने वाले मनुष्य पशुओ को भी मात कर रहे हैं। इन तम्बाकू, सिगरेट के धुए ने घरो से यज्ञ हवन के सुगधित धुएं को बिदा कर दिया और मनुष्य को झूठा-खाने-पीने वाला चटोरा कुत्ता बना दिया है। इन्होने दिन-रात तम्बाकू खाने पीने तथा सूंघने का एक रिवाज बना लिया है।

इन्हें तनिक भी चैन नही, सोते, जागते, उठते बैठते, खाते-पीते यहां तक कि शौचादि क्रिया करते समय भी बाज नही आते। मौत मे, विवाह मे, मन्दिर मे, तीर्थ में सभा पचायतो मे भी बीडी हुक्का व सिगरेट का विषैला धुआ छोड़ा जाता है। इसे मांग कर पीयेंगे, उधार लेकर पीयेंगे, पीयेंगे अवश्य चाहे कुछ भी हो जाए। इन तम्बाकू पीने वालों पर काला धुए का ऐसा दुष्प्रभाव पड़ा कि बिल्कुल कठोर हृदय हो गया। जवान बेटे की लाश सामने पड़ी है फिर भी मुह में तम्बाकू की चिलम लगी हुई है। सारा परिवार शोक सतप्त है कुल दीपक बुझ गया किन्तु अभी तम्बाकू की आंच ठण्डी नही हुई।

राम और कृष्ण के भक्त पुजारी, पण्डे, साधु, ब्राह्मण आदि सभी मन्दिर में ही बैठे इस धुएं का आनन्द ले रहे हैं।

सरकार भी इनके प्रयोग को बढावा देती है। बीड़ी सिगरेट तम्बाकू का अनेकों प्रकार से विज्ञापन दिया जाता है। पीने वालो को प्रोत्साहन दिया जाता है। साधु समाज इससे ज्यादा प्रभावित है। इन्हे इसके पिए बिना शौच ही नहीं उतरती। तमाम दानियों का दिया धन इन धूम्रपान एव मादक द्रव्यो में उड़ाया जाता है। जिसे अमृतपान कहा जाता है।

मैं एक सज्जन की सुपुत्री की शादी में विवाह सस्कार कराने के लिए गया था। (जब मैं सन्यासी नहीं था) वहां एक पौराणिक पण्डित भी आए हुए थे। वह हवन पर बैठा था और कभी-२ मन्त्रोच्चारण भी करता था। उन्होंने हवन के मध्य ही यज्ञ कुण्ड से सिगरेट सुलगा ली और पीने लगे। यह दृश्य देखकर मुझ से न रहा गया। मैंने उन्हे बहुत कुछ कह कर वहां से उठा दिया। अब आप ही विचार करे कि यह पागलपन नहीं तो और क्या है। जबकि सद्ग्रन्थों में लिखा है :—

धूम्रपान रत विप्र, दान कुर्वन्ति ये नरा:।
दातारो नरक यान्ति ब्राह्मणोऽपि ग्राम शूकर:॥

इसलिए धूम्रपान (तम्बाकू) से जितना बचा जाए उतना ही अच्छा है। अपने इस मानव जीवन को धूल में न मिलाए। तम्बाकू, बीडी सिगरेट को हाथ न लगाए। देश को बीमारियों से बचाएं और देश को स्वर्ग बनाएं। स्वय बचें, औरो को बचाएं।

अधिष्ठाता, वेद प्रचार मडल
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

विदेशों से सांस्कृतिक सम्बन्ध : कैसे बनें, कैसे बढ़ें ?

विश्व मे ऐसे अनेक देश हैं जहाँ पर हिन्दू काफी बडी सख्या मे रहते हैं। आप अथवा आपके मित्र उनके बारे मे कितना जानते हैं ? कुछ देशो मे ऐसे भी लोग रहते हैं (जैसे योरूप मे जिप्सी) जिनके रीति-रिवाज तथा स्वभाव हिन्दुओ से काफी मिलते-जुलते हैं। अनेक विद्वानो ने उनके विषय में अध्ययन किए हैं, कई अन्य विद्वान ऐसा करने का विचार कर रहे हैं।

यदि आपके पास इस विषय की कोई सूचना हो, उसे हमे भेजने की कृपा करे। इस विषय पर जो अध्ययन हुए हैं, कृपया उनके विषय मे सम्बन्धित विद्वानो के नाम तथा उन सस्थाओ के नाम जिन्होने ऐसी किसी योजना को प्रायोजित किया पते सहित हमें भिजवाने का कष्ट करें।

भारत तथा अन्य देशो के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों का विस्तार करने और उनमे सुधार लाने की बडी आवश्यकता है और उसकी गुजाइश भी है। इसे किस प्रकार किया जा सकता है अथवा किया जाना चाहिए। भारत में अन्य देशो के जो लोग पर्यटक के रूप मे अथवा अध्ययन के लिए आते हैं उन्हे हमारे दर्शन, सस्कृति, परम्पराओ, त्योहारो आदि के विषय मे अधिक जानकारी किस प्रकार मिल सकती है ? हम उनके समक्ष अपनी छवि किस प्रकार अच्छी बना सकते हैं ?

क्या आपके आसपास के क्षेत्र मे ऐसे तीर्थ केन्द्र या शैक्षिक सस्थान हैं जहा विदेशों के लोग काफी सख्या में आते हैं ? वे हमारे बारे में क्या सोचते हैं ?

कृपया उपरोक्त विषय मे जानकारी तथा अपने विचार नीचे लिखे पते पर भेजें।

सुझाव अति उत्तम हो सकते हैं किन्तु उन्हे मूर्त रूप देने के लिए ठोस प्रयत्नों की आवश्यकता होती है। अत: निवेदन है कि कृपया अपना सक्षिप्त जीवन-वृत्त भेजें तथा इगित करें कि वाछित दिशा में प्रगति के लिए आपका अपना क्या योगदान किस रूप मे हो सकता है।

(हरिबाबू कसल)
केन्द्रीय सयुक्तमत्री
विश्व हिन्दू परिषद, सकटमोचन आश्रम,
रामकृष्णपुरम्-६, नई दिल्ली-२२

महर्षि दयानन्द का...

(पृष्ठ ४ का शेष)

उनके अनुयायियों को समझने की आवश्यकता है और उसके बाद सभी लोगों तक उसे पहुंचाने की आवश्यकता है। अपनी क्षुद्र भावनाओं और ऐषणाओ की तुष्टि को समक्ष रखकर दयानन्द की सार्वभौमिक दार्शनिकता को तोड़ने मोड़ने की आवश्यकता नहीं है। उनकी विचारधारा स्वयं पावनता और मानवता का प्रतीक है। उसी पावन विचारधारा को यदि हम आज की राजनीति में प्रवाहित करने मे सक्षम हो जाते हैं तो आतकवाद, मजहबवाद, क्षेत्रवाद और जातिवाद के अपवित्र स्रोत स्वयमेव सूख जायेंगे। यही आर्यत्व है। इसी का स्वप्न महर्षि दयानन्द जी ने "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के रूप में देखा था। वे आर्य साम्राज्य चाहते थे अनार्य नहीं। देखना यह है कि हम संगठित होकर कब इस दिशा में कदम उठाते हैं। यदि हम अब भी नहीं उठे तो उठने का शायद ही कभी अवसर मिले क्योंकि राष्ट्र की स्थिति दिन प्रतिदिन अत्यधिक चिन्तनीय बनती जा रही है।

१६०/एस-३ सुन्दर नगर (हि० प्र०)

चुनाव समाचार

—आर्य समाज साकेत का वार्षिक निर्वाचन दिनाक २०-६-९१ को वर्ष १९९१-९२ के लिए हुआ। जिनमे निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

प्रधान—श्री सत्यदेव शर्मा
मन्त्री—श्री राजेन्द्र पाल गुप्ता
कोषाध्यक्ष—श्री मनमोहन आहूजा

—आर्य समाज लल्लापुरा, वाराणसी का वार्षिक निर्वाचन १९९१-९१ के लिए श्री जगत नारायण मौर्य की अध्यक्षता मे दिनाक ३०-६-९१ को दिन में आर्य समाज मन्दिर, लल्लापुरा वाराणसी में सम्पन्न हुआ जिसमे निम्नलिखित महानुभाव निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री जगत नारायण मौर्य
मन्त्री—श्री राम शास्त्री
कोषाध्यक्ष—श्री बुद्धदेव आर्य

—बम्बई, रविवार दिनांक ७ जुलाई ९१ को आर्य समाज सान्ताक्रुज का वार्षिक निर्वाचन बड़े सौहार्दपूर्ण वातावरण मे सर्वसम्मति से सम्पन हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के उपप्रधान श्री प० राजगुरु जी शर्मा ने सर्व सम्मति से सम्पन्न हुए निर्वाचन की प्रसशा करते हुए समस्त नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को धन्यवाद एव आशीर्वाद दिया।

नवीन पदाधिकारी निम्न प्रकार निर्वाचित हुए।

प्रधान—श्री कैप्टिन देवरत्न आर्य
महामन्त्री—श्री नरेन्द्र अम्बालाल पटेल
कोषाध्यक्ष—श्री कस्तूरीलाल मदान

—७ जुलाई १९९१ को रविवारीय यज्ञ एव उपदेश के उपरान्त पूज्या माता श्रीमती दयावती जी बनाती, वानप्रथाश्रम ज्वालापुर (उत्तर प्रदेश) की अध्यक्षता मे आर्य समाज, शालीमार बाग का निर्वाचन हुआ। इस अवसर पर समाज के अन्य सदस्यो के अलावा डा० धर्मपाल जी, प्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एव डा० महेश जी विद्यालकार भी उपस्थित थे। चुनाव मे निम्नलिखित व्यक्ति सर्वसम्मति से पदाधिकारी चुने गये।

प्रधान—श्री परमान्द जी
मन्त्री—श्री भूदेव जी शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्री चन्द्रकाश जी तायल

—आर्यसमाज राजौरी गार्डन नई दिल्ली का निर्वाचन निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ।

प्रधान—श्री जगदनाथ मेहन्दीरत्ता
मन्त्री—श्री अशोक नांगीया
कोषाध्यक्ष—श्री कर्मवीर भण्डारी

—आर्य समाज अशोक विहार फेस २ दिल्ली का वार्षिक चुनाव विधिवत् सम्पन्न हुआ, जिसमे निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान—श्री पी० एन० सरीन
मन्त्री—हरिकृष्ण लाल सुनेजा
कोषाध्यक्ष—राजेन्द्रनाथ जुनेजा

—आर्य समाज साकेत की साधारण सभा की २०-६-९१ को हुई बैठक मे निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गए।

प्रधान—श्री सत्यदेव शर्मा
मन्त्री—श्री राजेन्द्र पाल गुप्त
कोषाध्यक्ष—श्री मनमोहन आहूजा

निवर्तमान प्रधान लखीराम कटारिया और श्री कृष्णलाल वाही को सर्वसम्मति से सरक्षक बनाया गया। सारी कार्यवाही सौहार्दपूर्ण वातावरण मे हुई।

प्रवेश सूचना
आर्य महाविद्यालय किरठल
जिला मेरठ में १ जुलाई १९९१ से प्रवेश प्रारम्भ

गुरुकुलीय शुद्ध वातावरण मे अपने बच्चों का शैक्षिक, बौद्धिक, शारीरिक एवं चारित्रिक विकास तथा उत्तम शिक्षा एव उज्जवल भविष्य के लिए विद्यालय में प्रवेश करायें।

१—यहां की सभी परीक्षायें सरकारी नौकरियों एव सभी प्रतियोगिताओं के लिए मान्य है।

२—यहां आश्रम व्यवस्था के अनुसार संस्कृत, हिन्दी, गणित विज्ञान, अंग्रेजी आदि सभी प्राचीन एव आधुनिक विषयो के अध्यापन की पूर्ण व्यवस्था है।

३—विद्यालय को एम० ए० समकक्ष आचार्य तक सरकार द्वारा स्थायी मान्यता प्राप्त है।

४—भोजन एव आवास तथा शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है।

५—शास्त्री एव आचार्य श्रेणी के मेधावी एव निष्ठावान छात्रों की भोजन व्यवस्था नि:शुल्क होगी।

नोट—स्थान सीमित हैं। अतः प्रवेश मे शीघ्रता करे। प्रवेश के लिए स्वय मिले।

आचार्य : बाबूराम आचार्य
एम० ए०, साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य

राजनयिकों को गायत्री कार्ड की भेंट

विश्व हिन्दू परिषद ने भारत मे स्थित विदेशी राजदूतो को तथा विदेश स्थित विदेशी राजदूतों को तथा विदेश स्थित समस्त भारतीय राजदूतो को "ॐ" तथा गायत्री मन्त्र के सुन्दर छपे कार्ड भेंट किए है। इन कार्डों पर गायत्री मन्त्र का अर्थ छपा हैं और उसका महत्व भी बताया गया है। कई राजदूतों ने इसकी सराहना की है। पोलैण्ड के राजदूतावास तथा सिंगापुर के हाई कमीशन ने ऐसे कुछ और कार्ड मांगे हैं तथा जायर देश के मिनिस्टर-काउन्सिलर ने हिन्दू धर्म की विशेषताओ के विषय मे जानने की इच्छा प्रकट की है। यह कार्ड हिन्दी, अग्रेजी भारत की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओ तथा अरबी, फारसी, फ्रेंच, रूसी, जर्मन, इटालियन, स्पेनिश तथा तिब्बती आदि विदेशी भाषाओं मे भी उपलब्ध हैं।

मानव कल्याण वेद मार्ग से सम्भव

लुधियाना आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार के तत्वावधान मे एक बहुत बड़ा धार्मिक सम्मेलन नगर की सुविख्यात कालोनी हेबोवाल कला मे सम्पन्न हुआ, जिसमें प० सत्यपाल जी पथिक अमृतसर, तथा प० धर्मदेव जी जालन्धर, वेदप्रकाश शास्त्री और अन्य कई विद्वान सम्मिलित हुए।

पं० धर्मदेव जी एव श्री सत्यपाल जी ने अपने प्रवचनों मे कहा कि आज जो अशान्ति कलह क्लेश, भाई-भाई मे शत्रुता तथा आतंक का जो वातावरण मानव मे उभर रहा है, उसका मुख्य कारण जब से हमने वेद मार्ग से हटना शुरू कर दिया है। ये सब बुराईया प्रबल शक्ति से आगे बढी हैं।

वेद का ही एक ऐसा मार्ग है जो मानव हृदय में इन बुराईयो को दूर करने मे घर-घर मे कलह क्लेश मिटाने मे, आतक का वातावरण दूर करने में पूर्ण समर्थ है। वेद की वाणी परमात्मा की वाणी है। आओ हम सब मिल कर वेद मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा करें। यह एक सच्चा मार्ग है जो विश्व शान्ति स्थापित कर सकता है।

कालोनी तथा साथ के लगते भाव से हिन्दू तथा सिख भाई बड़ी ही सख्या में उपस्थित हुए। सम्मेलन के प्रबन्ध का सारा कार्य भार "ज्ञान विद्या मन्दिर" के शर्मा परिवार की देख-रेख मे हुआ। आर्य समाज के प्रधान श्री रणवीर भाटिया ने सभी आये हुए विद्वानो भजनीकों तथा अन्य सभी का धन्यवाद किया।

अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न

विगत दिवस आर्य समाज धार के तत्वावधान में धार निवासी श्री अवधेश कुमार लाड का शुभ विवाह रतलाम निवासी कुमारी मोहन महोबया के साथ, जवाहर मार्ग स्थित राम मन्दिर मे, आर्य पुरोहित श्री शरदचन्द्र सुगन्धी के पौरोहित्य में सानन्द सम्पन्न हुआ।

रामपाल शास्त्री योगाचार्य का हालैण्ड में भव्य स्वागत

व्यायाम प्रशिक्षक श्री रामपाल शास्त्री योगाचार्य गत सप्ताह वेद तथा यौगिक क्रिया द्वारा महर्षि दयानन्द के दिव्यसन्देश को फैलाने हालैण्ड पहुंच गए हैं। एमस्तरडेम एयरपोर्ट पर प्रभाकर आर्यसमाज रोटेरडेम के सभापति प० जीवन गणेश एवं मन्त्री श्री प० विश्वेश्वर, डा० आनन्द कुमार विरजा प० ग्रेइसन स्वयवर, श्री विश्वानि आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति स्वागत के लिए आए थे।

श्री प० विश्वेश्वर जी ने अपने जीवन के पचास वर्ष पूरे होने पर त्रि-दिवसीय सामवेद परायण-महायज्ञ का आयोजन किया। इस यज्ञ को डा० आनन्द कुमार विरजा, श्री प० ओम्प्रकाश शास्त्री एवं रामपाल शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। इस यज्ञ की सफलता के पश्चात् अन्य समाजें भी इस प्रकार के वेद परायण यज्ञ के आयोजन का कार्यक्रम बना रही है। योग शिविर व शक्ति प्रदर्शन के कार्यक्रम भी हो रहे हैं।

'अपना रोजगार चुनिए अभियान का उद्घाटन

श्री आर के. टक्कर, मुख्य सचिव, दिल्ली ने उप क्षेत्रीय रोजगार कार्यालय, पूसा में 'अपना रोजगार चुनिए" अभियान का उद्घाटन किया। गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी इस अभियान का आयोजन रोजगार निदेशालय ने दिल्ली के विभिन्न केन्द्रों मे आयोजित किया है। इस अभियान के दौरान स्कूलो व कालेजो मे पढाई समाप्त करने के उपरान्त छात्र-छात्राओ को उनकी रुचि, योग्यता तथा रोजगार के क्षेत्र मे मांग के अनुसार रोजगार दिलाना है। निरुद्देश्य शिक्षा से युवको मे निराशा बढती है।

इस अभियान का मुख्य उद्देश्य रोजगार तलाशने वाले छात्रो, शिक्षको तथा अभिभावको को शिक्षा, व्यवसायिक तथा व्यक्तिगत परामर्श देना है ताकि नवयुवक व छात्र अपने भविष्य के रोजगार की रूपरेखा अच्छी तरह तैयार कर ले।

यह अभियान ऐसे समय पर आयोजित किया जा रहा है जबकि स्कूलो व कालेजो मे परीक्षाफल घोषित कर दिए गए है तथा अधिकाश छात्र-छात्राए रोजगार की तलाश में हैं। दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्रो तथा पुनर्वास कालोनियो को इस अभियान के अन्तर्गत लाया गया।

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R N No 32387/77 Posted at N.D.P S.O on 18-19-7-1991 Licence to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३६

स्व० राजीव गांधी को भावभीनी श्रद्धांजलि

पूर्व प्रधानमन्त्री स्व० राजीव गांधी को श्रद्धांजलि अर्पण के लिये आयोजित भजन सध्या मे भावभीनी श्रद्धाजलि अर्पित की गई। भजन सध्या का आयोजन महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल द्वारा पुराना सचिवालय प्रागण मे आयोजित किया गया।

प्रारम्भ मे दिवगत आत्मा की शान्ति के लिये दो मिनट का मौन रखा गया।

भजन सध्या मे गान्धर्व महा विद्यालय के विख्यात शास्त्रीय व सगीत कलाकारो ने राग विरागों से सृजित, भक्ति भावना से ओतप्रोत ईश्वर की महिमा को दर्शाने वाले सार गर्भित भजन प्रस्तुत किये। मानवता, प्रेम, करुणा, दया, अहिंसा, मानवीय अस्तित्व और परमोधर्म का सदेश देने वाले व मानव को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करने वाले भजन स्वर्गीय राष्ट्र नेता को श्रद्धांजलि अर्पण के लिये प्रस्तुत किये गये।

श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उप-राज्यपाल श्री मारकण्डेय सिंह ने श्री गांधी को राष्ट्र का महान नेता बताते हुए उन्हें राष्ट्रीय एकता शान्ति व धर्मनिर्पेक्षता का प्रतीक बताया। उन्होने कहा कि श्री गांधी भारत को विश्व का एक सशक्त राष्ट्र देखना चाहते थे।

महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल ने कहा कि श्री राजीव गांधी भारतीय सभ्यता व संस्कृति के सच्चे प्रतिरूप थे। वे महान राष्ट्रभक्त, निर्भीक और बहादुर राजनेता थे। उन्होंने देश की अखण्डता और एकता के लिये अपने को राष्ट्र पर न्यौछावर कर दिया।

श्री गोयल ने कहा कि उन्होंने राष्ट्र के निर्माण में युवाओ की भागीदारी के लिये उन्हें १८ वर्ष में मताधिकार का अधिकार प्राप्त कराया। श्री गाधी की देश को इक्कीसवीं सदी मे ले जाने की परिकल्पना नई पीढ़ी में वैज्ञानिक व तकनीकी ज्ञान के लिये उन्हें प्रेरित करना था। श्री गोयल ने कहा कि श्री गांधी गुट निर्पेक्ष आदोलन से जुड़े, उसे नेतृत्व दिया व गरीब देशों की सशक्त आवाज बनकर विश्व के सम्मुख उनके अधिकारों को लेकर प्रस्तुत हुए।

समारोह मे स्वतन्त्रता सैनानियो, प्रबुद्ध नागरिकों, दिल्ली प्रशासन के कर्मचारियो व अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी श्री राजीव गाधी को श्रद्धाजलि अर्पित की।

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटोदी हाऊस दरियागज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी० (सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ३८ रविवार, २८ जुलाई, १९९१ विक्रमी सम्वत् २०४८ दयानन्दाब्द : १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

पंजाब व कश्मीर के मामले में सरकार कठोर कदम उठाये

आर्यसमाज के शिष्टमण्डल की प्रधानमंत्री से मांग

दिल्ली १६ जुलाई। गत १९ जुलाई को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व मे आर्य समाज के एक शिष्ट मण्डल ने प्रधान मन्त्री श्री पी० वी० नरसिंह राव से भेंट की। शिष्ट मण्डल ने प्रधान मन्त्री जी द्वारा अपनी सरकार के लिए विश्वास मत प्राप्त करने पर उन्हें बधाई देते हुए उन्हें सुझाव दिया कि उनकी सरकार देश के हित मे जिस बात को ठीक समझे, उसे लागू करने मे किसी प्रकार का सकोच न करें। स्वामी जी ने यह भी सुझाव दिया कि जम्मू काश्मीर और पंजाब के मामले मे सरकार को कठोर कदम उठाने चाहिए, इसके लिए आवश्यक है कि पंजाब व कश्मीर के समूचे सीमा क्षेत्र मे ५ मील चौडी सुरक्षा पट्टी का निर्माण करके इन राज्यों मे ४१ लाख भू० पू० फौजी परिवारों को हथियारबन्द करके बसाया जाये। काश्मीर व पंजाब आदि से जो हिन्दू इधर उधर विस्थापित जीवन यापन कर रहे हैं, सरकार उनमे आत्म विश्वास पैदा करे और ऐसा वातावरण प्रदान करे कि वे भय मुक्त होकर अपने-अपने घरो को पुन लौट सकें।

स्वामी जी ने यह भी बताया कि गत ३ वर्ष पूर्व ही उन्होने सुरक्षा पट्टी के निर्माण और भू० पू० सैनिकों को बसाये जाने की माग तत्कालीन प्रधान मन्त्री स्व० राजीव गाधी से की थी।

शिष्ट मण्डल ने विश्वास व्यक्त किया कि जिस प्रकार वर्तमान केन्द्र सरकार को लोक सभा के अध्यक्ष के निर्वाचन मे विपक्षी दलो का सहयोग मिला है, उसी प्रकार राष्ट्रहित के हर साहसिक कार्य मे प्रधान मन्त्री जी को राष्ट्रवादी जनता तथा राजनैतिक दलो का पूरा समर्थन मिलता रहेगा।

प्रधान मन्त्री जी ने शिष्ट मण्डल के सुझावों को गम्भीरता से सुना और उन पर विचार करने का आश्वासन दिया।

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

आर्यसमाज को रक्षा नहीं, तपस्वीयों की आवश्यता है

हमे आश्चर्य हुआ कि 'आर्य समाज' के छोटे बड़े रचनात्मक कार्यक्रमों का विवरण प्रकाशन करने मे अति सकोची कुछ पत्रों ने कथित आर्य समाज रक्षा (या सहार) समिति' के १५-७-९१ के अविवेकी नाटक का प्रकाशन मार व्यर्थ अथवा द्वेषवश उठाया है। आर्य समाज से निष्कासित व्यक्तियो को भी इसी भावना से शायद ये पत्र उकसाते हैं।

आर्य समाज पूर्णत: एक स्वयसेवी सस्थागत आन्दोलन है। इसके कार्यकर्ताओ में तन-मन-धन समर्पण के स्तर के अनुरूप ही आर्यसमाज का व्यापक कार्य बल निर्मित होता है। नेतृत्व या सस्था की पृथक कोई शक्ति नही होती है। आर्य समाज को विश्व कल्याण हेतु अधिक शक्तिशाली बनाने की महत्ती आवश्यकता सभी स्वीकार करते हैं। किन्तु यह शक्ति पदो से नही कार्यकर्त्ताओ के तप त्याग, सेवा व बलिदानो से मिलती रही है। प्रत्येक कार्यकर्त्ता को चाहिए कि स्वयं मे स्वप्रतिष्ठा अर्जन करे। उसे पदों के पीछे नहीं दौड़ना है पद उसके पीछे दौड़ेंगे। अत: अपुष्ट आरोपो के प्रचार द्वारा चरित्र हनन मे शक्ति व्यर्थ नही गवाए, यदि कोई चाहे तो आरोपों की छान बीन आर्य समाज की "न्याय सभा" के माध्यम से ही से कराई जाए व महर्षि दयानन्द की टीस को समझा जाए कि—'आपस की फूट से कौरव पांडव और यादवों का सत्यानाश हो गया, सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वह रोग पीछे लगा है, न जाने कब यह भयकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यो को सब सुखों से छुडा कर दु:ख सागर में डूबा मारेगा। परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यो मे से नष्ट हो जावें (सत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास)।

प० गुरुदत्त विद्यार्थी

वह प्रखर वक्ता अतुल विद्वान् वह साधक निराला।
दीप सम तिल-तिल जला, जो दे गया जग को उजाला॥
सूर्य से लेकर प्रभा ज्यों इक किरण उतरी धरा पर।
मुस्कराये फूल महका चमन, चहके विहग् स्वर भर॥
साधना के मार्ग में जो जल गया गुमनाम हो कर।
पा गया जीवन ऋषि मार्ग मे सर्वस्व खो कर॥
अथक राही, जिसके दृढ पद-चाप को आंका था पथ ने।
जिस की विह्वलता को समझा हसराज और लाजपत ने॥
एक पावक पुंज पावन, जो ज्वलन मे तीव्रतम था.
अपनी प्रतिभा मे अनूठा, साधना मे जो असम था॥
जो जिया थोडे से दिन जितना जिया जलता रहा वह।
रौशनी देता रहा, पीड़ाओ में पलता रहा वह॥
आर्य जाति के गगन पर इक सितारा जगमगाया।
दे के सत्यालोक उसने, आज था विश्राम पाया॥
साधना रत्त उस तपस्वी सन्त को शत् शत् नमन हो।
उस गुरुवर, महर्षि के भक्त को शत् शत् नमन हो।

—उत्तम चन्द्र शरर

मार्गदर्शी—डा० धर्मपाल प्र० सम्पादक—सूर्यदेव सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री व्यवस्थापक— सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

अक्षय सत्यनारायण व्रत कथा-२

— पं० देवनारायण भारद्वाज —

सत्यनारायण कौन है ?

नारा का अर्थ है–जल व जीव–अयन=घर अर्थात् जो समस्त जल व जीव का घर है। जिसमे सभी कुछ समाया हुआ है। वह कौन है? वह है परमेश्वर, परमेश्वर प्रभु परमात्मा। वह कैसा? सत्य है जो सदा सर्वदा एक सा रहने वाला, जो न जन्म लेता है और न मरता है और जो न युवा होता है न बूढा होता हैं। सदा एक रूप रहता है—वही सत्यनारायण है। उसको प्राप्त करने का मन से दृढ़ सकल्प करना ही सत्य नारायण का व्रत है। अन्न त्याग भूखे रहने के नाम पर ठूम-ठूम कर फलाहार खाना व्रत नही है। किसी सकल्प को करना तथा उसकी पूर्ति मे भूखा भी रहना पड जाये, तो उसे पूरा करना यही व्रत है। एक कोई माता व्रती रही, उसके चार पुत्र थे। एक पुत्र ने आधा किलो रबडी बाजार से भेजी, वह माता ने प्रात. आठ बजे ही खाली। दूसरे पुत्र ने एक दर्जन केले भेजे वे माता जी ने ११ बजे खा लिए, तीसरे पुत्र ने आधा किलो मिठाई भेजी, वह माता जी ने २ बजे खाली और चौथे बेटे ने कूटू की पकौडी भेजी, वे भी माता जी ने साय काल को खाली। रात्रि मे सभी पुत्र जब घर आये तो उन्होने माता जी से व्रत का समाचार जानने की इच्छा व्यक्त की। माता जी ने अपने आज के पूर्ण भोजन का विवरण सुना दिया तभी एक लडका छत पर चढ कर चिल्लाने लगा—मोहल्ले वालो! सावधान! अपने सामान को सम्भाल कर रखना–मेरी माता जी का आज व्रत है।

सत्यनारायण भगवान को जानने का हमने व्रत लिया है, तो सब से पहले उसका नाम जाने। इनके अनेक नाम है। किसी के भी नाम चार प्रकार के होते (१) निज नाम (२) सम्बन्ध वाचक नाम (३) कर्म वाचक (४) गुण वाचक, किसी का नाम ओ३म प्रकाश है, जिसका सर्वत्र लिखा पढी मे प्रयोग होता है—यह उसका निज नाम है। वह पिता, पुत्र, भाई, पति आदि सम्बन्धो के कारण, इन नामो से भी बुलाया जाता है। वह अध्यापक, अधिकारी, सेवक अभियन्ता, चिकित्सक, आदि नामो से अपने कार्यो के अनुसार भी पुकारा जाता है। इसी प्रकार किसी विशेष गुण कवि, लेखक, परिश्रम सगीत, शील आदि गुणो के कारण भी याद किया जाता है। इन सब नामो के होते हुए भी उसका निज नाम सर्वोपरि रहता है क्योकि उसका सर्वत्र व्यवहार होता है। इसी प्रकार सत्यनारायण भगवान को भी सम्बन्ध के कारण बन्धु, जनिता, जनक, पालन करने से पिता, मान व प्रेम करने से माता, रक्षाकारी होने से पति और स्नेह करने से मित्र कहते है।

सत्यनारायण भगवान के कार्य द्योतक नाम जैसे विश्व का रचियता होने से विश्वकर्मा, सूर्यादि लोकों को अपने अन्दर धारण करने से हिरण्य गर्भ, चराचर जगत को गति देने से वायु, न्यायकारी होने से अर्यमा, प्रकाश कर्त्ता होने से सूर्य। सत्यनारायण के गुण वाचक नाम भी है, जैसे आकाशवत व्यापक होने से खम, अविनाशि होने से अक्षर, सबका स्वामी होने से ईश्वर, स्वामियो का स्वामी होने से परमेश्वर, सब आत्माओ का स्वामी होने से परमात्मा, सबसे बडा होने से ब्रह्म, देवो का देव होने से महादेव, कल्याणकारी होने से शिव, दुष्टो को रुलाने के कारण रुद्र गुणो का पति होने से गणपति–गणेश, ऐश्वर्यशाली होने से इन्द्र नाम है। उसके असख्य नाम होते हुए भी उसका मुख्य निज नाम ओ३म् है। ओ खम्ब्रह्म (यजु०, ४० १७) ओ३म् क्रतो स्मर (यजु०, ४०.१५) ओ३म् प्रतिष्ठ (यजु०, २,१३) अर्थात् आकाश वत व्यापक ओ३म् है। ओ३म् का स्मरण करो व ओ३म् मे समाहित हो, कह कर वेद ने सत्यनारायण भगवान का मुख्य नाम बतलाया है। हमे इसी का स्मरण, ध्यान और चिन्तन करना चाहिए। परमात्मा के सहस्रों नाम हैं वे नाम सृष्टि के पदार्थों के भी है। मुख्य नाम ओ३म् ऐसा है जो केवल ईश्वर का है, अन्य किसी वस्तु का नही है।

द्वितीय अध्याय

सत्यनारायण का स्वरूप एवं निवास

ऋगवेद की एक सूक्ति है "एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" (प्रथम मण्डल सूक्ति १६४ मन्त्र ४६) अर्थात (एकम् सत) एक ही सत्य स्वरूप को एक ही सत्यनारायण को (विप्रा) ज्ञानी जन (बहुधा) बहुत प्रकार से अनेक नामों से (वदन्ति) पुकारते हैं। किसी की पहचान करने के लिए उसके नाम के बाद उसके स्वरूप को जानना आवश्यक हैं। परम पिता परमात्मा विश्वकर्मा सत्यनारायण भगवान का मुख्य नाम तो हमे पता चल गया ओ३म्। यही उसका सर्वोत्तम नाम है। जो अ, उ, म् तीन अक्षरो से मिल कर बना है। यह ओ३म् अकार से विराट, अग्नि, विश्वादि उकार से हिरण्यगर्भ, वायु, और तैजसादि, मकार से ईश्वर, की आदित्य और प्रज्ञादि नामो का वाचक एव ग्राहक है।

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नर सूनव।
ता यदस्यायन पूर्वतेन नायण स्मृति:॥ मनु अ० १, १०

जल और जीवो का नाम नारा है, वे अयन अर्थात् निवास स्थान है जिसका इसलिए सब जीवो मे व्यापक परमात्मा का नाम नारायण है। इसी सत्यनारायण भगवान के स्वरूप का वर्णन यजुर्वेद के पुरुष सूक्त मे किया गया है।

सहस्रशीर्षा पुरुष: सहस्राक्ष. सहस्रपात्।
स भूमि। सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठ दशाङ्गुलम॥ (यजु० ३१।१)

अर्थात् वह सहस्रशीर्ष, सहस्राक्ष और सहस्रपात है। हे मनुष्यो जो (सहस्र-शीर्षो) सब प्राणियो के हजारो नेत्र और (सहस्रपात) असख्य पाद जिसके बीच में है, ऐसा (पुरुष) सर्वत्र परिपूर्ण जगदीश्वर है। (स:) वह (सर्वत) सब देशो से (भूमिम) भूगोल मे (स्पृत्वा) सब ओर से व्याप्त होके (दशाङ्गुलम्) पाँच स्थूल भूत, पांच सूक्ष्म भूत ये दश जिसके अवयव हैं उस सब जगत को (अति अतिष्ठत्) उलघन कर स्थित होता अर्थात् सबसे पृथक भी स्थित होता है।

पुरुष उसको कहते हे कि जो इस सब जगत में पूर्ण हो रहा है अर्थात् जिसने अपनी व्यापकता से इस जगत को पूर्ण कर रखा है। पुर कहते है ब्रह्माड और शरीर को, उसमे जो सर्वत्र व्याप्त और जो जीव के भीतर भी व्यापक अर्थात् अन्तर्यामी है। सहस्र नाम सम्पूर्ण जगत का और असख्यात का भी नाम है, सो जिसके बीच मे सब जगत के असख्यात सिर, आंख, और पग ठहर रहे हैं उस को सहस्र शीर्षा, सहस्राक्ष और सहस्रपात भी कहते है। क्योंकि वह अनन्त है। जैसे आकाश के बीच मे सब पदार्थ रहते और आकाश सबसे अलग रहता है, अर्थात किसी के साथ बधता नही है, इसी प्रकार परमेश्वर को भी जानो। (स भूमि सर्वत स्पृत्वा) वह पुरुष सब जगत से पूर्ण होके पृथ्वी को तथा सब लोकों को धारण कर रहा है। (अत्यतिष्ठ दशाङ्गुलम्) दशागुल शब्द ब्रह्माण्ड और हृदय का वाची है। अङ्गुलि शब्द अग का अवयव वाची है। पाच स्थूल और पाच सूक्ष्म भूत ये दोनो मिल कर जगत के अवयव होते हैं। तथा पाच प्राण, मन, बुद्धि, चित्त और अहकार ये चार और दशवा जीव शरीर मे जो हृदय देश है, सो भी दश अङ्गुल के प्रमाण से लिया जाता है। जो इन तीनो मे व्यापक होके इनके चारो ओर भी परिपूर्ण हो रहा है, इस से वह पुरुष कहाता है।

वेदाहमेत पुरुष महान्तमादित्य वर्णम् तमस परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्य. पन्था विद्यतेऽयनाय॥ यजु० ३१।१८

हे जिज्ञासु पुरुष (अहम्) मैं जिस (एतम) इस पूर्वोक्त (महान्तम्) बडे-बडे गुणों से युक्त (आदित्य वर्णम्) सूर्य के तुल्य प्रकाश स्वरूप (तमस:) अन्धकार या अज्ञान से (परस्तात) पृथक वर्तमान (पुरुषम्) स्वरूप से सर्वत्र पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हू। (तम् एव) उसी को (विदित्वा) जान के आप (मृत्युम) दु ख दाई मरण को (अति, एति) उलघन कर जाते हो, किन्तु [अन्य.] इससे भिन्न [पन्था] मार्ग [अयनाय] अभीष्ठ स्थान मोक्ष के लिए [न विद्यते] नहीं विद्यमान है।

(क्रमश:)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश



दोराई स्वामी की रिहाई

सरकार पर्याप्त समय से यह प्रयास कर रही है कि भारतीय तेल निगम के कार्यकारी निदेशक दोराई स्वामी को काश्मीर के उग्रवादियों से रिहा करा लिया जाए। परन्तु वह अभी तक भी अपने प्रयास मे सफल नही हो पाई है। अपहर्ताओ ने उनके रिहा किए जाने की समय सीमा को अनिश्चित काल तक के लिए बढा दिया है और हमारे सरकारी अधिकारी अपहर्ताओ से सन्तोषजनक जवाब की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पिछली कुछ घटनाए इस बात की सशक्त प्रमाण है कि अपहरणकर्त्ताओ के सामने सरकार को झुकना पड़ा है। यह नीति है। यह राजनीति है। पिछले गृह मन्त्री की बेटी को रिहा कराने के लिए कुछ आतंकवादियो को रिहा किया गया था। आन्ध्र मे एक केन्द्रीय मन्त्री के पुत्र को रिहा कराने के लिए कुछ अपहरणकर्ताओ के साथियो को रिहा किया गया था। पजाब के सम्बन्ध मे समझौतो के समय ऐसे लोगों को रिहा किया गया जिनके कारण बाद मे वातावरण में विषाक्तता और अधिक बढ गई है। जब असम का समझौता हुआ, तब भी तो यही हुआ था। सेठ के बेटे का अपहरण होता है तो अपहरणकर्त्ताओ को पैसा चाहिए। राजनेताओ अथवा उनके बेटे का अपहरण होता है, तो अपहरणकर्त्ता अपने बेटे या साथी बदले मे मांगते हैं।

अब दोराई स्वामी के लिए क्यो इसी आधार पर कार्यवाही नही हो रही है, समस्या तो यह है कि इस बात की भी जानकारी नही है कि दोराई स्वामी सकुशल है अथवा नही। यह पता लगा है कि समझौता यह था कि दोराई स्वामी को रिहाई करने के लिए तीन उग्रवादी पहले और दो बाद मे छोड़े जायेंगे। पर अब उग्रवादियों की सूची के कुछ नाम बदल गए हैं। कुछ गम्भीर आतंकवादियो को उस सूची मे जोड़ा जा रहा है।

अब सरकार इस बात के लिए प्रयत्नशील है कि समझौते की नीति मे कोई परिवर्तन न किया जाए। और श्री दोराई स्वामी को कुशलता का पुष्ट प्रमाण मिले।

आश्चर्य है कि देश के हर कोने मे स्थिति खराब होती जा रही है। सरकार कोई ठोस कार्य नहीं करती। आर्य समाज के सर्वोच्च नेता श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के सुरक्षा पट्टी निर्माण के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिए जाने पर भी सरकार कोई सशक्त कार्यवाही नही कर पा रही है। यदि राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा करनी है तो सरकार को ठोस कार्यवाही करनी ही होगी।

—डा० धर्मपाल

● अपमानकर्त्ता का अपमान करने से उसका सुधार नहीं होता, किन्तु सम्मान देने से वह सुधर जाता है। जैसे आग में आग डालने से वह शान्त नही होती, ऐसे ही द्वेषी की द्वेष बुद्धि, उसके साथ द्वेष करने से दूर नही हो सकती। अग्नि शान्त करने का साधन जल है। इसी प्रकार द्वेष को मिटाने का साधन शान्ति धारण करना है।

● जिन परमात्मा देव ने मनुष्यों की आंखे आदि इन्द्रियो के लिए सूर्यादि सहायक पदार्थ पैदा किए हैं, यह हो ही नहीं सकता कि उसने मनुष्य के मस्तिष्क को उज्ज्वल और उन्नत करने के लिए ज्ञान न दिया हो।

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२१ जुलाई, ९१ के अंक से आगे)

दयानन्द विषयक अन्य शोध कार्य की चर्चा मेरे साहित्य लेखन के प्रसग मे यथा स्थान हुई है।

आर्य समाज के नेतृत्व तथा विद्वत् वर्ग से मेरा सम्पर्क—

आर्य समाज की पुरानी तथा नई पीढी के प्राय: सभी नेताओ, विद्वानो पण्डितो, उपदेशको, पत्रकारो, प्रचारको तथा साधु सन्यासियो से मेरे सौहार्द पूर्ण स्नेह सम्बन्ध रहे। अपने से बड़ो का आशीर्वाद, समवयस्को का स्नेह, एव शुभ कामनाए तथा अपने से छोटो से सम्मान मुझे सदा ही मिलता रहा। सार्वदेशिक सभा के दिवगत प्रधान स्वामी अभेदानन्द जी, स्वामी ध्रुवानन्द जी, श्री प्रताप सिंह शूर जी बल्लभदास डा० डी० राम तथा लाला रामगोपाल शालवाले (वर्तमान स्वामी आनन्दबोध) सभी से मेरी घनिष्टता रही। पजाब के विख्यात आर्य नेता महाशय कृष्ण से यद्यपि मेरी प्रत्यक्ष भेंट एक ही बार हुई, किन्तु मुझे यह जान कर सुखद आश्चर्य हुआ कि वे मेरे लेखन से सुपरिचित थे। प० बुद्धदेव विद्यालकार तथा प० धर्मदेव विद्यावाचस्पति मेरे प्रति अत्यन्त कृपा भाव रखते थे। पण्डित बुद्धदेव जी का एक सस्मरण यहां उल्लिखित करना समीचीन होगा। मैं एक बार सार्वदेशिक सभा के कार्यालय दयानन्द भवन की सीढिया चढ रहा था, जबकि पण्डित बुधदेव ऊपर की मन्जिल से नीचे उतर रहे थे। बात काफी पुरानी है। मैंने नमस्ते की तो सोचा कि शायद पण्डित जी ने मुझे पहचाना नही होगा। अत: मैंने उनसे तुरन्त पूछ लिया—क्या आप मुझे पहचान गये? इस पर पण्डित बुद्धदेव जी का मार्मिक उत्तर इस प्रकार आया, "अरे जिनके कन्धों पर हमे जाना है, भला उन्हे हम क्यो नही पहचानेंगे।" पण्डित गगाप्रसाद उपाध्याय से भी मेरी भेंट एक बार ही हुई, उस समय जब दयानन्द दीक्षा शताब्दी के महोत्सव पर उन्हे सम्मानित किया गया था। मेरे लेखन कार्य से तो वे परिचित ही थे। मेरी आयु उस समय ३१ वर्ष की थी। मेरे लेखन कर्म मे समाविष्ट गुरुतर तथा गम्भीर विषयो से परिचित होने के कारण मुझे देखते ही वे बोल पड़े—"तुम्हारे लेखो को पढने से तो ऐसा लगता था, तुम कोई बूढे आदमी होगे, किन्तु तुम तो युवा ही हो।" मैंने राजगुरु पण्डित धुरेन्द्र शास्त्री, पण्डित नरदेव शास्त्री, पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पण्डित गगाप्रसाद उपाध्याय, पण्डित आनन्द प्रियजी, पण्डित युधिष्ठर जी मीमासक तथा पण्डित वैद्यनाथ शास्त्री से हुई अपनी मुलाकातो का वर्णन इन्टरव्यूशैली के सस्मरणात्मक निबन्ध मे लिखा है। इनका साहित्यिक महत्व तो है ही, आर्य समाजी साहित्य मे सस्मरण लेखन की विधा को प्रतिष्ठित करने की दृष्टि से भी ये उल्लेखनीय माने गए। यदि मैं आर्य समाज के नेताओ तथा विद्वत् वर्ग से अपने सस्मरणो तथा सम्बन्धो का विस्तार पूर्वक उल्लेख करू तो यह अपने आप में एक पृथक पुस्तक ही बन जायेगी। महात्मा आनन्द स्वामी जी, स्वामी ब्रह्ममुनि जी स्वामी सत्यप्रकाश जी, स्वामी ओमानन्द जी स्वामी सर्वानन्द जी स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द जी आदि सन्यासियो, सर्वश्री पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री, पण्डित नरेन्द्र जी, पण्डित ओमप्रकाश शास्त्री (खतौली) पण्डित वाचस्पति शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा आदि गणनीय उपदेशको से भी मुझे सदा प्रेम, सद्भावना एव स्नेह मिलता रहा है। भजनोपदेशक वर्ग मे सर्वश्री प्रकाशचन्द्र जी, पण्डित पन्नालाल जी पीयूष, श्री ओमप्रकाश जी वर्मा, तथा अन्य सभी मेरे प्रति आदर एव प्रेम रखते है। डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री, प्रो० धर्मवीर, पण्डित कुशलदेव शास्त्री तथा प्रो० दयाल जी आर्य का स्नेह और सद्भाव मेरा सम्बल रहा है।

इसी प्रसग मे देश की सैकड़ो आर्यसमाजो के अधिकारी, कार्यकर्ता तथा मेरे लेखन तथा वक्तृत्व कर्म के प्रशंसको के स्नेह, सद्भाव और सौजन्यपूर्ण व्यवहार का उल्लेख करने के लिए तो पृथक् स्थान एव समय की अपेक्षा होगी।

(क्रमश:)

पंजाब में आर्य समाज का घोषणा पत्र

(९-६-९१ के बृहद सम्मेलन में घोषित)

आर्य समाज राजनीतिक दल नही है। इसलिए यह राजनीतिक गतिविधियो में सक्रिय भाग नहीं लेता। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि आर्य समाज को देश की राजनीतिक स्थिति में कोई रुचि ही नही है। आर्य समाज के सस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में एक पूरा समुल्लास राजनीति को समर्पित किया है। अपने अध्यात्मिक व अनुभवी कार्य की शिक्षाओं से प्रेरित होकर ही आर्य समाजियो ने स्वतन्त्रता के सघर्ष में सक्रिय भाग लिया था। हजारो आर्यसमाजियो ने अपने आपको गिरफ्तारी के लिए पेश किया था। और कई नवयुवको ने तो फासी के फदे को भी चूम लिया था। ऐसी गौरवमय पृष्ठभूमि वाला आर्यसमाज देश मे घटित होने वाली घटनाओ के प्रति मूकदर्शक बन कर नही रह सकता। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का अधिकार क्षेत्र केवल पाच नदियो की धरती तक ही सीमित है। अत. आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब अपने राज्य की वर्तमान घटनाओ मे विशेष रुचि रखती है।

पजाब के वर्तमान जनसमुदाय के एक भाग की आतकवादी और अलगाववादी गतिविधियो की उपेक्षा नही की जा सकती। इसलिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब निकट भविष्य मे होने वाले चुनावो के प्रति पूरी रुचि रखती है। यद्द सभा चुनाव के लिए अपने उम्मीदवार खड़े नहीं कर रही परन्तु उन उम्मीदवारो का समर्थन करेगी जो इसके निम्नलिखित १२ सूत्रीय कार्यक्रम को मानने के लिए तैयार होगे। हम आशा करते हैं कि यह उम्मीदवार चुने जाने के पश्चात् पजाब विधानसभा मे या लोकसभा मे इन मागो का समर्थन करेंगे। ताकि एक नये गतिशील समृद्ध और समर्थ पजाब का पुनरुत्थान किया जा सके। ऐसा पजाब जो भारत की स्वतन्त्रता प्रभुसत्ता और एकता की रक्षा के लिए खड्ग का काम कर सके। अत: आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब माग करती है कि .—

१ पजाबी भाषा को प्रमुख सरकारी भाषा के रूप मे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। और हिन्दी को राज्य की दूसरी राज्य भाषा के रूप में अपनाया जाना चाहिए। जैसा कि सरकारी भाषा अधिनियम १९६७ मे कहा गया है।

२ सामाजिक राजनीतिक और सरकारी क्षेत्रो मे छूआछूत पूर्णरूपेण समाप्त हो और सरकारी नौकरियो मे आरक्षण केवल आर्थिक आधार पर पिछडी हुई सब श्रेणियों के लिए निश्चित होना चाहिए।

३ शैक्षणिक व प्रशासनिक विषयो मे सस्कृत को पूरी सुरक्षा व प्रोत्साहन दिया जाए।

४ स्नातक स्तर तक सभी को नि:शुल्क शिक्षा दी जाए।

५. देश की प्रभुसत्ता स्वतन्त्रता और एकता की सुरक्षा के लिए सभी कानूनी और प्रशासनिक कदम उठाए जाए।

६ बिक्री कर के वर्तमान ढाचे का पुन: निरीक्षण किया जाए और उसे जितना सम्भव हो सके सरल और लचकदार बनाने के लिए कदम उठाए जाएं ताकि व्यापारी वर्ग राज्य के वाणिज्य विकास मे अपना उचित योगदान दे सके।

७. कृषि के विकास के लिए एक निगम की स्थापना की जाए तथा खेती-बाडी में सलग्न लोग कृषि के सम्बर्द्धन और उस के मण्डीकरण को नियमबद्ध बनाने के योग्य हो सके।

८ उद्योगो के विकास और व्यापारिक प्रसार के लिए एक उद्योगिक विकास बोर्ड की स्थापना की जाए।

९. सरकार ऐसे पग उठाए जिस मे हिन्दू और सिखो में विद्यमान सांझी रूडियो के प्रचार से दोनो समुदायो की सास्कृतिक सामाजिक और राजनैतिक एकता को प्रोत्साहित किया जा सके।

१०. आर्यसमाज की सम्मति मे शराब, सिगरेट व दूसरी नशीली वस्तुओ का प्रयोग किसी भी रूप मे एक राष्ट्र के शारीरिक व सामाजिक प्रगति के मार्ग मे सब से बड़ी रुकावट होती है। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब सरकार से यह मांग करती है कि 'सिगरेट, शराब व दूसरी नशीली वस्तुओ की बिक्री पजाब मे पूर्णतया बन्द की जाए।

११. महिलाएं हमारे समाज का अविभाज्य और सम्माननीय अंग हैं केवल उन्नति ही नही अपितु हमारा अस्तित्व भी उन्हीं पर निर्भर करता है। इसी कारण आर्य समाज ने सदैव ही नारी की सामाजिक और शैक्षणिक प्रगति को उत्साहित किया है। आर्य समाज अनुभव करता है कि महिलाए अत्यन्त गम्भीर व सामाजिक समस्याओं का सामना कर रही हैं। यथा दहेज गैर कानूनी और कई बार अवांछित तलाक नवविवाहिता दुल्हनो को जलाना, विधवाओ की आर्थिक व सामाजिक समस्याए और अन्य कई कठिनाईयां हैं। अत: आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब मांग करती है कि सरकार महिलाओ की इन समस्याओ पर विचार करने के लिए एक कमेटी बनाए जो इनके समाधान के सुझाव दे जिन्हे यदि आवश्यकता हो तो सरकार कानून का रूप दे।

१२. सिखो के प्रति आर्य समाज की भावनाओ सम्बन्धी अनुचित धारणाओं को दूर करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब यह स्पष्ट करना चाहती है कि आर्य समाज गुरु साहिबान को हिन्दुओ के रक्षक और समर्थक समझता है। इसलिए आर्य समाज की दृष्टि मे दसो गुरु साहिबान उसी श्रद्धा सत्कार सम्मान और भक्ति भाव के अधिकारी हैं जो हम अपने और दूसरे हिन्दू सन्तो सन्यासियो और अन्य धार्मिक महापुरुषो के प्रति रखते हैं।

—आर्य प्रतिनिधि सभा, जालधर, पजाब

१०१ जीवित गायों व गोमांस सहित ५१ गिरफ्तार

गाजियाबाद, १६ जुलाई। जनपद के दो विभिन्न क्षेत्रो मे कल रात पुलिस ने वध हेतु ले जाई जा रही १०१ जीवित गायें ५ ट्रकों से तथा १४७ गायो का मांस एक फैक्ट्री से बरामद कर ५१ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया तथा ७ ट्रको व एक टैम्पो को अपने कब्जे मे ले लिया हैं।

भैंसो के मांस की आड मे गोमांस सप्लाई करने वाली उक्त फैक्ट्री की ऊची पहुच वाली मालकिन को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस प्रयासरत है।

पुलिस मुख्यालय से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार स्थानीय लिंक रोड औद्योगिक क्षेत्र स्थित अरिहत एक्सपोर्टस प्रा० लि० की फैक्ट्री सरकार से प्राप्त लाइसेन्स के अनुसार भैंस का मांस विदेशों को सप्लाई हेतु पैक करती हैं। किन्तु इस थाने के थानाध्यक्ष श्री सुरेश चौहान ने गुप्त सूचना के आधार पर जब कल रात इस फैक्ट्री पर छापा मारा तो उन्हे वहां से दो ट्रको मे भरा हुआ क्रमश: ८० व ६० तथा एक टैम्पो मे ७ ताजा कटी गायो का मास मिला। इस पर पुलिस द्वारा मौके पर मजदूर फैक्ट्री प्रबन्धक, सुपरवाइजर व १८ कर्मचारियो सहित २४ व्यक्तियो को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस द्वारा पूछताछ करने पर पता चला कि इन दोनो ट्रकों मे भरा गोमास रामपुर से तथा टैम्पो वाला मास जनपद गाजियाबाद के थाना मसूरी के देहरा गाव से लाया गया था।

इतनी भारी मात्रा मे गोमास की बरामदगी पर इस फैक्ट्री के इन गिरफ्तार कर्मचारियो के साथ-साथ इसकी मालकिन श्रीमती प्रमिला मरवाह के विरुद्ध भी मुकदमा दर्ज किया गया है, जो नई दिल्ली की न्यू फ्रैंड्स कालोनी मे रहती हैं तथा ऊची पहुच वाली महिला बताई जाती है। पुलिस इनकी भी गिरफ्तारी का प्रयास कर रही है।

उधर कल गढमुक्तेश्वर की चौकी ब्रजघाट पुलिस द्वारा पांच ट्रको मे ले जाई जा रही १०१ जीवित गाय बरामद कर २७ व्यक्तियो को गिरफ्तार किया गया है। यह छापा दोताई के पुल पर मारा गया। गिरफ्तार व्यक्तियो ने पूछताछ करने पर पुलिस को बताया कि वे ये गायें रामपुर से सोमा ले जा रहे थे, जहां इन गायो को हलाक किया जाना था।

(हिन्दुस्तान १७ जुलाई के आधार)

डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा लिखित 'आर्य लेखक कोश' पर विद्वानों की प्रशंसात्मक सम्मतियां

(१) आपने भारी परिश्रम करके अतीत एव वर्तमान के लेखकों का जो संक्षिप्त परिचय युक्त कोश तैयार किया है, इससे आगामी शोधार्थियों तथा अध्येताओं को पर्याप्त मार्गदर्शन मिलेगा।

—(डा.) स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती
योगधाम ज्वालापुर

(२) आर्य लेखक कोश' अत्यन्त सुन्दर आकर्षक तथा आर्यजनो, विद्वानो, लेखकों के पढ़ने के योग्य है। आपने कोश प्रकाशित कर जो सराहनीय कार्य किया है उसके लिये मेरी शुभ कामनाए।

—डॉ० धर्मपाल,
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

(३) यह ग्रन्थ आपकी २० वर्ष की लगन एव श्रम क्षमता का परिणाम है।

—प्रो० चन्द्रप्रकाश
दयालसिंह कालेज करनाल

(४) अपने विषय का यह अपूर्व ग्रन्थ है। ज्ञात अज्ञात सभी प्रमुख एव नूतन लेखकों के जीवन एवं लेखकों को अकारादि क्रम से जिस मनोहर एव आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है, वह आर्य सामाजिक साहित्य जगत् की प्रमुख उपलब्धि है।

—मनमोहन कुमार, देहरादून

(५) आर्य लेखक कोश बड़ा महत्त्वपूर्ण एव उपयोगी है।

—युगल किशोर चतुर्वेदी
सम्पादक लोक शिक्षक जयपुर

(६) इस अद्भुत, अद्वितीय कृति के लिये किन शब्दो मे प्रशसा लिखूं, नहीं लिख पा रहा हू। बधाई।

—प० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, गोरखपुर

(७) आर्य लेखक कोश को देखते हुए एक महान् ऋषि भक्त के सहनीय कार्य का परिचय मिला। हृदय गद्गद हो गया। इतना बड़ा कार्य अकेले सचमुच आपसे भिन्न कोई अन्य अस्मदादि नही कर सकता था आपने ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के विद्वानो के विषय मे जो सामग्री सग्रहीत कर प्रकाशित की है, वह अपने में अपूर्व है। आने वाली पीढ़ियो के लिये यह महत्त्वपूर्ण शोध सामग्री का भण्डार सिद्ध होगी।

—डा० जयदत्त शास्त्री उप्रेती
अध्यक्ष सस्कृत विभाग,
कुमाऊ विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा

(८) आर्य लेखक कोश को लिखने और सामग्री एकत्रित करने मे आपने अथक परिश्रम किया है, उसके लिये अनेकानेक धन्यवाद।

—पन्नालाल पीयूष
सगीताचार्य और भजनोपदेशक उदयपुर

(९) इतने बहुमूल्य एव सुन्दर ग्रन्थ के सम्पादन हेतु आपको बहुत बहुत बधाई।

—डा० (श्रीमती) शशि प्रभा कुमार
वरिष्ठ सस्कृत व्याख्याता
मैत्रेयी कालेज, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली

(१०) निःसन्देह आपके इस प्रयास ने शतशः ज्ञात एव अज्ञात लेखकों को अमर कर दिया है जिसके लिये वे सदैव आपके ऋणी रहेगे।

—आदित्यपालसिंह आर्य
प्रधान आर्यसमाज टी. टी नगर भोपाल

(११) इस अभूतपूर्व श्रम के लिये हार्दिक बधाई।

—डा० सुशीला आर्या, चरखी दादरी

डा० भवानीलाल भारतीय श्री धूड़मल आर्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के विख्यात विद्वान् एव शोध कर्ता डा० भवानीलाल भारतीय को उनकी शोधात्मक कृति नवजागरण के पुरोधा: दयानन्द सरस्वती तथा श्रद्धानन्द ग्रन्थावली के विद्वत्तापूर्ण सम्पादन के लिये श्री धूड़मल आर्य साहित्य पुरस्कार १९९१ प्रदान किया जा रहा है। यह समारोह २ सितम्बर को आर्यसमाज हिण्डौन (राजस्थान) मे सम्पन्न होगा। इस अवसर पर डा० भारतीय की ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रभावशाली और सरस कथा भी होगी।

डा० भारतीय पजाब विश्वविद्यालय की सेवा से मुक्त होकर सर्वात्मना वैदिक धर्म प्रचार और साहित्य लेखन मे ही लग गये हैं। दिल्ली प्रान्त की आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे समय समय पर डा० भारतीय को प्रचारार्थ आमन्त्रित करें तथा उनके साहित्य को मगायें। सम्प्रति वे एक मास के लिये महाराष्ट्र प्रान्त मे धर्मप्रचारार्थ जा रहे हैं।

ध्यान योग एवं चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

१ जून १९९१ से ९ जून रविवार तक आर्य समाज मसूरी में ध्यान योग एव चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का सचालन स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अध्यक्ष योगधाम आर्यनगर हरिद्वार ने किया। शिविर मे सम्मिलित होने वाले बालक-बालिकाओ को आसन प्राणायाम का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया इसके अतिरिक्त चरित्र निर्माण के साधन शिष्टाचार यज्ञ विधि तथा वैदिक सिद्धातो का परिचय कराया गया। इस शिविर मे साथ ही बडी उम्र के पुरुष एव माताए भी सम्मिलित हुईं। स्थानीय समाज के सदस्य तथा अपरिचित स्त्री पुरुष भी आते रहे और शिविर से लाभान्वित हुए विद्यार्थियों को देख कर सभी ने अनुभव किया कि इस प्रकार के शिविरो की आज के युवक-युवतियो के सुधार के लिए परमावश्यकता है। इस शिविर में भाग लेने वालो की सख्या ५० थी।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज नारायण विहार की १४-७-९१ रविवार की सभा पडित हरिशरण जी सिद्धान्तालकार के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

पण्डित जी न केवल वेदो के उद्भट विद्वान थे बल्कि उन्होने वेदों का सरल एव सुबोध भाषा मे भाष्य कर वेदो के प्रचार व प्रसार मे अद्वितीय योगदान किया। पण्डित जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके देहान्त से आर्य समाज को जो क्षति पहुंची है वह आसानी से पूर्ण नही हो सकती।

परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। तथा हमे इतनी शक्ति व सामर्थ्य दे कि हम उनके जीवन का अनुसरण कर तन मन धन से आर्य समाज की सेवा मे सलग्न रहें।

मन्त्री—आर्य समाज, नारायण विहार, नई दिल्ली-२८

आर्य समाज के नेताओं का संयुक्त वक्तव्य

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रति पूर्ण विश्वास

आर्य समाज के श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट, महाशय धर्मपाल, डा० धर्मपाल (दिल्ली), पंडित वन्देमातरम् रामचन्द्रराव (हैदराबाद), प्रो० शेरसिंह (हरियाणा), डा० सच्चिदानन्द शास्त्री (उ० प्र०), श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट (पजाब) तथा श्री विमल वधावन एडवोकेट आदि नेताओ ने निम्न वक्तव्य जारी किया है–

कुछ ऐसे व्यक्ति, जो किसी भी आर्य समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करते, मतदाता भी नही हैं, आजकल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व का चरित्र हनन करने मे लगे हुए हैं। अपने इस दुष्कृत्य मे वे ऐसे तरीको को अपना रहे है, जो नितान्त असवैधानिक और सन्देहास्पद हैं।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संस्थाओ के कार्य संचालन मे प्रजातान्त्रिक पद्धति के व्यवहार का निर्देश दिया था। उनका यह निर्देश हमें उनसे वसीयत के रूप में मिला है, जिसका परिपालन हम सबका कर्त्तव्य है। इसलिए निर्वाचित प्रतिनिधियो के मामले मे हम किसी दो या तीन व्यक्तियों की इच्छाओं का प्रभुत्व स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि ऐसा करना प्रजातन्त्र की हत्या और लोकमत का उल्लघन करना होगा।

हम स्वामी आनन्दबोध सरस्वती से, जिन्हें सार्वदेशिक सभा के निर्वाचित सदस्यो ने सर्वसम्मति से अपना प्रधान चुना है प्रार्थना करते हैं कि वे कुछ व्यक्तियो द्वारा चलाये जा रहे इस प्रकार के असंवैधानिक और शरारतपूर्ण प्रचार पर कोई ध्यान न दें, क्योंकि सभा के सभी निर्वाचित सदस्यों का जिन्होंने उन्हें प्रधान-पद के लिए चुना है, उनके नेतृत्व मे पूर्ण विश्वास है।

हम कुछ ऐसे व्यक्तियों के जो किसी भी आर्य समाज के प्रतिनिधि नहीं है, इस प्रकार के निन्दनीय कार्य की जो वे केवल सभा के वर्तमान नेतृत्व के प्रति विद्वेष की भावना से प्रेरित होकर कर रहे हैं, कडे शब्दों मे भर्त्सना करते हैं।

वैदिक सतसंग का चार दिवसीय आयोजन

धार नगर के मध्य महात्मा गाधी मार्ग पर स्थित श्रीराम मन्दिर (तिरवाड़ी) मे ६ जुलाई से १० जुलाई ६१ तक प्रतिदिन रात्रि ८ बजे से ६-३० बजे तक वैदिक सत्सग का एक चार दिवसीय आयोजन आर्य समाज धार के तत्वावधान मे किया गया। इसमे आर्य समाज के वैदिक विद्वान देश भर मे सुप्रसिद्ध प्रखर एवं ओजस्वी वक्ता, हैदराबाद आन्दोलन के सत्याग्रही, आर्य मानु आश्रम ग्राम गोदी (जिला जालना) महाराष्ट्र के (८४ वर्षीय) वयोवृद्ध सत स्वामी कर्तव्यानन्द जी महाराज के वैदिक धर्म पर प्रवचन हुए।

स्वामी जी ने अपने प्रवचनो मे बताया कि जो बुद्धिमान चिन्तन शील याने मनन शील होता है—वही मनुष्य होता है। जिसमे चिन्तन मनन शीलता नही वह मनुष्य देह धारण करके भी पशु के तुल्य है। मनुष्यता और पशुता के मध्य बुद्धि चिंतन शीलता ही एक सीमा रेखा है। डार्विन का यह सिद्धान्त कि मनुष्य के पूर्वज बदर थे—नितान्त असत्य एव भ्रामक है। सृष्टि की रचना से लेकर आज तक किसी पशु के गर्भ से मनुष्य या मनुष्य के गर्भ से पशु के जन्म का प्रमाण किसी भी देश के साहित्य या इतिहास मे नही मिलता। बुद्धि इसे स्वीकार नही करती।

व्रत के भावार्थ को समझाते हुए आपने बताया कि सोमवार का सच्चा व्रत तो तब है जब हम अपने दैनिक जीवन मे सौम्यता लावे। "श्रीराम" सौम्यता की प्रतिमूर्ति थे।

सारे ससार मण्डल के प्राणी मात्र के मगल की कामना एव उसके अनुसार अपना आचरण व्यवहार करना ही मगलवार का सच्चा व्रत है।

वेद के अनेक मन्त्रो के उदाहरण देकर स्वामी जी ने बुद्धि का सदुपयोग करना ही बुधवार का सच्चा व्रत करना बताया। मन बुद्धि और आत्मा को बलिष्ठ बना कर जन-जन की नि.स्वार्थ सेवा को रविवार का व्रत करना बताया। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम ने इन सभी वारो का बहुत निष्ठा पूर्वक नि स्वार्थ भाव से जीवन भर किया था, इसी कारण आज नौ लाख वर्ष व्यतीत हो जाने के उपरान्त भी राम जन-जन के हृदय मे एक आदर्श के रूप मे व्याप्त हैं। अत रामत्व को प्राप्त करने का प्रयास सच्चे मन से करना ही जीवन की सार्थकता है। इस अवसर पर बडी सख्या मे श्रद्धालु जनों ने उपस्थित होकर सत्सग का लाभ उठाया।

प्रति दिन कार्यक्रम का सचालन एव अन्तिम दिन आभार प्रदर्शन आर्य समाज धार के प्रधान एवं वैदिक धर्म प्रचार सभा इन्दौर के उपमन्त्री पण्डित बालकृष्ण चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

दीक्षित प्रधान

सम्पादक के नाम पत्र

—आपके द्वारा ७-७-६१ के अक मे कुछ आयुर्वेदिक उपचार पढ कर अति प्रसन्ता हुई परन्तु १०-६-६१ मे भी कुछ इस विषय पर दिया होगा वह अक मुझे प्राप्त नहीं हुआ यदि कहीं पड़ा हो तो एक प्रति भिजवा दें।

इसी प्रकार यदि आप कुछ गृहस्थ जोवन पर कुछ लेख दे जिससे मार्ग दर्शन हो सके। क्योकि आज के युग मे इस ओर ध्यान देने की अति आवश्यकता है, यहा तक कि आर्य समाज मे आस्था रखने वाले परिवार वास्तव में कितने स्वामी के अनुयायी हैं अथवा डी० ए० वी० की सैकड़ो पाठशालाएं हैं उन पर हमें गर्व है परन्तु कितने किशोर किशोरिया पढ कर आर्य समाज के निष्ठावान सदस्य बने हैं क्योंकि वहा मात्र पढने के लिए पढते हैं, प्रभाव ही तब पड़ेगा जब प्रचार होगा और निष्ठा उत्पन्न करने की चेष्टा होगी, कितने शिक्षक स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्त पर चलने वाले हैं।

कितना प्रचार है स्त्री पुरुष के समान अधिकार का कितना प्रचार है दहेज के लेन देन का परन्तु सुधार ही तब होगा जब भावनायें जागृत होंगी उसके लिए आवश्यकता है नित्य प्रति समझाने की।

क्यो लोग दूसरे मत महान्त्रों की ओर दौड रहे हैं। क्या हम मात्र यज्ञ सध्या अथवा कुछ वेद मन्त्र सुना उनको आर्य समाज में ला सकेंगे। अतः यदि इन विषय पर कुछ लिखें जिन को पढ़ कर कम से कम आर्य समाज परिवार के बच्चे ही अपने सिद्धान्त पर अडिग रहे और अपने गृहस्थ के प्रति अपने कर्तव्य को समझें।

आर्य समाज क्या है ?
आर्य समाज ही क्यो ?
सुखी गृहस्थ ?
शाकाहार के गुण तथा विशेषताए ?
ऐसे लेख जिनसे शारीरिक मासिक भोजन प्राप्त हो।
नशीले पदार्थों से विनाश आदि।

● एक मनुष्य तो परोपकार और दान पुण्य करने से पवित्र हो जाता है और दूसरो पर अपकार और पाप कर्म न करने से भी अपना मगल साबित कर लेता है अतः मन में कभी भी अपकार और अनिष्ट चिन्तन का भाव कदापि न लाइये।

● सूर्य को अर्घ्य देते हुए देखकर लोगों को स्वामी जी ने कहा—अरे भोले भाइयो ! जल में जल क्यों देते हो ? यदि किसी पेड़ को पानी दो तो कुछ लाभ भी हो सकता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य

१	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम, द्वितीय) प्रत्येक		१.५०
२	नैतिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२.००
३	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३.००
४.	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
६	धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५ ००
७.	फलैश आफ ट्रुथ	(ड० सत्यकाम वर्मा)	२.००
८	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	,, ,,	२.००
९.	एनोटामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०	आर्यों का आदि देश	,, ,,	२ ००
११	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	,, ,,	२५ ००
१२.	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	,, ,,	२ ००
१३.	चत्वारो वै वेदा:	,, ,,	५ ००
१४	द्वैतसिद्धि	,, ,,	५ ००
१५	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	२०.००
१६.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(ड० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५ ००
१७	हसता चल, हसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६ ५०
१८	दयानन्द एण्ड दा वैदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
१९	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२०	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२१.	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकड़ा
२२	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकड़ा

नोट, उपरोक्त सभी पुस्तकों पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तकों की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक-व्यय पृथक नहीं लिया जाएगा।

पुस्तक प्राप्ति स्थान - **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१



सुयोग्य डाक्टर बनें—
आर्य महाविद्यालय, किरठल, मेरठ में

त्रिवर्षीय इलेक्ट्रो होम्योपैथिक डिग्री कोर्स B. E. M. S.

पाठ्यक्रम का प्रारम्भ

महर्षि दयानन्द मेडिकल कालिज, किरठल (मेरठ)

(मान्यता—ए आई आर डी. आफ इ. एच सेन्ट्रल बोर्ड दिल्ली)

प्रवेश योग्यता—इन्टरमीडिएट विज्ञान सहित

उत्तर मध्यमा विज्ञान सहित

वे छात्र भी आवेदन कर सकते हैं जो १९९१ वर्षीय परीक्षा मे सम्मलित हुए हैं।

विशेषता—अध्ययन, अध्यापन की समुचित व्यवस्था, छात्रावास एव भोजन की उत्तम व्यवस्था, उत्तम प्रयोगशाला एव क्रीडा का उचित प्रबन्ध।

नोट—इच्छुक अभ्यर्थी प्रवेश हेतु प्रधानाचार्य से सम्पर्क करें।

अनुकरणीय विवाह संस्कार

दिनाक ८-७-९१ सोमवार का नेपाल एव चम्पारण जिला आर्य सभा के महोपदेशक श्री रामचन्द सिंह "क्रान्तिकारी" की द्वितीय पुत्री ममता का शुभ विवाह वैदिक रीत्यनुसार जिला मंच प० बी० दे० शर्मा के आचार्यत्व एव जिला प्यासू प० ध्रुवप्रसाद के पौरोहित्य में बलेंम बारा (नेपाल) निवासी श्री तोताराम प्रसाद के चि० पुत्र श्री राजकुमार के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमे नेपाल एव भारत के गण्य मान्य व्यक्तियों ने उपस्थित होकर वर-वधू को आशीर्वचन दिए। वैवाहिक कार्य-क्रम बहुत सादगी एव अनुकरणीय था।

— बी. दे शर्मा मंत्री — चम्पारण जिला आर्य सभा





आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 25-26-7-1991 Licence to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३९

वैदिक विद्वज्जन निर्देशिका का प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य शब्द का अर्थ प्रतिपादित करते हुए लिखा है—"आर्य : श्रेष्ठः, आर्यः ईश्वर पुत्रः' अर्थात् जो श्रेष्ठ हो, वेदानुकूल आचरण कर रहा हो तथा कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की इस पुनीत एवं उदात्त वैदिक भावना के अनुरूप वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में तत्पर हो उसे आर्य कहते हैं। भारतवर्ष की राजधानी दिल्ली में ऐसे बहुत से विद्वज्जन हैं जो विभिन्न शिक्षा संस्थाओं में कार्यरत हैं, स्वतन्त्र रूपेण वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रचार-प्रसार में तत्पर है तथा डी ए वी शिक्षण संस्थाओं में भी ऐसे उच्चकोटि के वैदिक विद्वान एवं प्रचारक हैं जो इस पुनीत कार्य में संलग्न हैं।

अत: ऐसे समस्त आर्य विद्वज्जनों से विनम्र निवेदन है कि कृपया शीघ्राति-शीघ्र अपना आवासीय पता तथा दूरभाष नम्बर वेद प्रचार अधिष्ठाता, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर भेजने का कष्ट करें। इस संदर्भ में आप समस्त महानुभावों को सूचित किया जाता है कि श्री राम नाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिनिधि सभा की हार्दिक अभिलाषा हैं कि ऐसे मूर्धन्य विद्वानों एवं धर्माचार्यों की एक निर्देशिका (डायरेक्ट्री) अविलम्ब निर्मित होनी चाहिए। वस्तुत: यह एक प्रशस्त परम्परा बनने जा रही है. हमें इस कार्य में अग्रसर होना चाहिए तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को एवं तत्सम्बद्ध अधिकारियों को अपने सहयोग से कृतार्थ करना चाहिए।

आर्य हिन्दुओं की सेवा में,

आर्य विद्वानों की सेवा में पुन: सूचित किया जाता है कि आप श्रीमान अपना विवरण निम्नलिखित ढंग से प्रस्तुत करें—

१. नाम, २ पिता/पति का नाम ३, जन्म तिथि ४. शिक्षा ५. निवास ६. दूरभाष ७. व्यवसाय, ८. कार्यालय।

निर्देशिका का नामकरण इस प्रकार होगा—"वैदिक विद्वज्जन निर्देशिका।

—डा० तीर्थराज शास्त्री,
वेद प्रचार अधिष्ठाता

सेवा में—

'प्रखर' '१०४५'

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी०(सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ३९	रविवार, ४ अगस्त, १९९१	विक्रमी सम्वत् २०४८	दयानन्दाब्द : १६६	सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९१
मूल्य एक प्रति ५० पैसे	वार्षिक—२५ रुपये	आजीवन २५० रुपये	विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर	दूरभाष : ३१०१५०



श्री महाशय चुन्नीलाल पवित्रता सच्चरित्रता एवं सत्यनिष्ठा के धनी थे

— स्वामी आनन्दबोध सरस्वती —

उच्च कोटि के दानवीरों में प्रसिद्ध आर्य समाजी महाशय चुन्नीलाल जी का नाम सबसे प्रथम पक्ति में है। देने वाले दाताओं में ऐसे तो बहुत मिल जाएगे जो मांगने पर देते हैं, नाम कमाने या काम निकालने की दृष्टि से देते हैं परन्तु ऐसे दाता बिरले ही होते हैं जो किसी के डर से नही, मांगने या हाथ पसारने से भी नहीं अपना काम निकालने के लोभ से भी नही इस जीवन मे यश और कीर्ति को स्वयं देखने और सुनने के लिए भी नहीं बल्कि मात्र जनहित, जनकल्याण हेतु देते हैं आदरणीय महाशय चुन्नीलाल जी ने सम्पूर्ण वैभव को न्योछावर किया था। वे महाशय थे। उन्होने अपने व्यापार को अपने पुरुषार्थ के द्वारा ही आगे बढ़ाया था। महाशय वे होते हैं जो परहित में लगे रहते हैं। जिनके विचार ऊंचे होते हैं। महाशय चुन्नीलाल जी ऐसे ही पवित्रता सच्चरित्रता एव सत्यनिष्ठा के धनी व्यक्ति थे। ये उद्गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने एम० डी० एच० के सभागार मे २४ जुलाई १९९१ को आयोजित महाशय चुन्नीलाल जन्म-दिवस समारोह मे व्यक्त किए।

"उद्यानं ते पुरुष नावयानम्" अर्थात् हे मनुष्य ! तू उत्तरोत्तर उन्नति की ओर चल, पतन की ओर मत चल। उपर्युक्त वेद मन्त्र के अनुयायी थे महाशय चुन्नीलाल जी। यह उद्गार आर्य केन्द्रिय सभा के महामन्त्री डा० शिव कुमार शास्त्री ने प्रकट किए। इस अवसर पर बोलते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्यदेव ने कहा कि श्री महाशय चुन्नीलाल जी सदैव वेद का अध्ययन करने वाले छात्रों की सहायता किया करते थे। इससे पूर्व श्री राजीव गुलाटी ने सभी आगन्तुकों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल आर्य ने कहा कि धन की तीन गतियां होती हैं—दान, भोग और नाश। जो व्यक्ति अपने धन का उपयोग सुपात्रों को दान देने मे करते हैं, जो व्यक्ति मानव मात्र के कल्याण के लिये ट्रस्टो का निर्माण करते हैं, तथा गरीबो की सेवा करते हैं। वे लोग प्रणम्य है। या तो धनी पैसे का भोग कर ले, अथवा लोकहित के लिए दान कर दें। ये ही स्थितियां उचित हैं। नहीं तो उसके धन का नाश हो जाएगा। श्री महाशय धर्मपाल जी तथा उनके परिवार के लोग लोकोपकार के कार्य मे लगे हैं। यह हम सभी आर्यजनों के लिए परम सन्तोष की बात है। इस अवसर पर आचार्य रामकिशोर वैद्य एवं स्वामी ओमानन्द सरस्वती आदि ने भी अपने उद्गार प्रकट किए।

समारोह के अन्त में श्री महाशय धर्मपाल जी ने उपस्थित सभी विद्वत् मण्डल एव सभी अभ्यागतों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि मैं लोकोपकार के मार्ग पर चलता रहूं तथा मेरे बच्चे भी मेरे कार्य मे सहायक हों।

यो जागार तमु सामानि यन्ति।

सामवेद

सामवेद भाष्य का लोकार्पण समारोह

प्रिय महोदय,

स्व० श्री स्वामी समर्पणानन्द जन्मदिवस के अवसर पर, समर्पण शोध संस्थान की ओर से सामवेद भाष्य (पूर्वार्चिक) का लोकार्पण, माननीय श्री शिवराज पाटिल लोकसभा-अध्यक्ष के कर कमलों से सम्पन्न होगा। समारोह की अध्यक्षता श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करेंगे। आप से प्रार्थना है कि लोकार्पण समारोह में सम्मिलित होकर अनुगृहीत करें।

दिनांक : १ अगस्त १९९१ बृहस्पतिवार समय : सायं ५.३० से ८

स्थान : सप्रू हाउस, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली-१

—: निवेदक :—

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सा० आ-प्र० सभा	**स्वामी दीक्षानन्द** सस्थापक स० शो० सस्थान	**डा० धर्मपाल** प्रधान आ० प्र० स० दिल्ली	**श्री दरबारीलाल** प्रधान आ० प्रा० सभा दिल्ली
डा० कुसुमलता आर्य मंत्री स० शो० सस्थान	**महाशय धर्मपाल** प्रधान केन्द्रीय आ० प्र० स० दिल्ली	**प्रो० शेरसिंह** प्रधान हरयाणा प्रा० प्र० सभा	**पं हरिदेव** आचार्य गु० द० वे० वि० दिल्ली

परामर्श—डा० धर्मपाल   प्र० सम्पादक—सूर्यदेव   सम्पादक—मनोज कुमार शास्त्री   व्यवस्थापक— सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

अक्षय सत्यनारायण व्रत कथा-३

— पं० देवनारायण भारद्वाज —

वही सत्य नारायण भगवान सबसे बड़ा और प्रकाशवान है। प्रश्न उठता है कि किस पदार्थ को जान कर मनुष्य ज्ञानी होता है। तो उत्तर है कि उस पूर्वोक्त लक्षण सहित परमेश्वर ही को यथावत जान के ठीक-ठीक ज्ञानी होता है अन्यथा नहीं। जो सबसे बड़ा सबका प्रकाश करने वाला और अविद्या अन्धकार अर्थात् अज्ञान आदि दोषो से अलग है, उसी पुरुष को मैं परमेश्वर और इष्टदेव जानता हू। उसको जाने बिना कोई मनुष्य यथावत ज्ञानवान नहीं हो सकता। क्योंकि उसी परमात्मा को जान के और प्राप्त होके जन्म-मरण आदि-आदि क्लेशो से समुद्र समान दुःख से छूट कर परमानन्द स्वरूप मोक्ष को प्राप्त होता है, अन्यथा किसी प्रकार से मोक्ष नही पा सकता। इससे क्या सिद्ध हुआ कि उसी की उपासना सब मनुष्य लोगो को करना उचित है। उससे भिन्न किसी की उपासना करना किसी मनुष्य को नहीं चाहिए। क्योंकि मोक्ष को देने वाला एक परमेश्वर के बिना दूसरा कोई भी नहीं है। इसमे यह प्रमाण है कि व्यवहार और परमार्थ दोनो सुख का मार्ग एक परमेश्वर की उपासना और उसका जानना ही है, क्योंकि इसके बिना मनुष्य को किसी प्रकार का सुख नही हो सकता।

इन दोनो पुरुष सूक्त के मन्त्रो का द्रष्टा ऋषि नारायण है। इस प्रकार परमात्मा का स्वरूप हमारे मस्तिक मे स्पष्ट हो जाता है, और हमे पता चलता है कि ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्व शक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

परमात्मा के नाम व स्वरूप को समझते हुए जब भक्त आगे बढेगा तो भटकने की कोई आशंका नही है, किन्तु इसके स्थान पर यदि हम कोई कल्पित मूर्ति रख लेते है तो हमारी दृष्टि उसके रूप तक केन्द्रित हो जाती है। वह साकार मूर्ति तो प्रत्यक्ष आखो से दिखाई देती है उस पर ध्यान लगा कर देखना कैसा? ध्यान तो निराकार परमेश्वर का ही किया जा सकता है। इसलिए नाम स्वरूप को समझते हुए हमे अपने लक्ष्य को नही भुलाना है। एक शिष्य अपने गुरु के समीप पहुचा और वही प्रश्न जो नारद जी ने विष्णु भगवान से किया था—उनसे कर दिया। ससार बड़ा दुःख सन्ताप भाग रहा है। इन वेदनाओ से मानव को मुक्ति कैसे हो—कृपया वही उपाय बताइये। गुरु जी ने कहा बताएगे—अभी तो बड़ी प्यास लगी है, जाओ एक लोटा शुद्ध ताजा जल ले आओ, शिष्य पनघट पर चला गया। लोटा भरा—स्वय पी लिया। उसी पनघट पर पानी भरने आयी एक नवयुवती को देख कर उसका मन डोल गया। उसके पीछे-पीछे चला गया। हर यत्न कर उसने युवती से विवाह कर लिया। घर बस गया। परिवार खूब बढ गया। वर्षों बाद ग्राम की नदी में बाढ आ गई। परिवार सारा डूब गया। जब बाढ का पानी स्वय की नाक तक आने लगा, तो उसे इस बाढ की अपार जल राशि को देख कर स्मरण आया, कि मैं तो एक लोटा जल गुरु जी के लिए लेने आया था—यहा इस बाढ मे फस गया। इस प्रकार हमें अपने लक्ष्य को भूलना नही आगे बढते हुए ध्यान रखना है। वह क्या है?

ओ३म् विश्वानि देव सवित दुरितानि परासुव।
यद भद्र तन्न आसुव ॥ यजु० ३०।३ ॥

अर्थात् हे (सवित) सकल जगत के उत्पत्ति कर्त्ता समग्र ऐश्वर्य युक्त (देव) शुद्ध स्वरूप एव सुखो के दाता परमेश्वर आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुखो को (परासुव) दूर कर दीजिए। (यत्) जो (भद्रम्) कल्याण कारक गुण, कर्म स्वभाव और पदार्थ हैं। (तत्) वह सब हमको (आसुव) प्राप्त कीजिए। ससार के असख्य दुःखो को तीन वर्गों मे रखा गया है, जो भौतिक, दैहिक एव आत्मिक हैं। भूत अथवा प्राणियो से होने वाला दुःख, भौतिक दुःख है। जैसे सर्प, बिच्छू पशु या मनुष्यों द्वारा मनुष्य को पहुचाई जाने वाली पीडा। दैहिक दुःख जो देवताओ द्वारा हमको पहुचाया जाये जैसे अति वृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, सूखा, भूकम्प के प्रकोप, इन्द्र, अग्नि जल आदि द्वारा उत्पन्न आकस्मिक आपदाए। आत्मिक दुःख आत्मा सम्बन्धी है अर्थात् जिसकी अनुभूति स्व-शरीर द्वारा सीधे आत्मा को हो जैसे - ज्वर, अतिसार, फोड़ा आदि व्याधियां। हम किसी से कुछ मांगने चलते हैं तो मन में दो प्रश्न उठते हैं—प्रथम वह वस्तु उसके पास है भी या नही, द्वितीय यदि है तो हमें वह देगा भी कि नहीं। इस मन्त्र के सविता और देव शब्द इस शंका का समाधान कर देते हैं। जब परमेश्वर सविता सम्पूर्ण जगत का उत्पत्तिकर्त्ता है तो उसके पास क्या नहीं है सभी कुछ है। फिर वह देव भी है अर्थात् सभी कुछ देने वाला वही है। किसी-किसी के मन में इस से भिन्न प्रश्न उठ सकता है कि हम क्यों किसी से मांगें, तो लोक में भी सामाजिक व्यवहार परस्पर लेन देन के बिना हमारा जीवन निर्वाह सम्भव नहीं है। यहां तो हम जिस परमेश्वर से माग कर रहे हैं, पहले हमारे पास जो कुछ है वह उसी का दिया है। आगे भी उससे मांगने में कोई अपमान नहीं है, क्योंकि उसकी अपार राशि जो कभी चुकने वाली नहीं है, उसके एक अंशानुअंश मात्र को सम्भालने की क्षमता हम में नहीं है! क्योंकि वह दीर्घातिदीर्घ है और हम लघु से भी अति लघु हैं। हमारी माग भी क्या है? दुर्गुण, दुर्व्यसन, व दुःखों को दूर कर दो और कल्याणकारी गुण, कर्म, स्वभाव व पदार्थ हमे प्रदान कर दो! यदि पात्र में दुरित भरे हैं तो उन्हें दूर किए बिना उसमें भद्र कैसे समायेगा।

(क्रमशः)

क्या जगत् असत्य है?

—ले० स्व० इन्द्र विद्यावाचस्पति

मायावाद का आधार उपनिषदों को माना जाता है। ईशोपनिषद् की पहली ऋचा का पूर्वार्द्ध ही उनके मन्तव्य का खण्डन कर देता है। 'यह जगत ईशावास्य है।' इस कथन से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि ईश और जगत् दोनो सत्य हैं, और भिन्न हैं, आच्छादित करने वाला आच्छादित होने वाले से भिन्न होना चाहिए। घर और घर मे रहने वाला—दो अलग-अलग पदार्थ होने चाहिए। उपनिषद् के प्रथम वाक्य से ही मायावाद का निषेध हो जाता है।

यदि इस कल्पना को मान लिया जाय कि केवल एक ब्रह्म ही सत्य है, शेष सब मिथ्या है और इस जगत की अनुभूति केवल भ्रान्ति या माया का परिणाम है तो कुछ प्रश्न उत्पन्न होते हैं, जिनके उत्तर सरल नही हैं।

पहला प्रश्न यह है कि यह जगत् जिस भ्रान्ति या माया का परिणाम है, वह किस में रहती है? क्या ब्रह्म मे? जब केवल ब्रह्म ही सत्य है, अन्य कोई नही, तो निश्चय ही ब्रह्म माया का आधार होना चाहिए। उपनिषद् में उसे शुद्ध और अपापविद्ध कहा है। शुद्ध और निर्लेप मे माया कैसी? और सर्वज्ञ मे भ्रान्ति कैसी?

दूसरा प्रश्न यह है कि माया या भ्रांति स्वय कोई सत्य पदार्थ है या नहीं? यदि है तो दो सत्य पदार्थ मानने पड़ेंगे, परन्तु यदि असत् है, तो जिसकी स्वय कोई सत्ता नहीं, वह जगत को कैसे बना सकती है?

इन अत्यन्त स्वाभाविक और मौलिक प्रश्नों का सीधा उत्तर मायावाद के पास नही है। इन प्रश्नो के उत्तर देने के लिए उन्हें ऐसा विस्तृत शब्दो का जाल फैलाना पड़ता है कि मनुष्य का मन उसमे उलझ कर कर्मयोग को सर्वथा भूल जाता है। वह एक निर्मम सन्तोष मे पड़ जाता है, जो उसे अकर्मण्य बना देता है। ईशोपनिषद् मे जिस कर्म सिद्धान्त का प्रतिपादन है, उसका आधार यह है कि ईश्वर भी सत् है, और जगत् भी। भेद इतना है कि जहां ईश्वर सर्वज्ञ और अविकारी है, वहां जगत् विकारी और परिवर्तनशील है।

— सद्धर्म ग्रन्थ—ईशोपनिषद्भाष्य

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

रूस में मार्क्सवाद की समाप्ति



पिछले दिनो रूस के राष्ट्रपति गोर्बाचोफ ने सामाजिक-धार्मिक-आर्थिक क्षेत्र में मौलिक परिवर्तन की बात बार-बार उठाई है। इससे यह स्पष्ट है कि जनता मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तो के परित्याग के मार्ग पर अग्रसर है। उन्होने सोवियत संघ को संवैधानिक दृष्टि से भी सामाजिक लोकतन्त्र मे परिवर्तित करने की बात की है। वे कम्युनिस्ट पार्टी को भी मजदूर और सर्वहारा वर्ग की पार्टी के स्थान पर पूरी जनता की पार्टी बनाना चाहते हैं। भारत में जनता शब्द के लिए विशेष आग्रह है। अब यही भावना रूस मे भी पुष्पित पल्लवित हो रही है। एक बात जो बहुत ही महत्वपूर्ण है, वह है कि अब वहा पर निजी सम्पत्ति रखने और धर्म की स्वतन्त्रता का भी अधिकार मिलने की जोरदार वकालत की जाने लगी है। भारत मे जो मार्क्सवाद का नाम लेते नहीं अघाते हैं, उन्हे यह बात समझ आ जानी चाहिए कि धर्म परायण हमारी जीवन शैली का एक अभिन्न अंग है। धर्म पूजा पद्धति से आगे बढ़ कर जीवन-शैली का एक मापक है। मनु महाराज की धर्म की व्याख्या-धृति क्षमा दमोऽस्तेय शौचमिन्द्रिय निग्रह: धीर्विद्या सत्यम क्रोधो दशक धर्म लक्षणम् - एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है।

गोर्बाचोफ राजनेता के साथ साथ नृविज्ञान के भी अध्येता हैं। वे समय की आवश्यकताओ को पहचानते हैं? इसलिए ये सभी परिवर्तन देश को स्थायित्त्व देने के लिए अपरिहार्य हो गए हैं। अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उन्हे एक ऐसे क्रान्तिकारी चिन्तन की आवश्यकता है।

—डा० धर्मपाल

—०—

भाषायी आन्दोलन

विद्वज्जन अभी तक साठ के दशक के उस भाषायी आन्दोलन को नही भूले होगे जिसने समूचे सत्ता तन्त्र को हिला कर रख दिया था। पर आज संघ लोक सेवा आयोग के दरवाजे पर धरने पर बैठे भारतीय भाषाओ के समर्थन मे पताका उठाए, इन जज्बाती छात्रो की कोई नही सुन रहा है। ये नौजवान तीन साल से यहा बैठे है, पर पूरी तरह से नाकामयाब, अनसुने और उपेक्षित। इन तीन सालों मे तीन सरकारें बदली—कांग्रेस, जनता दल, सजपा और फिर कांग्रेस। तीनों के नेताओ ने इन आन्दोलनकारियो को आश्वासन भी दिए, पर सब बेकार। किसी भी पार्टी ने इनके विषय को अपने घोषणा पत्र में सम्मिलित भी नही किया। इस आन्दोलन के नेता पुष्पेन्द्र चौहान ससद की दर्शक दीर्घा से नीचे सदन मे कूद पड़े, अपनी पाच पसलियां तुड़वा बैठे, पर ससद के शोर मे यह चटख दब कर रह गई। किसी ने कोई परवाह नहीं की।

आश्चर्य है कि इनकी मागें उचित हैं, नही मानी जा रही, जबकि अल्फा और जगजूओ की मान ली जाती हैं, या कम से कम उनसे बातचीत तो की जाती है। वे हिंसक हैं, ये अहिंसक। शायद अहिंसा का हथियार अपने ही देश मे भोंथरा हो गया है।

—डा० धर्मपाल

मेरे आर्य सामाजिक जीवन की विकास यात्रा

—डा० भवानीलाल भारतीय

(२८ जुलाई, ९१ के अंक से आगे)

वैदिक कर्मकाण्ड में मेरी अभिरुचि—

मैंने अपने इस आर्य सामाजिक वृत्त के प्रारम्भ में ही यह बताने का प्रयास किया है कि वैदिक कर्मकाण्ड मे मेरी अभिरुचि के मूल मे मेरे घर मे सम्पन्न होने वाला साम्प्रदायिक कर्मकाण्ड का अनुष्ठान था। यह स्वाभाविक ही था कि आर्य समाज में प्रविष्ट होने के पश्चात् मैं वैदिक कर्मकाण्ड के प्रति अपने रुझान को अधिकाधिक विकसित तथा पल्लवित करता। ऐसा ही हुआ। आर्य समाजो के साप्ताहिक सत्सगों तथा विशिष्ट पर्वो पर किए जाने वाले यज्ञ-दानादि करने कराने मे तो मैंने नैपुण्य प्राप्त किया ही, सस्कारो को सम्पन्न कराने मे भी मैंने रूचि ली। जब तक मैं जोधपुर में रहा वहा नामकरण, मुण्डन, उपनयन, विवाह यहा तक कि अत्येष्टि जैसे सस्कारों को सम्पन्न कराने के लिए मुझे आमन्त्रित किया जाता था। जोधपुर के माली वर्ग के विवाह प्राय: वैदिक रीति से ही सम्पन्न होते थे, अत: जोधपुर तथा निकटवर्ती सूरसागर, मडोर, नागौरी बेरा, महामन्दिर, पूंजला आदि बस्तियो मे विवाह कराने के लिए मेरी मांग बराबर रहती। अजमेर आने पर ऐसे अवसर कम मिले। क्योकि यहा २-३ अन्य कर्मकाण्ड कुशल विद्वान मेरे आने से पहले ही विद्यमान थे। तथापि यदा कदा नगर आर्य समाज अजमेर के तत्वाधान मे सम्पन्न होने वाले विवाहो मे मुझे पुरोहित का कार्य करना पडता। उस पूर्व पाली मे सस्कार कराने का जिम्मा मेरा ही था, यद्यपि यहा सस्कार कराने वाले आर्य परिवार नगण्य ही थे।

चण्डीगढ मे आने पर सस्कार कराने का कार्य पूर्णतया बन्द हो गया। इसके कुछ कारण भी हैं। प्रथम तो यहा के प्रत्येक समाज में वैतनिक पुरोहित हैं जिनकी आजिविका का प्रमुख साधन ही सस्कार कराना है। द्वितीय, विश्वविद्यालय के एक उच्च पद पर रह कर कार्य करने की मर्यादा भी है। इस पद पर रहते हुए सस्कार सम्पन्न कराने की भाग-दौड़ मे पडे रहना औचित्यपूर्ण नही कहा जा सकता। फिर यह तो अनुभव हो ही चुका था कि शौकिया सस्कार करना और बात है किन्तु जीविकोपार्जन तथा कुछ द्रव्य अर्जित करने के लिए यदि सस्कारों के पीछे भागने की विवशता भी हो तो भी इस कार्य मे अनेक व्यवहारिक कठिनाइयां तथा तकलीफे भी हैं। सम्पन्न यजमान वर्ग मे पुरोहितो के प्रति उपेक्षा या अवमानना का जो भाव दिखाई देता है वह स्वाभिमानी व्यक्ति के लिए असह्य हो जाता है। सम्पन्न यजमान अपने अन्तर्मन मे यह धारणा बना कर ही चलता है कि पुरोहित लोग मात्र दक्षिणा प्राप्त करने के लिए ही इतस्तत घूमते हैं और यह उनकी जीविका का एक मात्र साधन है। इस दृष्टि को रखने वाले यजमानो से पुरोहित लोग सम्मान तथा सद्भावना की आशा कैसे कर सकते हैं। मेरे कथन को सब पर लागू करना तो श्रद्धालु यजमानो के प्रति अन्याय ही होगा तथापि बात बहुत कुछ सत्य ही है। अपने चण्डीगढ निवास की दस वर्ष की सुदीर्घ अवधि मे मैंने कवल दो तीन बार ही सस्कार सम्पन्न कराये और ये भी यजमानो के विशेष आग्रह पर। प्रथम अवसर पर तो मैं विवाह सस्कार कराने वाले स्थानीय पुरोहित के साथ बैठ कर केवल उसको निर्देश ही देता रहा और व्यक्तिगत रूप मे कुछ दक्षिणा भी स्वीकार नही की। दूसरा प्रसग स्थानीय आर्य समाज सैक्टर १९ युवा पुरोहित श्री अनिल के नवजात पुत्र का नामकरण कराने का था। इसमे उक्त यजमान तथा उस समाज के गणमान्य वयोवृद्ध एक अधिकारी महानुभाव का प्रेम और आदर भरा अनुरोध ही कारण बना था।

मैंने अपने परिवार मे होने वाले विवाहो तथा निकट सम्बन्धियो के परिणय प्रसगो मे भी पौरोहित्य किया है। स्वपुत्री गार्गी का विवाह सम्पन्न कराने के लिए पण्डित धर्मवीर जी को अजमेर से आमन्त्रित किया था, किन्तु उसमे मैंने वरिष्ठ आचार्य की भूमिका निभाई थी।

(क्रमश)

इतना न सिर झुकाओ कि दस्तार गिर पड़े

— उत्तम चन्द्र शरर —

आज कल राजनीति का युग है। धर्मोपदेश पर, राजनैतिक पुट के बिना श्रोताओं को रुचिकर नही लगता है। आर्य समाजी स्वभाव से देश भक्त होता है, अत. वह वर्तमान राजनीति से अछूता नही रह सकता। परन्तु मैंने पाया है कि आर्य युवक, राजनीति के विभिन्न गुटो मे सम्मिलित होकर अपनी पहचान भी खो रहा है। इस राष्ट्र से कुछ निवेदन करने लगा हू। आर्य बनाम हिन्दु। प्राय देखा जा रहा है कि भाजपा मे सम्मिलित आर्य स्वय को हिन्दू कहने पर बल देता है और दूसरो को भी कहता है 'गर्व से कहो, हम हिन्दु है'' कुछ समय पूर्व बल्लभगढ के समीप, एक कवि सम्मेलन मे एक हिन्दुवादी कवि ने आर्य समाज के मच पर यह नारा लगवाया। सयोग से स्टेज मेरे हाथ मे था, मैंने कवि महोदय के काव्य पाठ के पश्चात् उनकी प्रशसा मे दो शब्द कहे, और फिर कहा कि मेरी कवि महोदय से प्रार्थना है कि वे मुझे 'हिन्दू, नाम के लिये आग्रह न करे, क्योकि मैं श्रीराम तथा श्रीकृष्ण का भक्त हू और वे आर्य थे ! कही ऐसा न हो कि हिन्दू कहलाने पर मुझे श्रीराम का वशज ही न माना जाए "इतना सुनना था कि कवि महोदय अपने स्थान से बोले कि मैं भी आर्य हू। राजनीति मे यदि हिन्दु नाम आपके गले उतरता ही है तो इतनी कृपा तो कीजिये कि अपना आर्य नाम भूलिये नही और हिन्दु कहलाने वालो को भी आर्य शब्द की महत्ता से परिचित कराते रहिये। मूर्ति पूजा ! पौराणिक अन्धविश्वास जो मूर्ति पूजा को जन्म दे पाया, अब नियासी रूप मे भाजपा के शिला पूजन तथा श्री राम की मूर्ति वन्दन के रूप मे उभरा है।

मैंने देखा है, अच्छे-२ आर्य बन्धु जिनकी आयु आर्य समाज मे प्रचार करते निकल गई शिला पूजन मे इसलिये सम्मिलित हुये कि हिन्दु सगठन की माग है। मेरा विचार है कि आर्यो को यह याद दिलाने की आवश्यकता नही है, कि ऋषि दयानन्द मूर्ति पूजा के घोर विरोधी थे, और लाखो की गद्दी को भी उन्होने ठोकर मार दी, परन्तु मूर्ति पूजा के पाखड के खडन को न छोडा। आर्य बन्धु किसी भी राजनैतिक पार्टी म जाते, परन्तु वहा पर भी किसी पाखड को स्वीकार न करे, तब तो उन का अस्तित्व रहेगा, आखिर क्या तमाशा है कि एक काग्रेसी आर्य राजघाट पर फूल चढा रहा है, और भाजपाई राम शिला पर।

यो तो हमे काग्रेस और भाजपा पे अधिकार भी है।
पर यह बतलाओ दयानन्द से कुछ प्यार भी है ?

नमस्ते तथा जय श्रीराम। नमस्ते वैदिक अभिवादन का शब्द है। इतिहास मे इस शब्द का आपसी अभिवादन मे स्थान-२ पर प्रयोग मिलता है परन्तु श्रीराम मन्दिर के निर्माण मे एक नारा जय श्रीराम का उभर आया, और आर्य बन्धु भी बहाव मैं बहने लगे। दिल्ली मे एक आर्य पुरोहित जी के घर मैंने दीवार पर "जय श्रीराम, का नारा देखा तो सोचने लगा जब पुरोहित जी की मानसिक दशा यह है तो समाज के सदस्यो की क्या होगी ? केवल पुरोहित जी की क्या बात, उ० प्र० विधानसभा के मुसलमान सदस्य ने शपथ ग्रहण के पश्चात् अपनी वफादारी के प्रदर्शन के लिये "जय श्रीराम" का नारा लगाया। आज पढा है कि श्री अटल जी ने उसे इस भावकता से रोका है। जय श्री राम कहना बुरा नही हम राम जी के भक्त है, यह और बात है कि हम इसे अभिवादन का वाक्य नही मानते। अभिवादन तो वैदिक शब्द 'नमस्ते' से ही होगा। इससे पूर्व नमस्ते के सम्मुख जय हिन्द तथा नमस्कार आदि शब्द लाये गये, परन्तु आर्यो की वैदिक धर्म म गहरी आस्था किसी-किसी विघटन का शिकार न हुई, अब भी आशा है कि आर्य बन्धु कुछ देर के बहाव मे अपने अस्तित्व को न खो सकेंगे।

एक और पाखड भी आर्यो म चलने लगा है कि ऋषि दयानन्द के जीवन वृत्तान्त को चमत्कारो मे युक्त जनता के सम्मुख लाया जाए। मुझे याद है कई वर्ष पूर्व रोहतक समाज मे ऋषि बोधोत्सव (सम्भवत·) प० राम चन्द्र जी देहलवी की अध्यक्षता म हो रह थ। आर्य समाज के प्रधान ला० सागर चन्द्र जी ने बडा श्रद्धा मे ऋषि के सम्बन्ध म बताया कि वे योग बल से उडते हुये मन सरोवर झील पर पहुचे थे। उनके भाषण के पश्चात् देहलवी जी ने कहा था कि प्रधान जी ऋषि के जीवन को चमत्कारो के जाल मे मत फसाओ। उसे दस बुद्धिमानो मे रहने दो, सौ मूर्खो मे न फेंको। आज देहलवी जी के वचनो को स्मरण करने की आवश्यकता है। आर्य बन्धुवर ध्यान मे रखे कि दयानन्द और उनका समाज एक बुद्धिवादी समाज है, चमत्कारो की गप्पें किसी के व्यक्तित्व को नही निखारती, ऋषि का ब्रह्मचर्य, वेद ज्ञान, ईशोपासना तथा देश प्रेम उसके व्यक्तित्व को निखारने मे पर्याप्त है।

कुछ बन्धु कह देते हैं, क्या करे देश प्रेम तथा भावी सगठन के लिये यह सब हम स्वीकार कर लेते है मेरा नम्र निवेदन है कि देश प्रेम तथा जाति सगठन के सिद्धान्त की बलि देकर स्वीकार न करे :—

झुक कर सलाम करने मे क्या हर्ज है मगर।
इतना न सिर झुकाओ कि दस्तार गिर पडे।

चरित्र निर्माण का सबसे बड़ा कार्यखाना

अतरौली अलीगढ १० जून आर्यवीर दल कार्यकर्ता शिविर के समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए प्रान्तीय सर सचालक माननीय डा० बलकृष्ण आर्य "विकल" (बिन्दकी) ने कहा आर्यवीर दल चरित्र निर्माण का सबसे बडा कार्यखाना है। जिसमे हर वर्ष साधनहीन होते हुए भी शिक्षक व कार्यकर्ता लोग हजारो पौराणिक बच्चो को महर्षि दयानन्द जी की गोद मे लाकर सौप देते है। श्री विकल ने कहा अज्ञानता मनुष्यता का सबसे बडा दुश्मन है जो अशिक्षितो से अधिक शिक्षित ऊचे पद मे बैठे लोगो मे बहुत है। सिगरेट के हर पैकिट मे लिखा है, सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, अनपढ गवार समझाने से समझ जाता है परन्तु शिक्षित लोग नही मानते, शराब विष से ज्यादा भयकर है परन्तु इसे डाक्टर, वकील अध्यापकगण अधिक प्रयोग करते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सासद श्री रावल जी से 'विकल' जी ने कहा आप इस क्षेत्र के जुम्मेदार कार्यकर्ता है। अपनी सरकार से कहे युवक राष्ट्र की सम्पत्ति है इसे चरित्रवान बनाने की योजनाये काम मे लाये।

इस अवसर पर आगरा मण्डल के सचालक श्री जयनारायण ने भी आर्य वीरो की प्रशसा की। कार्यक्रम का सचालन श्री रघुराज सिंह ने किया।

स्वाधीनता दिवस पर विशेष—

स्वाधीनता (स्वातन्त्र्यम्)

— पद्मश्री--डा० कपिलदेव द्विवेदी —

स्वतन्त्राप्ति रेषा सदा सौख्य-दात्री, मयाना प्रहर्त्री गुणानां प्रदात्री।
त्वमेवासि लोके सदा मानदात्री, सदा कीर्तिदात्री सदा मोददात्री ॥ स्व० ॥

१—देश की स्वतन्त्रता सदा सुख देने वाली है, यह सकट को दूर करती है और गुणो की वृद्धि करती है, इससे ही ससार में सम्मान होता है। यह यश और प्रसन्नता की देने वाली है।

नत्वत: पर मानद लोकमध्ये, नत्वत्त पर सौख्यद किंचिदस्ति।
त्वमेवासि लोकस्य चैतन्य-दात्री, सदा प्रेरणाभू सदा शक्ति स्रोत ॥ स्व० ॥

२—इस स्वतन्त्रता से बढ कर ससार मे और कोई वस्तु सम्मान देने वाली नही है और न इसके अतिरिक्त कोई सुख देने वाला है। यह स्वतन्त्रता ही देश मे चेतना भरती है, देश वासियो को प्रेरणा देती है और सदा शक्ति का स्रोत है।

विना त्वां जना शक्ति-कीर्त्यादि हीना,सुबुद्धिविहीन सदा मान हीना।
नरा पामरास्ते क्षुधा दैन्य-त्रस्ता, अविद्यान्ध-ग्रस्ता सदा शोक-ध्वस्ता ॥ स्व० ॥

३—स्वतन्त्रता के बिना मनुष्य शक्ति और यश आदि से रहित, बुद्धि हीन और सम्मानहीन होते हैं। पराधीन मनुष्य मूर्ख, भूख, दीनता आदि से त्रस्त, अविद्या के अन्धकार से ग्रस्त और सदा शोकमग्न रहते हैं।

विना त्वा नृणा जीवन मोघमेव, बिना त्वा गति. सर्वदा दु खदेव।
विना त्वा शिरस्थ: सदा मृत्युरेव विना त्वा विकासो न हर्षाप्तिरेव ॥ स्व० ॥

४—स्वाधीनता के बिना मनुष्य जीवन व्यर्थ है, इसके बिना मनुष्य की दु खद गति होती है। इसके अभाव मे मृत्यु सदा सिर पर सवार रहती है। इसके बिना न विकास होता है और न जनता मे हर्ष होता है।

न यत्रास्ति ते दीधिति सौख्यमूला, न यत्रास्ति ते श्री सदा कीर्तिशीला।
न राष्ट्र न देश: प्रदेशो विशेषा विना त्वां श्रित कीर्तिनिष्ठा श्रिय वा ॥स्व०॥

५—जहा स्वतन्त्रता की सुखद किरणे नहीं होती है और कीर्ति देने वाली इसकी श्री नही होती है वह राष्ट्र, वह देश और वह प्रदेश कभी अभीष्ट कीर्ति प्राप्त नही कर सकता है।

त्वमेवासि सौख्यस्य मूल समन्तात्, त्वमेवासि कीर्त्यादिमूल पुरस्तात्।
त्वमेवासि मानस्य शक्तेश्च हेतु, त्वमेवासि शस्त्र त्वमेवासि हेति. ॥ स्व० ॥

६—स्वतन्त्रता ही सभी सुखो का मूल है। यही देश की कीर्ति का आधार है। यही देश के सम्मान और शक्ति का साधन है। वही देश के लिए महान शस्त्र अस्त्र है।

त्वदीय पदाब्जे मुदा देशभक्ता, बलि दत्तवन्तो मुद प्राप्तवन्त:।
त्वदर्चापरा ये नरा मातृ-भक्ता, सदा स्वास्तु तेषा यशो राजतेऽत्र ॥ स्व० ॥

७—स्वतन्त्रता के लिए देशभक्तो ने प्रसन्नता के साथ अपने जीवन की आहुति दी और प्रसन्नचित्त हुए। मातृभूमि की पूजा पर जो न्योछावर हुए हैं उनका यश ससार मे सदा अमर रहेगा।

त्वमेवासि शक्ति, त्वमेवानुरक्ति:, त्वमेवासि सिद्धि, त्वमेवासि ऋद्धि।
त्वमेवासि मन्त्र, त्वमेवासि तन्त्र, त्वमेवासि शान्ति, त्वमेवासि क्रान्ति ॥स्व०॥

८—देश की स्वतन्त्रता ही शक्ति है, यही प्रेम भावना है, यह ऋद्धि और सिद्धि है। यही मन्त्र और तन्त्र है, यही शान्ति और क्रान्ति है।

त्वमेवासि दुर्गा, त्वमेवासि लभ्या, अधृष्या त्वमेवासि दुर्धर्षरूपा।
सदा स्नेह स्रोत, सदा शक्तिस्रोत:, त्वदीया कृपा याचते सर्व लोक. ॥ स्व० ॥

९—यह स्वाधीनता अजय है, यही प्राप्य है। यह अधर्षणीय और उग्ररूप है। यह प्रेम और शक्ति का स्रोत है। सारा ससार इस स्वाधीनता की दृष्टि चाहता है।

सदा भारते ते कृपा सतता स्यात्, त्वदर्चापरा भारतीय भवेयु।
विहाय स्वकं स्वार्थजात जघन्य, मुदा जीवन तेऽर्पयेयु पदाब्जे ॥ स्व० ॥

१०—यह स्वाधीनता भारत भूमि मे सदा विद्यमान रहे। सभी भारतीय इस स्वाधीनता की पूजा करे। वे तुच्छ स्वार्थ भाव को छोड कर प्रसन्नतापूर्वक स्वतन्त्रता की बलि वेदि पर अपना जीवन अर्पण कर दे।

निदेशक विश्वभारती अनुसधान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी)

लेखकों से अनुरोध

आर्य सन्देश "साप्ताहिक" के पाठको व लेखको से प्रार्थना है कि अपना लेख व समाचार सुन्दर साफ अक्षरो मे पृष्ठ के एक ओर ही लिख कर भेजें। ताकि हम आपके लेख व समाचार आदि को प्राथमिकता दे सके अन्यथा पृष्ठ के दोनो ओर लिखे तथा अस्पष्ट लिखे लेखादि प्रकाशित करना असम्भव है। टकण-यन्त्र (टाइपराईटर) द्वारा प्रेषित लेख व समाचार अवश्यमेव प्रकाशित किए जायेंगे।

—सम्पादक

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय पूठ

आर्य गुरुकुल महाविद्यालय पूठ की प्रबन्ध कर्मी सभा की बैठक रविवार २८-७-९१ को साय ५०० बजे आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली मे प्रधान श्री सत्यानन्द आर्य की अध्यक्षता मे हुई। इस बैठक मे मन्त्री श्री डा० शिवकुमार शास्त्री, आचार्य श्री धर्मपाल जी, प्रबन्धक श्री प० हरिदेव जी, उपप्रधान प० यशपाल सुधाशु दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, आर्य प्रादेशिक सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल, आर्य समाज साकेत से श्री लखीराम कटारिया, मेरठ आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री शौदान सिह जी सम्मलित हुए। इस बैठक में गुरुकुल का स्थापना दिवस २९ सितम्बर को प्रात. ८०० बजे समारोह पूर्वक मनाने का निर्णय लिया गया। गुरुकुल को सुदृढ आर्थिक आधार प्रदान करने के लिए सभी ने सामूहिक रूप से प्रयास करने का आश्वासन दिया।

आर्य संदेश के ग्राहकों की सेवा में

प्रिय पाठक वृन्द! निवेदन है कि आप अपना वार्षिक शुल्क शीघ्रातिशीघ्र भेजे। आपको व्यक्तिगत पत्र द्वारा भी सूचित किया गया है। अत कृपया गत वर्षो की बकाया राशि २५ रुपये वार्षिक दर से ग्राहक सख्या सहित बैंक ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा भेजने का कष्ट करे। आजीवन शुल्क मात्र २५१ रुपये है। नये ग्राहक अपने पत्र मे (नया ग्राहक) अवश्य लिखे।

"आर्य सन्देश" साप्ताहिक पत्रिका आपकी सेवा मे निरन्तर १४ वर्षो से आपको आर्य समाज की गतिविधियो की जानकारी देती है। अत तन-मन धन से सहयोग करना आपका नैतिक कर्त्तव्य बनता है। आशा है शीघ्र ही धनादेश भेज कर हमारा उत्साह वर्द्धन करेगे।

—व्यवस्थापक

आर्य सदेश (साप्ताहिक)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली १

शोक प्रस्ताव

अत्यन्त दु ख के साथ सूचित किया जाता है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री चुन्नीलाल जी आर्य के ज्येष्ठ पुत्र श्री राजेन्द्र आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती मायादेवी जी का गत २५-७-९१ को अचानक विद्युत दुर्घटना मे मे देहान्त हो गया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा शोक सतप्त परिवार को दु ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—डा० धर्मपाल

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय महोदय,

सादर नमस्ते ! मैं आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली व श्री सूर्यदेव जी व डॉ० धर्मपाल जी का आभारी हूं कि आपने मेरी दो पुस्तकें—'वेद ईश्वरीय ज्ञान' एवं Vedas Introduced प्रकाशित की है। आप इनकी समीक्षा भी प्रकाशित कराएं। बाद में इनके कुछ अंश नियमित रूप से प्रकाशित करते रहें जिससे ये विचार अधिक लोगों तक पहुंच सकें। मेरी Vedas Introduced हिन्दी, गुजराती व उड़िया में भी छप चुकी है। —डा० कृष्ण बल्लभ पालीवाल

१२६-बी-डी डी ए. फ्लैट्स राजोरी गार्डन, नई दिल्ली-२७

आदरणीय भाई, सादर नमस्ते !

आशा है प्रभु कृपा से स्वस्थ व सानन्द होंगे।

आपके द्वारा प्रेषित १९८९-९० का वार्षिक विवरण प्राप्त हुआ—मैंने उसका अध्ययन भी किया है। आपके सभी कार्य अत्यधिक सराहनीय हैं। वास्तव में ही आपने महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाने में बहुत से सार्थक कार्य किए हैं। प्रभु से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु हों तथा इसी प्रकार के कार्यों में संलग्न रहकर अपने जीवन को सार्थक करें। सम्पादक—आर्य वन्दना

१६०-एल-१ सुन्दर नगर-४ हिमाचल प्रदेश

सम्पादक महोदय,

आज भारत में चारों ओर अशान्ति भ्रष्टाचार और आतंकवाद का बोल-बाला है। कश्मीर-पंजाब टूटने के कगार पर है। झारखण्ड बोडो लैंड जैसे कितने ही अलगाववादी आन्दोलन देश के कोने-कोने में सिर उठा रहे हैं। राष्ट्रभक्ति कम होती जा रही है और देश को तोड़ने की विदेशी योजनाएं बल पकड़ रही हैं। ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि भारत भक्ति का प्रचार हो भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा भारत के महापुरुषों के प्रति आस्था भारत के प्राचीन वैभव के प्रति आत्मीयता और भारत की भाषा एवं साहित्य से लगाव पैदा किया जाये। भारत के उन ऋषियों एवं आचार्यों के प्रति सम्मान बढ़े जिनके द्वारा देश देशान्तरों तक भारतीय संस्कृति का प्रसार हुआ और भारत विश्वगुरू कहलाया।

विश्व हिन्दू परिषद इस दिशा में ठोस काम करती दीख रही है। क्योंकि भगवान राम भारतीय संस्कृति के आधार हैं। राम भक्ति बढ़ने से स्वतः ही भारत भक्ति भी हृदय में समा जाती है। भारत से बाहर भी इण्डोनेशिया, बाली द्वीप, थाईलैंड, कम्बोडिया जहां-जहां भी रामायण का प्रचार है वहां के लोगों में भारत के प्रति श्रद्धा व प्रेम है। यही दशा मारीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम, फिजी एवं गयाना जैसे देशों में पाई जाती है। इन देशों में १५० वर्ष पहले जो भारतीय जाकर बस गये थे उनमें जो प्रवासी भारतीय रामभक्त हैं। वे भारत देश के प्रति निष्ठा व आत्मीयता रखते हैं किन्तु जिनके हृदय से राम भक्ति निकल गयी वे भारत के प्रति श्रद्धा का भाव नहीं रखते बल्कि वे तो पाकिस्तान लीबिया अथवा अन्य देशों की ओर देखते हैं।

भारत के भीतर भी विदेशी पादरियों ने जिन नागा, मिजो वर्ग के लोगों में भारतीय संस्कृति के प्रति आदर श्रद्धा निकाल दिया वे चाहे फिजो के अनुयायी हों या लालडेंगा के सभी भारत के प्रति विद्रोह करके इंग्लैंड, अमेरिका की ओर देखते हैं कि उन्हीं क्षेत्रों के जिन नागा, चकमा, खासी आदि जाति के लोगों में विदेशी पादरी प्रचार करने में सफल नहीं हुए वे अभी तक भारतीय एकता अखण्डता की ही कामना करते हैं। यही स्थिति बिहार, मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों की है जहां रामभक्त जनता भारत की उन्नति चाहती है किन्तु भारतीय संस्कृति से विमुख हो चुके लोग प्रायः विदेशी षड्यन्त्रों के अलगाववादी और आतंकवादी आन्दोलन की चपेट में आ रहे हैं।

विश्व हिन्दू परिषद ने आदिवासी क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति और रामभक्ति का प्रचार से राष्ट्रवाद की बड़ी सेवा की है नहीं तो अब तक इन क्षेत्रों में भी पंजाब और कश्मीर वाली स्थिति बनी होती। विश्व हिन्दू परिषद को चाहिए कि वे अपने प्रचार में हिंसा न आने दें। शान्ति और प्रेम से भारत भर के करोड़ों लोगों तक अपना भारत भक्ति का संदेश फैलाते रहें ताकि आज के क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों के लिये देश के हितों को भी बेच देने की होड़ अब खत्म हो जाये और विशुद्ध राष्ट्रवाद का पावन प्रवाह इस पवित्र भारत वर्ष की धरा पर प्रवाहित होकर जन-जन के हृदय को आप्लावित कर दे। —डा० कैलाश चन्द्र

संकट मोचन आश्रम, सेक्टर ६, रामकृष्ण पुरम, नई दिल्ली-२२

गर्मी व बरसात में होने वाले चर्मरोग

पिछले कुछ वर्षों में चर्म रोगों में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। गर्मी व बरसात के दिनों में चर्मरोग कुछ अधिक परेशान करते हैं। इन दिनों उच्च तापमान व वायुमण्डल में अत्यधिक नमी त्वचा पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं तथा कुछ चर्म रोगों की बहुतायत का कारण बनते हैं। जैसे—घमौरी, फोड़े-फुन्सी, दाद, सीप इत्यादि।

बरसात व गर्मी के दिनों में होने वाली आम बीमारियों के लक्षण कारण व उपचार इस प्रकार हैं। घमौरियां—घमौरियां लगभग ४० प्रतिशत लोगों को होने वाली बीमारी है यह त्वचा में पसीने की ग्रन्थियों के अवरुद्ध होने से होती है।

घमौरियों के लिए कैलामाइन लोशन चन्दन का लेप तथा गर्मी के टेलकम पाउडर मददगार सिद्ध होते हैं।

इनसे बचने के लिए अत्यधिक गर्मी व पसीने से बचना चाहिए व ठण्डे पदार्थों का सेवन करें। ढीले व सूती वस्त्र पहनने चाहिए। फोड़े-फुन्सी—यह ज्यादातर स्टेफाइलो कोक्स नाम के जीवाणुओं से होते हैं। यह बालों की जड़ों में पहुंच कर मवाद भरे दाने बना देते हैं। दानों में बहुत दर्द होता है व कभी-कभी बुखार भी आ जाता है।

स्केबीज व मधुमेह के रोगियों को यह बार बार हो जाते हैं।

फोड़े-फुन्सी होने पर एन्टीबायोटिक्रीम केप्सूल व इंजेक्शन डाक्टर की सलाह से लेना चाहिए। सफाई का खास ध्यान रखें व मेडिकेटिड साबुन का नियमित इस्तेमाल करें जैसे—डिटोल, सिन्थोल, कार्बोलिक साबुन।

दाद:—यह कई तरह की फंगस के कारण होते हैं। यह रोग चमड़ी, बाल व नाखून में कहीं भी हो सकता है। यह जंघा व पैरों की उंगलियों के बीच अधिक देखने को मिलती है। इस बीमारी में गोल-गोल लाल छल्लेदार चकत्ते हो जाते हैं। जो बाहर की ओर फैलते हैं। जिनमें बहुत खुजली होती है। इनमें एक से दूसरे को होने का खतरा रहता है।

सीप:—जिन्हें अत्यधिक पसीना आता है उनमें यह बीमारी अधिक पायी जाती है इसमें छाती, कन्धे गर्दन, बाजू व पीठ पर सफेद, सलेटी रंग के भूरे छोटे-छोटे धब्बे पड़ जाते हैं। जिनसे हल्की भूस झड़ती है। इसमें खुजली नहीं होती है बरसात आने पर यह बढ़ जाते हैं व सर्दी में थोड़ा दब जाते हैं।

फोटोग्राफिक सलूशन, सैलशन, शैम्पू व अन्य दवाई युक्त क्रीम व पाउडर लाभदायक होते हैं। खाने की दवाई कीटोकोना जोल डाक्टर की सलाह से लेनी चाहिए।

स्केबीज—यह बीमारी एक बहुत ही छोटे कीड़े की वजह से होती है तथा अत्यधिक छूत की बीमारी है। बच्चों में यह ज्यादा होती है इसका कीड़ा उंगलियों के बीच की त्वचा व पेट के निचले हिस्से में छोटे-छोटे दाने बना देता है। जिनमें रात को ज्यादा खुजली होती है। इसमें कभी-कभी मवाद भी पड़ जाता है व खून भी निकलने लगता है।

बेनजाइल बैंजो ऐट, गैमेक्सीन सल्फर मैलाथियान व क्रोटोमेटान युक्त क्रीम व लोशन प्रभावकारी है। परिवार में एक को यह रोग होने पर परिवार को एक साथ उपचार कराना चाहिए। एग्जीमा व एलर्जी :—गर्मी व ज्यादा नमी की वजह से एग्जीमा व एलर्जी ज्यादा तेजी से फैलते हैं व जगह-जगह से पानी व मवाद निकलने लगता है। बढ़ने से पहले ही उचित उपचार करवा लेना चाहिए।

—डा० सुनील गुप्ता, एम० डी०

चौक मालीवाड़ा, गाजियाबाद

अवैध गोमांस व्यापार के विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव

भैंसो के मांस की आड मे गोमास सप्लाई करने वाली लिंक रोड औद्योगिक क्षेत्र [illegible] हन ऐक्सपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड फैक्टरी में चल रहे अवैध धंधे का प्रांतीय आर्य महिला सभा कड़े शब्दों में निन्दा करती है।

काफी दिनो से इस फैक्टरी मे निर्यात के नाम पर भैस के मास के स्थान पर गोमास विदेशो को भेजा जाता था। कानून के फदे से बचने के लिए फैक्टरी की ओर से भारी रकम प्रतिमास पुलिस को नजराने के रूप मे दी जाती रही है।

उत्तर प्रदेश की सरकार बदलने के साथ ही साथ पुराने प्रशासनिक अधिकारियो का भी तबादला हो गया और नये अधिकारियो ने गुप्त सूचना के आधार पर छापा मार कर गोमास से भरे ट्रक रगे हाथो पकड़ लिए।

प्रांतीय आर्य महिला सभा जहाँ उत्तर प्रदेश सरकार और नये अधिकारियों एव पुलिस कर्मियो को साधुवाद देती है वही उत्तर प्रदेश सरकार से अनुरोध करती है कि फैक्टरी की मालकिन तथा सम्बद्ध व्यक्तियो को अविलम्ब गिरफ्तार करके कड़ी से कडी सजा दिलवाये तथा अवैध बूचडखाने परिहत प्राइवेट लिमिटेड का लाइसैंस तुरन्त रद्द कर दिया जाए।

— निवेदक —

कृष्णा चड्ढा
प्रान्तीय आर्य महिला सभा
ए/१८४ टैगार गार्डन नई दिल्ली
फोन : ५३८३१९

शकुन्तला आर्य
प्रांतीय आर्य महिला सभा
IIए ४८ लाजपतनगर नई दिल्ली
फोन : ६८३१९९६

वैवाहिक विज्ञापन

बी एस सी. एव बी एम एस. पास कन्या रग गोरा उम्र २६ व [illegible] लम्बाई ५ फुट हेतु शिक्षित एम. बी बी. एस डा० वर चाहिए। जातीय व प्रान्तीय बन्धन नही है। कृपया वर के अभिभावक शीघ्र निम्न पते पर पत्र व्यवहार करे।

—आचार्य विश्वश्रवा व्यास,
वेद मन्दिर, १०३ बाजार मोतीलाल बरेली









आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O on 1-2-8-1991 Licence to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० न० डी० (सी०) ७५९ पूर्व भुगतान बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३९

साप्ताहिक "आर्यसन्देश" ४ अगस्त, १९९१

वैदिक मिशनरी आर्ष गुरुकुल, वेद मन्दिर, मथुरा में
प्रवेश-दीक्षा आरम्भ

महर्षि दयानन्द की दीक्षा भूमि एव दण्डी गुरु विरजानन्द की कर्मभूमि मथुरा मे सचालित उक्त गुरुकुल मे अब छठी कक्षा से आचार्य श्रेणी तक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक के पाठ्यक्रम के अनुसार अष्टाध्यायी महाभाष्य पद्धति से व्याकरण तथा अन्य सभी विषयो का अध्ययन भी नि:शुल्क कराया जायेगा।

छठी कक्षा से दसवीं कक्षा तक भोजन-व्यय मात्र २५०) रु० मासिक लिया जायेगा। दसवी कक्षा के पश्चात् जो ब्रह्मचारी वैदिक मिशनरी व्रत दीक्षा लेंगे अर्थात् अपना सम्पूर्ण जीवन वेद प्रचार और आर्य समाज एव राष्ट्र कार्य के लिये समर्पित करने का सकल्प करेंगे, उनके भोजन जल तथा सब प्रकार की व्यवस्था का दायित्व सस्था लेगी। इनके अतिरिक्त छात्रो से दसवी कक्षा के बाद ३५०) रुपये मासिक भोजन व्यय लिया जायेगा।

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

ग्राम घेवरा (दिल्ली-८१) में दिनांक १४-७-९१ को एक नवीन आर्य समाज की स्थापना की गई है। जिसमें निम्न अधिकारी सर्वसम्मति से मनोनीत किए गए हैं —

(१) प्रधान—श्री करतार सिंह।

(२) मन्त्री—श्री जयपाल सिंह शास्त्री जी।

(३) कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार जी।

प्रवेश दीक्षा गुरु पूर्णिमा पर्व (गुरु विरजानन्द जयन्ती समारोह) से आरम्भ होगी। इस वर्ष केवल १० मेधावी छात्र लेने हैं। ५ का चयन हो चुका है, केवल ५ ही और लेने हैं। शीघ्रता करें।

—प्रेम भिक्षु
वेद मन्दिर, मथुरा

सेवा में—

श्री सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी०(सी० ७५९)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष १४, अंक ५० | रविवार, २४ नवम्बर, १९९१ | विक्रमी सम्वत् २०४८ | दयानन्दाब्द : १६६ | सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२
मूल्य एक प्रति ५० पैसे | वार्षिक—२५ रुपये | आजीवन २५० रुपये | विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर | दूरभाष : ३१०१५०

उत्तरकाशी-गढ़वाल तथा अन्य पर्वतीय क्षेत्रों में भूकम्प के कारण भयावह स्थिति : आर्यसमाज द्वारा उल्लेनीय सेवा

—डा० धर्मपाल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के निर्देश पर आर्य वीर दल के प्रधान सचालक आचार्य डा० देवव्रत जी ने योग निकेतन उत्तरकाशी मे अपना राहत केन्द्र पहले दिन से ही प्रारम्भ कर दिया था। सार्वदेशिक सभा के वरिष्ठ उपप्रधान प० वन्देमातरम् रामचन्द्रराव ने स्वय जाकर सारी स्थिति का विश्लेषण किया और पाया कि आर्य समाज के द्वारा किया गया राहत कार्य सन्तोजनक है। आर्य वीर दल दिल्ली के महामन्त्री श्री ब्र० राजसिह आर्य और उनके सहयोगी साथी निरन्तर इस कार्य मे सलग्न हैं। दिल्ली से अब तक १६ लाख से भी अधिक का सामान ट्रको के द्वारा भेजा जा चुका है। अनेक स्थान ऐसे हैं, जहा पर सरकारी अधिकारी तो पहुच भी नही पाते, वहा पर हमारे आर्य-वीर पहुच रहे है। भूलेगा, बोगा, सुकराला, नेभी, कपोली, नोटी, आदि ऐसे ग्राम हैं, जहा पर राहत सामग्री निरन्तर बाटी जा रही है। आर्य समाज को स्थानीय जिलाधिकारियों ने ३२ गांव आवटित किए है। वहा पर आर्य समाज द्वारा किया गया राहत कार्य उल्लेखनीय है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियो ने अनुभव किया कि उत्तर-काशी के ऊचाई वाले स्थानो पर शीघ्र ही बर्फ गिरनी प्रारम्भ हो जायेगी, अत. अब टीन की चद्दरे भेजने का कार्य शुरू कर दिया गया है। इसमे पहल आर्य समाज नागलराया के भाइयो ने की है। अब अन्य दानदाताओ से भी यही प्रार्थना की जा रही है कि वे टीन की चद्दरे दे। जो भी धन हमारे पास आया है उससे भी चद्दरे खरीद कर भेजी जा रही हैं। हमारे पास निरन्तर धन और वस्त्र, अन्नादि दान मे आ रहा है। पहली किश्त निम्न प्रकार है—

भूकम्प पीड़ित सहायता-सूची

श्री भरत कुमार हरि	५००)
डा० ए० के० सेठ	५००)
आर्य समाज झडेवाला एक्स०	६०४)
आर्य समाज राजनगर पालम	३२५)
आर्य समाज प्रताप नगर	५,०००)
श्री जगदीश आर्य	५००)
श्री जितेन्द्र कोहली	१०१)
डा० नरेन्द्र कुमार	५१)
श्री अशोक कुमार सलूजा	१६४)
श्री गगा सिह	२१)
श्री ईश्वर दत्त	१००)
आर्य समाज उत्तम नगर	१ ०००)
आर्य समाज तिलक नगर	११००)
आर्य समाज सुभद्रा कालोनी	२०१)
श्री देवराज	१५)
गुप्त दान	५०)
लैबटैक इन्सट्रूमैंट्स	५००)
श्री भजनलाल बन्सीलाल	५०)
श्री पुरुषोत्तम महरोत्रा	२००)
डा० एन० एम० कुमार	२५०)
श्री अर्जुन देव महता	५१)
श्री भूदेव शर्मा	५१)
श्रीमती ईश्वरी देवी	३००)
आर्य समाज नांगलराया	१४,२८२)५०
आर्य समाज शालीमार बाग	३,६००)
आर्य समाज दीवान हाल	१३,०००)
आर्य समाज आर० के० पुरम सैक्टर ३	२०५)
आर्य समाज छतरपुर	५००)
आर्य समाज छतरपुर	१,८३०)
आर्य समाज विनय नगर	७५०)

(शेष पृष्ठ ३ पर)

दयानन्द कीर्त्ति स्तम्भ निर्माण योजना

स्व० प० प्रकाशवीर शास्त्री ने अपने निधन मे कुछ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द शिला निर्माण समिति का गठन कर 'दयानन्द कीर्ति स्तम्भ', दयानन्द विजय स्तम नामक शिलालेख निर्मित कराये जाने की एक वृद्ध योजना बनाई थी और स्वय बैराटपादन डिकुली, नैनीताल मे एक शिला का निर्माण कर उसका उद्घाटन भी किया था उनके निधन से यह कार्य प्रभावित हुआ, किन्तु अब अखिल भारतीय स्तर पर [illegible] ।

यह समिति हरिद्वार, ऋषिकेश, द्रोणसागर, काशीपुर, बद्रीनाथ, गढ-मुक्तेश्वर, बरेली, मसूदा, उदयपुर, प्रयाग कानपुर, अजमेर, शाहजहापुर, जालधर आदि स्थानो पर शिलालेखो का निर्माण कराएगी। शिलालेख का डिजाइन निश्चित है। यह आठ फुट चौडे चबूतरे पर अठारह फुट ऊची बनेगी। कीर्त्ति स्तम्भ पर महर्षि दयानन्द एव आर्य समाज से सम्बन्धित विवरण के साथ-साथ स्वामी जी के उस स्थान से जुडे होने सम्बन्धी तथ्यो को भी अकित कराया जायेगा। जो व्यक्ति या सस्था १००१ रुपया या अधिक देगे, उनके नाम एक स्थान के शिलालेख पर अकित कराये जाएगे। समस्त आर्य जनता से अनुरोध है कि इस ऐतिहासिक कार्य मे सहयोग देकर वैदिक धर्म के प्रसार एव प्रचार मे अपना दायित्वपूर्ण करे। [इस वर्ष नैनीताल मे शिलालेख का निर्माण किया गया तथा हरिद्वार में सारी योजना शीघ्र क्रियान्वित की जाएगी।]

डा० धर्मपाल	सूर्यदेव	इन्द्र वर्मा चौहान
अध्यक्ष	कार्य योजना मन्त्री	महामन्त्री

महर्षि दयानन्द शिला निर्माण समिति, भारत।
कार्यालय—रामनगर, नैनीताल, उत्तर प्रदेश।

परामर्श—डा० धर्मपाल प्रो० सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

अक्षय सत्यनारायण व्रत कथा-१०

१७ नवम्बर ९१ से आगे : **— पं० देवनारायण भारद्वाज —**

अनुव्रत. पितु: पुत्रो मात्रा भवतु समना: ।
जाया पत्ये मधुमती वाच वदतु शन्तिवाम् ।। अथर्व ३।३०।

पुत्र पिता का आज्ञाकारी हो, उसके व्रतो के अनुकूल चलने वाला हो और माता के साथ प्रीति युक्त मन वाला होकर रहे। पत्नी अपने पति के लिए सदा मधुर व शान्ति युक्त वाणी बोले ।

मा भ्राता भ्रातर द्विक्षन्मा स्वसार पुत स्वसा ।
सम्यञ्च: सव्रता भूत्वा वाच वदत भद्रया ।। अथर्व० ३।३०।३

हे गृहस्थो तुम्हारे में (भ्रात) भाई (भ्रातरम्) भाई के साथ (मा द्विक्षन्) द्वेष कभी न करे, (उत) और (स्वसा) बहिन (स्वसारम्) बहिन से द्वेष कभी न करे तथा बहिन-भाई भी परस्पर द्वेष मत करें। (सम्यञ्च:) सम्यक प्रेम आदि गुणो से युक्त (स व्रता) समान गुण कर्म स्वभाव वाले (भूत्वा) होकर (भद्रया) मगल कारक रीति से एक दूसरे के साथ (वाचम्) सुख दायक वाणी को (वदत) बोला करो।

परमात्मा की इन भावनाओ को मान कर पहले हम अपने घर को, समाज को, सौमनस्य पूर्ण बनाये, और परस्पर सुखी रहना सीखें। आदर पूर्वक पिता की गोद के अधिकारी बन कर ही हम परम पिता की गोद के अधिकारी बन सकते हैं। प्रभु मिलन का सार रूप मे यही प्रसाद है कि हम लोग दैनिक पच महा यज्ञो का पचामृत अपने घर परिवार-समाज मे बाटते रहे। नित्य का अभ्यास बनाये कि प्रात एव साय सुविधानुसार समय निकाल कर प्रभु चिन्तन-मनन स्मरण करे और प्रात. सोकर उठने के बाद और रात्री सोने के पूर्व परिवार मे अपने बड़ो का अभिवादन—नमस्ते—चरण स्पर्श करे इससे परिवार का पर्यावरण प्रेम पूर्ण बनेगा और बडो के आशीर्वाद से हमारा जीवन सार्थक हो जायेगा। कथा तो सभी सुन लेगे, किन्तु यह प्रसाद किसे मिलेगा—इसे एक दृष्टान्त से समझाये। एक मूर्तिकार बाजार मे एक सामान रंग-रूप- आकार की दो मूर्तिया बेचने को लाया। एक मूर्ति का मूल्य एक लाख रुपया और दूसरी मूर्ति का मूल्य मात्र एक रुपया था। शर्त यह भी थी कि जो व्यक्ति एक रुपये वाली मूर्ति लेगा—उसे एक लाख रुपये वाली मूर्ति भी लेनी पडेगी। जो व्यक्ति एक लाख रुपये वाली मूर्ति क्रय करेगा उसके लिए एक रुपये वाली मूर्ति लेना अनिवार्य नही है। सम्पूर्ण दिवस बीत गया किसी ने मूर्ति क्रय नहीं की, तब वह सायकाल राजा के पास पहुचा और अपनी मूर्तियो के न बिकने की बात बताई। राजा ने उसकी मूर्तिया खरीदने का आश्वासन तो दे दिया, किन्तु यह भी पूछा कि जब यह दोनो मूर्तिया एक सी है तो इनके मूल्य मे इतना अन्तर क्यो है ? मूर्तिकार ने एक सीक उठाई और एक मूर्ति के एक कान मे डाल कर दूसरे कान से बाहर निकाल दी। उसने वही सीक दूसरी मूर्ति के कान मे डाली तो वह कान से बाहर नहीं निकली, अपितु गले के नीचे उतर गई। यही अन्तर आज के यजमान व कथा श्रोताओ मे है। तो मूल्यवान वही होगे जो इस कथा प्रसाद को गले के नीचे उतारेगे, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो ही जाना है। सत्यनारायण के व्रत पालन से सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोडने मे हम उद्यत हो जाये। सब से प्रीति पूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य बरतने लग जाये। अविद्या का नाश कर विद्या की वृद्धि करने लग जाये। तो स्वय सुखी होकर ससार को हम सुखी बनाने मे सफल हो जायेगे। सत्यनारायण के व्रत और इसके प्रसाद की जिसने उपेक्षा की, उसका पतन न हुआ। ऐसे कुछ उदाहरण पुराणो की कथाओ मे बताये जाते हैं। काशी नगरी मे एक निर्धन ब्राह्मण भिक्षा के लिए घूमा करता था, एक वृद्ध ब्राह्मण के रूप मे भगवान ने उसे उपदेश दिया, कि तुम सत्यनारायण का व्रत रक्खो तो कल्याण होगा। उसने व्रत रक्खा और बन्धु बान्धवो को बुला कर कथा सुनी प्रसाद बाटा। वह व्रत धारण से सम्पन्न हो गया। इन्ही ब्राह्मण के व्रत एव यज्ञ को देख कर एक लकड़हारे ने भी सत्यनारायण के व्रत यज्ञ का निश्चय कर लिया तो उसकी निर्धनता भी जाती रही। इससे यह प्रकट है कि कोई ब्राह्मण ही नही शुद्र भी इस सत्यनारायण के यज्ञ को कर सकता है। वेद का पठन-पाठन श्रवण कर सकता है। समान रूप से क्षत्रिय राजा जन भी इस व्रत का पालन करते थे। उल्कामुख नाम के राजा को भद्र शीला नदी के किनारे सपत्नीक सत्यनारायण के यज्ञ को करते देख कर एक साधु नाम के वैश्य ने इसके विषय में जानकारी की। राजा ने इस व्रत की महिमा उस वैश्य को बता दी वैश्य ने भी इस व्रत को करने का वचन ले लिया, किन्तु उसने इसके साथ एक कामना भी जोड़ दी। उसके कोई सन्तान नहीं थी। उसने कहा कि जब सन्तान होगी, तभी मैं इस व्रत-यज्ञ कथा को करूगा। देव योग से उसकी पत्नी लीलावती ने एक सुन्दर कन्या को जन्म दिया। वैश्य एव सभी उसके साथी सम्बन्धी अति हर्षित हुए। उसकी पत्नी ने पूर्व में निश्चय किए सत्यनारायण के यज्ञ व्रत का ध्यान दिलाया, तो उसने यह कह कर टाल दिया कि पुत्री के विवाह के समय यह यज्ञ कराऊगा। पुत्री कलावती बडी हुई। निश्चित समय पर उसका विवाह भी हो गया और वैश्य को एक अच्छा जामाता मिल गया। वह जामाता सहित व्यापार हेतु राजा चन्द्रकेतु के सागर के पास बसे रत्नसार नगर में जाकर व्यापार करने लगा।

सत्यनारायण भगवान ने देखा कि इसने मेरे व्रत का सकल्प लिया था, उसे बिल्कुल ठुकरा कर सासारिक सुख एव व्यापार वृद्धि में यह वैश्य तत्पर हो गया है। इसे कुछ शिक्षा देनी चाहिए। यह वैश्य जहा ठहरे थे और अपनी सम्पत्ति रखते थे, वही पर चोरो ने राजा के यहा से चोरी करके कुछ मूल्यवान सामान रक्खा था। उन्हे ढूढने सिपाही वहीं पर आ गए। डर के कारण चोर तो भाग गये। ये दोनो ससुर-जामाता वैश्य माल सहित पकड़ लिए गए, और जेल में बन्द कर लिए गये। इन्होने बहुत ही समझाया कि हमने चोरी नही की है, किन्तु किसी ने भी नही माना और चोरी के माल के साथ इनकी सम्पत्ति भी राजा के द्वारा ले ली गई। उधर वे माता पुत्री लीलावती व कलावती बडे सकट के दिन बिता रही थी। तभी कलावती ने अपने नगर मे एक ब्राह्मण को सत्यनारायण के यज्ञ-व्रत को करते देखा। वह भूखी थी। ब्राह्मण के घर मे प्रसाद से तृप्त होकर देर रात्रि में अपनी मा के पास पहुचती है। रात्रि देरी से उत्पन्न शका को मा ने अपनी पुत्री के समक्ष प्रकट किया। कलावती ने अपनी मा की शका का निवारण किया और ब्राह्मण के घर हुई सत्यनारायण के यज्ञ कथा की बात बता दी। तब उसकी मा ने यत्न पूर्वक धन जुटा कर बन्धु बान्धवो सहित यह यज्ञ किया और प्रभु से प्रार्थना की कि मेरे पति एव जमाता की रक्षा करो। इस सत्य कर्म का फल यह हुआ कि राजा के स्वप्न मे दोनो वैश्य निर्दोष सिद्ध हुए और प्रात: उन्हे छोड दिया दिया। दोनो वैश्यो को जितनी सम्पत्ति उनके पास थी—उससे दूनी देकर विदा कर दिया। नाव मे लाद कर वे लोग अपने नगर की ओर आ रहे थे। तभी सत्यनारायण भगवान उनकी परीक्षा करने के लिए दण्डी स्वामी का रूप बना कर आये। भिक्षा के नाम पर कुछ देना न पडे इसलिए वैश्य ने बता दिया कि नाव पे लता पत्ता के अतिरिक्त कुछ नही है। सत्यनारायण तो अन्तर्ध्यान हो गये। उस वैश्य ने नाव में देखा कि वास्तव मे लता पत्ता ही हो गये। वैश्य तो शोक करने लगा किन्तु उसका जामाता दण्डी स्वामी को खोज कर लाया और उनसे क्षमा मागी, तब उनकी सम्पत्ति पूर्ववत् हो गई। नगर के समीप आने पर जब उनकी पत्नियों को अपने पतियो के आने का समाचार मिला, तो वह बडी हर्षित हुई। वे उस समय सत्यनारायण के यज्ञ को कर रही थी। पुत्री कलावती प्रसाद को लिए बिना अपने पिता और पति के स्वागत के लिए दौड़ पडी तो वह नदी के किनारे नाव सहित अपने पति को डूब गया जान कर शोक सतप्त हो गई। वैश्य और उसकी पत्नी भी महाशोक मे डूब रहे थे। माता ने समझ लिया कि पुत्री बिना यज्ञ पूर्ण किए प्रसाद वितरण एव ग्रहण किए आ गई है—इसलिए यह क्षय हुआ। इन्होने प्रभु से क्षमा मागी और विधिवत व्रत पालन किया, जिससे नाव व जामाता वापस मिल गये। यह वैश्य परिवार सुख से रहने लगा। और प्रत्येक पूर्णमासी और सक्राति पर यज्ञ करने लगा। इसी प्रकार एक राजा तुगध्वज ने वन में गोप लोगो को सत्यनारायण के यज्ञ-व्रत को करते देखा और उनको हेय समझ कर उस के प्रसाद को त्याग दिया। घर आकर उसको भी विपत्ति का सामना करना पडा। पुत्रादिक मरने लगे और सम्पत्ति नष्ट होने लगी। उसे स्मरण आया कि मैंने सत्यनारायण की उपेक्षा की है, इस लिए यह दुर्दिन देखने पड रहे हैं। वह लौह बनके-

(शेष पृष्ठ ६ पर)

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

स्वर्गीय लाला लाजपतराय



लाला लाजपतराय का बलिदान दिवस १७ नवम्बर है। उनका जन्म २८ जनवरी १८६५ को हुआ था। १७ नवम्बर १९२८ को उनका बलिदान हुआ। भारत मे साईमन कमीशन आया था। लाहौर में यह कमीशन अक्तूबर १९२८ के अन्तिम सप्ताह मे आया था। स्थानीय जनता इसके बहिष्कार की पूर्ण तैयारी कर चुकी थी। स्टेशन पर ही काले झण्डे दिखाने की योजना बनाई गई थी। लाला लाजपतराय प्रदर्शनकारियो का नेतृत्व कर रहे थे। कमीशन के स्टेशन पर उतरते ही 'साईमन गो बैक' के नारे लगने प्रारम्भ हो गए। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने के लिए अनुचित बल का प्रयोग किया। लाला जी पर अनेक लाठियो के प्रहार हुए और यह भारत मा का सपूत इसी काण्ड के बाद, आजादी की बलि वेदी पर अमरत्व को प्राप्त हो गया। उस वीर को हम शत्-शत् प्रणाम करते हैं।

लाला जी आर्य समाज के पलने मे बड़े हुए थे। उन पर भी वैसा ही आर्य समाज का प्रभाव था, जैसा अमर शहीद भगत सिंह, शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, सुखदेव, राजगुरु पर था। वे सब भी इसी प्रकार हसते-हसते फांसी के फंदो पर झूल गये थे। लाला जी ने आर्य समाज लाहौर के उत्सव पर एक बार कहा था—

मेरे जीवन का जो हिस्सा खराब है, वह मेरा अपना है। वह या तो मुझे विरासत मे मिला है या मेरे पूर्व जन्म के सस्कारों का फल है। लेकिन मेरे जीवन का जो हिस्सा अच्छा है और लोगो मे प्रशसा के योग्य है, वह सब आर्य समाज की बदौलत है। मैंने सार्वजनिक सेवा के तमाम सबक आर्य समाज से सीखें हैं। आर्य समाज के काम मे ही, सार्वजनिक जीवन के पवित्र नमूने हैं।

इस प्रकार लाला जी आर्य समाज को विशेष महत्व दिया करते थे।

लाला लाजपतराय राजनैतिक नेता होते हुए भी, आर्य समाज का दिन रात प्रचार-प्रसार के पक्षधर थे। उन्होने 'आर्य समाज' नाम की एक पुस्तक अग्रेजी में, १९१४ मे लिखी थी।

हमे उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज का कार्य विदेशो मे, अन्य भाषाओ के माध्यम से बढ़ाना चाहिये।'

उस वीर सपूत को विनत श्रद्धाञ्जलि।

—डा० धर्मपाल

आर्य युवा मंच का उत्तर काशी में भूकम्प क कारण अनाथ हो गये बच्चों की शिक्षा का भार उठाने का संकल्प

आज यहा (दिल्ली) आर्य राष्ट्रीय मच ने उत्तर काशी मे आये भूकम्प के कारण वहां दिवगत हुए लोगों के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित की। जो लोग भूकम्प के कारण पीडित हुए हैं उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त की।

आर्य राष्ट्रीय मच ने इस बात पर सतोष व्यक्त किया कि सार्वदेशिक सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा—आर्य वीर दल, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा विश्व हिन्दू परिषद् जैसी अनेक स्वय सेवी सस्थाए राहत कार्य में लगी हुई हैं। आर्य राष्ट्रीय मच के अध्यक्ष डा० प्रशान्त वेदालकार ने यह प्रस्ताव रखा कि इस भूकम्प के कारण जो बच्चे अनाथ हो गए हैं उनको शिक्षा की व्यवस्था यह करे।

(पृष्ठ १ का शेष)

भूकम्प पीड़ित सहयाता सूची

आर्य समाज दरियागज	१,०००)
श्रीमती शकुन्तला देवी	१२००)
प्रिंसिपल सतभ्रावा स्कूल	३,८००)
आर्य समाज डिफैंस कालोनी	५,०००)
आर्य समाज डिफैंस कालौनी	५,०००
आर्य समाज तिमारपुर	५०१)
आर्य माडल स्कूल तिमारपुर	५०१)

आर्य समाज दीवान हाल में संग्रहीत दान का विवरण

श्री अरुण शर्मा	१०१)
श्री अनन्त राम	१००)
श्री वेदप्रकाश	५०)
गुप्त दान	५१)
श्री सत्य प्रकाश	५०)
श्री मधानन्द आर्य	२१००
श्री देवेन्द्र सिंह	१००)
श्रीमती सदमवाना	१०१)
श्री सुभाष सिंघल	११००)
श्री युधिष्ठर कुमार	१०१)
श्री रामलाल छाबड़ा	११००)
श्री रहमल दास अरोड़ा	१०१)
श्री इन्द्र सेन जैन	१००)
श्री भवरलाल	५१)
प्रतिनिधि आर्य समाज एव ग्राम अटायल	२०७१)
एसोसीयेशन श्री राम मार्किट	३२००)
आर्य समाज शिवाजी कालोनी रोहतक	२००५)
श्री देवेन्द्र गोयल	१०१)
श्री मदन लाल सैनी	५१)
पूनम जैन	१०१)
शारदादेवी	५१)
सुषमा शर्मा	५१)
श्री सजीव कुमार	१००)
मा० अनुज जी	७०)
श्रीमती उर्मिला देवी	१०१)
श्रीमती डा० लाजवन्ती	१०१)
श्री परसराम शास्त्री	१०१
कृष्ण लाल दूध वाले	५०)

जिन महानुभावो ने वस्त्र, कम्बल, टीन की चद्दरे, आटा आदि दिया उनका विवरण निम्न प्रकार है—

श्री कवर गोपाल जी २२० नये कम्बल
श्री बनारसी दास लक्ष्मी नारायण कपूर ५६ नये कम्बल
डा० आनन्द जी—पहने कपडे
श्री मनमोहन आदर्श प्रा० लि०
श्री नवीन भाटिया
श्री वीरेन्द्र मल जी
श्री रेहमल दास अरोडा
श्री ईश्वर चन्द धवन
श्री खुबीराम जी गुप्ता
श्री कमल गोपाल जी
आर्य समाज बरनाला,
सतभ्रावा आर्य कन्या पाठशाला करोल बाग

१० नये कम्बल, २१ शाल गर्म आटा, चीनी, बिस्कुट पहने कपडे आदि प्राप्त किए।

आर्य समाज नागल राया से टीन की चद्दरें।

(क्रमशः)

महात्मा देवेश भिक्षु की विदेश-यात्रा

वेद प्रचार हेतु अमरीका-कनाडा दो देशों में १९८९ तथा १९९१ में चार-चार मास भ्रमण किया, जहां वैदिक धर्म के प्रति ही नहीं अपितु धर्म के नाम पर जो भी प्राप्त हो जनता उसी के प्रति लालायित रहती है। वैदिक धर्म तो सर्वश्रेष्ठ, वैज्ञानिक तथा तर्कानुसधानित होने से जनता की जिज्ञासा पूर्ति में पूर्णरूपेण सक्षम है। अत: क्यों न ग्राह्य हो।

१९८९ अप्रैल मास की १२ ता० को न्यूयार्क कैनेडी हवाई अड्डे पर पहुंचा जहां अगवानी हेतु न्यूयार्क आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री आदि सात व्यक्ति गये थे। ये लोग कुछ देरी से पहुंचे क्योंकि इनका अनुभव के आधार पर विचार था कि कस्टम पर दो घण्टे लग ही जाते हैं। किन्तु मेरा अनुभव बिल्कुल भिन्न रहा क्योंकि मुझे दोनों बार (१९९१ में भी) लाइन से अलग करके जाने दिया गया। अत: मैं शीघ्र ही बाहर पहुंच गया, जहां मुझे कोई आधे घण्टे तक जब कोई नहीं मिला, तो एक टैक्सी करके सीधा करतार चन्द जी बब्बर के घर पहुंच गया।

वहां पहुंच कर पता चला कि सात व्यक्ति दो कारों में मुझे लिवाने गए हुए है। कुछ देरी के बाद उन्होंने हवाई अड्डे से टेलीफून किया और जब उन्हें बतलाया गया कि मैं पहुंच चुका हूं, तो वे लौट आये। एक सप्ताह बाद मेरे बहुत आग्रह करने पर मुझे समाज मन्दिर में ठहरने हेतु जाने दिया। एक व्यक्ति, रोहतक निवासी जो वहां काम करता था, मेरी देख भाल करने को मन्दिर में रख दिया। मेरे कहने से मन्दिर में टेलीफून लगवाया तथा दो समाचार-पत्रों में मेरी अमरीका यात्रा के बारे में विज्ञापन दिए, जिससे स्थान-स्थान से प्रवचनों के लिए टेलीफून आने लगे।

न्यूयार्क समाज मन्दिर में प्रात: ६-३० से १२ बजे तक गयाना समाज का सत्संग लगता है और उपराह्न में ४ से ६ बजे तक भारतीय समाज का। इस भांति यह मन्दिर दो समाजों के सत्संगों का स्थल है। गयाना-सूरिनाम-त्रिनिदाद आदि देशों से आये मूल भारतीय जिनकी भाषा अब अंग्रेजी है आर्य समाज में श्रद्धालु लोग हमारी तरह ही यज्ञ-सन्ध्या-भजन करते हैं यद्यपि उन्हें हिन्दी-संस्कृत का ज्ञान नहीं है। शेष कार्य प्रवचनादि अंग्रेजी में करते है। अत: मुझे प्रात: अंग्रेजी में व सायं हिन्दी में प्रवचन करने होते थे।

न्यू जर्सी तथा वाशिंगटन की समाजों में भी एक बार प्रवचन देने का अवसर मिला। मई मास के अन्त में कार द्वारा कनाडा (टोरंटो) जाना हुआ—मार्ग में न्यागारा प्रपात का दृश्य भी देखा। टोरंटो नगर में भी प्रात: १० बजे गयाना समाज में तथा बारह बजे भारतीय समाज में बोलना निश्चित हुआ। इन समाजों के पास मन्दिर नहीं हैं, अत: ये अपना सत्संग चर्च या आडिटोरियम दो घण्टे किराये पर लेकर करते हैं।

टोरंटो गयाना आर्य समाज में पुरानी पीढ़ी व युवा पीढ़ी में कुछ विवाद था। हम लोग पुरानी पीढ़ी के पक्षधर श्री बलराज रेखी के गृह पर रुके थे। वे उनकी पुत्री शान्ति मुझ से रात्रि के एक बजे तक आग्रह करते रहे कि यह विवाद किसी प्रकार सुलझाऊं। मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मात्र एक घण्टे में जो प्रवचन हेतु नियत था किस प्रकार विवाद सुलझाया जा सकता है! प्रात: २८ मई को (रविवार) हम लोग नौ बजे कार में बैठ चल पड़े, जिसे शान्ति जी चला रही थी व मुझे आगे उनके पास ही बिठा दिया। मार्ग में शान्ति जी ने अपने पति के बारे में चर्चा छेड़ी और निवेदन किया कि मैं किसी तरह उसके पति को भी ठीक राह पर ला दूं। यह असम्भव था क्योंकि उसके पति को देखने का भी अवसर न था। शान्ति जी अपने शोरूम को दिखलाती हुई हमें सत्संग स्थान पर ले गई। यह शोरूम टोरंटो नगर के प्रसिद्ध बाजार में बच्चों व स्त्रियों की ड्रैसज का था जिसमें अनेक बच्चों व स्त्रियों की मूर्तियां सुन्दर ड्रैस पहिने खडी थी।

मैं तो प्रभु से प्रार्थना कर रहा था कि अचानक ही विचार आया कि 'आर्य' शब्द पर प्रवचन दिया जाये, जिस माध्यम से दोनों पक्षों को अपने ऊपर सोचने का अवसर मिलेगा। समाज युवा पीढ़ी के हाथों में थी क्योंकि पुराने लोगों ने समाज में जाना छोड़ दिया था। किन्तु उन लोगों ने यह निश्चय पूर्व ही कर लिया था कि महात्मा देवेश भिक्षु के प्रवचन में वे लोग अवश्य उपस्थित रहेंगे। हमने एक घण्टे से भी कुछ अधिक ऋग्वेद का प्रसिद्ध मन्त्र लेकर 'आर्य' शब्द की अंग्रेजी में व्याख्या की—प्रभु कृपा से इस प्रवचन का आशातीत प्रभाव हुआ क्योंकि दोनों पक्षों का परस्पर मेल हो गया। सभी ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। वहां से चल कर भारतीय समाज में हिन्दी में बोला। रात्रि में युद्धवीर सिंह जी के गृह पर रुके जहां गयाना समाज के कुछ स्त्री पुरुष हम से विचार विमर्श करते रहे, जिनमें एक कनैडियन गोरी महिला भी थी। कनाडा से लौटती बार माटरीयल नगर आर्य समाज में प्रवचन अंग्रेजी में दिया।

कुछेक परिवारों में भी यज्ञादि कराए तथा एक विवाह संस्कार अमरीका के सब से बड़े होटल पैन्टा में सम्पन्न कराया अंग्रेजी में। इस भांति न्यूयार्क नगर के मनहट्टन, कनैक्टीकट, आदि अनेक क्षेत्रों में प्रचार करने का अवसर मिला। गयाना समाज के पण्डित के साथ एम्पायर बिल्डिंग (सबसे ऊंची एक सौ पैंतीस मंजिल), यू० एन० एसेम्बली आदि देखने का भी अवसर मिला। आठ अगस्त को हमें भारत लौटना था, गयाना समाज ने हमारे सम्मान में 'महात्मा देवेश भिक्षु-नाइट' का आयोजन किया। पांच अगस्त को हमें फ्लोरिडा (डा० अग्रवाल इण्डियन कलचरल सोसायटी) जाना पड़ा। वहां शनिवार को दो भाषण तथा छै अगस्त (रविवार) प्रात: गीता पर प्रवचन देकर विमान द्वारा न्यूयार्क लौट आए, जहां भारतीय समाज ने भावभीनी विदाई दी।

इन चार मासों में गयाना समाज का पण्डित वर्ग हमारे पास लगातार ज्ञान प्राप्त करने आता रहा। एक पण्डित जी तो बाद के दो मास सारा दिन ही मेरे पास रहते थे—वे मुझे गीता मन्दिर तथा आनन्द आश्रम भी दिखलाने ले गए। यह आश्चर्य की बात है कि इन दोनों स्थानों के महन्त पूर्व आर्य समाजी विद्वान् हैं। गीता मन्दिर के महन्त ने आर्य समाज की अपने विद्वानों का उचित मान-सम्मान न करने की भर्त्सना की तथा यही कारण आर्य समाज त्यागने का बतलाया। यहां वे भगवां कपड़े पहिन कर ऐशो-आराम से रहते हैं। उनके पास कार ड्राइवर, दो युवतियां (एक अमरीकन तथा एक गुजराती) हैं। मन्दिर में चहुं ओर विशाल देवी-देवताओं की अनेक मूर्तियां स्थापित हैं जिन पर बहुत चढ़ावा आता है। आनन्द आश्रम के महन्त का सीधा पक्ष लकवे से मारा गया है। वे बोल भी नहीं सकते; तथापि अमरीकन युवतियां उनकी परिचर्या में संलग्न हैं। अन्य आश्रमों के बारे में भी इसी प्रकार की दशा है।

१९९१ में हमारा पुन: अमरीका जाने का प्रोग्राम एक अमरीकन सज्जन के आग्रह पर बन गया। उन्होंने हमारा अंग्रेजी का साहित्य पढ़ा था और हमारी पुस्तकों पर पता—टेलीफून पढ़ कर हमें पत्र डाले तथा टेलीफून पर बात की। हम उनके आग्रह को टाल न सके, यद्यपि ६ मई को हमारी धर्मपत्नी का देहावसान हुआ था। १३ जून को हम न्यू हैम्पशायर (पैलहम) जाने हेतु बास्टन के लिए विमान द्वारा चल पड़े। बास्टन हवाई अड्डे पर ये अमरीकन सज्जन (श्री जय महादेव) अपने सुपुत्र राम के साथ हमें लिवाने आये। ये सज्जन गोरे अमरीकन हैं किन्तु अब पूर्णरूपेण वैदिक धर्म में डूब चुके हैं—इन्होंने अपनी अमरीकन पत्नी का नाम लक्ष्मी तथा तीन बच्चों के नाम राम (९) मीरा (७) तथा रविन्द्र (३) रखे हैं और नित्य प्रति सन्ध्या करते हैं परिवार सहित।

अमरीका जाने से पूर्व ही जय महादेव ने अमरीका-कनाडा में अनेक लोगों को हमारे आने की सूचना देकर प्रोग्राम प्रवचनों का बना लिया था। अत: न्यूयार्क समाज को हमारे पहुंचने की सूचना मिलते ही उन्होंने हमें यहां टेलीफून पर आग्रह किया कि मैं उनकी समाज में ही उतरूं। किन्तु ऐसा उचित न था परन्तु हमने उन्हें वचन दे दिया कि अधिकांश समय उनकी समाज में ही लगावेंगे।

१३ से २६ जून तक जय महादेव के आश्रम रूपी गृह पर रहे जहां पर तीन बार यज्ञ-सत्संग का आयोजन हुआ व न्यू हैम्पशायर में आर्य समाज की स्थापना की जिसके लगभग तीस सदस्य (गयानी, भारतीय व अमरीकन) जय महादेव के प्रयत्न से बन गये। उनके गृह से पचास मील की दूरी पर इनके गुरु योगीराज डा० टी० आर० खन्ना का मासाचुसेट्स में महायोग आश्रम है जहां योग पर अंग्रेजी में प्रवचन दिए क्योंकि यहां के वासी सभी अमरीकन स्त्री पुरुष हैं।

२७ जून को जय महादेव की पत्नी लक्ष्मी जो व्यापार करती हैं, किसी कार्यवश कार द्वारा न्यूयार्क जा रही थी, तो हम भी उनके साथ आर्य समाज मन्दिर पहुंच गये। हमारे आने की खबर पाकर वहा के लोग बड़े प्रसन्न हुए तथा प्रति रविवार को दोनो समाजो मे प्रात: साथ अग्रेजी-हिन्दी में प्रवचन देते रहे। २८ जुलाई को जय महादेव हमें लिवाने आ गये और हमको अपने गृह पर न्यू हैम्पशायर (पैलहम) ले गये जहा हमने दो बार प्रवचन दिए। २ अगस्त को जय महादेव परिवार सहित हमको टोरटो (कनाड़ा) कार द्वारा ले गये, जहा हम लोग गयाना समाज के सदस्य श्री कुंडीदास के गृह पर उतरे। ३ अगस्त शनिवार को गयाना समाज ने किसी के गृह पर यज्ञ कराना था—हमको वहा बोलने का निमत्रण दिया। अत: वहा अपराह्न मे अग्रेजी मे प्रवचन दिया।

साय ५ बजे श्री अमरचन्द ऐरी, प्रधान भारतीय आर्य समाज टोरटो, हमे लिवाने आ पहुचे और हमको अपनी कार मे बिठा अपने गृह पर ले गए जहां हम ११ अगस्त तक रुके। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज ने हमारा आतिथ्य बड़ी ही श्रद्धा पूर्वक भोजनादि द्वारा किया। रविवार ४ अगस्त को हमारा प्रवचन दोनो समाजों मे होना था किन्तु समय एक ही होने से, भारतीय समाज में ही बोलना हो सका। यहा उपस्थिति दो सौ होगी—हाल पूरी तरह भरा था। आश्चर्य की बात यह थी कि योगीराज टी० आर० खन्ना अपनी दो अमरीकन शिष्याओ व माता पिता सहित मासा चुसेट्स से आए हुए थे। उन्होने टोरटो मे हमारे सभी प्रवचनों को टेप किया और ११ अगस्त तक वहां रहे। श्री अमरचन्द ऐरी ने हमारे प्रवचनो का प्रबन्ध प्रतिदिन रात्रि को घर-घर में करा दिया। इस प्रकार ४ से ११ अगस्त तक लगातार हमारे प्रवचनो की शृखला चली। ११ अगस्त (रविवार) को तीन प्रवचन हुए—आर्य समाज मे प्रात:। दोपहर को एक गृह पर तथा अपराह्न में मिसिसागा आर्य समाज मे, जहां हम को वहां से एक सज्जन आकर ले गये थे।

मिसिसागा समाज टोरंटो से दूर होने के कारण, रात्रि को श्री सुभाष जी झाब के गृह पर रुकने का प्रबन्ध था, जहा से सीधा अगले दिन प्रात: हवाई अड्डे जाने का विचार था। इस समाज मे भी अग्रेजी मे प्रवचन किया और सत्सग समाप्ति पर श्री सुभाष जी की पत्नी हमको अपने घर ले गई। कुछ देर बाद सुभाष जी भी आ गये और उन्होने हम से अपनी पुत्रियो से जो सभी युवा थी कुछ उपदेश देने का आग्रह किया। हमने उन पुत्रियो को भी यही कहा कि उन्हे अपने माता-पिता की आज्ञा में रहना ही हितकर है तथा पश्चिमी सभ्यता के रग में पूर्ण रूपेण न रग जावें। यह हानिकारक सिद्ध होगा आदि।

१२ अगस्त को टोरटो हवाई अड्डे पर हमे छोडने श्री सुभाष जी गये और जहा तक सम्भव था हमारे साथ रहे। यहा इमिग्रेशन आफिस मे पूछ-ताछ करने वाले लोगो ने कठिनाई पैदा कर दी, क्योकि वे यह जानना चाहते थे कि हमारी आय न्यूयार्क मे कितनी होगी। अन्त में उन्होने हमारा वीसा दो मास के लिए कम करके १५ अक्तूबर तक कर दिया। इससे हमारी कुछ हानि नही हुई क्योकि हमने तो इस तिथि से पूर्व हा लौटना था। आखिर विमान मे बैठ न्यूयार्क पहुचे जहाँ हमे लिवाने श्री अरविन्द पहुचे हुए थे।

न्यूयार्क आर्य समाज ने हमारे से पूछ कर १७ व १८ अगस्त को चतुर्वेद महायज्ञ का आयोजन किया था। यह पवित्र कार्य सुन्दर रीति से सम्पन्न हुआ व सभी को सुख शान्ति आनन्द का अनुभव हुआ। १३ अगस्त को हमे आरलैंडो मे प्रोग्राम निभाने छै दिन के लिए जाना था। अत: विमान पकड कर वहा के हवाई अड्डे पर पहुचे, जहां हमे लिवाने डा० खडेलवाल आए हुए थे। वे हमको किसी अग्रवाल के गृह पर ले गये जहां रामायण का पाठ चल रहा था। ये सभी लोग विश्व हिन्दू परिषद् से सम्बन्धित हैं। रात्रि थके होने के कारण हमारा सोने का प्रबन्ध श्री जोशी जी के गृह पर था जो हमको अर्ध रात्रि को आकर लिवा ले गये। प्रात: उठ कर शौच-स्नान-सन्ध्या आदि से निवृत्त हो जब बैठक में आया, तो जोशी जी ने मुझे नाश्ते में दूध-फल आदि दिये तथा अपनी युवा पुत्री को कुछ उपदेश देने को कहा। उसे जो हमने जो भी उसकी शकायें थीं उनका समाधान किया व विद्यार्थी जीवन के कर्त्तव्य बतलाए।

२४ अगस्त दोपहर को रामायण पाठ की समाप्ति पर हमारा प्रवचन मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज पर हुआ। भोजनोपरान्त हमको विश्व हिन्दू परिषद् के प्रधान की पुत्री कार मे अपने घर लिवा ले गई। इनका घर बहुत बड़ा है तथा यहां ब्रह्मरत्न अग्रवाल, उनकी पत्नी, पुत्री जामाता तथा उनकी पुत्री की तीन सतानें (दो पुत्र व एक पुत्री) रहती हैं। प्रधान जी की धर्म पत्नी बड़ी ही धर्म परायण आतिथ्य में कुशल हैं। इनके घर पर हर समय आने जाने वालो का ताता लगा रहता है। रात्रि को श्री सुरेश जी (जामाता) हमको अपने गुजराती मित्र के यहा ले गये जहां हमको बोलना था, क्योंकि कुछ दिन पूर्व गुजराती मित्र के पिता की मृत्यु हो गई थी। ज्यों ही हम बोल कर चुके कि टेलीफून आया कि ब्रह्म अग्रवाल जी अशोक सिघल (महासचिव हिन्दू विश्व परिषद्) के साथ मियामी से लौट रहे हैं, उनको लिवाने हवाई अड्डे पर पहुचना है। सुरेश जी हम को भी हवाई अड्डे पर ले गये और उन दोनो को लेकर १०-३० पर घर लौटे। रात्रि को देरी तक अशोक सिघल जी से बातें होती रहीं।

प्रात. २५ अगस्त को नाश्ता करके सभी लोग उस होटल मे पहुचे जहा अशोक सिघल जी ने उन लोगो से वार्ता करनी थी। जिनको आमन्त्रित किया गया था। यही कोई तीस व्यक्ति स्त्री-पुरुष वहां थे जिनको अशोक जी ने विश्व हिन्दू परिषद् की गतिविधि व राम जन्म स्थली अयोध्या के बारे मे बतलाया। वहा से उठ कर सीधे हवाई अड्डे पर अशोक सिघल जी को छोडने गये, उन्हें बास्टन जाना था।

ब्रह्म अग्रवाल जी के गृह पर प्रतिदिन चर्चा होती रही। उन्ही के गृह पर राखी का त्यौहार मनाया। २७ अगस्त को उस कई सौ एकड़ भूमि पर यज्ञ करा उद्घाटन किया जहा इनकी फर्म ने सहस्रो मकान की एक कालोनी तैयार करनी है—यह स्थान डिस्नी वर्ल्ड के पास है। अत. हमको इस क्षेत्र के चहु ओर घुमा कर घर लौटे।

२९ अगस्त को विमान पकड कर एटलांटा हवाई अड्डे पर पहुचे, जहां हमे लिवाने डा० दीनबन्धु चदोरा की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री जी आई थीं। गृह पहुच कर उन्होने हमारा बहुत ही श्रद्धा पूर्वक भोजनादि से आतिथ्य किया तथा जब तक हम वहां रहे बडे आदर पूर्वक हमारी देख भाल मे जुटी रहीं। वहा हम दस दिवस रहे और इस समय मे छै गृहो पर हमारे प्रवचन हुए, जिनमे एक घर सिख का भी था। कृष्णजन्माष्टमी भी एक घर पर यज्ञादि करके मनाई तथा भगवान कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। एटलांटा मे ही प्रथम सत्सग मे ही भत केशवदास व उनकी मडली से भेंट हुई—ये भजन-गीत आदि गाते है—इनकी मण्डली मे इनकी धर्मपत्नी, एक अमरीकन महिला व एक ढोलकिया है। ये सभी गाने में प्रवीण हैं। ये कर्नाटक के रहने वाले हैं, कई बार अनेक देशो का भ्रमण किया है व बगलौर मे एक विशाल मन्दिर का निर्माण किया है। इन्होने हमारी मुक्त कण्ठ से प्रशसा की व हम को बगलौर आने का निमन्त्रण भी दिया।

डा० चन्दोरा जी की प्रार्थना पर हमने उनको समाज के लिए एक पुस्तक का सम्पादन भी किया। उन्होने वेद प्रचार हेतु चार एकड भूमि ले ली है जिस पर एक मकान भी बनवा दिया है। ७ सितम्बर को श्रीमती सावित्री जी हमको हवाई अड्डे पर छोड गई व हम न्यूयार्क लौट आये, जहा पूर्ववत् रविवार को दो प्रवचन तथा कुछ गृहो मे भी यज्ञादि कराये।

३० सितम्बर को हमने विदाई ली। इससे पूर्व दोनो समाजो ने २९ सितम्बर को हमारी विदाई मे विशेष आयोजन किए। कुछ लोग हम को कैनेडी हवाई अड्डे पर छोडने आए तथा वहा से विमान मे बैठ २ अक्तूबर की प्रात. दो बजे नई दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुचे, जहाँ हमारे दोनो पुत्र लिवाने पहुचे हुए थे।

इस भांति १९९१ की विदेश यात्रा पूर्ण हुई। वहा भी समाजो मे प्राय: छोटी-छोटी बातो पर व्यर्थ विवाद है—जैसे कि १९८९ में न्यूयार्क समाज का रिकार्ड प० जिज्ञासु जी ने नही दिया था यद्यपि वे समाज छोड चुके थे। हमने उनसे कई बार निवेदन करके यह कार्य सम्पन्न कराया था। अन्त मे तो प० जिज्ञासु जी ने हमारा साक्षात्कार भारती रेडियो पर भी करवाया था। १९९१ मे भारतीय आर्य समाज व गयाना आर्य समाज मे मनमुटाव चल रहा था—हमारे समझाने पर दोनो समाज पुन: परस्पर मिल कर चलने लगी थी। इसी प्रकार गयाना समाज मे भी आन्तरिक विवाद था, जिसके कारण वह समाज दो समाजो मे बट चुकी थी। हमने दोनो समाजो के अधिकारियों को प्रेम पूर्वक समझाया तथा परस्पर सौहार्द रखने की आशा प्रकट की। सभी समाजो को परस्पर मिल कर वेद प्रचार-प्रसार का कार्य करना उचित है।

सम्पादक के नाम पत्र

डा० धर्मपाल जी सादर नमस्ते ।

कल रात्रि मे दूरदर्शन पर तीन अन्य विद्वानो के साथ आपके दर्शन करके बहुत प्रसन्नता हुई । आपके प्रयास से भारत के करोड़ों व्यक्तियों ने महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के सम्बन्ध मे सुना । इस प्रयास के लिए आपको बहुत २ धन्यवाद आप जैसे निष्ठावान, कर्मठ आर्य समाज व दयानन्द के सच्चे भक्त के कारण लाखों व्यक्तियो तक हमारी बात पहुच सकी । एक विनम्र सुझाव है कि प्रति वर्ष एक पर्व पर दिल्ली के किसी दैनिक समाचार पत्र मे दो पृष्ठ का परिशिष्टांक निकालने पर विचार करने की कृपा करें । दिल्ली की समस्त आर्य समाजें मिल कर धन की व्यवस्था कर सकती हैं । लगभग दो पृष्ठों के पोन लाख रुपए लगेंगे । भारत के लाखो व्यक्ति पढ़ेंगे । आप और सूर्यदेव जी निश्चय कर लेवें तो स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर ही इस कार्य को किया जा सकता है ।

जगदीश प्रसाद वैदिक

मान्यवर सम्पादक जी,

आर्य सन्देश का "आर्य समाज मन्दिर" विशेषांक प्राप्त हुआ । विशेषांक वास्तव मे काफी सुन्दर एवं आकर्षक निकला है । इसके माध्यम से ऋषि दयानन्द सरस्वती एवं आर्य समाज के सम्बन्ध मे काफी ठोस एवं महत्वपूर्ण सामग्री पढने को मिली । विशेषांक की सफलता के लिए बधाई ।

रामकुमार आर्य

मान्यवर सम्पादक जी,

आपका साप्ताहिक पत्र समय पर मिल जाता है । अगर न आए तो मन उदास सा हो जाता है । मेरे सामने आर्य सन्देश का वार्षिक वृत्तान्त विशेषांक की पुस्तक रूप में मेरे हाथो मे है पिछले वर्ष भी ऐसी पुस्तिका मिली थी । आपका हृदय उज्जवल है । जो सब कुछ लिख देते हैं । कुछ भी नही छुपाते । मैं इस पुस्तक को देख गद्गद् हो गया सारा वृत्तान्त पुस्तक मे सलीके से लिखा है ।

सधन्यवाद मैं चाहता हू कि आपका हाथ बटाऊ मगर दूर बैठा हूं और यह भी चाहता हू कि आर्य सन्देश की पृष्ठ सख्या बढाई जावे ।

तुलसीराम आर्य

समादरणीय सम्पादक महोदय सादर नमस्ते,

हमने आपके यहा प्रकाशित आर्य सन्देश का श्रावणी एव सस्कृत जन्माष्टमी सयुक्तांक पढ़ा, पढ कर मन मे तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई कि ऐसी उत्तम पत्रिका का स्वाध्याय नित्य करता रहू । ब्र० अरुण कुमार

मान्यवर सम्पादक महोदय जी,

आपके स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हू, वार्षिक वृत्तांत विशेषांक के लिए आपने अति सराहनीय एवं प्रशसनीय बहुत अच्छा प्रयास किया है—

वास्तव मे मैंने तो ऐसा वृत्तान्त पढा है पहली बार जब कि मैं पिछले पच्चीस वर्षो से दिल्ली में किसी न किसी समाज से सम्बद्ध रहा हू और पत्रिकायें ही पैंतीस वर्षों से पढ रहा हू ।

ईश्वर शक्ति दें ऐसे ही विशेषांकों द्वारा जानकारी, ज्ञान तथा शिक्षित करते रहे पाठको को परन्तु एक शिकायत है कि आर्य समाज अशोक विहार खण्ड दो का कही नाम नहीं जो कि पिछले एक दशक से आप के साथ सम्बन्धित है । उपदेशक आपके द्वारा भेजे जाते हैं, यहा एक औषधालय भी चल रहा है जिसकी सूचना अभी गत सप्ताह वार्षिक उत्सव पर भी दी गई है !

कृपया भविष्य मे ध्यान रखें विशेष जानकारी अलग से सविस्तार भेजी जा रही है।

रामप्रकाश (सगठन मन्त्री)

आर्य समाज अशोक विहार खण्ड-२ दिल्ली-५२

आदरणीय डा० धर्मपाल जी, सादर नमस्ते ।

आपका आर्य मर्यादा एव सर्व हितकारी के २७-१०-९१ के अक में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य भाषा हिन्दी, उत्तम लेख पढा । पुन: ५ नवम्बर को दीपावली के दिन टी० वी० पर आपकी 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का सामाजिक चिन्तन' विषय पर अत्युत्तम परिचर्चा के लिए बधाई ।

जगन्नाथ

ए-२६, रोहित कुञ्ज' रानी बाग दिल्ली-३४

ऋषि निर्वाण दिवस बड़े उत्साह पूर्वक सफलता से सम्पन्न

आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना ने ऋषि निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य मे वेद प्रचार करने हेतु और वेद का सन्देश घर-घर पहुचाने, छात्र और छात्राओ मे महर्षि की जीवन गाथा को सुनाने व उसके प्रति श्रद्धा एव जीवन में जागृति उत्पन्न करने के लिए भाषण एव सगीत प्रतियोगिता का एक भव्य आयोजन किया, इस समारोह मे १०० से अधिक विद्यालयो/कालेजो के छात्र-छात्राओ ने भाग लिया । सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भव्य एवं आकर्षक पुरस्कार दिए गए इन सभी विजेताओ को पुरस्कार लुधियाना नगर के विख्यात उद्योगपति श्री वेदभूषण मदान के सुपुत्र श्री राजीव मदान ने अपने कर कमलो से वितरण किए । निर्णायको को भी उन्होंने पारिश्रमिक सम्मान पत्र भेंट किए । सभी प्रतियोगियो को महर्षि का सुन्दर चित्र फ्रेम करा कर दिया और इस प्रकार यह ऋषि निर्वाण दिवस वास्तव मे एक उद्देश्यपूर्ण ढग से बड़े उत्साह से मनाया गया और इसकी विशेषता यह भी थी कि आर्य समाजी परिवारो के अतिरिक्त सभी वर्गों एव सम्प्रदायो के जैसे कि सनातन धर्मसमाज, जैन समाज, सिक्ख समाज, देव समाज आदि आदि । इस प्रकार यह ऋषि का सन्देश व्यापक तौर पर स्कूलों कालेजो और सर्वत्र प्रचरित हुआ ।

इस आयोजन को सफल बनाने के लिए आर्य समाज के प्रधान श्री रणबीर भाटिया जी श्री नरेन्द्र सिंह मल्ला जी तथा श्री कुलदीपराय जी आर्य समाज, महर्षि दयानन्द बाजार के कर्मठ सेवक श्री प्रेमसिंह जी का परिश्रम जो कि दिन और रात का अनथक परिश्रम था भुलाया नही जा सकता तथा आर्य समाज के पुरोहित पं० राजेश्वर शास्त्री व्याकरणाचार्य ने भी बड़ी कर्मठता और सूझ-बूझ से कार्य किया ।

महर्षि दयानन्द निर्वाणोत्सव

आर्य समाज बोट कलब के तत्वावधान मे २१ अक्तूबर से २५ अक्तूबर तक दोपहर १ से २ बजे तक ऋषि निर्वाणोत्सव मनाया गया । इस अवसर पर पडित प्रकाशवीर व्याकुल और श्री सोहनलाल पथिक के भजनोपदेश हुए तथा प्रो० रतनसिंह के दार्शनिक व्याख्यान हुए । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर आर्य समाज दीवान हाल के सहयोग से वैदिक साहित्य का वितरण भी किया गया ।

बलेश कुमार आर्य—मन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

उसी स्थान पर गया और उन गोप लोगो के समीप जाकर सत्यनारायण के व्रत को समझा और उसका पालन किया, और अपने दु:ख से मुक्ति पाई ।

सत्यनारायण के व्रत यज्ञ और उसके प्रसाद को जीवन मे अपनाने वालों का सदैव उद्धार हुआ है । प्रसाद कौन सा—वही तीन बार हविषा विधेय—कह कर जो हमने प्रभु को अर्पित किया था—उसी का अश उन्होने हमें वापस किया था । उसी का वितरण हमको करना है । ऐसा करने वाले अपना यह जीवन सुखी करेंगे—अगला जन्म उत्तम पायेंगे और अन्त मे मोक्ष पाकर प्रभु का आनन्द पा सकेंगे । पुराण के अनुसार इस कथा का पात्र शतानन्द ब्राह्मण अगले जन्म में सुदामा, लकड़हारा राजा राम का सेवक भील, उल्का मुख राजा दशरथ, साधु नाम का वैश्य राजा मोरध्वज तुङ्गध्वज राजा स्वायम्भुव मनु हुए और हर सकट को पार कर जन्म मृत्यु के बन्धन से छूट कर मोक्ष को प्राप्त हुए । यह सभी दृष्टान्त काल्पनिक एव सिद्धान्त की दृष्टि से इनकी अनेक बातें अग्राह्य हो सकती हैं, किन्तु इसका मूल तत्व सर्व व्यापक सर्वान्तर्यामी विश्वकर्मा सत्यनारायण भगवान को सदैव अपने साथ समझना और उसकी वेदाज्ञाओं का पालन करके अपने लोक व परलोक दोनो को आनन्दमय बनाने से कौन असहमत होगा । आइये हम सभी मिल कर प्रभु के इस प्रसाद का आनन्द प्राप्त करें ।

ओ शान्ति शान्ति शान्ति ओ३म् ।

आरक्षण देश के लिये अभिशाप

आर्य समाज न्यू मोती नगर के वार्षिकोत्सव के एक सत्र में आर्य राष्ट्रीय मंच द्वारा आयोजित एक विशाल जनसभा मे "आरक्षण देश के लिए अभिशाप है" इस विषय पर अनेक वक्ताओ ने प्रकाश डाला।

इस सम्मेलन में सम्मेलन के अध्यक्ष डा० प्रशान्त वेदालकार ने निम्नलिखित प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से स्वीकर कर लिया गया—

आर्य समाज जातिगत आधार पर आरक्षण का सर्वथा विरोध करता है।" यह वस्तुत. इस देश की विशाल हिन्दू समाज मे परस्पर फूट डाल कर राज्य करने का एक घिनौना षड्यन्त्र है। आर्थिक आधार को इसमे शामिल कर इस देश की जनता की आखो मे धूल झोंका गया है। आरक्षण द्वारा देश की प्रतिभा का उपयोग नहीं हो सकने के कारण यह देश के विकास मे बाधक सिद्ध होगा। इससे प्रतिभा पलायन की समस्या भी उत्पन्न होगी। आर्य राष्ट्रीय मच का यह सम्मेलन यह भी अनुभव करता है कि वोटो के इस खेल में सभी राजनीतिक दलो ने इसका समर्थन करके देश के हितो को चोट पहुचाई है। अत: इस दृष्टि से सभी राजनीतिक दल भर्त्सना के पात्र है। मच ने यह निर्णय लिया कि इस विषय मे आरक्षण विरोधी सभी स्वय सेवी सस्थानों के सहयोग से एक जन-जागृति का अभियान छेड़ा जाए। मच ने आर्य समाजो से अपील की कि वे देश के पिछड़ेपन को समाप्त करने के लिए तथाकथिक पिछड़ी जातियो एव अनुसूचित जाति तथा जन जातियो में साक्षरता के प्रयत्न तेज करे। मच ने देश को पांच हजार आर्यसमाजो तथा ५ हजार आर्य शिक्षण सस्थाओ से कहा कि वे १०-१० बच्चो को गोद लेकर देश के पिछड़ो के विकास में महान् योगदान दें।" इस सम्मेलन में हिन्दू मच के प्रधान श्री प्रेमनाथ जोशी तथा अन्य अनेक व्यक्तियो ने भाग लिया। सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज न्यू मोती नगर के प्रधान श्री तीर्थराम टंडन तथा आर्य राष्ट्रीय मच के सयोजक प्रिंसिपल जगदेव जी ने किया। मच संचालन विश्वबन्धु आर्य ने किया।

रुहेलखण्ड अंचल की उच्च शिक्षिता महिला डा० महाश्वेता :

हाल ही मे रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय से सितम्बर प्रथम सप्ताह में डी० लिट् की सर्वोच्च उपाधि से सम्मानित डा० महाश्वेता चतुर्वेदी प्रख्यात लेखिका, कवयित्री, सम्पादिका, एव निष्ठामयी प्रवक्ती हैं। अब तक डा० महाश्वेता की दस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। नारियो के लिए उनका व्यक्तित्व प्रेरणा है। अग्रेजी सस्कृत, हिन्दी व सगीत मे एम० ए० डा० महाश्वेता के लेख, कहानियां, कविताये, व अन्य सामग्री निरतर स्तरीय पत्र-पत्रिकाओ मे प्रकाशित होती रहती हैं। ऐसी नारियो से देश और समाज का गौरव बढता है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

१.	नैतिक शिक्षा (भाग प्रथम, द्वितीय) प्रत्येक		१ ५०
२.	नैनिक शिक्षा (भाग तृतीय)		२ ००
३	नैतिक शिक्षा (भाग चतुर्थ से नवम) प्रत्येक		३ ००
४.	नैतिक शिक्षा (भाग दशम, एकादश) प्रत्येक		४ ००
५	नैतिक शिक्षा (भाग द्वादश)		५ ००
६	धर्मवीर हकीकत राय	(वैद्य गुरुदत्त)	५ ००
७.	फलैश आफ ट्रुथ	(डा० सत्यकाम वर्मा)	२ ००
८	सत्यार्थ प्रकाश सन्देश	,, ,	२ ००
९.	एनोटामी आफ वेदान्त	(स्वामी विद्यानन्द सरस्वती)	५.००
१०	आर्यो का आदि देश	,, ,,	२ ००
११	प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवाद	,, ,,	२५ ००
१२.	दी ओरीजन होम आफ आर्यन्स	,, ,,	२ ००
१३	चत्वारो वै वेदा:	,, ,,	५.००
१४	द्वैतसिद्धि	,, ,,	५ ००
१५	आर्यसमाज आज के सन्दर्भ मे	(डा० धर्मपाल, डा० गोयनका)	२०.००
१६.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	(डा० सच्चिदानन्द शास्त्री)	५ ००
१७.	हसता चल, हसाता चल	(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती)	६ ५०
१८	दयानन्द एण्ड दा वेदाज (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
१९	पूजा किसकी ? (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
२०	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
२१.	योगीराज श्रीकृष्ण का सन्देश (ट्रैक्ट)		५० रु० सैकडा
२२	आर्योद्देश्यरत्नमाला (सुगम व्याख्या)	(डा० रघुवीर)	५० रु० सैकडा

नोट · उपरोक्त सभी पुस्तको पर १५ प्रतिशत कमीशन दिया जाएगा। पुस्तको की अग्रिम राशि भेजने वाले से डाक व्यय पृथक नही लिया जाएगा।

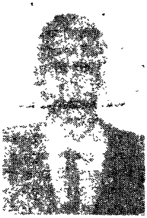
पुस्तक प्राप्ति स्थान · **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

१५ हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१

आर्यसन्देश–दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१
R. N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 21-22-11-1991 Licence to post without prepayment, Licence No. U 139
दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स न० यू १३९

श्री जगदीश आर्य

स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्



श्री जगदीश आर्य की स्मृति मे शोक सभा का आयोजन समाज सदन राणा प्रताप बाग में किया गया। श्री आर्य जी को विभिन्न सस्थाओ की ओर से श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा० धर्मपाल, बिरला स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती आदर्श कोहली, वैदिक विद्वान प० प्रेमचन्द श्रीधर, पूर्वी दिल्ली से श्री विश्वम्भर नाथ भाटिया, कुंवर दयानन्द वर्मा, श्री राजसिंह आर्य, श्री एम० एल० बब्बर तथा अन्य अनेक गणमान्य महानुभावो ने उन्हे श्रद्धासुमन अर्पित किए। शोक सभा में दिल्ली के सभी क्षेत्रो से तथा पडोसी प्रान्तो से भी आर्य जन परिवार के सदस्यों को सान्त्वना देने के लिए उपस्थित हुए।

आर्य समाज राणा प्रताप बाग दिल्ली के समाज सेवी मन्त्री स्वर्गीय श्री जगदीश चन्द्र आर्य का जन्म पाकिस्तान मे सराय सिधु नामक गाव में सन् १९३० में हुआ। मैट्रिक पास कर लाहौर में नौकरी करने चले गए। माता-पिता के अनुरूप सरल, मृदुभाषी एव त्यागमय जीवन, आर्य समाज एव ऋषि ऋण मे लगा दिया। इनके पिता स्वर्गीय गनेश दत्त आर्य एव माता सरस्वती देवी आर्य समाज के सस्थापकों मे से एक थे। सन् १९४७ मे पाकिस्तान से भारत आने पर परिवार का सारा भार इनके कंधो पर आ गया तब से मृत्यु पर्यन्त उनके चेहरे से मुस्कान फीकी नही पडी। आर्य समाज राणा प्रताप बाग के पुन:-पुन. मन्त्री पद सभालने पर आर्य समाज द्वारा चलाए जा रहे एलोपैथिक, होम्योपैथिक औषधालय का पूरा भार अपने कन्धों पर लेकर सबको प्रेरणा दे गए। अन्त समय तक आर्य समाज के वार्षिक उत्सव एव भूकम्प पीडितो के लिए दान मागते-मांगते अपने का दान कर गये।

इनके परिवार मे तीन सुपुत्रियां है जो अपने-अपने परिवार में प्रभु कृपा से सम्पन्न हैं। इनका सारा परिवार आर्य समाज के कार्य में लगनशील हैं। प्रभु करे उनका जीवन पथ सबके लिए उत्साहवर्धक, मार्गदर्शक एव प्रेरणावान आदर्श रूप दिखाता रहे। इनकी मृत्यु ९ नवम्बर १९९१ को अकस्मात् हृदय गति बन्द हो जाने के कारण हुई। इस समय इनकी आयु ६१ वर्ष की थी। ईश्वर करे इन का परिवार आर्य समाज की ज्योति को प्रज्वलित करता रहे।

वार्षिक निर्वाचन

आर्य समाज सफदरजग ऐन्क्लेव का निर्वाचन २७-१०-९१ को न्यायमूर्ति श्री आर० एन० मित्तल (रिटायर्ड) की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। निम्नलिखित अधिकारी सर्व सम्मति से चुने गये ?

प्रधान—श्री एच० एम० खेर
मन्त्री—श्री सूर्य प्रकाश मलिक
कोषाध्यक्ष—श्री हर्षवर्धन वर्मा

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एव प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ मे मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५० के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी०(सी० ७५६)

साप्ताहिक ओ३म कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य सन्देश

वर्ष [illegible] अंक ५२ रविवार, १ दिसम्बर, १९९१ विक्रमी सम्वत् २०४८ दयानन्दाब्द : १६६ सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९२

मूल्य एक प्रति ५० पैसे वार्षिक—२५ रुपये आजीवन २५० रुपये विदेश मे ५० पौण्ड, १०० डालर दूरभाष : ३१०१५०

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की उपलब्धियां

—सूर्यदेव, महामन्त्री

वेद प्रचार—आर्य समाजों द्वारा सभा के महोपदेशको एव भजन मडलियो द्वारा सभा अधिकारियो द्वारा साहित्य वितरण के माध्यम से आर्य समाजो के रविवासरीय सत्सगों के माध्यम से, सभा की प्रचार वाहन द्वारा झुग्गी झोपडी कालोनियो पुनर्वास कालोनियो, ग्रामीण अचलो तथा सरकारी कार्यालयो के बाहर, दिल्ली से बाहर के प्रान्तो मे, आर्य समाजो के वार्षिकोत्सवो एव वेद प्रचार सप्ताहो के अन्तर्गत वेद प्रचार किया गया। उन समाओ के माध्यम से तथा समय-समय पर आर्य महासम्मेलन आयोजित करके वेद प्रचार किया गया। बोट क्लब, आई० टी० ओ०, आर० के० पुरम, पुराना सचिवालय, रेल भवन, बडोदा हाऊस, अजमल खां पार्क आदि स्थानो पर वेद प्रचार किया गया। दशहरा एव रामनवमी के दिन रामलीला मैदान तथा अन्य अनेक स्थानो पर वैदिक साहित्य वितरण किया गया। सरकारी चिकित्सालयो मे वैदिक साहित्य का वितरण किया गया। सार्वजनिक समारोहो के अवसर पर वैदिक साहित्य का विक्रय एव नि.शुल्क वितरण। अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर वेद प्रचार मे योगदान—

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी का आयोजन

महामहीम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिह जी मुख्य अतिथि।

आर्य विद्या सभा :

आर्य विद्या सभा द्वारा सचालित, गुरुकुल कागडी गुरुकुल कागडी फार्मेसी' कन्या गुरुकुल देहरादून तथा स्वामी श्रद्धानन्द चिकित्सालय के सचालन मे डा० धर्मपाल, श्री सूर्यदेव, श्री चन्द्रदेव, श्री वेदव्रत शर्मा, श्री महाशय धर्मपाल जी का विशिष्ट सहयोग। डा० धर्मपाल आर्य विद्या सभा के मन्त्री (१९८४-८६) श्रद्धानन्द चिकित्सालय के सदस्य (१९८४-९१), फार्मेसी के सदस्य (१९८५-९१), फार्मेसी के व्यवसाय पटल के अध्यक्ष (१९८४-८७), श्री वेदव्रत शर्मा, फार्मेसी के सदस्य (१९८४-९१) श्री महाशय धर्मपाल—फार्मेसी के डायरेक्टर (१९८९-९१) श्री लाला रामगोपाल शालवाले-(स्वामी आनन्दबोध सरस्वती)-फार्मेसी के डायरेक्टर (१९८४-८९)।

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय

डा० धर्मपाल-शिक्षा पटल कार्य परिषद एव शिष्ट परिषद के सदस्य श्री सूर्यदेव—कोषाध्यक्ष एव शिष्ट परिषद के सदस्य, श्री मनुदेव, श्री वेदव्रत शर्मा, शिक्षा पटल के सदस्य श्री राजेन्द्र दुर्गा, डा० महेश विद्यालकार—सदस्य।

आर्य विद्या परिषद :

प्रति वर्ष नैतिक शिक्षा परीक्षाओ का सचालन। कक्षा १ से १२ तक की नैतिक शिक्षा की पुस्तको का डा० धर्मपाल द्वारा सम्पादन एव प्रकाशन। दीवानहाल स्मारक गोकुलचन्द आर्य चिकित्सालय श्रीचन्दी दिल्ली का सफल सचालन। दीवानचन्द चिकित्सालय श्रीचन्दी शाखा का १९९० मे उद्घाटन—

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश .

प्रतिवर्ष, वीर पर्व, शहीदी दिवस, प्रशिक्षण शिविर एव आर्य युवा महासम्मेलन का आयोजन। तालकटोरा स्टेडियम मे भव्य पुरस्कार वितरण समारोह।

मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी का सफल सचालन—गोरक्षा कार्य—हिरनकी ग्राम के युवको को सहयोग—डा० धर्मपाल, डा० रघुवीर, श्री चन्द्रप्रकाश स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा तात्कालिक कार्यवाही, स्वामी गोरक्षानन्द के सहयोग से लदान बन्द किया गया।

मद्य निषेध आन्दोलन

लाहरी गाव मे धरना—

हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित पद यात्रा मे तथा बोट क्लब पर सभा आयोजन मे सहयोग। राष्ट्रपति को ज्ञापन पत्र दिया गया।

सस्कृति सगम-सगोष्ठियो का आयोजन

विद्वतपरिषद—विभिन्न पत्र पत्रिकाओ मे प्रकाशित सिद्धान्त विरुद्ध लेखो का खण्डन एव अपने लेखो का प्रकाशन।

वैदिक प्रकाशन—श्रीमती सत्यवती सूद की स्मृति मे प्राप्त धन से २५ पुस्तको का प्रकाशन, श्रीमती दयावती बनाती, श्रीमती ईश्वर देवी, श्री महाशय धर्मपाल जी, श्री स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा प्रदत्त धनराशि से एक-एक पुस्तक का प्रकाशन। अब तक ४५ पुस्तके प्रकाशित की जा चुकी है।

आर्य सन्देश साप्ताहिक .

आर्य सन्देश साप्ताहिक का नियमित प्रकाशन। अब तक लगभग ४० विशेषाको का प्रकाशन किया जा चुका है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती पार्क .

दिल्ली मे लारेस रोड तथा राजोरी गार्डन क्षेत्रो में महर्षि दयानन्द पार्को का उद्घाटन कराने मे सहयोग।

जन सम्पर्क कार्यक्रम

दिल्ली, रोहतक, लखनऊ तथा आकाशवाणी केन्द्रो से समय-समय पर वार्ताए प्रसारित। दिल्ली दूरदर्शन पर लगभग १० कार्यक्रमो का प्रसारण। गत वर्ष छ कार्यक्रम प्रसारित किए गये। डा० धर्मपाल ने विभिन्न विद्वानो के सहयोग से इन कार्यक्रमो का आयोजन किया। डा० नगेन्द्र, डा० विजयेन्द्र स्नातक, डा० सत्यकाम वर्मा प० वन्देमातरम रामचन्द्रराव, प० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, प्रो० वाचस्पति उपाध्याय प० यशपाल सुधांशु, श्रीमती प्रभात शोभा पण्डिता, पण्डित क्षितीश कुमार वेदालकार, डा० वेद प्रताप वैदिक, डा० विश्वमित्र उपाध्याय, डा० महेश विद्यालकार आदि विद्वानो का भरपूर सहयोग। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर एक विशेष रिपोर्ट जिसमे देश-विदेश के विद्वानो के विचारो का डा० धर्मपाल ने सकलन किया एव प्रसारण कराया।

विभिन्न समारोहो एव कार्यक्रमों का आयोजन :

प्रतिवर्ष आर्य युवा महासम्मेलन
स्वामी आनन्दबोध सरस्वती दीक्षा समारोह
श्री ओमप्रकाश त्यागी को आर्य जगत की भावभीनी श्रद्धाजलि
पजाब दिवस

सस्कृत रक्षा दिवस
नई शिक्षा नीति विचार गोष्ठी
मेरठ और दिल्ली के साम्प्रदायिक दगे
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के शताब्दी समारोह मे सहभागिता।
हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह मे सहभागिता
राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के शताब्दी समारोह में सहभागिता
महात्मा अमर स्वामी का सम्मान
मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल वाराणसी रजत जयन्ती समारोह
महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म दिवस समारोह
श्री धर्मजित जिज्ञासु का सम्मान
व्यस्क फिल्मे एव अश्लीलता-सगोष्ठी तथा ज्ञापन पत्र
श्री प्रियव्रत दास का सम्मान
आर्य समाज बुद्धिजीवी सम्मेलन (क्रमश)

परामर्श—डा० धर्मपाल प्रो० सम्पादक—सूर्यदेव सह सम्पादक—विमलकान्त शर्मा व्यवस्थापक—सुरेन्द्र कुमार हिन्दी

"देवताओं का वास्तविक स्वरूप"

—आचार्य डा० सुरेन्द्र देव

निरुक्तकार यास्क के अनुसार समस्त ब्रह्माण्ड के मूल मे एक ही महाशक्ति विद्यमान है जिसका अत्यधिक ऐश्वर्य सम्पन्न होने के कारण "ईश्वर" नाम से कहा जाया करता है। वह एक है, अद्वितीय है, अजर है, अमर आदि अनेक विशेषणो से युक्त है। यही ईश्वर अनन्त शक्ति सम्पन्न है। इसी कारण उसे सर्व शक्तिमान् कहा जाया करता है।

उसकी प्रत्येक शक्ति को देवता माना जाता है। इस भांति उस अनन्त शक्ति सम्पन्न ईश्वर की अनन्त शक्तियो के कारण अनन्त देवो के रूप में पूजा एव अर्चना की जाया करती है—

'महाभाग्याद् देवताया एक एव आत्मा बहुधा स्तूयते।

एकस्यात्मनोऽन्ये देवा: प्रत्यङ्गानि भवन्ति।" निरुक्त ७।४।८।६।।

अर्थात् देवगण उस एक ही देवता की भिन्न-भिन्न शक्तियो के प्रतीक है। "बृहद्देवता" नामक ग्रन्थ मे भी निरुक्त के उपर्युक्त कथन का ही अनुमोदन किया गया है।। देखिये अध्याय १, श्लोक सख्या ६१-६५।।

ऋग्वेद भी इसी सर्वात्मक, सर्वव्यापक, ब्रह्मसत्ता का निरूपण करता है। इसी कारण उस परब्रह्म परमात्मा की सत्ता कार्य वर्गो मे अनुप्रविष्ट होकर सर्वत्र भिन्न-भिन्न आकारो मे दृष्टिगोचर हुआ करती है। प्रकृति के कार्यो के मूल में एक ही सत्ता है, एक ही नियन्ता है तथा एक ही देवता है। अन्य सभी देवता गण इसी मूलभूत सत्ता के विकास मात्र हैं। इस महत्वपूर्ण सिद्धान्त का प्रतिपादन विभिन्न रूपो मे वैदिक ऋषियो द्वारा किया गया है। ऐतरेय आरण्यक मे इस ही बात की पूर्ण रूप से पुष्टि की गई है कि "एक ही महती सत्ता की उपासना ऋग्वेदी जन "उक्थ" मे किया करते है, उसी की यजुर्वेदी-जन याज्ञिक-अग्नि के रूप मे उपासना किया करते है तथा सामवेदी-लोग 'महाव्रत' नामक याग मे उसी की उपासना किया करते हैं।

"एत ह्येव यह्वृचा महत्युक्थे मीमासन्त, एतमग्नावध्वर्यव एत महाव्रते छन्दोगा"।। ऐतरेय आरण्यक—३।२।३।१२।।

अतएव देवताओ के सम्बन्ध मे यह कहना भी उचित तथा युक्ति सगत प्रतीत होता है कि परमात्मा अनन्त शक्ति सम्पन्न है तथा उसकी प्रत्येक शक्ति को ही देवता नाम मे कहा गया है।

भारतवर्ष तो सृष्टि के आदि काल से ही शक्ति का पुजारी रहा है। उत्तर वैदिक कालीन सस्कृति के आधार पर यह कहा जाना उचित ही प्रतीत होता है कि प्रारम्भ मे यहा सर्व शक्तिमान परमात्मा की ही पूजा तथा अर्चना हुआ करती थी। शनै-शनै. उसकी शक्तियो का विभेदीकरण होता गया। परिणाम स्वरूप सर्वप्रथम ये शक्तिया तीन रूपो मे ही प्रकट हुई। (१) भगवान की उत्पादक शक्ति [ब्रह्मा के नाम से] (२) भगवान् की पालन कर्त्री शक्ति [विष्णु के नाम से] और भगवान् की प्रलयकारी शक्ति ['शिव' के नाम से]। इस भांति ईश्वर की वे अनन्त शक्तिया मात्र तीन ही रूपो मे प्रकट हुई।

मानव के अन्दर स्वार्थ की भावना तो पर्याप्त पूर्व काल से ही विकसित होती चली आ रही है। अत: उसने सोचा कि 'ब्रह्मा' का कार्य तो उत्पन्न करना है। वह तो हम को उत्पन्न कर चुका, अब हमको उससे क्या लेना-देना है। उत्पन्न होने के अनन्तर अब तो हम को केवल पालन कर्त्री शक्ति "विष्णु' से ही जीवन पर्यन्त काम है। अत: अब हमको विष्णु नामक पालन कर्त्री शक्ति की ही उपासना करना उचित है। इसी स्वार्थ दृष्टि के कारण भारत मे जितने भी अवतार हुए वे सभी "विष्णु" नामक शक्ति के ही निरन्तर अभी तक माने जाते रहे और उन्हीं की उपासना भी चलती चली आ रही है। प्रलयकारी शक्ति 'शिव" का पूजन भी भय के कारण होता चला आया होगा कि कहीं यह शक्ति हमारा विनाश न कर दे।

इसी भांति उस ईश्वर की अनन्त शक्तिया किसी न किसी देवता के रूप में कल्पित होती रही। परिणाम स्वरूप आज उसकी अनेक शक्तियां अनेक देवों के रूप मे पूजित हो रही हैं।

यहां पर यह कह देना भी उचित ही होगा कि अनेक देवो की उपासना कि जिनमे भगवान् की मात्र किसी एक ही शक्ति का प्रतिनिधित्व विद्यमान है, हम उस सर्व शक्तिमान् परमात्मा की ही उपासना किया करें कि जिसकी छत्र-छाया मे उसकी सभी शक्तियो का प्रतिनिधित्व अन्तर्निहित है।

निरुक्तकार यास्क ने तो देवाधिदेव एक परमात्म देव को ही स्वीकार करते हुए लिखा है कि विभिन्न नामो द्वारा पुकारा जाने पर देव एक ही है कि जिसके अभ्यन्तर सभी शक्तिया विद्यमान हैं—

तासा महाभाग्यात् एकैकस्यापि बहूनि नामधेयानि सन्ति, एकस्यात्मनोऽन्ये देवा: प्रत्यङ्गानि भवन्ति।"

अर्थात् उस एक ही आत्मा [परमात्मा] के सभी देवगण अश मात्र हैं। वह तो देवो का भी देव अर्थात् देवाधिदेव है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि देवगण उस मूलभूत परमसत्ता [परमात्मा] के ही प्रतीक हैं।

देवो का भी देव अर्थात् देवाधिदेव तो एक ही है कि जिसका सर्व श्रेष्ठ नाम 'ओ३म्" है और जिस ओ.म् शब्द के अभ्यन्तर विद्यमान् अ+उ+म् इन तीन अक्षरों के अभ्यन्तर भगवान के सभी नामो का अन्तर्भाव हो जाया करता है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम समुल्लास भी इसी दृष्टि से लिखा है—कठोपनिषद् मे आया है—

सर्वेवेदा यत्पदमामनन्ति तपासि सर्वाणि च यद्वदन्ति।

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पद सग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत् कठोप १।२।१५।।

अर्थात् ऋक्, यजु, साम और अथर्व—ये चारो वेद जिसका वर्णन करते हैं और ब्रह्मचर्यादि व्रत तथा धर्मानुष्ठान आदि जिस पद की प्राप्ति के लिए किए जाया करते हैं वह परमात्मा का वाचक शब्द "ओ३म्" है।

इस 'ओ३म्' के सम्बन्ध मे 'माण्डूक्य-उपनिषद्' भी कहता है—

"ओमित्येतदक्षरमिद, ७ सर्वं तस्योप व्याख्यान भूतभवद्भविष्यदितिसर्वमोङ्कार एव। यच्चान्यत् त्रिकालातीत तदप्योङ्कार एव।" मा० उप० प० १।।

अर्थात् 'ओम्' यह अक्षर [अविनाशी परमात्मा] है। यह सम्पूर्ण जगत् उसी की निकटतम महिमा का लक्ष्य कराने वाला है। भूत, वर्तमान एव भविष्यत तीनों प्रकार का यह जगत् [ब्रह्माण्ड] भी उसी ओङ्कार की महिमा का द्योतक है,तथा ऊपर कहे गये तीनो कालो से अतीत दूसरा तत्व है, वह सब भी ओङ्कार ही है।

छान्दोग्य उपनिषद् मे भी इस 'ओ३म्' का वर्णन निम्नलिखित रूप मे आता है—

'ओमित्येन दक्षरमुद्गीथमुपासीत" छा० उप० प० १।।

अर्थात् "ओ३म्" जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नही होता है उस ही की उपासना करनी उचित है।

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो गया है कि वह परमात्मा अनन्त शक्ति सम्पन्न है तथा उसकी प्रत्येक शक्ति को 'देवता' कहा जाया करता है। अनन्त शक्ति सम्पन्न होने से वह परमात्मा अनन्त देवो वाला हो जाता है। परन्तु ये सभी देव उस परमात्मा के ही अग और अङ्ग है। अत: वह देवताओ का भी देवता अर्थात् देवाधिदेव है। अत: उसी की उपासना करनी उचित है। उसी की उपासना का परिणाम क्या हो जाता है? यह कठोपनिषद् बतलाता है—

एतद्ध्येवाक्षर ब्रह्म एतद्ध्येवाक्षर परम्।

एतद्ध्येवाक्षर ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्यतत्" कठो० १।२।१६।

अर्थात् निश्चित रूप से यह अक्षर ही ब्रह्म है और निश्चित रूप से यह अक्षर ही परब्रह्म है अथवा सर्वश्रेष्ठ है। इस ही अक्षर को जान कर जो जिसकी इच्छा करता है, उसको वही प्राप्त हो जाता है।

साप्ताहिक ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य सन्देश

आर्य समाज और दृश्य-श्रव्य साधन



आर्य समाज एक सशक्त आन्दोलन है। आर्यसमाज ने केवल आध्यात्मिक क्षेत्र मे ही नहीं अपितु सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एव शैक्षिक क्षेत्र में भी विशिष्ट कार्य किया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा के फलस्वरूप सामाजिक समता दिलाने के लिए, सामाजिक कुरीतियो के उन्मूलन के लिए, उनके अनुयायियो ने अनेक कार्यक्रम किए। आज भी आर्य समाज महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। श्री रामदत्त भारद्वाज की अरब की जेल से रिहाई एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। कुछ सगठन अपने कार्यक्रमो के साथ-साथ, जनता को अपने कार्यक्रमो से परिचित कराने का कार्य भी साथ लेकर चलते हैं। वे समाचार पत्रो, आकाशवाणी, दूरदर्शन पोस्टर, साहित्य प्रकाशन, आदि के माध्यम से यह कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न कराते हैं। एक समय था, जब आर्य समाज के समारोहो मे भीड हुआ करती थी। लाहौर मे हमारे भजनोपदेशको को सुनने के लिए राष्ट्रीय नेता भी समय निकाल कर आया करते थे, पर अब ऐसा नही है। लोग घर में बैठ कर लालकिला की प्राचीर पर स्वतन्त्रता दिवस पर ध्वजारोहण देखते हैं। वे गणतन्त्र दिवस की परेड भी घर बैठे देखना पसन्द करते है। हमे इन ससाधनो की अभिवृद्धि मे भी सहयोग देना चाहिए।

आज दूरदर्शन पर हमें महात्मा गाधी, नेहरू, लाला लाजपत राय, सरदार पटेल, आदि दिखाई दे जाते हैं। हमे चाहिए कि हम अपने आर्य समाज के नेताओ के भी ऐसे ही बोलते हुए—आडियो, वीडियो कैसेट तैयार कराये। जो आज नही हैं, उन नेताओ के तो हम तैयार नही कर सकते। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, प० लेखराम, प० गुरुदत्त, महात्मा हसराज, महात्मा आनन्द स्वामी, महात्मा प्रभु आश्रित को तो हम कहा से लायेगे पर जो भी जीवित हैं, हमें उनके कैसेट तैयार कर लेने चाहिये। जो भी आज ७० वर्ष से अधिक की आयु के विद्वान, उपदेशक, नेता हमारे बीच मे है, हमें उनके कैसेट शीघ्र तैयार करने चाहियें, नही तो समय बीत जायेगा और हम हाथ मलते रह जायेगे।

डा० धर्मपाल

गौ रक्षा सम्मेलन

गौ भक्तों की २५वी पुण्य तिथि के उपलक्ष्य मे गौ रक्षा सम्मेलन रविवार दिनाक १०-११-९१ को हिन्दू महासभा लोनी के तत्वावधान मे रघुनाथ मन्दिर, राजीव गार्डन, लोनी में श्री ठा० फतेहसिह जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ।

वयोवृद्ध हिन्दू नेता श्री चमन लाल अर्त्रीय, हिन्दू महासभा गाजियाबाद के अध्यक्ष श्री जग बहादुर मलहोत्रा, हिन्दू महासभा लोनी के महासचिव श्री पन्ना लाल आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष श्री भोला मल्होत्रा, श्री योगी चन्द्र नाथ महन्त, डा० एम० सी० शर्मा, मा० किशनचन्द, श्री रामेश्वर दयाल, श्री विमल कुमार भारद्वाज आदि हिन्दू नेताओ ने गौ रक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए निम्न प्रस्ताव पारित कर उत्तर प्रदेश सरकार से माग की कि उत्तर प्रदेश मे गौ हत्या पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाया जाये क्योंकि देश की ८५ प्रतिशत जनसख्या इससे सम्बन्धित है। देश मे दूध की आवश्यकता को देखते हुए गोशालाओ का निर्माण किया जाये। रसोई गैस की देश मे अत्यन्त आवश्यकता है इसलिए इसके समाधान के लिए गोबर गैस प्लाट लगा कर लोगों को रसोई गैस सप्लाई की जाये।

पन्नालाल आर्य (महासचिव)

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय डाक्टर साहब ! सादर सप्रेम नमस्ते।

कल साय दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती के सामाजिक चिंतन पर आप लोगो का दूर दर्शन से कार्यक्रम देखा। हृदय गद्गद् हो गया। महाविद्यालय के सभी छात्र अपने टी० वी० से आप लोगो के विचारो को सुन कर अत्यन्त हर्षित हो रहे थे और विशेष कर आप से। अतः हमारी शतशः बधाइयाँ स्वीकार करे। मान्यवर प्रो० वाचस्पति जी व भाई महेश जी विद्यालकार को भी फोन से हमारी बधाई अवश्य भिजवा दीजिए। उन दोनो के ही पते मेरे पास नही है। हाँ वे दोनो विद्वान मेरे अभिन्न २ परिचितो में से हैं। सबको नमस्ते।

आचार्य दयानन्द शास्त्री

आदरणीय सभा प्रधान डा० साहब सादर नमस्ते।

आप सभी सदस्य "भगवत्कृपा" से स्वस्थ व प्रसन्नचित रहते हुए दिर्घायु होवे, यही प्रभु से प्रार्थना है। आपका "कृपापत्र" उपलब्ध हुआ। आप की सुन्दर भाषा, विचारो की मधुरता, अनेक गुण युक्त भावो मे अपनत्व एव परम श्रद्धाभाव पढ कर प्रसन्नता हुई। पृथक डाक मे "आर्य सन्देश" अप्राप्त अक व विशेषाक भी प्राप्त हुआ, यहा तक कि जो अक व विशेषाक मुझे कुछ दिनो पूर्व ही प्राप्त था, पृथक डाक से पुन. प्राप्त हुआ।

आर्य सन्देश सम्पादकीय विभाग का सबके प्रति अपनत्व भाव कुशल व्यवहार एव परम श्रद्धाभाव सभी श्रद्धालु जनो को सदैव ही सम्पादकीय मडल के प्रति कृतज्ञ रखेगा। सम्पादकीय विभाग एव सभा मण्डल सभी पाठको, प्रेमियो एव श्रद्धालु जनों को सतुष्ट रख तथा अनेकानेक भव्य विशेषाक सत् साहित्य के रूप मे देकर बहुत ही सहयोग और पुण्य अर्जित किया है। अत "आर्य जगत" आप सभी का अत्यन्त आभारी है।

मान्यवर, "आर्य सन्देश" एक सर्वोत्तम पत्र है। विसस्कृतिकरण के इस युग मे सस्कृति की रक्षा के लिए आर्य सन्देश अपनी मगलमयी कांती के लिए पूरी निष्ठा के साथ खडा है। अत. इसका प्रत्येक आगामी अक प्राप्त करने हेतु मन सदैव ही उत्सुक रहता है। सभा एव पत्रिका के उज्जवल भविष्य की मगल कामनाओ के साथ आर्य सन्देश के आगामी अक की प्रतीक्षा में हूं।

प्रज्वलित अग्नि मे लवलेश मात्र धुआ रह ही जाता है, तो हम जैसे अल्पज्ञ मानव के लिए कहना ही क्या है। अल्पज्ञतावश या असावधानीवश पत्र लेखन मे जो त्रुटिया हुई हो, उसके लिए विनम्र क्षमा याचना।

बाबूराम सिह

आदरणीय सम्पादक जी नमस्ते,

आप द्वारा प्रेषित पत्र १९-१०-९१ व यू पी. सी. द्वारा पत्रिका तथा विशेषाक प्राप्त हुआ इसी प्रकार पत्रिका अनवरत आती रहे। आपकी पत्रिका मे भूकम्प पीडितो के सहायतार्थ सूचना छपी थी पढ कर बडी प्रसन्नता हुई। हम लोग भी भूकम्प पीडितो के लिए कूपन छपवा कर सहायता ले रहे है।

राजीव कुमार आर्य

११२वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मेस्टन रोड, कानपुर का ११२वा वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी शुक्रवार से शनिवार तदनुसार २८-२९ फरवरी १, २ मार्च, १९९२ तक श्रद्धानन्द पार्क व आर्य समाज भवन में मनाया जाना निश्चित हुआ है। नगर कीर्तन, शुक्रवार, २८ फरवरी को साय काल ४ बजे से तथा महोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव २९, फरवरी तथा १-२ मार्च को। विस्तृत कार्यक्रम बाद मे प्रकाशित किया जायेगा।

डा० विजयपाल शास्त्री

वेदान्त

—श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद,

आज कल वेदान्त की बड़ी धूम है, भारत मे ही नहीं–विदेशो मे भी। भारत मे तो बड़े-बडे वेदान्त सम्मेलन भी होते है अखिल भारतीय स्तर तक—और इन सम्मेलनो मे बड़े बड़े विद्वानों, बड़ेबड़े महारथियो के अत्यन्त मार्मिक-ओजस्वी तथा लच्छेदार भाषण होते हैं। सम्मेलनो का होना अच्छा है, उपयोगी है अतः होने चाहिये। इनके होने से जनता के सामने विचार आते हैं—चित्र का कोई पहलू आता है। लोगो को विचारने, सोचने और समझने का अवसर मिलता है। भाषणो को सुनने से विचारों के वर्ण गोचर होने से मनुष्य को प्रेरणा मिलती है। वाणी की बड़ी शक्ति है—वाणी अग्नि है "वाग्वे अग्नि."। अग्निः अग्रणी भवति अग्निः अग्रणी होता है आगे ले चलने वाला होता है, आगे-आगे चलता है। वाणी सचमुच आगे-आगे चलती है, आगे ले जाने और ले चलने वाली होती है। वाणी से निकली ध्वनि सुन कर मनुष्य उसके आश्रय से अन्धेरे मे भी निर्दिष्ट पर पहुच जाता है। वाणी द्वारा ज्ञानोपदेश सुन कर मनुष्य इहलौकिक और पारलौकिक, भौतिक और आत्मिक दोनो प्रकार की उन्नति करता है, दोनो ही क्षेत्रो मे प्रगति को प्राप्त होता है, दोनो ही क्षेत्रो मे आगे बढता है।

(अप-अगि-इण) इन तीन धातुओ से अग्नि शब्द बनता है। इन तीनो ही धातुओ का अर्थ है "गति" जिससे जीवन को गति प्रगति उन्नति प्राप्त हो, उसका नाम अग्नि है, जो लोग अध्ययन नही कर पाते और जिन्हें अध्ययन के साधन उपलब्ध नही होते, वह भी सभा सम्मेलनों मे विद्वान वक्ताओ की वाणी से निकले शब्दो द्वारा ज्ञान-चर्चा सुन कर अपने जीवन को पतन के गर्त से निकाल कर सद्मार्ग की ओर ले जाते देखे जाते हैं। इतिहास साक्षी है कि अत्यन्त पतितावस्था मे पड़े लोगो के जीवन भी वाणी के प्रभाव से अत्यन्त पवित्र बने हैं। इस सदर्भ में इस प्रकार की घटनाओ मे से हम यहाँ यह कहने का लोभ सवरण न कर सकेंगे कि मद्यपान और वेश्या गमन मे अत्यन्त लिप्त अमीचन्द को महर्षि स्वामी दयानन्द के इन शब्दो ने कि "अमीचन्द—थे तो तुम मोती, मगर कीचड मे फसे हो" "भक्त अमीचन्द" बना दिया। अवश्यमेव भोक्तव्य कृतं कर्म शुभाशुभम् अर्थात् किये हुए कर्मो का फल चाहे वह शुभ हो या अशुभ—अवश्यमेव भोगना पडता है। स्वर्गीय श्री पण्डित गणपति शर्मा के भाषण मे इन शब्दो को सुन कर करनाल जनपद (हरियाणा) का मुगला डाकू धर्म-प्रचारक बन गया था, एतदर्थमेव उपर्युक्त प्रकार के सम्मेलनो की उपयोगिता और उनके महत्व से नकार नही किया जा सकता।

यही वाणी–जो सभा सम्मेलनो मे सुनने को मिलती है, लिखी जाकर—पुस्तक के रूप मे–शिक्षित और अध्ययन शीलजनों के जीवनो के लिए प्रगति का कारण बनती है। किन्तु प्रश्न तो यह है कि इस प्रकार के सभा सम्मेलनो मे जो चर्चा सुनने को मिलती है और पुस्तको मे जो सामग्री पढ़ने को मिलती है, वह जीवन के लिए कितनी उपयोगी होती है! अभिप्राय यह है कि वह चर्चा जो हम सम्मेलनो मे सुनते और पुस्तको मे पढ़ते हैं, विषय के अनुरूप भी होती है या नही। उदाहरण के लिए वेदान्त की ही बात ले लीजिए, जो हमारा प्रस्तुत विषय है। क्या 'वेदान्त-सम्मेलन' के नाम पर श्रोताओ को वेदान्त चर्चा सुनने को मिलती है? यदि मिलती है तो कितने अशो मे? यह एक प्रश्न है, जिसकी उपेक्षा नही की जा सकती। कुछ न कुछ तो मिलता ही है—यह अलग बात है किन्तु जो मिलना चाहिए, वह भी मिलता है या नही?

उपर्युक्त शब्दो मे वेदान्त सम्मेलनों की आलोचना करना हमारा उद्देश्य नही है किन्तु हमे यह सोचने का तो अधिकार है कि इन सम्मेलनो को तिरस्कृत किया जाय, पुरस्कृत किया जाय या परिष्कृत किया जाय? जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, हम इनका तिरस्कार नही करना चाहते—परन्तु यह भी सत्य है कि हम इन्हे पुरस्कार देने को भी तैयार नही। हमारी सम्मति मे तो इन सम्मेलनो का परिष्कार होना चाहिए कि जो इधर-उधर की निरर्थक सामग्री, अनर्गल और अनावश्यक चर्चा इन सम्मेलनो मे होती है, वह बन्द की जाय, उसकी छटनी कर दी जाय और जो आवश्यक, अनिवार्य तथा वास्तविक वेदान्त चर्चा है, उसे सम्मिलित किया जाय।

जहा तक वेदान्त सम्बन्धी साहित्य का प्रश्न है, पुस्तक विक्रेताओ के यहा स्वामी विवेकानन्द का वेदान्त तो सरलता से मिल सकता है। स्वामी रामतीर्थ और रामकृष्ण परमहस की वेदान्त विचार धारा के ग्रन्थ भी मिल जायेगे किन्तु वेदान्त दर्शन जो छः दर्शनो मे से एक है, जिसके रचियता महर्षि वेदव्यास थे, बादरायण मुनि के पुत्र और शिष्य कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास—वह परोक्ष की वस्तु बनने जा रहा है, वह पर्दे के पीछे पडता जा रहा है वह जनता की दृष्टि से दूर अति दूर—जनता की आंखों से ओझल होता जा रहा है। वेदान्त सूत्रो के प्रणेता उस साक्षात्कृत धर्मा को लोग भूलते जा रहे हैं। उसकी ज्ञान रश्मिया अब जनता की दृष्टि के सामने नही है।

जब उस महा-तपस्वी और महा-मनीषी महर्षि वेदव्यास का वेदान्त दर्शन ही जनता की दृष्टि में नहीं है तो उसका मूल स्रोत अर्थात् वह ज्ञान अत्यन्त तपस्या पूर्वक जिसका मन्थन करके अपनी प्रतिष्ठित प्रज्ञा द्वारा उस तपोधन ने मानव कल्याण के लिए इन सूत्रो की रचना की थी वह जनता के सामने किस प्रकार आये? जनता उस अक्षय ज्ञान-कोष को किस प्रकार प्राप्त करे? यह एक समस्या है। इसी समस्या के समाधान को लक्ष्य करके यह पग उठाने का साहस किया गया है।

इन पृष्ठो में स्वामी विवेकानन्द जी महाराज, स्वामी रामतीर्थ जी तथा परमहस स्वामी रामकृष्ण जी के दार्शनिक दृष्टिकोण की आलोचना हम नही कर रहे—न हम उनके महत्व को ही कम करना चाहते हैं और न कम करके आंकना चाहते है। हम तो इन मनीषियों को अपने-अपने समय की विभूतियां मानते हैं किन्तु हमें यह कहने में लेश मात्र भी सकोच नही है कि इन तीनो ही मनीषियों की विचार धारा कालाबद्ध है। यह तीनो आचार्य शंकर के पीछे चलते हैं। इनके प्रेरणा स्रोत आद्य शकराचार्य हैं। और शकराचार्य की विचार धारा तात्कालिक परिस्थितियों से प्रेरित तथा प्रभावित है। उस समय अबाध गति से फैलते हुए बौद्ध और जैन मतों की अनीश्वरवादी विचार धारा से व्याकुल होकर परम आस्तिक भगवान शकराचार्य ने ईश्वरवाद की विचारधारा के रक्षण, प्रचार तथा प्रसार के लिए इस विचारधारा को अपनाया था, जो शांकर-दर्शन के नाम से प्रचलित है और जिसे सामान्यतया लोग अद्वैतवाद के नाम से जानते हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जगदगुरु शकराचार्य के विषय मे अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश के एकादश समुल्लास मे लिखा है—"जो जैनियों के खण्डन के लिए ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या और जीव ब्रह्म की एकता कथन की थी।" इन शब्दो से यह स्पष्ट है कि जगदगुरु की विचाराधारा तात्कालिक परिस्थितियों से प्रभावित थी। "विषस्य विष औषधम्" अर्थात् विष की औषधि विष ही होता है, इस सिद्धान्त के अनुसार आचार्य शकर ने "सब कुछ प्रकृति ही है, ईश्वर है ही नही,' जैनियो और बौद्धो की इस विचारधारा के सम्मुख के लिए "सब कुछ ईश्वर ही है, और कुछ है ही नहीं" की समानान्तर रेखा खींची थी। उन्होने उस समय को वेदान्त दर्शन की गहराइयो में जाने के लिए उपयुक्त नहीं समझा।

वेदान्त दर्शन—जिसके रचयिता महर्षि वेदव्यास हुए हैं और जिसकी चर्चा हम ऊपर कर चुके हैं—वह सत्य अपरिवर्तित, कालातीत तथा मूल-भूत सिद्धान्तों और सत्यताओं का तत्व-सार-सग्रह है, और उसका मूलाधार वेद है। वह वेद जो अकाल पुरुष की देन है, जो उस अनादि पूर्ण-पुरुष परमेश्वर के ज्ञान मे सदा-सर्वदा बना रहता है। जो कालाबाधित नही अर्थात् जिसका मूल सम्बन्ध न भूत से है, न वर्तमान से और न भविष्य से। जो सब कालो में उस-उस काल के अनुसार समस्त मौलिक समस्याओ के वास्तविक हल प्रस्तुत करता है। जिसमें समस्त सत्य विद्याओ का मूल है जिसमें ऐसी कोई बात नहीं, जो अब अनुपयोगी हो चुकी हो अथवा आगे किसी काल में अनुपयोगी हो जायेगी। जिसमे ऐसी भी कोई बात नहीं, जिसकी केवल भविष्य में आवश्यकता होनी सम्भव है या जो केवल भविष्य के लिए ही है। न वह ऐसा भडार है, जिसकी रचना किसी देश विशेष के लिए ही की गयी हो। वह तो ऐसा ज्ञान भण्डार है, जो सार्वकालिक और सार्वभौमिक ही नहीं अपितु उससे भी—सार्वभौमिक से भी आगे समस्त सृष्टि में जहा-जहां भी मानव है या उसकी उपस्थिति सम्भव है वह ज्ञान परमोपयोगी है। कारण इसका यही है कि यह किसी मनुष्य की नहीं अपितु ईश्वरीय देन है।

(क्रमशः)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार १९९२

ज्ञातव्य है कि संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा निर्धारित २१०० रुपये का आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार प्रतिवर्ष गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय द्वारा दिया जाता है। विगत वर्षों मे यह पुरस्कार निम्न गण मान्य शिक्षा विदो तथा समाज सेवको को उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए दिया गया है। प्रो० रामप्रसाद वेदालकार, डा० भवानीलाल भारतीय, प० विश्वनाथ विद्यालंकार, प० सत्यकाम विद्यालकार, श्री भगवत दत्त वेदालकार, डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, श्री दत्तात्रेय बाब्ले, डा० लक्ष्मीनारायण दूबे, श्री क्षितीज वेदालकार, डा० कपिल देव द्विवेदी, डा० रामनाथ वेदालकार।

चयन सम्बन्धी नियम :

१. आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार उन्ही सज्जनो एव सभाओ को दिया जा सकेगा जो वेद, उपनिषद, दर्शनशास्त्र आदि आर्य साहित्य का प्रचार एव प्रसार जन सामान्य तक करें।

२ उक्त विषय पर शोध करने वाले व्यक्ति /सस्थान भी उक्त पुरस्कार पाने के अधिकारी हो सकते हैं।

३ उक्त विषयो पर सगीत काव्य तथा नाटक रच कर अथवा नाटक को रगमच पर दिखलाने वाले व्यक्ति या नाटक मण्डली भी इस पुरस्कार के लिए आमन्त्रित किए जा सकते हैं।

४. उक्त विषयो पर आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रचार एव नाटक आदि के माध्यम से जनसामान्य को उदात्त वैदिक भावना से आप्लावित करने वाले व्यक्ति या सस्था को उक्त पुरस्कार पाने हेतु सम्मिलत किया जा सकेगा।

५ उक्त विषयो का ग्राम-ग्राम मे जाकर मैजिक लालटेन, पुतली प्रदर्शन अथवा भजनो द्वारा प्रचार करने वाले व्यक्ति या मण्डली/सभा भी उक्त पुरस्कार पाने हेतु प्रार्थी हो सकते हैं/सकती हैं।

६. आधुनिक युग में विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करने हेतु अथवा सतुलित व्यक्तित्व के विकास हेतु योग की उपयोगिता सम्बन्धी सरल साहित्य जो सामान्य जन मानस को प्रभावित कर सके, लिखने अथवा प्रकाशित करने वाले व्यक्ति, सभा और प्रकाशक आदि को भी पुरस्कार पाने वालो मे सम्मिलित किया जा सकता है।

उक्त पुरस्कार चयन नियमो को परिवर्तित एव परिवर्धित करने का अधिकार सघड विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर को होगा।

आपसे निवेदन है कि यदि आपकी दृष्टि मे कोई महानुभाव अथवा सस्था आगामी वर्ष के लिए इस पुरस्कार के योग्य हो तो उसका पूर्ण विवरण सलग्न पत्र में निम्न पतो पर ३० नवम्बर, १९९१ तक भेजने की कृपा करें।

१. श्री जी० बी० के० हूजा, अध्यक्ष, सघड विद्या ट्रस्ट, ए १५ए, विजय पथ, तिलक नगर, जयपुर ३०२००४।

२. श्री वीरेन्द्र अरोडा, कुलसचिव, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

वीरेन्द्र अरोडा (कुलसचिव)

विवरण पत्र

१ नाम
२ पता
३ आयु
४ योग्यता
५. प्रकाशित कृतिया
६. पुस्तकों की विधा
७. पुस्तको का प्रतिपाद्य
८. प्रकाशन वर्ष
प्रकाशक का नाम
९. वेद प्रचार मे किए गए कार्यों का विवरण
१० आर्य समाज के प्रचार प्रसार मे की गई सेवाए
११ यदि किसी अन्य सस्था द्वारा सम्मानित किए गए हो तो उसका विवरण
१२. प्रस्तावित कृति पूर्व पुरस्कृत हुई है या नही, यदि हुई हो तो उसका विवरण

कृपया चुनी हुई पुस्तकों की एक प्रति श्री जी० बी० के० हूजा, तथा तीन प्रतिया श्री वीरेन्द्र अरोडा, कुलसचिव, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय को प्रेषित करने का कष्ट करें।

प्रखर राष्ट्रवादी साहित्यकार वैद्य गुरुदत्त

—नरेन्द्र अवस्थी

भारतीय पुनर्जागरण के मार्गद्रष्टा, वर्तमान युग के ऋषि हिन्दू सस्कृति के शाश्वत मूल्यो को तर्क सगत आधार पर अपने उपन्यासो मे ढालने वाले साहित्य मनीषी व प्रख्यात उपन्यासकार श्रद्धेय वैद्य गुरुदत्त ने अपने साहित्य से लाखो पाठकों को मात्र प्रभावित ही नही किया अपितु प्रखर राष्ट्र भक्ति की जीवन दृष्टि दी। ४६ वर्ष के लेखन क्रम मे २५० से अधिक कृतिया प्रकाश मे आ गई, जिनमे उपन्यासो के अतिरिक्त चिन्तन परक रचनाए ब्रह्मसूत्र, गीता उपनिषद् एव दर्शन शास्त्रो की व्याख्या एव समीक्षाएं भी सम्मिलित हैं। उन्होने दो पुस्तकें अग्रेजी मे भी लिखी हैं।

आयुर्वेद, राजनीति, दर्शन और वैदिक वाङ्मय के क्षेत्र मे उनकी देन कहीं अधिक व्यापक और सराहनीय है। वैद्य गुरुदत्त का मत था कि वेद ज्ञान के भण्डार हैं। ऋग्वेद मे विज्ञान के मूल सिद्धान्त हैं। उन्होने इस विचार को युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के शब्दो में प्रकट किया है—'ऋक् का अर्थ स्तुति है। स्तुति का अर्थ है वस्तु के गुण, कर्म तथा स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करना अत: ऋग्वेद का अभिप्राय है कि पृथ्वी से लेकर परमात्मा पर्यन्त सब पदार्थों की स्तुति अर्थात गुण, कर्म एव स्वभाव का वर्णन।" इसका यह अभिप्राय नही कि वायुयान पर्यन्त सबका वर्णन वेद से मिलेगा। वेद मे केवल ईश्वर कृत पदार्थों का वर्णन है। मनुष्यकृत पदार्थों का नहीं। वैद्य गुरुदत्त ने ऋग्वेद को ही प्रथम स्थान दिया है और उसके मन्त्रो का मनन करने के उपरान्त उनमें वैज्ञानिक सिद्धान्त ढूढ निकाले हैं। वैद्य गुरुदत्त जी विज्ञानाचार्य थे, इसलिए उनका शोध कार्य सरल हो गया। विज्ञान, धर्म, दर्शन ही नही उन्होने अनेक ऐतिहासिक तथ्यो की खोज की, उनके आदर्श वेदकालीन आर्य भारत से सम्बन्धित है। जीवन मे उनकी दृष्टि व्यावहारिक रही है। उन्होंने देशवासियो की धार्मिक, सामाजिक व सास्कृतिक विचारधाराओं का चित्रण किया है। आपने अनेक उपन्यासो मे पाश्चात्य सभ्यता को तथ्यहीनता को उजागर किया है, और यह उल्लेख किया है [illegible] ात्य सस्कृति ने भारतीय जन-जीवन को कैसे अस्त-व्यस्त कर दिया है।

वैद्य गुरुदत्त का जन्म ८ दिसम्बर १८९४ को लाहौर (पाकिस्तान) मे हुआ। आपकी शिक्षा डी० ए० वी० स्कूल तथा डी० ए० वी० कालेज मे हुई। १९१९ मे गवर्नमेंट कालेज लाहौर से एम० एस० सी० परीक्षा उत्तीर्ण की। जिन दिनो आप कालेज के छात्र थे उन दिनो प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सरदार अजीत सिंह के नेतृत्व मे भारत माता सोसायटी की स्थापना हुई। गुरुदत्त जी प्राय. इसकी बैठको मे भाग लेते थे। अध्यापक व सोसायटी छात्रो मे राष्ट्रीय भावना भरने में सक्रिय थे। इन सबका गुरुदत्त के मस्तिष्क पर प्रभाव पडा।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

दिल्ली आ० प्रा० सभा द्वारा प्रचार

अक्तूबर १९९१—

—२१ से २७ अक्तूबर आर्य समाज डिफेन्स कालोनी मे सप्ताह तक वेद प्रवचन एव सगीत का कार्यक्रम रखा गया— जिसमे पं० सत्यदेव स्नातक एव श्री ज्योति प्रसाद ढोलक वादक का भजनोपदेश होता रहा।

—आर्य समाज न्यू मोतीनगर मे २८ अक्तूबर से ३ नवम्बर तक प० चुन्नी लाल आर्य भजनोपदेशक का संगीतमय प्रचार रहा।

नवम्बर १९९१—

—आर्य समाज नागौरी गेट हिसार के वार्षिक उत्सव पर प० सत्यदेव स्नातक और श्री ज्योतीप्रसाद भजन मण्डली का कार्यक्रम रहा। ८ से ९ नवम्बर तक प्रचार कार्य हुआ।

साथ ही २ व ३ नवम्बर को दिल्ली देहात मे धूम-धाम के साथ प्रचार हुआ ग्राम बाजीतपुर मे प० सत्यदेव स्नातक की भजन मण्डली द्वारा प्रचार रखा गया जिसकी व्यवस्था श्री रामसिंह आर्य द्वारा की गई थी।

बिहार प्रान्त में भी दिल्ली सभा की भजन मण्डलियां—आर्य समाज गढवा जि०पलासू मे १२ से २१ नवम्बर १९९१ मे पण्डित सत्यदेव स्नातक द्वारा सगीतमय कार्यक्रम रखा गया और धूम-धाम के साथ यज्ञ प्रवचन भजनोपदेश होता रहा।

—आर्य समाज कलौदा जि० बुलन्दशहर में प० चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक का कार्यक्रम रहा और सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ यहा १५, १६, १७ नवम्बर को वार्षिकोत्सव मनाया गया।

आर्य समाज आनन्द विहार एल ब्लाक में १८ से २४ नवम्बर तक पण्डित ज्योति प्रसाद आर्य प्रचारक का कार्यक्रम रहा।

—२५ से २७ नवम्बर आर्य समाज दरियागज मे प० सत्यदेव स्नातक की भजन मण्डली द्वारा एक सप्ताह तक भजनोपदेश का कार्यक्रम रखा गया।

—चौ० सर छोटूराम के ११०वें जन्म दिवस समारोह मे रविवार दिनांक २४ नवम्बर को प्रात: १० बजे छोटूराम रुरल इन्स्टीच्यूट आफ टैक्नोलोजी कझावला (बेवरा) के प्रागण मे विशेष कार्यक्रम का आयोजन रहा इस शुभावसर पर खेल-कूद भाषण प्रतियोगिता चित्रकला प्रतियोगिता लम्बी कूद ऊंची कूद गोला फेंकना इत्यादि कार्यक्रमो का आयोजन रहा। दिल्ली सभा की भजन मण्डलियो द्वारा वैदिक धर्म प्रचार रहा। और धूम-धाम के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न रहा।

—आर्य समाज रामगली घण्टा घर मे २१ से २७ नवम्बर १९९१ को आचार्य हरिदेव सिद्धान्त भूषण तर्क केसरी महोपदेशक का वेद प्रवचन रहा। साथ ही पण्डित चुन्नीलाल आर्य भजनोपदेशक का मधुर सगीतमय प्रचार होता रहा। यज्ञ प्रवचन द्वारा यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इसके अतिरिक्त दोपहर आफिस अवकाश के समय बोट कलब आर० के० पुरम इत्यादि स्थानो पर वैदिक धर्म प्रचार होता रहा।

जोधपुर में महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर भव्य आयोजन

दिनांक ९-११-१९९१ को जोधपुर के जयनारायण व्यास टाऊन हाल मे महर्षि दयानन्द का १०८वां निर्वाण दिवस पजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ के सेवा निवृत अध्यक्ष प्रो० भवानीलाल भारतीय की अध्यक्षता मे मनाया गया। जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० [illegible] आर० मेहता समारोह के मुख्य अतिथि थे। श्री क्षेनेन्द्र शर्मा के प्रस्तावना भाषण के पश्चात् जोधपुर विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो० दयानन्द भार्गव ने महर्षि को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अग्रणी बताया। उनके अनुसार स्वामी दयानन्द मध्यकाल और आधुनिक युग की सीमा पर खडे हैं और उनके द्वारा ही नवीन चिन्तन तथा वैचारिक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ है।

कुलपति प्रो० मेहता ने ऋषि दयानन्द के वेदो की ओर लौटने के सन्देश का सही विश्लेषण करते हुए महर्षि के वैज्ञानिक दृष्टिकोण की प्रशसा की। अपने अध्यक्षीय भाषण मे प्रो० भारतीय ने स्त्रियों और शूद्रों को वेद पठन-पाठन का अधिकार देने के लिए ऋषि की क्रान्तदर्शी विचारधारा का उल्लेख करते हुए उन्होंने भारत की राष्ट्रीयता का [illegible] स्वराज्य का उद्घोषक सिद्ध किया।

सभा मे एक प्रस्ताव स्वीकार कर अजमेर विश्वविद्यालय को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय घोषित करने के लिए राजस्थान सरकार से अनुरोध किया गया। साथ ही आर्य समाज सरदारपुरा ने जोधपुर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में स्वामी दयानन्द की वेदभाष्य प्रणाली के आधार पर अध्ययन करने वाले छात्रों को ५,००० रुपये की वार्षिक छात्रवृत्ति देने की भी घोषणा की।

समारोह को सफल बनाने के लिए आर्य समाज सरदारपुरा के मन्त्री श्री सुखदेव गोयल तथा उपमन्त्री श्री राजेन्द्र गुप्ता का पुरुषार्थ सर्वाधिक प्रशसनीय रहा।

सुखदेव गोयल

प्रस्ताव

जोधपुर नगर की समस्त आर्य समाजों की महा सभा राजस्थान सरकार से निवेदन करती है कि वह 'अजमेर विश्वविद्यालय' का नामकरण राष्ट्रीय विचार धारा के अग्रदूत तथा महान् समाज सुधारक महर्षि दयानन्द के नाम कर इसे अविलम्ब 'महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय अजमेर' घोषित करे। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि स्वामी दयानन्द का निधन ३० अक्तूबर १८८३ को अजमेर में ही हुआ था और उनके पश्चात अजमेर की शैक्षिक प्रवृत्तियो मे आर्य समाज का योगदान सर्वाधिक रहा। आज भी अजमेर नगर में आर्य समाज द्वारा सचालित अनेक शिक्षण सस्थायें समाज की उन्नति मे अपना योगदान कर रही हैं। स्वयं महर्षि दयानन्द भी महान देश भक्त, शिक्षा शास्त्री तथा स्वराज भावना के प्रबल समर्थक थे।

इन तथ्यो को ध्यान में रखते हुए यह सर्वथा उचित ही है कि 'अजमेर विश्वविद्यालय का नाम—महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय' घोषित किया जाये।

जोधपुर नगर में प्रकाशवीर शास्त्री स्मारक व्याख्यान माला का भव्य आयोजन

आर्य जगत तथा देशवासियों को यह जान कर अपार प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज के शिरोमणि नेता तथा विद्वान्, महान देश भक्त तथा कुशल राजनीतिज्ञ एव सांसद स्व० प्रकाशवीर शास्त्री की पावन स्मृति में सरदारपुरा एवं शास्त्रीनगर आर्य समाजो की ओर से प्रति वर्ष उनके जन्म दिवस (दिसम्बर) पर किसी महत्वपूर्ण विषय पर एक विद्वान के दो व्याख्यानों का क्रम आयोजित किया जायेगा। इस व्याख्यानमाला मे किसी अधिकृत व्याख्याता के वैदिक धर्म, आर्य समाज का भारतीय राष्ट्रवाद को योगदान तथा इसी प्रकार के अन्य उपयोगी विषयो पर व्याख्यान रखे जायेंगे जो स्वल्प समय के पश्चात् प्रकाशित भी किए जायेंगे। आपका स्व० शास्त्री जी के प्रति प्रेम और सौहार्द रहा है। अत: आपसे निवेदन है कि इस पुण्य स्मारक मे अपनी यथोचित सहायता राशि निम्न पते पर भेजें। देश-विदेश की आर्य समाजो से भी प्रार्थना है कि वे इस विज्ञप्ति का अपनी समाजो और सदस्यो में अधिकाधिक प्रचार करे या इस वर्ष की व्याख्यानमाला को सफल बनाने मे अपना सक्रिय सहयोग दें।

यह निश्चय किया गया है कि यह व्याख्यानमाला एक निरन्तर चलने वाली प्रवृत्ति के रूप मे स्थापित की गई है। अत: यदि कोई दानी महानुभाव या सस्था एक वर्ष के व्याख्यान क्रम के सम्पूर्ण व्यय को वहन करना चाहे तो वे भी हमे सूचित करें ताकि उन्हे इस वर्ष की व्याख्यानमाला के आतिथेय होने का सम्मान प्रदान किया जा सके। हमारे विचार से अन्य साधनों की अपेक्षा इस प्रकार की व्याख्यानमाला आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के मिशन को सफल बनाने में आ[illegible] सिद्ध हो सकती है।

रमेशचन्द भाटिया — प्रधान — दूरभाष : ३०७३७

सुखदेव गोयल — मन्त्री — दूरभाष : [illegible]

आर्य समाज सरदारपुरा, जोधपुर-३४२००३

सम्पर्क सूत्र : प्रो० भवानीलाल भारतीय पूर्व प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय, ८/४२३ नन्दनवन, जोधपुर-३४२००८

(पृष्ठ ५ का शेष)

एम० एस० सी० उत्तीर्ण करने के उपरान्त आप गवर्नमेंट कालेज, लाहौर डिमांस्ट्रेटर के पद पर नियुक्त हुए। तदुपरान्त विवाह कर गृहस्थ जीवन मे प्रवेश किया था कि उन्ही दिनो स्वदेशी आन्दोलन और अंग्रेज सरकार के प्रति असहयोग की भावना ने उनके जीवन को ऐसा प्रभावित किया कि गुरुदत्त जी ने सरकारी नौकरी को त्याग दिया। कुछ दिनो बाद लाहौर मे नेशनल स्कूल के मुख्यअध्यापक पद पर कार्य करने लगे। १९२६ मे स्कूल बन्द होने पर उत्तर प्रदेश की अमेठी ताल्लुकेदारी के कुंवर रणजय सिंह विधायक के सचिव पद पर कार्य किया। १९३१ मे आयुर्वेद की शिक्षा प्राप्त कर चिकित्सा कार्य आरम्भ किया, १९३३ मे लाहौर चले आये तथा वहां चिकित्सा कार्य किया। १९३७ में दिल्ली में वैद्यकी आरम्भ की।

सन् १९४२ मे 'स्वाधीनता के पथ' नाम से प्रथम उपन्यास प्रकाशित हुआ। १९४४ में 'पथिक' उपन्यास १९४७ मे 'स्वराज्य दान' नामक उपन्यास प्रकाशित हुए। १९२ उपन्यास, दर्शनशास्त्रो पर विवेचन तत्व रचनाए १७ राजनैतिक अध्ययन ३, सस्मरण, १३ नाटक, २ अप्रकाशित ८ कुल रचनाए २४१ लिखी है। इनके ऐतिहासिक उपन्यास विक्रमादित्य साहसांक, मेघवाहन, सागर-तरग, वैज्ञानिक उपन्यास सहस्रबाहु, गगन के पार, अन्तरिक्ष मे, सामाजिक उपन्यास कला, कामना, अनदेखे बन्धन, मानव, राजनैतिक उपन्यास स्वाधीनता के पथ पर, पथिक जमाना बदल गया आदि विशेष रूप से चर्चित रहे। साहित्य साधना के साथ उन्होने राजनीति मे भी कुछ समय तक सक्रिय भाग लिया। भारतीय जनसघ के सस्थापकों मे वे प्रमुख रहे हैं, उन्होने उसके विभिन्न पदो पर रह कर भारतीय राजनीति मे अपना सक्रिय योगदान दिया। बाद मे कुछ कारणो से राजनीति से सन्यास ले लिया। ८ अप्रैल १९८९ को हिन्दू धर्म का अद्भुत व्याख्याकार निर्भीक राष्ट्रवादी साहित्यकार इस ससार से सदा के लिए विदा ले गया। वैद्य गुरुदत्त जी एक चिकित्सक थे उन्होने हिन्दू समाज व राष्ट्र की दुबलताओ के कारणो को खोजा और अपने साहित्य मे उनका निदान प्रस्तुत किया। मगर एक दुखद बात यह है कि यूनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार वैद्य गुरुदत्त सर्वाधिक पठित लोकप्रिय उपन्यासकार होते हुए भी सब से अधिक उपेक्षित रहे।

नरेन्द्र अवस्थी

आर्यसन्देश—दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-११०००१

R.N. No. 32387/77 Posted at N.D.P.S.O. on 28-29-11-1991 Licence to post without prepayment, Licence No. U 139

दिल्ली पोस्टल रजि० नं० डी० (सी०) ७५६ पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू १३६

साप्ताहिक "आर्यसन्देश" १ दिसम्बर, १९९१

दीपावली-प्रार्थना

—पं० मनोहर विद्यालंकार

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूः, येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि ।
यो रत्नधा वसुविद् यः सुदत्रः सरस्वति तमिह धातवे कः ।। ऋक् १-१६४-४९
ऋषि —दीर्घतमाः । देवता—सरस्वती । छन्दः—निचृत् त्रिष्टुप् ।

शब्दार्थ – हे (सरस्वती) शुभ लक्ष्मी (ते स्तनः) तेरा स्तन और शब्द (शशयः) सन्तोष और शान्ति द्वारा अभाव और अज्ञान को विलीन करके सुख की नींद सुलाता है, तथा (मयोभूः) सुखी रखता है। (येन) जिसके पान और ध्वनि के साथ (विश्वा वार्याणि पुष्यसि) तू सभी वरणीय और आवश्यक पदार्थों को सपुष्ट करके प्राप्त कराती है। (यः) तेरा मधुर स्वन (रत्नधा? रमणीय पदार्थों और अनुभूतियों को धारण करता है, (वसु विद्) जगत मे निवास के लिए आच्छादन (वस्त्र+निवास) सामग्री को प्राप्त करता है, तथा (सुदत्रः) दानशील बना कर विपत्तियो से रक्षा करता है। हे श्री लक्ष्मी (तम) अपने उस मधुर स्तन को (इह) इस जगत् मे (कः) बनाए रख, (धातवे) जिससे मेरा, मेरे परिवार का, देश और विश्व का धारण पोषण सुचारु रूप से चलता रहे।

दीर्घतमा—ऋषि के दो रूप हैं। केवल लक्ष्मी या केवल सरस्वती के अर्जन मे लगे हुए व्यक्ति घने अन्धकार मे फसे हुए दीर्घतमा ऋषि हैं। अपने अनुभव से दोनो की आवश्यकता जान कर, अपने एकांगी विचार को छोड कर दोनों की प्राप्ति का प्रयत्न करने वाले—अन्धकार को विदीर्ण करने वाले—दीर्घतमा ऋषि बन कर अपने जीवन मे सफलता प्राप्त करते हैं।

सरस्वती—वेद का प्रत्येक देवता अपने में अन्य सभी देवताओं के अंश को समोये हुए है, क्योंकि ये सभी देवता उसी एक सच्चिदानन्द परब्रह्म की अभिव्यक्तियां हैं। इसी लिए इस मन्त्र में सरस्वती से वह प्रार्थना की गई है जो लक्ष्मी से की जानी चाहिए। सरस्वती और लक्ष्मी दोनो के गुण और वरदान 'श्री' में बसते हैं इसलिए नाम के आगे 'श्री' या 'श्रीमान्' लगाते हैं।

'श्री' का सम्मिलित रूप—प्रशस्ति, प्रजा, रत्न, वसु धृत, भद्र तथा धन प्रदान करता है। यह पापो, रोगों, शत्रुओं का विनाश करने वाली वृत्रघ्नी, तथा रक्षा, प्रगति, क्रान्ति, वृद्धि प्रदान करने वाली सवित्री है। सरस्वती का आह्वान सुकृतीजन करते हैं। सरस्वती से प्राप्त पदार्थों का दान करने वालो के पास वरणीय पदार्थों की कभी कमी नहीं होती।

(क) सत्पथ द्वारा अर्जित, सत्कर्मों मे विनियोजित, विनयप्रदाता तथा अनासक्ति और अपरिग्रह की ओर ले जाने वाला धन श्री—सरस्वती या पुण्या-लक्ष्मी—कहाता है।

(ख) जैसे तैसे अर्जित, ऐश-आराम मे विनियोजित, अहंकार जनिता तथा आसक्ति और परिग्रह की ओर ले जाने वाला धन श्रीविहिन लक्ष्मी या पापी लक्ष्मी कहाता है।

निचृत् त्रिष्टुप्—अपनी प्रार्थना को पूरा कराने के लिए अत्यन्त प्रयत्न (साधना) आवश्यक है। साधना पूर्ति के लिए काम, क्रोध, लोभ के दुष्ट त्रिक से छुटकारा पाने के लिए बार-बार आत्म-निरीक्षण करने का संकेत—छन्द शब्द का अर्थ करता है।

कार्तिक बदी १५ सं० २०४८
५ नवम्बर १९९१ मंगलवार

सेवा में—

2367 श्री पुस्तकाध्यक्ष,
पुस्तकालय,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उ. प्र.)

सूर्यदेव द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित तथा सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाऊस दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२ में मुद्रित होकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड नई दिल्ली-११०००१ : फोन-३१०१५ के लिए प्रकाशित। रजि० नं० डी०(डी० ७५६)